CamScanner

रास्ते पर चलते तुम्हारा रूमाल गिर जाए और कोई अजनबी उठा कर तुम्हे देदे तो तुम उसे धन्यवाद देते हो...क्यूंकि तुम्हारी उस अजनबी से कोई अपेक्षा नहीं थी...

अगर वही रूमाल तुम्हारी पत्नी उठाकर तुम्हे दे, तो तुम धन्यवाद भी नहीं देते, क्यूंकि तुम्हारी अपेक्षा थी की पत्नी उठाकर देगी ही...इसके विपरीत अगर पत्नी रूमाल उठाकर ना दे तो तुम क्रोधित तक हो सकते हो....'अपेक्षा दुःख है'....त्याग का अर्थ पत्नी का त्याग नहीं, बच्चों का त्याग नहीं, घर-बार का त्याग नहीं....असली त्याग है 'अपेक्षा का त्याग'...जिसने किसी दुसरे से सुख की अपेक्षा का त्याग कर दिया...उसे फिर कोई दुखी नहीं कर सकता।।

ओशो

CS CamScanner

10:49 am 0 KB/s VoLTE 4G 86%

वैसे ही बूढ़ा था, इनकी चोट और मार पीट में और शिथिल हो गया, मरणासन्न हो गया, और कीचड़ में गिर गया। निकलने का कोई उपाय न दिखाई पड़े।

फिर तो स्वयं राजा गया। उस बूढ़े हाथी के आंखों से आंसू बह रहे हैं। वह बूढ़ा हाथी अपनी दयनीयता पर पीड़ित हो रहा होगा। बड़े युद्धों में लड़ा था, पहाड़ों से जूझ जाता था, आज यह दशा हो गई। इस छोटी सी कीचड़ से नहीं निकल पा रहा है? उसकी आंख से आंसू बह रहे हैं। राजा भी बहुत दुखी हो गया। फिर उसे याद आई, इसके पुराने महावत को बुलाओ। उस बूढ़े को खोजो कहां है। शायद वह कुछ जानता हो। वह इसके साथ जिंदगी भर रहा है, उसे कुछ राज पता हो।
वह बूढ़ा आया। राजधानी इकट्ठी हो गई थी। बुद्ध के शिष्य भी इकट्ठे हो गए वहां। पास ही बुद्ध ठहरे थे। वह महावत आया, हंसा, और उसने कहा कि यह क्या कर रहे हो? उसे मार डालोगे? हटो। और उसने कहा कि बैंड लाया, युद्ध का नगाड़ा बजाओ। और किनारे पर रखकर उसने युद्ध का नगाड़ा बजवाया। युद्ध का नगाड़ा बजना था कि हाथी एक छलांग में बाहर आ गया। एक क्षण की देर न लगी। सूरमा था। उस क्षण में भूल गया जब नगाड़ा बजा, कि मैं बूढ़ा हूं; भूल गया कि कमजोर हूं; फिर जवान हो गया।

हम उतने ही जवान होते हैं जितनी हमारी हिम्मत होती है। हम उतने ही युवा होते हैं जितनी हमारी हिम्मत होती है। हिम्मत से आदमी बूढ़ा होता है, युवा होता है। उसके साहस पर चोट लगी। यह तो उसने कभी सहा ही नहीं था। युद्ध के बाजे बज जाएं और वह रुका रह जाएं! वह मर भी गया होता तो शायद निकल आता कीचड़ से। बुद्ध के शिष्यों ने आकर बुद्ध को कहा, भगवान एक अपूर्व चमत्कार देखा। बुद्ध ने कहा, अपूर्व कुछ भी नहीं है। तुममें भी मेरी पुकार सुनकर वे ही निकल पाएंगे, जो सूरमा हैं। यही तो मैं भी कर रहा हूं नासमझों! तुम कीचड़ में फंसे हो और मैं रणभेरी बजा रहा हूं। तुममें से जो हिम्मतवर हैं, जिनमें थोड़ी सी भी क्षमता है साहस की वे निकल आएंगे; वे चुनौती को स्वीकार कर लेंगे।

कानो सुनी सो झूठ सब-(संत दरिया)-प्रवचन-03

CamScanner

तुम शरीर नहीं हो,
तुम शरीर में हो। -ओशो

मौत जीवन की विपरीत अवस्था नही है; जीवन को नित नया करने की व्यवस्था है। मौत से गुजर कर जीवन नितनूतन होता है। मौत जीवन का अंत नहीं है। जीवन तो शाश्वत है। जीवन को जानो तो तुम्हें जीवन की शाश्वतता पता चल जाए। जीवन तो अमृत है ही, अब किसी और अमृत की जरूरत नहीं है।

ओशो Osho wisdom

CamScanner

आपको जिस चीज की प्यास है वह आपके पास ही है । इतना ही सहज है सत्य, अगर समझ है । कोई इंसान चश्मा पहनता है और एक दिन उसका चश्मा खो जाता है । अब वह अपना चश्मा ढूँढ रहा है । आप उससे पूछते हैं, "कहाँ-कहाँ देखा ?" वह बताता है, "ड्रावर में देखा, अलमारी में देखा ।" फिर आप उससे पूछते हैं, "चश्मे के बगैर तुम्हें कुछ दिखता है क्या ?" वह कहता है, "नहीं, चश्मे के बगैर मुझे कुछ दिखता ही नहीं ।" आप फिर से उसे कहते हैं, "अलमारी में देखा था क्या ? ठीक से देखा क्या ? कोने-कोने में देखा क्या ?" वह कहता है, "हाँ, मैंने कोने-कोने में देखा, बहुत साफ देखा मगर वहाँ नहीं था ।" फिर आप उससे पूछते हैं, और कहाँ-कहाँ देखा ?" वह बताता है, "पलंग के नीचे देखा ।" आप उससे पूछते हैं, "पलंग के नीचे तो ज्यादा रोशनी नहीं होती, फिर भी तुम्हें स्पष्ट दिखा क्या ?" वह फिर जवाब देता है, "तुम्हें बताया न हाँ, मैंने देखा, वहाँ कुछ भी नहीं था ।"

इसका अर्थ ही है उसे स्पष्ट दिख रहा है । क्योंकि चश्मा उसकी आँख पर ही है । उस चश्मे का एहसास दिलाने के लिए आप उससे सवाल पूछते जा रहे हैं कि पक्का दिखाई दिया क्या ? और वह "हाँ" बोल रहा है । फिर अचानक बोलते-बोलते उसे झटका लगता है कि सामनेवाला ऐसे सवाल क्यों पूछ रहा है कि "पक्का दिखा क्या ? सचमुच दिखा क्या ? स्पष्ट दिखा क्या ?" अब उसे समझ में आता है कि चश्मा तो उसकी आँखों पर ही था । सत्य की खोज में भी यही होता है । जिस सत्य (ईश्वर) की इंसान खोज कर रहा है, वह उसके पास ही है इसलिए कहा जाता है कि खोज बहुत आसान है । हमें केवल प्रज्ञा जगानी है ।...सरश्री

CamScanner

10:06 am 0 KB/s VoLTE 4G 89%

तो आईं तो एक ने कहा"आहा! साधु हो गया, फिर भी तकिए का मोह नहीं गया
पत्थर का ही सही, लेकिन रखा तो है।"
पनिहारिन की बात साधु ने सुन ली...
उसने तुरंत पत्थर फेंक दिया
दूसरी बोली--
"साधु हुआ, लेकिन खीज नहीं गई..
अभी रोष नहीं गया,तकिया फेंक दिया।"
तब साधु सोचने लगा, अब वह क्या करें ?
तब तीसरी बोली--
"बाबा! यह तो पनघट है,यहां तो हमारी जैसी पनिहारिनें आती ही रहेंगी, बोलती ही रहेंगी, उनके कहने पर तुम बार-बार परिवर्तन करोगे तो साधना कब करोगे?"
लेकिन चौथी ने
बहुत ही सुन्दर और एक बड़ी अद्भुत बात कह दी-
"क्षमा करना,लेकिन हमको लगता है, तुमने सब कुछ छोड़ा लेकिन अपना चित्त नहीं छोड़ा है,अभी तक वहीं का वहीं बने हुए है।
दुनिया पाखण्डी कहे तो कहे, तुम जैसे भी हो,हरिनाम लेते रहो।"
सच तो यही है, दुनिया का तो काम ही है कहना...
आप ऊपर देखकर चलोगे तो कहेंगे...
"अभिमानी हो गए।"
नीचे देखोगे तो कहेंगे...
"बस किसी के सामने देखते ही नहीं।"
आंखे बंद करोगे तो कहेंगे कि...
"ध्यान का नाटक कर रहा है।"
चारो ओर देखोगे तो कहेंगे कि...
"निगाह का ठिकाना नहीं। निगाह घूमती ही रहती है।"
और परेशान होकर आंख फोड़ लोगे तो यही दुनियएक कहेगी कि..._
"किया हुआ भोगना ही पड़ता है।"
ईश्वर को राजी करना आसान है,
लेकिन संसार को राजी करना असंभव है
इसलिए दुनिया क्या कहेगी,उस पर ध्यान दोगे तो आप अपना ध्यान नहीं लगा पाओगे..!!

CamScanner

🌷Osho ki Mehk🌷

Raj Malhotra · 11m ·

"ओशो" प्रेम नमन 🙏🌹🙏

"ओशो" : किसी पर क्रोध करके उसे नष्ट करना चाहते हो; उसे तुम करोगे या नहीं, यह दूसरी बात है, लेकिन तुमने अपने को नष्ट करना शुरू करे दिया

CS CamScanner

अगर बहुत गौर से देखा जाए, तो जब तुम दूसरे को दु:ख देना चाहते हो, तब तुमने अपने को दु:ख देना शुरू कर ही दिया। तुम दु:खी होने शुरू हो ही गए। तुम क्रोधित हो,
Osho.
ओशो।
"एस धम्मो सनंतनो"
--(प्रवचन-01)
(आत्मक्रांति का प्रथम सूत्र: अवैर-)
Raj Malhotra

CamScanner

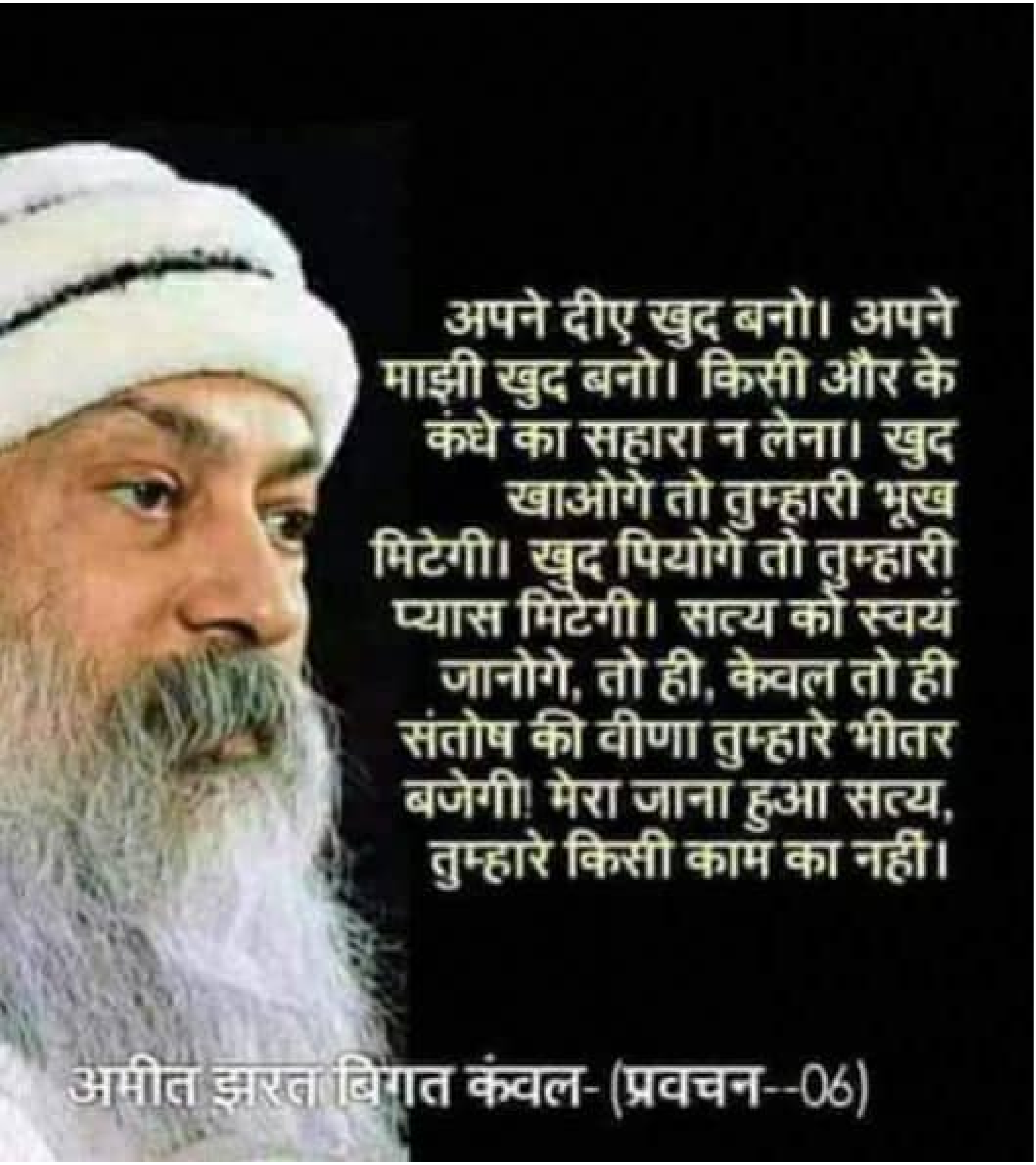
अपने दीए खुद बनो। अपने
माझी खुद बनो। किसी और के
कंधे का सहारा न लेना। खुद
खाओगे तो तुम्हारी भूख
मिटेगी। खुद पियोगे तो तुम्हारी
प्यास मिटेगी। सत्य को स्वयं
जानोगे, तो ही, केवल तो ही
संतोष की वीणा तुम्हारे भीतर
बजेगी! मेरा जाना हुआ सत्य,
तुम्हारे किसी काम का नहीं।
अमीत झरत बिगत कंवल- (प्रवचन--06)

CamScanner

वृद्ध अतीत में जीता है इसलिए निराश
रहता है; युवा भविष्य में जीता है
इसलिए परेशान रहता है.. बच्चे वर्तमान
में जीते है इसलिए प्रसन्न रहते है..

CamScanner

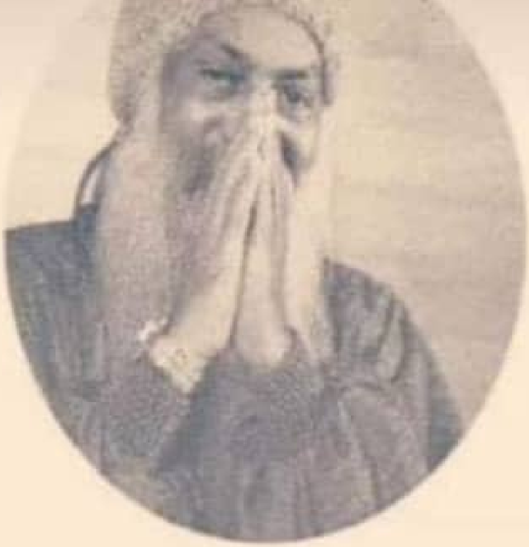

ओशो

सदगुरू स्नेह

यहाँ कोई भी अपना जीवन अपने स्वभाव में, अपने ढंग से नहीं जीता है।सभी दूसरों को खुश करने में अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं। सभी अपनी सारी जीवन ऊर्जा को दूसरों को प्रभावित करने में नष्ट कर रहे हैं। कोई कभी भी किसी दूसरे को खुश नहीं कर सकता है। जब कोई स्वयं से ही खुश नहीं है तो, वह दूसरों को खुश कैसे कर सकता है, जबकि स्वयं को स्वयं के द्वारा ही खुश किया जा सकता है.

CamScanner

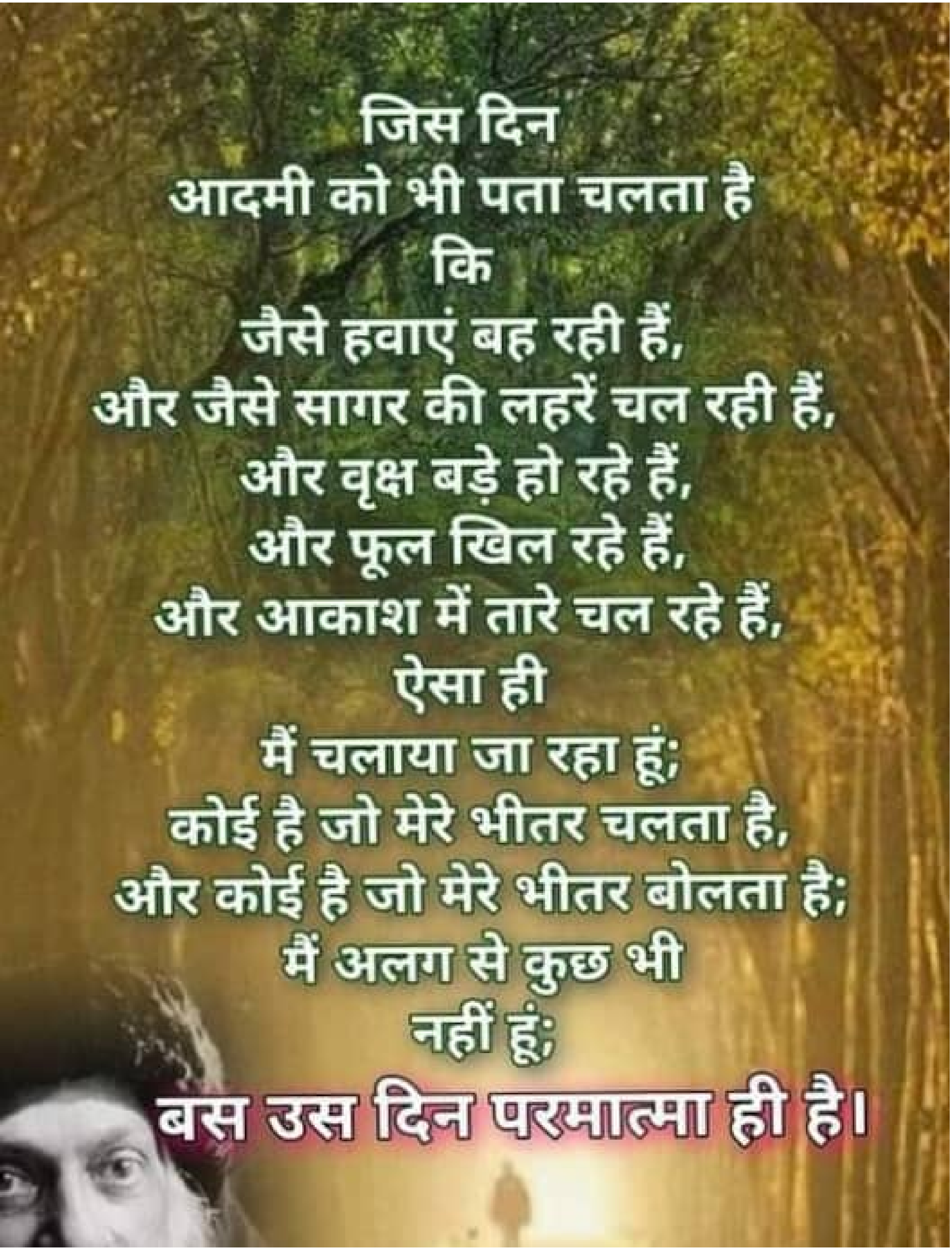
जिस दिन
आदमी को भी पता चलता है
कि
जैसे हवाएं बह रही हैं,
और जैसे सागर की लहरें चल रही हैं,
और वृक्ष बड़े हो रहे हैं,
और फूल खिल रहे हैं,
और आकाश में तारे चल रहे हैं,
ऐसा ही
मैं चलाया जा रहा हूं;
कोई है जो मेरे भीतर चलता है,
और कोई है जो मेरे भीतर बोलता है;
मैं अलग से कुछ भी
नहीं हूं;
बस उस दिन परमात्मा ही है।

CamScanner

मृत्यु

जब कोई इंसान इस दुनिया से विदा हो जाता है तो उसके कपड़े, उसका बिस्तर, उसके द्वारा इस्तेमाल किया हुआ सभी सामान उसी के साथ तुरन्त घर से निकाल दिये जाते है।
पर कभी कोई उसके द्वारा कमाया गया धन-दौलत. प्रोपर्टी, उसका घर, उसका पैसा, उसके जवाहरात आदि, इन सबको क्यों नही छोड़ते?
बल्कि उन चीजों को तो ढूंढते है, मरे हुए के हाथ, पैर, गले से खोज-खोजकर, खींच-खींचकर निकालकर चुपके से जेब मे डाल लेते है, वसीयत की तो मरने वाले से ज्यादा चिंता करते है।
इससे पता चलता है कि आखिर रिश्ता किन चीजों से था।
इसलिए पुण्य परोपकार ओर नाम की कमाई करो।
इसे कोई ले नही सकता, चुरा नही सकता। ये कमाई तो ऐसी है, जो जाने वाले के साथ ही जाती है।

हाड़ जले ज्यूँ लाकड़ी, केस जले ज्यूँ घास।
कंचन जैसी काया जल गई, कोई न आयो पास।

जगत में कैसा नाता रे.........

CS CamScanner

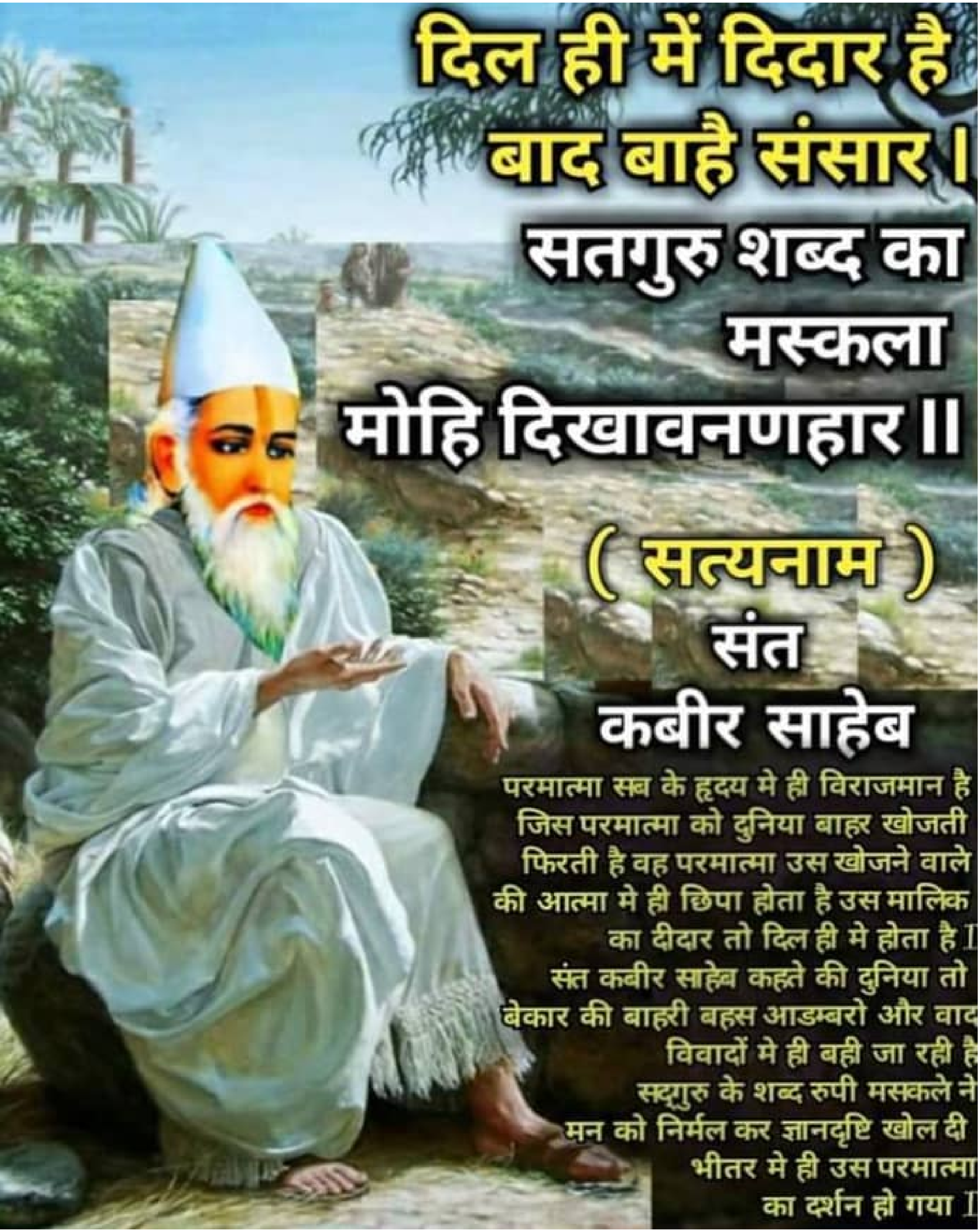
दिल ही में दिदार है
बाद बाहै संसार ।
सतगुरु शब्द का
मस्कला
मोहि दिखावनणहार ।।
(सत्यनाम)
संत
कबीर साहेब
परमात्मा सब के हृदय मे ही विराजमान है
जिस परमात्मा को दुनिया बाहर खोजती
फिरती है वह परमात्मा उस खोजने वाले
की आत्मा मे ही छिपा होता है उस मालिक
का दीदार तो दिल ही मे होता है I
संत कबीर साहेब कहते की दुनिया तो
बेकार की बाहरी बहस आडम्बरो और वाद
विवादों मे ही बही जा रही है
सद्गुरु के शब्द रुपी मसकले ने
मन को निर्मल कर ज्ञानदृष्टि खोल दी
भीतर मे ही उस परमात्मा
का दर्शन हो गया I

CamScanner

1:11 pm 0 KB/s 93%

का अनुभव होगा; कंट्रास्ट,
विपरीत, तत्क्षण
दिखाई पड़ जायेगा।
वही तुम हो,
जो कभी नहीं घूमता।

संसार चाक है,
शरीर उसका हिस्सा है।
तुमने शायद खयाल नहीं किया
कि संसार में सब चीजें घूम रही हैं।

चांद घूम रहा है,
सूरज घूम रहा है,
पृथ्वी घूम रही है,
तारे घूम रहे हैं;
अब वैज्ञानिक
कहते हैं इलेक्ट्रान,
न्यूट्रान घूम रहे हैं,
सब चीजें घूम रही हैं।

जगत में कोई चीज थिर नहीं,
सिर्फ परमात्मा थिर है।
लेकिन उस थिर का तुम्हें
कैसे पता चलेगा?

उसके पता चलने
का एक ही उपाय है,
तुम्हारे भीतर संसार
का जो हिस्सा है वह घूमे,
तो तुम्हारे भीतर जो
परमात्मा का हिस्सा है
थिर कील की भांति,
उसका तुम्हें पता चल जाये।
🌸🙏🌸

CamScanner

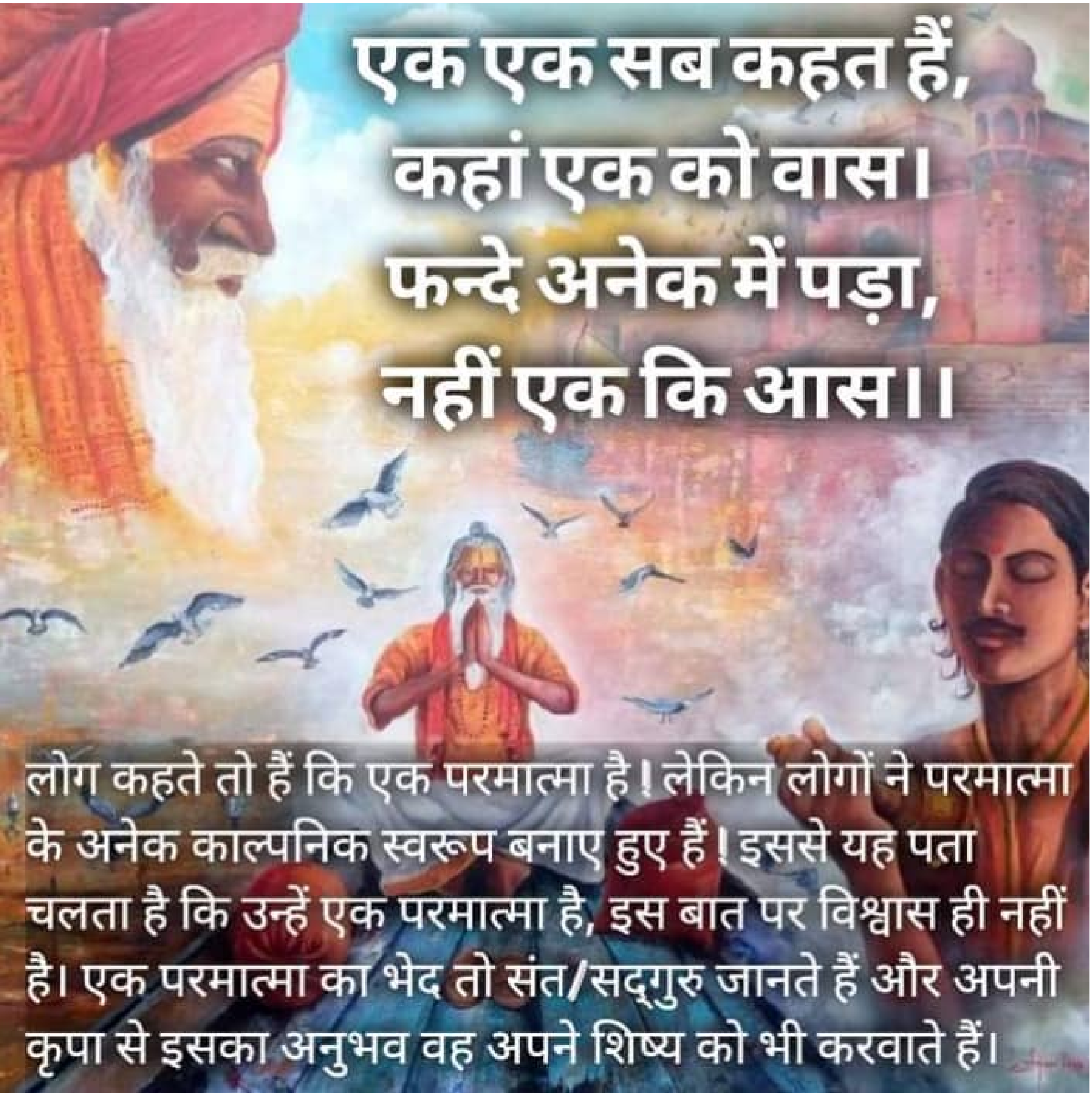
एक एक सब कहत हैं,
कहां एक को वास।
फन्दे अनेक में पड़ा,
नहीं एक कि आस।।
लोग कहते तो हैं कि एक परमात्मा है। लेकिन लोगों ने परमात्मा
के अनेक काल्पनिक स्वरूप बनाए हुए हैं। इससे यह पता
चलता है कि उन्हें एक परमात्मा है, इस बात पर विश्वास ही नहीं
है। एक परमात्मा का भेद तो संत/सद्गुरु जानते हैं और अपनी
कृपा से इसका अनुभव वह अपने शिष्य को भी करवाते हैं।

CamScanner

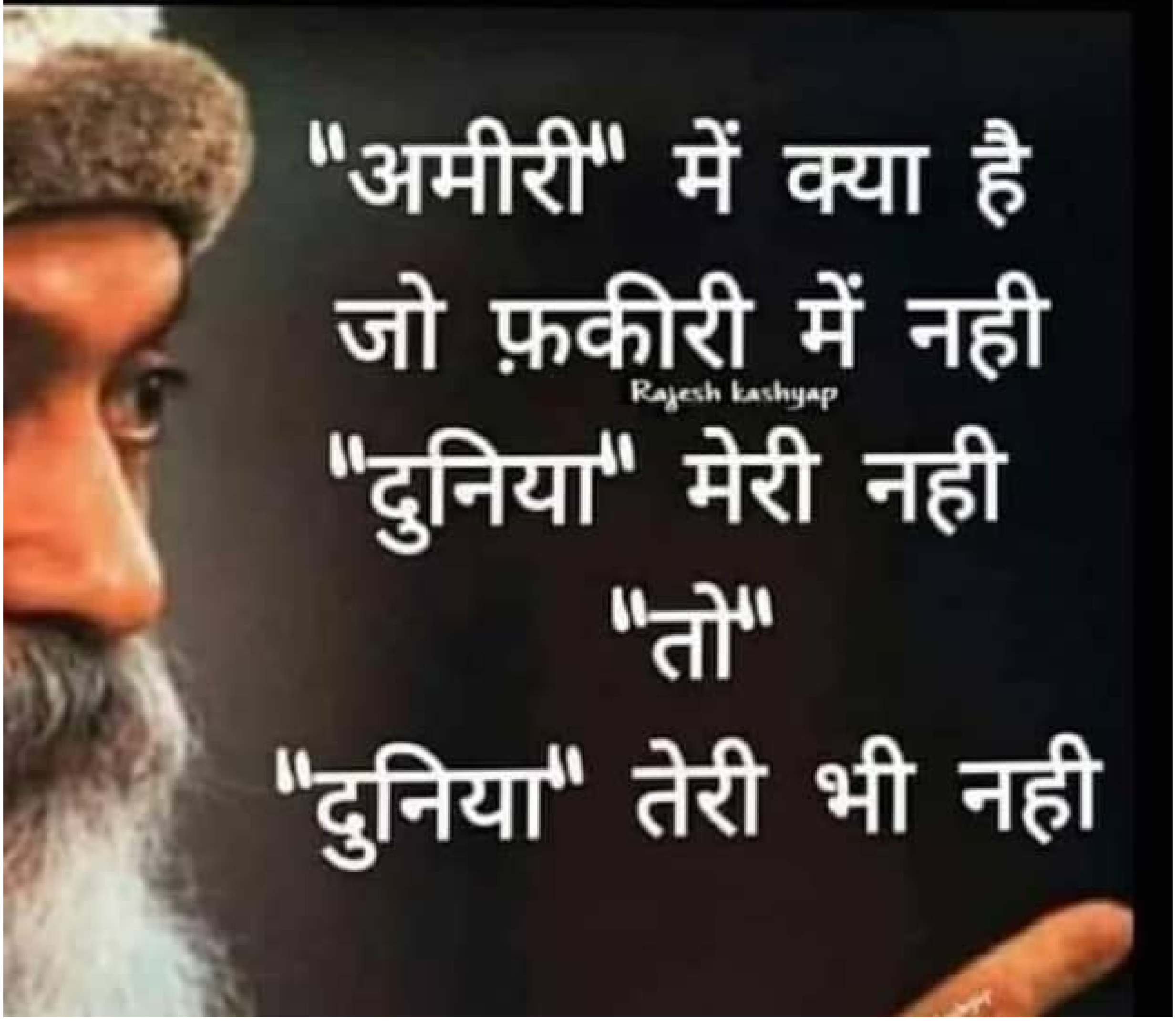

CamScanner

थोड़ा भी जानो, लेकिन जानो।
अपने अनुभव से जानो।
थोड़ा भी जानो, लेकिन तुम्हारे ही जीवन का निचोड़ हो।
रत्तीभर काफी है,
लेकिन तुमने प्राणों को डालकर उसे सीखा हो। उधार न हो।
ऊपर-ऊपर न हो। सुना-सुनाया न हो।
तुम्हारे भीतर प्राणों ने गुनगुनाया हो।
तुमने अपनी आंख से जाना हो।
तुमने अपने हाथ से छुआ हो।
तो अल्पतम ज्ञान भी बहुत है।
~ Osho ~ Ananta

CamScanner

प्रेमिकाएं, पत्नियां होना चाहती रही ओर
पत्नियां, प्रेमिकाएं..

कोई पुरुष किसी स्त्री को शायद पूरा
मिला ही नही..

CamScanner

परमात्मा ने संसार दिया ही इसलिए है कि
ताकि तुम इसके अनुभव से गुजरो, ताकि
इसका अनुभव तुम्हें बता दे कि बाहर कुछ
भी नहीं है, पाने योग्य कुछ भी नहीं है। दौड़
है खाली,रिक्त! हाथ खाली के खाली रह
जाते है, प्राण कभी भरती नहीं।
जगत तरैया भोर की
दूसरा प्रवचन

CamScanner

शास्त्रों को छोड़ देना होता है, तभी कोई
ध्यान को उपलब्ध होता है।शब्दों को छोड़ो
तो शून्य को उपलब्ध होओ। और जहां शून्य
है वहां पूर्ण विराजमान हो जाता है। जो
बिलकुल शून्य में उतर गया, सन्नाटे में, इसी
क्षण परमात्मा का अनुभव हो जाता है।
परमात्मा काबा में नहीं, कैलाश में नहीं,
काशी में नहीं। परमात्मा
तुम्हारे भीतर मौजूद है -
और अभी मौजूद है,
इसी क्षण मौजूद है।

❤ ओशो ❤

CamScanner

ध्यान का अर्थ है,
मन की सफाई।
ध्यान का अर्थ है,
अ-मन की तरफ यात्रा।
ध्यान का अर्थ है,
थोड़ी घड़ियों को
मन की धूल से
चित्त के दर्पण को
बिलकुल साफ
कर लेना।
जिन-सूत्र, ओशो

CamScanner

जो व्यक्ति वास्तव में ध्यानी है वह खेलपूर्ण होगा; जीवन उसके लिए मस्ती है,जीवन एक लीला, एक खेल है।वह जीवन का परम् आनंद लेता है वह गंभीर नहीं होता विश्रामपूर्ण होता है।

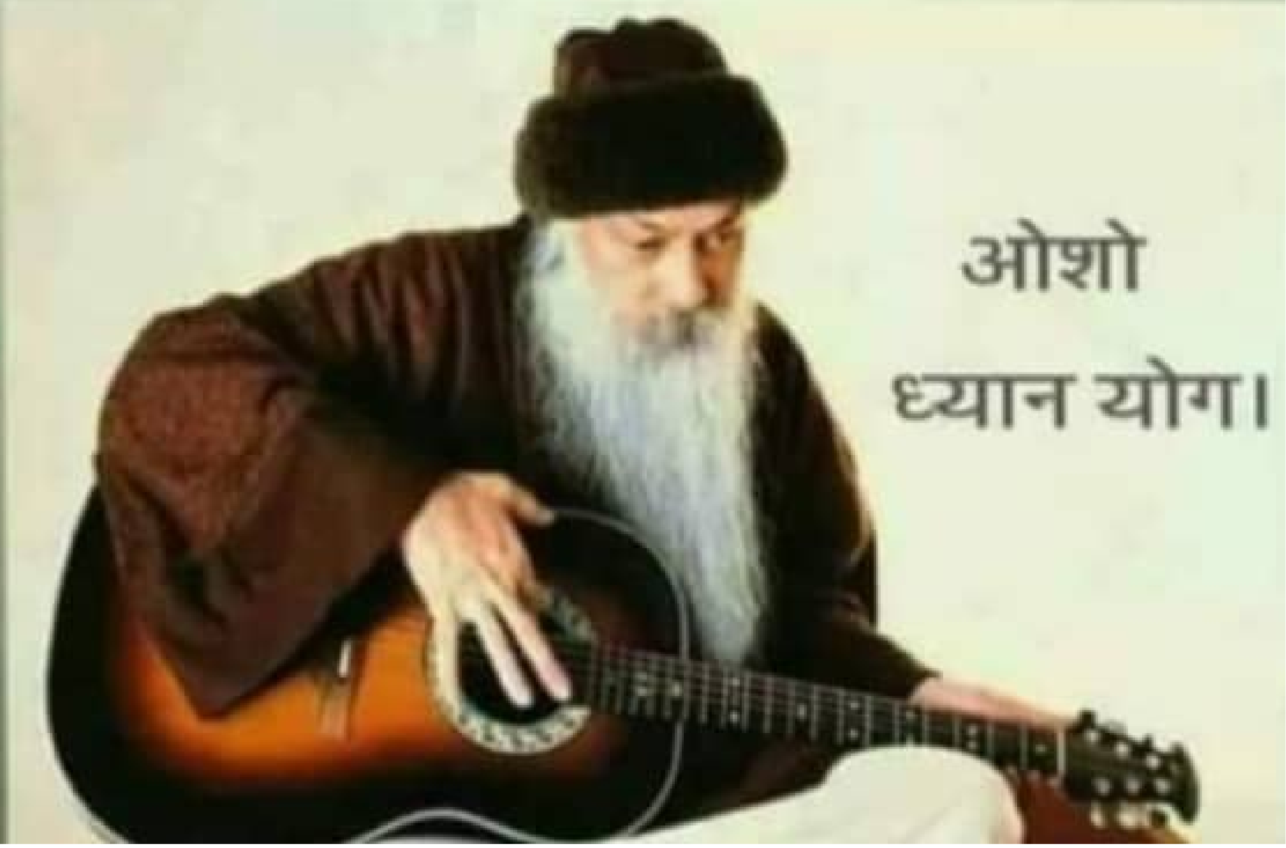

CamScanner

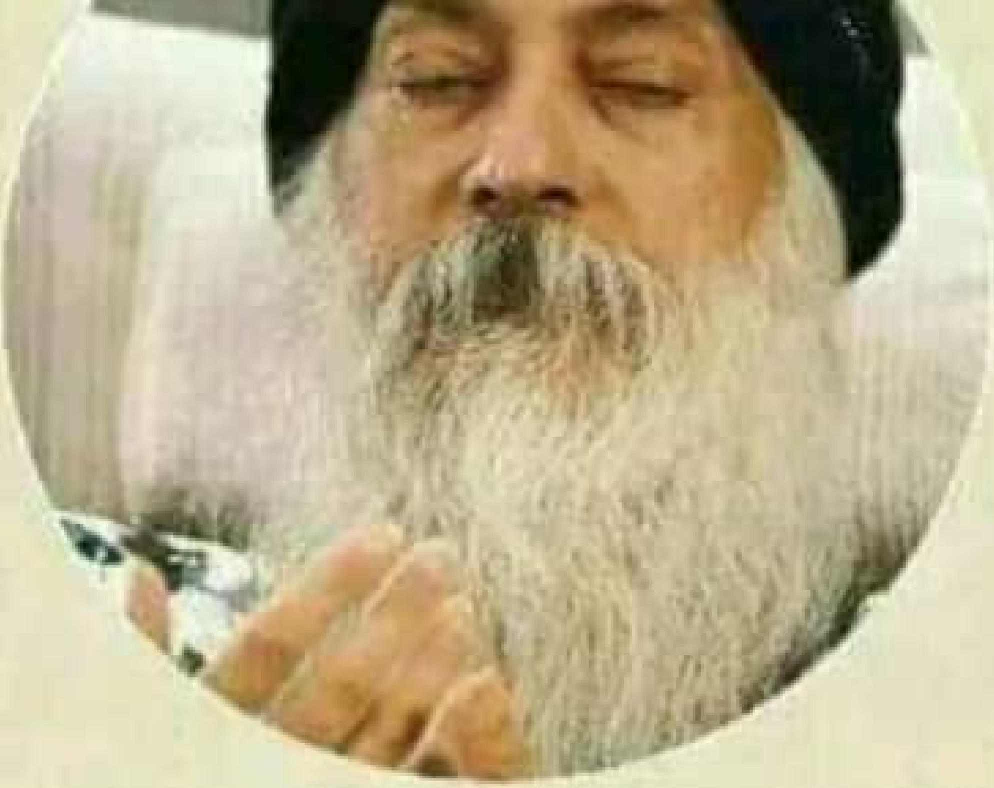

एक बात स्मरण रहे : जब भी तुम्हें लगे कि कोई चीज गलत है तो पहले उसका कारण अपने भीतर खोजो, और कहीं मत जाओ। सौ में निन्यानबे मौकों पर तुम्हें अपने भीतर ही कारण मिल जाएगा। और जब सौ में निन्यानबे कारण तुम्हारे भीतर होंगे तो सौवां कारण अपने आप ही विदा हो जाएगा। तुम्हें जो कुछ होता है उसका कारण तुम स्वयं हो। तुम कारण हो; संसार तो बस दर्पण है।

OSHO

SGB

CS CamScanner

मौन प्रार्थनाएं..
ईश्वर तक जल्दी पहुंचती हैं,
क्योंकि वो
शब्दों के बोझ से मुक्त होती हैं ॥

CS CamScanner

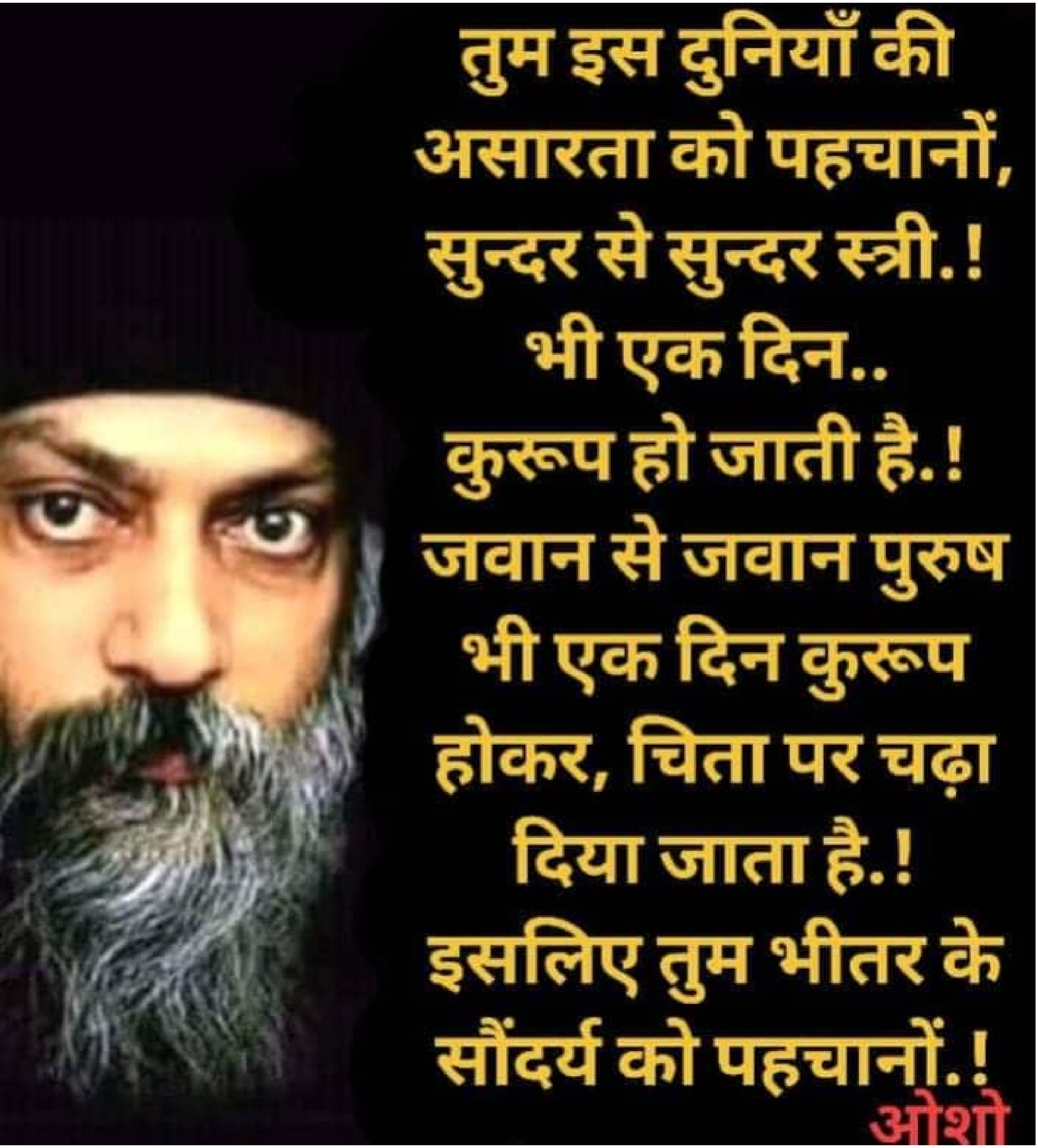
तुम इस दुनियाँ की
असारता को पहचानों,
सुन्दर से सुन्दर स्त्री.!
भी एक दिन..
कुरूप हो जाती है.!
जवान से जवान पुरुष
भी एक दिन कुरूप
होकर, चिता पर चढ़ा
दिया जाता है.!
इसलिए तुम भीतर के
सौंदर्य को पहचानों.!
ओशो

CamScanner

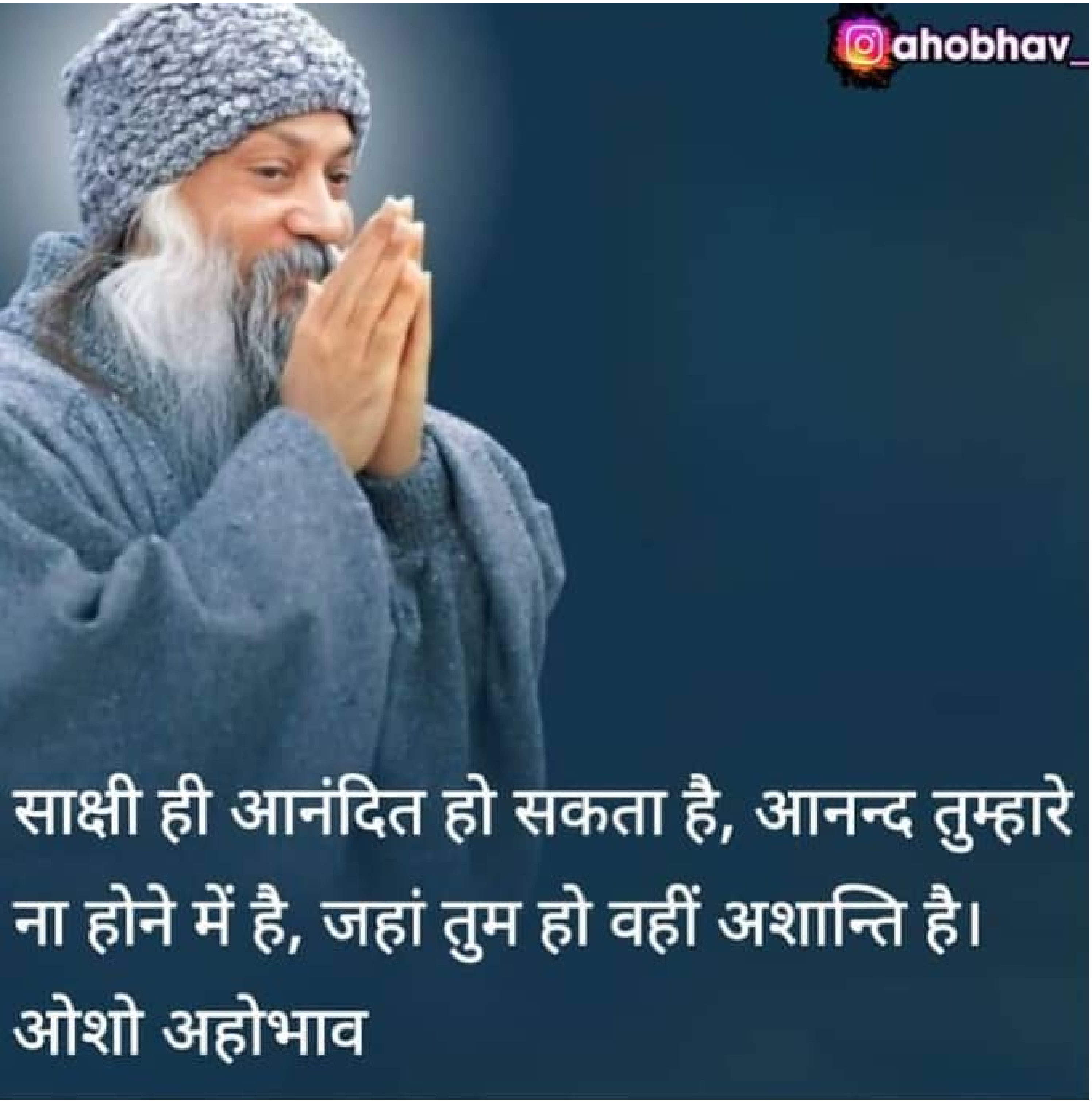
@ahobhav_
साक्षी ही आनंदित हो सकता है, आनन्द तुम्हारे
ना होने में है, जहां तुम हो वहीं अशान्ति है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

जोगी ध्यावै परम पद!
इसलिए योगी मंदिर—मस्जिद का ध्यान नहीं करता,परम पद का ध्यान करता है। क्या है परम पद? कहां है परम पद? मंदिर भी बाहर, मस्जिद भी बाहर; परम पद तुम्हारे भीतर है। परमात्मा तुम्हारे भीतर विराजमान है। और तुम कहां खोज रहे हो बाहर? और जब तक तुम बाहर खोजते रहोगे, उसे तुम कभी पा न सकोगे।
ओशो

CamScanner

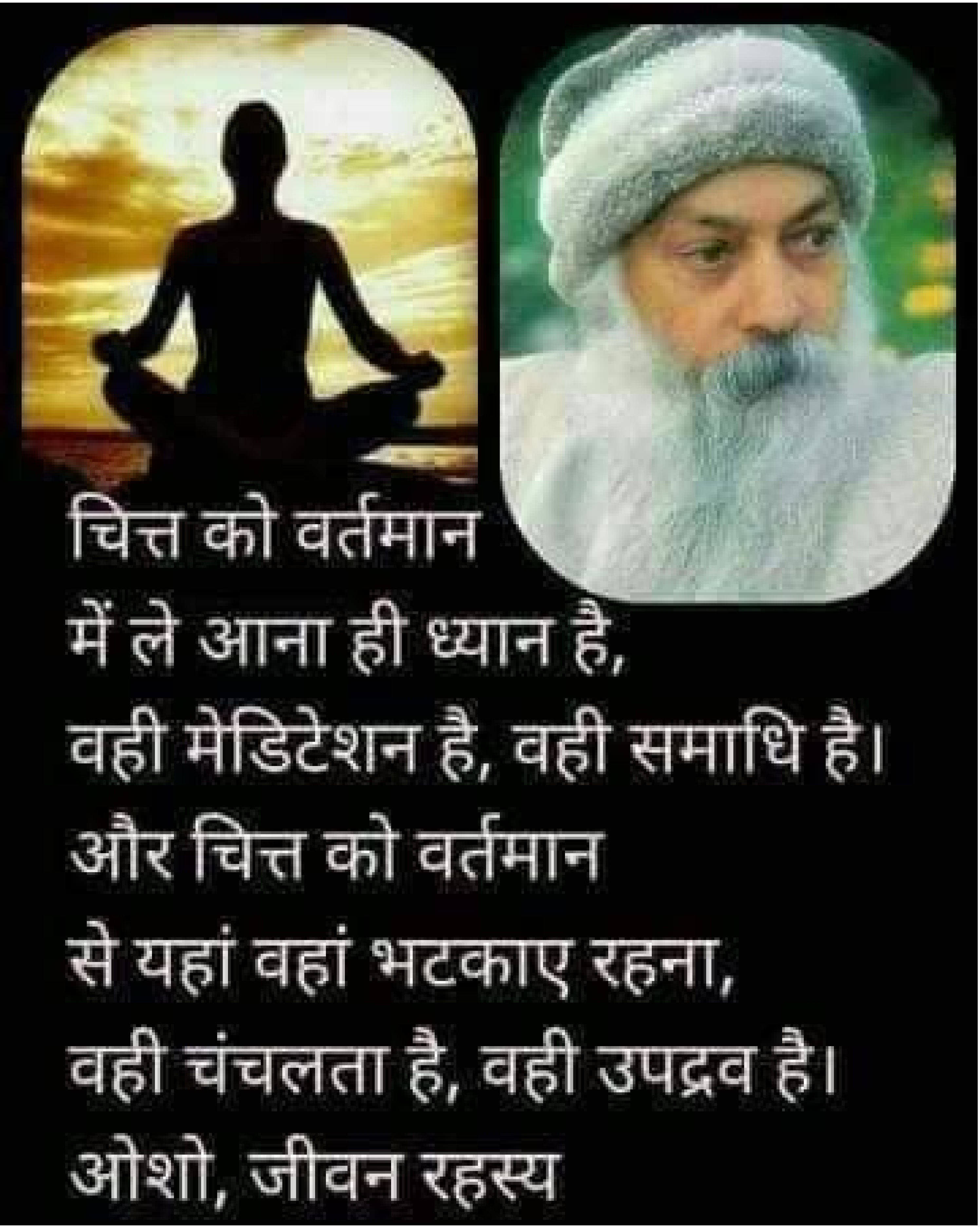
चित्त को वर्तमान
में ले आना ही ध्यान है,
वही मेडिटेशन है, वही समाधि है।
और चित्त को वर्तमान
से यहां वहां भटकाए रहना,
वही चंचलता है, वही उपद्रव है।
ओशो, जीवन रहस्य

CamScanner

जिसे भी तुम भय के
कारण छोड़ोगे,
वह छूटेगा नहीं.

जिससे तुम भयभीत होओगे,
वह तुम्हारा पीछा करेगा;
जिससे तुम डरोगे, वह तुम्हें और डराएगा;
जिससे तुम भागोगे, वह तुम्हारे पीछे आएगा।
क्योंकि भय तो भीतर है, भागोगे कहां?
किससे भागोगे?
संसार अगर बाहर होता तो भाग जाते।
जहां जाओगे, वहीं संसार पाओगे।
हिमालय की गुफा में भी तुम तो रहोगे-वही,
जैसे तुम यहां हो।

भज गोविन्दम मूढ़मते ओशो

CamScanner

आदमी इतना अदभुत है और इतना अंधा कि जिनको तुम धार्मिक कहते हो उनका भी दावा है: मेरा धर्म! मैं हिंदू हूं,मैं जैन हूं, मैं मुसलमान हूं, मैं ईसाई हूं। धार्मिक आदमी का "मेरा' हो सकता है! और जहां मेरात्तेरा है वहां कैसा धर्म! वहां तो धर्म की कोई संभावना नहीं है। वही तो अधर्म है।

ओशो Osho wisdom

CS CamScanner

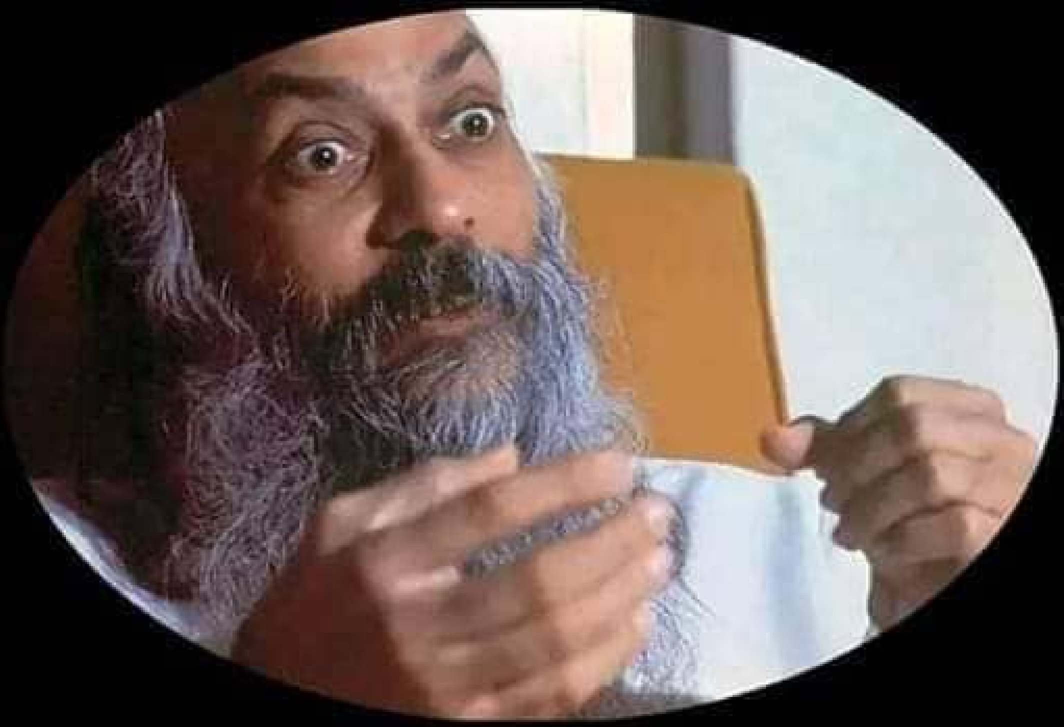

परमात्मा कभी दृश्य नहीं बनता; परमात्मा तो तुम्हारे भीतर छिपे हुए द्रष्टा का नाम है। तुम्हारी आंख से भी जो देख रहा है, वह परमात्मा ही है।

ओशो Osho wisdom

CamScanner

मैं न तो नास्तिक हूं, न मैं आस्तिक हूं, न मैं धार्मिक हूं, न मैं अधार्मिक हूं; न मैं हिंदू हूं, न मुसलमान हूं, न जैन हूं, न ईसाई हूं, न पारसी हूं; क्योंकि ये सारी की सारी बातें जीवन को जानने में बाधा हैं। और यहां मैं कोई जीवन-दर्शन नहीं सिखा रहा हूं। यहां केवल इस बात की तुम्हें समझ दे रहा हूं कि छोड़ दो जीवन-दर्शन, ताकि जीवन को पा सको,ताकि खालिस जीवन अपने शुद्धतम रूप में तुम्हें आच्छादित कर ले।

राम नाम जान्यो नहीं-2

ओशो Osho wisdom

CamScanner

प्रार्थना शब्दों में नहीं होती।
तुम्हारे आंतरिक शून्य का ही
दूसरा नाम प्रार्थना है।
प्रार्थना में झुक जाते हो तुम।
कहने को क्या बचता है?
कहने को क्या है? शब्द छोटे हैं,
प्रार्थना समाएगी कैसे शब्दों में?
न तो मांग होती है, न शब्द होते हैं--
एक समर्पण का भाव होता है।
फिर प्रार्थना ही परमात्मा हो जाती है!

CamScanner

परमात्मा की स्मृति जिसके जीवन में भरी है, उसको कहां भोग-विलास की याद रह जाती है! वह तो परमभोग भोग रहा है; अब तो छोटे-मोटे भोग की बात ही कहां! हीरे बरस रहे हों तो कोई कंकड़-पत्थर बीनता है? अमृत बह रहा हो तो कोई नाली के गंदे पानी को भर कर घर लाता है? जहां फूलों की वर्षा हो रही हो, वहां कोई दुर्गंध समेटता है? जहां सच्चा सुख मिल रहा हो वहां क्षणभंगुर सुख की कौन चिंता करता है।

Osho Osho wisdom

CamScanner

एक हंसती हुई, मुस्कराती हुई नारी जिस
घर में है। जिसके कदमों में प्रेम के गीत है,
जिसके चलने से झंकार है, जिसके दिल
में खुशी है, जिसे जीने का एक आनंद
मिल रहा है, है, जिसकी श्वास-श्वास प्रेम
से भरी है, ऐसी नारी जिस घर के केंद्र
पर है। उस सारे घर में एक नई सुवास,
एक नया संगीत पैदा हो जाएगा।
ओशो
Ashok
।। प्रेम-ध्यान ।।

CamScanner

सन्यासी वही है,
जो जानता है कि
मैं अकेला हूं
और भुलाता नही
अपने अकेलेपन को,
भुलाना तो दूर,
अपने अकेलेपन में
रस लेता है।
और प्रतीक्षा करता है कि
कब मौका मिले जाए
और थोड़ी देर अपने
अकेलेपन का स्वाद लूं
थोड़ी देर आंख बंद करके
परमात्मा में डूब जाऊं,
अकेला रह जाऊं।
वही मेरी नियति है।
OshO

CamScanner

10:21 pm 0 KB/s VoLTE 4G 52%

Raj Gupt · 1h ·

~ गुरु की खोज ~

हम बड़े मजेदार लोग है । हममे से से अनेक लोग गुरु को खोजते फिरते है ।

पूछो कहा जा रहे हो , वो कहते है हम गुरु की खोज कर रहे है ।

आप कैसे गुरु की खोज करियेगा ? आपके पास कोई मापदंड , कोई तराजू है ? आप तौलिएगा कैसे कि कौन गुरु आपका ? और अगर आप इतने कुशल हो गए है कि गुरु की भी जांच कर लेते है , तो अब बचा क्या है ? जिसकी हम जांच करते है । उससे हम ऊपर हो जाते है । तो आप गुरु पहले हो गए ।

परीक्षा तो होनी है गुरु की उतर जाय , पास हो जाय , उत्तीर्ण हो जाए , तो ठीक । अनुत्तीर्ण हो जाए ?

तो शिष्य घूम ~ घूमकर गुरुओ को अनुत्तीर्ण करते रहते है । कहते है फलां गुरु बेकार साबित हुआ । अब वे दूसरे गुरु की तलाश मे जा रहे है ।

गुरु को शिष्य नही खोज सकता । यह असंभव है । इसका कोई उपाय नही है। यह तो बात ही व्यर्थ है ।

हमेशा गुरु शिष्य को खोजता है । यह बात समझ मे आती है । तर्कबद्ध है ।

तो गुरु शिष्य को खोजता है , तो आप जब भी शिष्य होने के लिए तैयार हो जाते है , गुरु प्रगट हो जाता है । वह आपको खोज लेगा । फिर आप बच नही सकते । वह आपको खोज लेगा ।

फिर आपके बचने का कोई उपाय नही है ।

~ ताओ उपनिषद , भाग ~ 3

~ ओशो

CamScanner

हर व्यक्ति के जीवन में.,
कुछ कमी जरूर रह जाती है..,
ताकी वह यह समझ सके कि..,
दुनिया मनुष्य नही ईश्वर चलाता
है.!

CamScanner

केले के छिलके

श्रीकृष्ण कौरवों की सभा में पाण्डवों के राजदूत बनकर गये। सभा के बाद दुर्योधन ने अभिमान से कहा–'महाराज ! बड़ी तैयारी से आपके लिये भोजन बना है। चलकर भोजन ग्रहण करें।' भगवान् के उत्तर दिया–'भैया! मैं तो नहीं खाऊँगा।' दुर्योधन ने पूछा–'क्यों नहीं खायेंगे ?'

भगवान् ने कहा–'देखो, दुर्योधन ! भोजन करने के तीन कारण होते हैं–भूख के कारण, भय के कारण या प्रेम के कारण। भूख से मैं मरता नहीं, तुमसे किसी प्रकार से भयभीत मैं होता नहीं जो भय के कारण मुझे भोजन करना पड़े और प्रेमभाव तुममें है नहीं। इसलिये मैं यहाँ भोजन नहीं करूँगा।'

यह महाभारत की कथा है। उसके बाद भगवान् बिना बुलाये पहुँच गये विदुरानी के यहाँ। विदुरानी में श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम था तो उसके प्रेम के वशीभूत होकर प्रभु ने उसके हाथ से प्रेम से दिये गये केले के छिलके भी खा लिये।

CamScanner

Prem ! Prbhu Osho...

Osho Harpreet · 1h ·

कौन कहता है कि तुम बुद्ध नहीं हो।तुम जन्मों-जन्मों से बुद्ध हो।तुम्हारा जन्म ही बुद्ध होना है। बुद्धि का पर्दा हटा कर देखो।

ओशो...

CS CamScanner

अहोभाव

इस जगत में मनुष्य के जीवन से श्रेष्ठ और कुछ भी नहीं। और जिस बुरी तरह मनुष्य अपने इन बहुमूल्य क्षणों को गवाता है, उसे देखकर अश्चर्य होता है। इतनी कठिनाई से पायी गयी संपदा कीचड़ में गंवा दी जाती है। इस अवसर का यदि तुम उपयोग कर लो तो तुम्हारे जीवन में परम प्रकाश हो जाए। इस हीरे को अगर तुम ठीक से दांव पर लगा दो तो परमात्मा तुम्हारा है - ओशो का सौवे दिन रैन #5

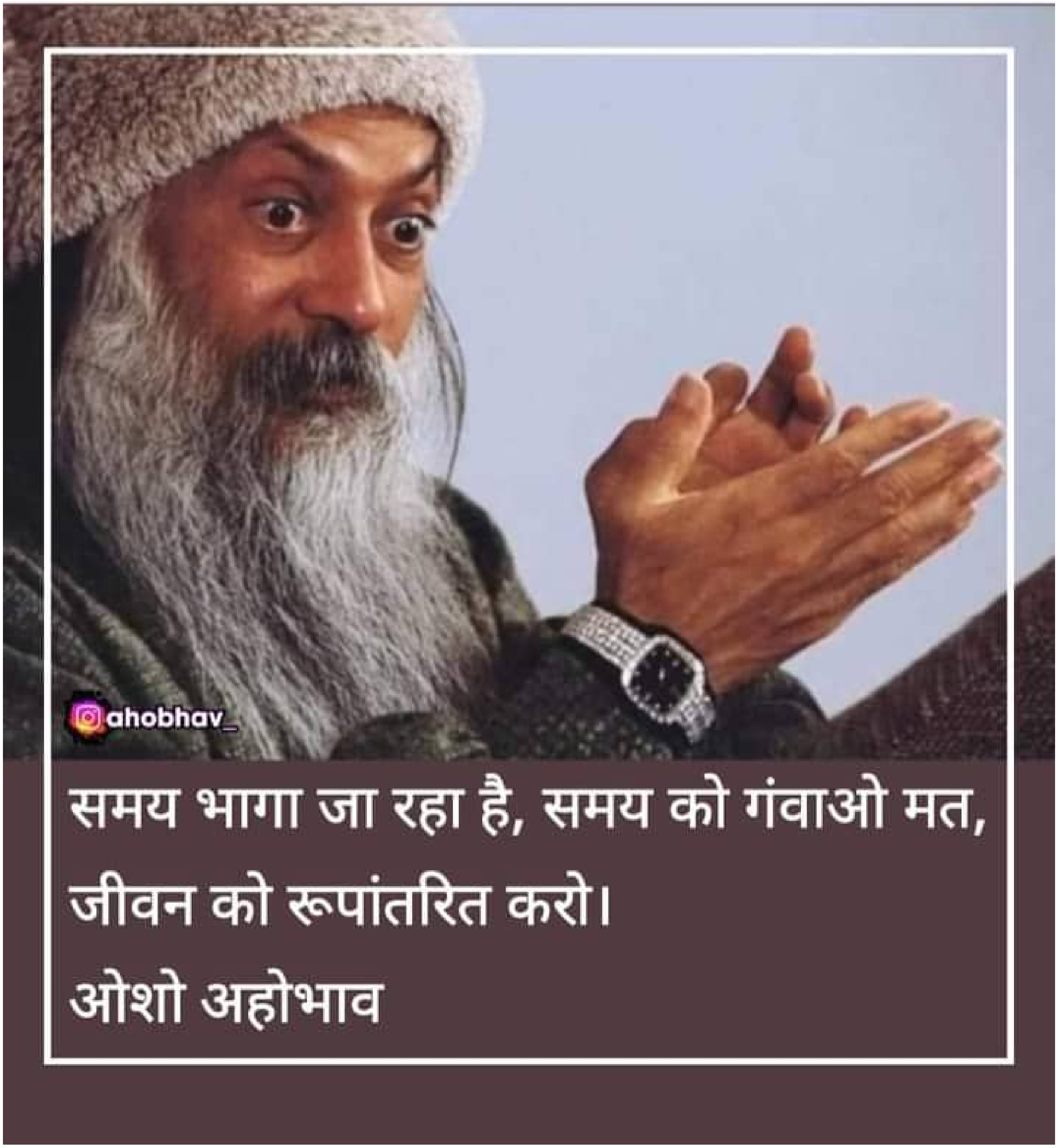

CamScanner

CamScanner

मैं तुम्हें जगाने आया था,सिखाने नहीं।
तुम सीखते ही गये और जागे नहीं।
मैंने बोला और बहुत बोला कि मेरा मौन सुनो।
तुमने मेरे शब्दो का लोरी की तरह उपयोग किया
अपनी बेहोशी और नींद को ही मजबूत किया
मुर्दों की इस बस्ती में,मेरा हृदय पुकार रहा
कोई तो होगा मेरा प्यारा जो अनहद का संगीत सुने।
शब्दों के कचरे छोड़े ,जागे,और अपनी प्रभुता के गीत लिखे।

CamScanner

हिन्दुस्तान से जो हिंदू
सन्यासी पश्चिम गए, उन्होंने जीसस की तुलना
बुद्ध और गीता उपनिषद से कर दी । इसलिए
उनके प्रवेश पर कोई रोक नहीं लगी ।

लेकिन मैंने पश्चिम जाकर बोल दिया, कि
भारत ने धर्म की जिन ऊँचाइयों को छुआ है,
उसके आगे तुम्हारे लिए सपने जैसा है,और
तुम जिसे धर्म कहते हो ! उसको तो धर्म भी
नहीं कहा जा सकता! जिसके बाद पश्चिम ने
मेरे प्रवेश पर "रोक" लगा दी.. । -Osho

।। ओशो ।। नमन ।।

CS CamScanner

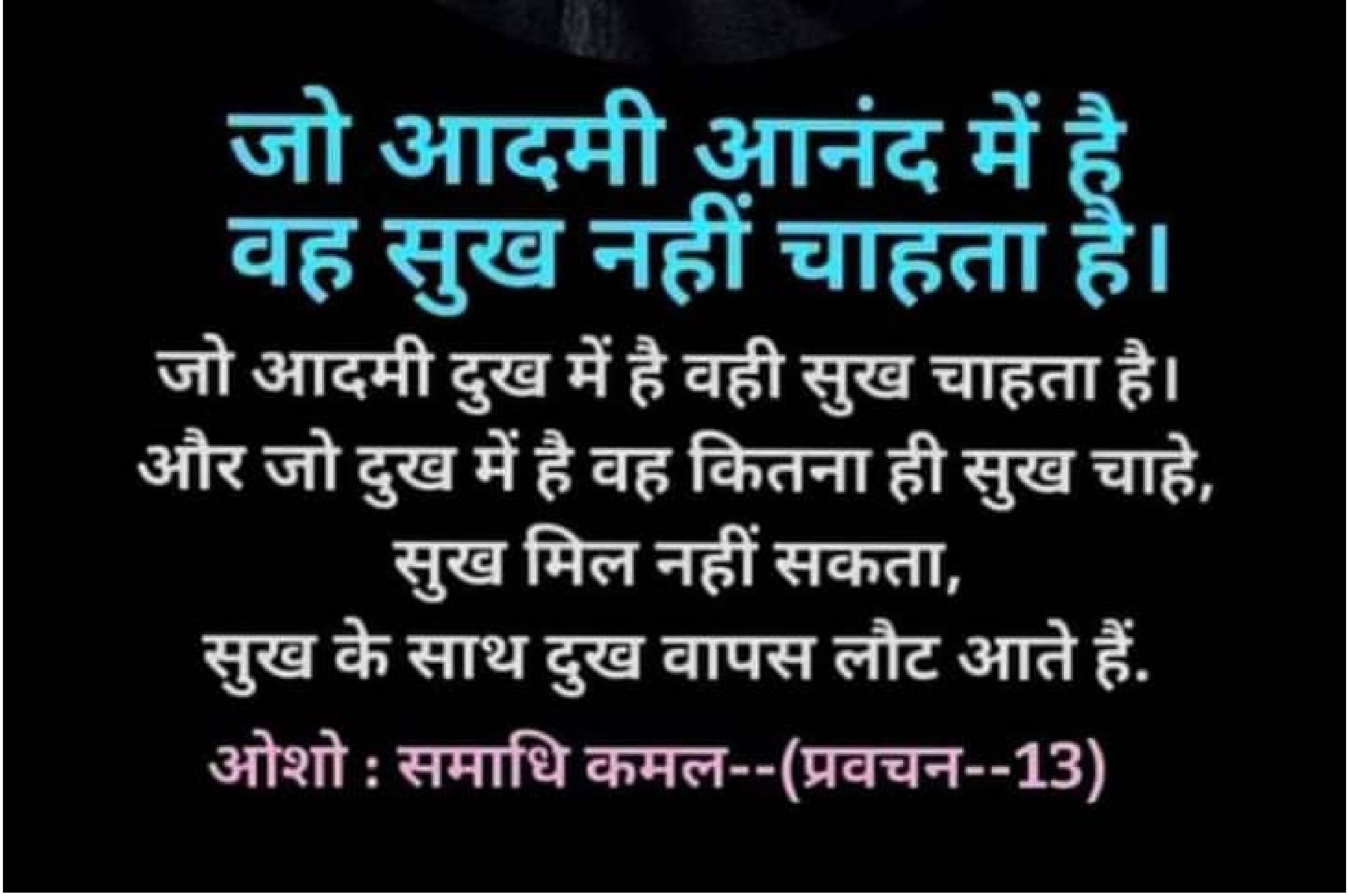
जो आदमी आनंद में है
वह सुख नहीं चाहता है।
जो आदमी दुख में है वही सुख चाहता है।
और जो दुख में है वह कितना ही सुख चाहे,
सुख मिल नहीं सकता,
सुख के साथ दुख वापस लौट आते हैं.
ओशो : समाधि कमल--(प्रवचन--13)

CamScanner

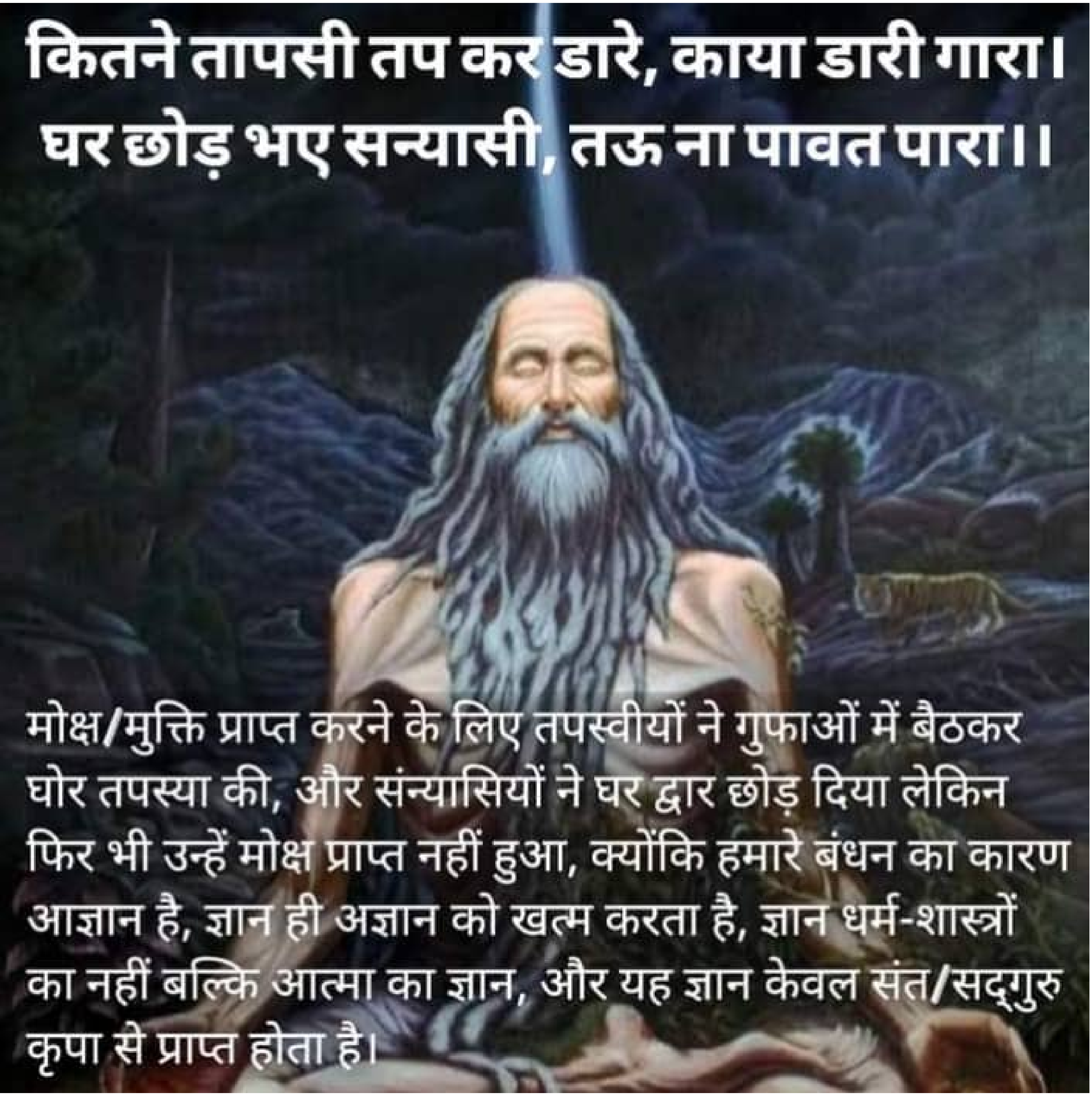

CS CamScanner

CamScanner

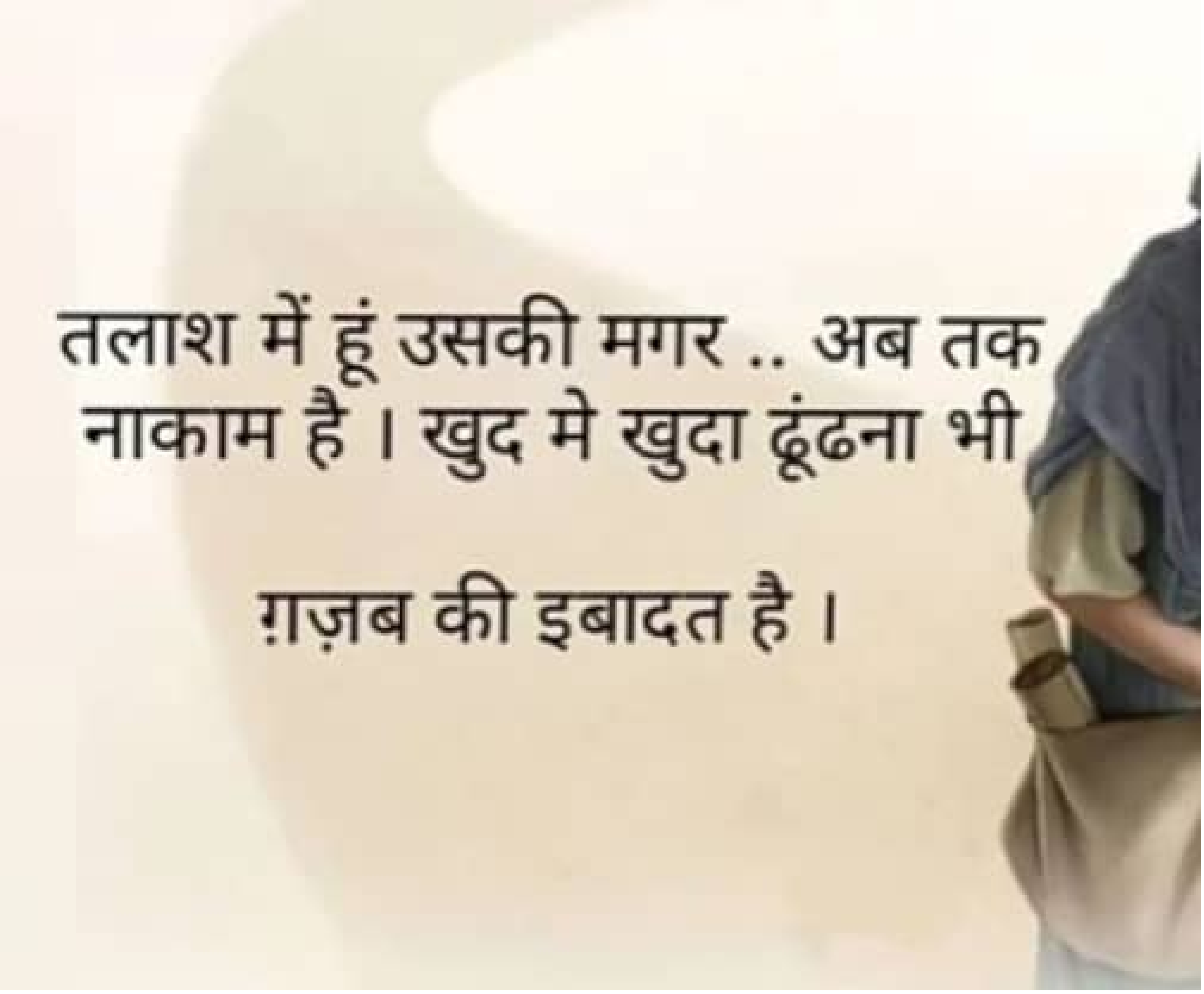

CamScanner

इस पृथ्वी पर हम हैं, पर इस पृथ्वी पर वस्तुतः हम न हो सकते हैं और न हम हैं। प्रतीत होता है, पृथ्वी पर हम अजनबी हैं। देह में घर किया है, लेकिन देह हमारा घर नहीं। जैसे कोई परदेस में बस जाये और भूल ही जाये स्वदेश को, फिर अचानक राह पर किसी दिन बाजार में कोई मिल जाये जो घर की याद दिला दे, जो अपनी भाषा में बोले—तो एक क्षण को परदेस मिट जायेगा, स्वदेश प्रगट हो जायेगा।शास्त्र का यही मूल्य है। शास्ताओं के वचनों का यही अर्थ है।

CamScanner

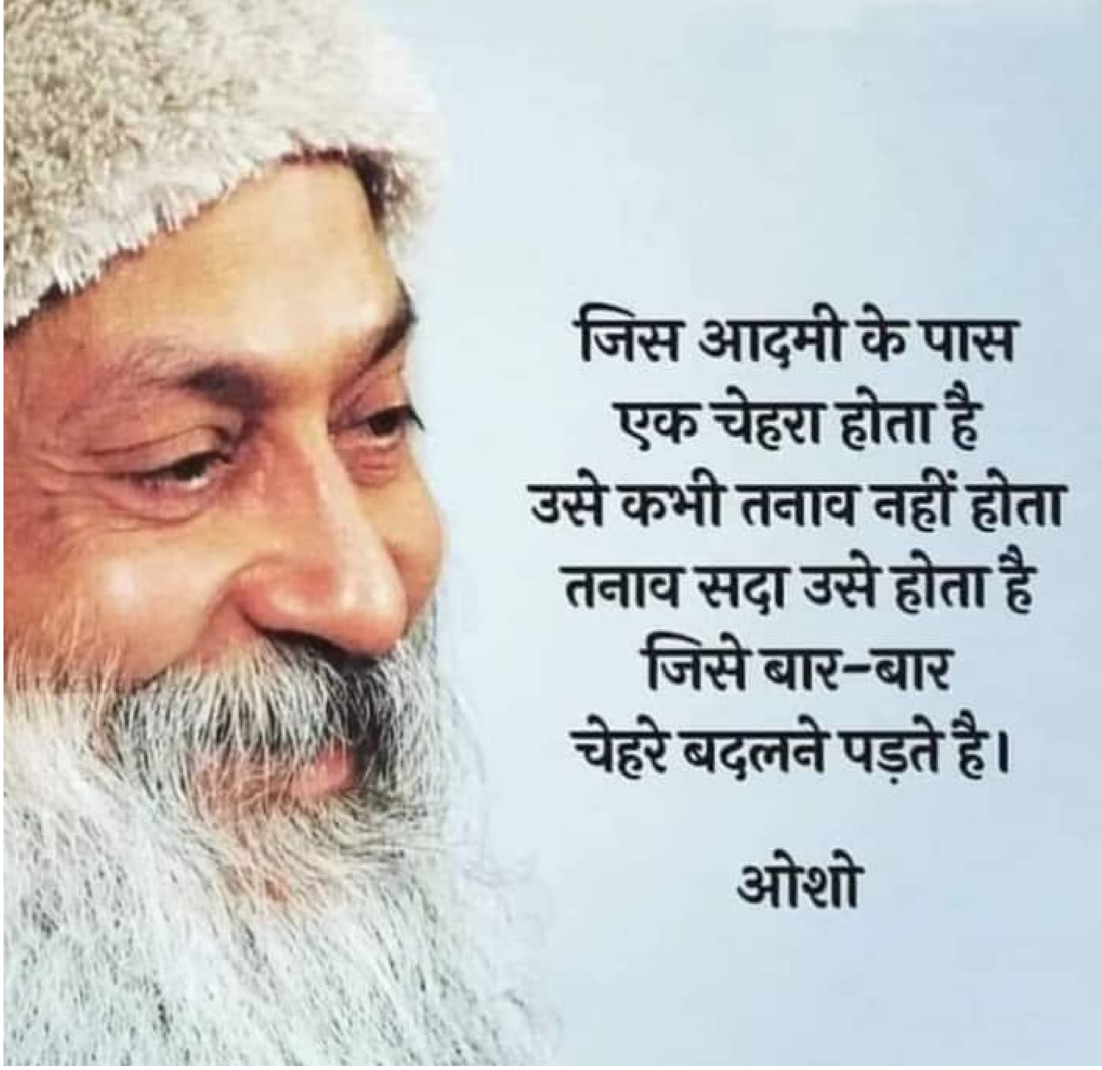
जिस आदमी के पास
एक चेहरा होता है
उसे कभी तनाव नहीं होता
तनाव सदा उसे होता है
जिसे बार-बार
चेहरे बदलने पड़ते है।
ओशो

CamScanner

फकीर बुलेशाह से जब किसी ने पूछा कि आप इतनी गरीबी में भी भगवान का शुक्रिया कैसे करते हैं तो बुलेशाह ने कहा..चढ़दे सूरज ढलदे देखे... बुझदे दीवे बलदे देखे. हीरे दा कोइ मुल ना जाणे.. खोटे सिक्के चलदे देखे. जिना दा न जग ते कोई, ओ वी पुत्तर पलदे देखे। उसदी रहमत दे नाल बंदे पाणी उत्ते चलदे देखे।लोकी कैंदे दाल नइ गलदी, मैं ते पत्थर गलदे देखे।जिन्हा ने कदर ना कीती रब दी, हथ खाली ओ मलदे देखे ....कई पैरां तो नंगे फिरदे, सिर ते लभदे छावा, मैनु दाता सब कुछ दित्ता, क्यों ना शुकर मनावा ।

CamScanner

त्याग का अर्थ घर छोड़ कर
भाग जाना नहीं, न दुकान
छोड़ कर भाग जाना है।
त्याग का अर्थ इतना ही है कि
तुम जहां भी हो, जिस स्थिति
में भी हो, उससे इतने ग्रसित
मत हो जाना कि जब वह
छीनी जाए तो तुम पीड़ा
से भर जाओ--बस!

ओशो

CS CamScanner

CamScanner

Prem ! Prbhu Osho...

Virendra Kumar · 1d ·

प्रश्न: ओशो, विश्वास तो नहीं होता था कि कृष्ण के साथ लोग नाचे होंगे। आपके आश्रम को देखकर भरोसा आया है कि ऐसा भी कभी हुआ होगा।

हम खुदा के कभी कायल ही न थे,
तुम्हें देखा तो खुदा याद आया।

सीताराम! धर्म जब भी जीवित होता है तब नाचता हुआ होता है; जब मर जाता है तब गुरु-गंभीर हो जाता है। धर्म जब जीवित होता है तो हंसता हुआ होता है। धर्म जब जीवित होता है तो आंखों में आंसू भी आनंद के ही आंसू होते हैं।
धर्म जब जीवित होता है तो पैरों में घूंघरु बंधते हैं, बांसुरी पर टेर उठती है, एकतारा बजता है। क्योंकि धर्म के जीवित होने का एक ही अर्थ हो सकता है: उत्सव। धर्म के जीवित होने का एक ही अर्थ हो सकता है: यौवन।

धर्म जब युवा होता है तो कृष्ण जैसे लोग पैदा होते हैं...
🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷
🙏💕🙏

सहज योग-9

CamScanner

अर्जुन श्री कृष्णजी से बोले :-
केशव ,जब मृत्यु सभी की होनी है तो हम सत्संग भजन सेवा सिमरन क्यों करे जो इंसान मौज मस्ती करता है मृत्यु तो उसकी भी होगी

श्री कृष्णजी ने अर्जुन से कहा :-
हे पार्थ
बिल्ली जब चूहे को पकड़ती है तो दांतो से पकड़कर उसे मार कर खा जाती है लेकिन उन्ही दांतो से जब अपने बच्चे को पकड़ती है तो उसे मारती नहीं बहुत ही नाजुक तरीके से एक जगह से दूसरी जगह पंहुचा देती है, दांत भी वही है मुह भी वही है पर परिणाम अलग अलग। ठीक उसी प्रकार मृत्यु भी सभी की होगी पर एक प्रभु के धाम में और दूसरा
84 के चक्कर में

CS CamScanner

दरख़्त-ऐ-नीम हूं, मेरे नाम से घबराहट तो होगी।
छाव ठंडी ही दूंगा, बेशक पत्तों में कड़वाहट होगी।

CamScanner

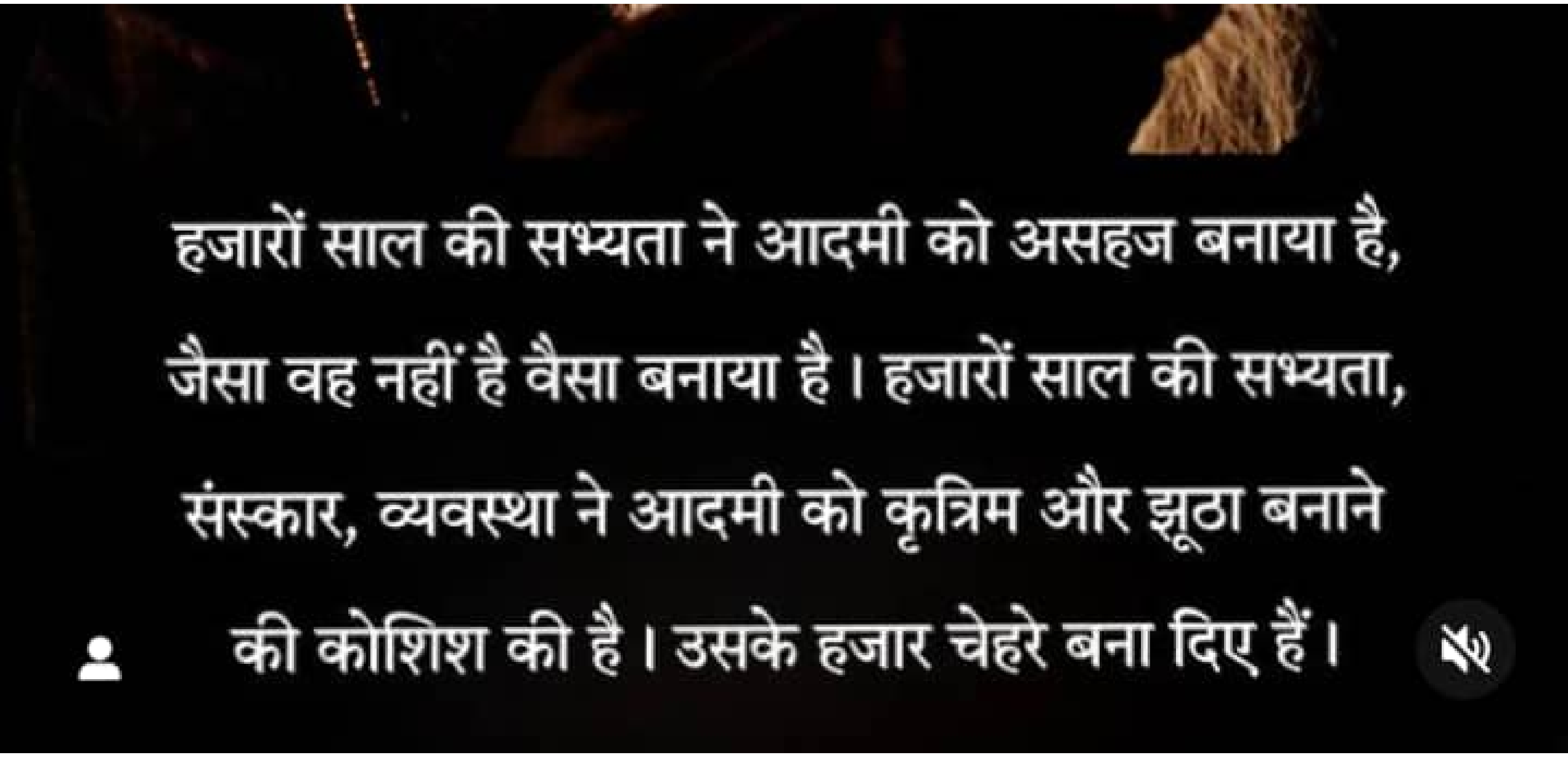
हजारों साल की सभ्यता ने आदमी को असहज बनाया है,
जैसा वह नहीं है वैसा बनाया है। हजारों साल की सभ्यता,
संस्कार, व्यवस्था ने आदमी को कृत्रिम और झूठा बनाने
की कोशिश की है। उसके हजार चेहरे बना दिए हैं।

CamScanner

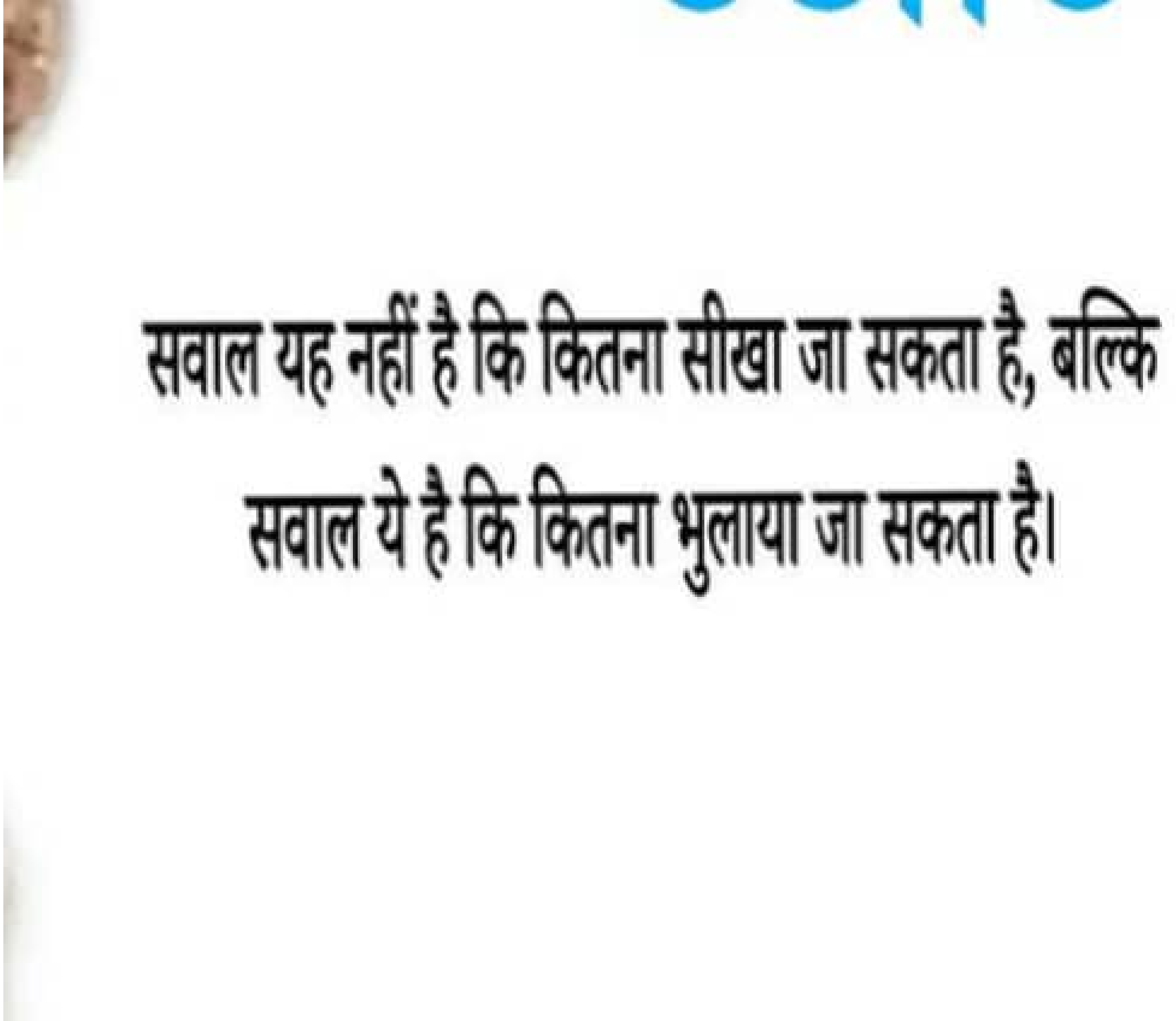

CamScanner

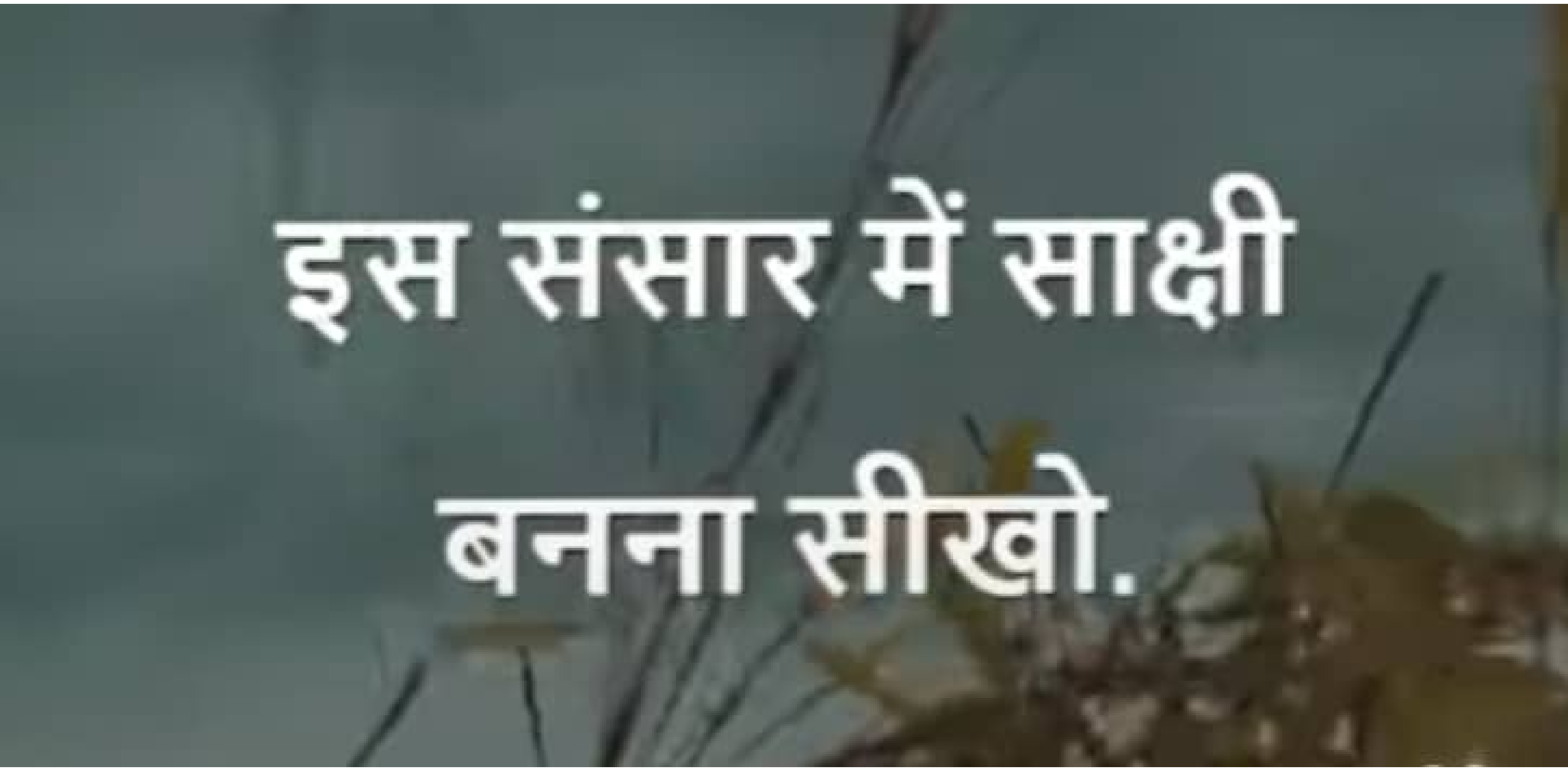

CamScanner

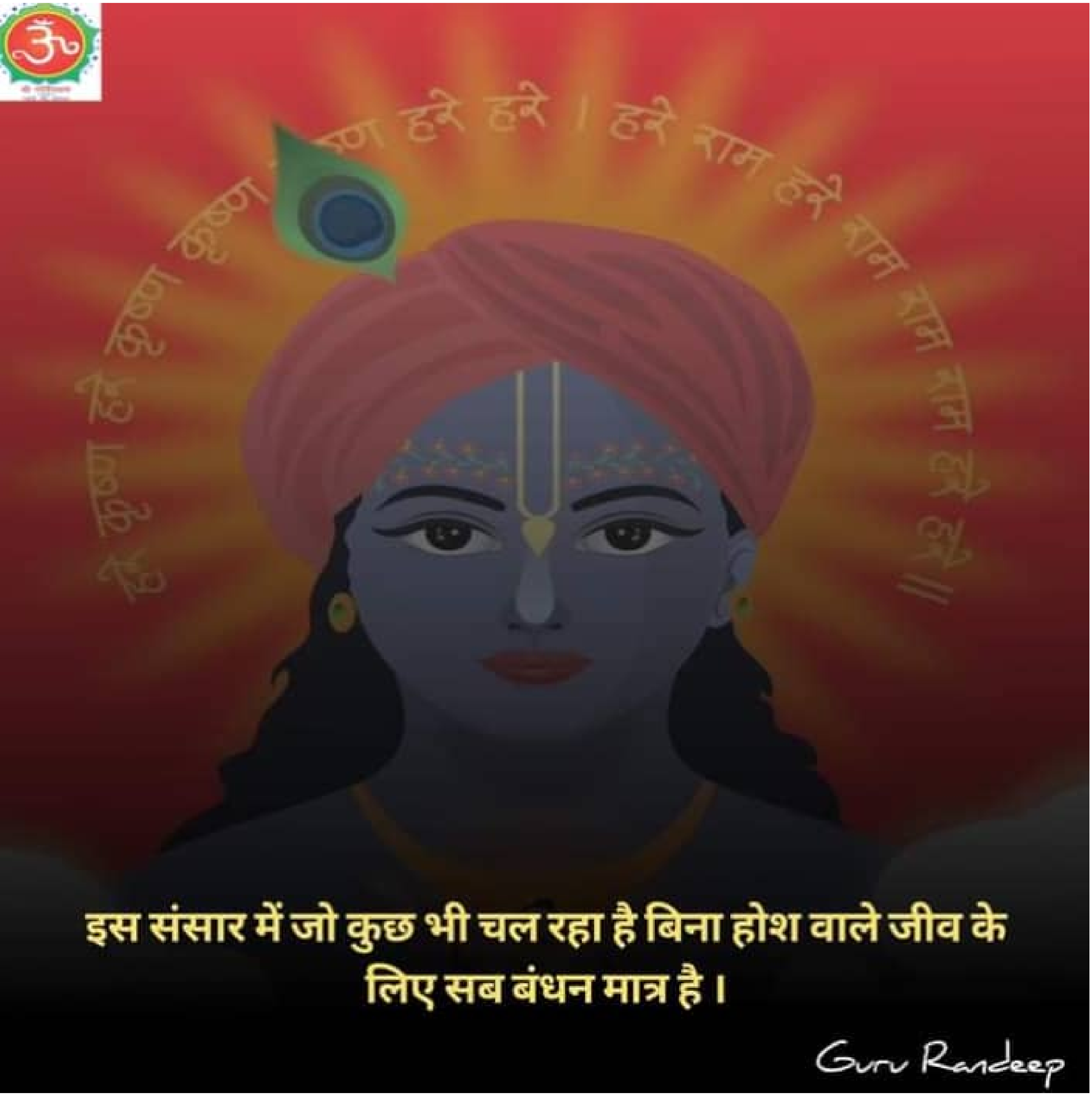
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण
हरे हरे । हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
इस संसार में जो कुछ भी चल रहा है बिना होश वाले जीव के लिए सब बंधन मात्र है ।
Guru Randeep

CamScanner

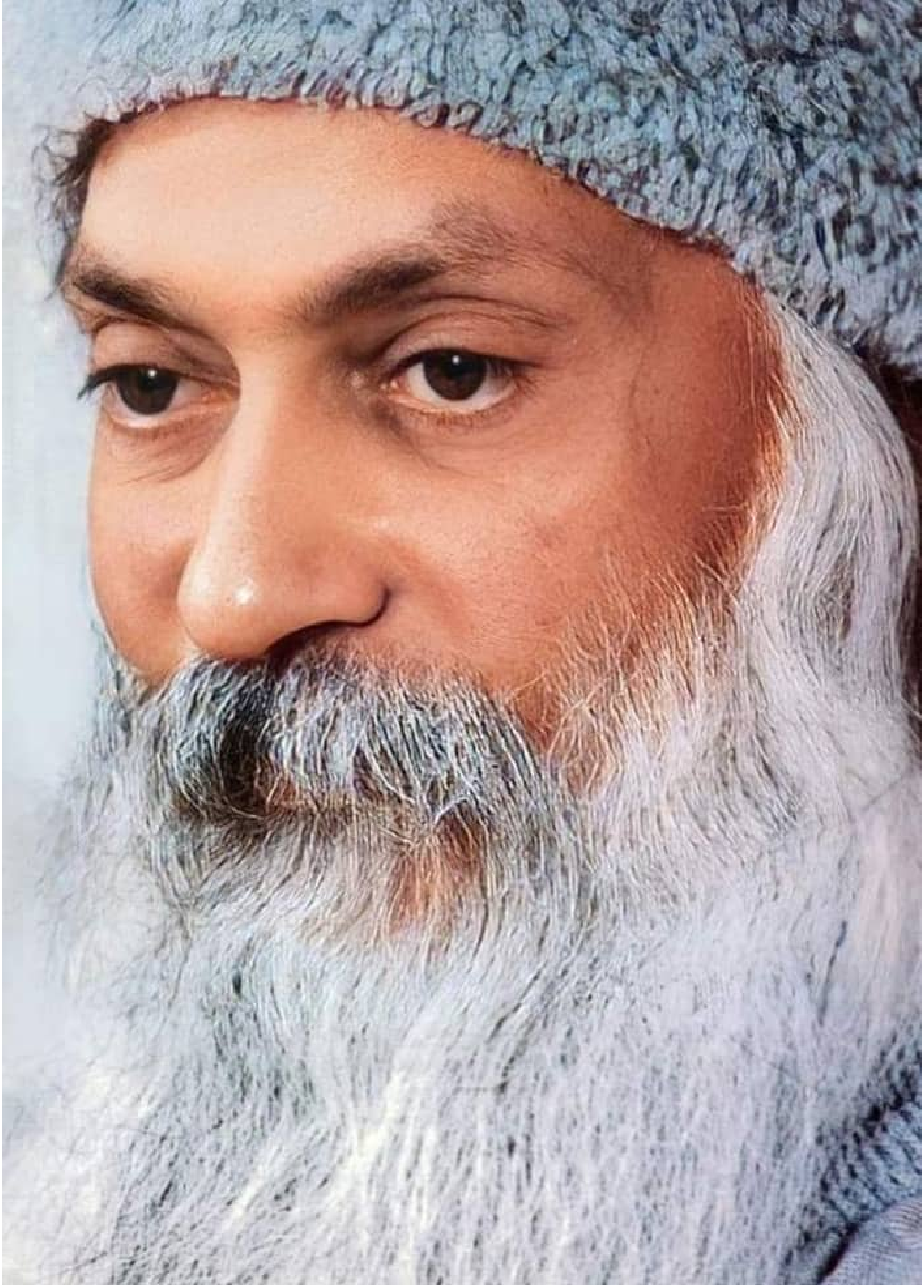

CamScanner

प्रकृति की बड़ी गहन रचना है
जो मिल जाए,
उसमें आकर्षण समाप्त हो जाता है..!!
जो न मिले तो आकर्षण बना रहता है..!!

CamScanner

जीवन की 3 बातें

1- गलतफहमी दूर न की जाएँ तो वो नफरत में बदल जाती है ।

2- जो शख्स आपसे दूसरों की कमियाँ बयान करता है, वो दूसरों से निश्चित आपकी बुराई करता होगा।

3- पानी जैसे बनो, जो अपना रास्ता खुद बनाता है, पत्थर जैसे नहीं, जो अपना रास्ता खुद रोकता है ।

CamScanner

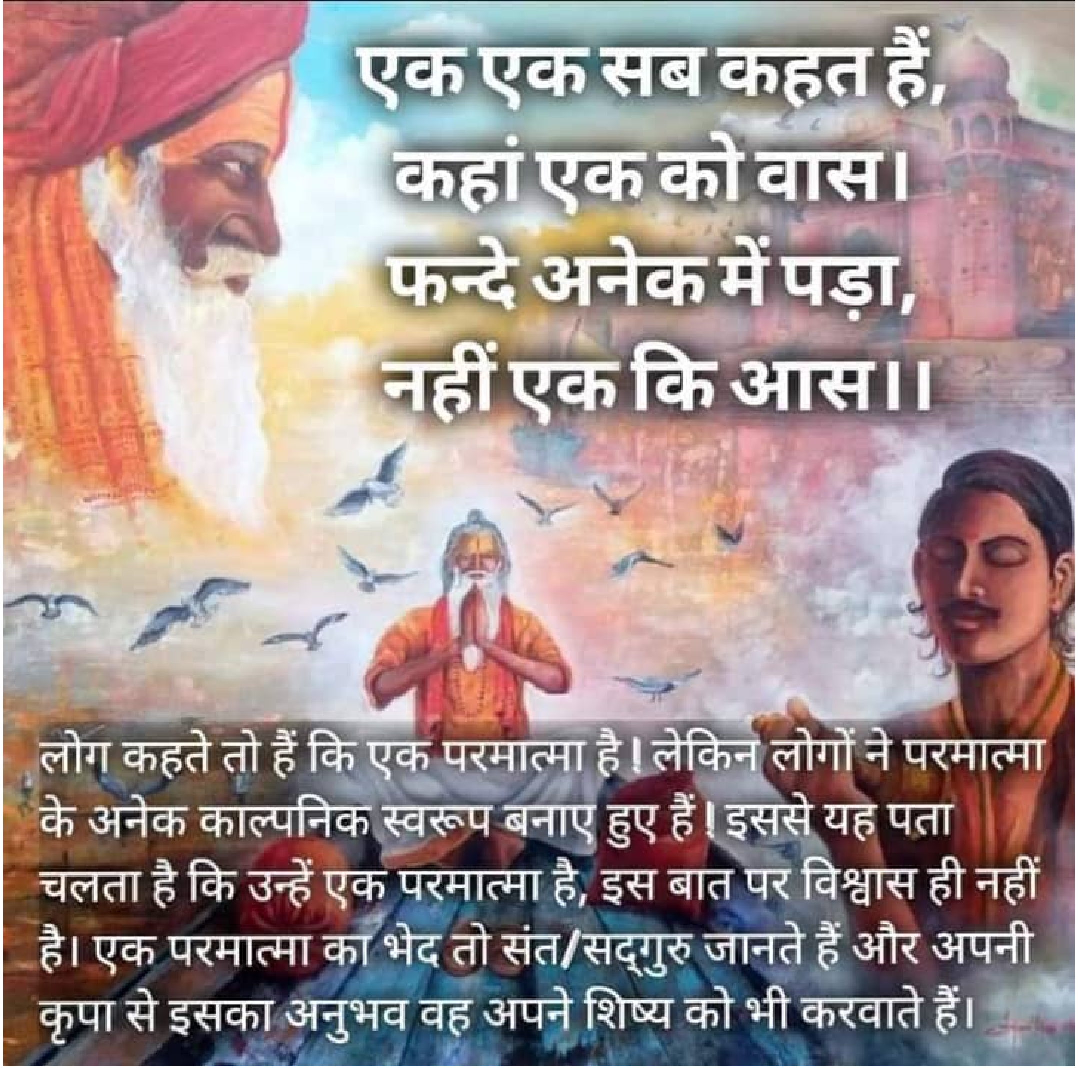
एक एक सब कहत हैं,
कहां एक को वास।
फन्दे अनेक में पड़ा,
नहीं एक कि आस।।
लोग कहते तो हैं कि एक परमात्मा है। लेकिन लोगों ने परमात्मा के अनेक काल्पनिक स्वरूप बनाए हुए हैं। इससे यह पता चलता है कि उन्हें एक परमात्मा है, इस बात पर विश्वास ही नहीं है। एक परमात्मा का भेद तो संत/सद्गुरु जानते हैं और अपनी कृपा से इसका अनुभव वह अपने शिष्य को भी करवाते हैं।

CamScanner

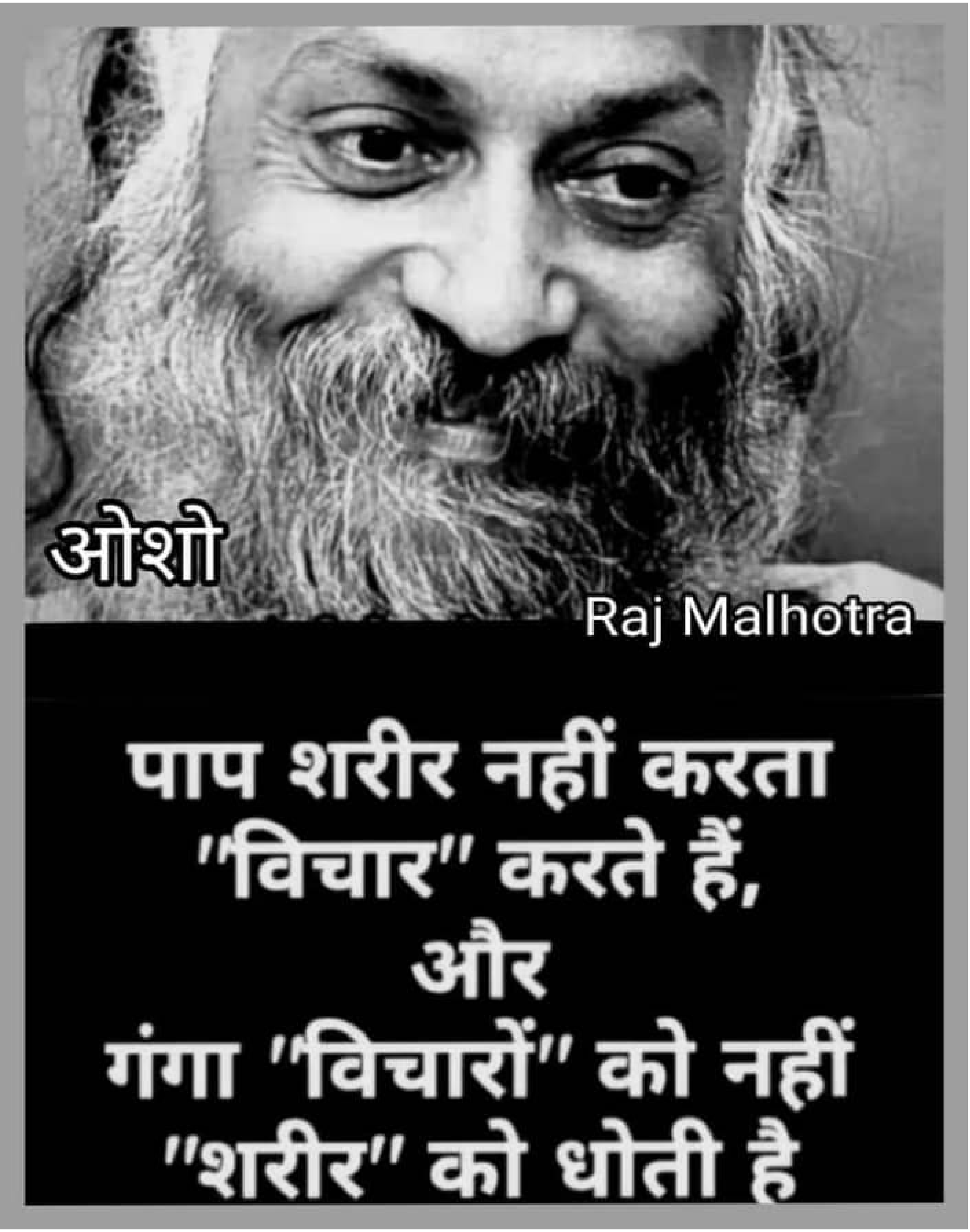

CS CamScanner

12:55 pm 1 KB/s 79%

Like Comment Share

ओशो - जीवन-मृत्यु

Girish Waghela · 13m ·

ओशो प्रेम नमन

प्रभु का रास्ता बडा सीधा हैं, और बड़ा उलझा भी।
बुध्दि से चलो तो बड़ा उलझा, भाव से चलो तो बड़ा सीधा ।
विचार से चलो तो बड़ा दूर, भाव से चलो तो बहुत पास....!!

-ओशो🌹

जिस को भी देखो तेरे दर का पता पूछता है....
क़तरा क़तरे से समुंदर का पता पूछता है....

4 1 share

Like Comment Share

TrulyMadly: Indian Dating App
Sponsored ·

Start your love story!

CamScanner

मंदिरो में आरती की तेज आवाज,

मस्जिदों में नमाज़ और गिरिजाघरों में

प्रार्थना लोगो द्वारा सुनी जाती है,

परमेश्वर द्वारा नही।

ईश्वर केवल मौन आवाज सुनता है,

जो हमारे हृदय के अन्तमार्ग से

निकलगी है।

CamScanner

मृत्यु ने जीवन से पूछा..!

क्यों हर कोई तुमसे प्यार करता है लेकिन
मुझसे नफरत करता है..?

जीवन ने जवाब दिया ..!

क्योंकि मैं एक खुबसूरत झूठ हूं और तुम
एक दर्दनाक सच हो..!

CamScanner

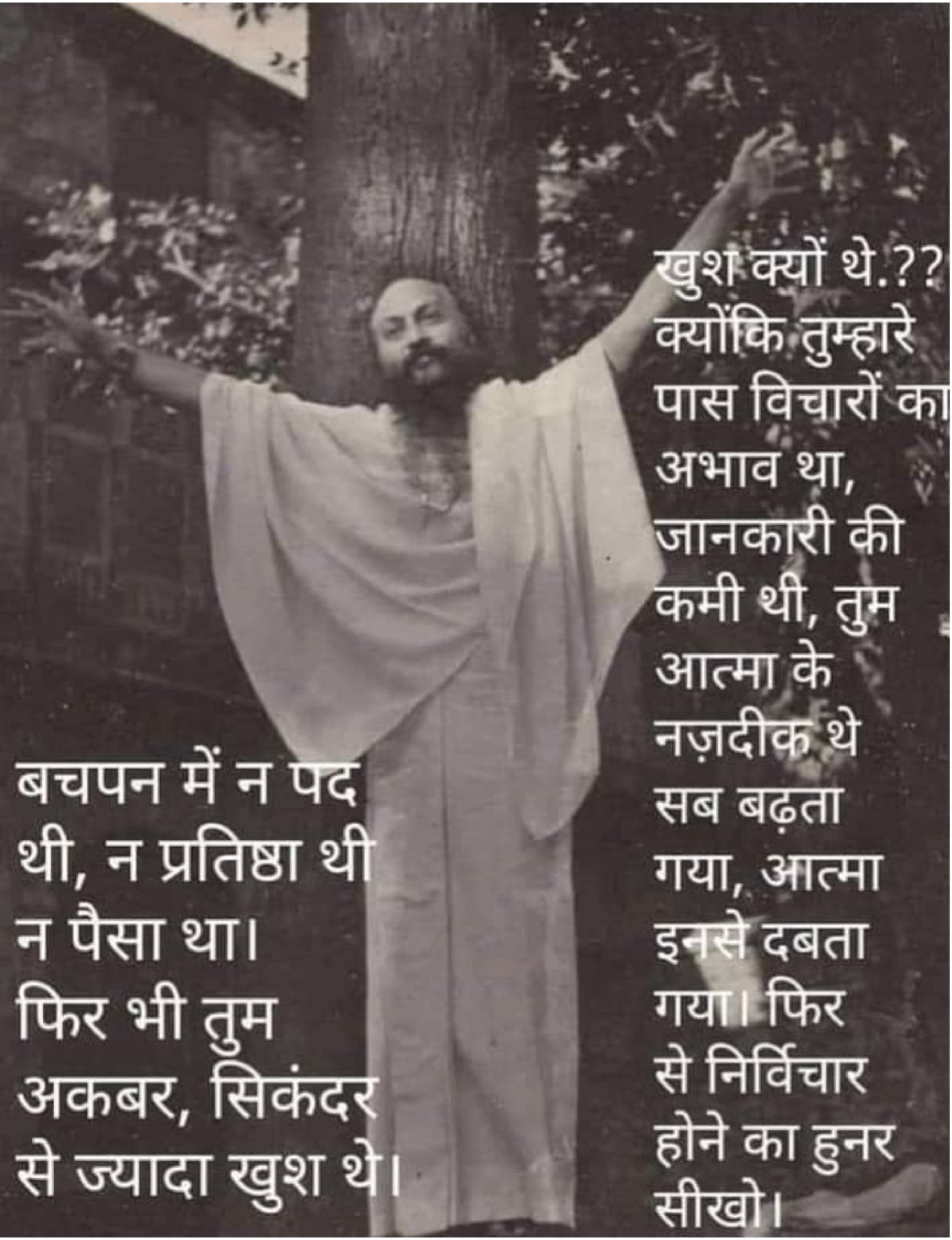
बचपन में न पद
थी, न प्रतिष्ठा थी
न पैसा था।
फिर भी तुम
अकबर, सिकंदर
से ज्यादा खुश थे।
खुश क्यों थे.??
क्योंकि तुम्हारे
पास विचारों का
अभाव था,
जानकारी की
कमी थी, तुम
आत्मा के
नज़दीक थे
सब बढ़ता
गया, आत्मा
इनसे दबता
गया। फिर
से निर्विचार
होने का हुनर
सीखो।

CamScanner

पाप है क्या?
अंधकार से भरे हुए आदमी के
कृत्य का नाम पाप है।
अज्ञान से पैदा हुए कृत्य का नाम पाप है।
ज्ञान से पैदा हुए कृत्य का नाम पुण्य है।
इसीलिए मैं तुमसे नहीं कहता कि
पाप मत करो, पुण्य करो;
मैं कहता हूं : अज्ञान को तोड़ो
और ज्ञान को जगाओ।
नींद हटाओ, होश को जगाओ।
और होश के बाद तुम जो करोगे, वह पुण्य है।
और बेहोशी में तुम जो करोगे, वह पाप है।
मेरी व्याख्या सीधी—साफ है।

मेरा स्वर्णिम भारत, प्रवचन-२६, ओशो

CS CamScanner

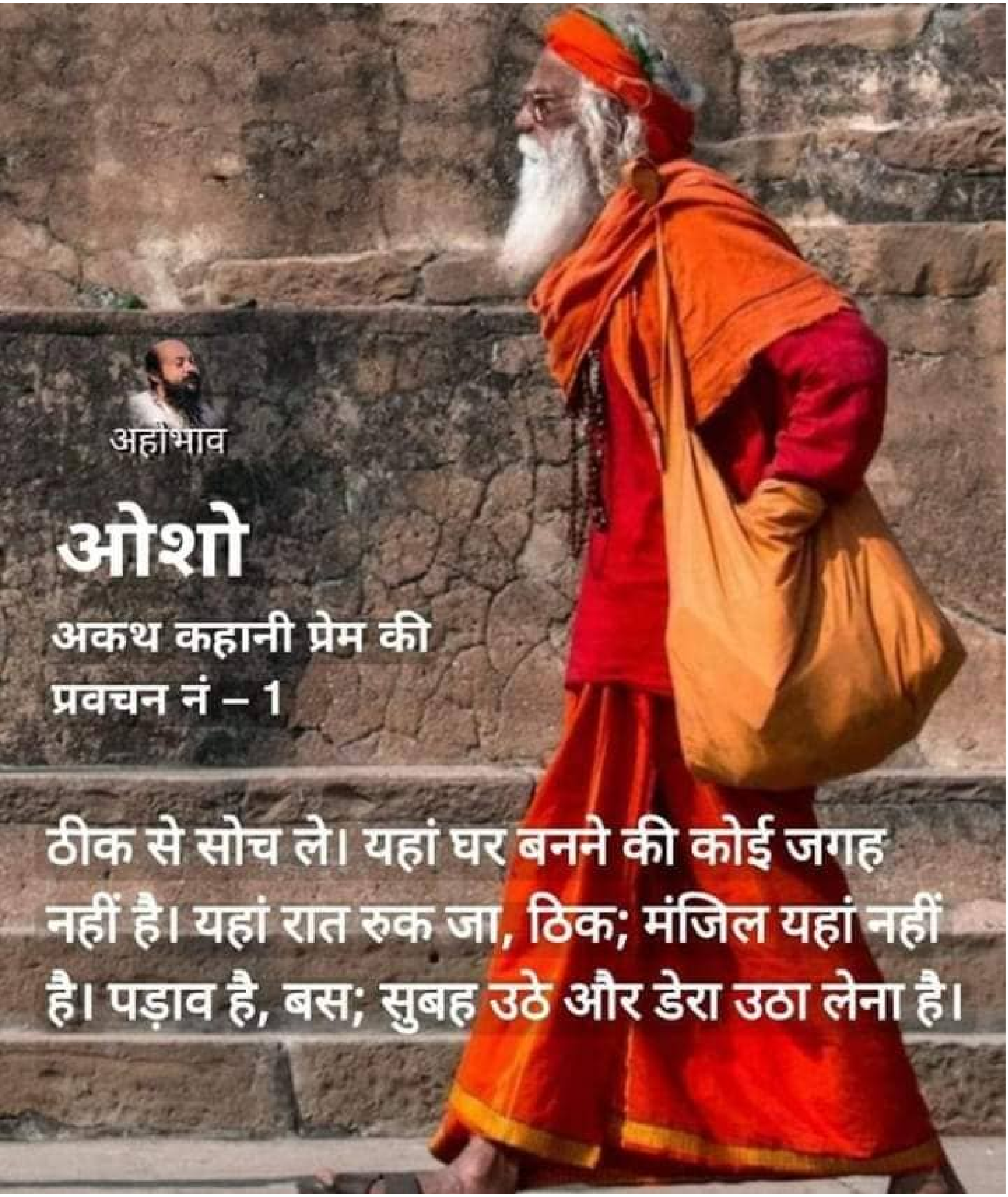
अहोभाव
ओशो
अकथ कहानी प्रेम की
प्रवचन नं – 1
ठीक से सोच ले। यहां घर बनने की कोई जगह नहीं है। यहां रात रुक जा, ठिक; मंजिल यहां नहीं है। पड़ाव है, बस; सुबह उठे और डेरा उठा लेना है।

CamScanner

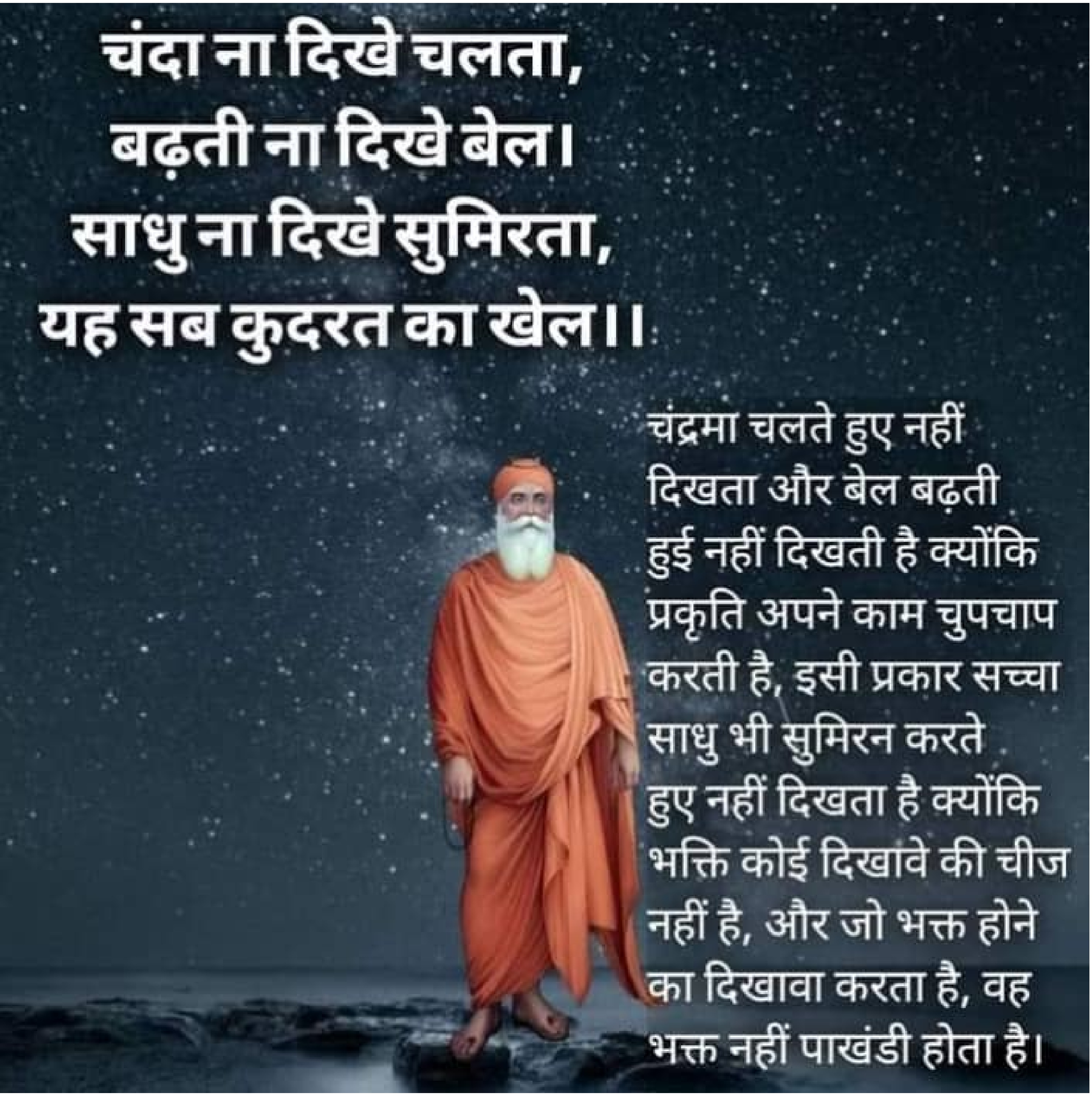
चंदा ना दिखे चलता,
बढ़ती ना दिखे बेल।
साधु ना दिखे सुमिरता,
यह सब कुदरत का खेल।।
चंद्रमा चलते हुए नहीं
दिखता और बेल बढ़ती
हुई नहीं दिखती है क्योंकि
प्रकृति अपने काम चुपचाप
करती है, इसी प्रकार सच्चा
साधु भी सुमिरन करते
हुए नहीं दिखता है क्योंकि
भक्ति कोई दिखावे की चीज
नहीं है, और जो भक्त होने
का दिखावा करता है, वह
भक्त नहीं पाखंडी होता है।

CamScanner

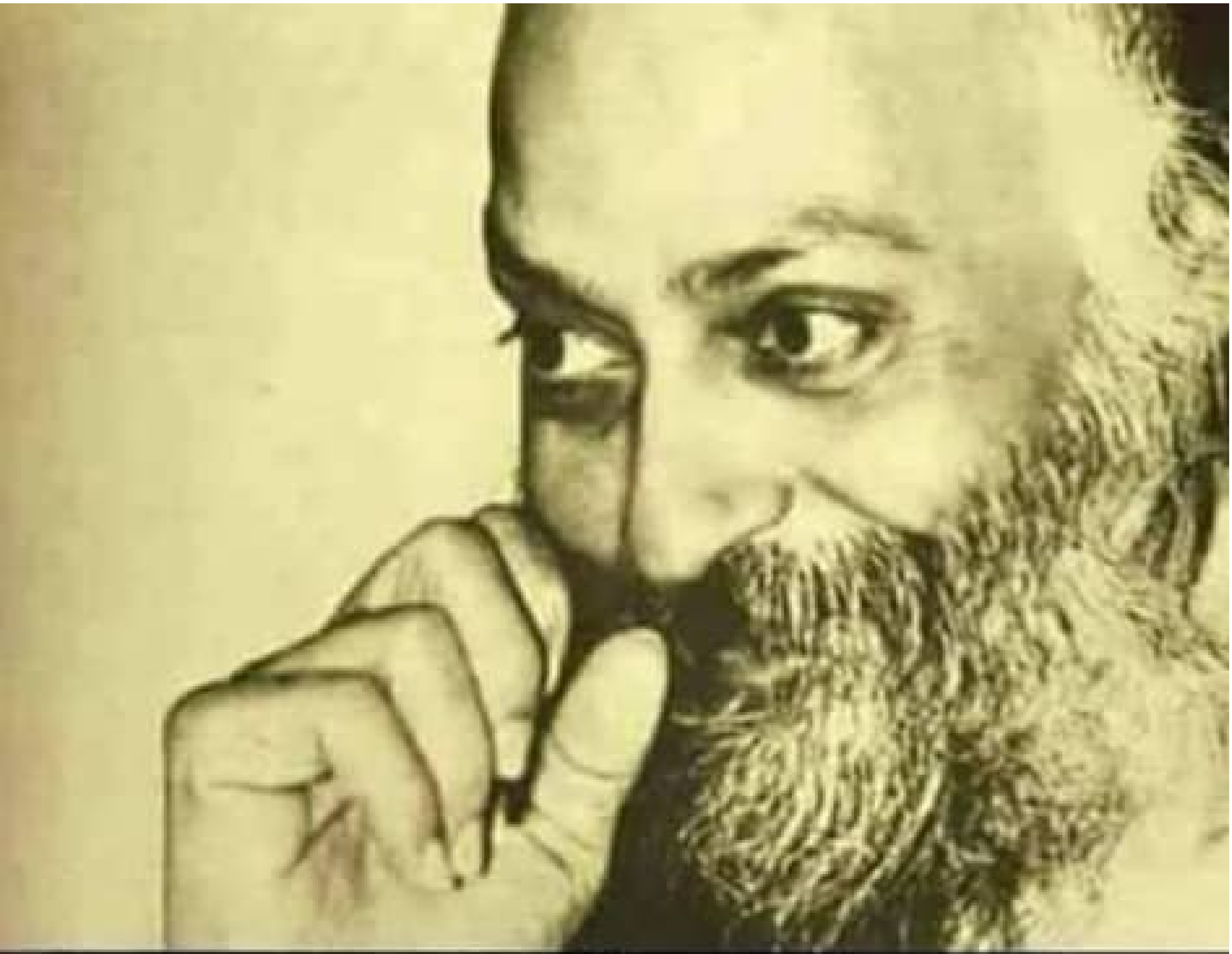

यदि चाहते हो कि जीवन में आनंद ही आनंद हो जाए,
कि कोई भी चोट चोट न रहे,
कि कोई पत्थर भी मारे तो फूल की वर्षा हो,
कि कोई जहर भी पिलाए तो अमृत हो जाए
--तो उसका एक ही रास्ता है:
अपेक्षाओं को छोड़ दो, निरपेक्ष होकर जीओ।
और निरपेक्षता तुम्हारे हाथ में है,
कोई दूसरा तुम्हें दे न सकेगा।

CamScanner

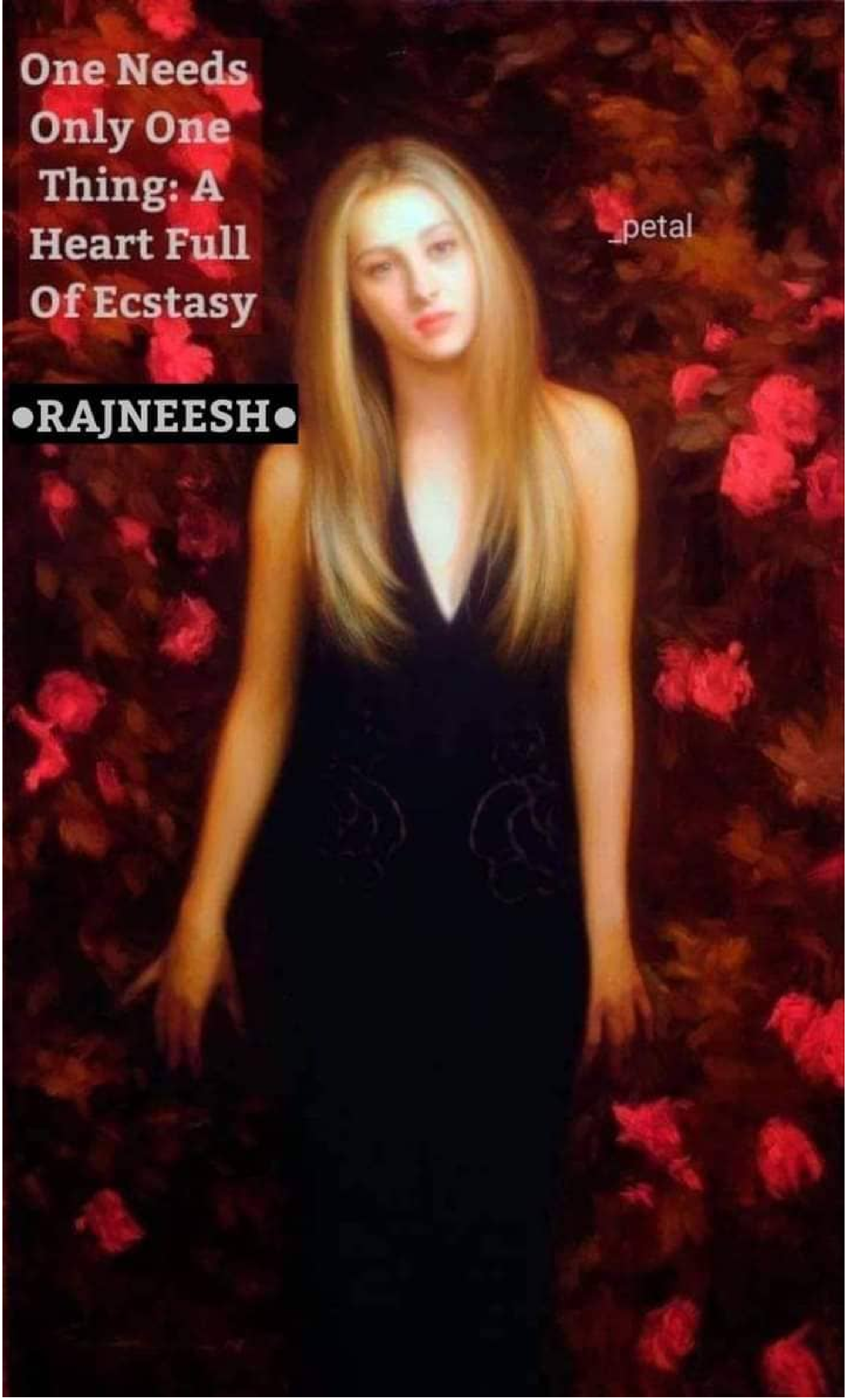
One Needs Only One Thing: A Heart Full Of Ecstasy
•RAJNEESH•
_petal

CamScanner

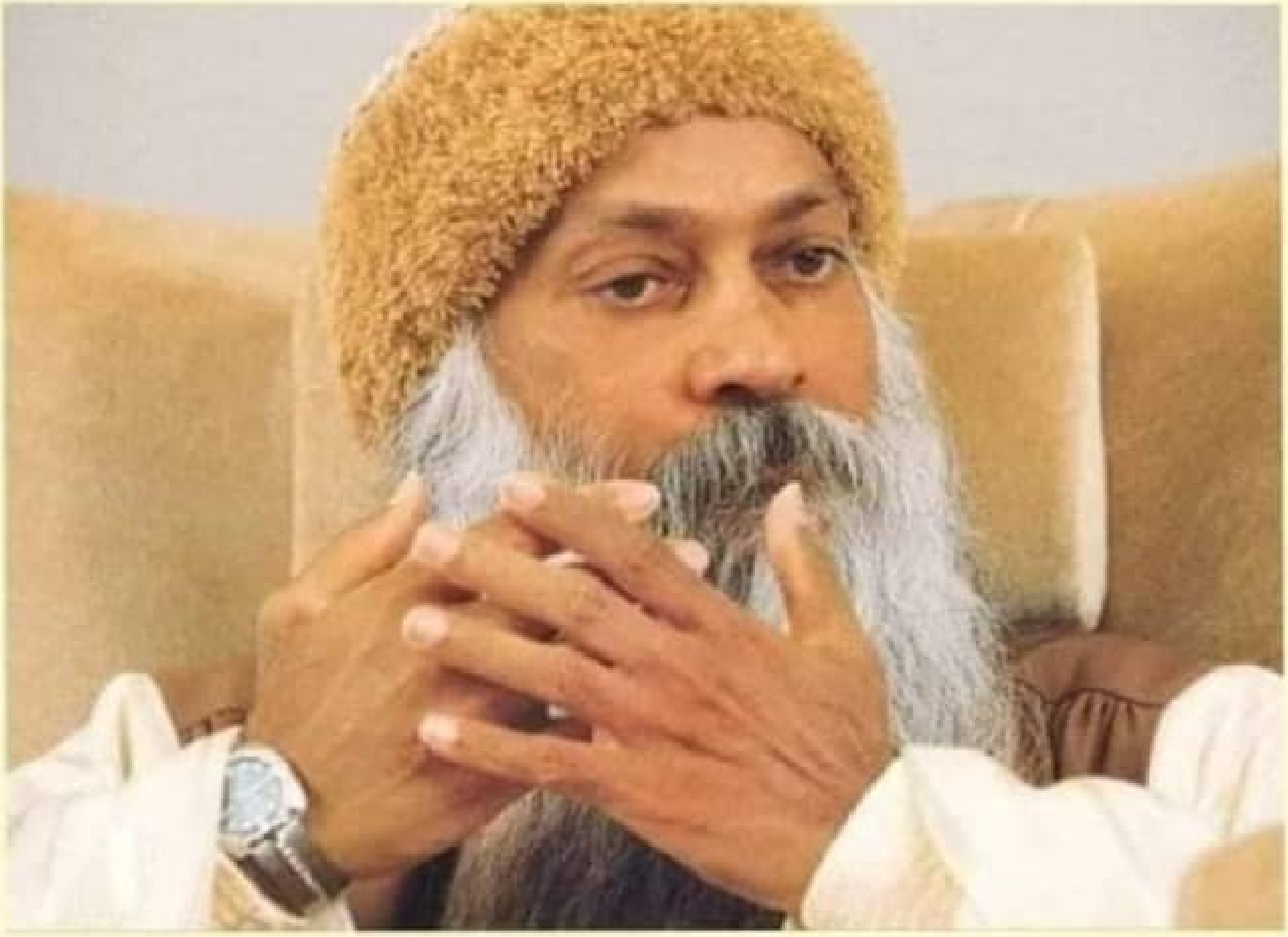

"एक बार भी कोई पूर्ण हृदय से कह पाए-
'जो तेरी मर्जी -उसके जीवन से दुख विदा हो
जाता है। 'मेरी मर्जी में चिंता है, भय है।
'उसकी मर्जी में शांति है, आनंद है।"

अहोभाव
ओशो

CamScanner

जीवन में कोई भी भलाई व्यर्थ नहीं जाती किसी ना किसी रूप में लौटकर जरूर आती है यह प्राकृतिक नियम है।

CS CamScanner

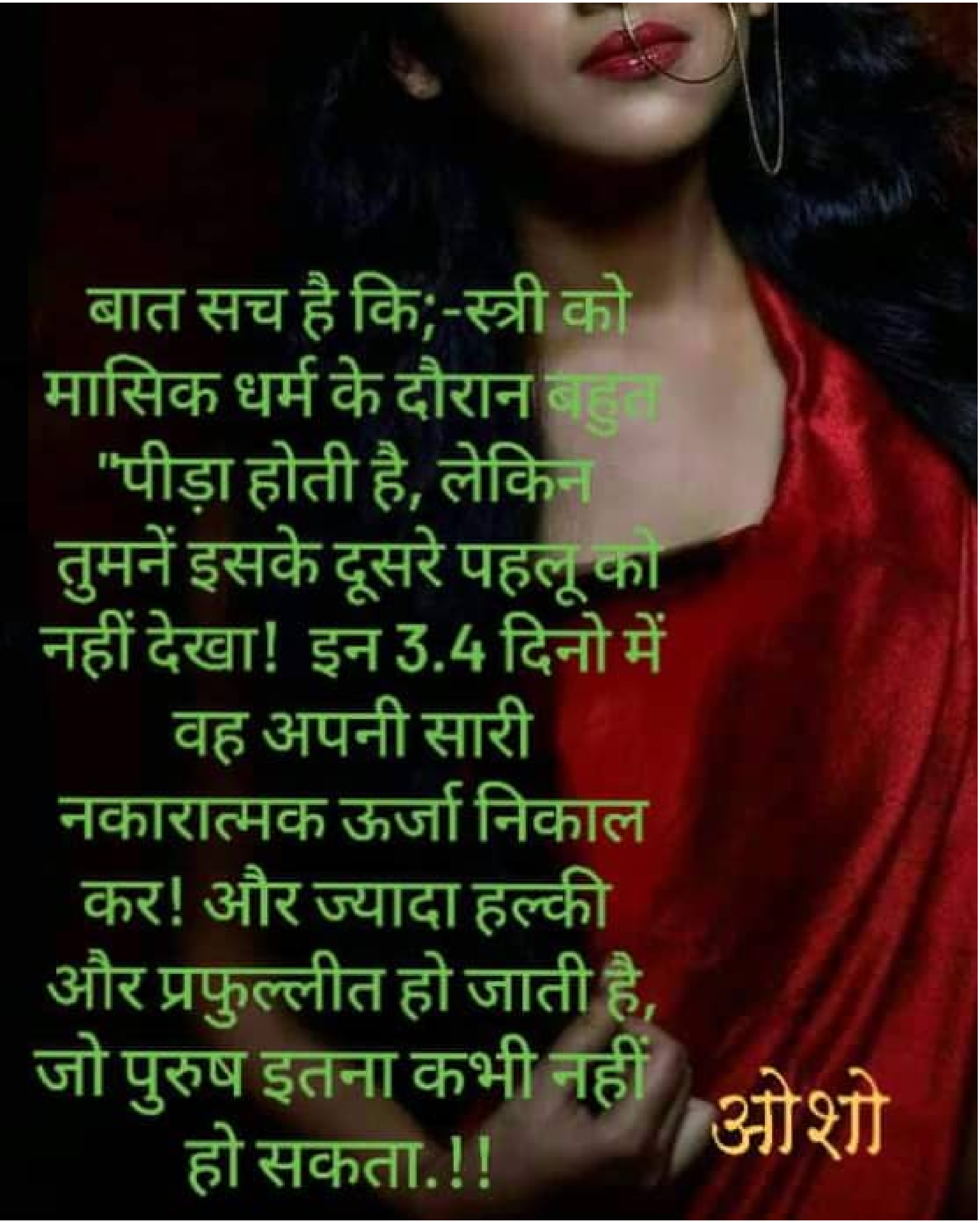
बात सच है कि;-स्त्री को
मासिक धर्म के दौरान बहुत
"पीड़ा होती है, लेकिन
तुमनें इसके दूसरे पहलू को
नहीं देखा! इन 3.4 दिनो में
वह अपनी सारी
नकारात्मक ऊर्जा निकाल
कर! और ज्यादा हल्की
और प्रफुल्लीत हो जाती है,
जो पुरुष इतना कभी नहीं
हो सकता.!!
ओशो

CamScanner

भलाई में कितनी ही विफलता मिले, और
अंतर्यात्रा में कितनी ही चूकें हो जायें और
कितनी ही बार गिरना हो जाये, घबड़ाना
मत; उस यात्रा पर सभी विफलताएं
सफलताएं बन जाती है।उस तरफ भूलें
करना भी बड़ा गौरव है,बड़ा गुण है।चोर
होकर कुशल हो जाना भी अच्छा नहीं और
ध्यानी होकर अकुशल बने रहना भी अच्छा है

CamScanner

ओशो

समस्या को अगर ठीक से समझ लिया जाए तो वह हल हो जाती है, क्योंकि समस्या उठती ही समझ के अभाव से है। तुम समस्याएँ खड़ी करते हो, क्योंकि समझ नहीं है:

Raj Malhotra

CamScanner

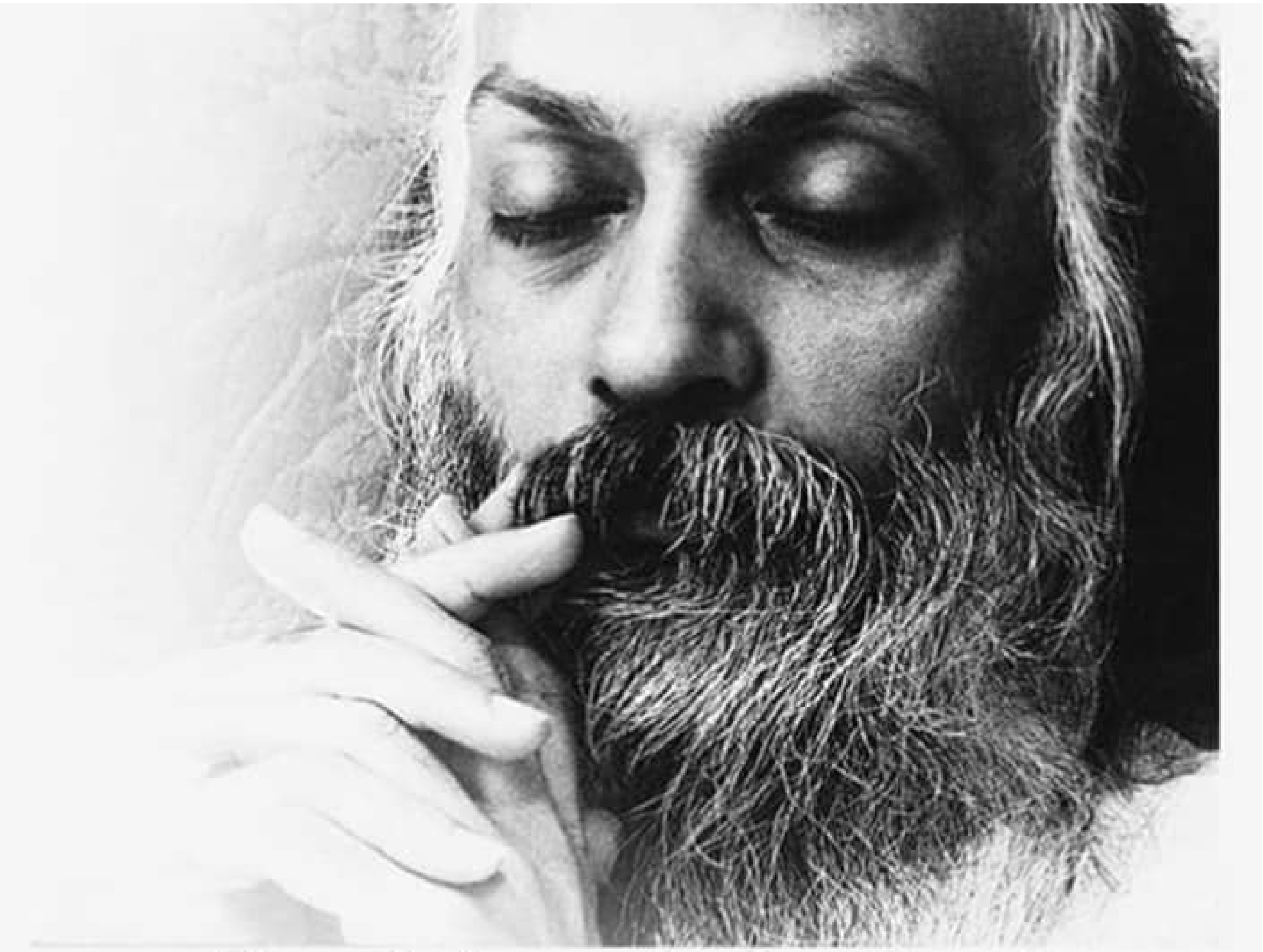

उसकी मस्ती ने ,मुझको जीना सिखा दिया,
एक बूंद में ही,पूरा समंदर दिखा दिया.
मैं टटोल रहा था, जिसे देर -ओ-हरम में,
बन्द आँख से उसने सारा मंजर दिखा दिया.....

CS CamScanner

मैंने कोई नियम तुम्हें नहीं दिए।
या तो तुम धार्मिक होओ, या अधार्मिक।
बीच की मैंने तुम्हें सुविधा नहीं दी है।
इसलिए मैं तुम्हें वही आखिरी बात कहता हूं
जो बुद्ध ने आनंद को कही, होश साधना।
आंख बंद करना, न करना; क्या फर्क पड़ता है।
मेरी दृष्टि में ऐसा है कि अगर तुमने होश साधा
–आंख खुली रखो, स्त्री को छुओ, धन कमाओ, मकान में रहो,
बाजार में बैठो, कोई अंतर नहीं पड़ता।
होश न सधा–आंख बंद रखी, जंगल में भाग गए,
धन न छुआ, नंगे खड़े हो गए, सब त्याग दिया,
तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता।

होश से ही क्रांति होती है।

इसलिए होश अकेला नियम है, एकमात्र नियम।
एस धम्मो सनंतनो।
यही एकमात्र सनातन नियम है।

आचार्य श्री रजनीश

एस धम्मो सनंतनो-(प्र-04)
अकंप चैतन्य ही ध्यान

CS CamScanner

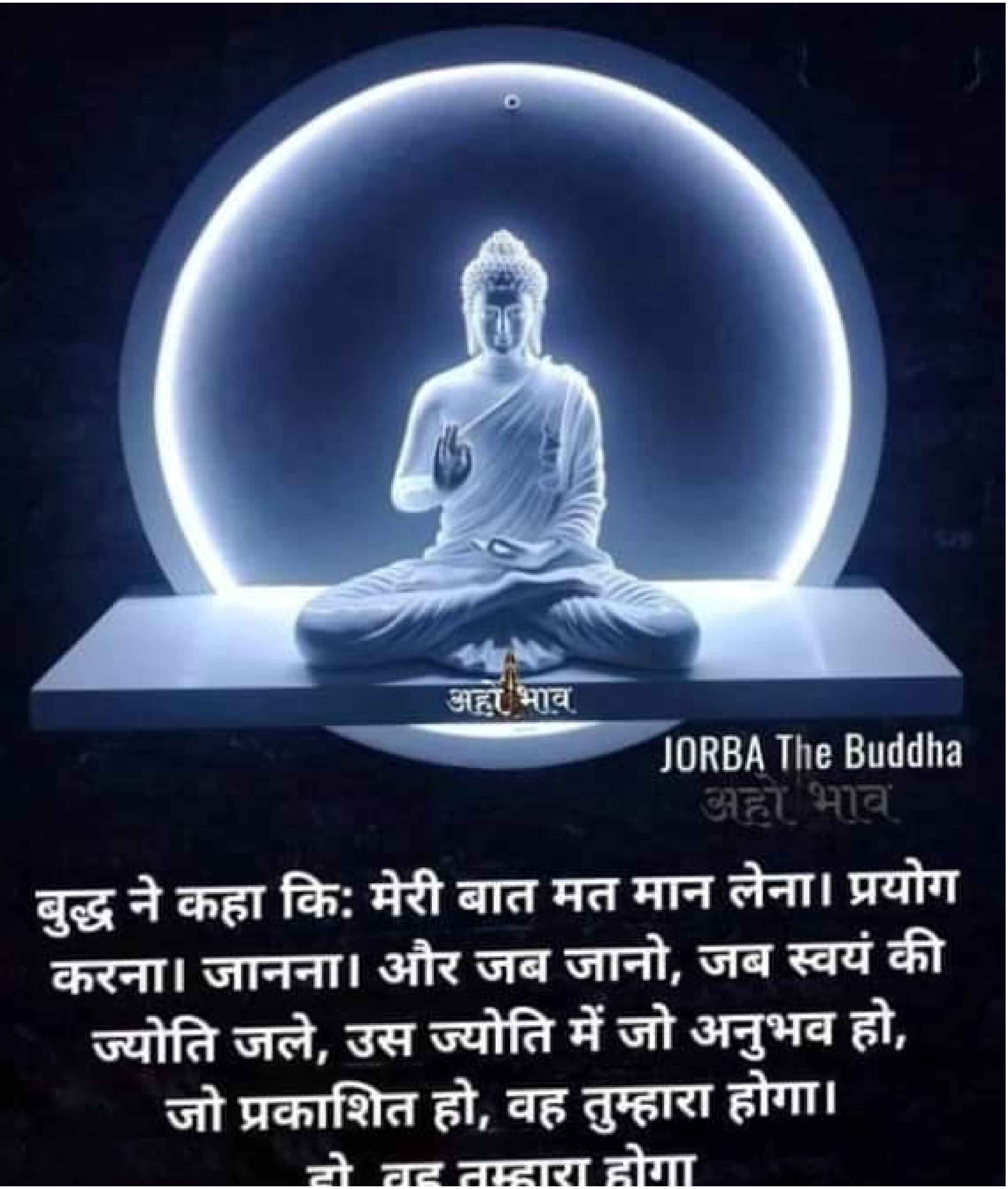

CS CamScanner

इंसान घर बदलता है
रिश्ता बदलता है
दोस्त भी बदलता है
फिर भी
परेशान क्यूं है
क्यों की वह
अपने आपको नहीं बदलता

CamScanner

CS CamScanner

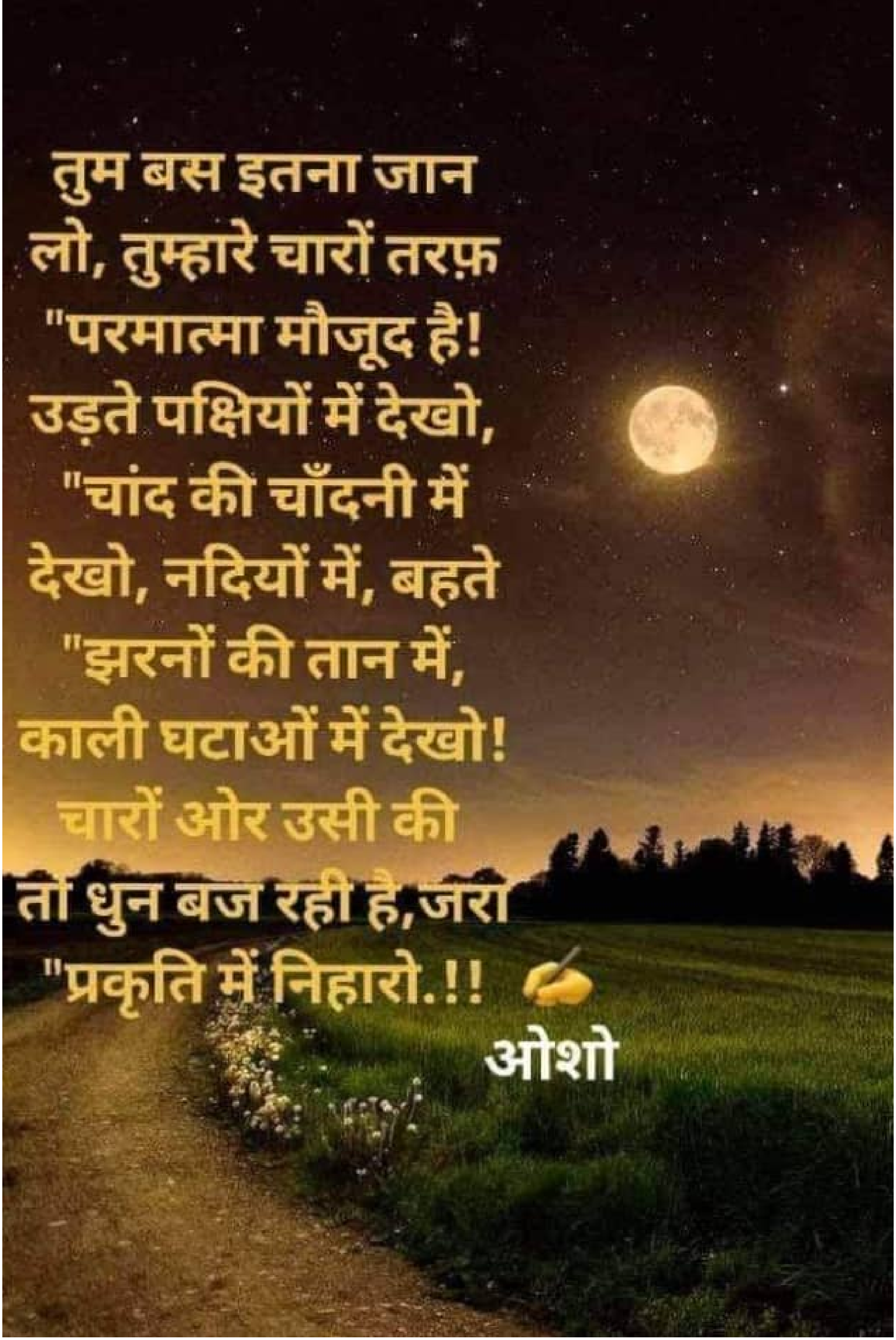
तुम बस इतना जान
लो, तुम्हारे चारों तरफ़
"परमात्मा मौजूद है!
उड़ते पक्षियों में देखो,
"चांद की चाँदनी में
देखो, नदियों में, बहते
"झरनों की तान में,
काली घटाओं में देखो!
चारों ओर उसी की
तो धुन बज रही है, जरा
"प्रकृति में निहारो.!!
ओशो

CamScanner

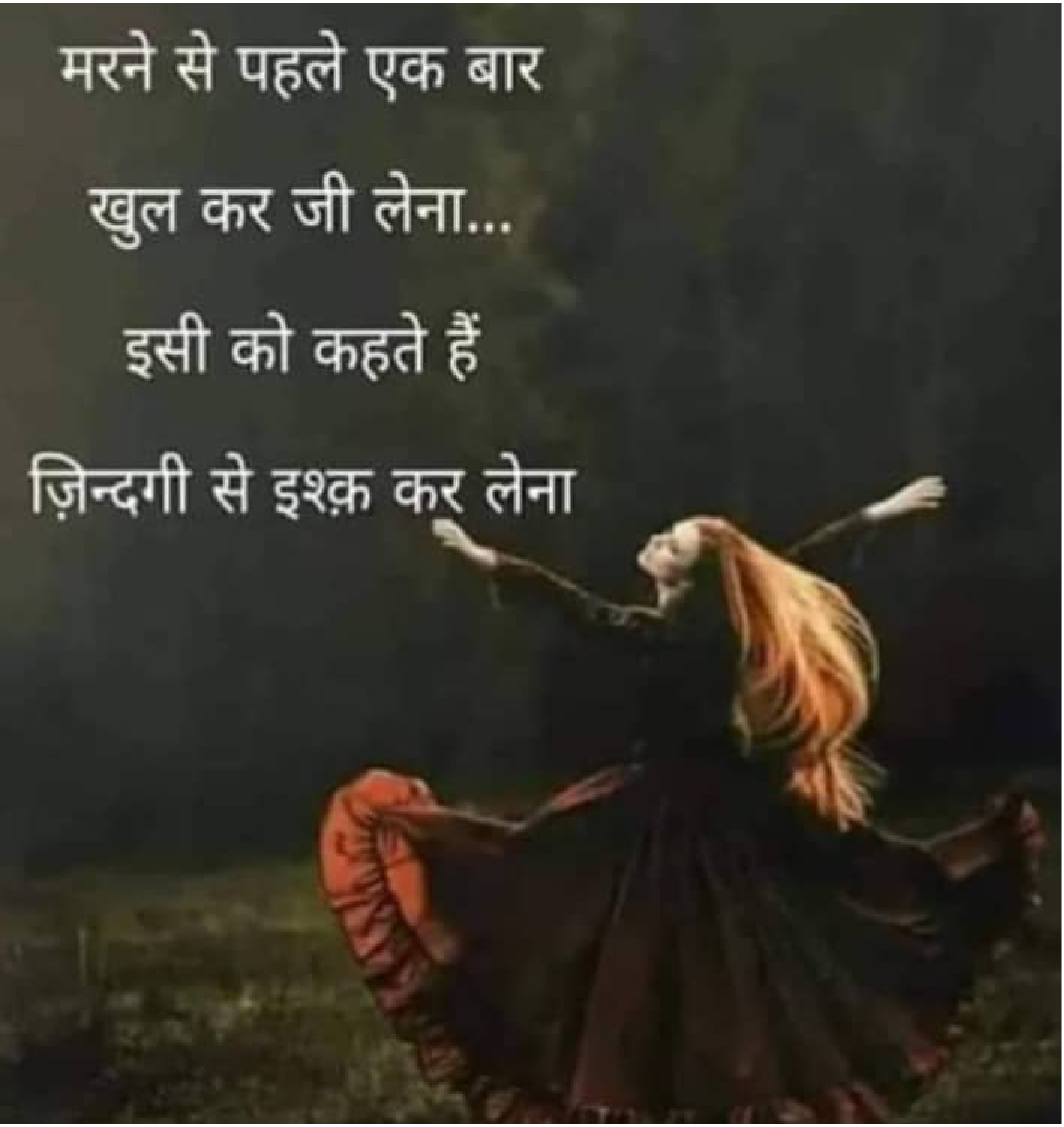

CamScanner

सात्विक व्यक्ति का भोजन कम होता जाएगा। उसकी नींद भी कम होती जाएगी, भोजन भी कम होता जाएगा। सात्विक व्यक्ति मरते समय नींद से भी मुक्त हो जाएगा, भोजन से भी मुक्त हो जाएगा। सात्विक व्यक्ति की मृत्यु उपवास में होगी, अनिद्रा मे होगी। तामसी व्यक्ति अक्सर नींद में मरेंगे। राजसी व्यक्ति संघर्ष में मारेंगे........

•गीता दर्शन, -: ओशो :- (संकलन: स्वामी देवगीत)

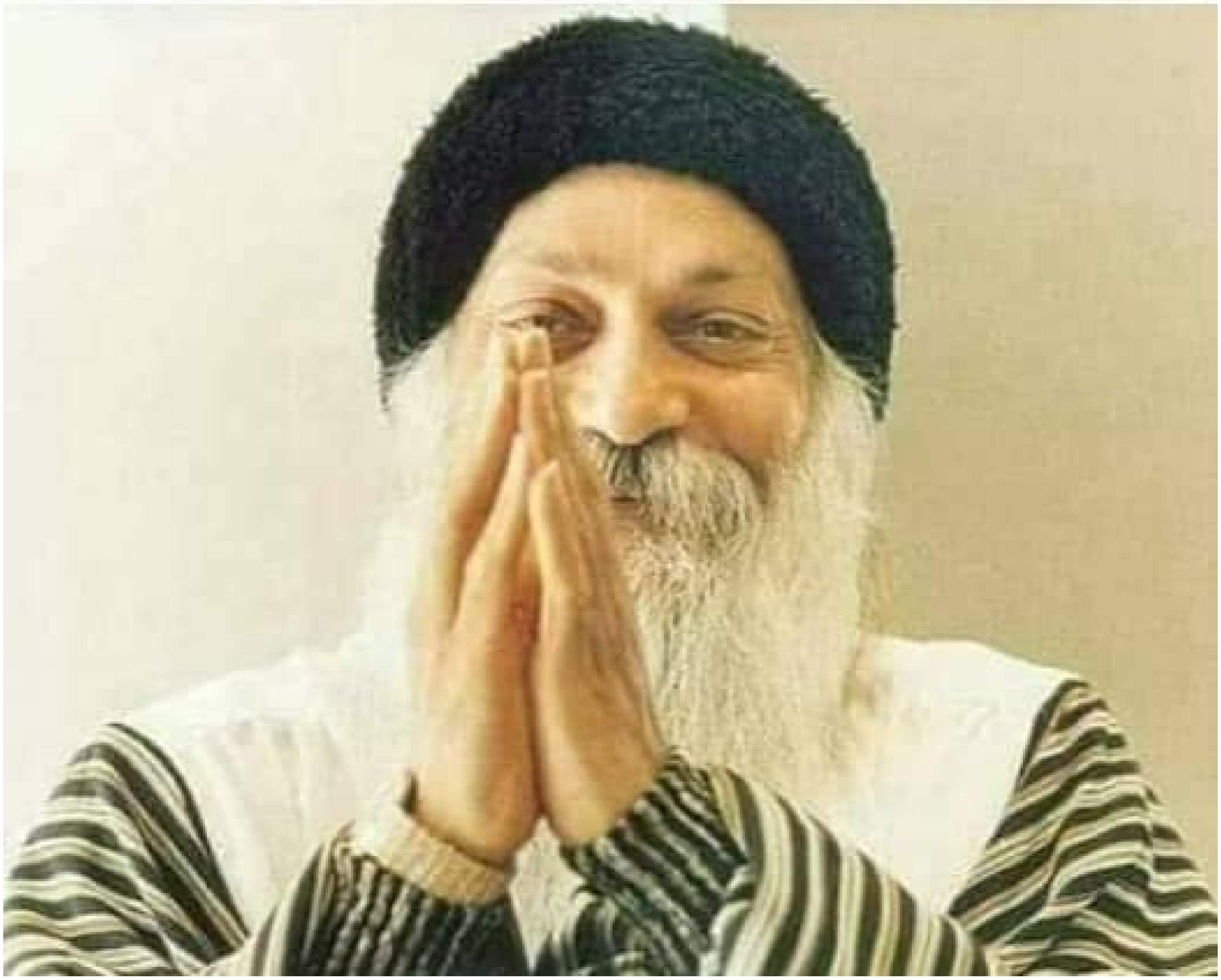

CamScanner

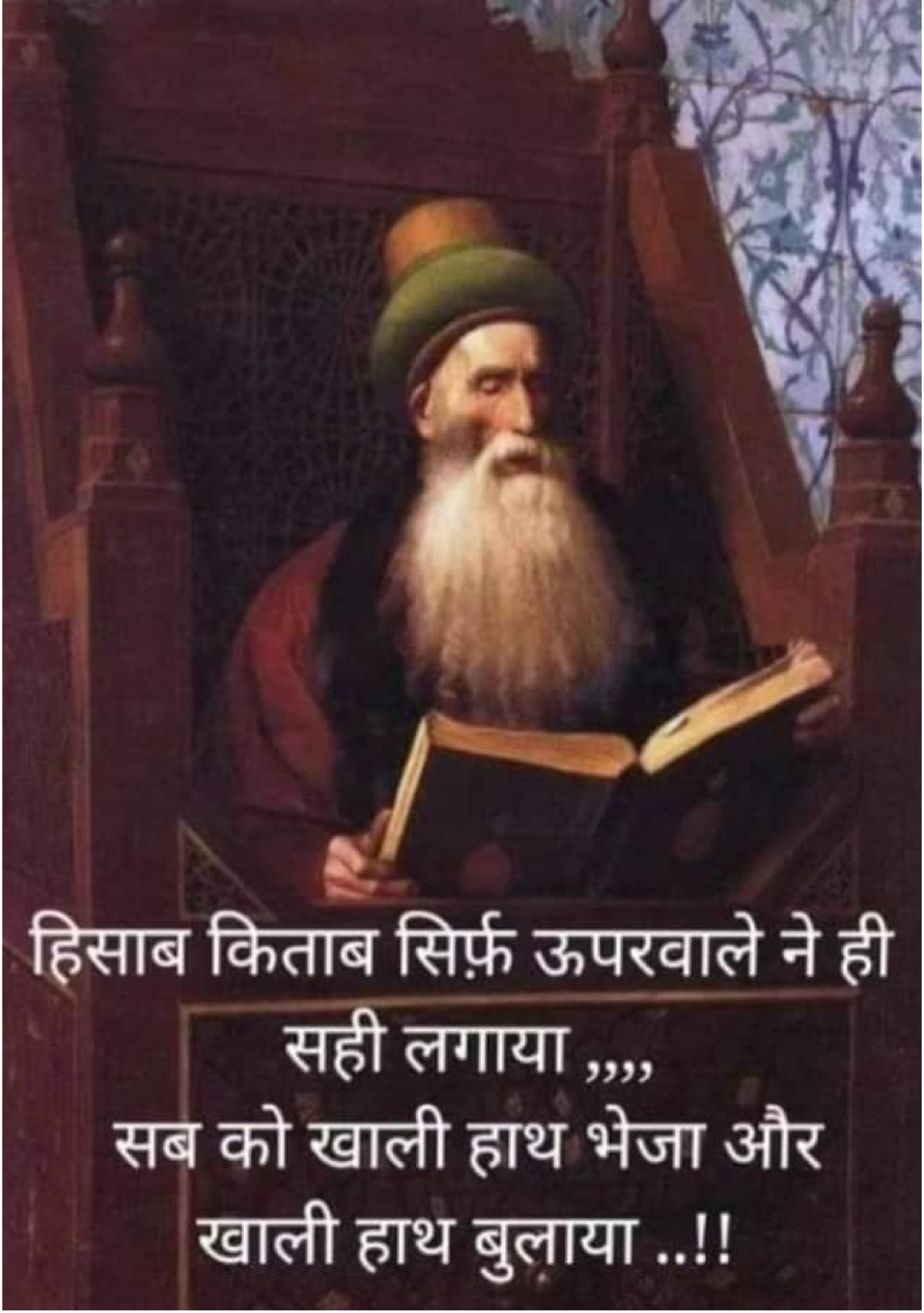

CamScanner

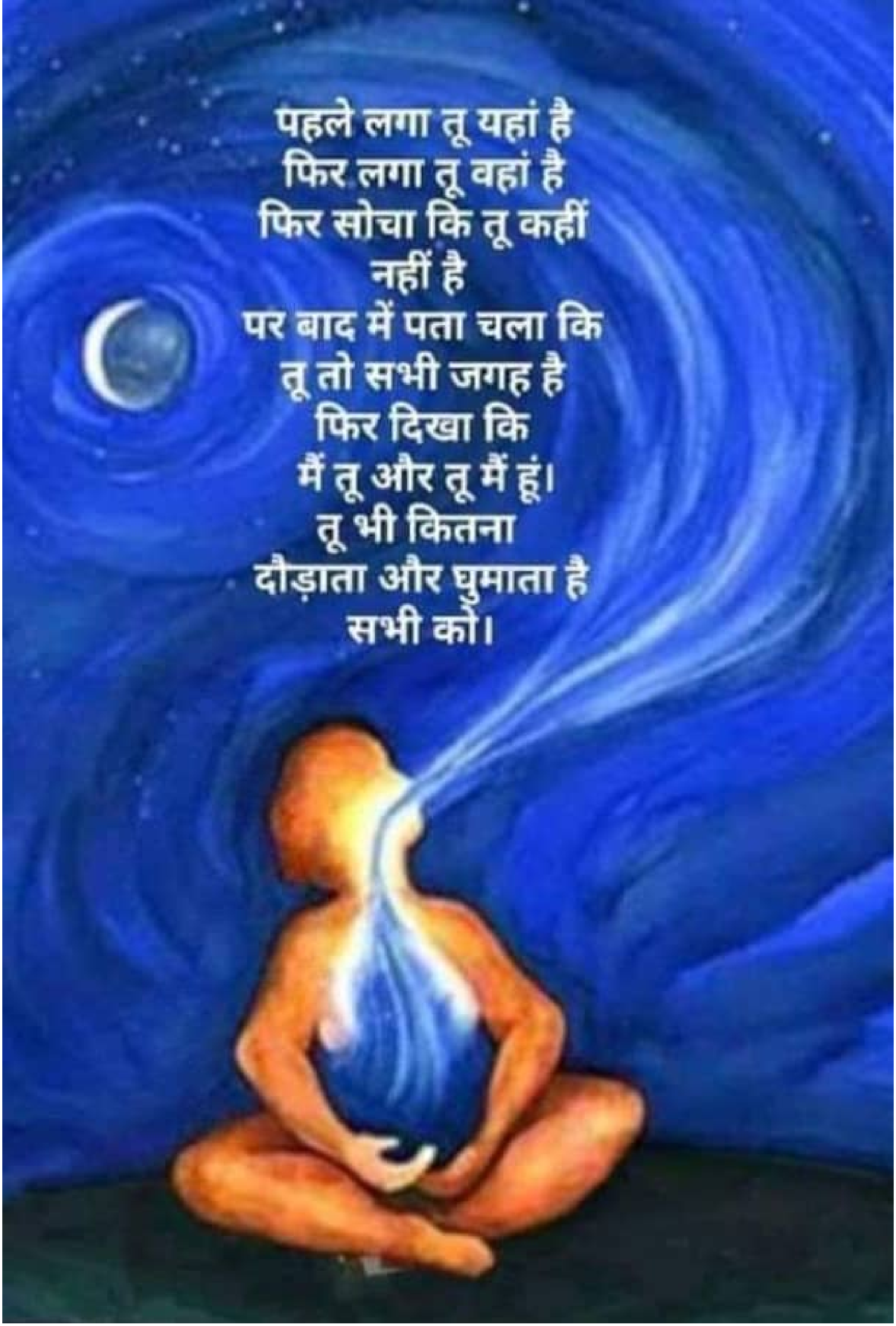
पहले लगा तू यहां है
फिर लगा तू वहां है
फिर सोचा कि तू कहीं
नहीं है
पर बाद में पता चला कि
तू तो सभी जगह है
फिर दिखा कि
मैं तू और तू मैं हूं।
तू भी कितना
दौड़ाता और घुमाता है
सभी को।

CamScanner

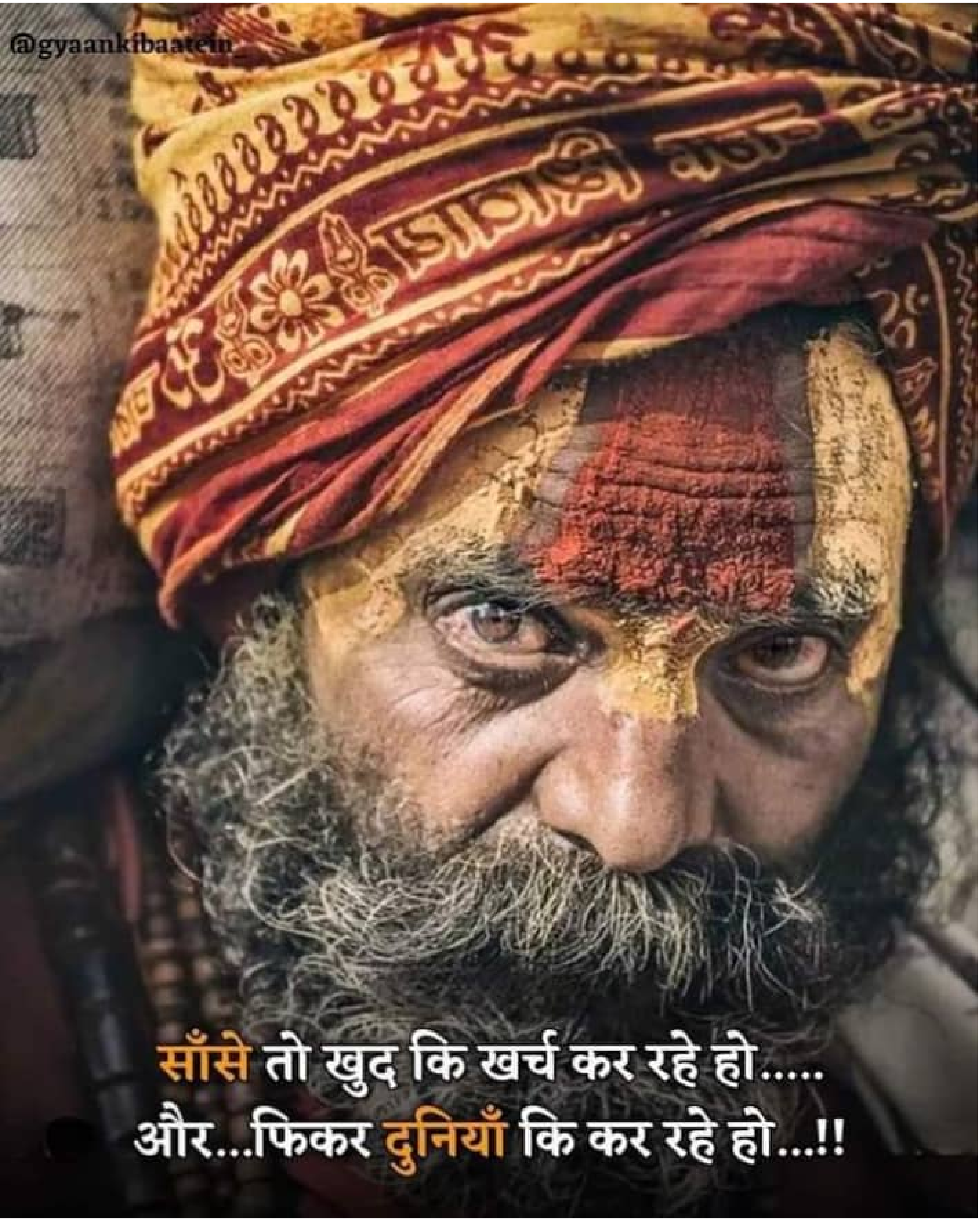

CamScanner

संसार एक पड़ाव है;
और पड़ाव पर कभी शांति नहीं
हो सकती। थोड़ी देर विश्राम हो
सकता है, लेकिन आनंद नहीं
हो सकता। और विश्राम का तो
इतना ही अर्थ है कि फिर हम
श्रम करने को तैयार हुए, फिर
यात्रा के लिये पैर तैयार हैं। यह
हमारा घर नहीं। जहां हम ठहरे
हैं, वह धर्मशाला हो सकती है,
अतिथि-गृह हो सकता है।
लेकिन यह घर हमारा नहीं है।
हम परदेस में है। और इसीलिये
हम बेचैन हैं। और जब तक घर
न मिल जाए पुनः तब तक
बेचैनी जारी रहेगी।
घर की खोज ही धर्म है।
ओशो : बिन बाती बिन तेल

CamScanner

प्रिय नदी

कृष्ण कहते हैं ,मागो ही मत,क्योंकि जिस्ने तुम्हें जीवन दिया ,वह तुमसे ज्यादा समझदार है ।तुम अपनी समझदारी मत बताओ ।

गीता दर्शन ❤️ओशो... See more

CamScanner

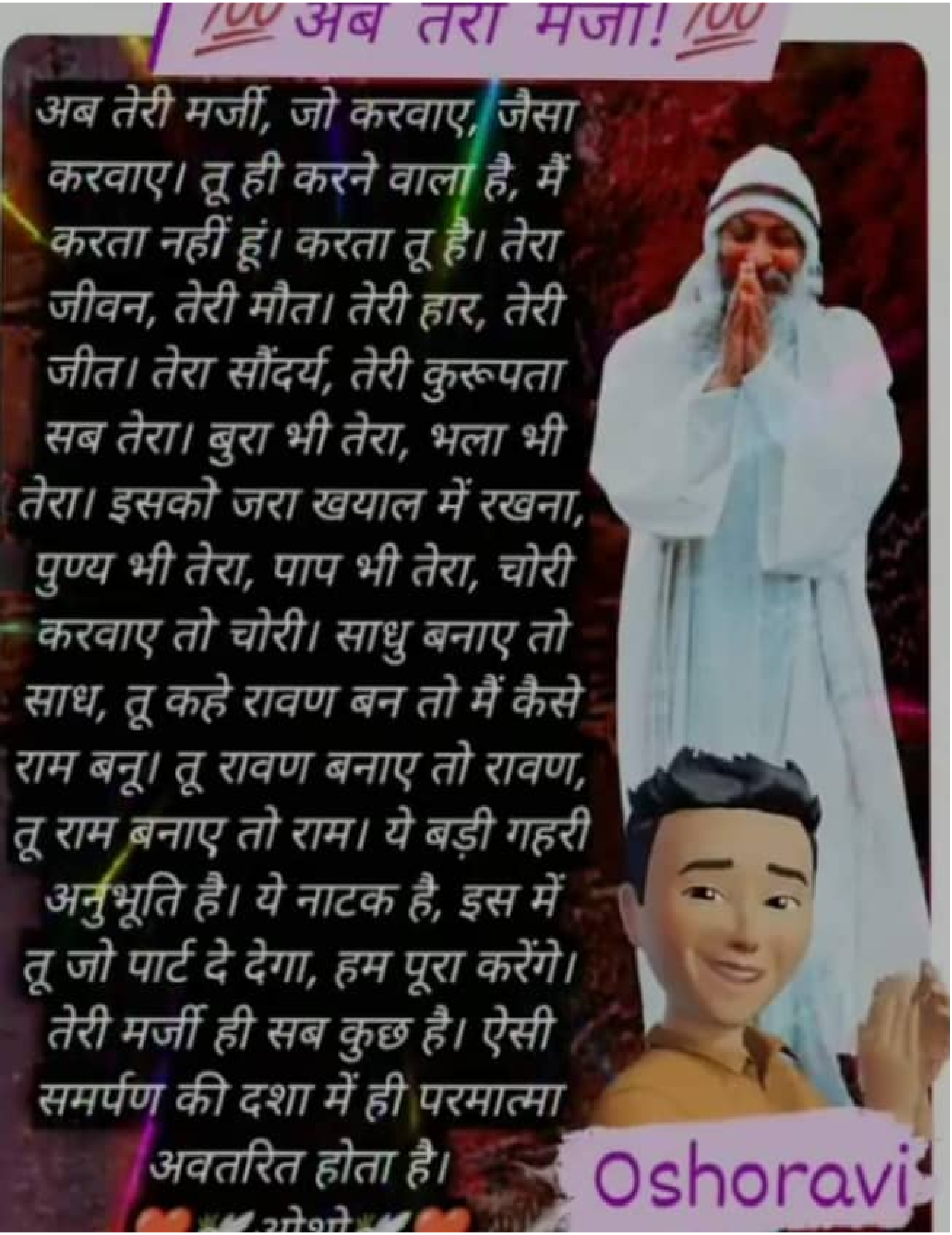
अब तेरी मर्जी!
अब तेरी मर्जी, जो करवाए, जैसा करवाए। तू ही करने वाला है, मैं करता नहीं हूं। करता तू है। तेरा जीवन, तेरी मौत। तेरी हार, तेरी जीत। तेरा सौंदर्य, तेरी कुरूपता सब तेरा। बुरा भी तेरा, भला भी तेरा। इसको जरा खयाल में रखना, पुण्य भी तेरा, पाप भी तेरा, चोरी करवाए तो चोरी। साधु बनाए तो साध, तू कहे रावण बन तो मैं कैसे राम बनू। तू रावण बनाए तो रावण, तू राम बनाए तो राम। ये बड़ी गहरी अनुभूति है। ये नाटक है, इस में तू जो पार्ट दे देगा, हम पूरा करेंगे। तेरी मर्जी ही सब कुछ है। ऐसी समर्पण की दशा में ही परमात्मा अवतरित होता है।
Oshoravi

CamScanner

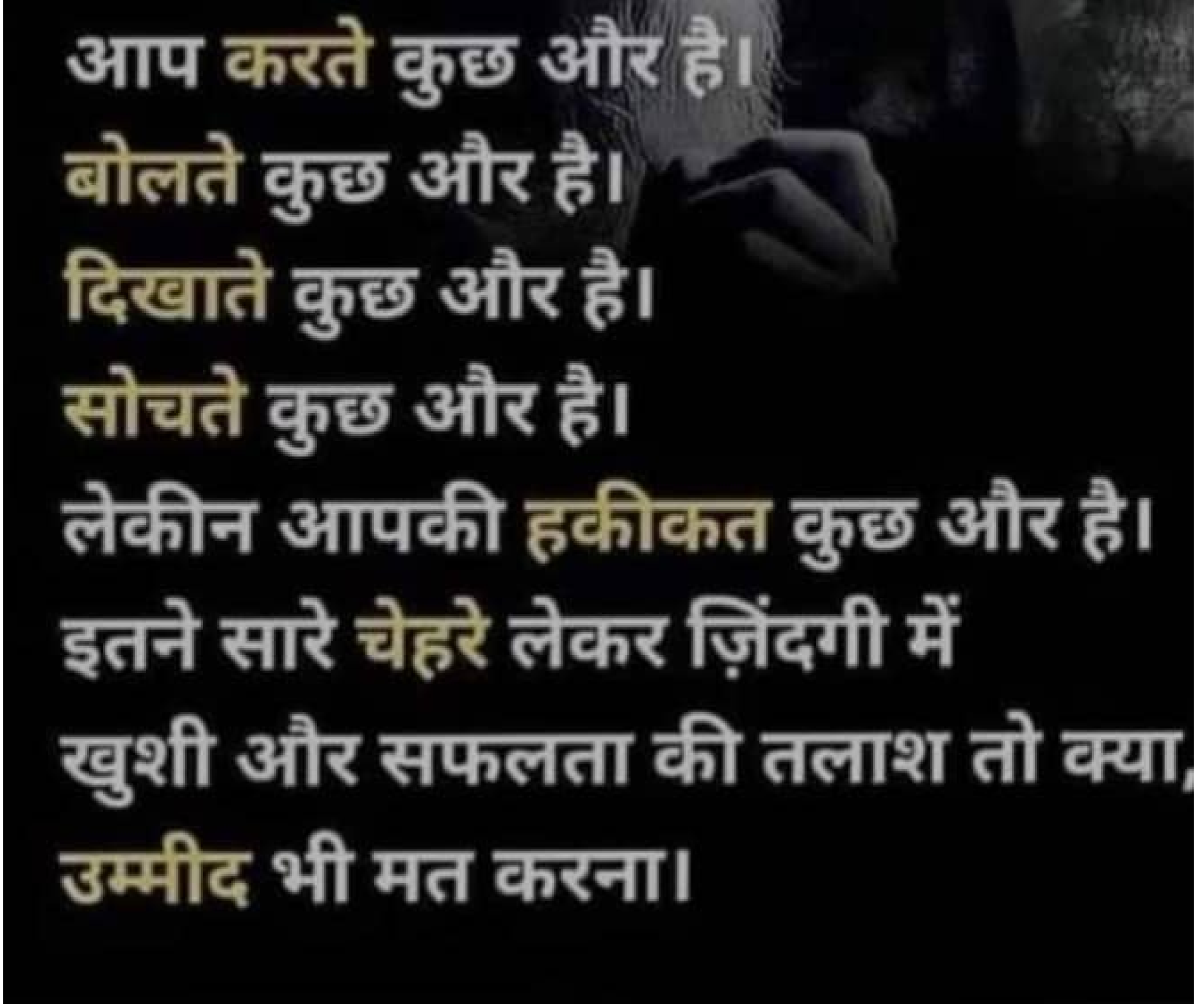
आप करते कुछ और है।
बोलते कुछ और है।
दिखाते कुछ और है।
सोचते कुछ और है।
लेकीन आपकी हकीकत कुछ और है।
इतने सारे चेहरे लेकर ज़िंदगी में
खुशी और सफलता की तलाश तो क्या,
उम्मीद भी मत करना।

CamScanner

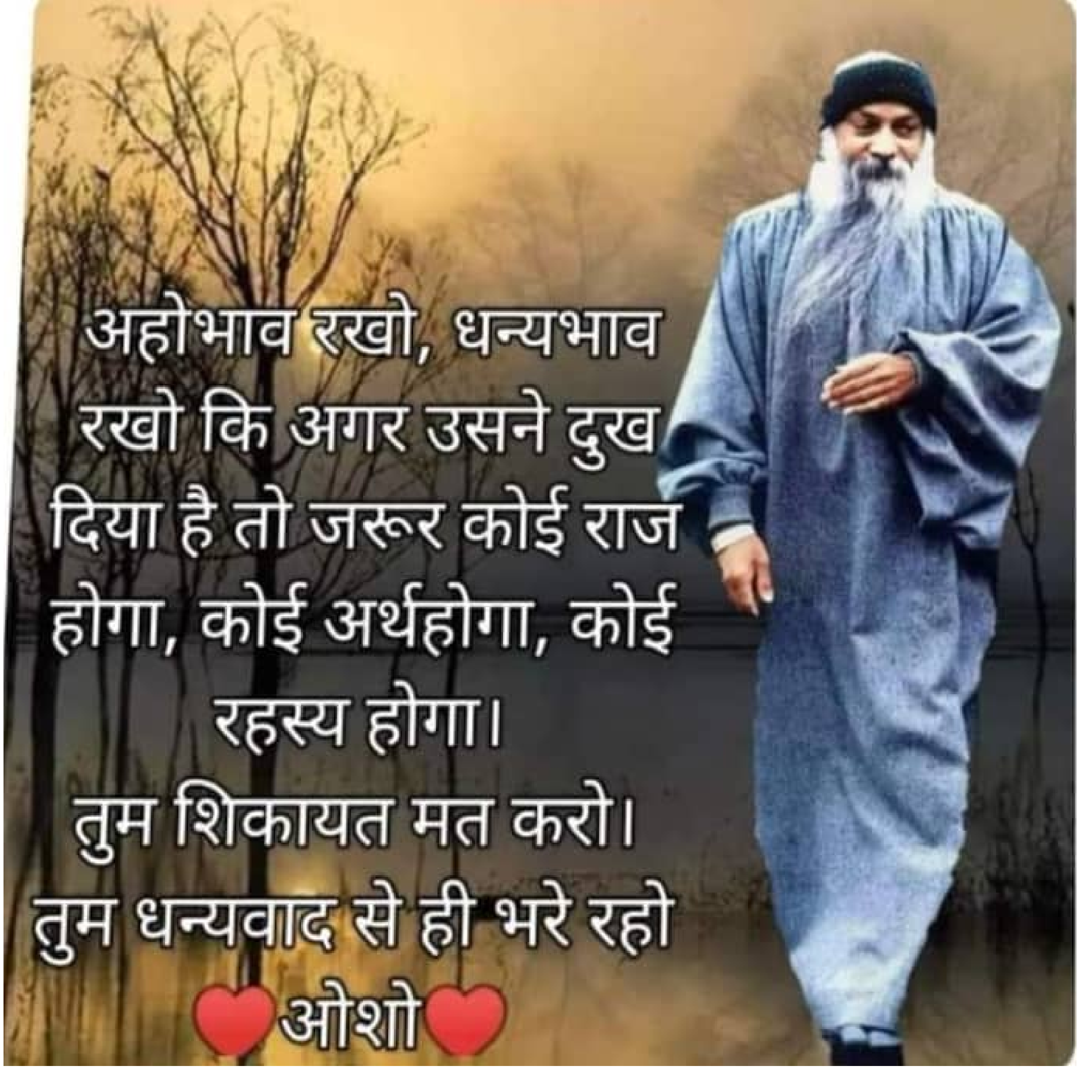
अहोभाव रखो, धन्यभाव
रखो कि अगर उसने दुख
दिया है तो जरूर कोई राज
होगा, कोई अर्थहोगा, कोई
रहस्य होगा।
तुम शिकायत मत करो।
तुम धन्यवाद से ही भरे रहो
ओशो

CamScanner

CamScanner

11:16 pm 0 KB/s 4G 28%

या अपने से छला गया!
जो औचक कहा गया, वह बचा रहा
जो जतन संजोया, चला गया!

🌷इस जीवन में जो तुम बचाओगे वह खो जाएगा। जो तुम बांट दोगे, वह बच जाएगा। ऐसा अनूठा नियम है। जो दोगे, वही तुम्हारा रहेगा। जो सम्हाल कर रख लोगे, छिपा लोगे--सड़ जाएगा, कभी तुम्हारा न रहेगा।

🌷इसलिए समाधि तो परम ध्यान है। जब फलता है तो बांटना पड़ता है। समाधि वही जो बंटे; न बंटे तो झूठ; कहीं कुछ भूल हो गई; कहीं कुछ नासमझी हो गई; कहीं कुछ का कुछ समझ बैठे। जब बादल जल से भरा हो तो बरसेगा, तो तृप्त कंठ पृथ्वी का होगा उसकी वर्षा से। जब दीया जलेगा तो रोशनी बिखरेगी।

🌷जब भी समाधि लगती है किसी के जीवन में, फूल खिलता है तो बंटता है। सारे शास्त्र ऐसे ही जन्मे। शास्त्र का जन्म समाधि के बंटने के कारण होता है। शास्त्र और किताब का यही फर्क है। किताब आदमी लिखता है, चेष्टा करता है। शास्त्र समाधि से सहज निकसित होता है, कोई चेष्टा नहीं है, कोई प्रयास नहीं है। समाधि अपने-आप शास्त्र बन जाती है। समाधि से निकले उपनिषद, निकले वेद, निकला कुरान, निकली बाइबिल, निकला धम्मपद। ये समाधि के क्षण से बंटे हैं।

समाधि का अर्थ है: तुमने पा लिया!

🌷🌹ओशो🌹🌷
अष्टावक्र महागीता, भाग 4 🍃
धार्मिक जीवन --सहज, सरल, सत्य🍃

CamScanner

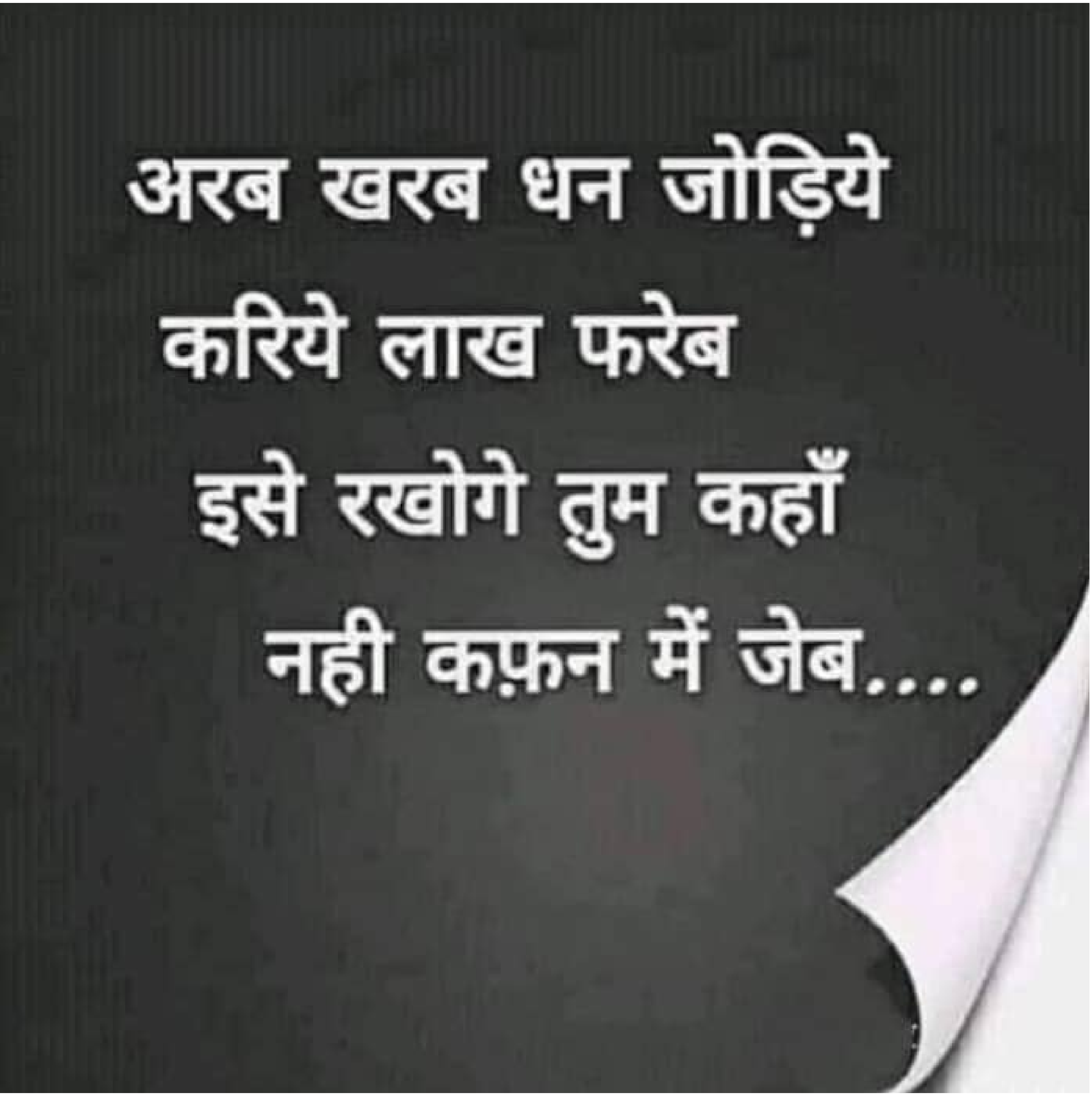

CamScanner

CamScanner

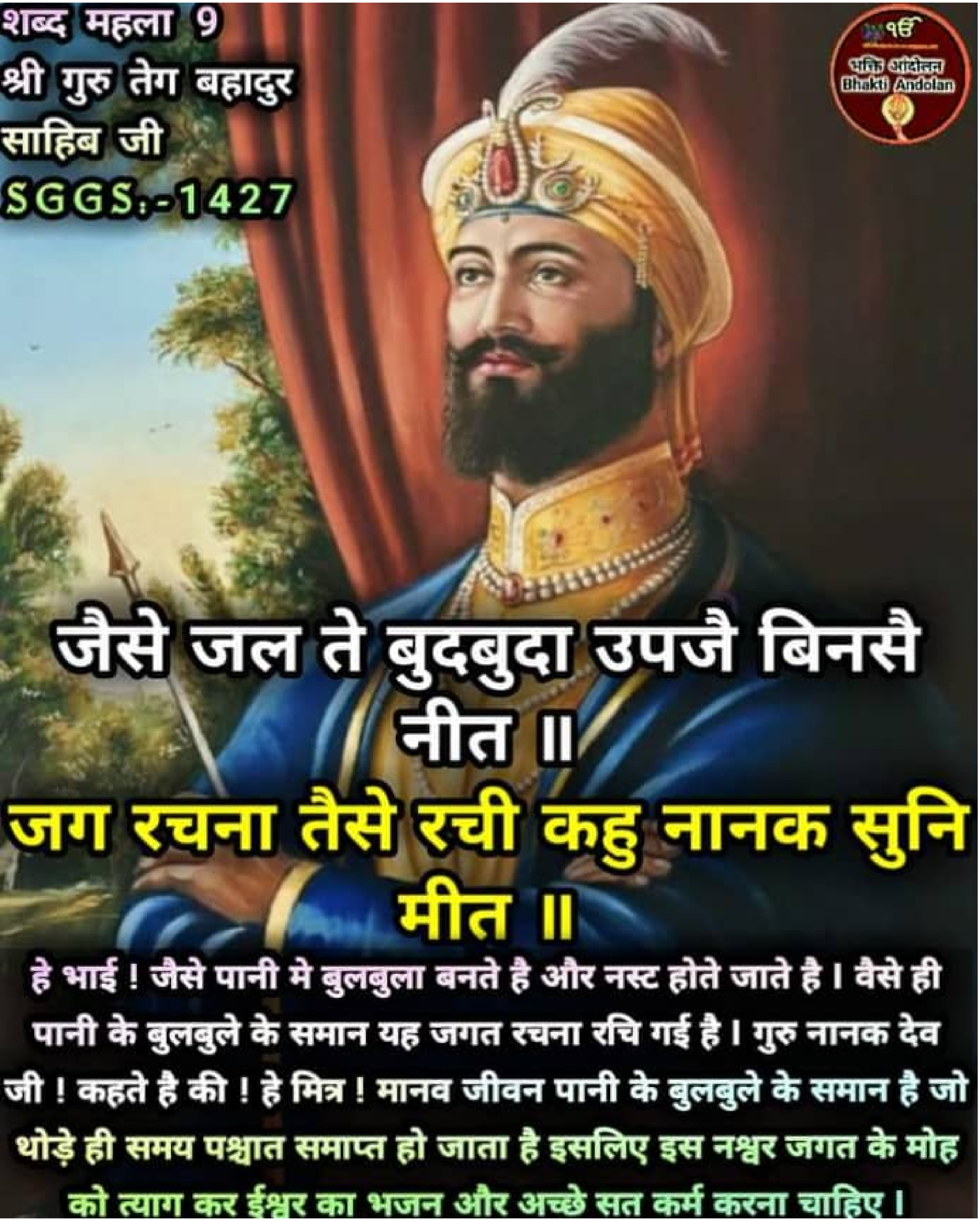
शब्द महला 9
श्री गुरु तेग बहादुर
साहिब जी
SGGS:-1427
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥
हे भाई ! जैसे पानी मे बुलबुला बनते है और नस्ट होते जाते है । वैसे ही पानी के बुलबुले के समान यह जगत रचना रचि गई है । गुरु नानक देव जी ! कहते है की ! हे मित्र ! मानव जीवन पानी के बुलबुले के समान है जो थोड़े ही समय पश्चात समाप्त हो जाता है इसलिए इस नश्वर जगत के मोह को त्याग कर ईश्वर का भजन और अच्छे सत कर्म करना चाहिए ।

CamScanner

CamScanner

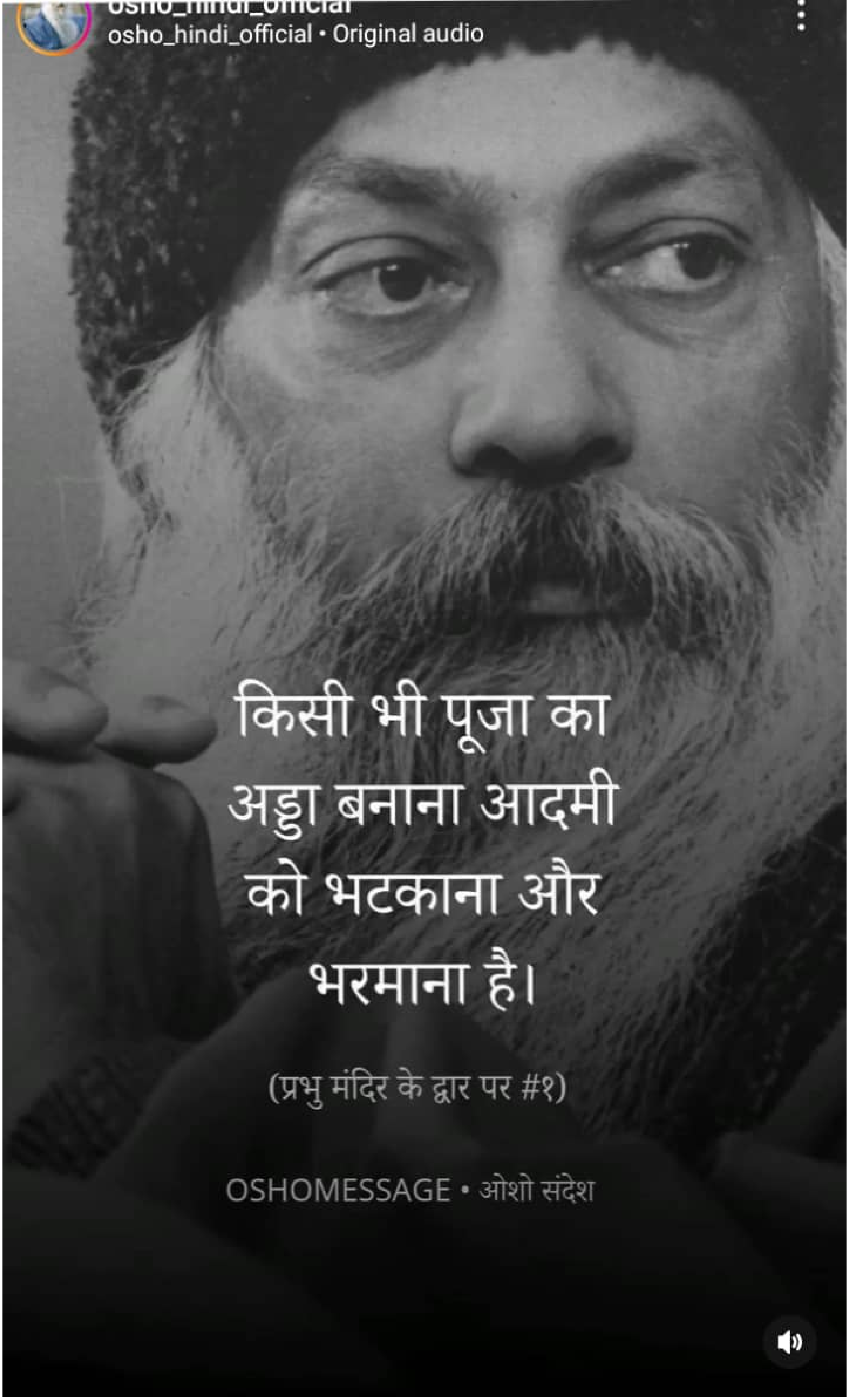
osho_hindi_official • Original audio
किसी भी पूजा का
अड्डा बनाना आदमी
को भटकाना और
भरमाना है।
(प्रभु मंदिर के द्वार पर #१)
OSHOMESSAGE • ओशो संदेश

CamScanner

मोक्ष दो अक्षर का शब्द है। "मो" का अर्थ मोह और "क्ष" का अर्थ क्षय नाश हो जाना।हमारे जीवन में धीरे धीरे मोह का नाश हो जाए, कम हो जाए, उसी को मोक्ष कहते है।

मोक्ष के लिये मरने की जरुरत नहीं, बहुत सावधानी से जीने की जरुरत है।पाँच चीजों की मात्रा कम होने लगे तो समझना मोक्ष आ रहा है।

वस्तु – बहुत सी वस्तुओ से आसक्ति कम होने लगे।

वसु – धन संग्रह की वृति कम होने लगे।

विषय – विषयो के प्रति धीरे धीरे उदासीनता आए।

व्यक्ति – एकान्त में सुख मिलने लगे।

विचार – विचार कम होने लगे।

ओशो

CamScanner

ध्यान रहे, जगत में अधर्म कम हो जाये,
अगर वे लोग उपदेश करना बंद कर दें
जिन्होंने स्वयं नहीं जाना है।
उनके कारण बड़ा उपद्रव है।
दुनिया में अधर्म अधार्मिक लोगों के कारण नहीं है,
मरे-मराये धार्मिक लोगों के कारण है।
जिनके पास कोई जीवन की ज्योति नहीं है;
जो भीतर अंधेरे से भरे हैं और
जिनकी चर्चा में प्रकाश के शब्द तैरते रहते हैं;
जिनके भीतर मृत्यु है और अमृत की बात करते हैं,
उनसे अधर्म चलता है—
अधार्मिक लोगों से नहीं चलता,
झूठे धार्मिक लोगों से चलता है।-ओशो.

CamScanner

योग,ध्यान,समाधि गहन अन्धकार में प्रवेश की सामर्थ्य के नाम हैं। जीवन के सारे महत्वपूर्ण रहस्य अन्धकार में छिपे हैं। वृक्ष हैं ऊपर,जड़ें हैं अँधेरे में। माँ के गर्भ में अँधेरे में जन्म होता है जीवन का।दो दिन की चांदनी है जीवन फिर मृत्यु के अंधरे में जाना है। इसलिए जितना प्रेम प्रकाश से है , उतना ही अँधेरे से भी करना सीखो। प्रकाश की चाह कोई बड़ा गुण नहीं है। सिर्फ अन्तरात्मा में छाये भय का सबूत है।भयभीत आदमी प्रकाश चाहता है। जिस दिन तुम निर्भय हो जाओगे प्रकाश की ये चाह विलीन हो जायेगी। ध्यान रहे अन्धकार से जो भयभीत,डरा हुआ है वो शांत होने से भी उतना ही डरेगा,क्योंकि वो समाधी में जाने से भी डरेगा जो की अन्धकार से भी परम् शांत है।

CamScanner

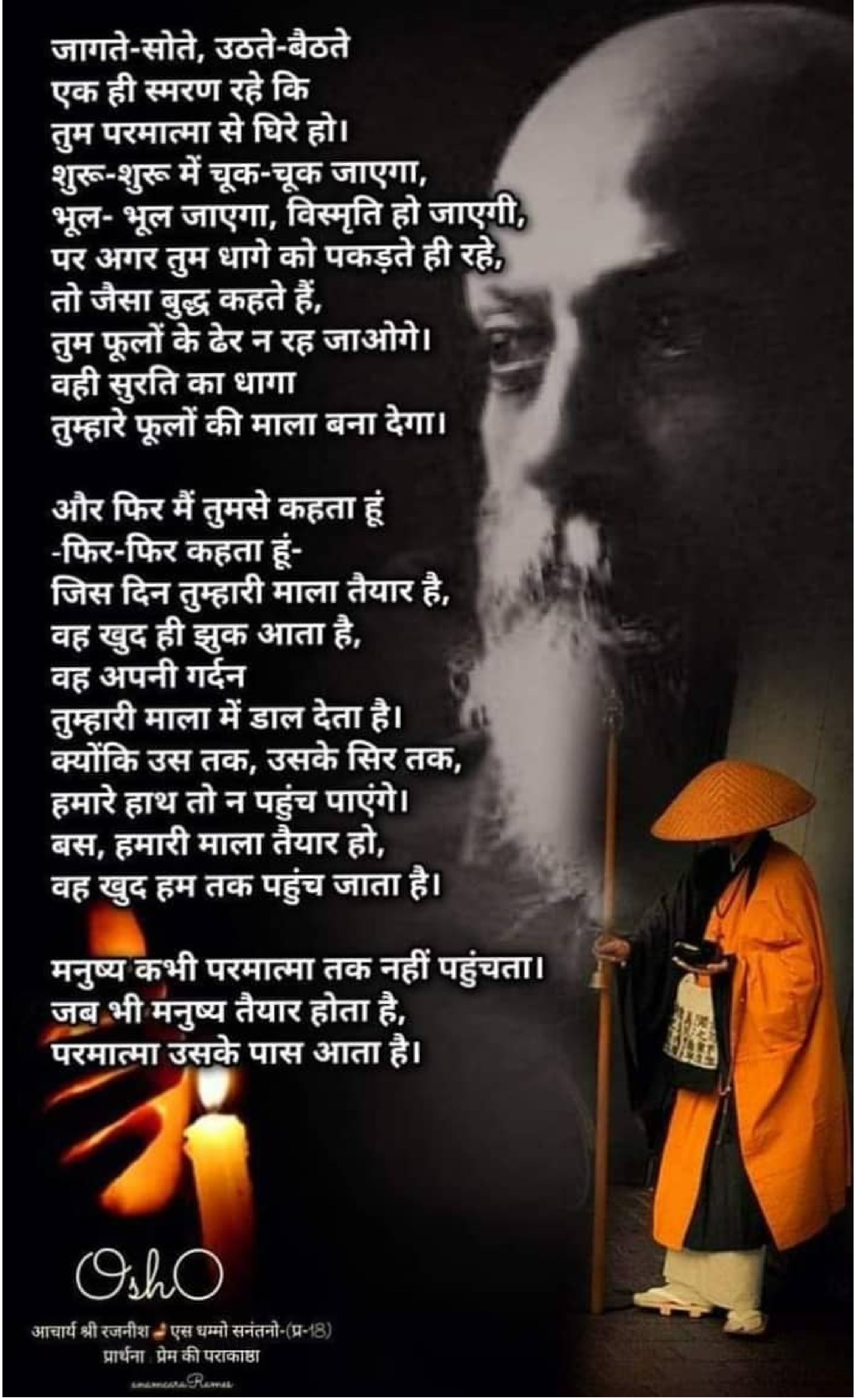
जागते-सोते, उठते-बैठते
एक ही स्मरण रहे कि
तुम परमात्मा से घिरे हो।
शुरू-शुरू में चूक-चूक जाएगा,
भूल- भूल जाएगा, विस्मृति हो जाएगी,
पर अगर तुम धागे को पकड़ते ही रहे,
तो जैसा बुद्ध कहते हैं,
तुम फूलों के ढेर न रह जाओगे।
वही सुरति का धागा
तुम्हारे फूलों की माला बना देगा।

और फिर मैं तुमसे कहता हूं
-फिर-फिर कहता हूं-
जिस दिन तुम्हारी माला तैयार है,
वह खुद ही झुक आता है,
वह अपनी गर्दन
तुम्हारी माला में डाल देता है।
क्योंकि उस तक, उसके सिर तक,
हमारे हाथ तो न पहुंच पाएंगे।
बस, हमारी माला तैयार हो,
वह खुद हम तक पहुंच जाता है।

मनुष्य कभी परमात्मा तक नहीं पहुंचता।
जब भी मनुष्य तैयार होता है,
परमात्मा उसके पास आता है।

OshO
आचार्य श्री रजनीश एस धम्मो सनंतनो-(प्र-18)
प्रार्थना . प्रेम की पराकाष्ठा

CamScanner

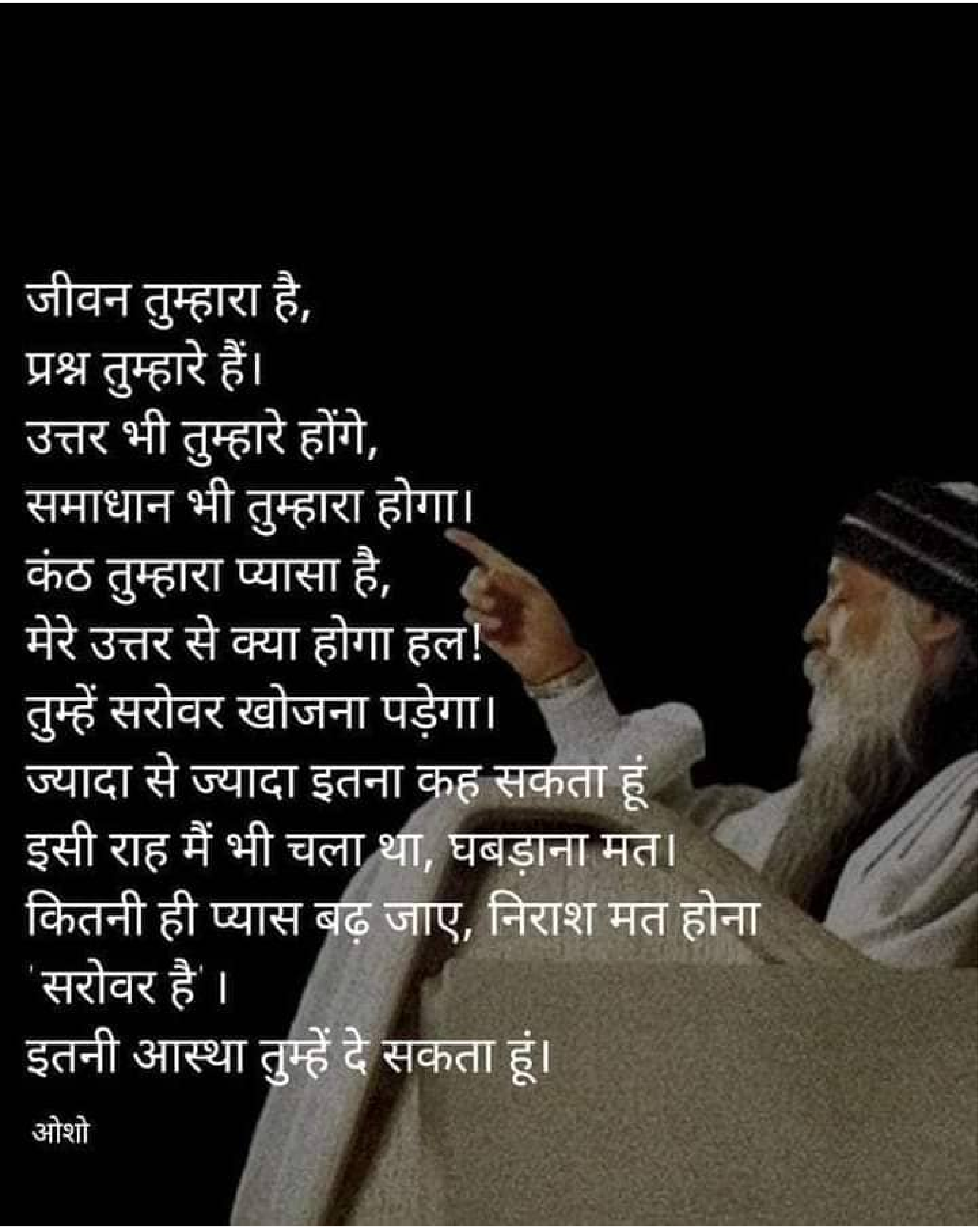
जीवन तुम्हारा है,
प्रश्न तुम्हारे हैं।
उत्तर भी तुम्हारे होंगे,
समाधान भी तुम्हारा होगा।
कंठ तुम्हारा प्यासा है,
मेरे उत्तर से क्या होगा हल!
तुम्हें सरोवर खोजना पड़ेगा।
ज्यादा से ज्यादा इतना कह सकता हूं
इसी राह मैं भी चला था, घबड़ाना मत।
कितनी ही प्यास बढ़ जाए, निराश मत होना
'सरोवर है'।
इतनी आस्था तुम्हें दे सकता हूं।
ओशो

CamScanner

तुम्हारे मन में शिकायत है।
वह शिकायत इस बात की
खबर है कि तुम समझते हो तुम
योग्य हो और तुम्हें नहीं मिला।
भक्त के मन में अहोभाव होता
है। क्योंकि वह कहता है, योग्य
तो मैं बिलकुल नहीं हूं और
इतना मिला।
उसकी सारी दृष्टि दूसरी है।
तो कीर्तन - भजन करने से
कोई भक्त नहीं होता। जीवन
की पूरी दृष्टि दूसरी है। दृष्टि यह
है कि मैं योग्य नहीं और फिर
भी इतना मिल रहा है। तो भक्त
की प्रार्थना धन्यवाद है। तुम्हारी
प्रार्थना शिकायत है।

ओशो

CamScanner

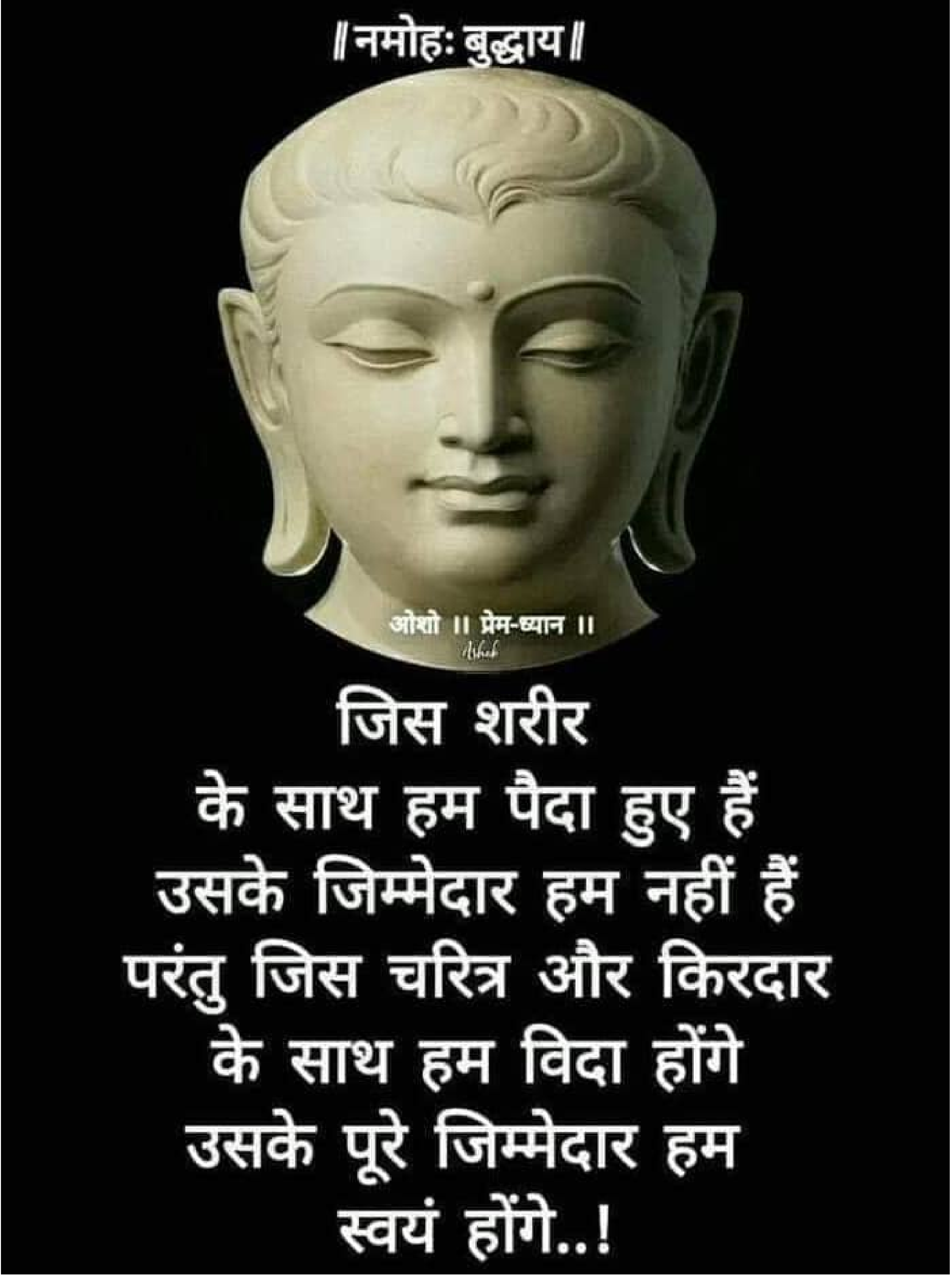

CS CamScanner

CamScanner

अगर तुम दुखी हो तो इसलिए कि तुमने जगत को बहुत गंभीरता से लिया है। और सुखी होने का कोई उपाय मत खोजो, सिर्फ अपनी दृष्टि को बदलो। गंभीर चित्त से तुम सुखी नहीं हो सकते, उत्सव मनाने वाला चित्त ही सुखी हो सकता है। इस पूरे जीवन को एक नाटक, एक कहानी की तरह लो। ऐसा ही है। और अगर तुम उसे इस भांति ले सके तो तुम दुखी नहीं होगे। दुख अति गंभीरता का परिणाम है।

ओशो

CS CamScanner

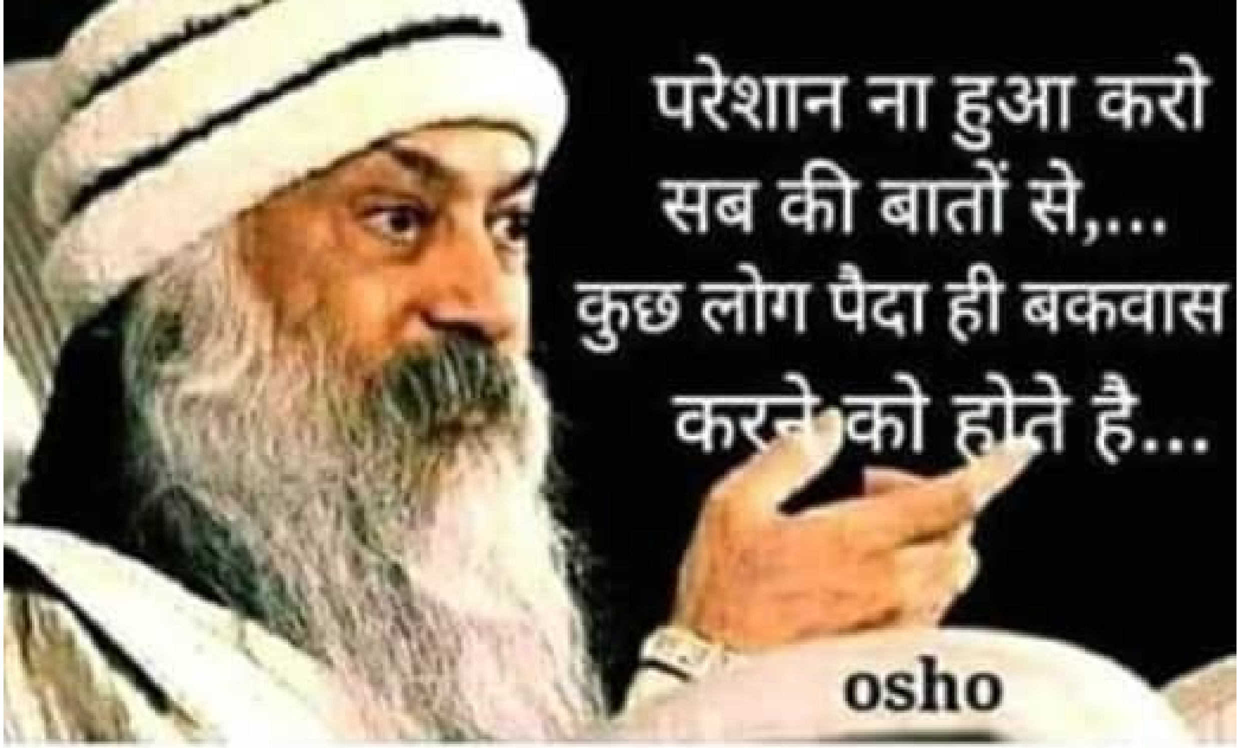

तुम्हे जब भी ऐसा लगे कि जीवन में सिर्फ दुःख ही दुःख है..!!
तो उसे याद करो जिसे तुमने मन की गहराईयों से प्रेम किया हो, जिसमे डूबकर तुम दुनिया को भूले हो, चाहे वो एक पल के लिए ही क्यों ना रहा हो, वो खूबसूरत पल तुम्हे गुदगुदाएगा, तुम्हारे होंठो पे मुस्कराहट ला देगा, तुम्हारे दुखो को, तुम्हारी वेदना को तुमसे दूर ले जायेगा..यकीन ना हो तो कभी करके देखो..वो एक लम्हा ही तुम्हारे रोम रोम में प्रेम को भर देगा, कुछ बरस सा जायेगा, और फिर बस..तुम भीग जाओगे..उन चंद लम्हो में पूरी जिंदगी जी लोगे..!!

CamScanner

CamScanner

CamScanner

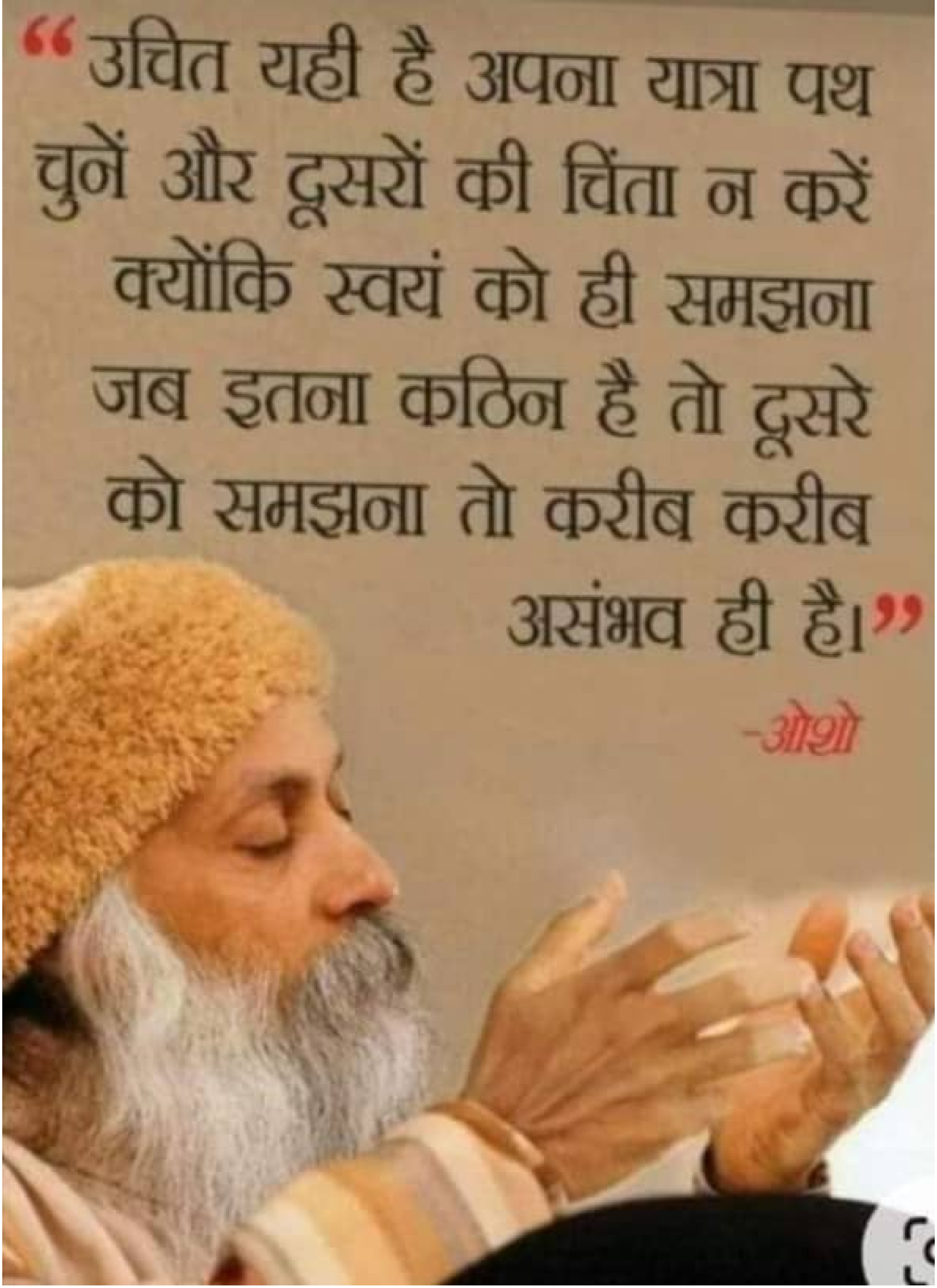
"उचित यही है अपना यात्रा पथ
चुनें और दूसरों की चिंता न करें
क्योंकि स्वयं को ही समझना
जब इतना कठिन है तो दूसरे
को समझना तो करीब करीब
असंभव ही है।"
-ओशो

CamScanner

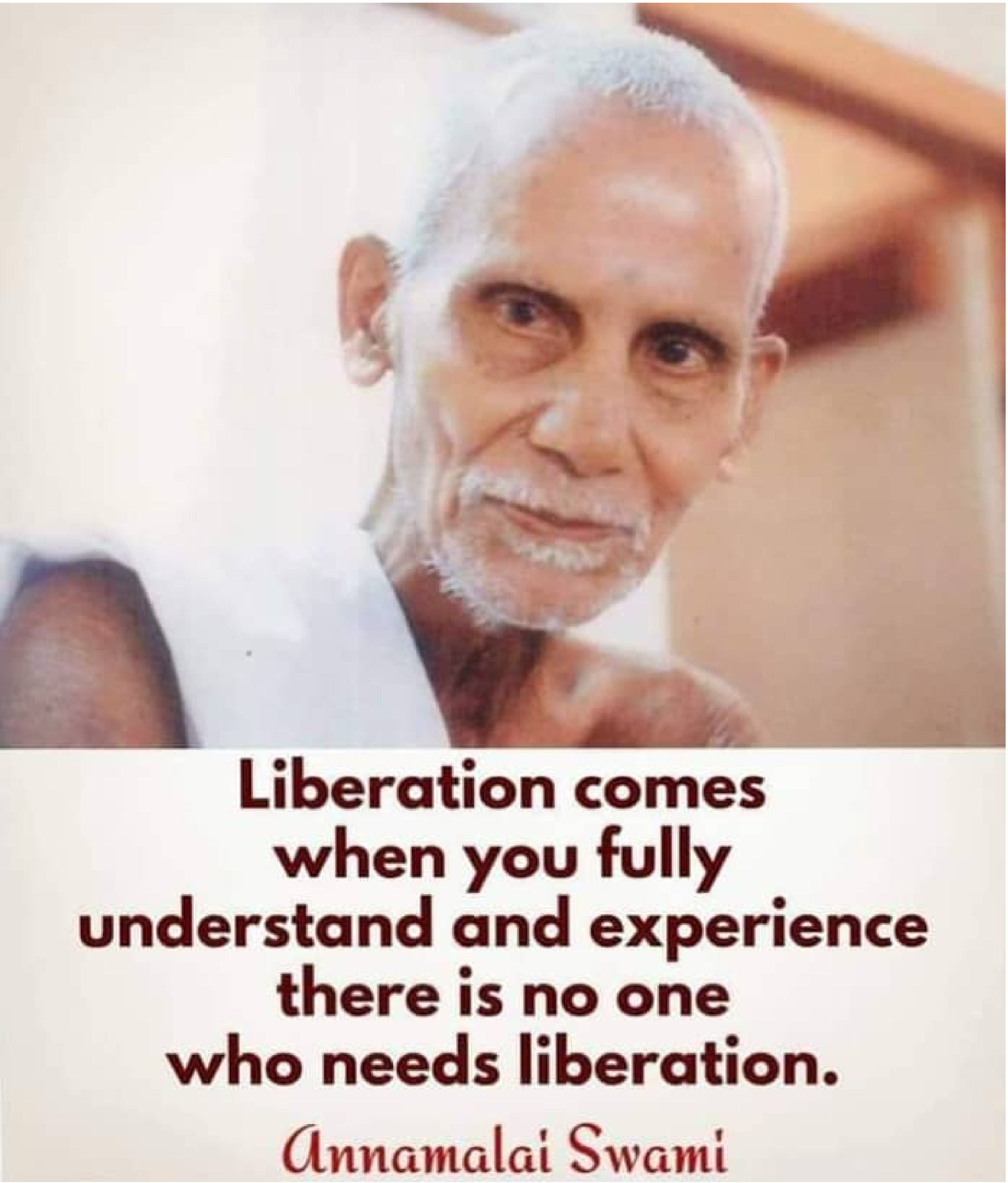
Liberation comes
when you fully
understand and experience
there is no one
who needs liberation.
Annamalai Swami

CamScanner

Heaven is a waste of time.

One might think that heaven is a place of enjoyment.
However, things are not very different from this world there.
Attachments, prejudices, jealousies etc. are there too.
That enjoyment too is perishable for everything
is centered on the ego. Because of pleasures,
one's mind would not then turn inward in search of truth.
It is such a waste!
After the good karma which gave one the enjoyments
of heaven are over one has to return.
What needs to be done is to inquire:
'for whom is this desire for heavenly enjoyment?'
Such an inquiry is an absolute necessity.

Sri Ramana Maharshi

CamScanner

S
सुप्रभात
Good morning
जब किसी को देने के लिए कुछ न हो
तो
उसे प्रेम और सम्मान दें
यही सबसे बड़ा उपहार है

CamScanner

अगर आप के मन में किसी बीमारी का थोडा सा भी डर है, तो आपका दिमाग आप के शरीर में उस बीमारी का लक्षण उत्पन्न कर देगा। क्योकि हमारा दिमाग इतना शक्तिशाली है की, वह किसी बीमारी का इलाज भी कर सकता है, और बीमारी पैदा भी कर सकता है।

ओशो

CamScanner

CamScanner

तुमने आनंद कारों में खोया है, बड़े मकानों में खोया है, तिजोड़ियों में खोया है—तुम्हें याद आता है कभी? तुम जब इस संसार में आए थे, तो न तो तिजोड़ियां साथ लाए थे, न बड़ी कारें, न बड़े मकान। तुम क्या लेकर आए थे? लेकिन आनंद तुम्हारे साथ था—तुम प्रफुल्लित थे। बच्चे की भांति तुम परम आनंदित थे, आह्लादित थे। आनंद तुम भीतर लेकर आए थे।

ओशो

सुन भाई साधो-10

CamScanner

दुनिया में
बहुत कम
लोग हैं,
जो अनुभव से
सीखते हैं।
अनुभव से
जो सीख ले,
वही समझदार है

CamScanner

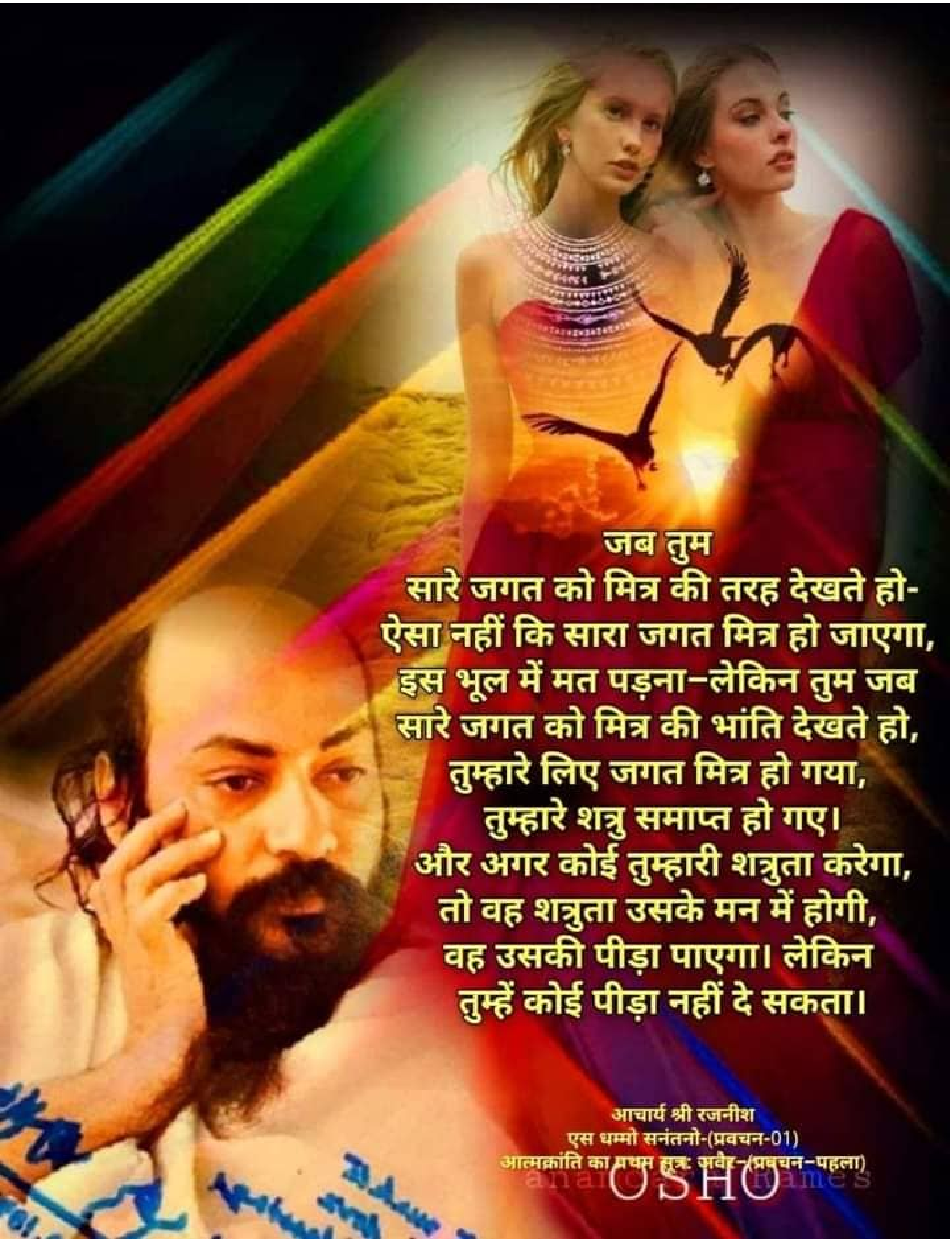
जब तुम
सारे जगत को मित्र की तरह देखते हो-
ऐसा नहीं कि सारा जगत मित्र हो जाएगा,
इस भूल में मत पड़ना–लेकिन तुम जब
सारे जगत को मित्र की भांति देखते हो,
तुम्हारे लिए जगत मित्र हो गया,
तुम्हारे शत्रु समाप्त हो गए।
और अगर कोई तुम्हारी शत्रुता करेगा,
तो वह शत्रुता उसके मन में होगी,
वह उसकी पीड़ा पाएगा। लेकिन
तुम्हें कोई पीड़ा नहीं दे सकता।
आचार्य श्री रजनीश
एस धम्मो सनंतनो-(प्रवचन-01)
आत्मक्रांति का प्रथम सूत्र: अवैर–(प्रवचन–पहला)
OSHO

CamScanner

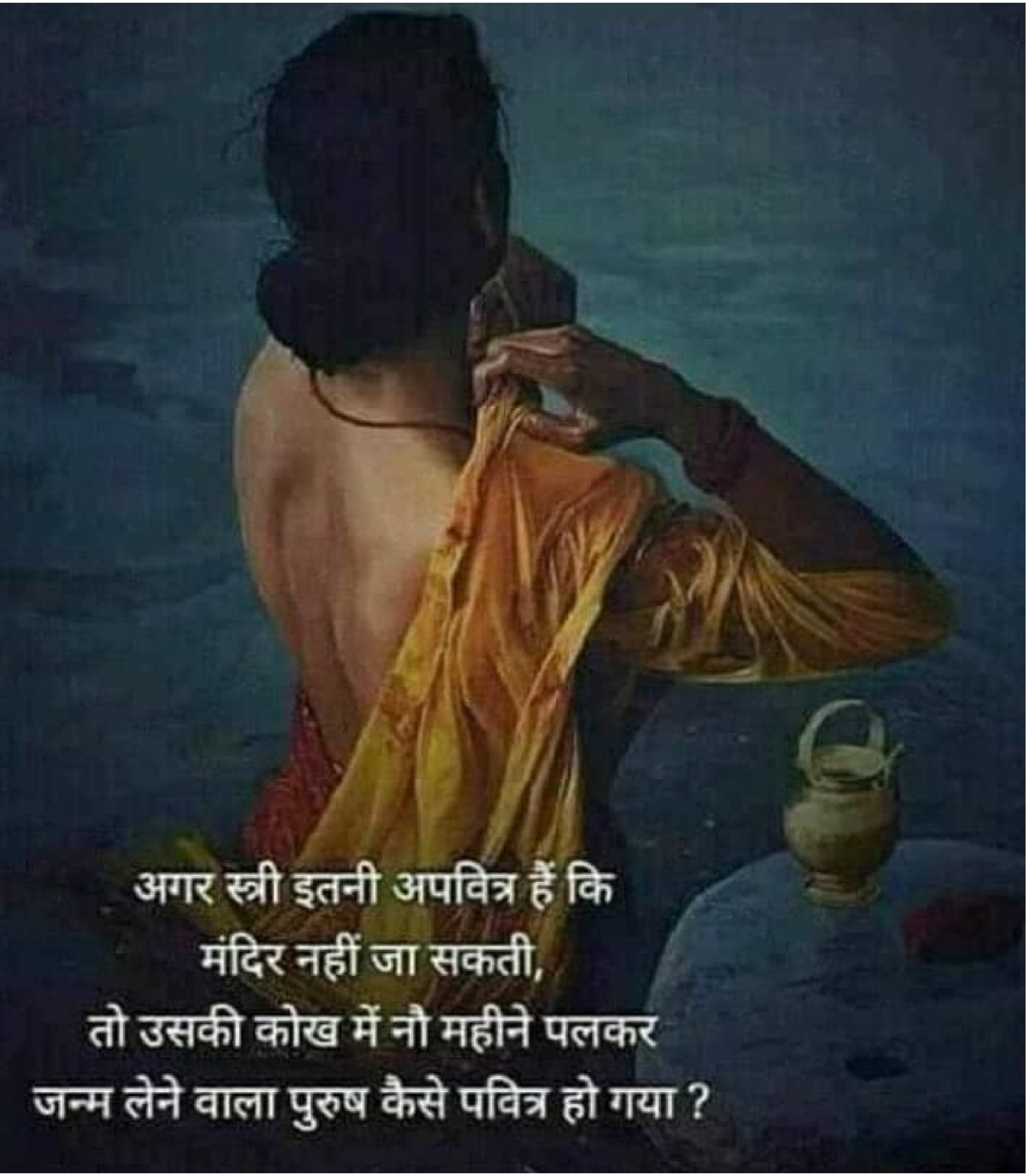
अगर स्त्री इतनी अपवित्र हैं कि
मंदिर नहीं जा सकती,
तो उसकी कोख में नौ महीने पलकर
जन्म लेने वाला पुरुष कैसे पवित्र हो गया ?

CamScanner

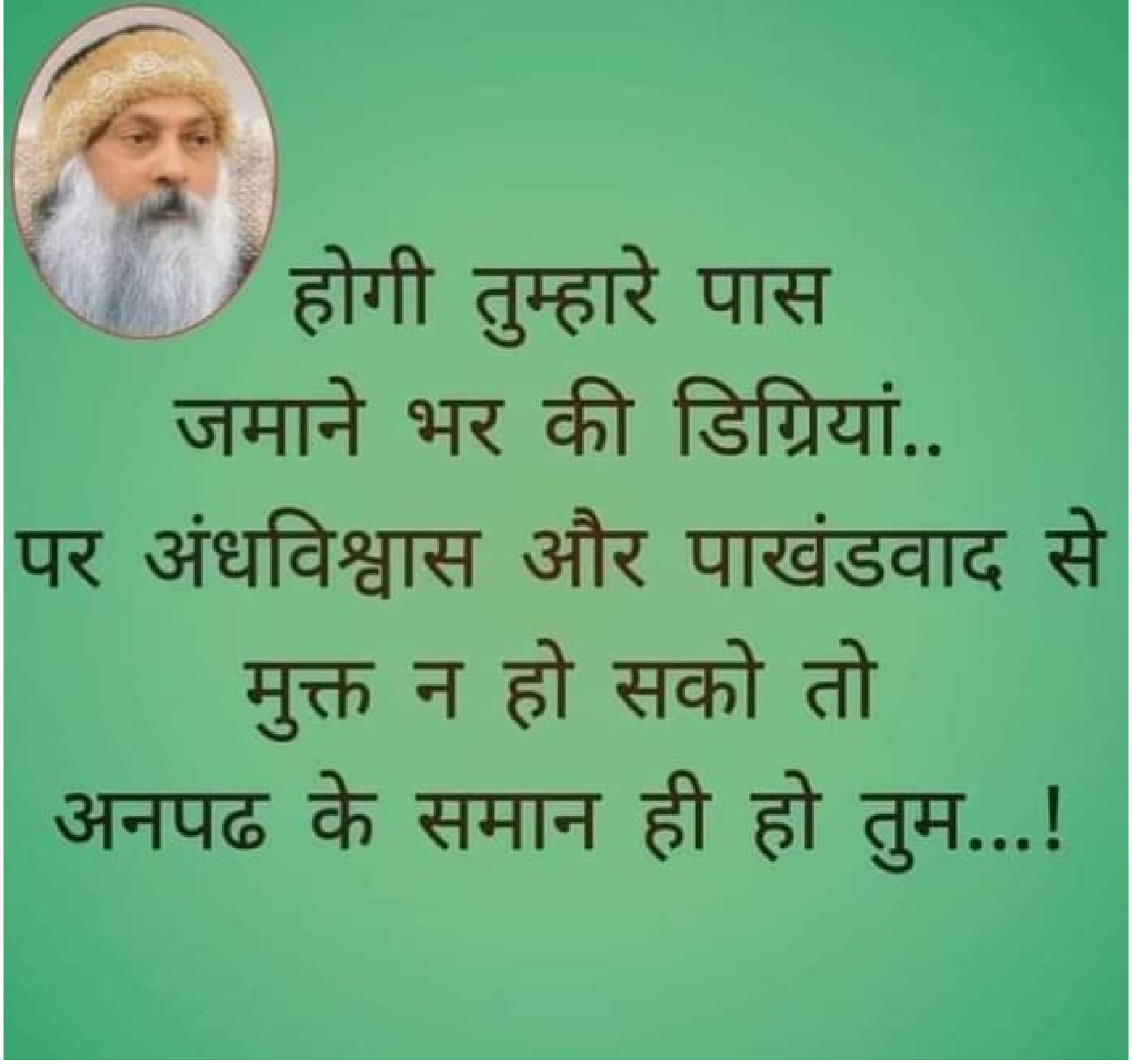
होगी तुम्हारे पास
जमाने भर की डिग्रियां..
पर अंधविश्वास और पाखंडवाद से
मुक्त न हो सको तो
अनपढ के समान ही हो तुम...!

CamScanner

8:39 am 0 KB/s 100%

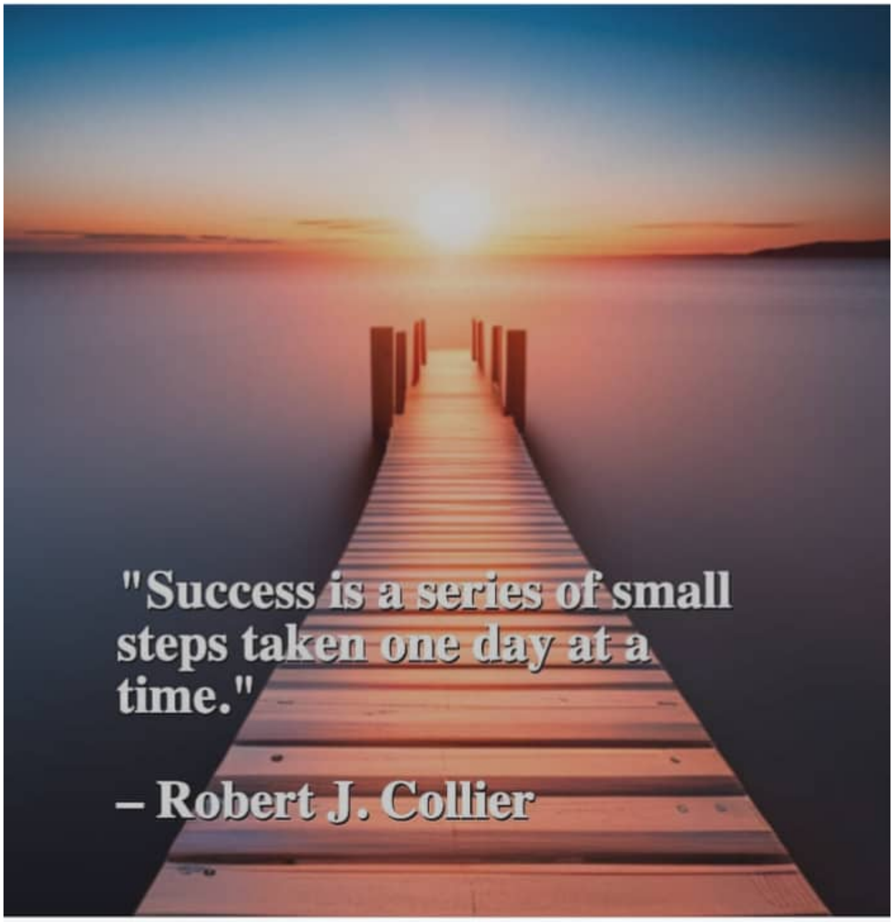

Gan Jing World

69K 372 comments • 8 shares

Like Comment Share

Modern Discovery

1h ·

Under Stair Storage Ideas😍

See translation

Like Comment Share

🌷Osho ki Mehk🌷

Ashok Kumar · 55m ·

CamScanner

बंदगी तो
मुझे तेरी करनी ही थी
क्योंकि
तेरा भरोसा कभी मायूस
नहीं करता।
तेरी बंदगी ना करता
तो फिर
क्या करता मैं?
तेरी दुनिया में
बेवजह रहा भी तो नहीं
जाता!

CamScanner

एक फूल खिला है, इसलिए नहीं खिला
है की कोई गोल्ड मैडल उसे मिले, कोई
महावीर चक्र मिले, कोई पद्मश्री मिले
नहीं फूल बस खिला है, क्योंकि
खिलना ही उसका आनंद है।

CamScanner

मैं सब में हूं बस बोल के मैं बताता नही..

बात इतनी सी है,

खोजने हर कोई खुद में आता नही..!

CamScanner

परमात्मा और व्यक्ति के बीच संबंध किसी भी क्षण हो सकता है, लेकिन व्यक्ति की चेतना के ठहरने की अनिवार्य शर्त है। परमात्मा तो सदा ठहरा हुआ है। हम भी ठहर जाएं, तो मिलन हो जाए। उस मिलन में ही सच्चिदानंद का अनुभव है। और इस मिलन के बाद कोई विरह नहीं है। सुख मिलेंगे, छूटेंगे। दुख मिलेंगे, छूटेंगे। परमात्मा मिला, तो फिर नहीं छूटता है। आनंद मिला, तो फिर नहीं छूटता है।

CamScanner

जिस दिन से तुम्हारा मन दोस्तों और रिश्तेदारों से हटने लगे
तब समझ जाओ की तुम
एक बड़े और समझदार व्यक्ति बन चुके हो ...

CS CamScanner

आपके साथ कितना भी
छल क्यों ना हुआ हो, परन्तु
परमात्मा का आशीर्वाद
आपसे कोई छीन नहीं
सकता..

CamScanner

Maitreyi Nivi

25m ·

O.s.h.o. says -
Once you choose, never give doubt any cooperation. Otherwise you will remain shaky and indecisive; you will never be integrated. Your decision may go wrong but by standing with your decision you will grow like a tall tree reaching the sky.

See translation

CS CamScanner

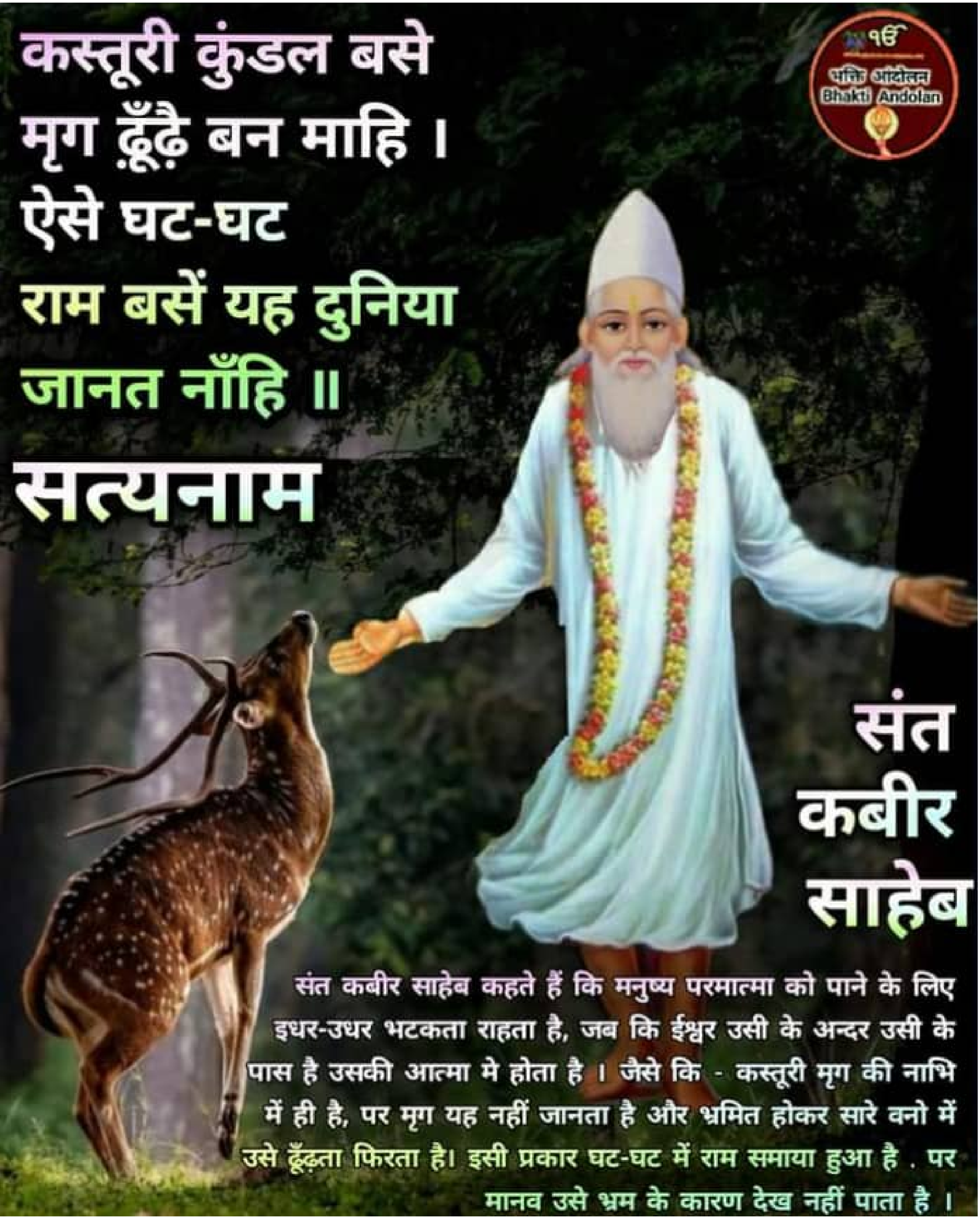
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
कस्तूरी कुंडल बसे
मृग ढ़ूँढ़ै बन माहि ।
ऐसे घट-घट
राम बसें यह दुनिया
जानत नाँहि ॥
सत्यनाम
संत
कबीर
साहेब
संत कबीर साहेब कहते हैं कि मनुष्य परमात्मा को पाने के लिए इधर-उधर भटकता राहता है, जब कि ईश्वर उसी के अन्दर उसी के पास है उसकी आत्मा मे होता है । जैसे कि - कस्तूरी मृग की नाभि में ही है, पर मृग यह नहीं जानता है और भ्रमित होकर सारे वनो में उसे ढ़ूंढ़ता फिरता है। इसी प्रकार घट-घट में राम समाया हुआ है . पर मानव उसे भ्रम के कारण देख नहीं पाता है ।

CamScanner

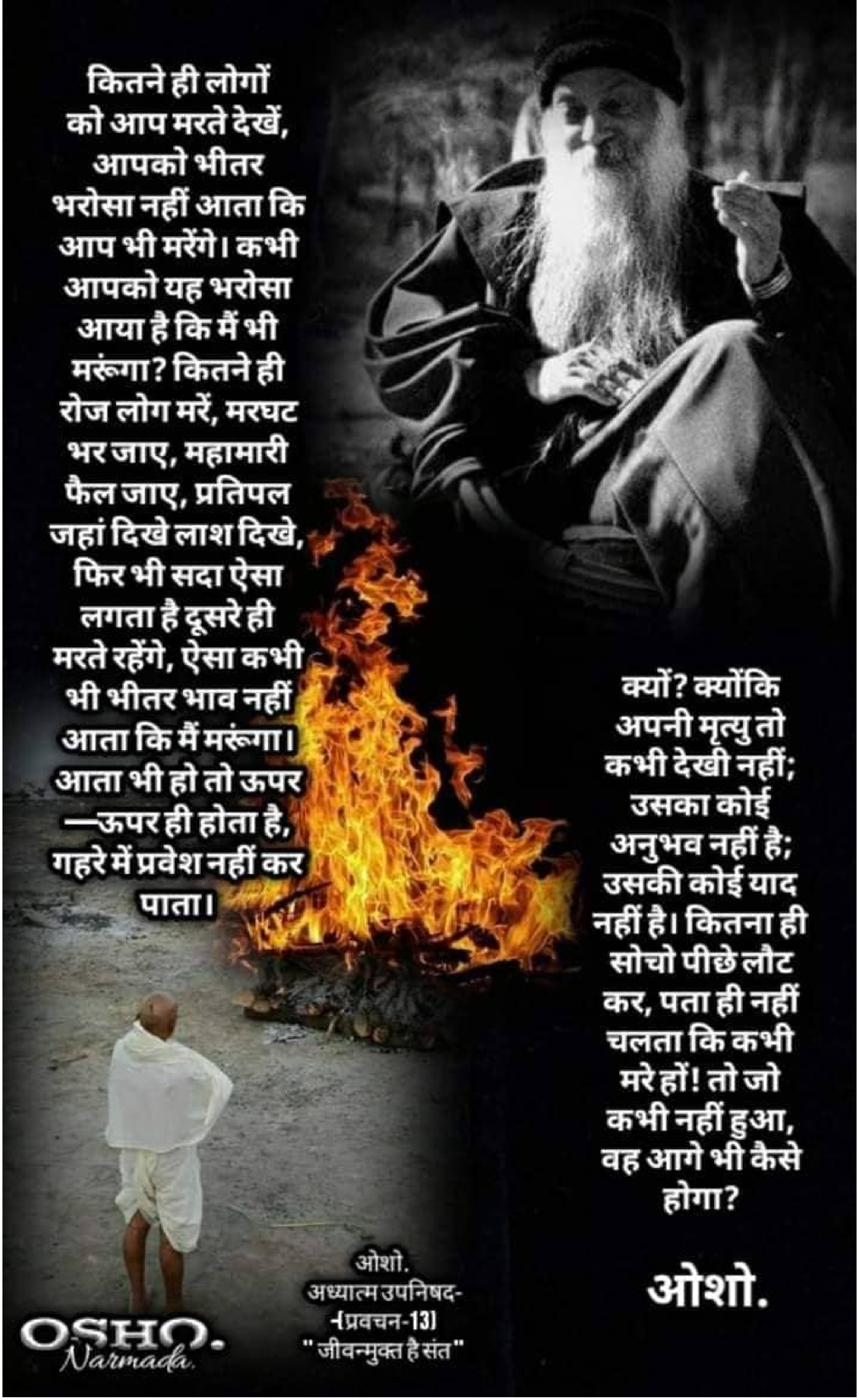

CS CamScanner

ख्याल रखना.! जो लोग
राम और कृष्ण के साथ हैं,
लेकिन बुद्ध के
विपरित हैं! और महावीर
के साथ हैं, लेकिन
"जीसस के विपरीत हैं!
समझ लेना.. ऐसे
लोग कभी ईश्वर के पक्ष में
नहीं हो सकते.!!

OSHO

CamScanner

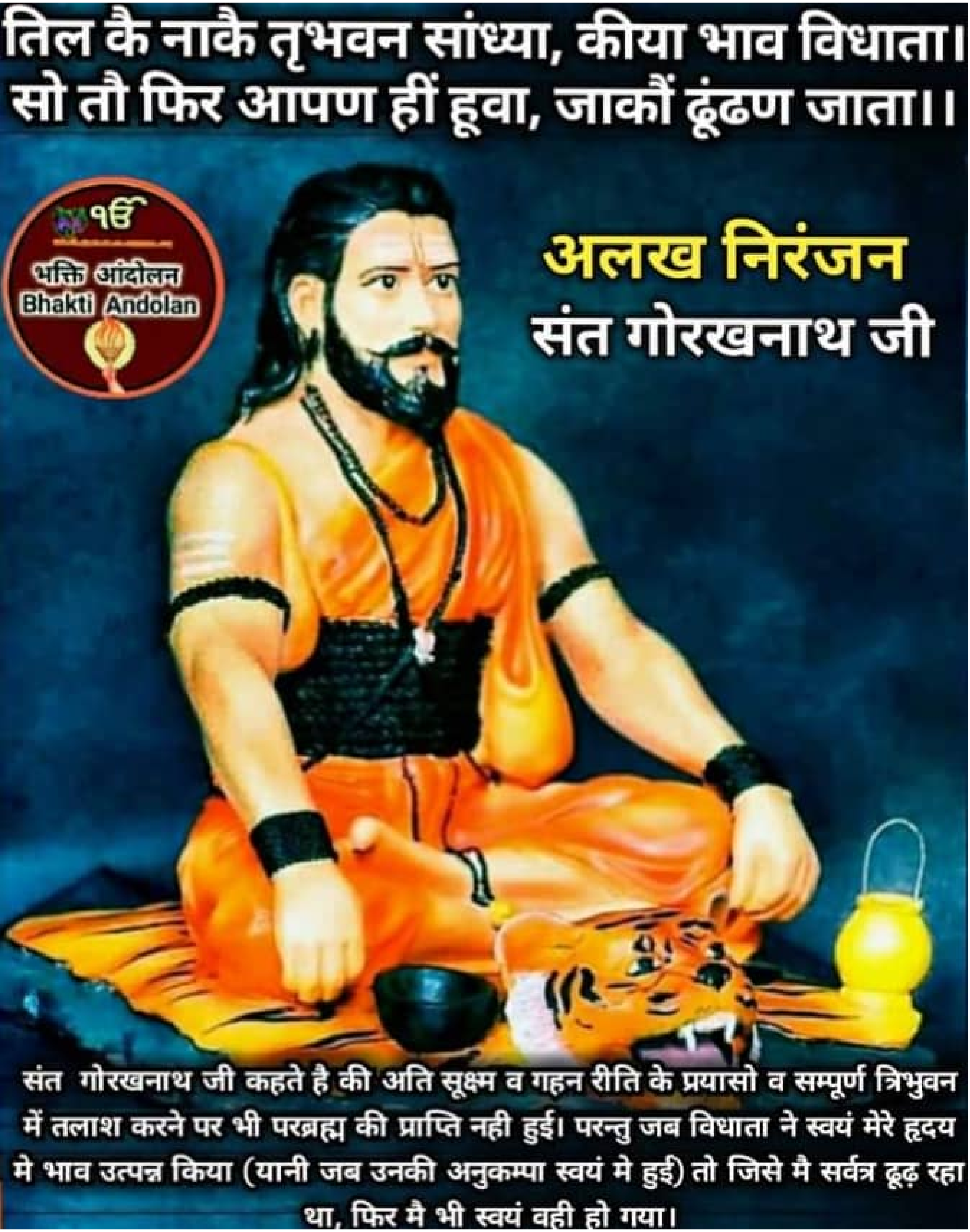

तिल के नाकै तृभवन सांध्या, कीया भाव विधाता।
सो तौ फिर आपण हीं हूवा, जाकौं ढूंढण जाता।।
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
अलख निरंजन
संत गोरखनाथ जी
संत गोरखनाथ जी कहते है की अति सूक्ष्म व गहन रीति के प्रयासो व सम्पूर्ण त्रिभुवन
में तलाश करने पर भी परब्रह्म की प्राप्ति नही हुई। परन्तु जब विधाता ने स्वयं मेरे हृदय
मे भाव उत्पन्न किया (यानी जब उनकी अनुकम्पा स्वयं मे हुई) तो जिसे मै सर्वत्र ढूढ़ रहा
था, फिर मै भी स्वयं वही हो गया।

CamScanner

Ramana Hridayam

8h ·

एक बार, मेरे द्वारा दण्डवत करने के बाद, महर्षि ने टिप्पणी की:

एम: "ऐसा क्यों करता है? यह केवल एक औपचारिकता है। यह जरूरी तो नहीं है।

मुझे किसी भी और हर सवाल का जवाब देना चाहिए: जब तक मैं नहीं देता, मैं महान नहीं हूं। मुझे टेलीविज़न के साथ समर्थन नहीं है। भगवान ने मुझ पर उस उपहार को नहीं छोड़ दिया है। मैं क्या करूँ ? मैं सभी सवालों के जवाब कैसे दे सकता हूँ?

लोग मुझे 'महर्षि' कहते हैं और ऐसा बर्ताव करते हैं, लेकिन मैं खुद को महर्षि नहीं देखता। इसके बजाय, मैं सभी को महर्षि के रूप में देखता हूँ। "

- चेतना अमरता, p. 142

· Rate this translation

CamScanner

लेकीन मेरा ये नया शरीर (सूक्ष्म शरीर) है। बेटा, मेरा नया जन्म हो चुका है। मैंने नया जन्म सूक्ष्म संसार में लिया है,पृथ्वी पर नहीं। योगानंद बोले-गुरुजी सूक्ष्म संसार कैसा है और वहाँ कौन रहते है? गुरुजी बोले-बेटा इस सूक्ष्म संसार का नाम हिरण्य लोक है। पृथ्वी पर रहने वाले लोगों की तुलना में यहां श्रेष्ठ (सिद्ध) लोग रहते है।

एक कदम सफलता की ओर

CamScanner

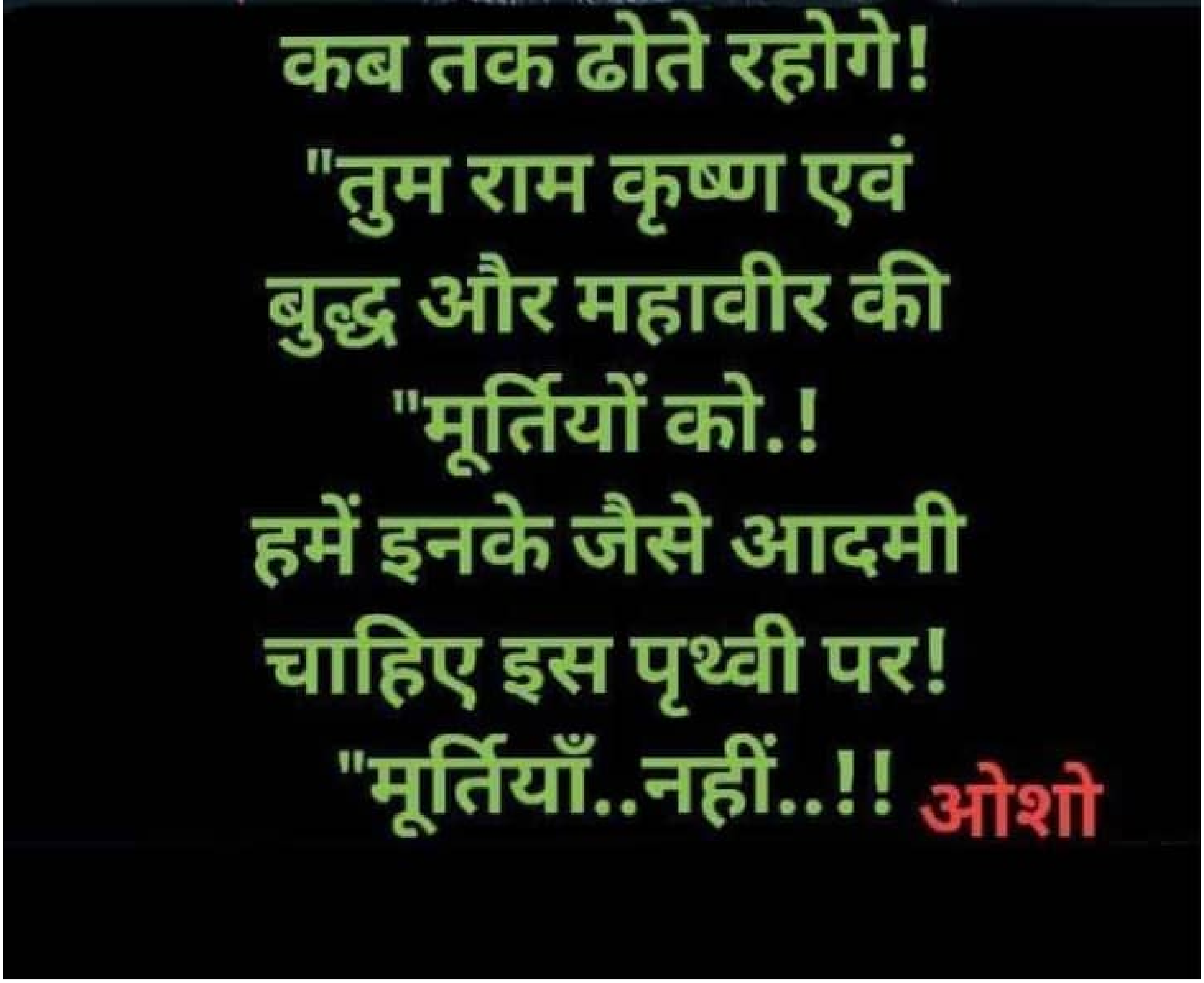
कब तक ढोते रहोगे!
"तुम राम कृष्ण एवं
बुद्ध और महावीर की
"मूर्तियों को.!
हमें इनके जैसे आदमी
चाहिए इस पृथ्वी पर!
"मूर्तियाँ..नहीं..!!
ओशो

CamScanner

- Be AwArE -

संन्यासी वही है, जो कहता है:
न मुझे सत्कार चाहिये न सम्मान चाहिये,
न मुझे अपमान की चिंता है।

मैं तो जैसा हूं, वैसा ही जीऊंगा।
तुम सम्मान दो तो ठीक,
तुम अपमान दो तो ठीक;
वह तुम्हारा प्रश्न है,
तुम्हारी समस्या है,
मेरा उससे कुछ लेना-देना नहीं।

CamScanner

जीवन में पराया कोई नहीं
होता,यह सिर्फ मन का
वहम है। भरोसा उठा तो
इंसान पराया हो जाता है।
और साँसे रुकीं तो शरीर
पराया हो जाता है।

CamScanner

जो व्यक्ती सदा मृत्यु बोध में जीता है उसे किसी अन्य ध्यान साधना की जरूरत नही है।

ओशो

CamScanner

If you want to become full,
let yourself be empty.
Lao Tzu
graphics play by
padma 9/19

CamScanner

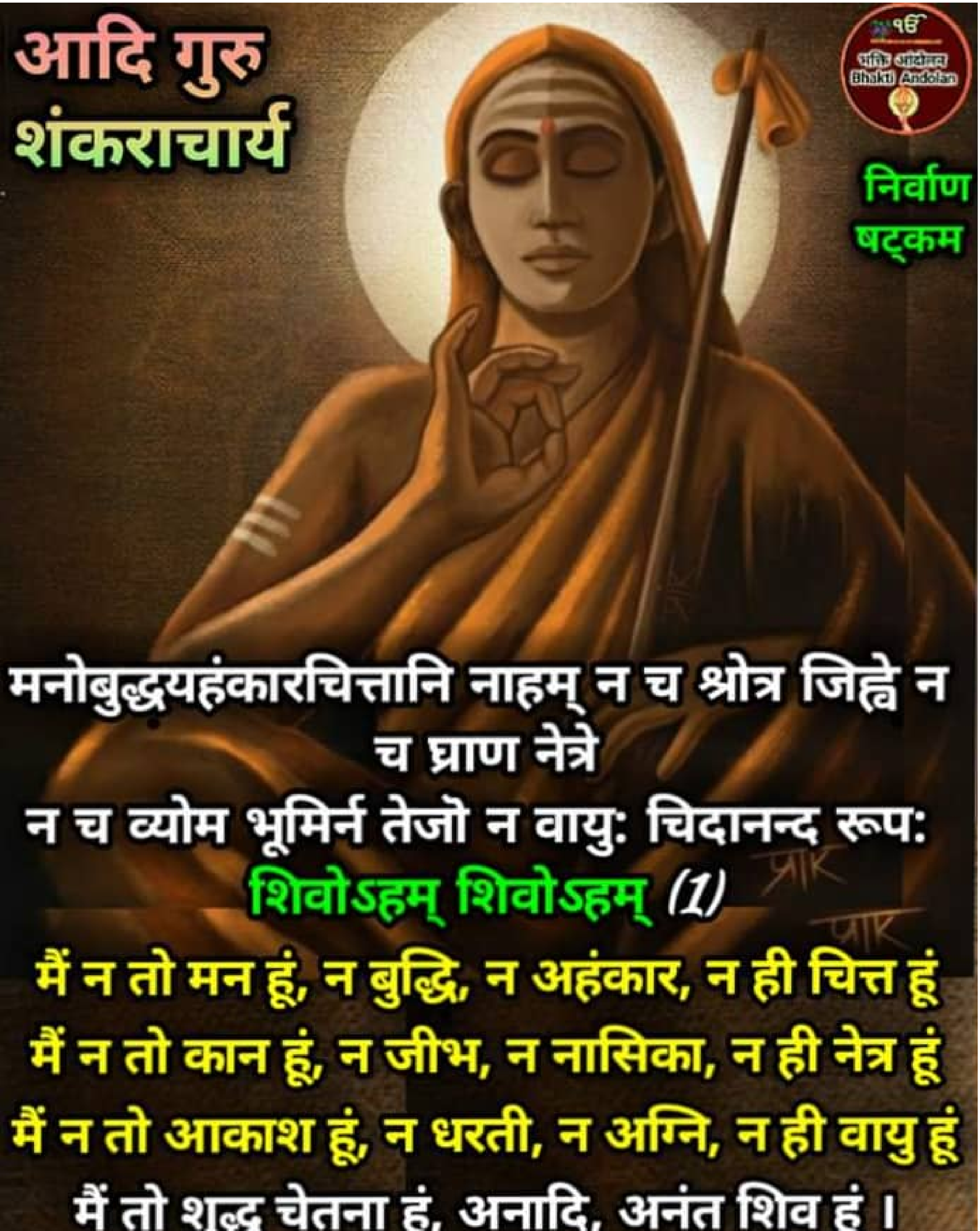
आदि गुरु शंकराचार्य
भक्ति आंदोलन Bhakti Andolan
निर्वाण षट्कम
मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहम् न च श्रोत्र जिह्वे न च घ्राण नेत्रे
न च व्योम भूमिर्न तेजो न वायुः चिदानन्द रूपः
शिवोऽहम् शिवोऽहम् (1)
मैं न तो मन हूं, न बुद्धि, न अहंकार, न ही चित्त हूं
मैं न तो कान हूं, न जीभ, न नासिका, न ही नेत्र हूं
मैं न तो आकाश हूं, न धरती, न अग्नि, न ही वायु हूं
मैं तो शुद्ध चेतना हूं, अनादि, अनंत शिव हूं ।

CamScanner

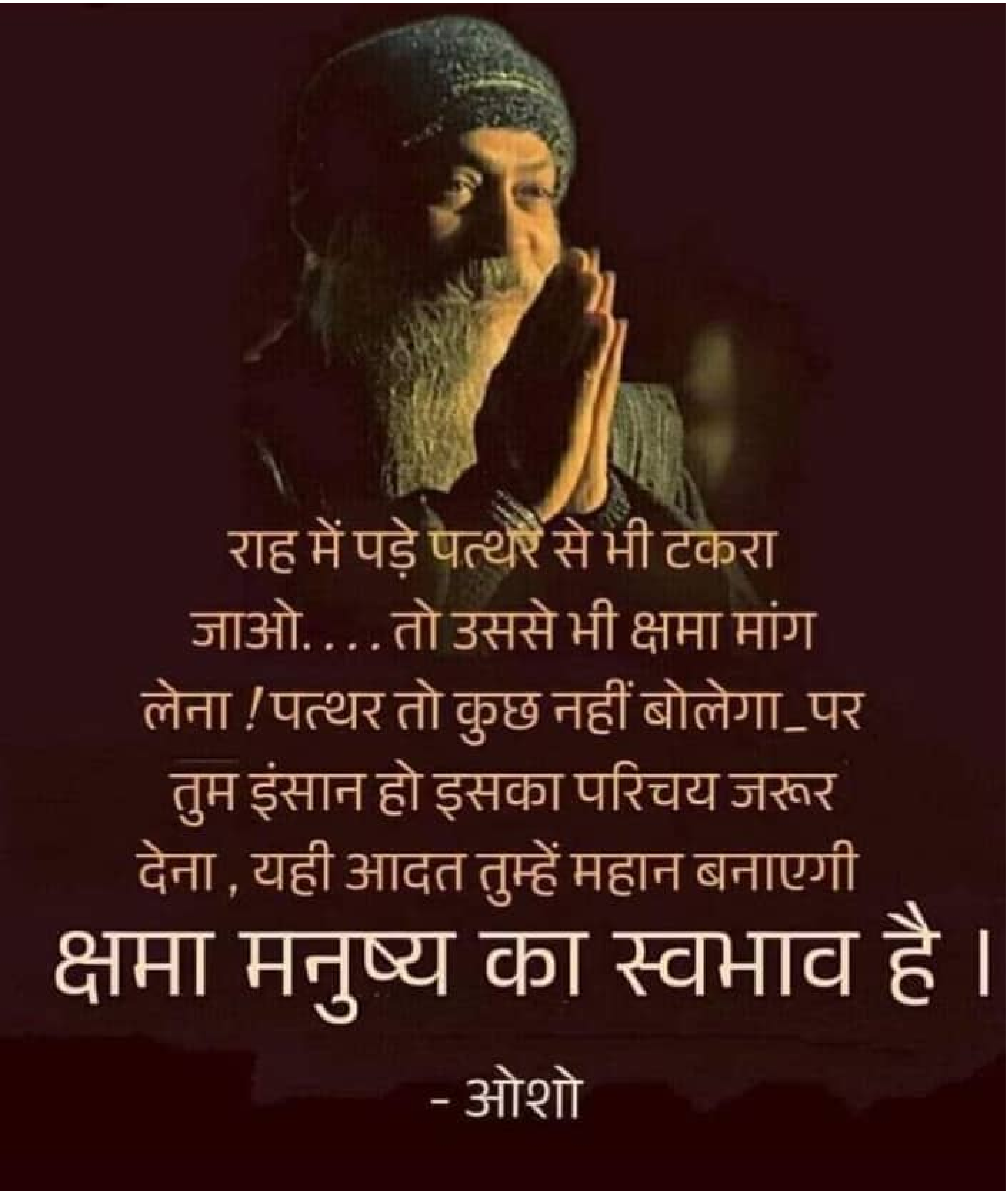
राह में पड़े पत्थर से भी टकरा
जाओ. . . . तो उससे भी क्षमा मांग
लेना ! पत्थर तो कुछ नहीं बोलेगा_पर
तुम इंसान हो इसका परिचय जरूर
देना , यही आदत तुम्हें महान बनाएगी
क्षमा मनुष्य का स्वभाव है ।
- ओशो

CamScanner

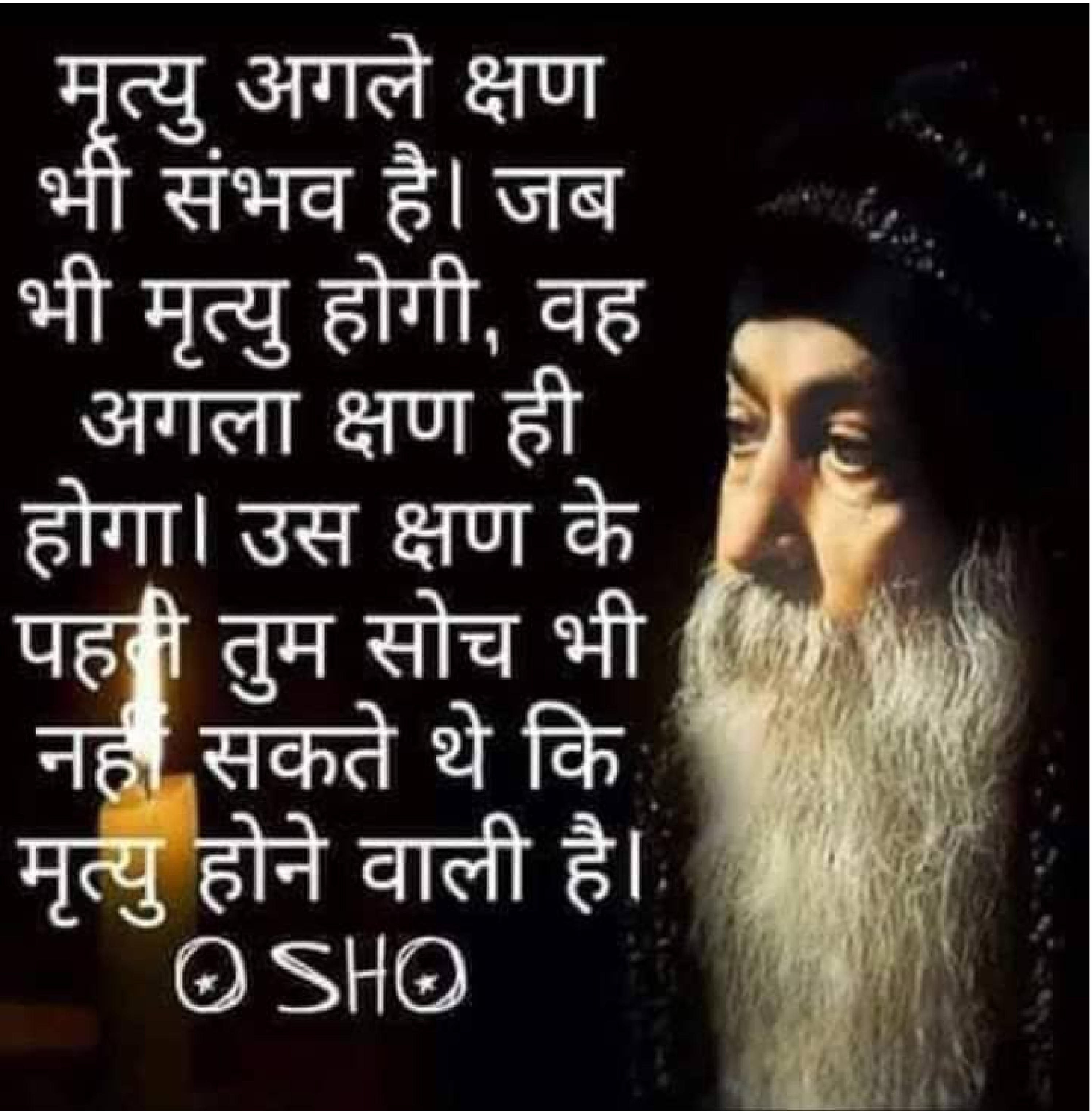
मृत्यु अगले क्षण
भी संभव है। जब
भी मृत्यु होगी, वह
अगला क्षण ही
होगा। उस क्षण के
पहले तुम सोच भी
नहीं सकते थे कि
मृत्यु होने वाली है।
OSHO

CamScanner

ओशो सूत्र

स्वयं के विचार को
पाने के लिए
औरों के विचार से
मुक्त होना जरूरी है।
जिसे अपने पैरों से
चलना सीखना हो,
उसे दूसरे के कंधे का सहारा
छोड़ ही देना चाहिए।
स्वयं की आंख तभी खुलती हैं
जब हम दूसरों की आंखों से देखना
बंद कर देते हैं;
और स्मरण रहे कि दूसरों की
आंखों से देखने वाला व्यक्ति
अंधे व्यक्ति से भी
ज्यादा अंधा होता है।

97

आचार्य श्री रजनीश
Naye Sanket (नये संकेत)notes 97-99

संकेत

Naye Sanket

🙏 ✋ 🙏

OshO Rajneesh

🧘

anamcara Rames

CamScanner

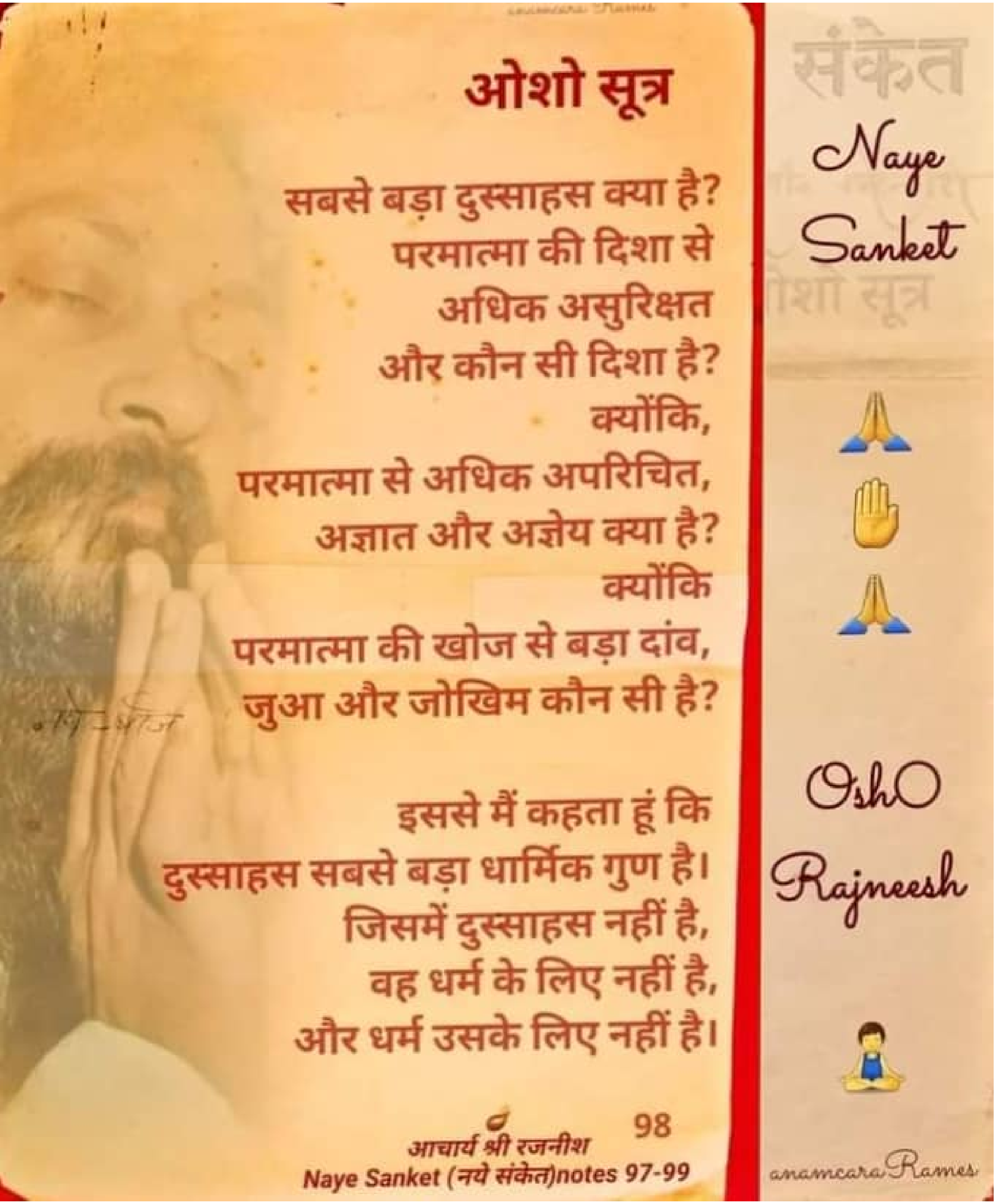
ओशो सूत्र
सबसे बड़ा दुस्साहस क्या है?
परमात्मा की दिशा से
अधिक असुरिक्षत
और कौन सी दिशा है?
क्योंकि,
परमात्मा से अधिक अपरिचित,
अज्ञात और अज्ञेय क्या है?
क्योंकि
परमात्मा की खोज से बड़ा दांव,
जुआ और जोखिम कौन सी है?
इससे मैं कहता हूं कि
दुस्साहस सबसे बड़ा धार्मिक गुण है।
जिसमें दुस्साहस नहीं है,
वह धर्म के लिए नहीं है,
और धर्म उसके लिए नहीं है।
98
आचार्य श्री रजनीश
Naye Sanket (नये संकेत)notes 97-99
संकेत
Naye
Sanket
OshO
Rajneesh
anamcara Rames

CamScanner

ओशो सूत्र

सत्यानुभूति न तो विचार है,
न ही भावना।
वह तो समस्त प्राणों का-
तुम्हारी समस्त सत्ता का
आंदोलित और स्पंदित
हो उठना है।
वह तुममें नहीं होती,
वरन तुम ही उसमें होते हो।
वह तो तुम्हारा स्वरूप है।
वह अनुभव ही नहीं,
स्वयं तुम ही हो।
और मात्र तुम ही नहीं हो,
तुमसे भी ज्यादा वह है
क्योंकि उसमें
सर्व की सत्ता भी समाहित है।

आचार्य श्री रजनीश 99
Naye Sanket (नये संकेत)notes 97-99

संकेत

Naye Sanket

OshO Rajneesh

anamcaraRames

CamScanner

Naye Sanket

OshO Rajneesh

anamcara Rames

ओशो सूत्र
नये संकेत

क्या तुम इतने दरिद्र हो
कि धर्म भी तुम्हारे पास नहीं?
धन की दरिद्रता बहुत बड़ी बात नहीं है।
असली दरिद्रता तो धर्म की दरिद्रता है।
धन रहते भी लोग दरिद्र बने रहते हैं लेकिन
जिसके पास धर्म की संपदा होती है,
उसकी दरिद्रता सदा सदा के लिए नष्ट हो जाती है।
मनुष्य के जीवन में--पूरी मनुष्यता के जीवन में भी
सबसे बड़ी घटना उसकी आधिभौतिक सफलताएं
या साम्राज्यों का निर्माण नहीं है,
बल्कि उस संपदा की खोज
और उपलब्धि है
जो कि उसके ही भीतर छिपी है।
उस संपदा को ही मैं धर्म कहता हूं।
जो संपदा बाहर है, वह धन है
और जो संपदा भीतर है, वह धर्म है।
धन को चुनने वाले अंततः दरिद्रता को,
और धर्म को चुनने वाले अंततः
वास्तविक धन को
चुनने वाले सिद्ध होते हैं।

आचार्य श्री रजनीश
Naye Sanket (नये संकेत) notes 100-102

CamScanner

Naye Sanket

OshO Rajneesh

anamcara Rames

ओशो सूत्र
नये संकेत

एक घर में गया था।
वहां वीणा रखी थी।
मैंने कहा मनुष्य का मन भी
वीणा की भांति है। वह तो साधन है।
उससे संगीत और
विसंगीत दोनों ही पैदा हो सकते हैं।
और जो भी हम उससे पैदा करेंगे,
उसकी जिम्मेवारी हमारे अतिरिक्त
और किसी पर नहीं होगी।
अपने मन को संगीत का
साधन बनाएं और सत्य का।
उसे स्वतंत्र रखें और सच्चा।
और अहंकार से मुक्त रखें
क्योंकि अहंकार से
अधिक विसंगीत पैदा पहुंचता है
जो स्वयं के भीतर संगीतपूर्ण होता है।
मात्र बुद्धिमान नहीं बल्कि समग्ररूपेण
जिसका व्यक्तित्व संगीतपूर्ण है,
वे ही सत्य के सर्वाधिक
निकट पहुंचते हैं।

आचार्य श्री रजनीश

Naye Sanket (नये संकेत) notes 100-102

CamScanner

Naye Sanket

OshO Rajneesh

anamcara Rames

ओशो सूत्र

नये संकेत

मैं तुम्हें मंत्रों को दुहराते देखता हूं,
कंठस्थ शब्दों और शास्त्रों की पुनरुक्ति करते देखता हूं
तो मेरा हृदय दया और सहानुभूति से भर जाता है।
यह तुम क्या कर रहे हो? क्या अपने को भुलाने और विस्मरण
करने और आत्म सम्मोहन के द्वारा निद्रा में
जाने को ही तुमने धर्म और साधना समझ लिया है?

निश्चय ही मंत्रों का उच्चार और शब्दों का जप
चित्त को सुखद निद्रा में सुलाने में समर्थ है
लेकिन निद्रा को समाधि मत समझ लेना।

मित्र, सुषुप्ति और समाधि में बहुत भेद है।
आत्म सम्मोहन जनित सुषुप्ति में अनुभव भी घटित होते हैं
लेकिन वे सब स्वप्नों से ज्यादा नहीं हैं और
उन्हें हमारा मन ही प्रक्षिप्त करता है।
फिर ये स्वप्न चाहे कितने ही सुखद और
संतुष्टिदायी हों, सुख और संतोष के कारण
वे सत्य नहीं हो जाते है।
पर साधारणत: हम सत्य को नहीं,
संतोष को ही खोजते हैं और इसलिए किसी भी
भ्रम में हमारा उलझ जाना बहुत आसान है।
संतोष को खोजने वाला मन किसी भी रूप से
पैदा हुई मादकता से तृप्त हो सकता है...
किसी भी भांति का आत्म-विस्मरण उसे तृप्ति दे सकता है।
और तथाकथित मंत्र, जप और एकाग्रताओं के द्वारा
आत्म-विस्मरण संभव हो जाता है।
किसी भी भांति की सतत पुनरुक्ति चेतना को मूच्छित करती है।
जब कि धर्म का संबंध मूच्छा से नहीं,
अमूच्छा से है,आत्म विस्मरण से है।

आचार्य श्री रजनीश
Naye Sanket (नये संकेत) notes 100-102

CamScanner

8:04 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

Ramana Hridayam
2d ·

क्या साकार ऋषि संसार देखता है?

एम: हाँ, लेकिन उसका दृष्टिकोण अलग है। आप स्क्रीन हैं, स्वयं अहंकार बनाता है, अहंकार के अपने विचार हैं जो सिनेमा चित्रों की तरह दुनिया को प्रदर्शित होते हैं और वही विचार दुनिया हैं। लेकिन वास्तव में, स्वयं के अलावा कुछ भी नहीं है। सब अहंकार की योजनाएं हैं।

सिनेमा की तस्वीरें चलती हैं, लेकिन उन्हें पकड़ने की कोशिश करें! आप क्या पकड़ते हैं? केवल स्क्रीन! ली तस्वीरें गायब हो जाती हैं, और क्या बचा है? फिर से स्क्रीन।

और तो यह यहाँ है। यहां तक कि जब दुनिया प्रकट होती है, तब भी जानी इसे केवल स्वयं की अभिव्यक्ति के रूप में देखता है।

पांच इंद्रियों के माध्यम से केवल एक ही मन काम करता है। उनके माध्यम से एक शक्ति काम कर रही है, और उनका काम शुरू और समाप्त होता है। एक ऐसा विकल्प होना चाहिए जिस पर उनकी गतिविधियां निर्भर करती हैं, एक ही विकल्प।

- चेतना अमरता

· Rate this translation

Write a comment...

CS CamScanner

7:40 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

Awakening Souls
Maitreyi Nivi · 1d ·

IS FAMILY LIFE A HURDLE?

The Testament of Sri Ramana Maharshi
(by V. Kadal Amutham)

Family life, relations, friends, attachments, desires are all creations of mind. They appear and disappear. Family life is not a hindrance to enlightenment. The thought that those are all hindrance is the hindrance. Once we remove this thought, the hindrance will fade away. We need to throw away the thought of hindrance. There is nothing that can be a hindrance for the Soul. Whatever may be our style of living, we shall remain with spiritual thoughts. This is more than sufficient.

Note: Our thoughts are hindrance. They try to slow down our walk and they consume our energy. They waste our time and keep our mind occupied. These thoughts are the source of our worries. So we shall remove these thoughts by observing its source. The source is the ego, produced by the thought that we are the body. Once we remove the thoughts hindering our progress then will there be anything between us and the Soul?

See translation

CamScanner

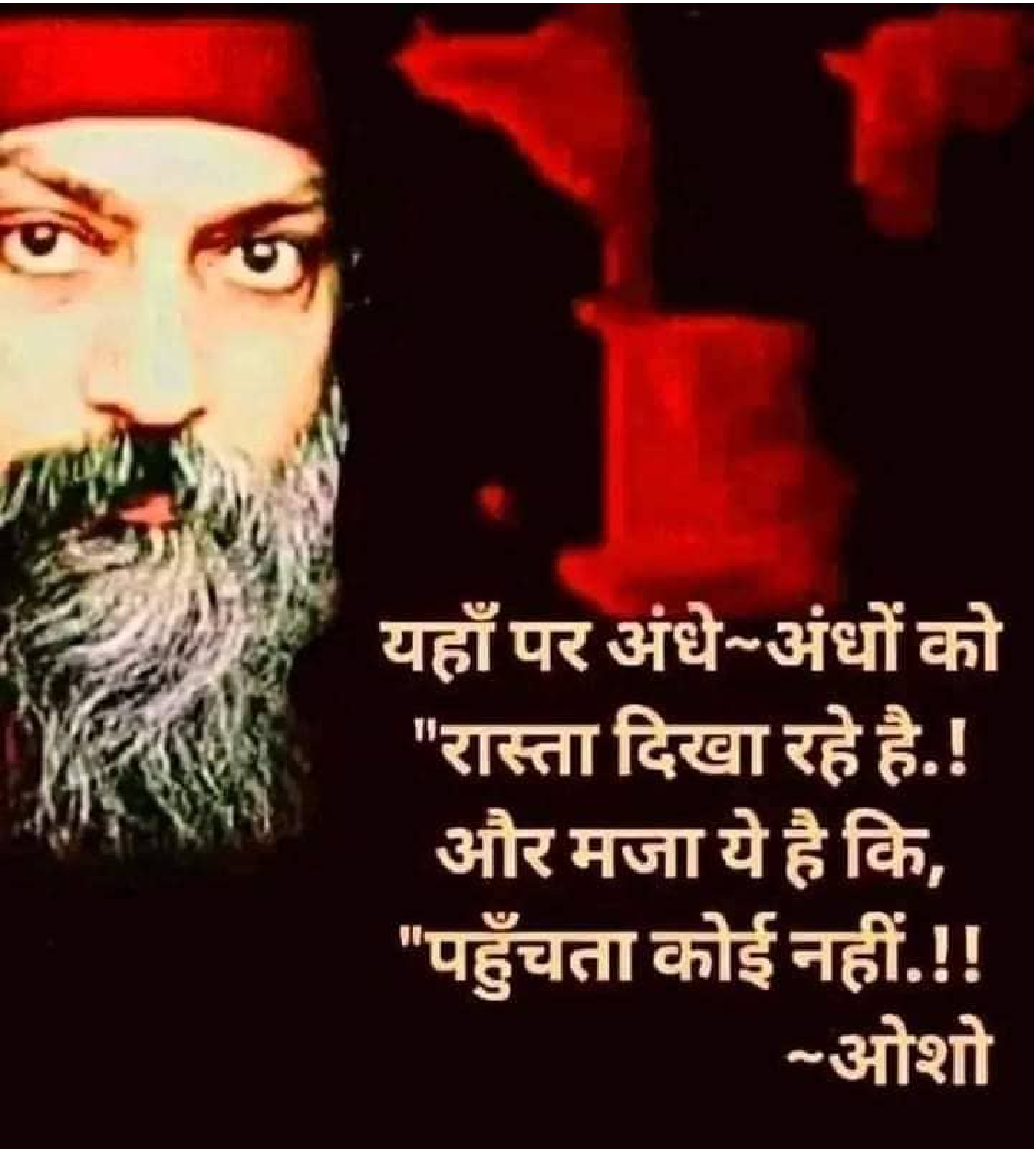

CamScanner

Ramana Hridayam

1d ·

निरंतर प्रशंसा

प्रश्न: क्या लंबे समय तक ध्यान करना बेहतर है या कम समय तक?

जैसे: जब कोई नींद की स्थिति में हो, तो ध्यान करने का प्रयास हमेशा जारी रहना चाहिए।

जैसे समुद्र की ओर लगातार बहने वाली नदी है, वैसे ही हमारी जागरूकता बिना विराम के बहने चाहिए। हमें यह अवधारणा नहीं होनी चाहिए कि हमें कुछ समय पर ध्यान करना चाहिए।

चलते, काम करते, खाते, आदि में स्वयं पर ध्यान जारी रखना चाहिए। यह स्वाभाविक रूप से हर समय सभी स्थानों पर प्रवाहित होना चाहिए।

- LWB p. 304

Rate this translation

CamScanner

CamScanner

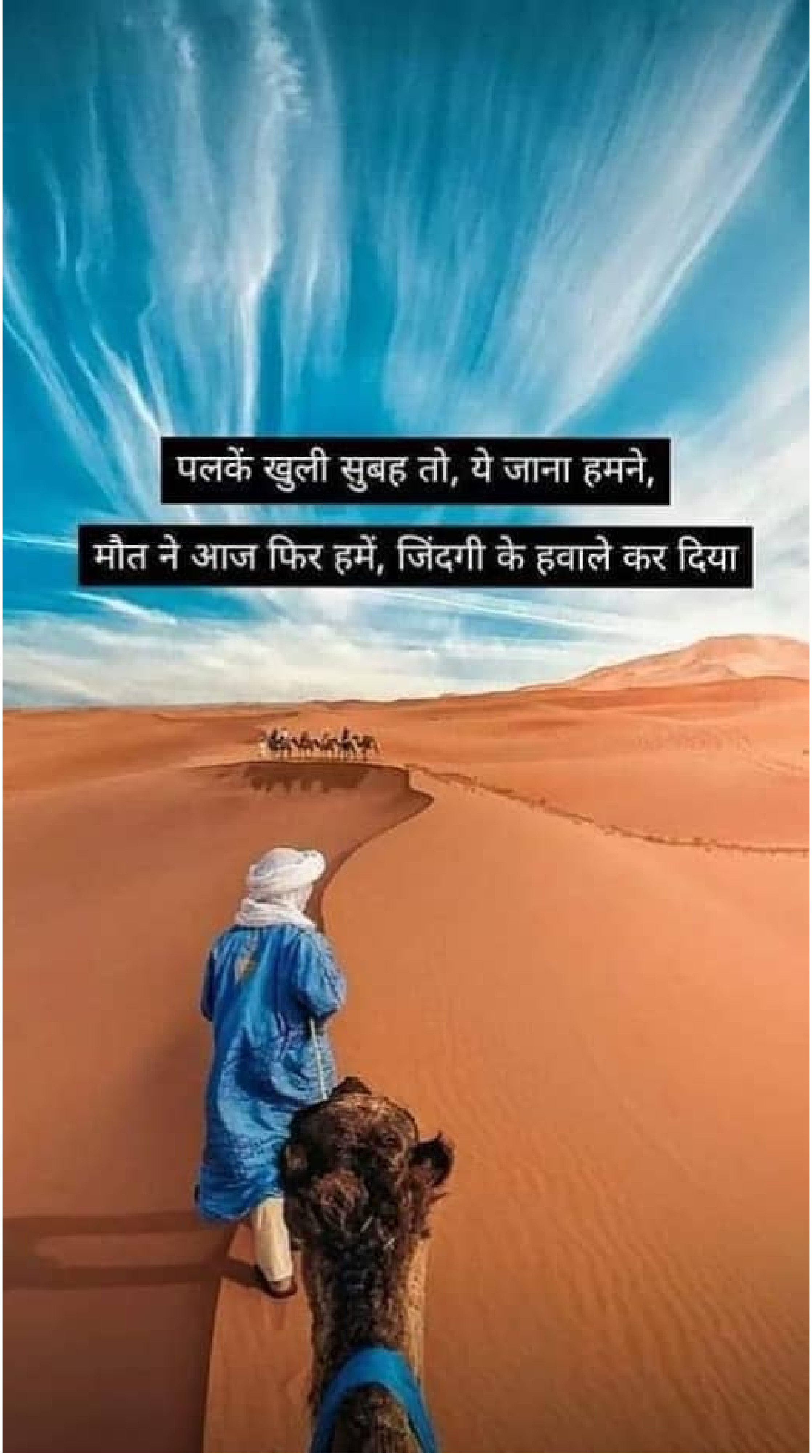

CamScanner

एक बार यह बात दिखाई पड़ जाए की यहां सब खेल है बड़ा नाटक है, तो क्रांति घट जाती है।
ओशो अहोभाव
ahobhav_
AHOBHAV

CamScanner

Ramana Hridayam
1d ·

जांच की अनुपस्थिति द्वंद्वता के भ्रम का कारण है

430 स्वरूप को छोड़कर जो द्वैत चेतना के रूप में मौजूद है, और जो कभी भ्रम के अधीन नहीं है, बाकी सब कुछ, जो द्वैतवादी रूप है, पूरी तरह से माया से बना है, साहसपूर्ण ढोंग का स्वामी है। अत: जो स्वयंस्वरूप की प्राकृतिक सच्चाई को स्पष्ट रूप से जांच से नहीं जानते, वे भ्रम से पीड़ित होंगे कि संसार और भगवान उनसे अलग हैं।

431 जिस व्यक्ति के लिए ध्यान केवल ज्ञात वस्तुओं की ओर बढ़ रहा है, और जिसका ध्यान स्वयं में थोड़ा सा भी नहीं रहता - ऐसे व्यक्ति के लिए, जो केवल एक मनुष्य की तरह आकार का है, क्या किताबें जानना और इसके बारे में सावधानीपूर्वक जांच ला सकती हैं एहसास?

गुरु वचन कोवाई में भगवान के कथन शामिल हैं, जो मुरुगनार द्वारा श्लोक में सेट किया गया है, स्वयं एक जनानी और स्वयं श्री रमन द्वारा संपादित प्रत्येक श्लोक में शामिल हैं।

Rate this translation

CamScanner

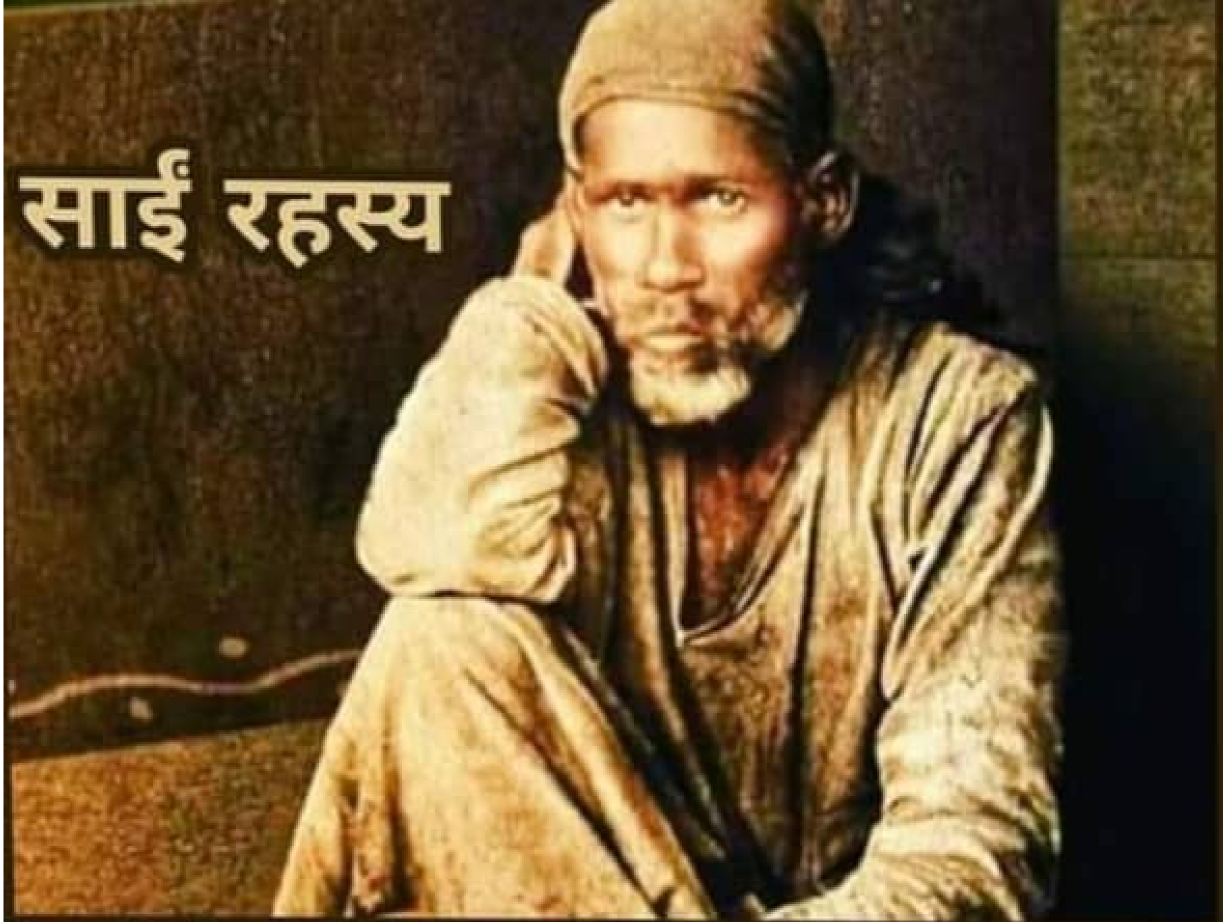

शिरडी के साईं बाबा के पास एक ब्राह्मण रोज भोजन लेकर आता था। वे रहते मस्जिद में थे। किसी को पता नहीं वे हिंदू थे कि मुसलमान। ऐसे लोगों के बाबत पता लगाना मुश्किल भी होता है। अब तुम मेरे बाबत कभी पता लगा पाओगे कि मैं हिंदू हूं कि मुसलमान; कि ईसाई, कि बौद्ध, कि यहूदी, कि पारसी! तुम कभी पता न लगा पाओगे। क्यों? क्योंकि ऐसे व्यक्ति तो किसी सीमा में आबद्ध होते ही नहीं।

ओशो

सपना यह संसार - १६

CamScanner

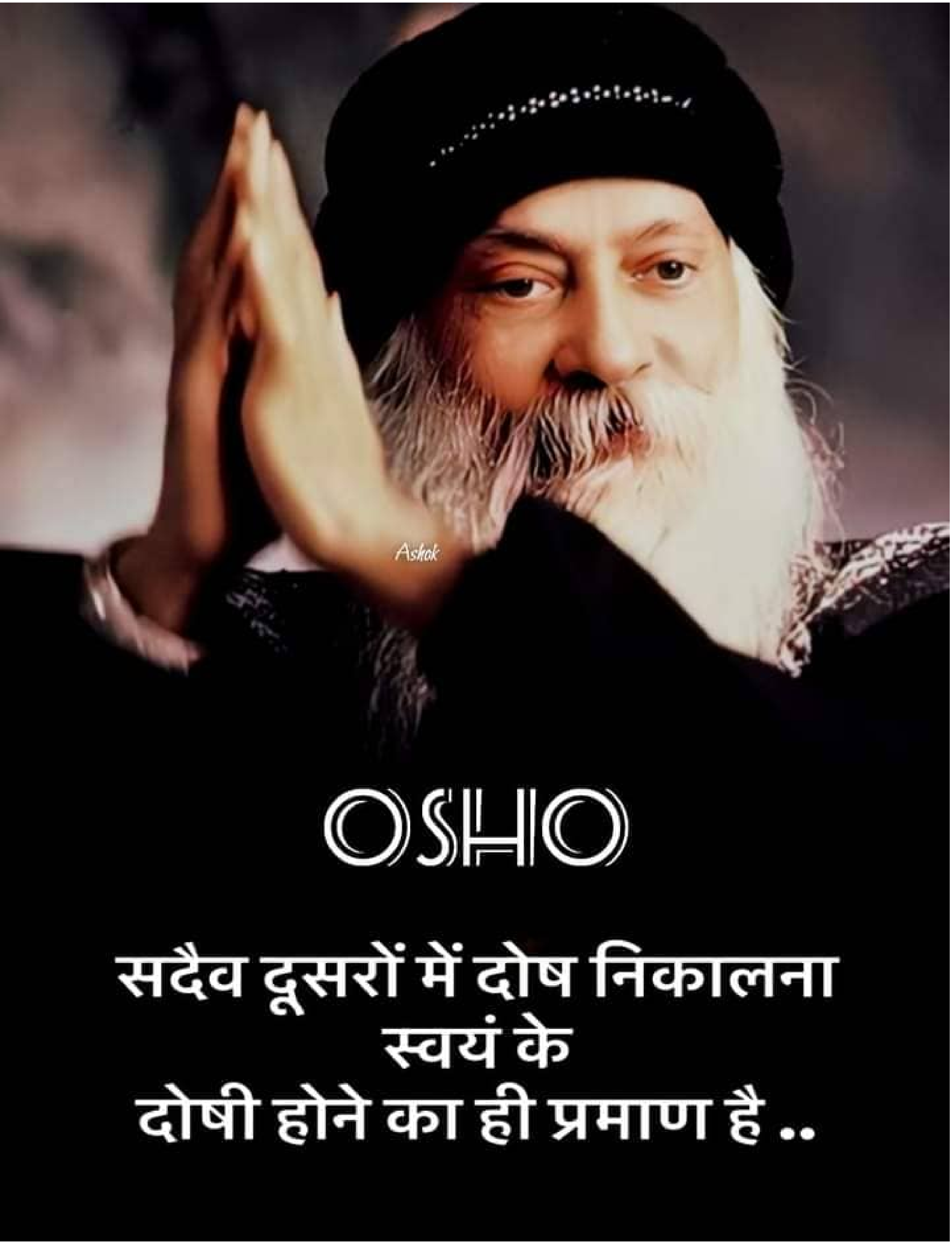

CamScanner

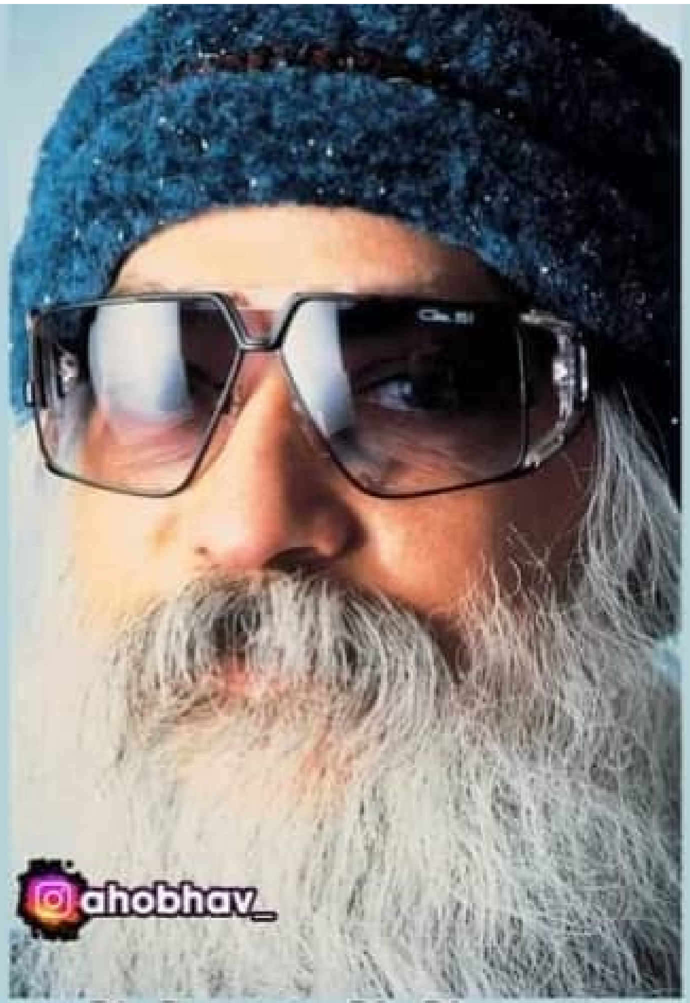

तुम दूसरों के हाथों में इतना ज्यादा
की कोई चाहे तो हवा भर दे और
चाहे तो हवा निकाल दे
तुम अपने मालिक कब बनोगे?
ओशो अहोभाव

CS CamScanner

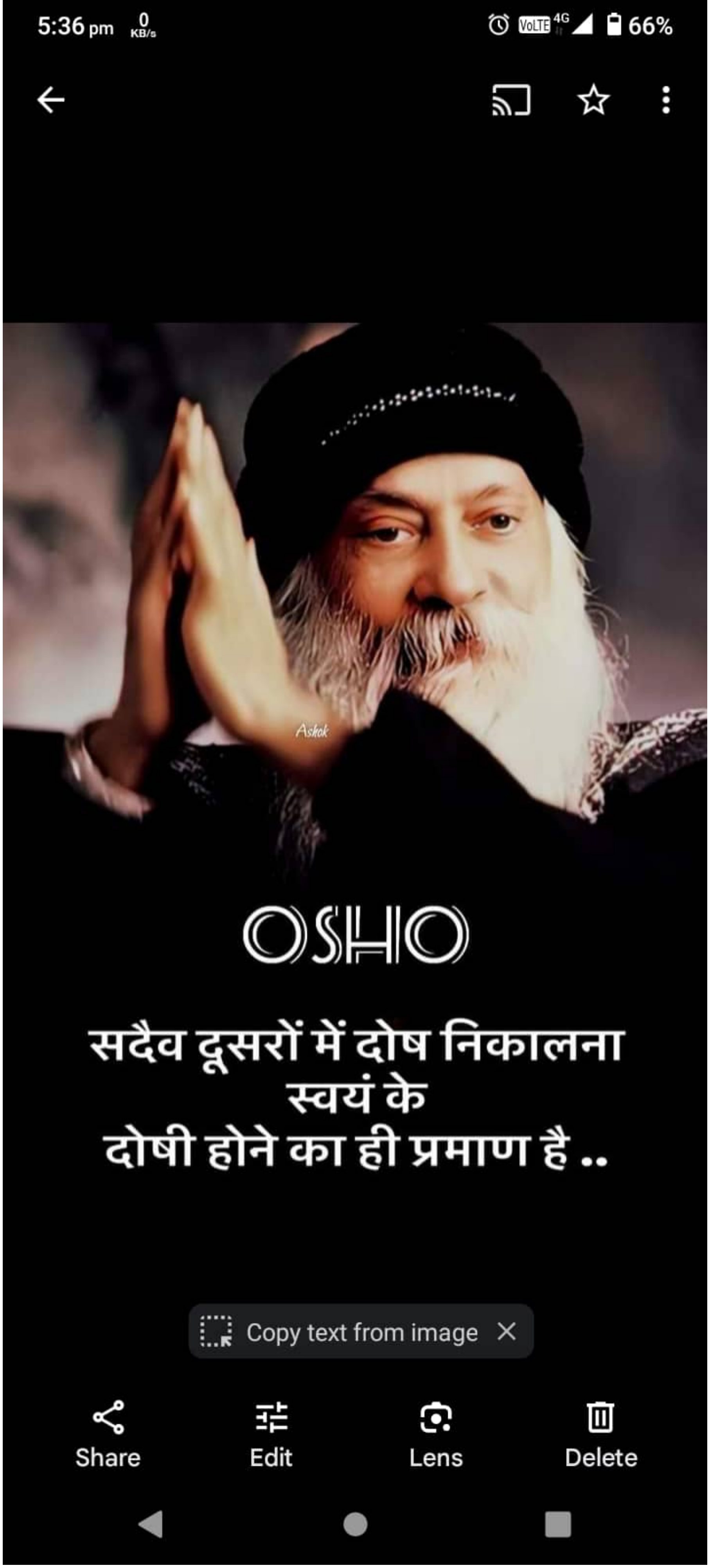
5:36 pm
66%
Ashok
OSHO
सदैव दूसरों में दोष निकालना
स्वयं के
दोषी होने का ही प्रमाण है ..
Copy text from image
Share
Edit
Lens
Delete

CamScanner

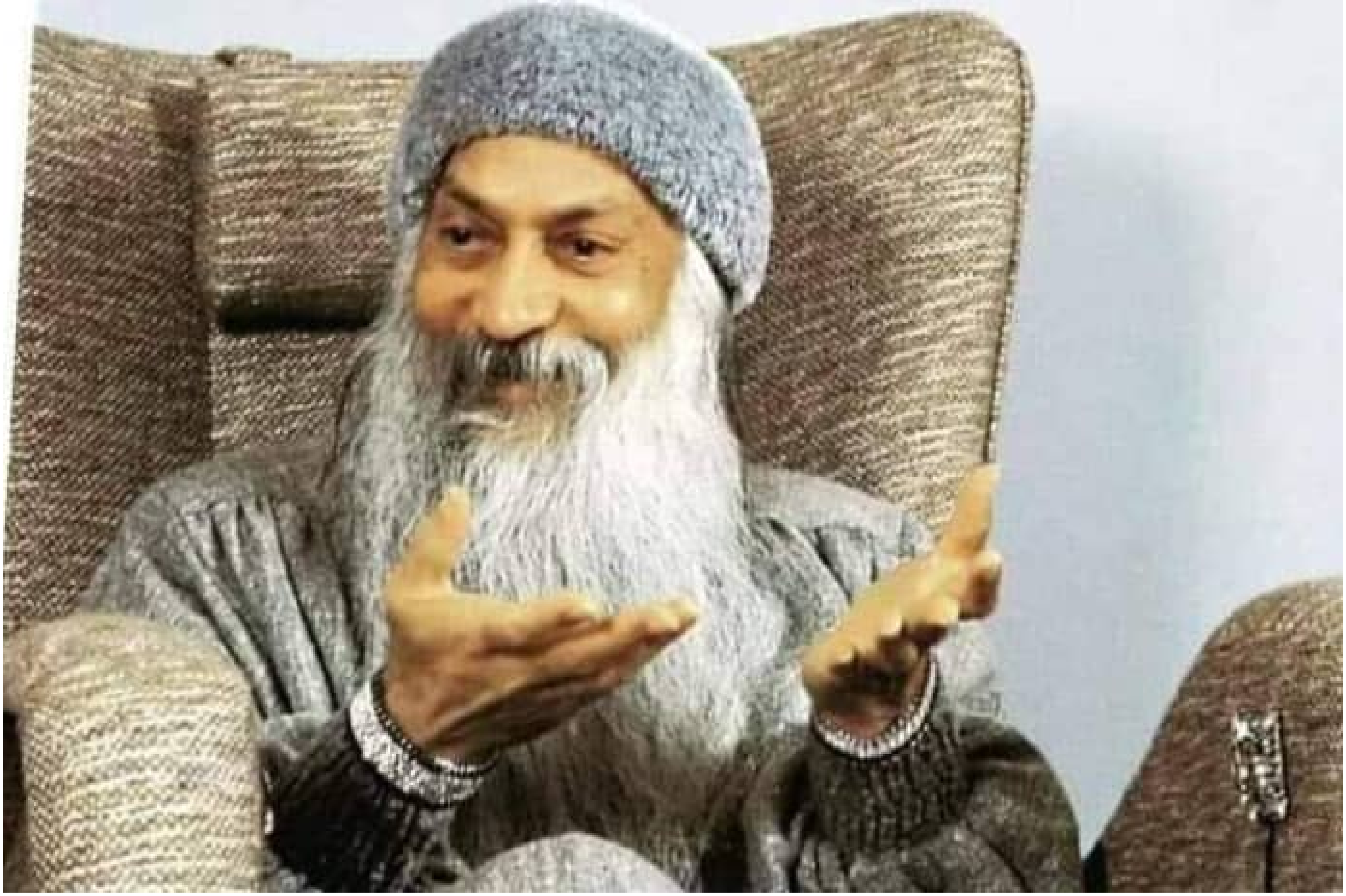

CamScanner

आदमी एक अभीप्सा है।
एक आकांक्षा हे--परम् को पाने की।
आदमी एक बीज है
और जब तक बीज फूल तक न पहुंच जाए,
तब तक चैन नहीं।
तब तक बेचैनी रहेगी ही।
चाहे धन हो कितना, चाहे पद हो कितना ।
प्रतिष्ठा हो कितनी, कुछ काम न आएगा।
बीज का फूल तक पहुंचना,
इसके अतिरिक्त और
कोई तृप्ति का उपाय नहीं है।

ओशो

CamScanner

CamScanner

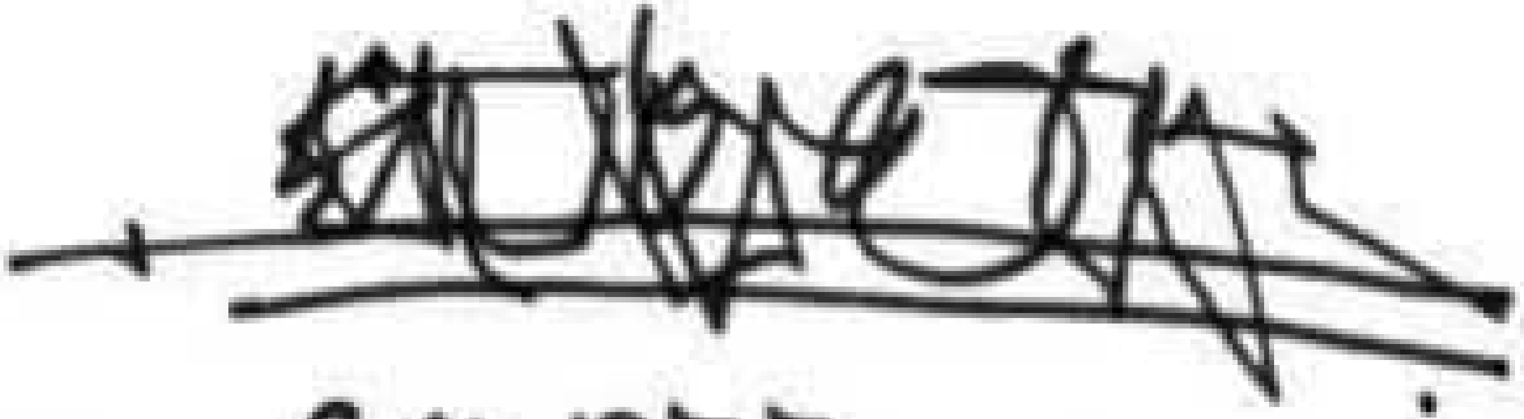

9.4. 1977

CamScanner

6:10 pm 6 KB/s 62%

48 likes

Add a comment...

8 hours ago

oshoduniya
Osho Jain • Dheere Dheere

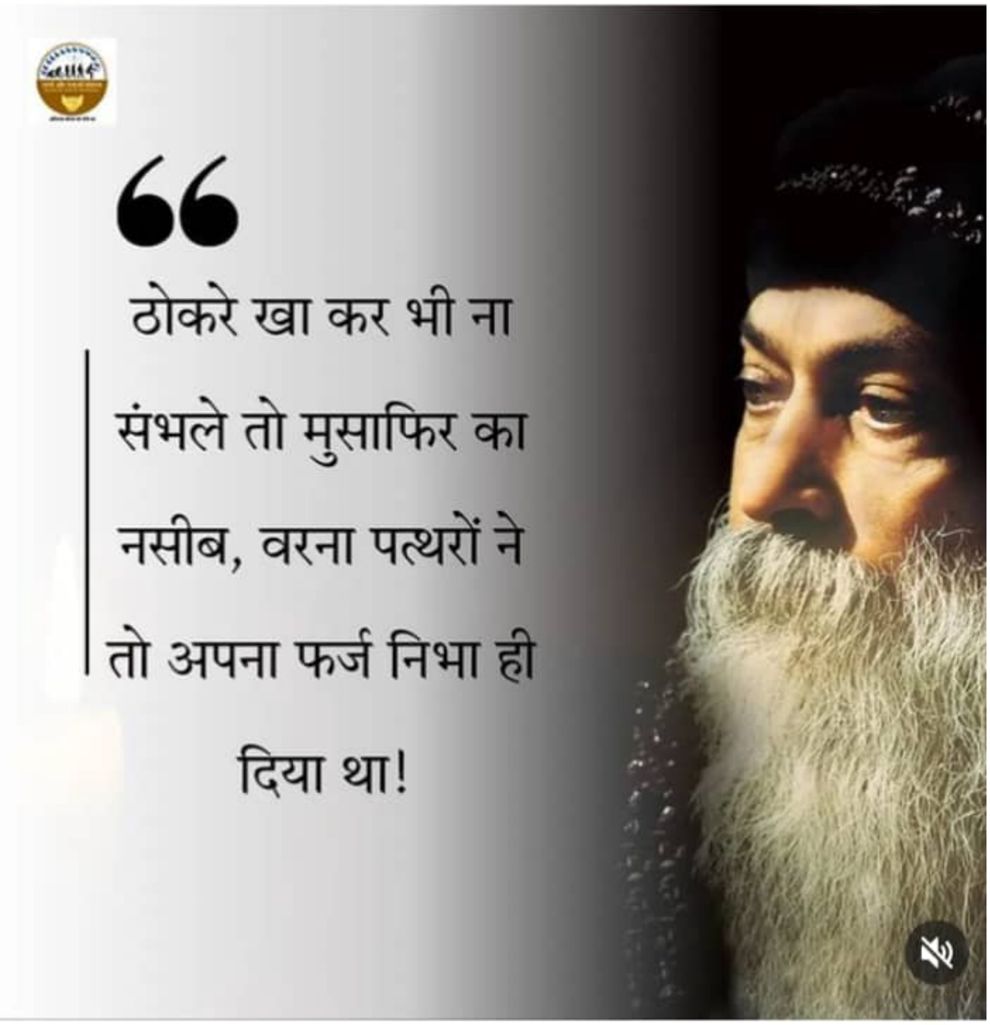

354 likes

oshoduniya Osho 🙏🏼✨... more

Add a comment...

1 day ago

aatamshanti

CamScanner

6:10 pm 9 KB/s VoLTE 4G 62%

Instagram

1 day ago

only_osho_1968

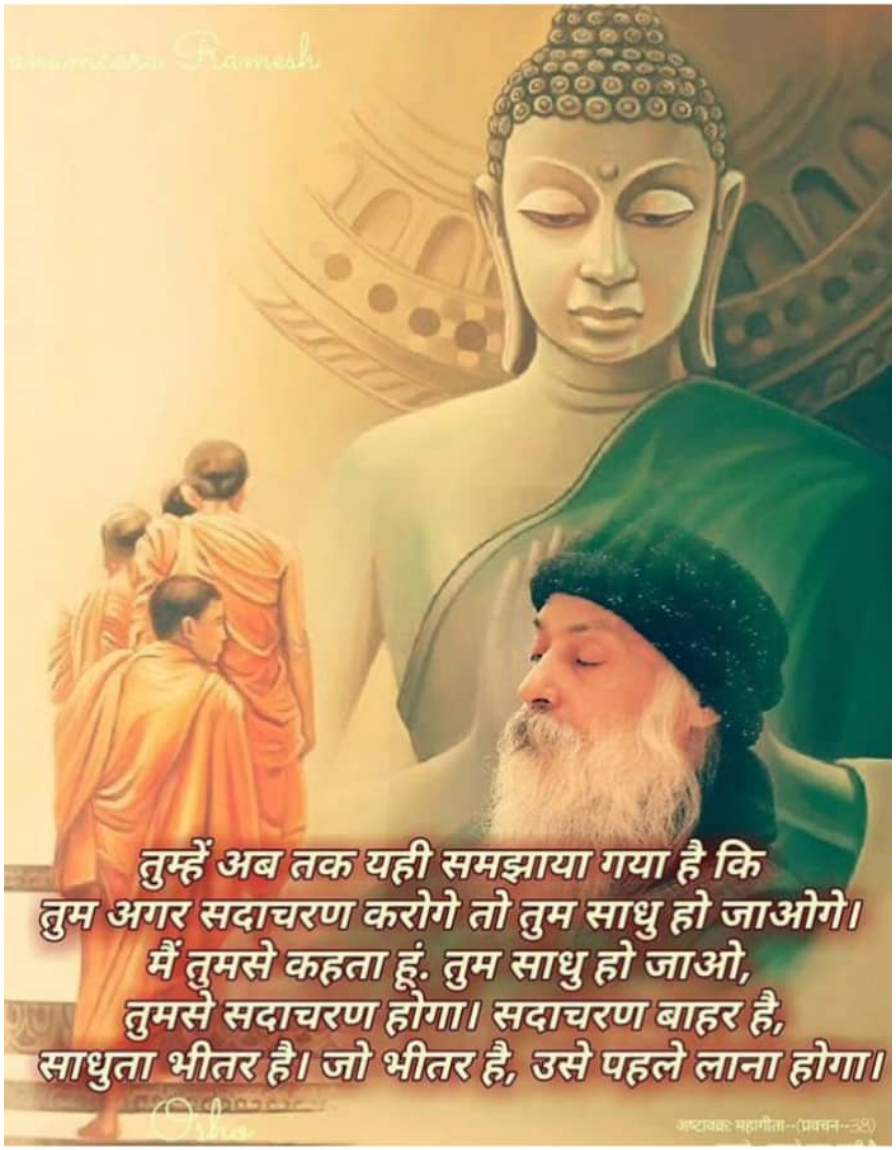

48 likes

Add a comment...

8 hours ago

CamScanner

6:09 pm 108 KB/s 62%

Instagram

oshospirituality
Varanasi, India

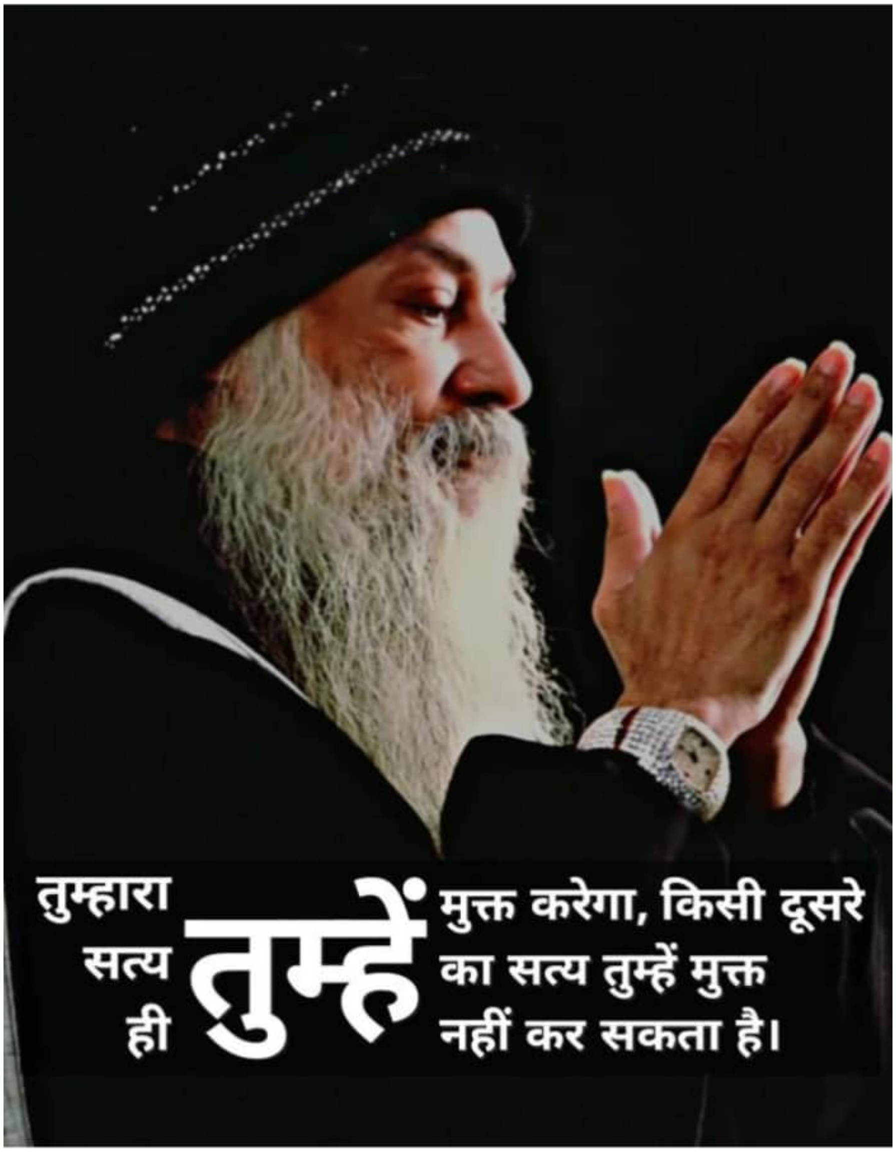

175 likes

oshospirituality ❣️OSHO❣️... more

View 1 comment

Add a comment...

1 day ago • See translation

CamScanner

6:08 pm 3 KB/s 62%

Add a comment...

9 hours ago

oshorajneesh__

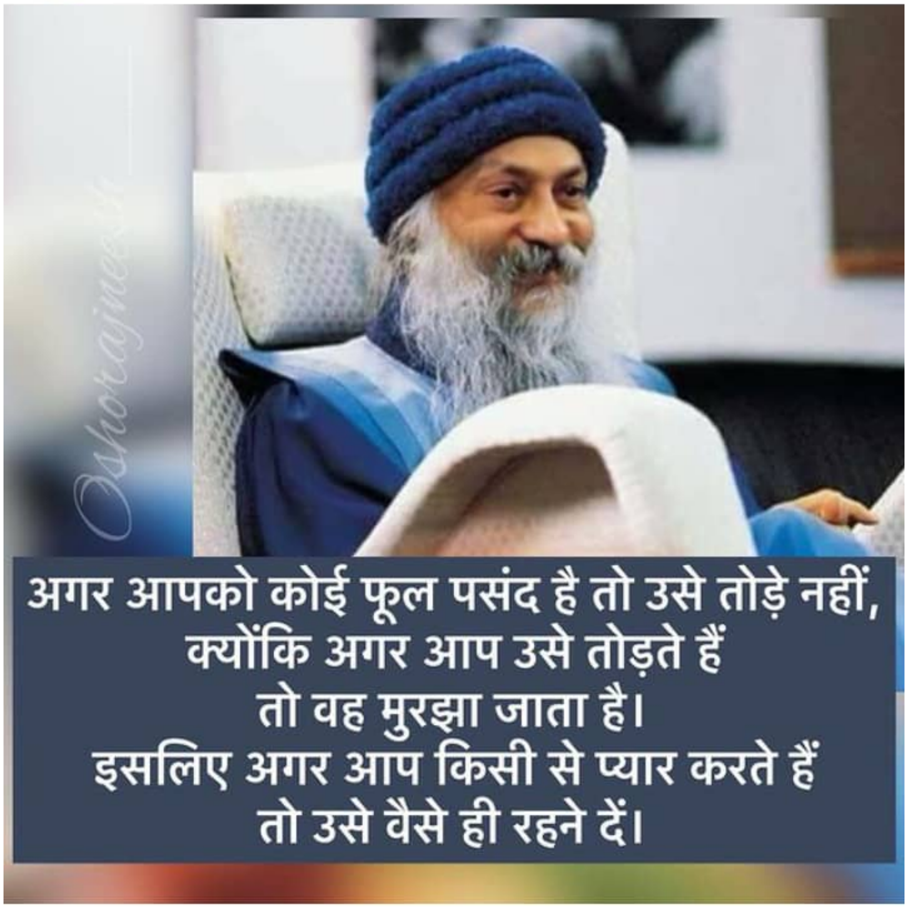

1,038 likes

oshorajneesh__ Osho 🙏💯🤍🙌

Follow- @oshorajneesh__... more

View all 3 comments

Add a comment...

8 hours ago

oshofragrance

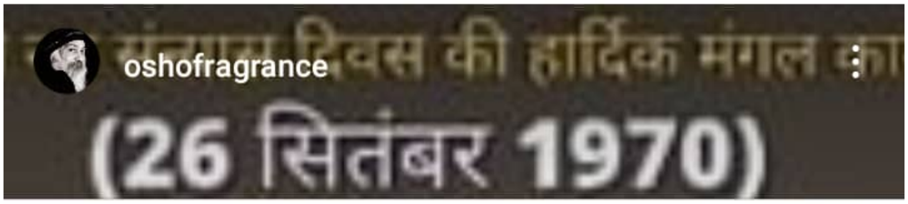

CamScanner

6:08 pm 455 KB/s 62%

Liked by **ushaverma544** and **1,713 others**

osho.vichar OSHO❤️... more

View all 5 comments

18 hours ago • **See translation**

osho_madhushala_
Viss Ningthouja • Saayon

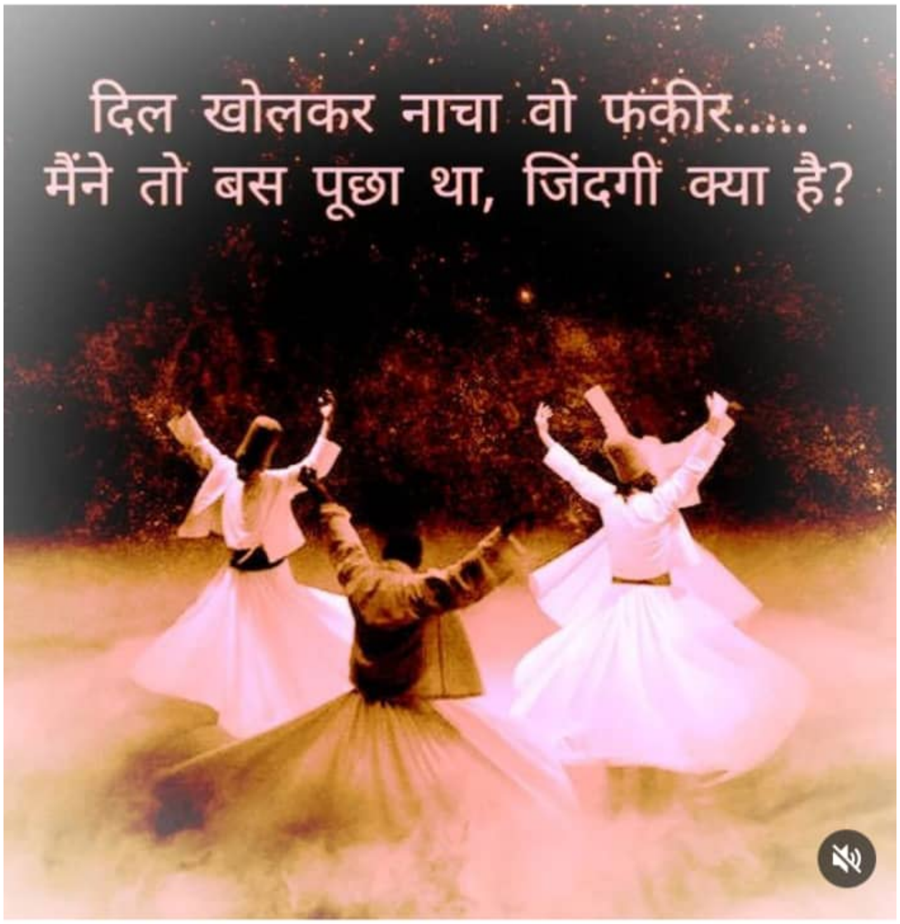

179 likes

osho_madhushala_ ‼️🌻‼️ OSHO ‼️🌻‼️

Add a comment...

9 hours ago

CamScanner

6:06 pm 0 KB/s 62%

Liked by **osho_mania** and **114 others**

osho_tarot_universe Just for the love of my colourful Master ❤️❤️❤️... more

View all 9 comments

18 hours ago

osho_madhushala_
dev prajapati • Sab Tera (Slowed + Reverb)

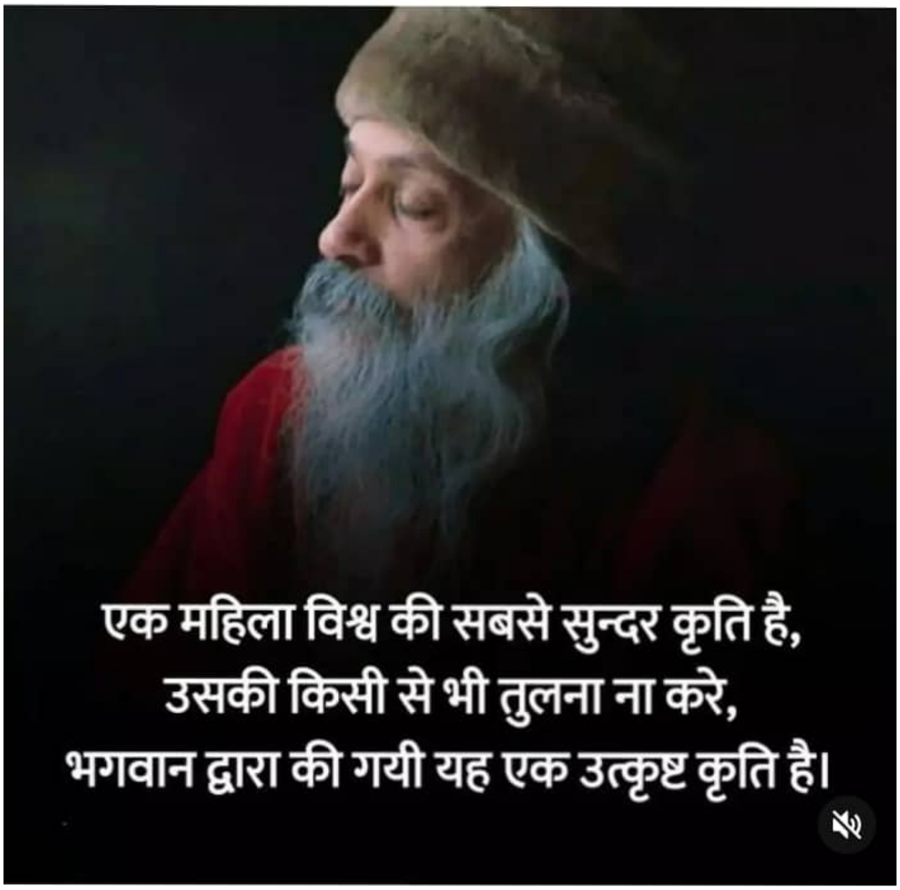

113 likes

osho_madhushala_ ‼️🌻‼️ OSHO ‼️🌻

Add a comment...

9 hours ago

osho.the.boss with **3 others**

CamScanner

6:03 pm 164 KB/s 63%

18 hours ago · See translation

422 likes

osho_always Osho Thought ❤️

CS CamScanner

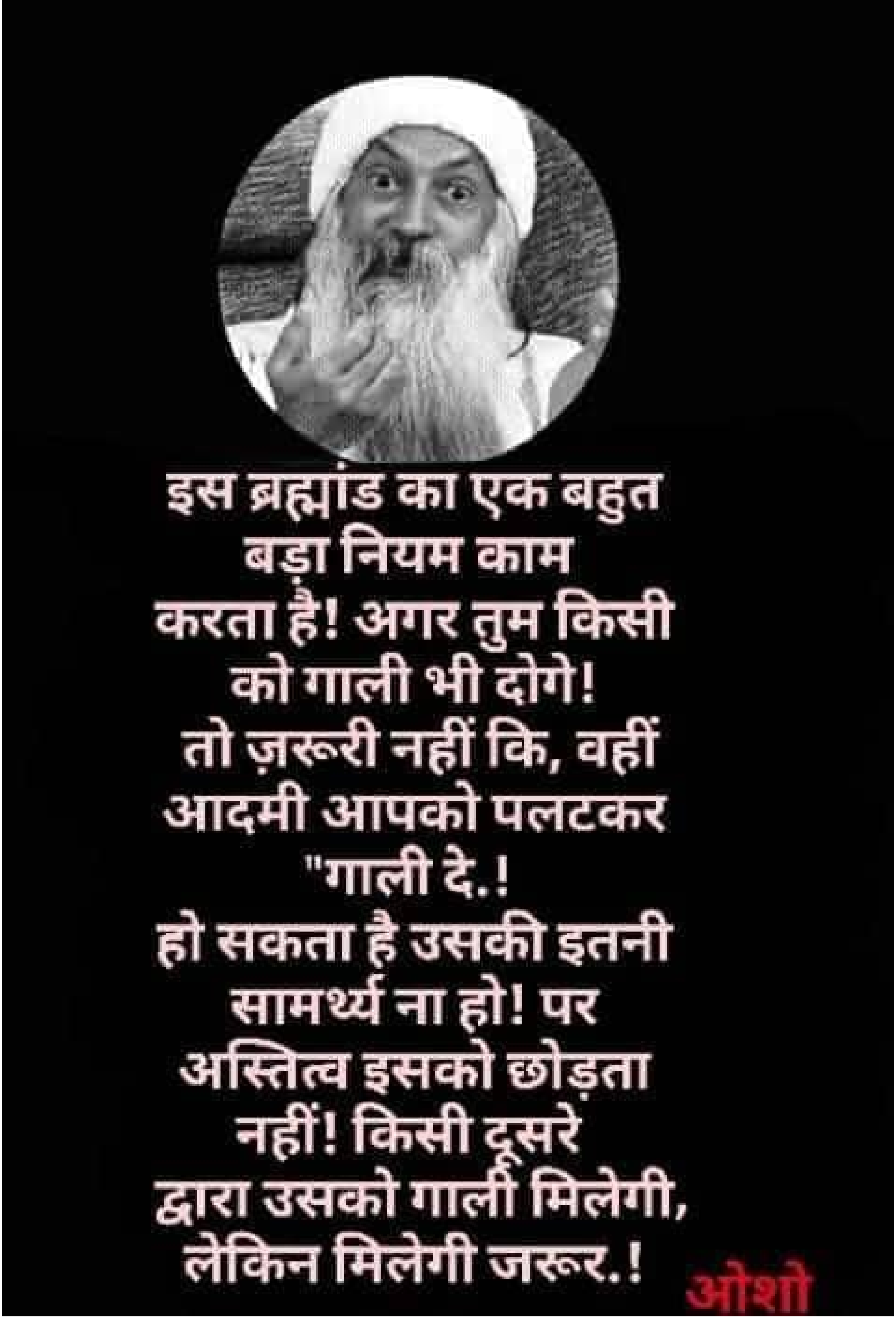
इस ब्रह्मांड का एक बहुत
बड़ा नियम काम
करता है! अगर तुम किसी
को गाली भी दोगे!
तो ज़रूरी नहीं कि, वहीं
आदमी आपको पलटकर
"गाली दे.!
हो सकता है उसकी इतनी
सामर्थ्य ना हो! पर
अस्तित्व इसको छोड़ता
नहीं! किसी दूसरे
द्वारा उसको गाली मिलेगी,
लेकिन मिलेगी जरूर.!
ओशो

CamScanner

करम की गठरी लाद के जग में फिरे इंसान,
जैसा करे वैसा भरे,विधि का यही विधान,
कर्म करे किस्मत बने जीवन का ये मर्म,
प्राणी तेरे भाग्य में,तेरा अपना कर्म

CamScanner

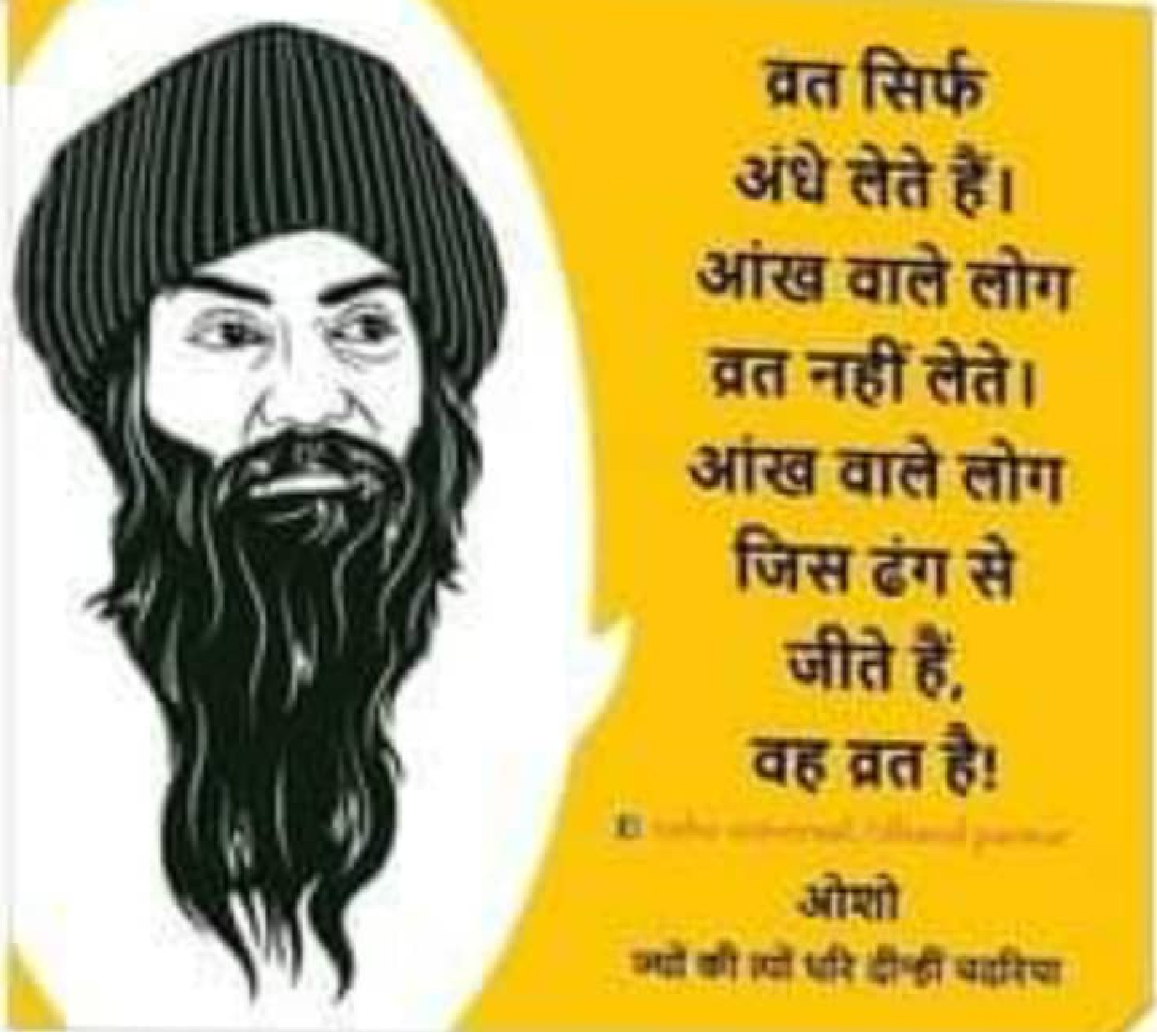

CamScanner

11:15 pm 0 KB/s VoLTE 4G 34%

facebook

जीवन-मरण के संबंध में बड़े विचार करता हुआ बड़े सिद्धांत, शास्त्रों के उद्धरण भीतर दोहराता हुआ समझाता हुआ कि आत्मा तो अमर है; दुख की कोई बात नहीं। और यह फकीर तो ज्ञानी था

लेकिन कुंजी चूक गई। जब उसने कभी वर्षों बाद किसी दूसरे फकीर से पूछा कि मेरी कुछ समझ में नहीं आया कि वह आदमी इतना बड़ा ज्ञानी था, कम से कम उत्तर देकर तो मरता! इतना तो कर ही सकता था कि दो शब्द कह देता। लेकिन मैंने प्रश्न किया, उसने उत्तर भी न दिया और नदी की धारा उसे ले गई। हुआ क्या एकदम से? भला-चंगा था, ऐसा मेरा प्रश्न सुनते ही क्या हुआ?

उस फकीर ने कहा, 'नासमझ! वह बोला और तू सुन न पाया। उसने कहा और तू समझ न पाया। उसने सारी बात कह दी। यह तरकीब है, नदी की धार में मर जाओ और बह जाओ। जब तक तुम जिंदा हो, तुम धार से लड़ते हो। तो विरोध करते हो, संघर्ष करते हो। क्योंकि संघर्ष में अहंकार निर्मित होता है। जीत-हार जहां-वहां अहंकार को मजा है। जब तुम मर जाते हो, नदी की धार बहा ले जाती है। उस आदमी ने दो बातें कह दीं कि तुम मृतवत हो जाओ, और जीवन की धार को बहने दो, तुम बाधा मत दो। तुम पहुंच जाओगे उस महासागर में, जिसकी तलाश है।

'मरना' और 'बह जाना'-- दो सूत्र हैं। इस कहानी को सोचना मत बस सुनना और गिरकर मर जाना। पिंजरे में

बैठकर सोचकर दार्शनिक मत बनना, नहीं तो चूक जाओगे। इसे सोचना मत। यह कुंजी है, घुमाना, ताला खुल जाएगा। भोजन करते वक्त ऐसे भोजन करना, जैसे तुम नहीं हो। चलते वक्त ऐसे चलना जैसे तुम नहीं हो। बोलते वक्त ऐसे बोलना कि बोलते न बोलते बराबर है। सिंहासन मिल जाए तो ऐसे बैठ जाना जैसे कि मजबूरी है, बैठ गये। सिंहासन खो जाए तो ऐसे उतर आना, जैसे अपनी कुर्सी से नीचे उतर आते हो, काम में लग जाते हो।

'नहीं हो-नहींवत! उठना, बैठना, सब करना, लेकिन ऐसे हो जाना, जैसे शून्य हो। जल्दी ही पिंजरे का द्वार तुम खुला पाओगे। तुम्हारी भीतरी शून्यता ही खुला द्वार है। और तब जहां भी तुम हो, वहीं आकाश है, वहीं मुक्ति है।

ओशो

CS CamScanner

raj malhotra

"अन्धविश्वास" का अर्थ होता है...
जाना नहीं,मान लिया...!!

CamScanner

CamScanner

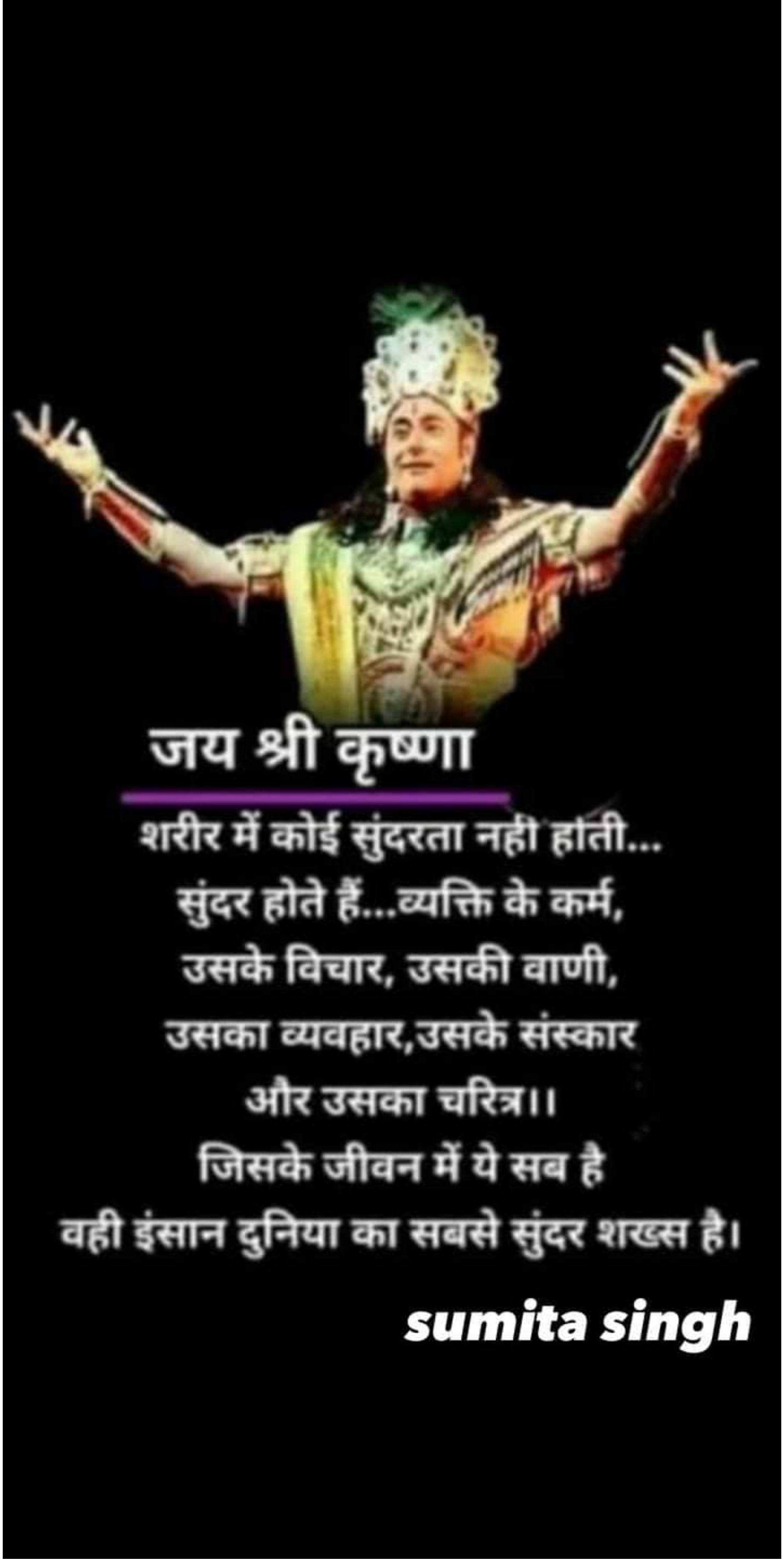
जय श्री कृष्णा
शरीर में कोई सुंदरता नही होती...
सुंदर होते हैं...व्यक्ति के कर्म,
उसके विचार, उसकी वाणी,
उसका व्यवहार,उसके संस्कार
और उसका चरित्र।।
जिसके जीवन में ये सब है
वही इंसान दुनिया का सबसे सुंदर शख्स है।
sumita singh

CamScanner

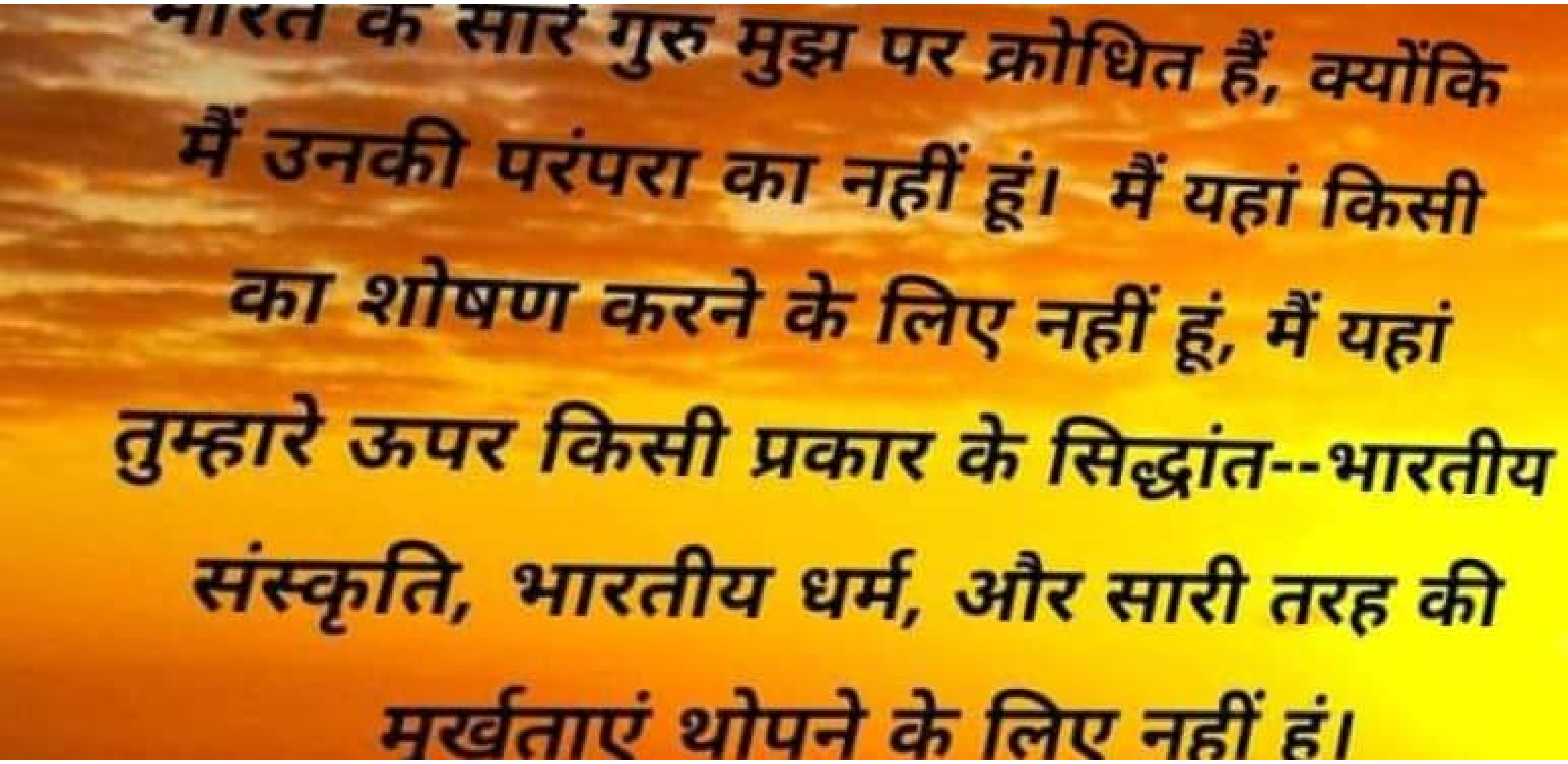
भारत के सारे गुरु मुझ पर क्रोधित हैं, क्योंकि
मैं उनकी परंपरा का नहीं हूं। मैं यहां किसी
का शोषण करने के लिए नहीं हूं, मैं यहां
तुम्हारे ऊपर किसी प्रकार के सिद्धांत--भारतीय
संस्कृति, भारतीय धर्म, और सारी तरह की
मूर्खताएं थोपने के लिए नहीं हूं।

CamScanner

यहाँ से तुम कुछ भी ले कर
नहीं जा सकोगे,
हाँ
कुछ दे कर अवश्य
जा सकते हो

: ओशो :

CamScanner

9:37 pm 0 KB/s VoLTE 4G 41%

यह संभव है? संभव है। असंभव जैसा दिखता है, लेकिन संभव है। असंभव इसलिए दिखता है कि हमें ब्रह्मचर्य के आनंद का कोई अनुभव नहीं है। हमे सिर्फ कामवासना से मिलने वाला जो क्षण भर का सुख है--सुख भी कहना शायद ठीक नहीं क्षणभर की जो राहत है, क्षण भर के लिए हमारे शरीर से जैसे बोझ उतर जाता है।

बायोलॉजिस्ट कहते हैं कि काम-संभोग छींक से ज्यादा मूल्यवान नहीं है। जैसे छींक बैचेन करती है और नासापुट परेशान होने लगते हैं, और लगता है किसी तरह छींक निकल जाए; तो हल्कापन आ जाता है। ठीक करीब-करीब साधारण कामवासना छींक से ज्यादा राहत नहीं देती है। बायोलॉजिस्ट कहते हैं जननेंद्रिय की छींक-शक्ति इकट्ठी हो जाती है भोजन से, श्रम से; उससे हलके होना जरूरी है। इसलिए वे कहते हैं, कोई सुख तो उससे नहीं है लेकिन एक बोझ उतर जाता है। जैसे सिर पर किसी ने बोझ रख दिया हो और फिर उतार कर आपको अच्छा लगता है। कितनी देर अच्छा लगता है? जितनी देर तक बोझ की याद रहती है। बोझ भूल जाता है, अच्छा लगना भी भूल जाता है।

यह जो कामवासना जिसका हम बोझ उतारने के लिए उपयोग करते हैं, और हमने इसके अतिरिक्त कोई आनंद नहीं जाना है, छोड़ना मुश्किल मालूम पड़ती है। क्योंकि जब बोझ घना होगा, तब हम क्या करेंगे? और आज की सदी में तो और भी मुश्किल मालूम पड़ती है, क्योंकि पूरी सदी के वैज्ञानिक यह समझा रहें हैं लोगो को कि छोड़ने का न तो कोई उपाय है कामवासना न छोड़ने की कोई जरूरत है। न केवल यह समझ रहे हैं, बल्कि यह भी समझा रहे हैं कि जो छोड़ता है वह नासमझ है, रूग्ण हो जाएगा; जो नहीं छोड़ता, वह स्वस्थ है।

ओशो, महावीर-वाणी--भाग 3

CamScanner

9:03 am 107 KB/s VoLTE 4G 99%

सुकरात को इसलिए तो जहर पिला देता है, क्योंकि सुकरात नकली आदमियों को सड़क पर पकड़ लेता है और कहता है, रुको, और मेरे प्रश्न का जवाब दो? अब प्रश्न का जवाब नहीं, और हर नकली आदमी समझता है, सब जवाब मेरे पास है। और जब पूछने वाला मिलता है तो जवाब बह जाते हैं पानी में। जैसे नकली रंग, कच्चा रंग बह जाता है। तो वह नकली आदमी था, दार्शनिक ने सोचा, पूछूं या न पूछूं, कहीं नाराज न हो जाए? लेकिन एक दिन सोचा कि चलो पूछ ही लूं। नाराज ही होगा। वह दार्शनिक उस नकली आदमी के पास गया और कहा, मेरे मित्र! उस नकली आदमी ने गुस्से से देखा, क्योंकि नकली आदमी किसी को मित्र देखना पसंद नहीं करता। या तो आप उसके शत्रु हो सकते हैं या उसके अनुयायी हो सकते हैं, नकली आदमी का मित्र कोई नहीं हो सकता। उसके शिष्य हो सकते हैं, शत्रु हो सकते हैं, नकली आदमी के मित्र नहीं हो सकते। हिटलर का कोई मित्र नहीं है। मित्र बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। क्योंकि मित्र जो है, वह समान होने का दावा करता है। नकली आदमी किसी को समान नहीं मानता। उसने कहा, मित्र! तुमसे मेरी क्या मित्रता है?

फिर भी उसने कहा, मैंने सिर्फ संबोधन किया, नाराज मत हो जाओ! मुझे कुछ सूझा नहीं, इसलिए मैंने यह संबोधन किया। यह सवाल महत्वपूर्ण नहीं है, मैं कुछ और पूछने आया हूं। मैं यह पूछने आया हूं कि वर्षा, धूप, रात-दिन, तुम अकेले खड़े रहते हो, ऊब नहीं जाते, घबड़ा नहीं जाते, बेचैन नहीं हो जाते?

वह नकली आदमी खिलखिला कर हंसने लगा। उसने कहा, बेचैन, ऊब! अरे बड़ा आनंद है यहां। दूसरों को डराने में बड़ा आनंद आता है। पक्षी डर कर भागते हैं, बहुत मजा आता है। जानवर डर कर भागते हैं, बहुत मजा आता है। दूसरों को डराने में बहुत आनंद है। एकदम आनंद ही आनंद है।

उस दार्शनिक ने कहा, तुम ठीक कहते हो। नकली आदमियों को सिर्फ दूसरों को डराने में ही आनंद आता है, और कोई आनंद नहीं आता।

अपने पास बड़ी तिजोड़ी है, छोटा तिजोड़ी वाला डर जाता है। अपने पास बड़ा मकान है, छोटा मकान वाला डर जाता है। अपने पास दिल्ली

CamScanner

9:03 am 0 KB/s VoLTE 4G 99%

एक दार्शनिक खेत के नकली आदमी (चिडियाओं को डराने वाला पुतला बिजुखां) के पास से गुजरता था। अनेक बार गुजरा था, वर्षा, धूप, गर्मी, रात-दिन वह नकली आदमी वहीं अकड़ कर खड़ा रहता। नकली आदमी हमेशा अकड़े हुए रहते हैं। क्योंकि अगर अकड़ चली जाए तो कहीं नकल न खुल जाए। तो जहां भी अकड़ा हुआ आदमी देखें, समझना कि नकली आदमी है। और नकली आदमी अकड़ की जगह की तलाश में रहता है। ऐसी कुर्सी मिलनी चाहिए जिस पर अकड़ कर बैठ सके, तो वह दिल्ली तक की यात्रा करता है। वह सब नकली आदमियों की यात्रा है। वह खेत में नकली आदमी खड़ा है। वह कई दफे दार्शनिक वहां से निकला है। कई दफे उसका मन हुआ कि इस मूरख से पूछें कि तू अकेला खड़ा रहता है, कभी घबड़ाता नहीं है, ऊबता नहीं, बोर्डम नहीं मालूम पड़ती--न कोई संगी, न कोई साथी? वर्षा आती है, धूप आती है, तू खड़ा ही रहता है, तुझे मजा क्या है? और जब भी मैं निकलता हूं, तू अकड़ा रहता है। और ऐसा लगता है कि बड़ा खुश है।

एक दिन हिम्मत जुटा कर वह दार्शनिक उसके पास गया।

दार्शनिक को हिम्मत जुटानी पड़ती है, क्योंकि नकली आदमियों से प्रश्न पूछना बड़ा खतरनाक है, क्योंकि नकली आदमी नाराज हो जाता है। क्योंकि उसने सभी प्रश्नों के झूठे उत्तर मान रखे हैं। अगर आप उससे प्रश्न पूछिए तो उसके झूठे उत्तर खिसकने लगते हैं। वह कहता है, प्रश्न पूछो ही मत। नकली आदमी सिर्फ उत्तर की मांग करता है, प्रश्न की कभी मांग नहीं करता। जो आदमी उससे प्रश्न पूछता है, वह कहता है, गोली मार देंगे।

सुकरात को इसलिए तो जहर पिला देता है, क्योंकि सुकरात नकली आदमियों को सड़क पर पकड़ लेता है और कहता है, रुको, और मेरे प्रश्न का जवाब दो? अब प्रश्न का जवाब नहीं, और हर नकली आदमी समझता है, सब जवाब मेरे पास है। और जब पूछने वाला मिलता है तो जवाब बह जाते हैं पानी में। जैसे नकली रंग, कच्चा रंग बह जाता है। तो वह नकली आदमी था, दार्शनिक ने सोचा, पूछूं या न पूछूं, कहीं नाराज न हो जाए? लेकिन एक दिन सोचा कि चलो पूछ ही लूं। नाराज ही होगा। वह दार्शनिक उस नकली आदमी के पास गया और कहा, मेरे

CamScanner

9:03 am 0 KB/s VoLTE 4G 99%

आदमी भी देखा? उस दार्शनिक से उस नकली आदमी ने पूछा खेत के, तुमने कभी असल आदमी भी देखा?

उस नकली आदमी ने कहा, मुझे तो बड़ी हैरानी होती है कि मुझे लोग नकली कहते हैं! मैंने तो सब आदमी ऐसे ही देखे हैं! हां, थोड़ा फर्क है कि मैं जरा चल-फिर नहीं सकता। लेकिन चल-फिर कर तुम करते क्या हो, दूसरों को डराते ही हो न? मैं बिना ही चले-फिरे डरा लेता हूं। तो फर्क क्या है? जो काम मैं बिना चले कर लेता हूं, वह तुम चल-फिर कर करते हो न? तुम्हारी सारी स्पीड, तुम्हारे यान, तुम्हारा चांद तक जाना। चांद तक जाने के लिए है कि किसी को डराने के लिए है? वे जो रूस के यान चांद की तरफ भाग रहे हैं और अमेरिका के, वह चांद तक जाने के लिए है? चांद से न रूस को मतलब है, न अमेरिका को। रूस अमेरिका को डराना चाहता है, अमेरिका रूस को डराना चाहता है। जो पहले पहुंच जाएगा, वह डराने में समर्थ हो जाएगा। सारी गति डराने के लिए चल रही है। उस नकली आदमी ने कहा, तुम्हें कोई असली आदमी मिला? उसका उत्तर वह दार्शनिक नहीं दे सका। आपसे भी पूछा जाए तो उत्तर बिलकुल मुश्किल है। असली आदमी मिलना बहुत मुश्किल है।

असली आदमी तो वही हो सकता है, जो जीवन की तथ्यता को, वह जो जीवन की फैक्टिसिटी है, वह जो जीवन की सचनेस है; जीवन जैसा है उसको वैसा स्वीकार करता है--न भयभीत है, न सुरक्षा की खोज में है, न चिंता में है। जीवन जैसा है--जन्म है तो जन्म, मृत्यु है तो मृत्यु, स्वास्थ्य है तो स्वास्थ्य, बीमारी है तो बीमारी, सबको अंगीकार करता है। जीवन की प्रत्येक स्थिति का जिसके मन में स्वीकार है और नये अनजान, अज्ञात, अपरिचित रास्तों पर जाने की जिसकी हिम्मत है, जो डरा हुआ नहीं है, वही आदमी आथेंटिक, असली हो सकता है, प्रामाणिक हो सकता है।
भारत नकली आदमियों की जमात हो गया है। क्योंकि भारत ने पुरातन परंपरा को पकड़ कर असली आदमी को पैदा होने की व्यवस्था बंद कर दी है।
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💕
Osho international

CamScanner

सन्त शरण में जाय, बचन सुनो कर ख्याति ।
जन्म-मरन थारै है नहीं,
अमर बतावै जाति ।।
सत्संग का करो चेत हेत, पीओ बूँद स्वाति ।
शब्द नाव में बैठ चलो,
खड़े लखावैं तीन जगाती ।।

CamScanner

जिंदगी एक ही बार मिलती है,

तो इसका पूरा आनंद क्यों न लें..!!

निराशा से बाहर आएं और जिंदगी के ,

हर एक पल को खुशी से व्यतीत करें..!!

(Osho)

CS CamScanner

, आकाश और पाताल नाप

अशोक सिंह, सत्येंद्र राय आदि रहे।

मंत्री ने परिजनों से जताई संवेदना

ंद्रीय राज्यमंत्री अनुप्रिया
मंगलवार को रोहनिया
त्र के दरेखु स्थित एलबी
कॉलेज के प्रधानाचार्य
न की पत्नी तथा बेटे के
ना पर मिलने उनके घर
पहुंची और शोकाकुल परिजनों से संवेदना जताई। मंत्री जगतपुर में अद के प्रदेश सचिव उमेश पटेल के बड़े भाई के निधन पर उनके घर भी गईं। इस दौरान विधायक डॉ. सुनील पटेल, जिला अध्यक्ष डॉ. नरेंद्र पटेल आदि रहे।

छात्राओं ... डीएम

तन रोकने का भी आदेश
सुबह पिंडरा ब्लॉक के
रामपुर प्रथम और द्वितीय,
ल थरी आदि स्कूलों में
व ब्लॉक के कंपोजिट
में उन्होंने बच्चों की कक्षा
बाद उन्होंने मिडडे मील
ने बताया कि जिले के
का एक से 20 सितंबर
कया गया था। निरीक्षण में
ने 19 शिक्षकों का एक
काटने के साथ ही उन्हें
नोटिस भी जारी की गई है।

आईआईटी मद्रास की मदद से युवा होंगे दक्ष

वाराणसी। आईआईटी मद्रास व विद्या शक्ति फाउंडेशन की ओर से मंगलवार को संयुक्त रूप से उदय प्रताप कॉलेज में 'सॉफ्टवेयर परीक्षण और डेटा विश्लेषण पर अपस्किल प्रोग्राम' लांच किया गया।

आईआईटी मद्रास की मदद से गांवों तक आधुनिक शिक्षा पहुंचाने के लिए यूपी कॉलेज व राजकीय महिला पीजी कॉलेज के छात्र-छात्राओं को प्रशिक्षित किया जाएगा। कार्यक्रम में आईआईटी मद्रास के निदेशक प्रो. वी. कमाकोटी व सीडीओ हिमांशु नागपाल ने विचार रखे। इस मौके पर क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी डॉ. बीके त्रिपाठी, डॉ. जितेंद्र कुमार पांडेय, डॉ. देवेंद्र सिंह, प्रो. धर्मेंद्र सिंह आदि रहे।

वार
गया
आ
पण

नौ

वारा
गया।
प्रभारी
मिश्रा
राजात

'जा

वाराणसी
आधारित
किया गया
पर होगा
इस अवसर

राधना पुण्यदायी : शंक

परिसर में मंगलवार को शंकराचार्य स्वामी शंकर

डॉ. सुब्र
दान कि

राज्यसभा स
स्वामी ने कह
व्यवस्थाओं क
संचालित कर
दायित्व सनात
चाहिए। यह हि
इसके लिए

CS CamScanner

CamScanner

देख कबीरा दंग रह गया
मिला ना कोई मीत,

मंदिर मस्जिद के चक्कर में
खत्म हो गई प्रीत,

CamScanner

CamScanner

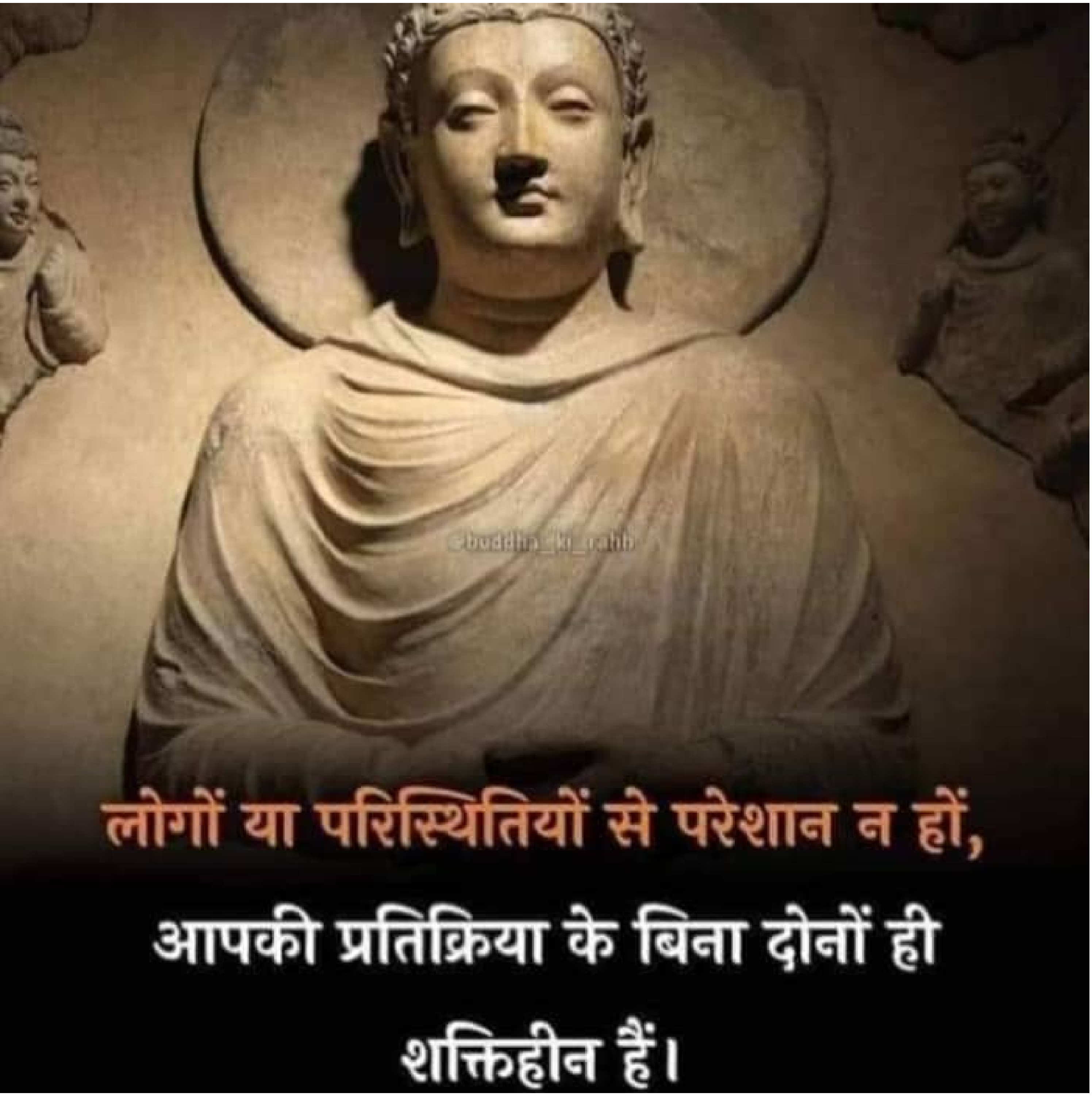

CamScanner

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
दास: नरेश कुमार बैरागी

**नहाये धोये क्या हुआ,
जो मन मैल न जाए।
मीन सदा जल में रहे,
धोये बास न जाए।।**

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
दास:नरेश कुमार बैरागी

CamScanner

जीवन में एक ही
असलफता है,
और वह है प्रयास
ही न करना।
गलत प्रयास भी
कभी न कभी
सफल हो जाता है।
लेकिन प्रयास ही
कोई न करे,
तब तो सफलता का
कोई उपाय नहीं है।

* महावीर वाणी, भाग-२, प्रवचन#४५ *

CamScanner

मैं पंडितों को तोतों से ज्यादा नहीं समझता।
उनको उतना ही आता है,
जितना किताब में लिखा हुआ है।
और किताब में क्या खाक लिखा हुआ है !
किताब में उतना ही लिखा हुआ है,
जितनी बुद्धि पकड़ सकती है।
और बुद्धि क्या पकड़ सकती है?
जो असली है, वह तो छूट जाता है।
परंपरा के मैं विपरीत हूं,
शास्त्रों के मैं विपरीत हूं,
संस्कारों के मैं विपरीत हूं,
तुम्हारी सामाजिक अंध-रुढियों के मैं विपरीत हूं।
लोग नाराज न हों तो क्या हों?
और जब नाराज हों तो उनसे गालियां निकले,
स्वभावतः।
मुझे वे पचा नहीं पाते।
मुझे पचाने के लिए भी थोड़ा उदार हृदय चाहिए,
जरा छाती चाहिए।

💛 **रहिमन धागा प्रेम का, ओशो** 💛

CamScanner

सम्राट होने का एक ही ढंग है, भीतर की संपदा को उपलब्ध हो जाना।

–ओशो –

एस धम्मो सनंतनो

CamScanner

अकेला कोई भी नही चल रहा है।
तुम्हारे साथ परमात्मा चल ही रहा है।
तुम्हारे भीतर ही बैठा है, साथ चल रहा है यह कहना भी ठीक नहीं है।
अकेले तो तुम चल भी न सकोगे।
अकेले तो तुम्हारा होना भी नहीं है।
अकेले तो श्वास भी न ले सकोगे, हृदय भी न धड़केगा।
उसके सहारे धड़क रहा है, वही धड़का रहा है। वही धड़कन है। वही श्वास ले रहा है, वही श्वास है।
नाम उसे कुछ भी नाम दो। परमात्मा दो, आत्मा दो, या जो चाहो कहना, कहो। लेकिन तुम्हारे भीतर वही मौजूद है!

ओशो

CS CamScanner

CS CamScanner

CamScanner

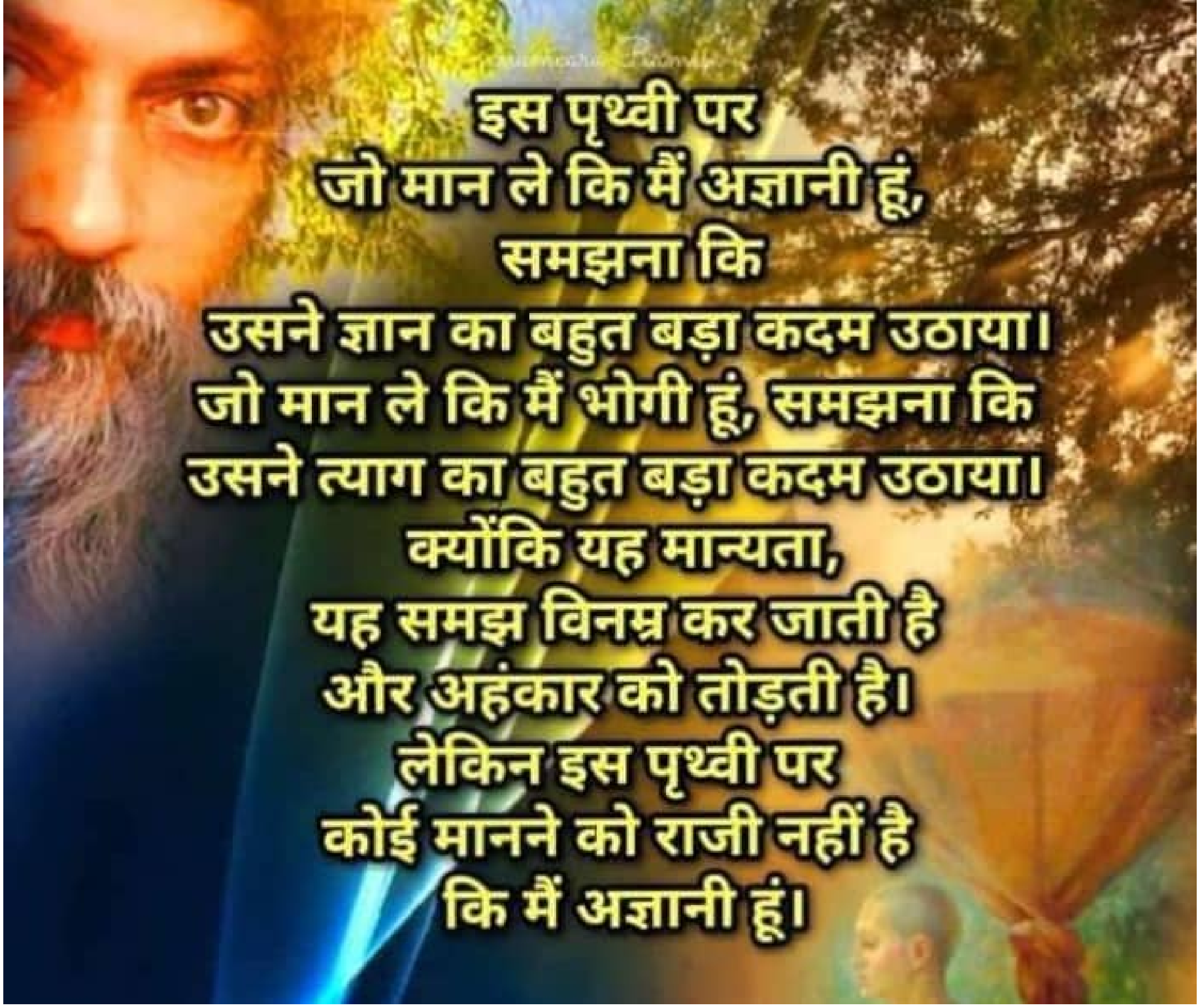
इस पृथ्वी पर
जो मान ले कि मैं अज्ञानी हूं,
समझना कि
उसने ज्ञान का बहुत बड़ा कदम उठाया।
जो मान ले कि मैं भोगी हूं, समझना कि
उसने त्याग का बहुत बड़ा कदम उठाया।
क्योंकि यह मान्यता,
यह समझ विनम्र कर जाती है
और अहंकार को तोड़ती है।
लेकिन इस पृथ्वी पर
कोई मानने को राजी नहीं है
कि मैं अज्ञानी हूं।

CamScanner

उपनिषद कहते हैं
कि अज्ञानी तो
भटकते ही हैं अंधकार में,
कभी-कभी ज्ञानी
महा अंधकार में भटक जाते हैं।
अगर किसी ने
ज्ञान पर कहा कि मेरा,
तो वह अज्ञानी से भी
लंबी भटकन में पड़ जाएगा।
क्योंकि अज्ञानी
क्षमा किया जा सकता है;
ज्ञानी क्षमा नहीं किया
जा सकता।
त्याग को भी लोग
कहते हैं, मेरा।
आदमी बहुत अदभुत है।
आचार्य श्री रजनीश

CamScanner

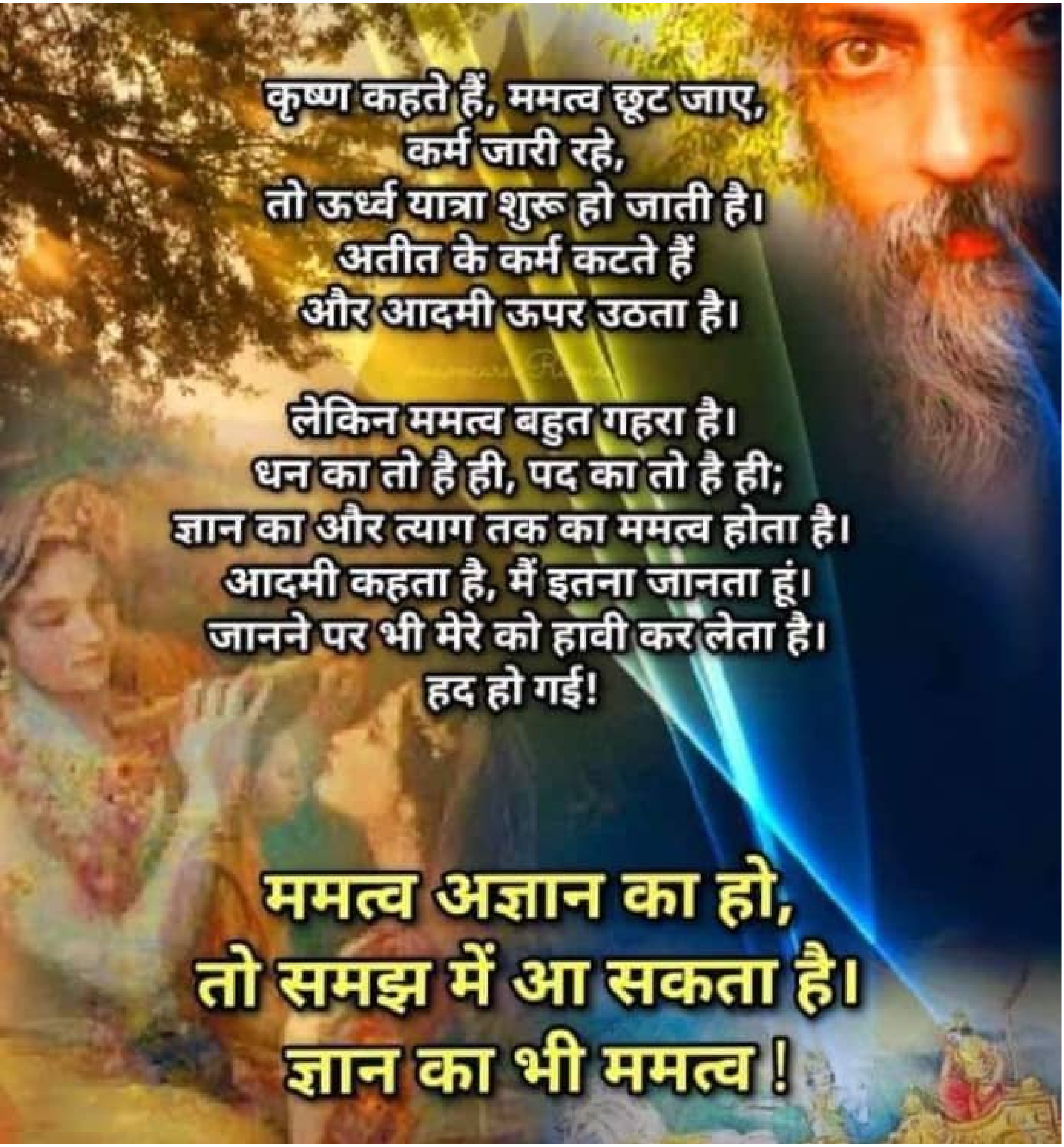

कृष्ण कहते हैं, ममत्व छूट जाए,
कर्म जारी रहे,
तो ऊर्ध्व यात्रा शुरू हो जाती है।
अतीत के कर्म कटते हैं
और आदमी ऊपर उठता है।
लेकिन ममत्व बहुत गहरा है।
धन का तो है ही, पद का तो है ही;
ज्ञान का और त्याग तक का ममत्व होता है।
आदमी कहता है, मैं इतना जानता हूं।
जानने पर भी मेरे को हावी कर लेता है।
हद हो गई!
ममत्व अज्ञान का हो,
तो समझ में आ सकता है।
ज्ञान का भी ममत्व !

CamScanner

यह आप पर निर्भर करता है
कि जहां आप प्रवेश कर रहे हैं,
वह मंदिर है या मकान।
जिस भूमि पर आप निष्काम होकर खड़े हो जाएं,
वह तीर्थ हो जाती है।
और जिस भूमि पर आप सकाम होकर खड़े हो जाएं,
वह पाप हो जाती है।
भूमि पर निर्भर नहीं है यह।
यह आप पर निर्भर है।
मंदिर और मकान में बड़ा फर्क है।
जिस मकान में भी आप निष्काम प्रवेश कर जाएं,
वह मंदिर हो जाता है।
और मंदिर में भी सकाम प्रवेश कर जाएं,
वह मकान हो जाता है।

CamScanner

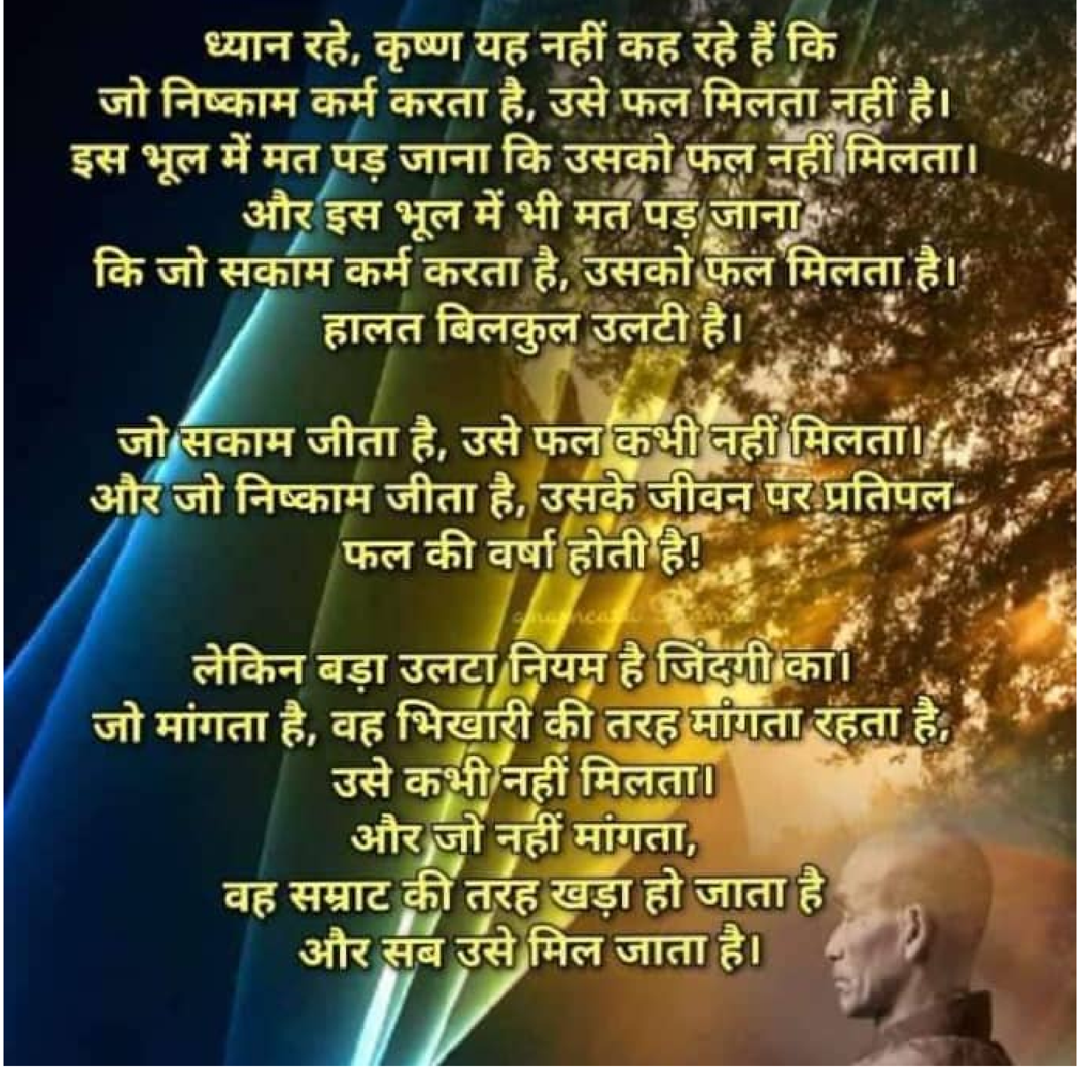
ध्यान रहे, कृष्ण यह नहीं कह रहे हैं कि
जो निष्काम कर्म करता है, उसे फल मिलता नहीं है।
इस भूल में मत पड़ जाना कि उसको फल नहीं मिलता।
और इस भूल में भी मत पड़ जाना
कि जो सकाम कर्म करता है, उसको फल मिलता है।
हालत बिलकुल उलटी है।
जो सकाम जीता है, उसे फल कभी नहीं मिलता।
और जो निष्काम जीता है, उसके जीवन पर प्रतिपल
फल की वर्षा होती है!
लेकिन बड़ा उलटा नियम है जिंदगी का।
जो मांगता है, वह भिखारी की तरह मांगता रहता है,
उसे कभी नहीं मिलता।
और जो नहीं मांगता,
वह सम्राट की तरह खड़ा हो जाता है
और सब उसे मिल जाता है।

CamScanner

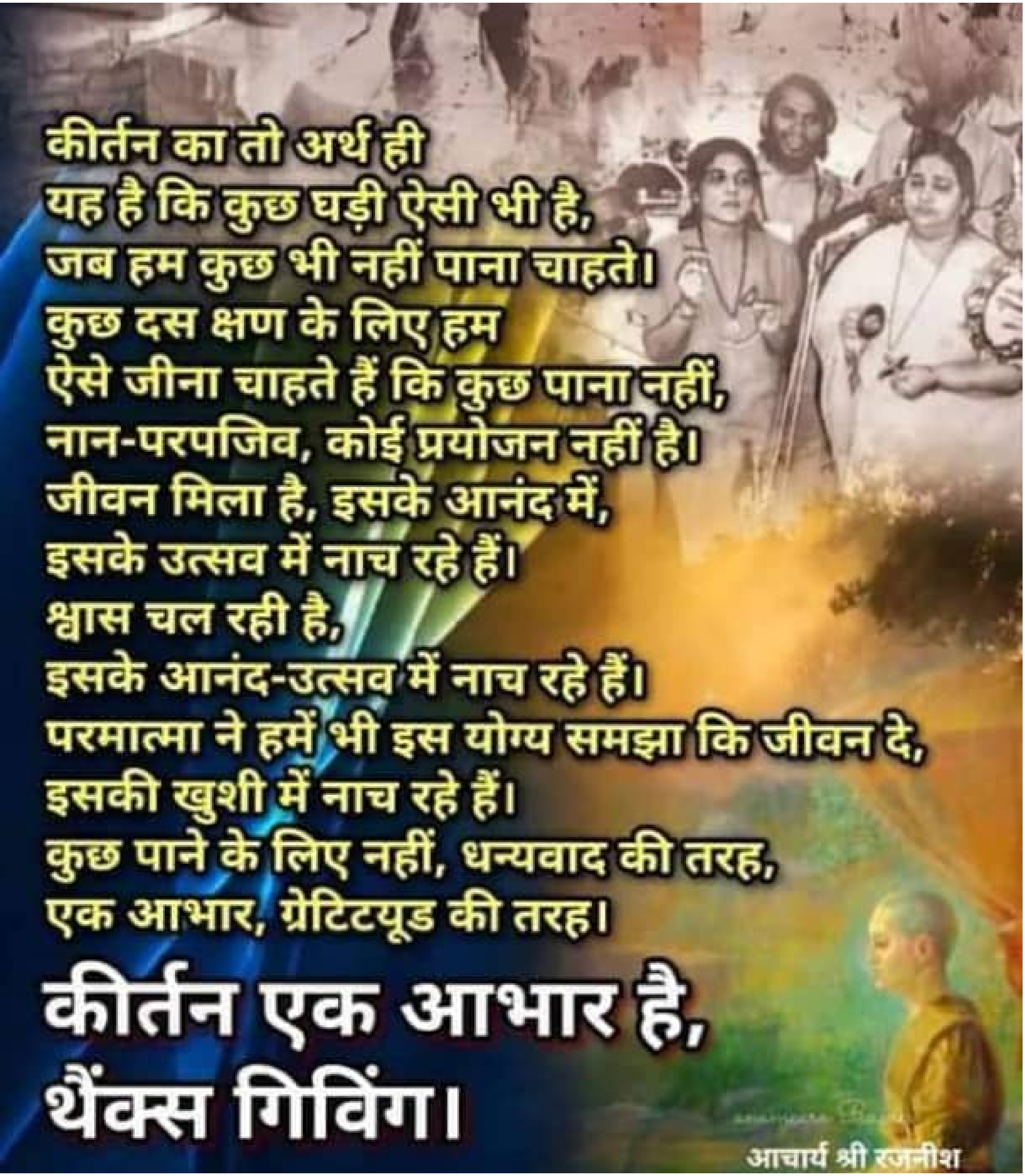
कीर्तन का तो अर्थ ही
यह है कि कुछ घड़ी ऐसी भी है,
जब हम कुछ भी नहीं पाना चाहते।
कुछ दस क्षण के लिए हम
ऐसे जीना चाहते हैं कि कुछ पाना नहीं,
नान-परपजिव, कोई प्रयोजन नहीं है।
जीवन मिला है, इसके आनंद में,
इसके उत्सव में नाच रहे हैं।
श्वास चल रही है,
इसके आनंद-उत्सव में नाच रहे हैं।
परमात्मा ने हमें भी इस योग्य समझा कि जीवन दे,
इसकी खुशी में नाच रहे हैं।
कुछ पाने के लिए नहीं, धन्यवाद की तरह,
एक आभार, ग्रेटिटयूड की तरह।
कीर्तन एक आभार है,
थैंक्स गिविंग।
आचार्य श्री रजनीश

CamScanner

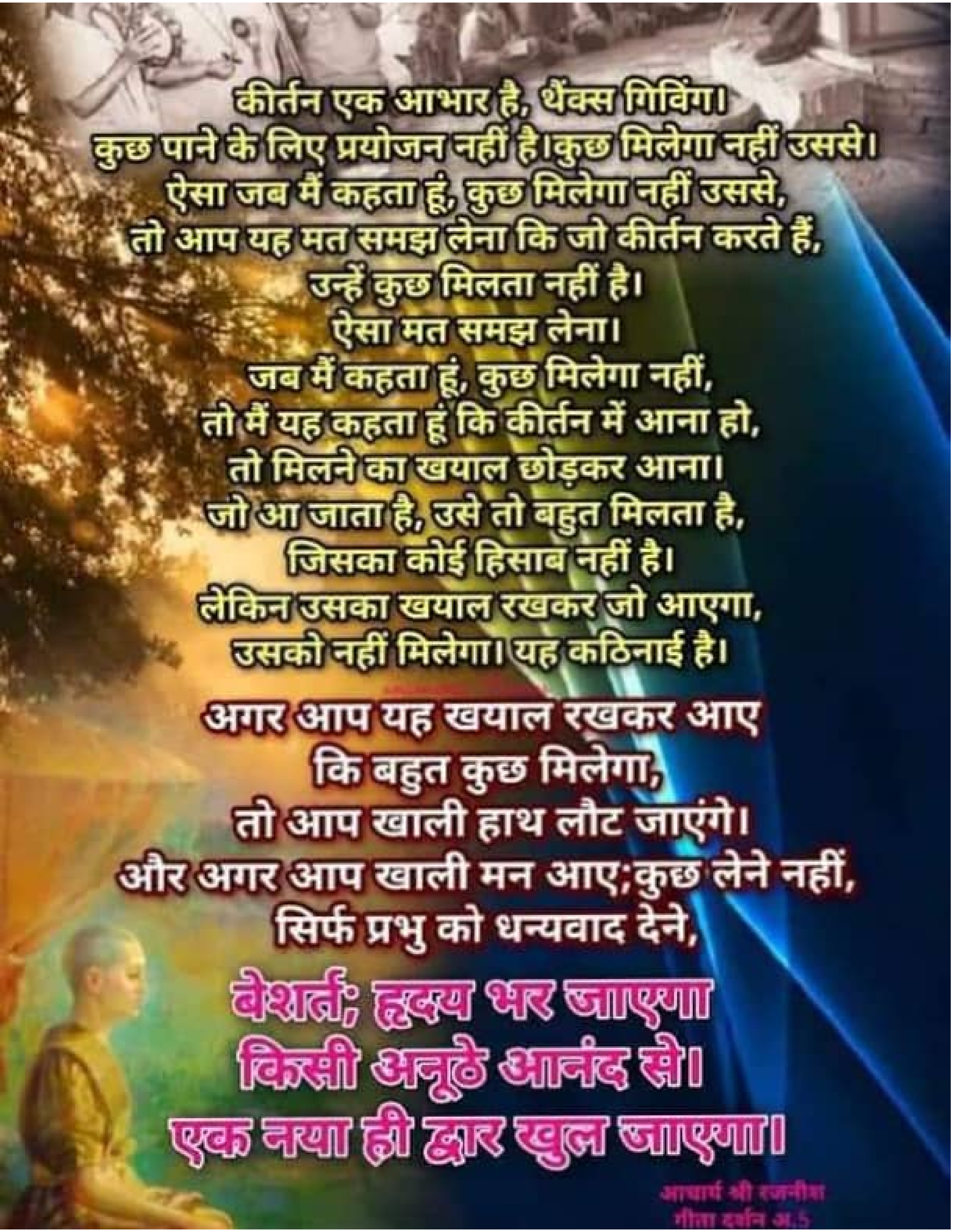
कीर्तन एक आभार है, थेंक्स गिविंग।
कुछ पाने के लिए प्रयोजन नहीं है।कुछ मिलेगा नहीं उससे।
ऐसा जब मैं कहता हूं, कुछ मिलेगा नहीं उससे,
तो आप यह मत समझ लेना कि जो कीर्तन करते हैं,
उन्हें कुछ मिलता नहीं है।
ऐसा मत समझ लेना।
जब मैं कहता हूं, कुछ मिलेगा नहीं,
तो मैं यह कहता हूं कि कीर्तन में आना हो,
तो मिलने का खयाल छोड़कर आना।
जो आ जाता है, उसे तो बहुत मिलता है,
जिसका कोई हिसाब नहीं है।
लेकिन उसका खयाल रखकर जो आएगा,
उसको नहीं मिलेगा। यह कठिनाई है।
अगर आप यह खयाल रखकर आए
कि बहुत कुछ मिलेगा,
तो आप खाली हाथ लौट जाएंगे।
और अगर आप खाली मन आए;कुछ लेने नहीं,
सिर्फ प्रभु को धन्यवाद देने,
बेशर्त; हृदय भर जाएगा
किसी अनूठे आनंद से।
एक नया ही द्वार खुल जाएगा।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.5

CamScanner

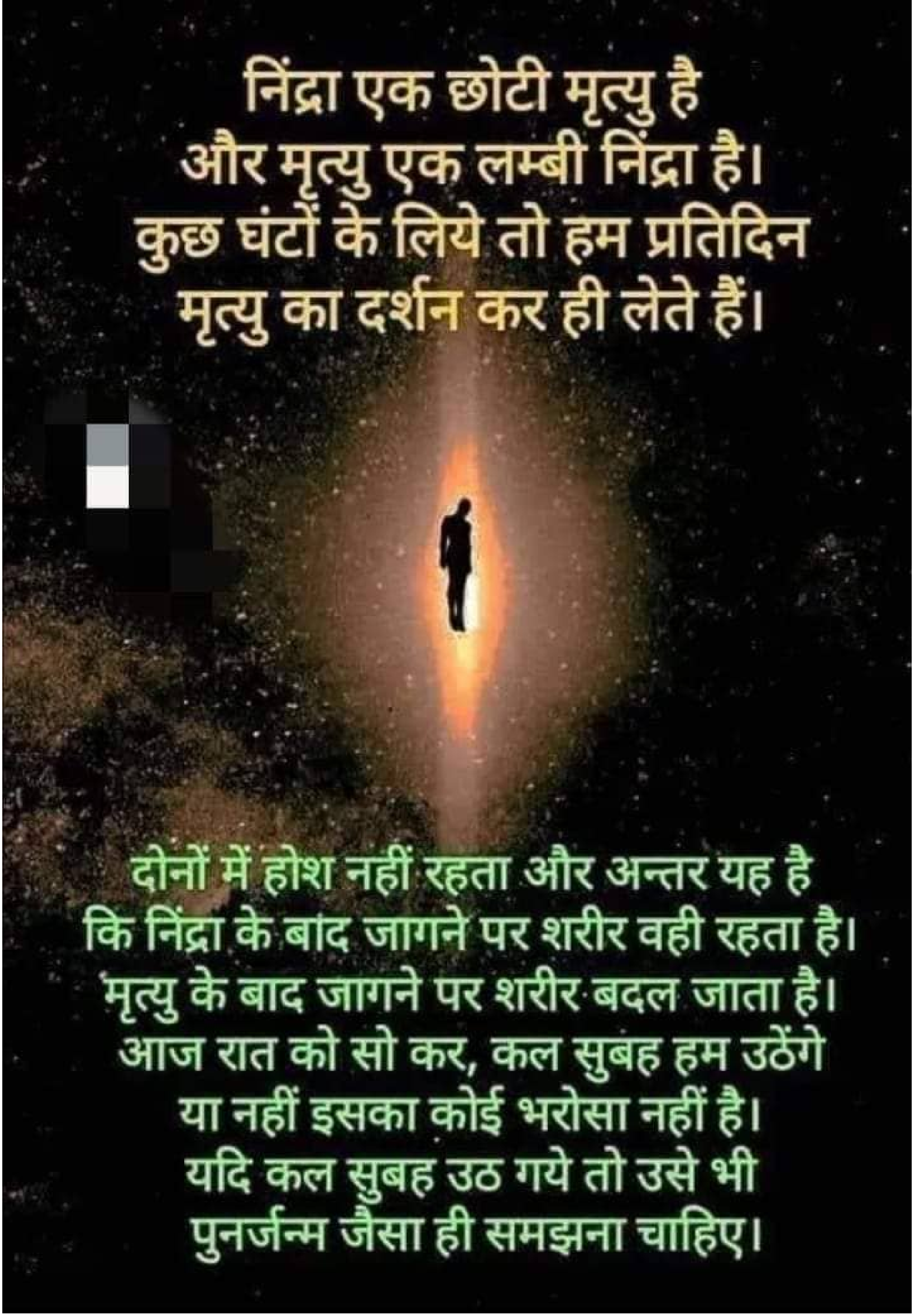
निंद्रा एक छोटी मृत्यु है
और मृत्यु एक लम्बी निंद्रा है।
कुछ घंटों के लिये तो हम प्रतिदिन
मृत्यु का दर्शन कर ही लेते हैं।
दोनों में होश नहीं रहता और अन्तर यह है
कि निंद्रा के बाद जागने पर शरीर वही रहता है।
मृत्यु के बाद जागने पर शरीर बदल जाता है।
आज रात को सो कर, कल सुबह हम उठेंगे
या नहीं इसका कोई भरोसा नहीं है।
यदि कल सुबह उठ गये तो उसे भी
पुनर्जन्म जैसा ही समझना चाहिए।

CamScanner

International Meditation Resort.

51m ·

प्रेम अहर्निश एक दिशा में यात्रा है। इसलिए कांताभक्ति! एक बार स्त्री किसी के प्रेम में पड़ जाए, फिर उसके लिए संसार में कोई दूसरा पुरुष रह नहीं जाता। यही तो अड़चन है। इसलिए स्त्री पुरुष को नहीं समझ पाती, पुरुष स्त्री को नहीं समझ पाता। पुरुष के लिए और भी स्त्रियां है। और पुरुष हमेशा अनुभव करता है कि नये-नये संबंध हो जाएं तो शायद ज्यादा सुख होगा। स्त्री की प्रतीति यह है कि संबंध जितना गहरा हो उतना ज्यादा सुख होगा।

पुरुष मात्रा पर जाता है; स्त्री, गुण पर। इसलिए सम्राट हैं, तो हजारों रानियों को इकट्ठा कर लेते हैं। फिर भी मन नहीं भरता। पुरुष का मन भरता नहीं-भर सकता नहीं। क्योंकि मन भरने की तो तभी सम्भावना है जब प्रेम गहरा हो, गुणात्मक हो। एक के साथ इतनी तल्लीनता आ जाए, इतना तादात्म्य हो जाए कि भेद गिर जाएं। प्रेम तो तभी तृप्त होता है जब प्रार्थना की सुगंध प्रेम से उठने लगे।

🌹ओशो

Osho Prem Naman 🙏💕

Osho international

CamScanner

गुप्त मते की बात जगत मे फहस न कीजै (टेक)
पात्र सुपात्र देखि जब लीजै वस्तु ताहि को दीजै (1)
यह संसार मोम का कपड़ा जल विच कोर न भीजै (2)
तजि बकवाद मौन है रहिये बोलत काया छीजै (3)
पलटु कहै सुनो भाई साधो वचन गांठि गहि लीजै (4)
संसार मे परम सत्य का प्रतिनिधित्व करने अनेक प्रकार के मत मतान्तर है परन्तु संतो का
मत है की परम सत्य सभी जीवो के भीतर गुप्त रूप से विराजमान है जिसे
आत्मसाक्षात्कार के जरिये जाना जाता है यह ज्ञान अंतर्मुखता की बात है सो ऐसे गुप्त
मत को जानकार इसकी गुप्त साधना मे उतर परम सत्य का भीतर अनुभव करना चाहिए
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
संत
पलटु साहेब
इस ज्ञान को जान कर दुनियां से इसकी चर्चा या बहस नहीं करें
यदि कोइ अधिकारी लगे तभी बताये अर्थात पहले उनमे
परख ले क्या उनमे सुपात्रता है सत्य सुनने की योग्यता है
ऐसे पात्र को ही देख के अंतर्मुखता की बाते कहे
क्यों की यह संसार के लोग मानो एक मोम के कपडे है
पानी से उनका किनारा भी नहीं भीग सकता
संसारी मनुष्य भोग वासना और कल्पना की दुनियां मे जीता है
सत्य के प्रति उनकी कोइ खास जिज्ञासा नहीं होती
इसलिए उन्हें आत्मज्ञान नहीं भाता
व्यर्थ मे जायदा बोलने से तन मन की स्थिरता
ही ख़तम होती है संत पलटु साहेब सज्जन पुरुषो से
कहते है की हमारी बातो को अपने गाठ मे बांध लो
किसी से बकवाद करने की आदत छोड कर
मौन हो सत्य स्वरूप मे स्थिर रहो

CamScanner

CamScanner

2:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 49%

Parshotam Rai · 3d ·

------ *अद्भुत प्रसंग -* -------

द्रौपदी के स्वयंवर में जाते समय
श्री कृष्ण अर्जुन को समझाते हुए कहते हैं कि, हे पार्थ तराजू पर पैर संभलकर रखना, संतुलन बनाये रखना, लक्ष्य मछली की आंख पर ही केंद्रित हो इस बात का विशेष ध्यान रखना...
तब अर्जुन ने कहा,
"हे प्रभु " यदि सबकुछ मुझे ही करना है, तो फिर आप क्या करोगे, ?
वासुदेव हंसते हुए बोले, हे पार्थ -
जो तुमसे नहीं होगा वही मैं करुंगा..।
पार्थ ने कहा प्रभु-
ऐसा क्या है, जो मैं नहीं कर सकता ?
तब वासुदेव ने मुस्कुराते हुए कहा - *जिस अस्थिर, विचलित, हिलते हुए पानी में तुम मछली का निशाना साधोगे, उस विचलित "पानी" को "मैं" ही स्थिर रखूँगा !!*
कहने का तात्पर्य यह है कि -
आप चाहे कितने ही निपुण क्यों ना हों, कितने ही बुद्धिमान क्यूँ ना हों, कितने ही महान एवं विवेकपूर्ण क्यों ना हों, लेकिन आप स्वंय हर एक परिस्थिति पर पूर्ण नियंत्रण नहीं रख सकते ..
आप सिर्फ अपना प्रयास कर सकते हो, लेकिन उसकी भी एक सीमा है और जो उस सीमा से आगे की बागडोर संभालता है उस ही का नाम ईश्वर है ।

ईश्वर के नाम व स्वरूप भिन्न भिन्न हैं बस ।

जय श्री कृष्ण - जय श्रीराम
जय जय जय हनुमान

🙏🔱🙏

25 7 comments • 3 shares
Like Comment Share
CamScanner

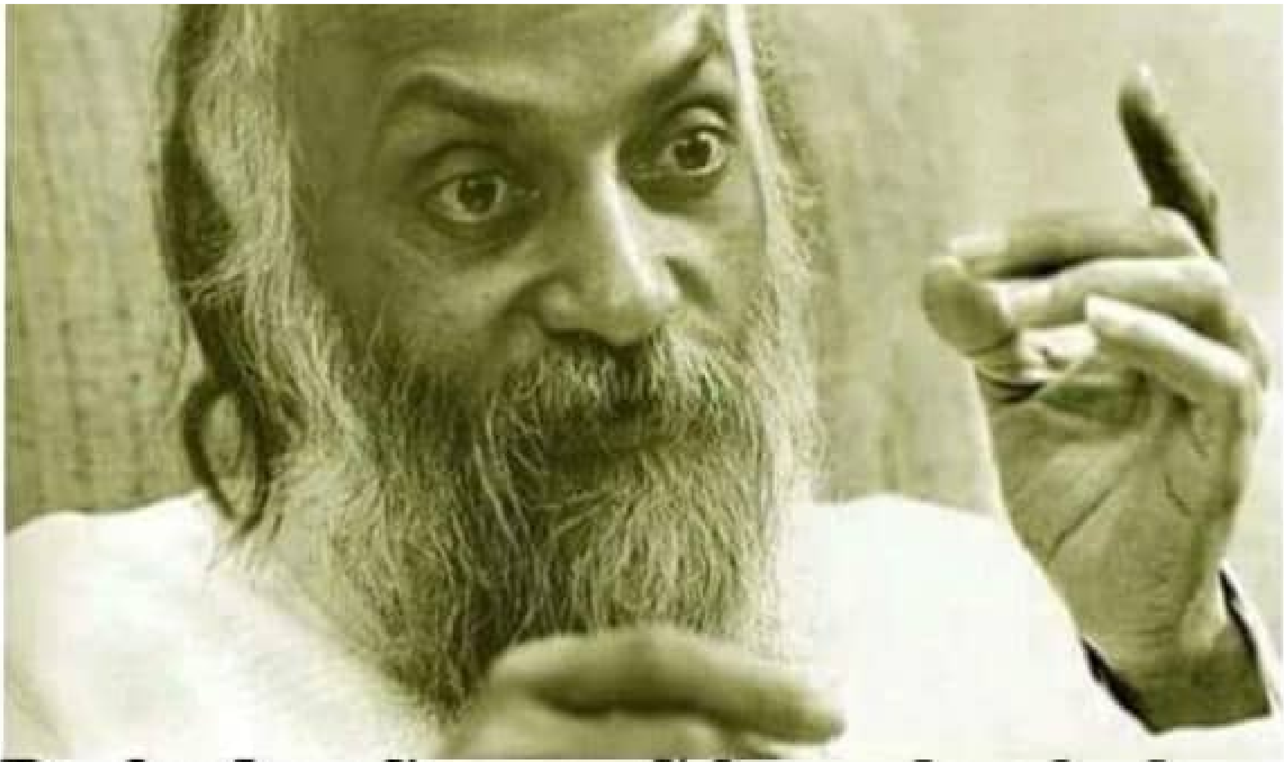

जिसके जीवन में ध्यान नहीं है, वह तो दूसरे को सताएगा। सताएगा ही! अपरिहार्यरूपेण सताएगा। क्यों? क्योंकि जो खुद दुखी है, वह दुख ही बांट सकता है। और गैर-ध्यानी दुखी होगा ही, नहीं तो कोई ध्यान तलाशे क्यों? अगर बिना ध्यान के जीवन में सुख हो सकता होता, तो सुख कभी का हो गया होता। बिना ध्यान के जीवन में सुख होता नहीं। ध्यान के बिना सुख का बीज टूटता ही नहीं, अंकुरण ही नहीं होता। फूल तो लगेंगे कैसे ।। ओशो ।।

CamScanner

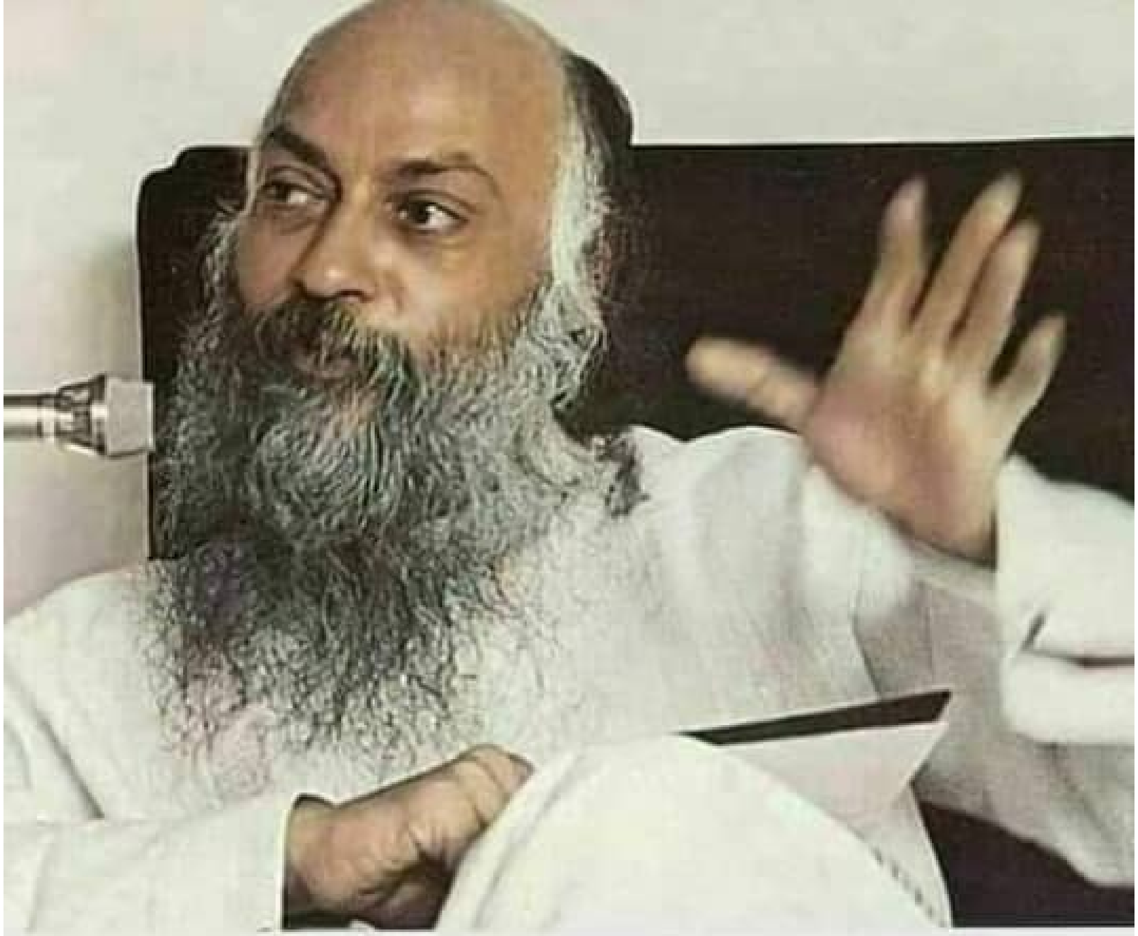

जीव दया पर महावीर का इतना जोर है। वह सिर्फ अहिंसा के कारण नहीं। उसके कारण बहुत गहरे आध्यात्मिक हैं। वह जो तुम्हारे पास चलता हुआ कीड़ा है, वह तुम ही हो। कभी तुम भी वही थे। कभी तुम भी वैसे ही सरक रहे थे, एक छिपकली की तरह, एक चींटी की तरह, एक बिच्छू की तरह तुम्हारा जीवन था। आज तुम भूल गये हो, तुम आगे निकल आये हो। लेकिन जो आगे निकल जाये और पीछे वालों को भूल जाये, उस आदमी के भीतर कोई करुणा, कोई प्रेम, कोई मनुष्यत्व नहीं है।

ओशो

CamScanner

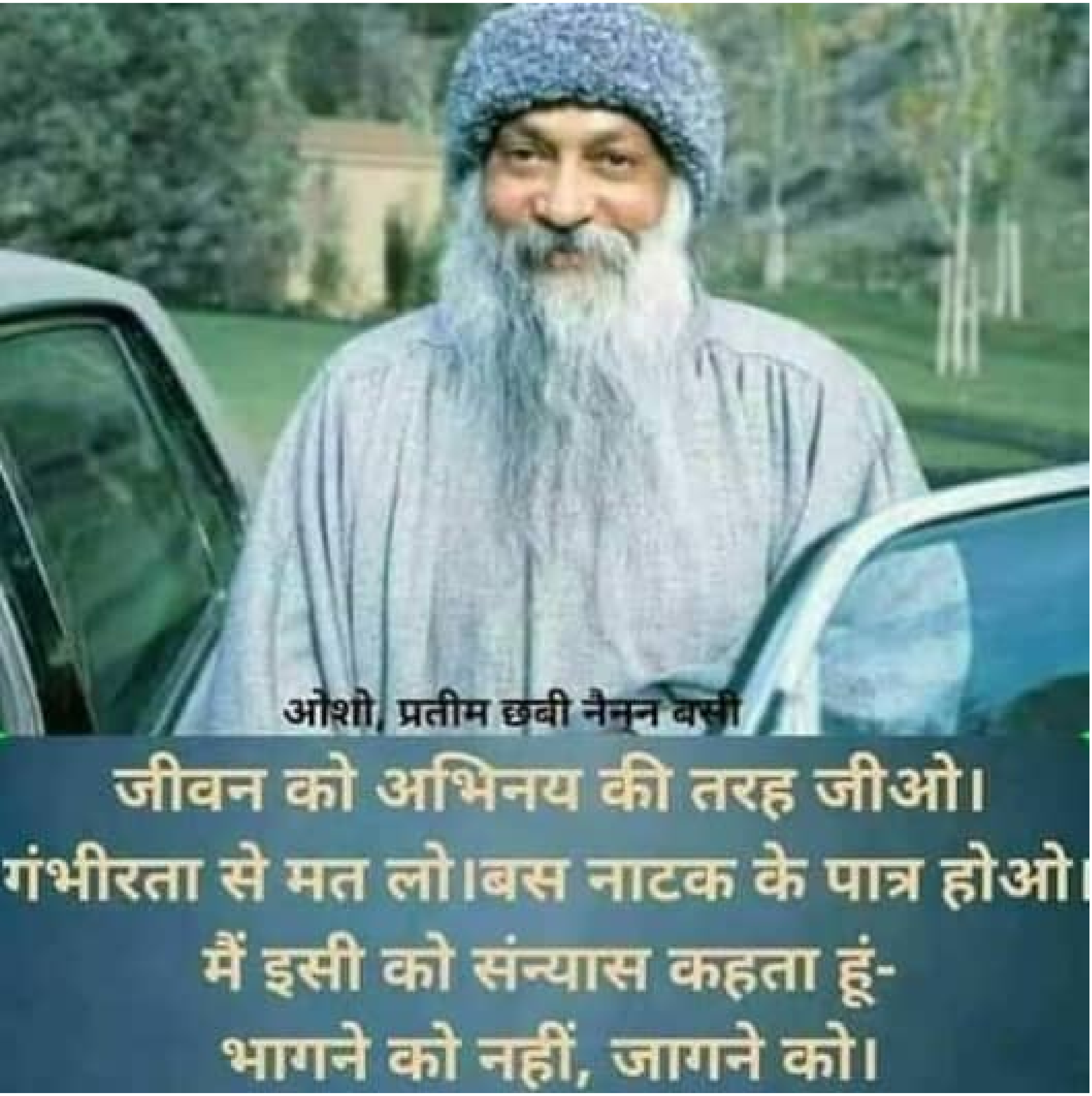
ओशो, प्रतीम छवी नैनन बसी
जीवन को अभिनय की तरह जीओ।
गंभीरता से मत लो।बस नाटक के पात्र होओ।
मैं इसी को संन्यास कहता हूं-
भागने को नहीं, जागने को।

CamScanner

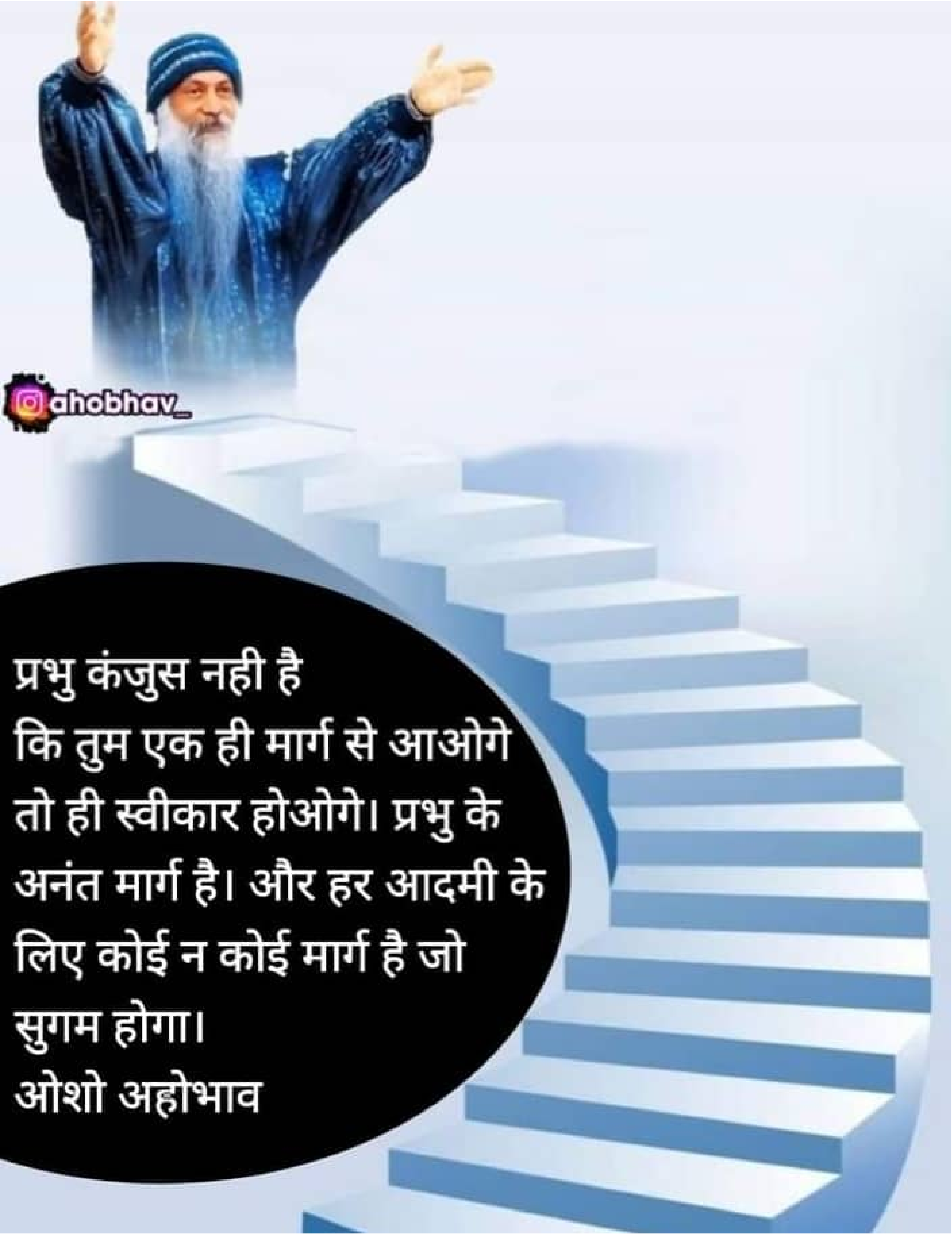
ahobhav_
प्रभु कंजुस नही है
कि तुम एक ही मार्ग से आओगे
तो ही स्वीकार होओगे। प्रभु के
अनंत मार्ग है। और हर आदमी के
लिए कोई न कोई मार्ग है जो
सुगम होगा।
ओशो अहोभाव

CamScanner

CS CamScanner

ShareChat
@Ajay Ahuja ॐ शान्ति

भक्ति जब भोजन में प्रवेश करती है,
भोजन प्रसाद "बन जाता है। भक्ति
जब भूख में प्रवेश करती है,
भूख" व्रत " बन जाती है। भक्ति
जब पानी में प्रवेश करती है, पानी "
चरणामृत " बन जाता है।
भक्ति जब सफर में प्रवेश करती है,
सफर " तीर्थयात्रा" बन जाता है. ।
भक्ति जब संगीत में प्रवेश करती है,
संगीत " कीर्तन" बन जाता है। भक्ति
जब घर में प्रवेश करती है, घर
मन्दिर " बन जाता है।
भक्ति जब कार्य में प्रवेश करती है,
कार्य" कर्म" बन जाता है.।
भक्ति जब क्रिया में प्रवेश करती है,
क्रिया "सेवा " बन जाती है। और...
भक्ति जब व्यक्ति में प्रवेश करती है,
व्यक्ति " मानव " बन जाता है..।।?

CamScanner

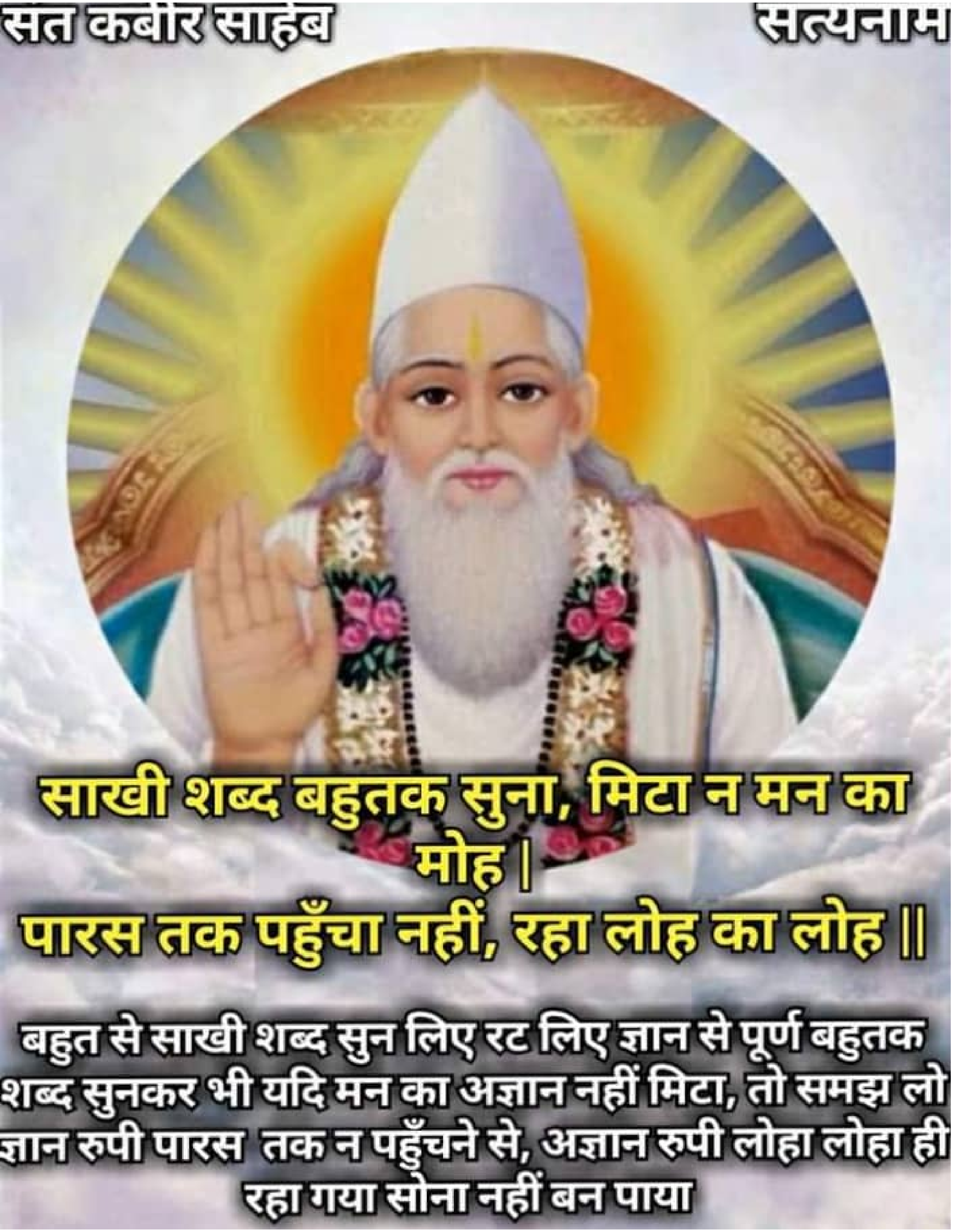
संत कबीर साहेब
सत्यनाम
साखी शब्द बहुतक सुना, मिटा न मन का मोह |
पारस तक पहुँचा नहीं, रहा लोह का लोह ||
बहुत से साखी शब्द सुन लिए रट लिए ज्ञान से पूर्ण बहुतक शब्द सुनकर भी यदि मन का अज्ञान नहीं मिटा, तो समझ लो ज्ञान रुपी पारस तक न पहुँचने से, अज्ञान रुपी लोहा लोहा ही रहा गया सोना नहीं बन पाया

CamScanner

1:36 pm 0 KB/s 53%

Like Comment Share

Awakening Souls

Maitreyi Nivi · 13h ·

"सब कुछ तुम में है, जिसमें मैं भी शामिल हूँ।
और सब कुछ मुझमें है, जिसमें तुम भी शामिल हो।
और फिर भी न तो तुम और न ही मैं।
इस सुराग को कौन पकड़ पाएगा? "

~मूजी

Rate this translation

CamScanner

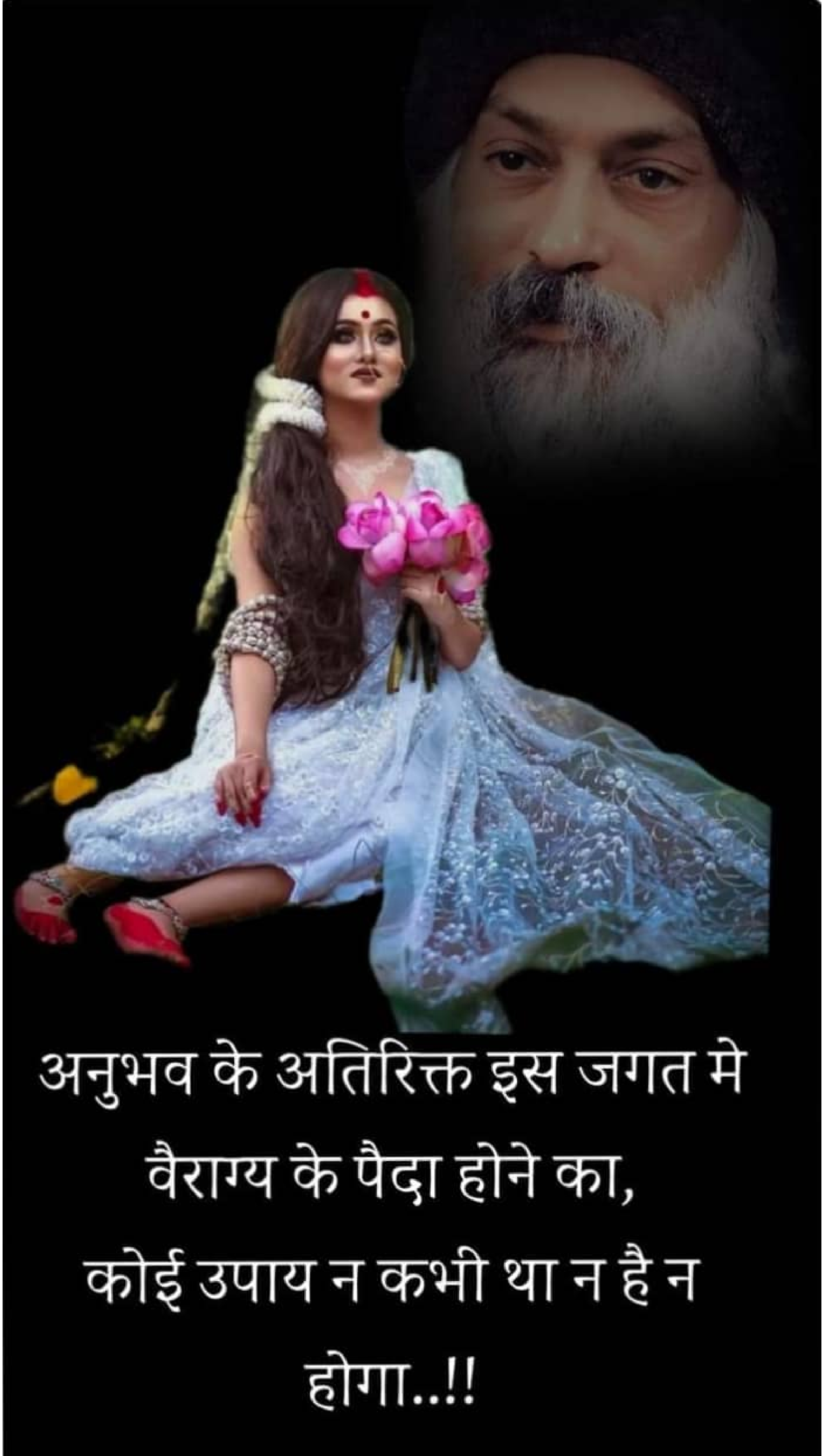

CamScanner

ओ शो वाणी

Seema Mangal · 16m ·

* दूध : मांसाहार, अंडा : शुद्ध शाकाहार *

अब यह भी बड़े सोचने की बात है कि किसने तुम्हें कहा कि दूध सात्विक आहार है? कैसे तुमने जान लिया कि दूध सात्विक आहार है? दूध तो मांसाहार और शाकाहार के बीच में पड़ता है। यह आधा मांसाहार है, क्योंकि दूध आता है रक्त और मांस से। यह शाकाहार तो निश्चित ही नहीं है। यह कोई झाड़ों में नहीं लगता दूध। यह हड्डी-मांस-मज्जा की देह से निकलता है। अंडे और दूध में कुछ फर्क नहीं है। और अब तो अंडे ऐसे भी निकलते हैं जो शाकाहारी अंडे हैं, मगर अभी तक कोई शाकाहारी दूध नहीं निकला है। शाकाहारी अंडे खा लेना भी उतना बड़ा पाप नहीं है जितना दूध पीना, क्योंकि दूध तो एनिमल-फूड है, वह तो पशु से आ रहा है। और तुम्हारे लिए बना भी नहीं था।

अब जैसे गाय का दूध तुम पी रहे हो, वह बना था सांड के लिए। सांड के लिए जो चीज बनी थी, उसको पीकर तुम सात्विक हो जाओगे? सांड हो जाओगे! सात्विक कैसे हो जाओगे?

ओशो: प्रीतम छबि नैनन बसी

CamScanner

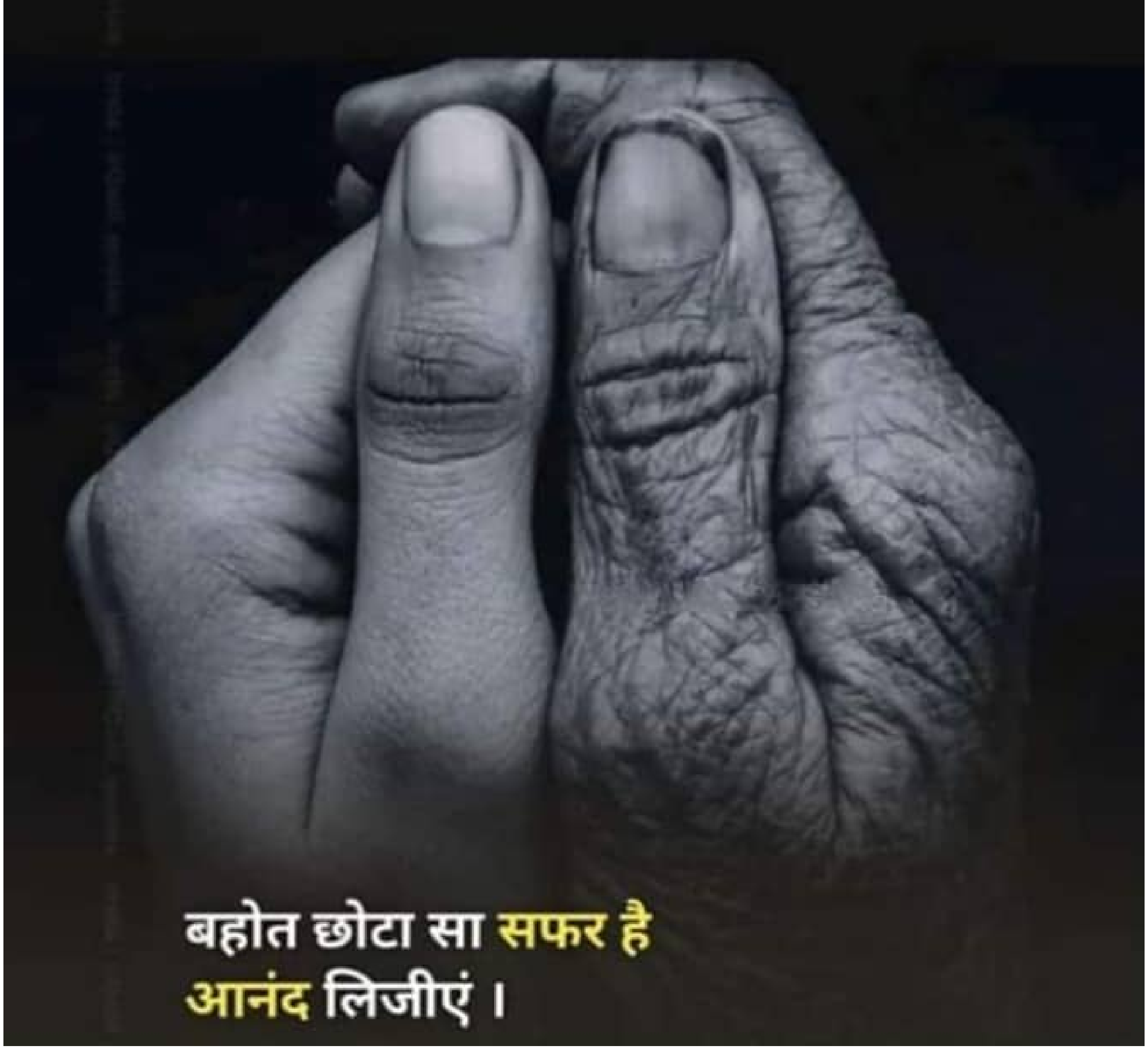

CamScanner

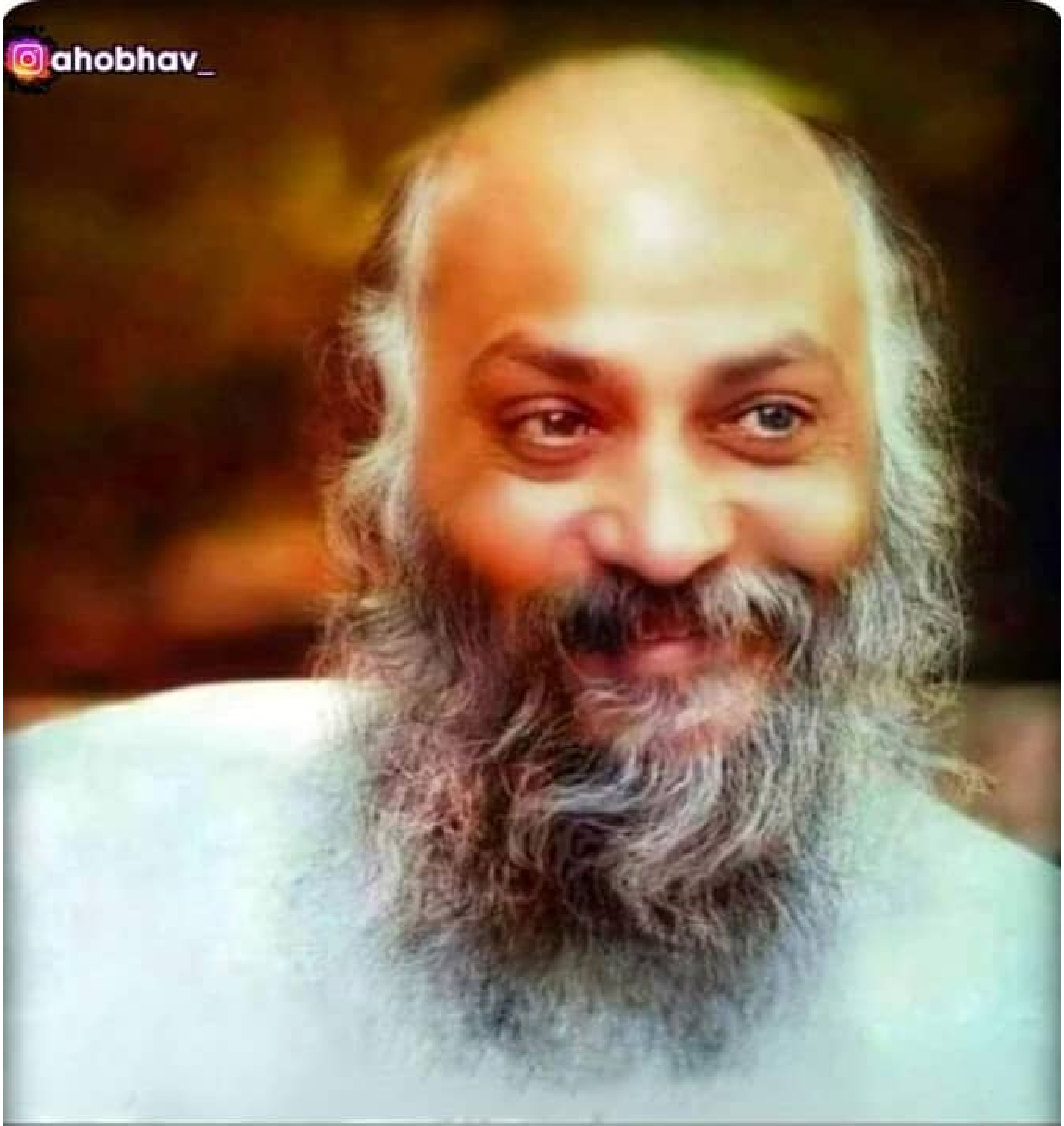

मौत क्या छिनेंगी अगर तुम शून्य होना जानते हो? अगर तुम शून्य होना जानते हो तो पूर्ण उतर आएगा तुम मे। मौत तुमसे कुछ भी न छीन सकेंगी – ओशो अहोभाव

CamScanner

कहते हैं कि मरते क्षण में सारे जीवन की कहानी आंखों के सामने से दोहरा जाती है। दोहरती है।

इसलिए दोहरती है कि अब तड़प -तड़प कर याद आती है -

उन सब क्षणों की जो यूं ही गंवा दिए ;

उन सब दिनों की , जो काटे नहीं कटते थे।

अब तुम मांगो कि एक क्षण और मिल जाए , नहीं मिलेगा।

और पहले शतरंज बिछाए बैठे थे , ताश के पत्ते खेल रहे थे !

और कोई पूछता क्या कर रहे हो , तो कहते थे कि -

समय काट रहा हूं।

पागलो , समय तुम्हें काट रहा है कि तुम समय को काट रहे हो ? मगर तब यह बात ठीक ही थी , क्योंकि पता नहीं था मृत्यु का , तो जीवन का अनुभव नहीं होता था। Osho

झरत दसहं दिस मोती (प्रवचन - 4 से संकलित)

CS CamScanner

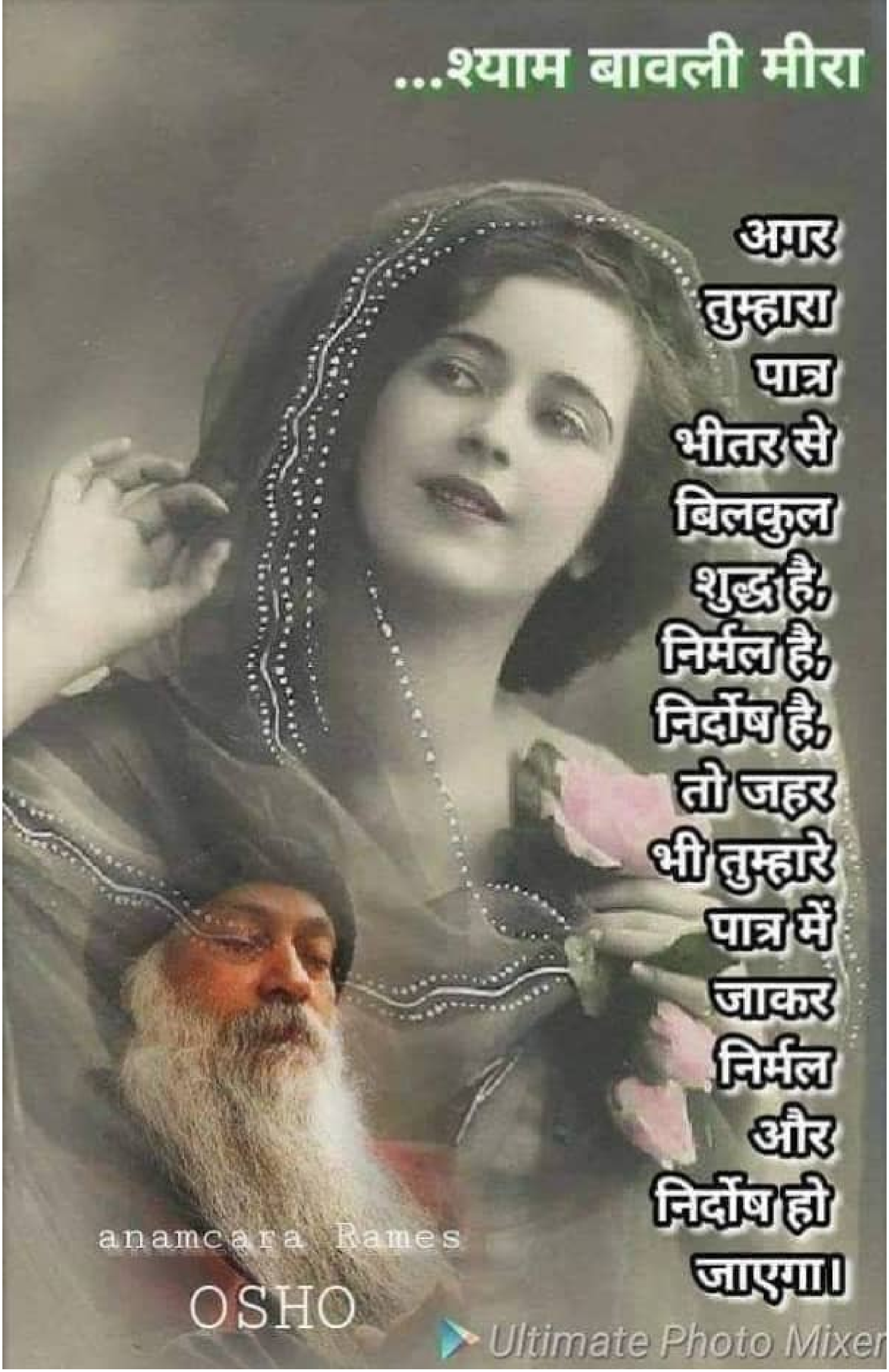
...श्याम बावली मीरा
अगर तुम्हारा पात्र भीतर से बिलकुल शुद्ध है, निर्मल है, निर्दोष है, तो जहर भी तुम्हारे पात्र में जाकर निर्मल और निर्दोष हो जाएगा।
anamcara Rames
OSHO
Ultimate Photo Mixer

CamScanner

एक आदमी एक कुआं बनाता है–
जमीन खोदता है, पत्थर निकालता है,
मिट्टी निकालता है और फिर नीचे झरने
फूटते हैं कुएं के और कुएं में पानी भर जाता है।

कुएं में पानी मौजूद था, पानी कहीं से
लाना नहीं पड़ा। केवल बीच में कुछ
पत्थर और मिट्टी की पर्तें थीं उन्हें अलग
कर देना पड़ा। कोई अवरोध थे, कोई
बाधाएं थीं, उनकोअलग कर दिया और
पानी प्रकट हो गया।

कुएं में पानी लाना नहीं पड़ता,
पानी आता है, लेकिन जो चीज
बीच में रुकावट थी उसको
दूर कर देनी होती है।

ज्ञान भीतर मौजूद है,
उसे कहीं से लाना नहीं है, उसके झरने
भीतर छिपे हैं, केवल बीच की बाधाएं–
पत्थर और मिट्टी अलग कर देनी है खोद
कर और फिर ज्ञान के झरने प्रकट होने
शुरू हो जाएंगे। ओशो SGB

CamScanner

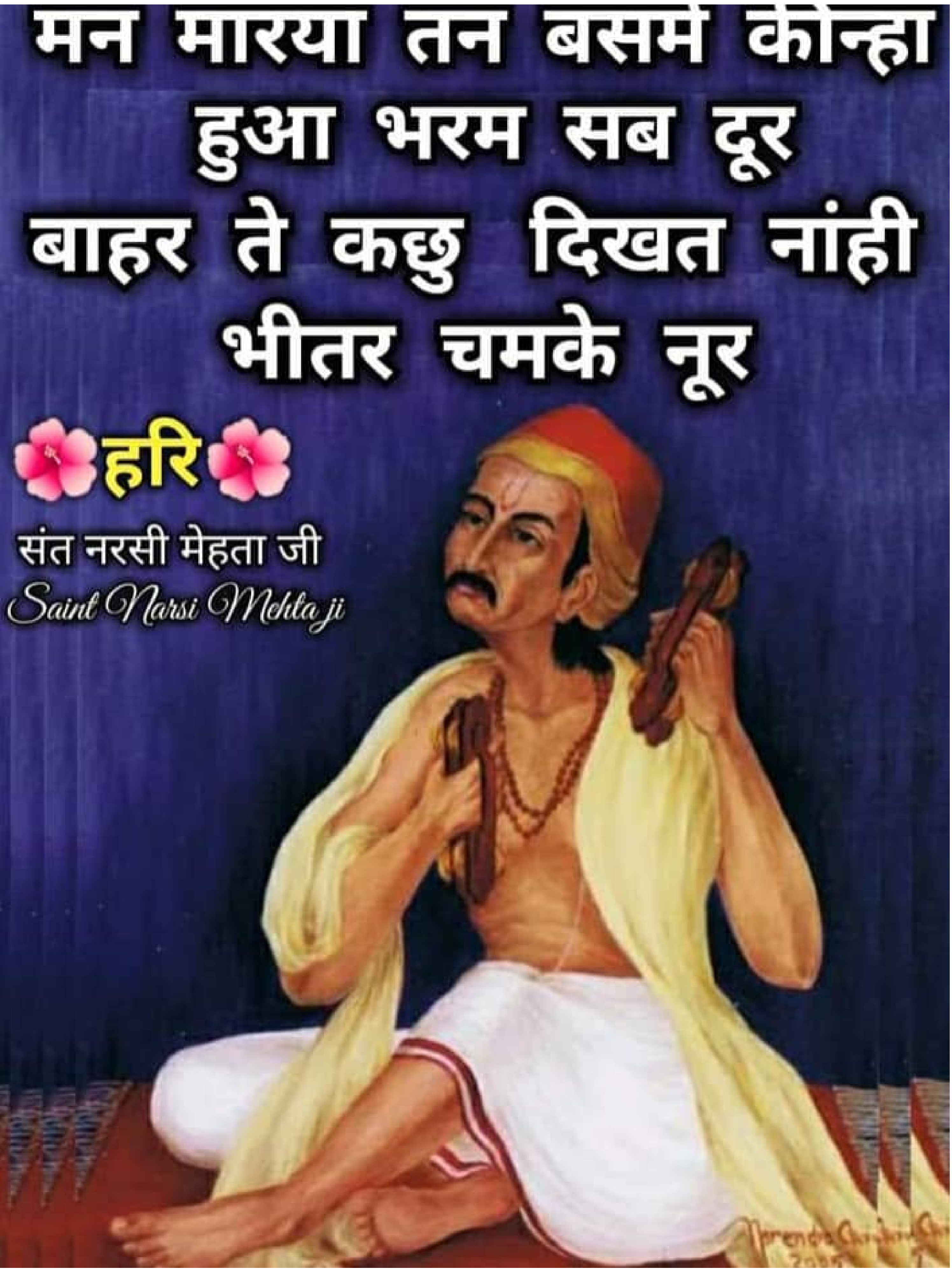
मन मारया तन बसमें कीन्हा
हुआ भरम सब दूर
बाहर ते कछु दिखत नांही
भीतर चमके नूर
हरि
संत नरसी मेहता जी
Saint Narsi Mehta ji

CamScanner

11:20 am 0 KB/s VoLTE 4G 70%

Like Comment Share

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg
Parshotam Rai · 1h ·

🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏🌹🙏

दुख संसार की देन है, आनंद स्वयं का होना चाहिए है ।

अगर आप आनंदित होना चाहते है तो अकेले भी हो सकते है ।

दुखी होने के लिये तो दूसरों की जरुरत पडती है ।

किसी ने आपका अपमान किया, कोई आपके अनुकूल नहीं चलता ।

सब दुख दूसरों से जुड़े हुए ही होते है ....और आनंद का दूसरे से कोई सम्बन्ध है ही नहीं ।

आनंद एक अंतर स्थिति है । दुख तो बाहर से आता है, और आनंद आपके भीतर से आता है ।

अगर आनंद चाहिए तो अपने भीतर डुबकी लगाइये ।

🙏🌹जय श्री कृष्ण🌹🙏

6 · 9 comments • 1 share

Like Comment Share

Mamta Rai
जय श्री कृष्णा

Like Reply

Write a comment...

CamScanner

गोबरैला

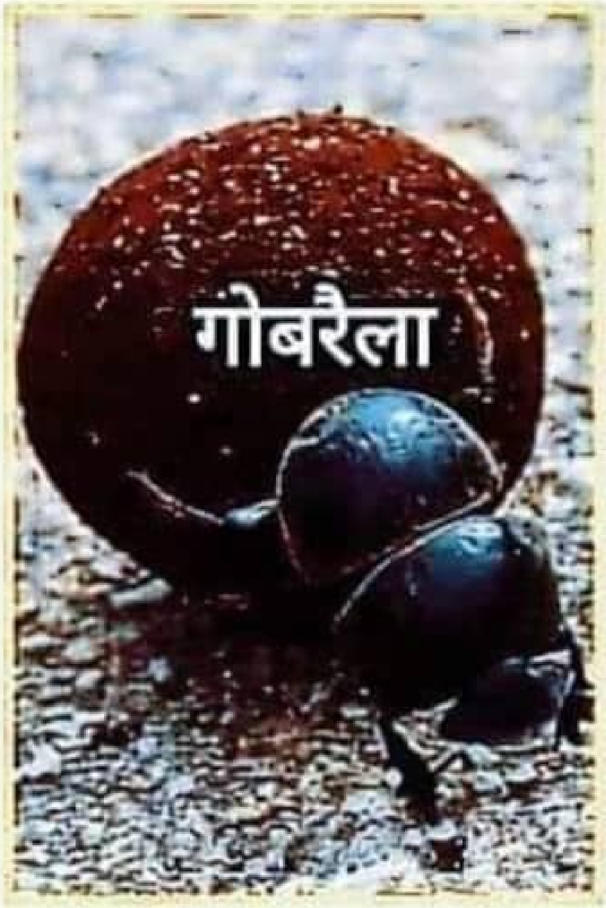

गांव-देहात में एक कीड़ा पाया जाता है, जिसे गोबरैला कहा जाता है। उसे गाय, भैंसों के ताजे गोबर की बू बहुत भाती है! वह सुबह से गोबर की तलाश में निकल पड़ता है और सारा दिन उसे जहां कहीं गोबर मिल जाता है, वहीं उसका गोला बनाना शुरू कर देता है। शाम तक वह एक बड़ा सा गोला बना लेता है। फिर उस गोले को ढ़केलते हुए अपने बिल तक ले जाता है।

लेकिन बिल पर पहुँच कर उसे पता चलता है कि गोला तो बहुत बड़ा बन गया मगर उसके बिल का द्वार बहुत छोटा है। बहुत परिश्रम और कोशिशों के बाद भी वह उस गोले को बिल के अन्दर नहीं ढ़केल पाता, और उसे वहीं पर छोड़कर बिल में चला जाता है।

यही हाल हम मनुष्यों का भी है। पूरी जिन्दगी हम दुनियाभर का माल-मत्ता जमा करने में लगे रहते हैं, और जब अन्त समय आता है, तो पता चलता है कि ये सब तो साथ नहीं ले जा सकते। और तब हम उस जीवन भर की कमाई को बड़ी हसरत से देखते हुए इस संसार से विदा हो जाते हैं

CS CamScanner

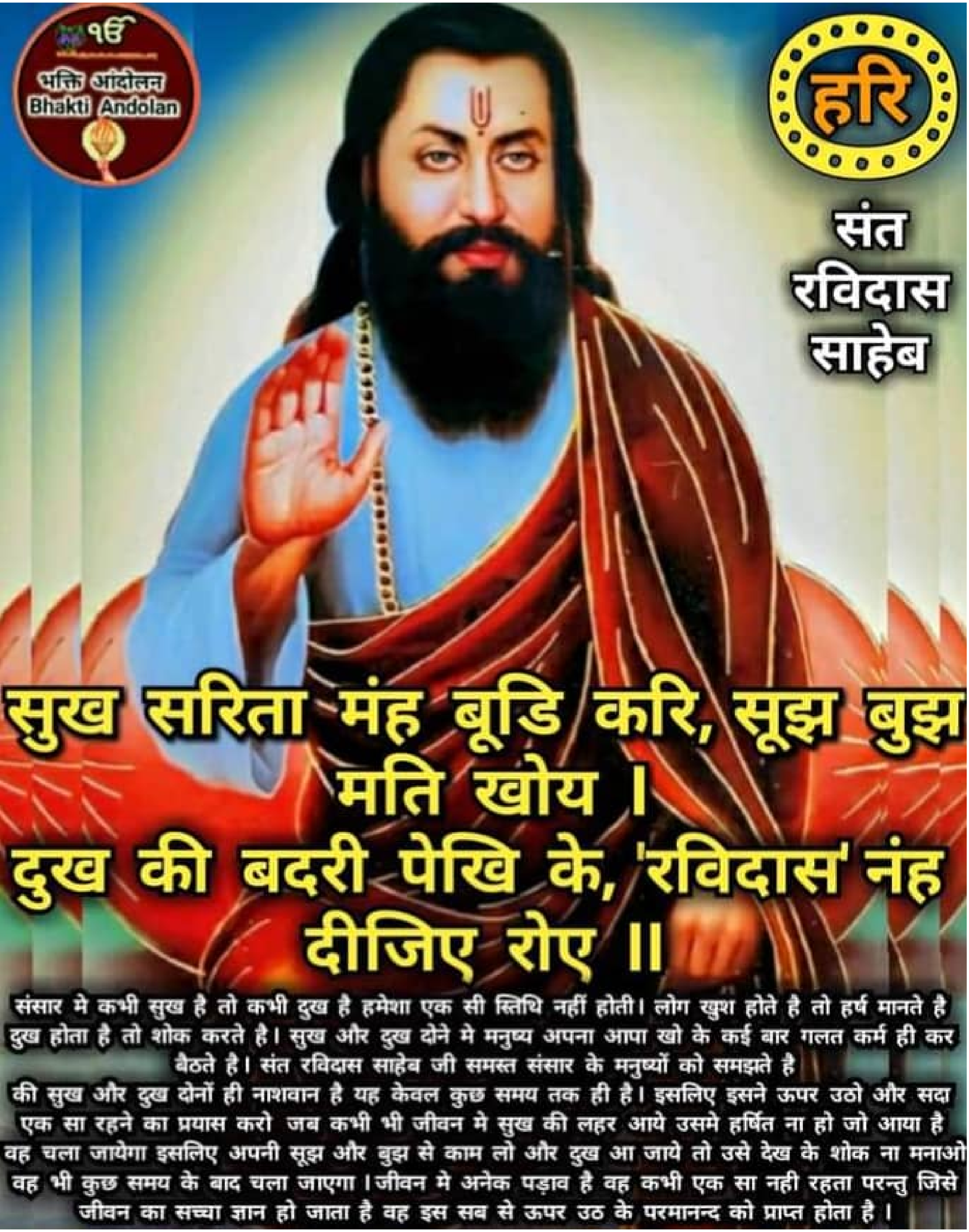

भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
हरि
संत रविदास साहेब
सुख सरिता मंह बूडि करि, सूझ बुझ मति खोय ।
दुख की बदरी पेखि के, 'रविदास' नंह दीजिए रोए ।।
संसार मे कभी सुख है तो कभी दुख है हमेशा एक सी स्तिथि नहीं होती। लोग खुश होते है तो हर्ष मानते है दुख होता है तो शोक करते है। सुख और दुख दोने मे मनुष्य अपना आपा खो के कई बार गलत कर्म ही कर बैठते है। संत रविदास साहेब जी समस्त संसार के मनुष्यों को समझते है
की सुख और दुख दोनों ही नाशवान है यह केवल कुछ समय तक ही है। इसलिए इसने ऊपर उठो और सदा एक सा रहने का प्रयास करो जब कभी भी जीवन मे सुख की लहर आये उसमे हर्षित ना हो जो आया है वह चला जायेगा इसलिए अपनी सूझ और बुझ से काम लो और दुख आ जाये तो उसे देख के शोक ना मनाओ वह भी कुछ समय के बाद चला जाएगा ।जीवन मे अनेक पड़ाव है वह कभी एक सा नही रहता परन्तु जिसे जीवन का सच्चा ज्ञान हो जाता है वह इस सब से ऊपर उठ के परमानन्द को प्राप्त होता है ।

CamScanner

परमात्मा कभी दृश्य नहीं बनता; परमात्मा तो तुम्हारे भीतर छिपे हुए द्रष्टा का नाम है। तुम्हारी आंख से भी जो देख रहा है, वह परमात्मा ही है।

CamScanner

7:44 65%

Your post

Raj Bhatia
1d

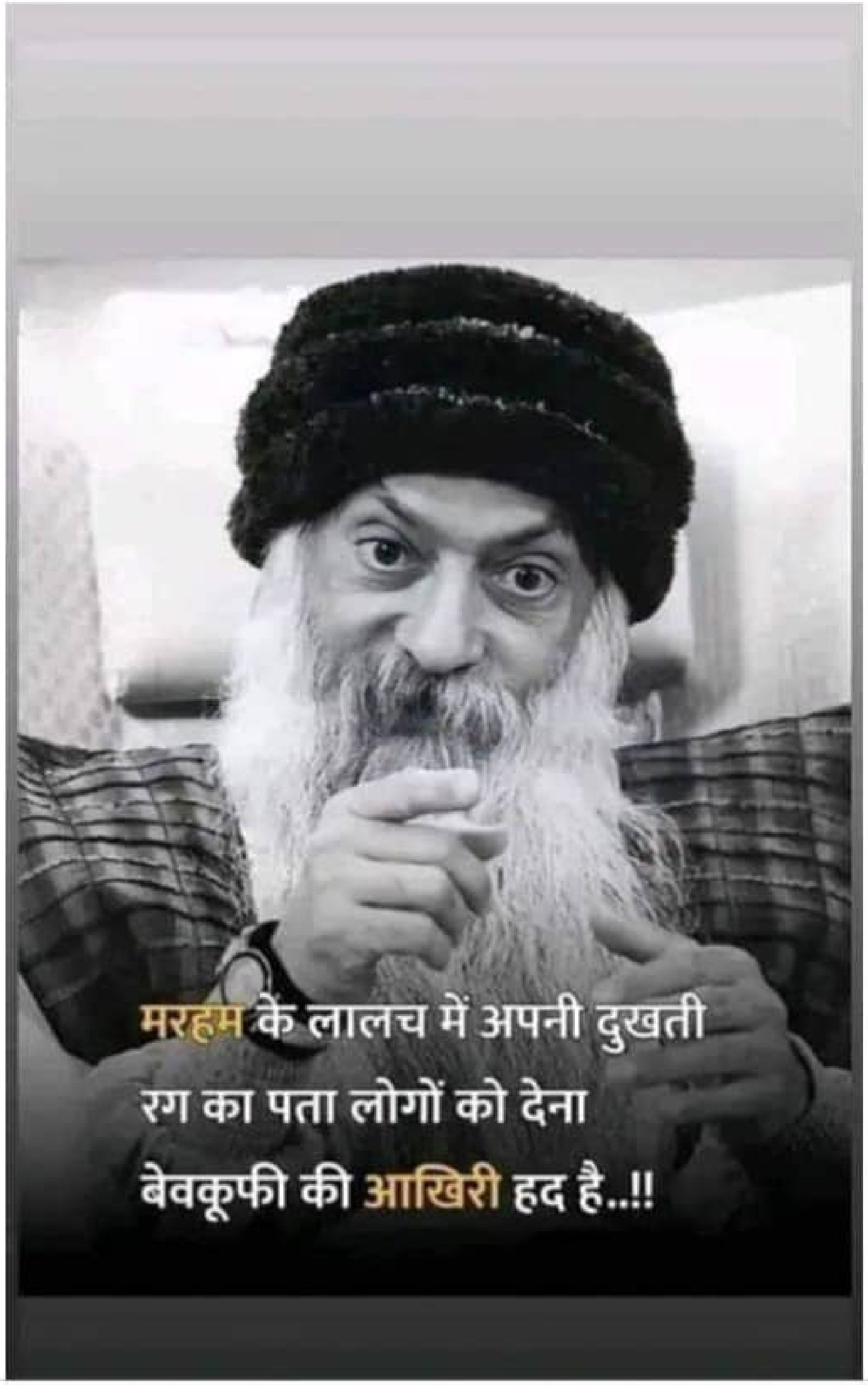

Write a public comment

CamScanner

जब मैं था तब
हरि नहीं
अब हरि है मैं नाहीं ।
प्रेम गली अति सांकरी
जामें दो न
समाहीं ॥
सत्यनाम
Sant
Kabir Saheb
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
संत कबीर साहेब कहते है की
जब तक स्वयं में अहंकार का भाव था
तब तक परमात्मा का साक्षात्कार नहीं हुआ।
जब स्वयं मे से सारा अहम समाप्त हुआ
तभी स्वयं मे ही प्रभु मिल गए ।
जब परमात्मा का साक्षात्कार हुआ –
तब अहम स्वत: नष्ट ही हो गया । ईश्वर की
सत्ता का बोध तभी हुआ जब अहंकार नहीं रहा ।
मै और मेरे की भावना ही समाप्त हो गई ।
प्रेम अद्वैत है प्रेम में द्वैत भाव नहीं हो सकता –
प्रेम की गली बहुत पतली है इसमें केवल
एक ही समा सकता है –
अहम् या परम ! परम की प्राप्ति के लिए अहम् का
त्यागना जरुरी है क्यों की जहाँ परम है वहा अहम्
नहीं है और जहाँ अहम् है वहा परम नहीं है

CamScanner

CS CamScanner

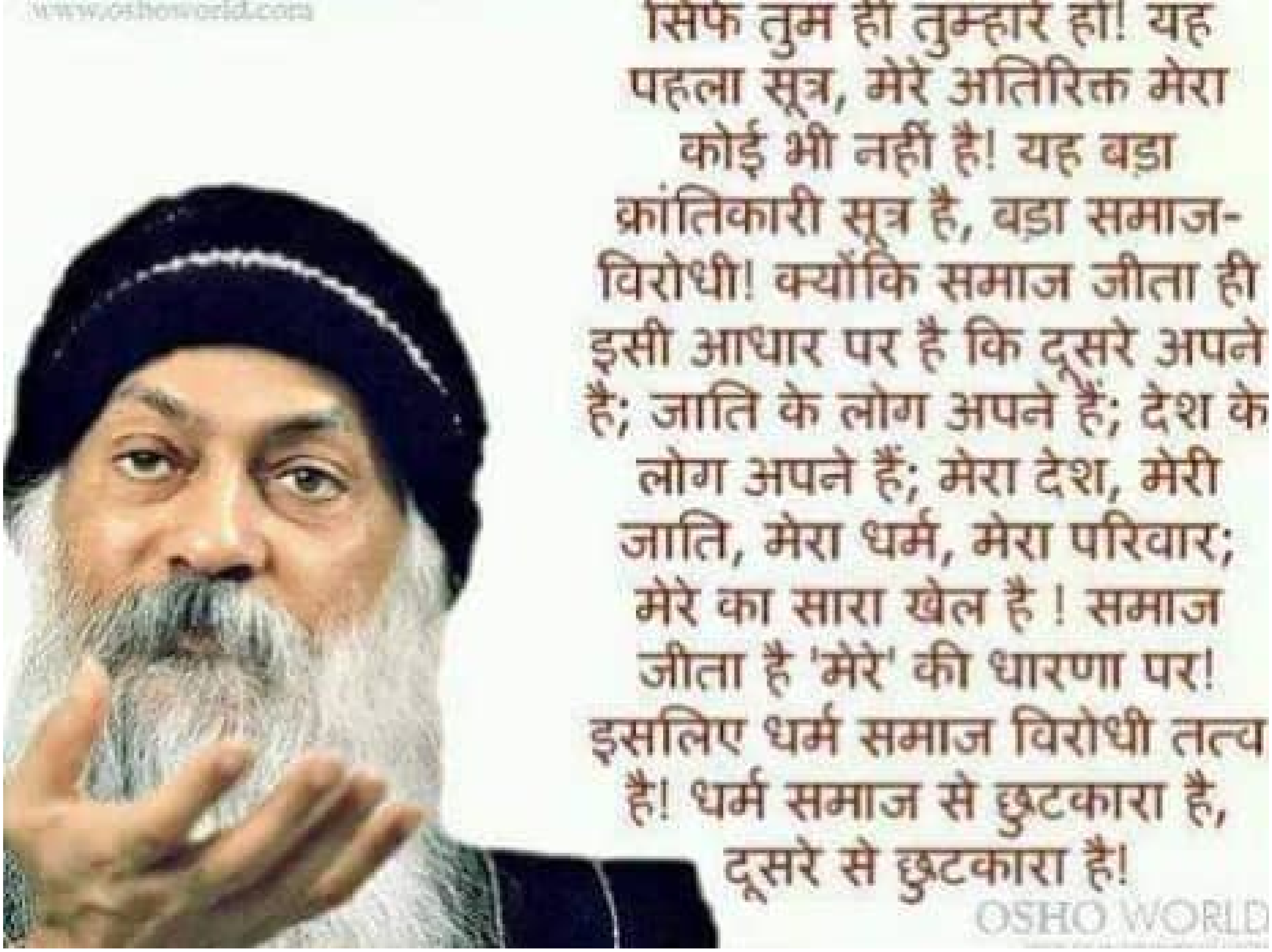

CS CamScanner

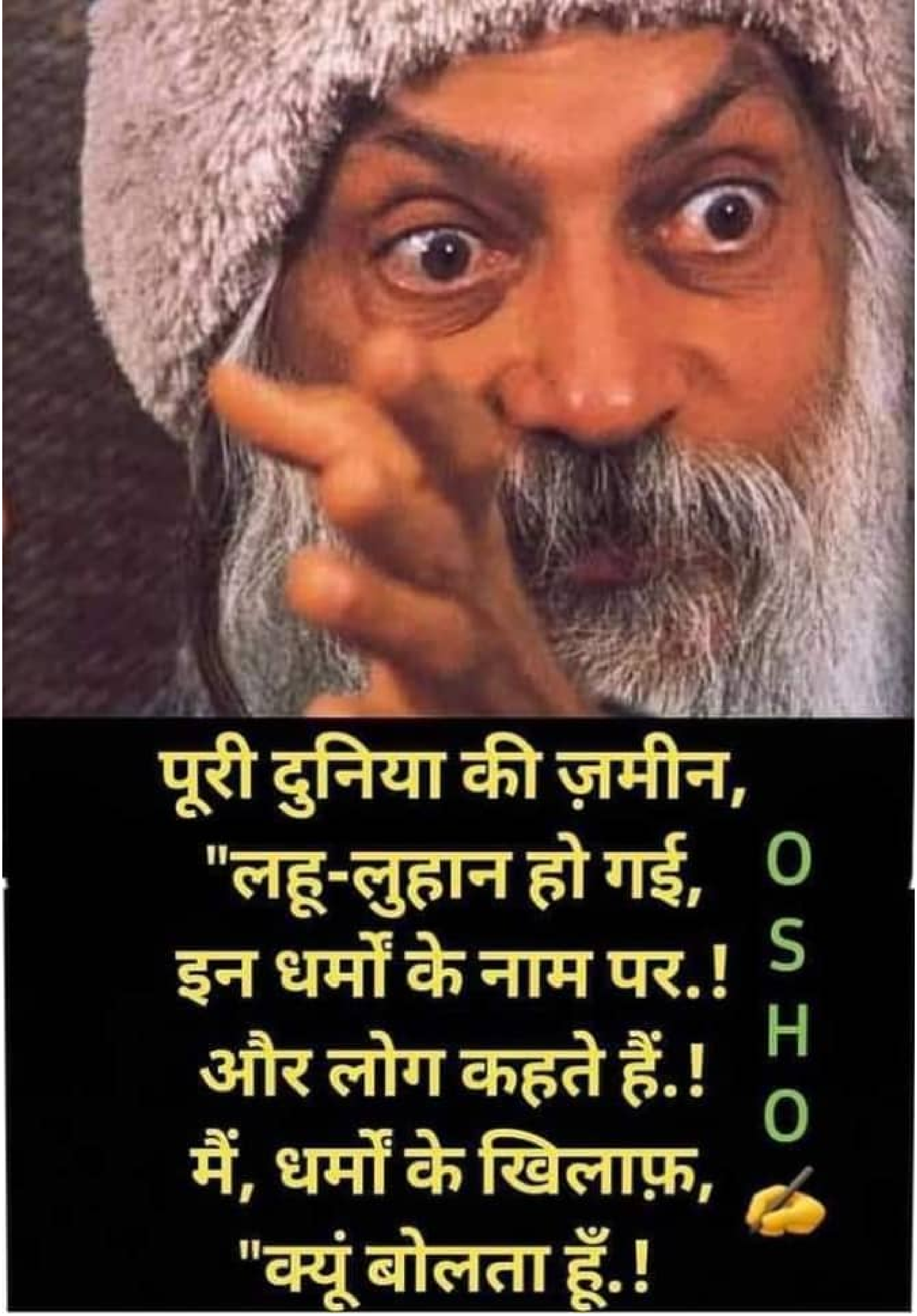

CS CamScanner

Happy Thoughts

ईश्वर कैसा है ?

ईश्वर, मन बुद्धि के परे निराकार है । इंसान हर चीज समझने के लिए मन और बुद्धि का इस्तेमाल करता है । बच्चे को सिखाने के लिए कई चित्र दिखाना आवश्यक होता है । अध्यात्म की शुरुआत करनेवालों के लिए कौन से चित्र दिखाए जाएँ... क्योंकि ईश्वर का कोई चित्र नहीं बनाया जा सकता लेकिन आवश्यकता को समझते हुए ईश्वर का चित्र बनाने की गलती महापुरुषों द्वारा की गई । बाद में यह गलती ईश्वर प्राप्त करने के बाद खत्म हो जाती है । ईश्वर को अपने आपको जानने के लिए आकर की आवश्यकता है, जैसे आँख को आईने की आवश्यकता है ।...सरश्री

CS CamScanner

2:56 pm 0 KB/s VoLTE 4G 44%

कबीर बोले: स्वामीजी, ये गाय पहले घास खायेगी तभी तो दुध देगी...!!!

रामानंद बोले: अरे ये गाय तो मरी हुई है, ये घास कैसे खायेगी??

कबीर बोले: स्वामी जी, ये गाय तो आज मरी है....जब आज मरी गाय घास नही खा सकती...!!!
...तो आपके 100 साल पहले मरे हुए पितर खीर कैसे खायेगे...??

यह सुनते ही रामानन्दजी
मौन हो गये..!!
उन्हें अपनी भूल का ऐहसास
हुआ.!!
***
माटी का एक नाग बना के
पुजे लोग लुगाया
जिंदा नाग जब घर में निकले
ले लाठी धमकाया

जिंदा बाप कोई न पुजे
मरे बाद पुजवाया
मुठ्ठीभर चावल ले के
कौवे को बाप बनाया

यह दुनिया कितनी बावरी हैं
जो पत्थर पूजे जाय
घर की चकिया कोई न पूजे
जिसका पीसा खाय

----संत कबीर

भावार्थ:-
जो जीवित है उनकी सेवा करो..!!
वही सच्चा श्राद्ध है.!!

CamScanner

सत्यनाम

कोटि बार गए काशी,
कोटि बैकुंठ ले वास।
कोटि संत का दर्शन करे,
एक पूनो उपवास।।

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन

(दास: नरेश कुमार बैरागी)

सद्‌गुरु कबीर साहेब वाणी वचन
दास: नरेश कुमार बैरागी

CamScanner

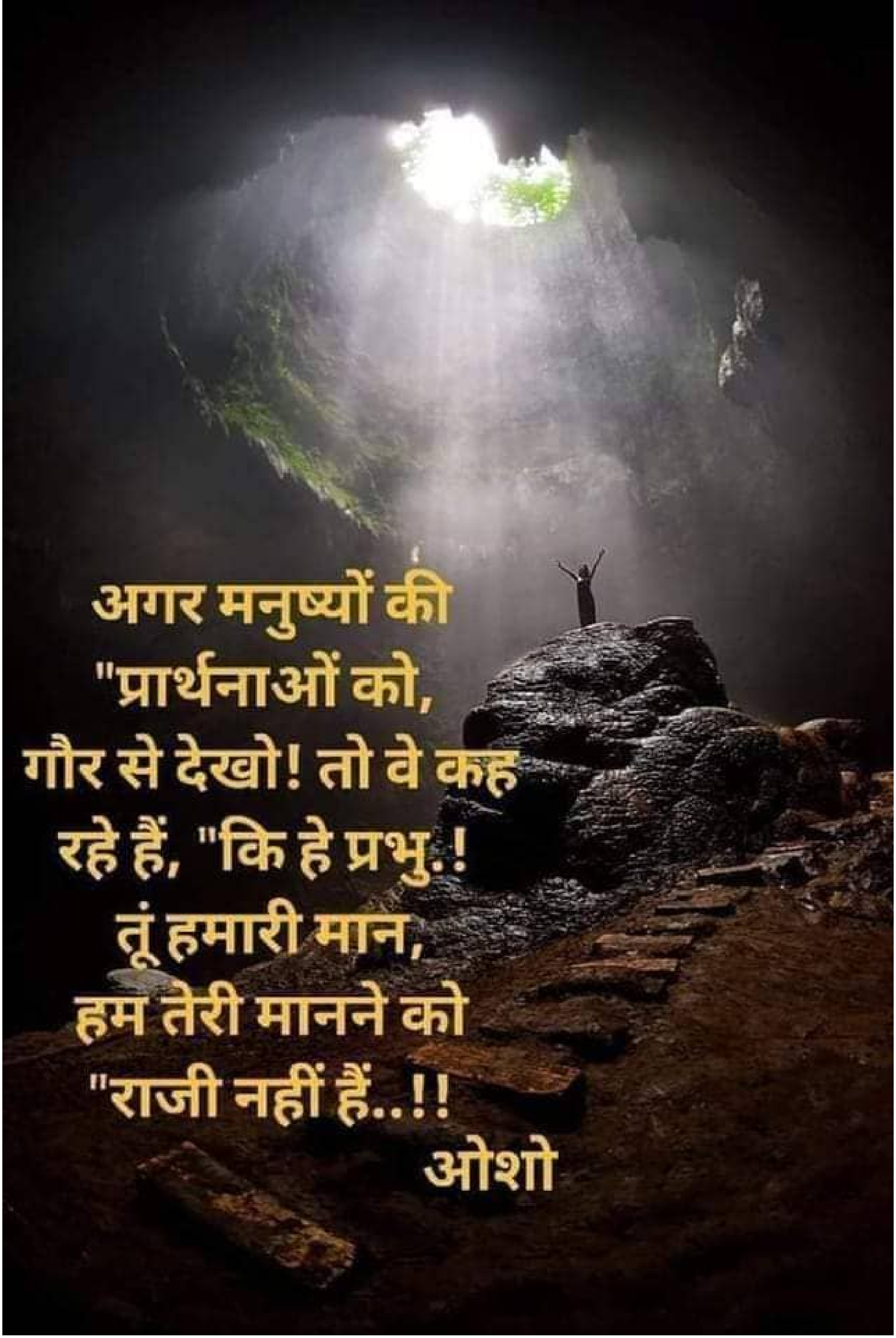

CS CamScanner

CS CamScanner

गोबरैला

गांव-देहात में एक कीड़ा पाया जाता है, जिसे गोबरैला कहा जाता है। उसे गाय, भैंसों के ताजे गोबर की बू बहुत भाती है! वह सुबह से गोबर की तलाश में निकल पड़ता है और सारा दिन उसे जहां कहीं गोबर मिल जाता है, वहीं उसका गोला बनाना शुरू कर देता है। शाम तक वह एक बड़ा सा गोला बना लेता है। फिर उस गोले को ढ़केलते हुए अपने बिल तक ले जाता है।

लेकिन बिल पर पहुँच कर उसे पता चलता है कि गोला तो बहुत बड़ा बन गया मगर उसके बिल का द्वार बहुत छोटा है। बहुत परिश्रम और कोशिशों के बाद भी वह उस गोले को बिल के अन्दर नहीं ढ़केल पाता, और उसे वहीं पर छोड़कर बिल में चला जाता है।

यही हाल हम मनुष्यों का भी है। पूरी जिन्दगी हम दुनियाभर का माल-मत्ता जमा करने में लगे रहते हैं, और जब अन्त समय आता है, तो पता चलता है कि ये सब तो साथ नहीं ले जा सकते। और तब हम उस जीवन भर की कमाई को बड़ी हसरत से देखते हुए इस संसार से विदा हो जाते हैं

CamScanner

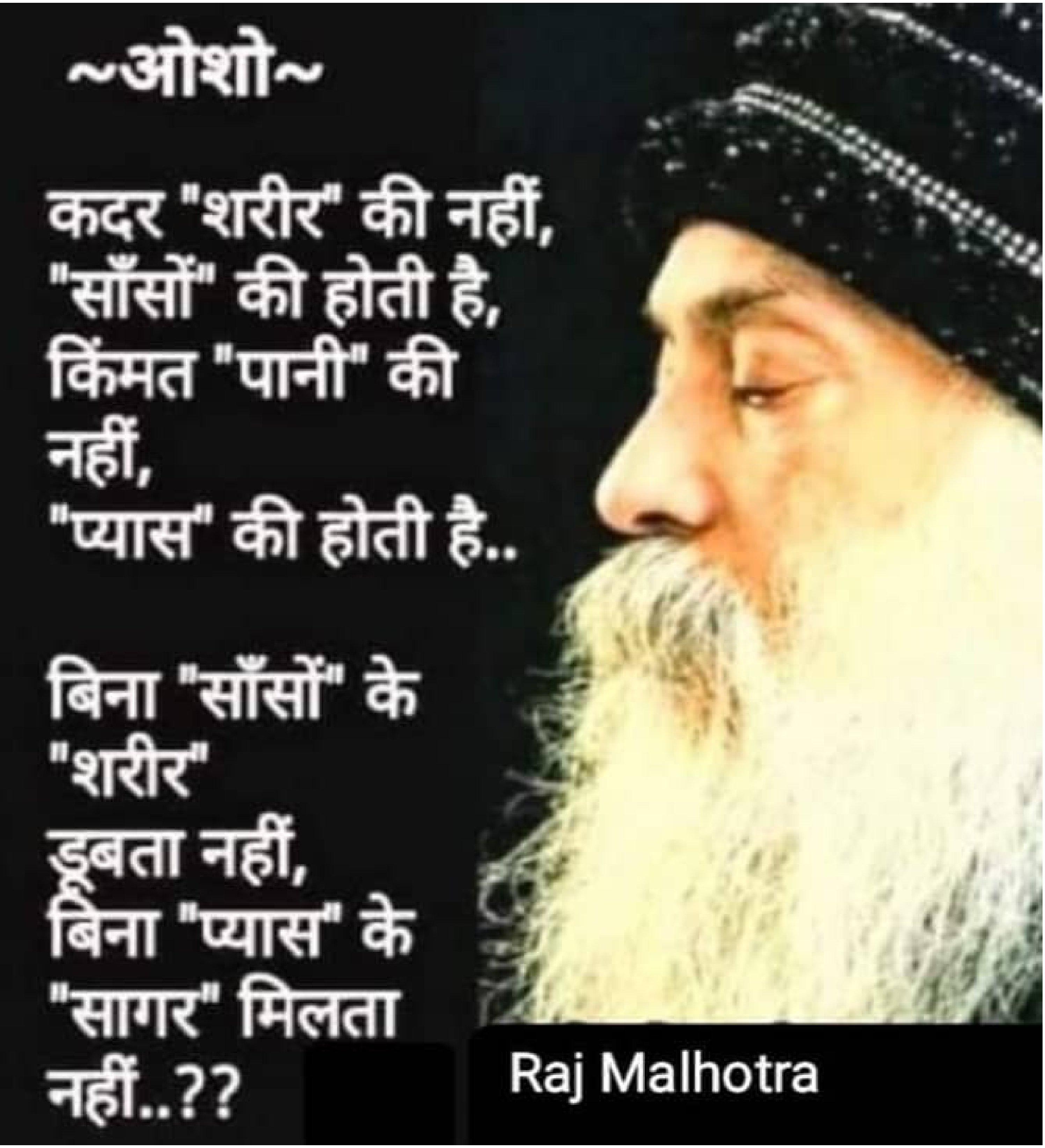
~ओशो~
कदर "शरीर" की नहीं,
"साँसों" की होती है,
किंमत "पानी" की
नहीं,
"प्यास" की होती है..
बिना "साँसों" के
"शरीर"
डूबता नहीं,
बिना "प्यास" के
"सागर" मिलता
नहीं..??
Raj Malhotra

CamScanner

5:58 pm 0 KB/s VoLTE 4G 35%

उसने कहा: “अब आपके अतिरिक्त और कोई आश्रय नहीं है!”
लेकिन बडा अदभुत था वह सदगुरु! कहें कि पागल ही था! उसने धक्के देकर उस दरिद्र धनपति को झोपडे के बाहर निकाल दिया और द्वार बंद कर लिए! अंधेरी रात्रि थी और बियावान जंगल था। उस जंगल में उस झोपडे के अतिरिक्त कोई आश्रय भी नहीं था।

धनपति ने सोचा था कि वह बहुत बडा कार्य करके लौट रहा है। लेकिन यह कैसा स्वागत–यह कैसा व्यवहार?

धन का संग्रह व्यर्थ पाया था। लेकिन धन का त्याग भी व्यर्थ ही हो गया था।

वह उस रात्रि निराश्रय एक वृक्ष के नीचे सो रहा। उसका अब कोई न सहारा था, न साथी, न घर। न उसके पास संपदा थी, न शक्ति थी। न संग्रह था, न त्याग था। सुबह जाग कर उसने पाया कि वह एक अनिर्वचनीय शांति में डूबा हुआ है। निराश्रय चित्त अनायास ही परमात्मा के आश्रय को पा लेता है।

वह भागा हुआ सदगुरु के चरणों में गिरने को गया, लेकिन देखा कि स्वयं सदगुरु ही उसके चरणों में गिर पडा है।

उस सदगुरु ने उसे हृदय से लगाया और कहा–“धन छोडना आसान है, त्याग छोडना कठिन है। किंतु जो त्याग का त्याग करता है, वही वस्तुत: धन भी छोडता है। संसार छोडना सरल है, पर गुरु छोडना कठिन है। लेकिन जो गुरु को भी छोड देता है, वही परमगुरु को पाता है। यही है शांति। यही है मोक्ष। यही है निर्वाण। क्या तुम्हें कुछ और भी पाना है? ”

वह व्यक्ति, जो न अब धनपति था, न दरिद्र था, बोला: “नहीं। पाने के ख्याल में ही भूल थी। उसके कारण ही खोया था। जो पाना है, वह पाया ही हुआ है। पाने की दौड में यही नित्य-प्राप्त खो गया था। शांति भी अब मुझे नहीं चाहिए। परमात्मा भी नहीं। मैं ही अब नहीं हूं और जो है वही शांति है, वही परमात्मा है, वही मोक्ष है।”

ओशो..✍️

CamScanner

CamScanner

श्रीमद्भागवत महापुराण:
एकादश स्कन्ध:
चतुर्दश अध्याय
श्लोक 14
जिसने अपने को मुझे सौंप दिया है, वह मुझे छोड़कर न तो ब्रह्मा का पद चाहता है और न देवराज इन्द्र का, उसके मन में न तो सार्वभौम सम्राट बनने की इच्छा होती है और न वह स्वर्ग से भी श्रेष्ठ रसातल का ही स्वामी होना चाहता है। वह योग की बड़ी-बड़ी सिद्धियों और मोक्ष तक की अभिलाषा नहीं करता।
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
श्री कृष्ण उद्धव संवाद

CamScanner

कृष्ण गीता
15/6
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
मेरे उस परम-धाम को न तो सूर्य प्रकाशित करता है, न चन्द्रमा प्रकाशित करता है और न ही अग्नि प्रकाशित करती है, जहाँ पहुँचकर कोई भी मनुष्य इस संसार में वापस नहीं आता है वही मेरा परम-धाम है ।।

CamScanner

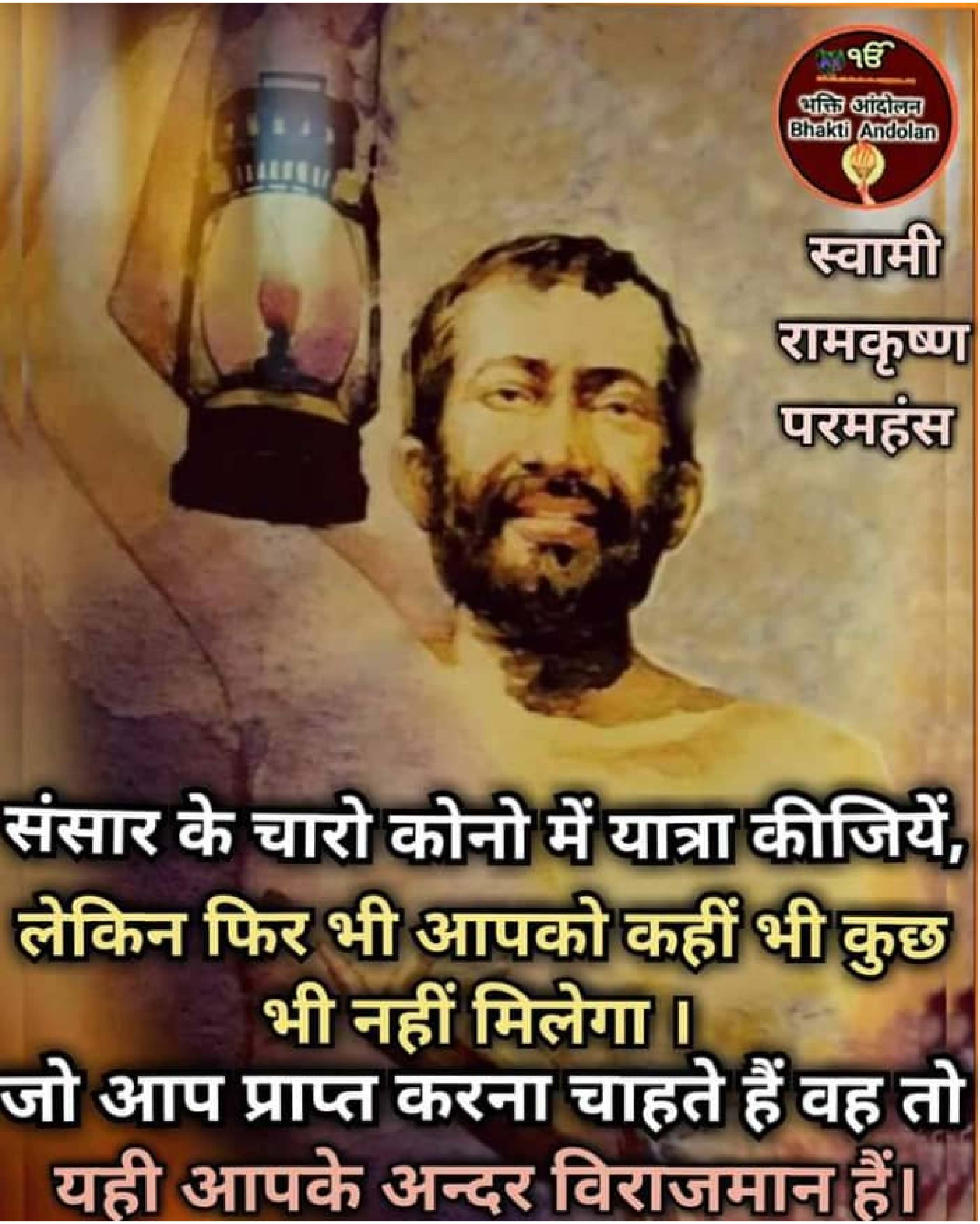

CS CamScanner

सन्त सेव गुरु बन्दगी,
गुरु सुमिरन वैराग।
ये ता तबही पाइये,
पूरन मस्तक भाग॥
28
सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
(दास: नरेश कुमार वैरागी)

CamScanner

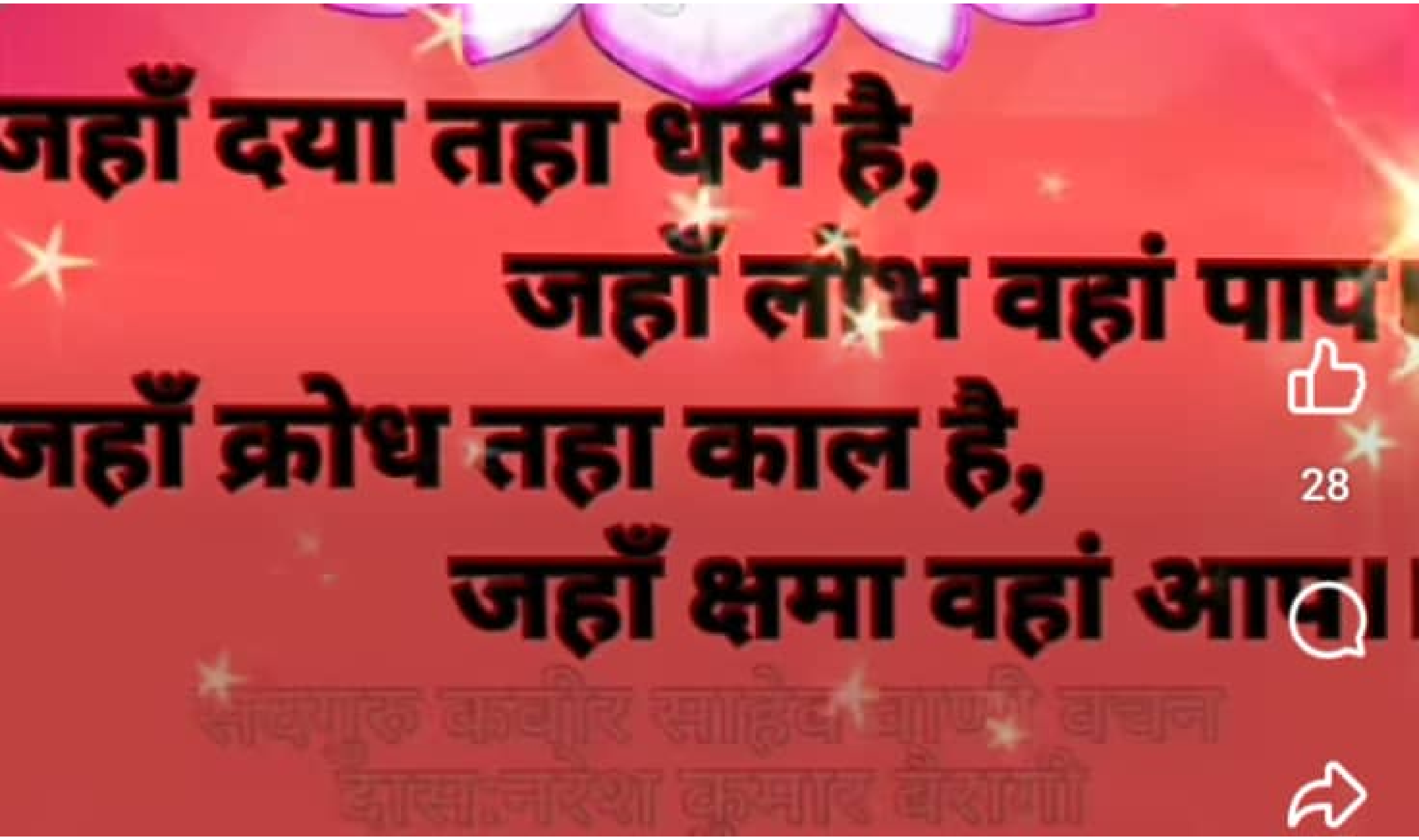

CamScanner

भगति भजन हरि नांव है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा बाचा कर्मणा, 'कबीर' सुमिरण सार ॥

CamScanner

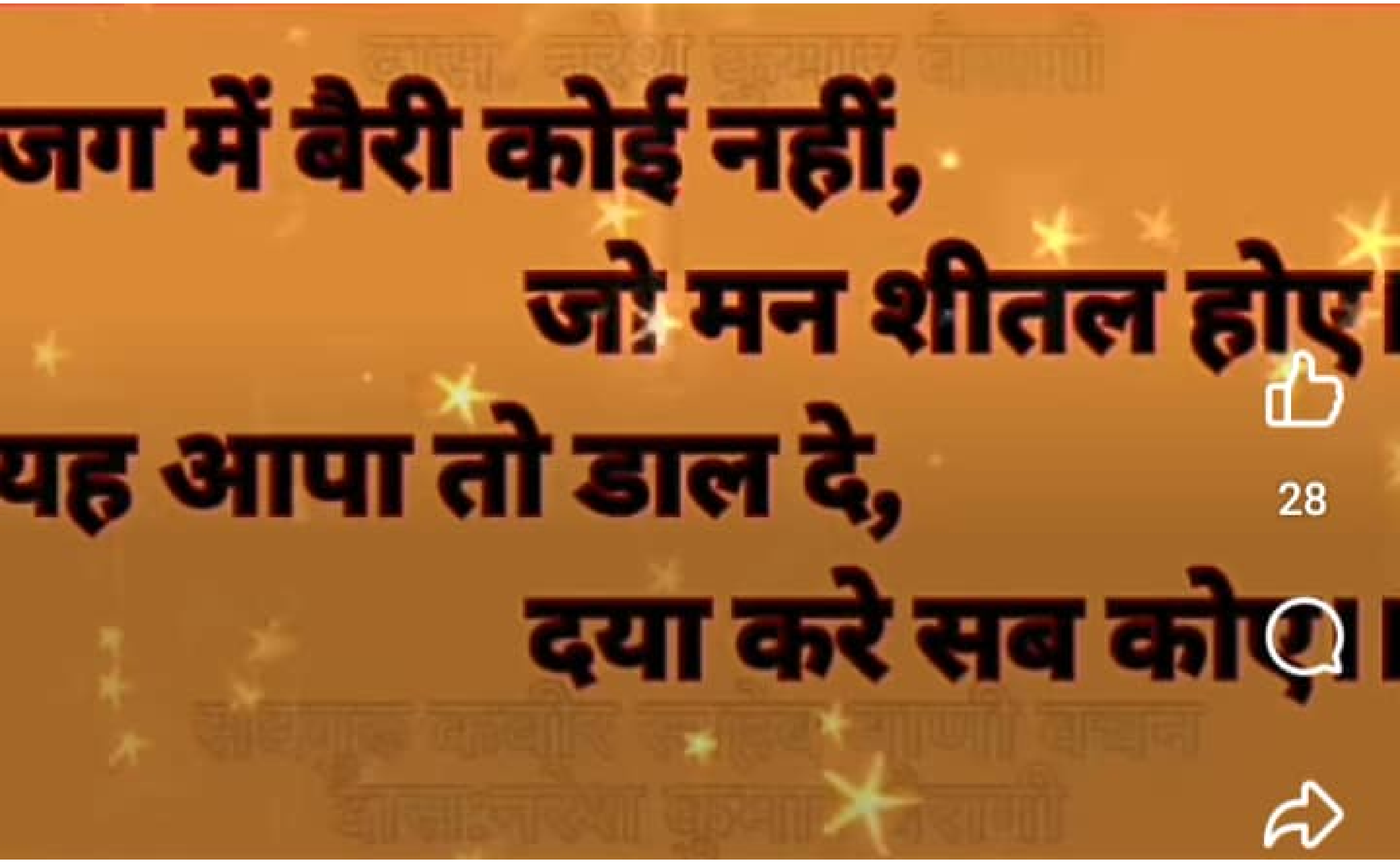

CamScanner

28

गुरु नाम हैं गम्य का,शिष्य सीख जो लेय।
बिनु पद मर्यादा के ,गुरु शिष्य नही होय।।

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन

(दास: नरेश कुमार वैरागी)

CamScanner

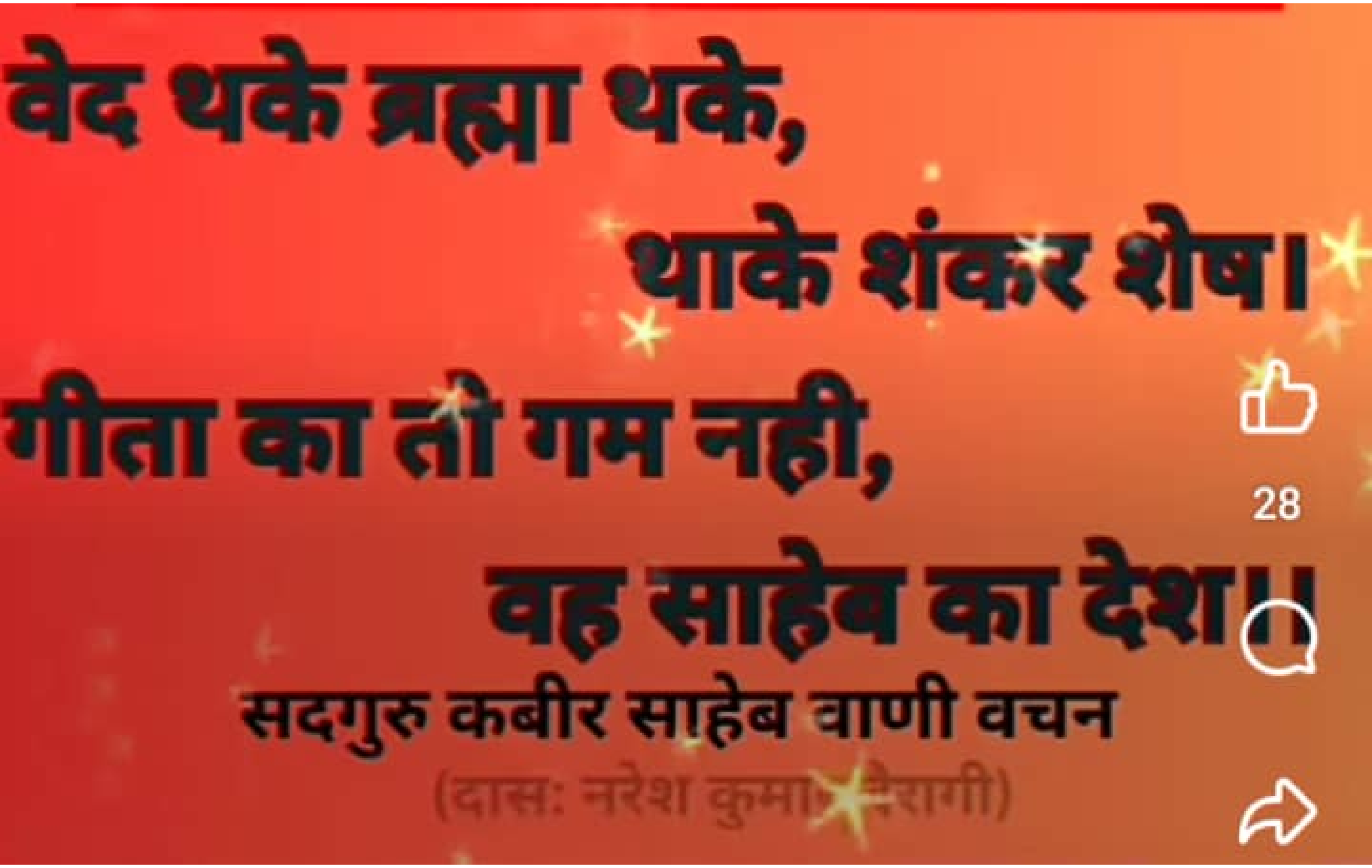

वेद थके ब्रह्मा थके,
थाके शंकर शेष।
गीता का तो गम नही,
वह साहेब का देश।।
सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
28

CamScanner

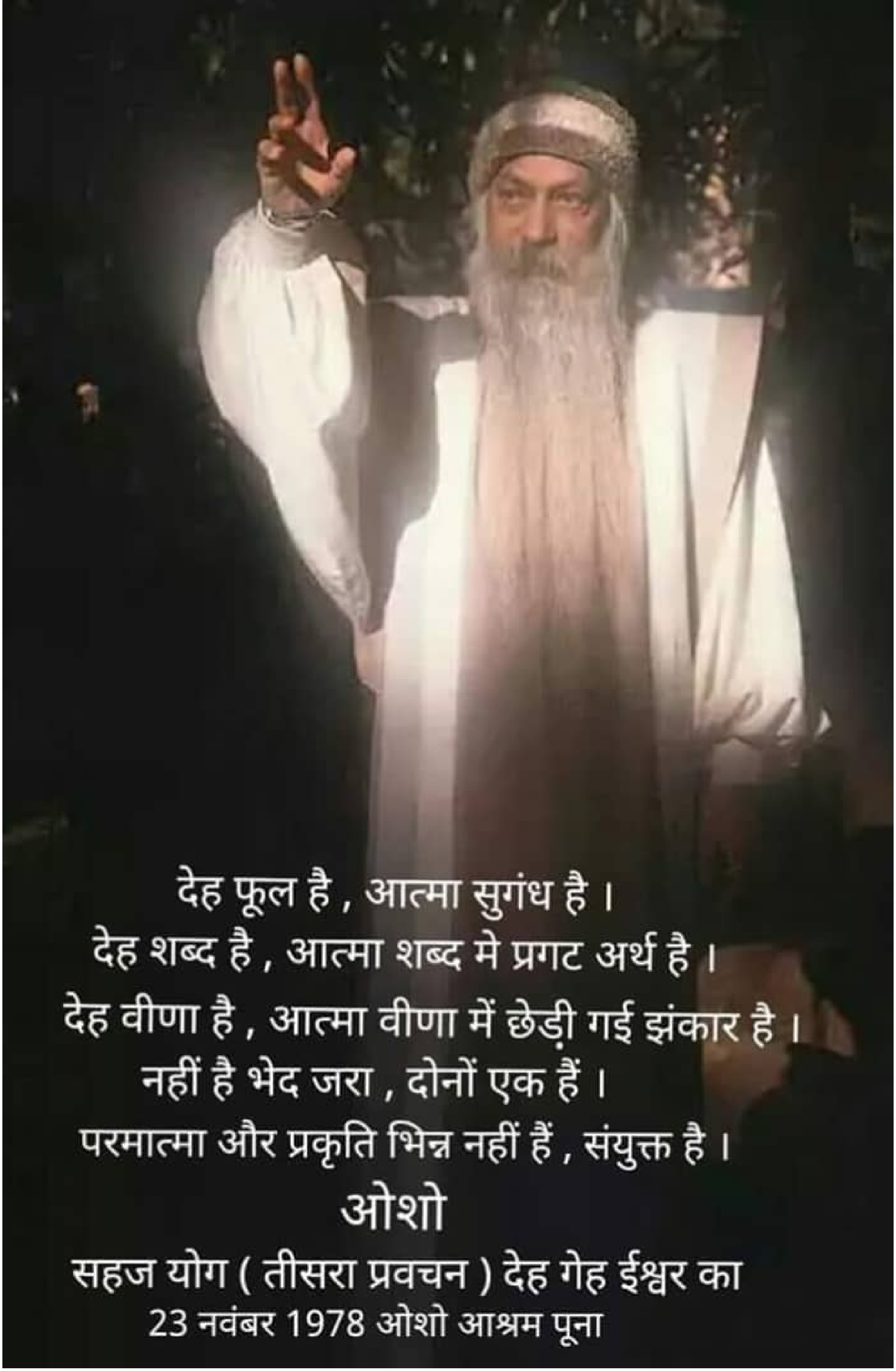

देह फूल है , आत्मा सुगंध है ।
देह शब्द है , आत्मा शब्द मे प्रगट अर्थ है ।
देह वीणा है , आत्मा वीणा में छेड़ी गई झंकार है ।
नहीं है भेद जरा , दोनों एक हैं ।
परमात्मा और प्रकृति भिन्न नहीं हैं , संयुक्त है ।
ओशो
सहज योग (तीसरा प्रवचन) देह गेह ईश्वर का
23 नवंबर 1978 ओशो आश्रम पूना

CamScanner

4:21 pm 0 KB/s 70%

आप मुझे हर दिन देखेंगे। "

चेला बहुत खुश था तो अगले दिन वह इंतजार कर रहा था और इंतजार कर रहा था; कुछ नहीं हुआ। सच में बहुत कुछ हुआ, लेकिन उसकी धारणा के अनुसार कुछ नहीं हुआ। शाम तक वह बहुत नाराज था। भोजन ग्रहण नहीं किया है, और साईं बाबा प्रकट नहीं हुए हैं इसलिए फिर चले गए। उसने कहा, "तुम वादा करते हो और पूरा नहीं करते? "

साईं बाबा ने कहा पर मैं तीन बार प्रकट हुआ एक बार भी नहीं पहली बार आया तो भिखारी था और तुमने मुझसे कहा था हट जा ! यहाँ मत आओ! 'दूसरी बार मैं आया तो बूढी औरत थी, और तुम मुझे नहीं देखोगे; तुमने आँखें बंद कर ली- क्योंकि शिष्य को स्त्री नहीं देखने की आदत थी; स्त्री नहीं देखने की साधना कर रहा था, इसलिए उसने आँखें बंद कर ली।

साईं बाबा ने कहा मैं तो आ गया था पर आप क्या उम्मीद करते हो बंद आँखों में तेरी आँखों में उतर जाऊ क्या मैं तो खड़ा था पर तुमने आँखे बंद कर ली जिस पल तुमने मुझे देखा तुमने आँखे बंद कर ली फिर तीसरी बार कुत्ते बनकर पहुंचा, और तुम मुझे अंदर नहीं आने दोगे। एक लाठी लेकर तुम दरवाजे में खड़ी थी। "

और ये तीन बातें हो चुकी थी। और ये चीजें पूरी मानवता के साथ होती रही हैं। परमात्मा कई रूपों में आता है, लेकिन आपके पास पूर्वाग्रह है; आपके पास पूर्व-निर्मित अवधारणा है; आप देख नहीं सकते। वह आपके अनुसार दिखाई देना चाहिए, और वह आपके अनुसार कभी दिखाई नहीं देता। और वह आपके अनुसार कभी दिखाई नहीं देगा। आप उसके लिए शासन नहीं कर सकते और आप कोई शर्त नहीं रख सकते।

जब सारी कल्पनाओं का पतन होता है, तभी सत्य प्रकट होता है। अन्यथा कल्पना परिस्थितियाँ बनाती रहती है और सत्य प्रकट नहीं हो सकता। केवल एक नंगे दिमाग में, एक नग्न, खाली दिमाग में, सत्य प्रकट होता है, क्योंकि आप इसे विकृत नहीं कर सकते।

CamScanner

लोग डरपोक हैं; उनके बारे में चिंता ना लो। तुम अपनी राह चलते रहो, अपनी राह पर नाचते हुए चलते रहो। सिर्फ एक बात याद रखो : जो कुछ भी अच्छा लगे, वह अच्छा है, जो कुछ भी सुंदर लगे सुंदर है, और जो कुछ भी तुम्हें आनंदित करे, प्रसन्न करे, खुश करे, वही सत्य है।

इसे एक मात्र कसौटी बन जाने दो। दूसरों की राय की परवाह मत करो। इसे अपनी कसौटी बन जाने दो--जो कुछ भी तुम्हें प्रसन्न करता है वह निश्चित ही सत्य है। आनंद सत्य की एकमात्र कसौटी है।

Osho, The Discipline of Transcendence, Vol. 2, Talk #10

Swami Devaishta Pravin Goswami

CamScanner

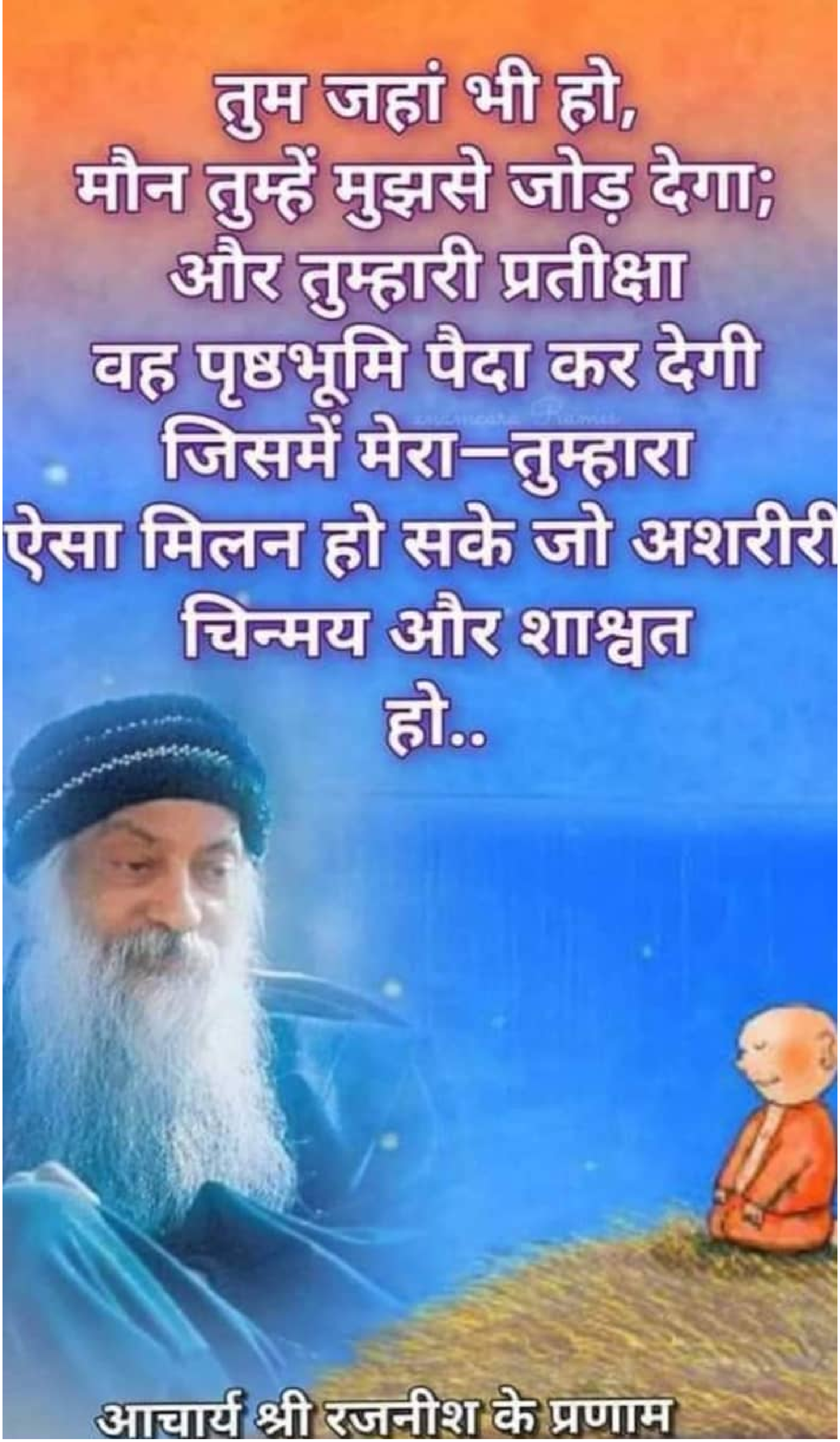
तुम जहां भी हो,
मौन तुम्हें मुझसे जोड़ देगा;
और तुम्हारी प्रतीक्षा
वह पृष्ठभूमि पैदा कर देगी
जिसमें मेरा–तुम्हारा
ऐसा मिलन हो सके जो अशरीरी
चिन्मय और शाश्वत
हो..
आचार्य श्री रजनीश के प्रणाम

CamScanner

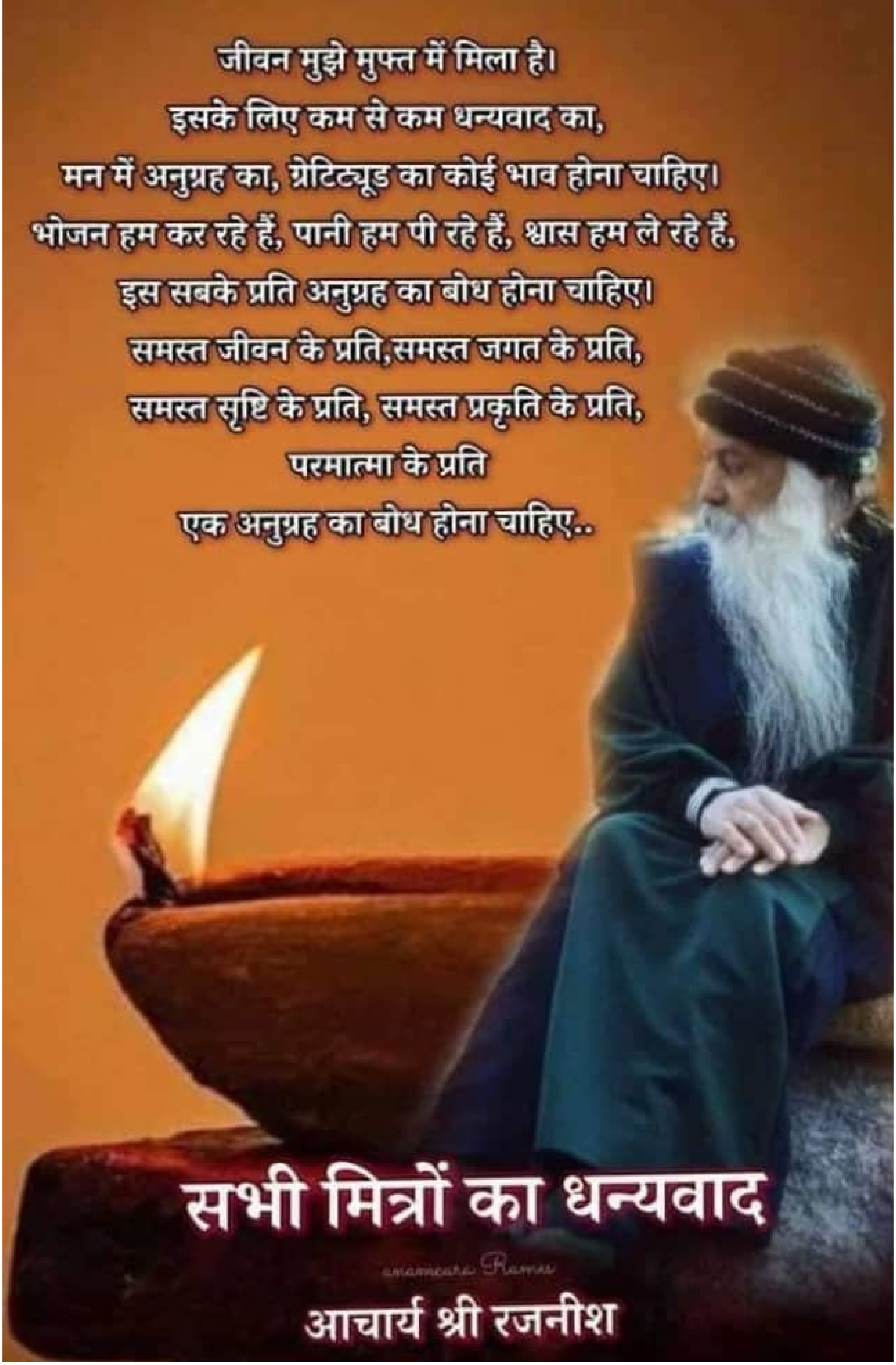
जीवन मुझे मुफ्त में मिला है।
इसके लिए कम से कम धन्यवाद का,
मन में अनुग्रह का, ग्रेटिट्यूड का कोई भाव होना चाहिए।
भोजन हम कर रहे हैं, पानी हम पी रहे हैं, श्वास हम ले रहे हैं,
इस सबके प्रति अनुग्रह का बोध होना चाहिए।
समस्त जीवन के प्रति,समस्त जगत के प्रति,
समस्त सृष्टि के प्रति, समस्त प्रकृति के प्रति,
परमात्मा के प्रति
एक अनुग्रह का बोध होना चाहिए..
सभी मित्रों का धन्यवाद
आचार्य श्री रजनीश

CamScanner

Happy thoughts

यह सारा संसार एक ही चेतना की लीला है ।

पूरी सृष्टि में एक ही चेतना व्याप्त है, जिसे विभिन्न नामों से जाना जाता है । जैसे – एकम, तेजम, नूर, चैतन्य, ऊर्जा, चेतना, ईश्वर, परमात्मा, अल्लाह, सेल्फ आदि... । जब वह अप्रकट चेतना प्रकट होती है तब संसार की सृष्टि होती है । वह चेतना भिन्न-भिन्न frequencies-फ्रीक्वेंसीज (विधुत और चुम्बकीय तरंगों तथा कंपनों) पर विभिन्न आकृतियों में अभाषित हो रही है ।

एक ही चेतना अलग-अलग शरीरों के साथ जुड़कर अहंकार (अलग मैं) की सहायता से व्यक्ति विशेष बन जाती है और अपनी असली पहचान भूलकर जीवन ज़ीने लगती है । वास्तव में यह संसार और इसके क्रियाकलाप उसी चेतना की लीला है । अलग-अलग शरीरों के माध्यम से वही स्वयं को भूलकर, संसार चलाने की, और वापस स्वयं को जानने की लीला खेल रही है ।

इंसान का अंतिम उद्देश्य अपनी (चेतना की) असली पहचान पाना है । जो इंसान चेतना और जीवन को अनुभव द्वारा जान गया, उसके लिए शरीर की मृत्यु, मृत्यु नहीं रह जाती । बस अवस्था परिवर्तन मात्र होती है, जिसके लिए वह हमेशा तैयार रहता है ।

CS CamScanner

मोहब्बत दो लोगों के बीच का नशा है,
जिसे पहले होश आ जाए वो बेवफ़ा है।

Raj Malhotra

CamScanner

Oshoislive
6h ·

ओशो कौन हैं?
- ओशो आग हैं, ऐसा आग जो तुम्हारे अंदर सारी नकारात्मक ऊर्जा को जलाकर राख कर देगी। एक ऐसा आग जिसमे जलकर ही तुम शीतल होते हो। ओशो नशा भी है और दावा भी। ओशो को जिसने सुना उसे फिर किसी और सत्संग में मन नहीं लगता। ओशो वो हथौड़ा हैं जिसका मार अगर एक बार पड़ जाए तो तुम्हारे अंदर बने सारे सामाजिक ढांचे, अंधविश्वास टूटकर चखनाचूर हो जाते हैं। ओशो को सुनने के बाद तुम समाज से खुद को काटा हुआ महसूस करोगे और ये एहसास तुम्हे अच्छा लगेगा। ओशो तुम्हे अकेला कर देंगे और इस अकेलापन का एक अलग ही मजा है। यही अकेलापन तुममें जितना गहरा होता जायेगा तुम परमात्मा के और निकट होते जाओगे।

51

9 comments • 4 shares

CS CamScanner

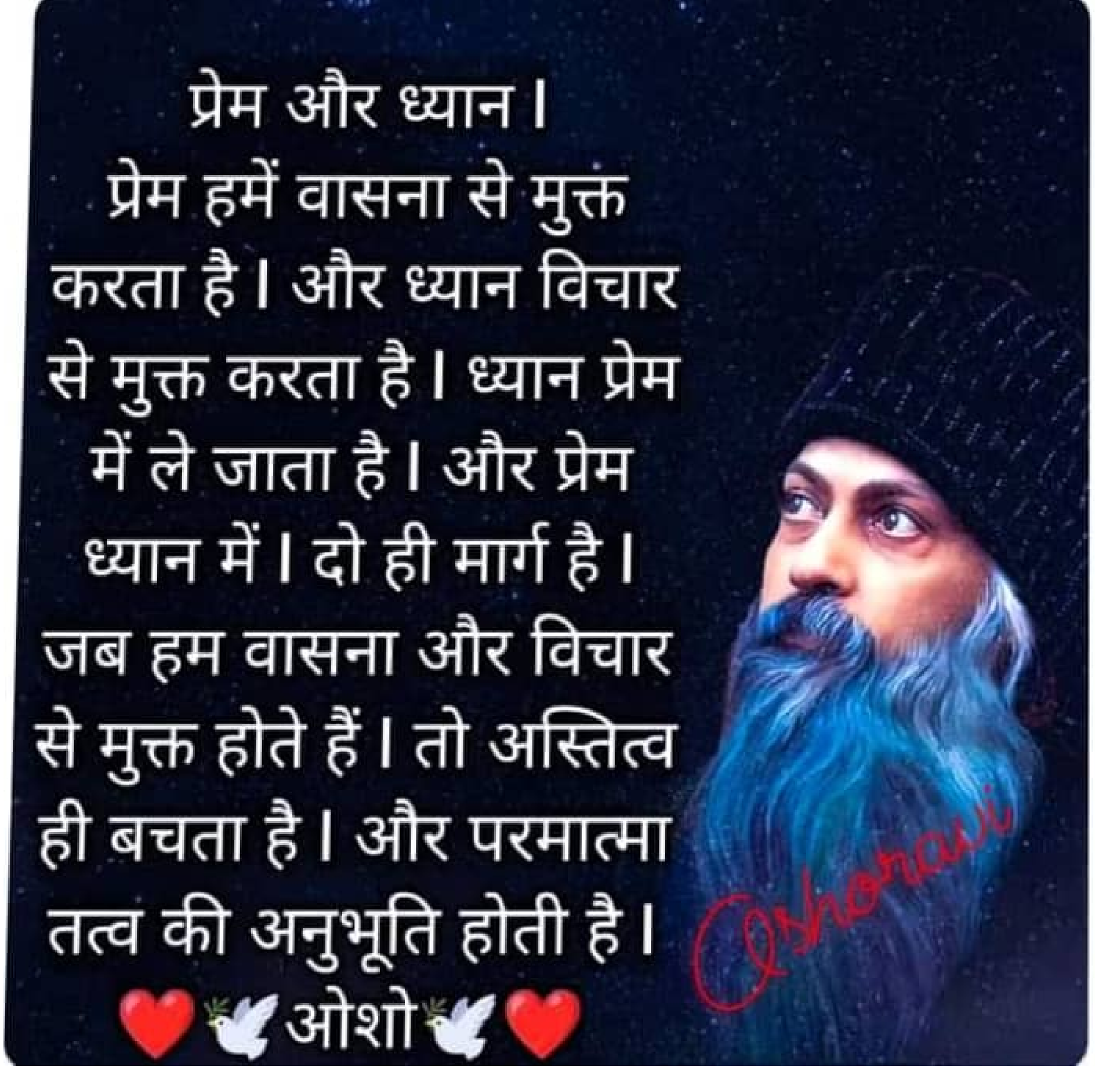
प्रेम और ध्यान।
प्रेम हमें वासना से मुक्त
करता है। और ध्यान विचार
से मुक्त करता है। ध्यान प्रेम
में ले जाता है। और प्रेम
ध्यान में। दो ही मार्ग है।
जब हम वासना और विचार
से मुक्त होते हैं। तो अस्तित्व
ही बचता है। और परमात्मा
तत्व की अनुभूति होती है।
❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

CamScanner

3:58 pm 0 KB/s 73%

facebook

वह संन्यासी कहने लगा :इससे क्या फर्क पड़ता है। बच्चा किसी का तो होगा। इससे क्या फर्क पड़ता है कि किसका है। बच्चा बच्चा है, इतना ही साफ है, इतना ही काफी है। और इससे क्या फर्क पड़ता था, तुमने एक झोपड़ा तो जला ही दिया था और एक आदमी को तो गालियाँ दे ही चुके थे। अब मैं और कहता कि मेरा नहीं है, तो तुम एक झोपड़ा शायद और जलाते, किसी एक आदमी को और गालियाँ देते। उससे फर्क क्या पड़ता था?

पर वे लोग कहने लगे :तुम हो कैसे पागल! तुम्हारी सारी इज्ज़त मिट्टी में मिल गई और तुम चुपचाप बैठे रहे जब कि बच्चा तुम्हारा नहीं था।

वह संन्यासी कहने लगा :उस इज्ज़त की अगर हम फिकर करते तो चौथे दरवाज़े पर ही रुक जाते। नहीं, उस इज्ज़त की कोई चिंता नहीं है, उसकी कोई अपेक्षा नहीं है। वह तुम्हारा जो आदर तुमने दिया था, हमारी तरफ से मांगा नहीं गया था और चाहा नहीं गया था। तुमने छीन लिया, तुम्हारा दिया हुआ आदर था, तुम्हारे हाथ की बात थी, न हमने मांगा था, न छीनते वक़्त हम रोकने के हक़दार थे। नहीं वह कहने लगा चौथे द्वार पर हम रुक जाते। गाँव के लोग पूछने लगे, कौन सा चौथा द्वार?

उसी चौथे द्वार (प्रभु - मंदिर का पहला द्वार :करुणा, दूसरा द्वार :मैत्री, तीसरा द्वार :मुदिता) की मैं आपसे बात कर रहा हूं। उस चौथे द्वार पर लिखा है :उपेक्षा, इनडिफरेंस। जीवन में जो व्यर्थ है उसके प्रति उपेक्षा। उस संन्यासी ने अद्भुत उपेक्षा प्रकट की। नहीं, जरा भी चिंता न ली इस बात की कि लोग क्या कहेंगे, पब्लिक ओपिनियन, जनमत क्या कहेगा!

जो आदमी जनमत के संबंध में सोचता रहता है, वह कभी परमात्मा तक नहीं पहुंचता है, इसे स्मरण रख लेना। लोग क्या कहेंगे? इससे ज्यादा कमजोर, इस बात को सोचने से ज्यादा नपुंसक कोई वृत्ति नहीं है कि लोग क्या कहेंगे। जो लोग भी इस चिंता में पड़ जाते हैं कि लोग क्या कहेंगे, वे भीड़ के जो असत्य हैं उन्ही असत्यों में जीते हैं और उन्हीं असत्यों में मर जाते हैं, वे कभी सत्य की खोज नहीं कर पाते हैं।

🌹💐ओशो "साधना पथ" 🌺🍁

CamScanner

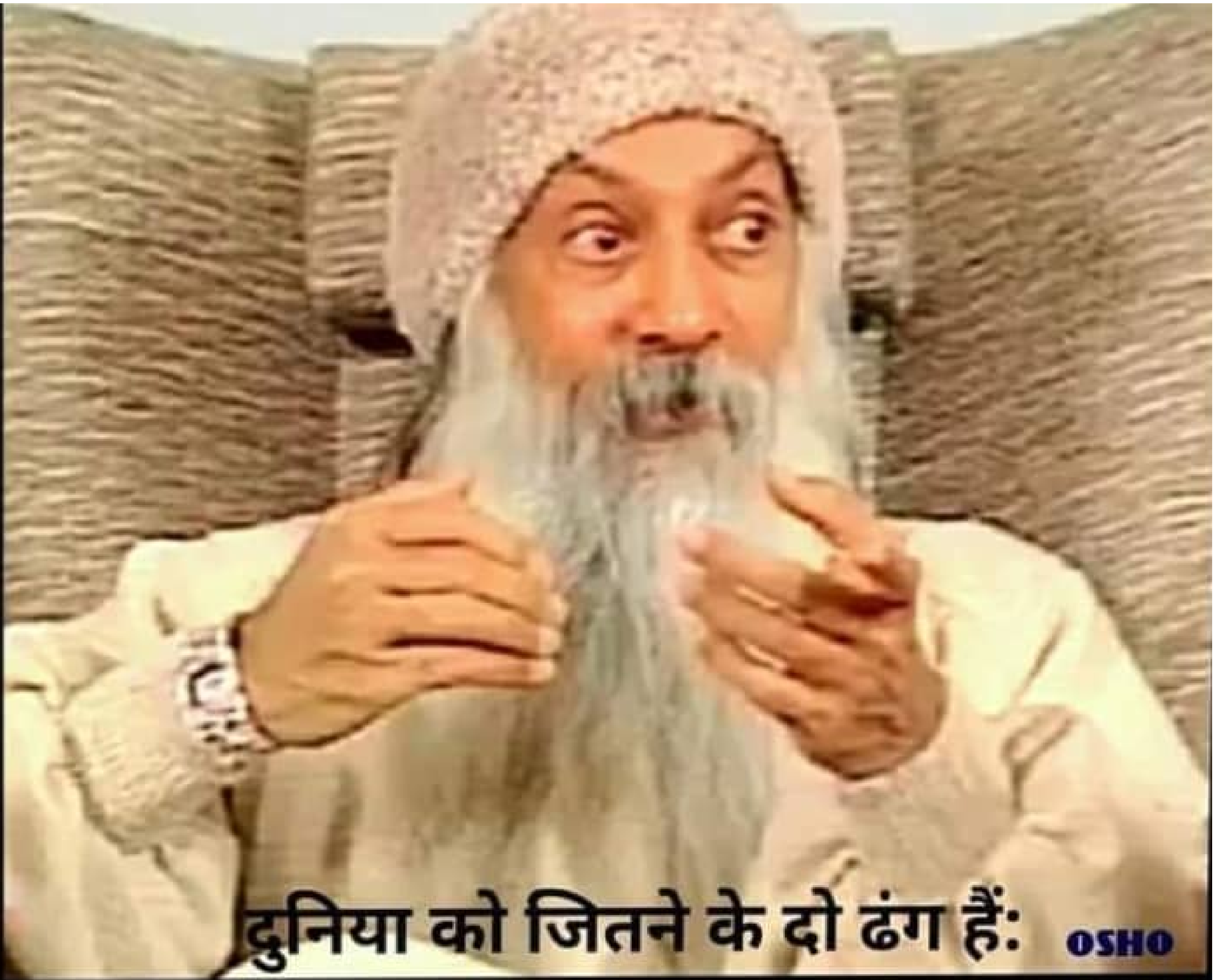

एक सिकंदर का ढंग है और एक बुद्ध का।
सिकंदर दुनिया जितने चलता है और हारा हुआ मरता
है, खाली हाथ जाता है।और बुद्ध दुनिया नहीं जीतते,
अपने भीतर विराजमान परम सत्य को जीतते हैं--
और उसको जीतते ही सारी दुनिया जीत ली जाती हैं।

- आचार्य रजनीश

CS CamScanner

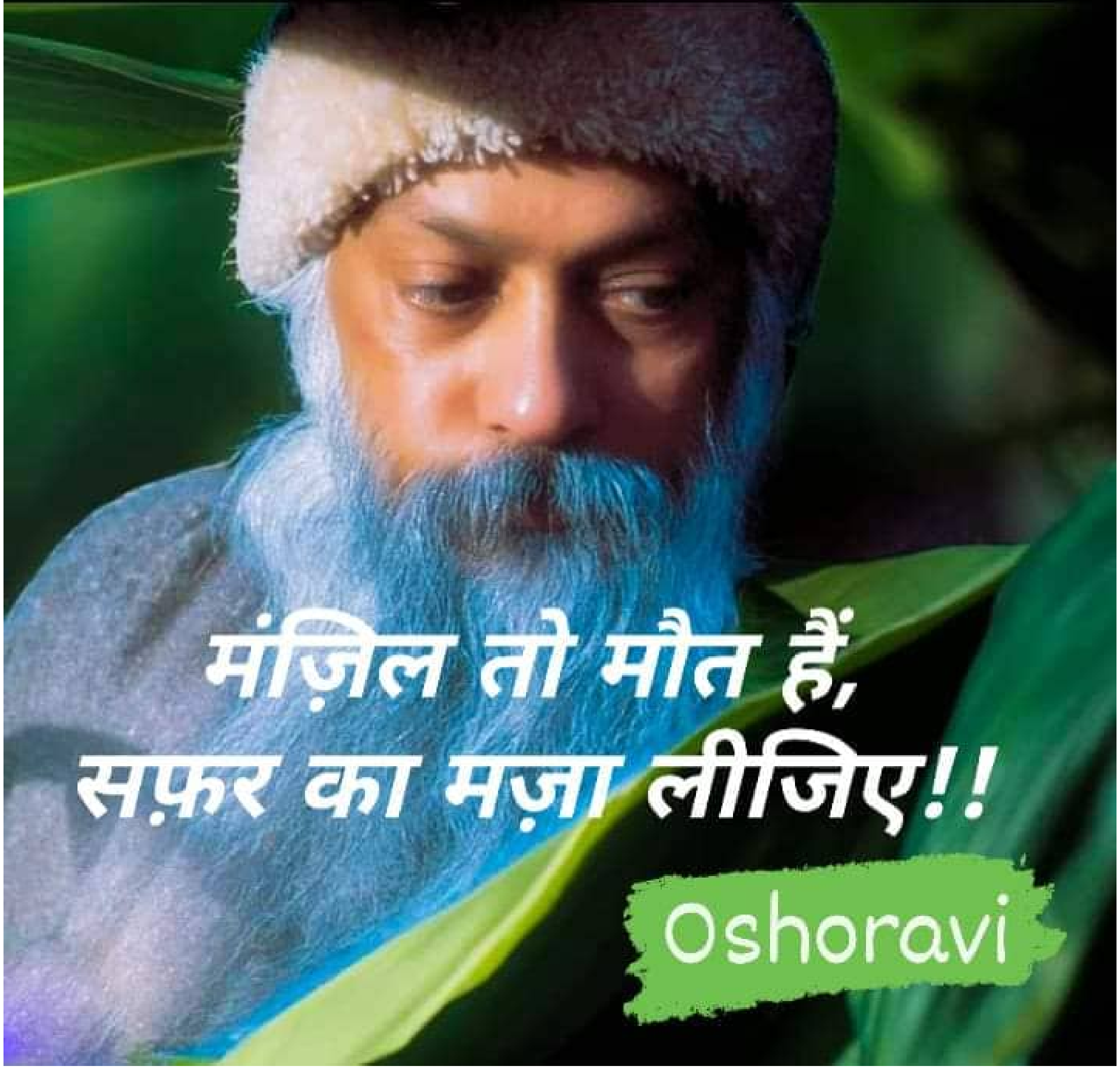

CamScanner

3:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G 74%

एक बार एक अजनबी किसी के घर गया। वह अंदर गया और मेहमान कक्ष में बैठ गया। वह
खाली हाथ आया था तो उसने सोचा कि कुछ उपहार देना अच्छा रहेगा।

उसने वहाँ टंगी एक पेन्टिंग उतारी
और जब घर का मालिक आया।उसने पेन्टिंग देते हुए कहा, यह मै आपके लिए लाया हूँ। घर का मालिक, जिसे पता था कि यह मेरी चीज मुझे ही भेंट दे रहा है, सन्न रह गया।

अब आप ही बताएँ कि क्या वह भेंट पा कर, जो कि पहले से ही उसका है, उस आदमी को खुश
होना चाहिए ?

मेरे ख्याल से नहीं। लेकिन यही चीज हम भगवान के साथ भी करते हैं। हम उन्हें रूपया, पैसा चढाते हैं और हर चीज जो उनकी ही बनाई है, उन्हें भेंट करते हैं। लेकिन मन
में भाव रखते है की यह चीज मै
भगवान को दे रहा हूँ और सोचते हैं कि ईश्वर खुश हो जाएगें।

मूर्ख हैं हम। हम यह नहीं समझते कि उनको इन सब चीज़ों की कोई जरुरत नहीं। अगर आप सच में उन्हें कुछ देना चाहते हैं तो अपनी श्रद्धा दीजिए, उन्हें अपने हर एक श्वांस में याद कीजिये और
विश्वास कीजिए, प्रभु जरुर खुश
होगें।

अजब हैरान हूँ भगवन्,
तुझे कैसे रिझाऊं मैं।
कोई वस्तु नहीं ऐसी,
जिसे तुझ पर चढाऊं मैं।

भगवान ने जवाब दिया : संसार की
हर वस्तु तुझे मैनें दी है। तेरे पास अपनी चीज़ सिर्फ़ तेरा अहंकार है, जो मैनें नहीं दिया। उसी को तू मेरे अरपण कर दे। तेरा जीवन सफल हो जायेगा।

CamScanner

12:47 pm 0 KB/s VoLTE 4G 84%
आध्यात्मिक मार्ग Aadh...
Admin · 3h ·

एक पहाड़ी रास्ते पर एक यात्री जाता था। एक बूढ़े आदमी को बैठा हुआ देखा उसने और कहा, गांव कितनी दूर है और मैं कितने समय में पहुंच जाऊंगा? वह बूढ़ा ऐसे बैठा रहा, जैसे उसने न सुना हो या बहरा हो।

वह यात्री हैरान हुआ। उस बूढ़े ने कुछ भी न कहा। यात्री आगे बढ़ गया, कोई बीस कदम गया होगा, वह बूढ़ा चिल्लाया--सुनो, एक घंटा लगेगा। उस आदमी ने कहा, यात्री ने कि अजीब हो, मैंने जब पूछा था, तुम चुप रहे।

उसने कहा, मैं पहले पता तो लगा लूं कि तुम चलते कितनी रफ्तार से हो। तो जब बीस कदम मैंने देख लिए कि कैसे चलते हो, तो फिर मैं समझ गया कि एक घंटा तुम्हें पहुंचने में लग जाएगा। तो मैं क्या उत्तर देता पहले, उस बूढ़े ने कहा, जब मुझे पता ही नहीं कि तुम किस रफ्तार से चलते हो। तुम्हारी रफ्तार पर निर्भर है गांव पर पहुंचना--कितनी देर में पहुंचोगे, इसलिए मैं चुप रह गया।

आपकी रफ्तार पर निर्भर है। आप कैसी तीव्रता से, कितनी गंभीरता से, कितनी सिनसेरिटि से, कितनी ईमानदारी से जीवन को बदलने की आकांक्षा से अभिप्रेरित हुए हैं, इस पर निर्भर है। एक क्षण में भी यह हो सकता है। एक जन्म में भी न हो।

समय का कोई भी सवाल नहीं है। समय का रत्तीभर भी सवाल नहीं है। क्योंकि ध्यान में समय के द्वारा हम नहीं जाते हैं। ध्यान में हम जाते हैं अपनी प्यास और तीव्रता के द्वारा।

भीतर कोई टाइम नहीं है, भीतर कोई समय नहीं है। सब समय बाहर है। तो अगर बाहर यात्रा करनी हो, तब तो समय निश्चित लगता है। लेकिन भीतर यात्रा करनी हो, प्यास अगर परिपूर्ण हो, तो समय लगता ही नहीं। बिना समय के एक पल में, एक पल में भी नहीं--भीतर पहुंचा जा सकता है।
~PPG~

3

CamScanner

जीवन का सत्य है मृत्यु। जीवन महामारी है। क्योंकि जीवन सभी को मार डालता है। इसका कोई इलाज नहीं है। तुमने देखा? सौ प्रतिसत मार डालता है। जीवन का कोई भी इलाज नहीं है। जीवन ही महामारी है।

हम मौत के बीच ही पैदा होते हैं, हम मौत के नृत्य की छाया में ही पैदा होते हैं। हम मौत की छाया में ही पलते और बड़े होते हैं। और एक दिन हम मौत की ही दुनिया में वापस लौट जाते हैं—मिट्टी मिट्टी में गिर जाती है। हम महामारी में ही जी रहे हैं। जिसे यह दिख जाता है, उसके जीवन में क्रांति का सूत्रपात होता है।

ओशो

CS CamScanner

बाइबिल सर्वाधिक अश्लील पुस्तक है। अश्लीलता पूरे ५०० पृष्ठ। और इसे पवित्र बाइबिल कहा जाता है। फिर अपवित्र क्या है उसने "सरमन आन द माउंट' अध्याय खोला और दो ही पंक्तियां पढ़ीं थीं कि रिंझाई ने कहा, रुको! भविष्य में कभी यह व्यक्ति बुद्ध बनेगा, लेकिन अभी नहीं।

क्योंकि पहली दो पंक्तियां थीं: धन्य हैं वे जो गरीब हैं, क्योंकि वे ही प्रभु के राज्य के अधिकारी होंगे। और दूसरी पंक्ति थी कि सुई के छेद से होकर एक ऊंट गुजर सकता है, लेकिन एक धनी व्यक्ति स्वर्ग के द्वार में प्रवेश नहीं कर सकता है। इसी कथन पर रिंझाई ने का कि रुक जाओ।

यदि गरीबी धन्यता है तो फिर हमें गरीबी को और फैलाना चाहिए। फिर दुनिया में जितने अधिक गरीब होंगे, दुनिया उतनी ही अधिक धन्य होगी। फिर अधिक लोग स्वर्ग में होंगे। यदि धनवान होना इतना बड़ा पाप है कि सुई के छेद से होकर ऊंट निकल सकता है, लेकिन धनवान व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता है तब तो सभी धनवानों को अपनी संपत्ति गरीबों में बांट देनी चाहिए, और गरीब और भिखारी बन जाना चाहिए।

यह धर्म नहीं है। यह शुद्ध राजनीति है। यह सिर्फ गरीबों के लिए एक सांत्वना है कि तुम चिंता न करो, यह कुछ वर्षों की ही बात है, और तुम प्रभु की सन्निधि में होगे। और यह दूसरी ओर क्रांति को रोकने का प्रयास है कि धनवानों पर क्रोध न करो, वे शाश्वत नरक में यातना भोगने ही वाले हैं।

यह शब्द याद रखो शाश्वत नरक। विश्व का कोई भी धर्म शाश्वत नरक में विश्वास नहीं करता है। तुम एक जीवन में कितने पाप कर सकते हो, ईसाइयत केवल एक ही जन्म में विश्वास करती है। आखिर तुम एक ही जीवनकाल में कितने पाप कर सकते हो? जिस क्षण तुम्हारा जन्म हुआ था, उस क्षण से लेकर अंतिम श्वास तक यदि तुम एक के बाद एक पाप ही करते ही चले जाओ, न खाओ, कुछ भी न करो, केवल पाप ही करते चले जाओ, तो भी शाश्वत दंड उचित निर्णय नहीं होगा।

CamScanner

गुरु नानक जी के पास सतसंग में एक लड़का प्रतिदिन आकर बैठ जाता था। एक दिन नानक जी ने उससे पूछा: "बेटा ! कार्तिक के महीने में सुबह इतनी जल्दी आ जाता है, क्यों ? "वह बोला: "महाराज ! क्या पता कब मौत आकर ले जाये? नानक जी: "इतनी छोटी-सी उम्र का लड़का, अभी तुझे मौत थोड़े मारेगी? अभी तो तू जवान होगा, बूढ़ा होगा, फिर मौत आयेगी। लड़का: "महाराज ! मेरी माँ चूल्हा जला रही थी। बड़ी-बड़ी लकड़ियों को आगने नहीं पकड़ा तो फिर उन्होंने मुझसे छोटी-छोटी लकड़ियाँ मँगवायी। माँ ने छोटी-छोटी लकड़ियाँ डालीं तो उन्हें आग ने जल्दी पकड़ लिया। इसी तरह हो सकता है मुझे भी छोटी उम्र में ही मृत्यु पकड़ ले। इसीलिए मैं अभी से सतसंग में आ जाता हूँ। जल्दी से परमात्मा का ध्यान करके जीवन सफल बना लो इन स्वांसो से बडा दगाबाज कोइ नही है, कहीं बाद मे पछताना ना पडे

CamScanner

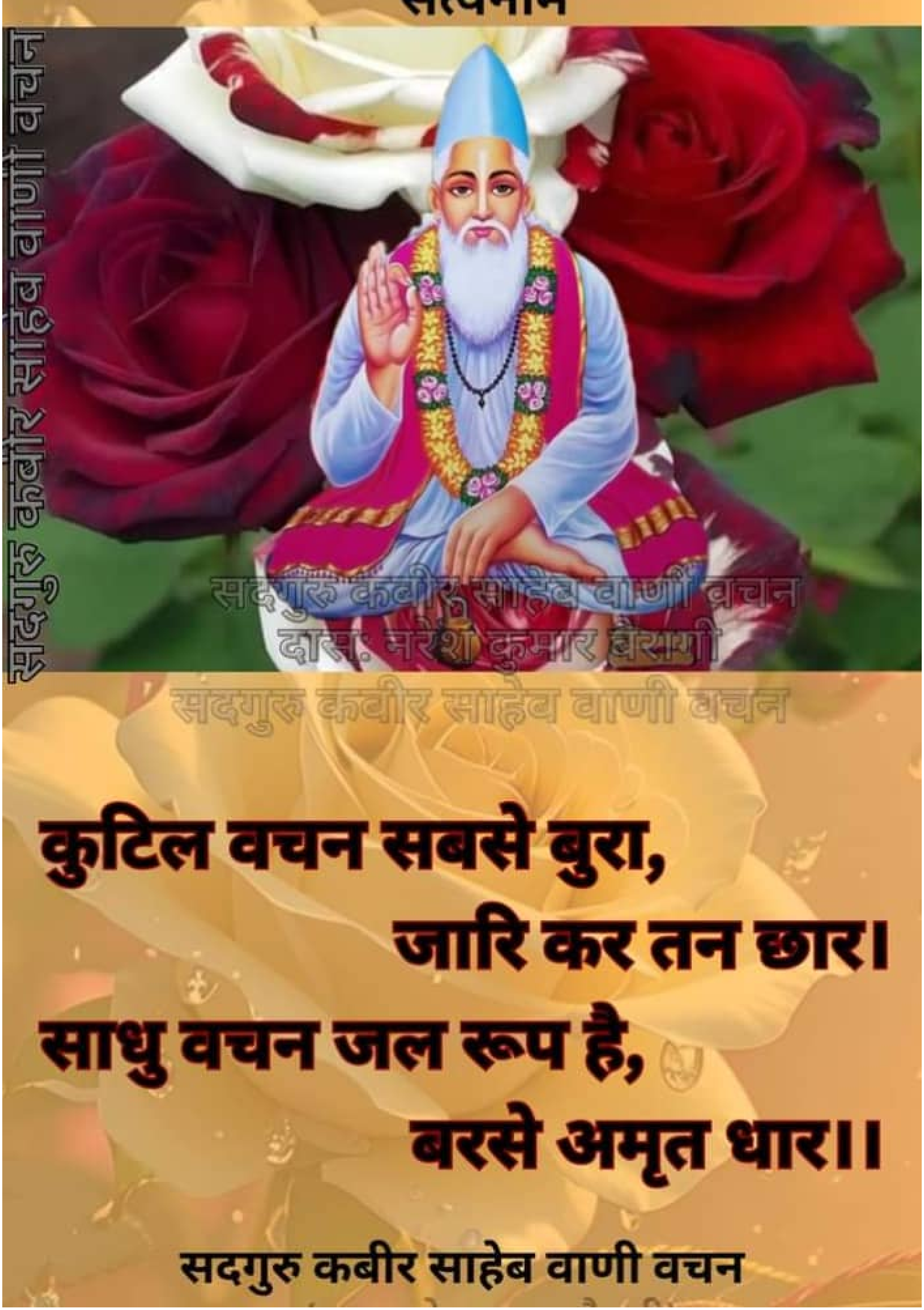
सद्‌गुरु कबीर साहेब वाणी वचन
सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
दास: नरेश कुमार बैरागी
सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
कुटिल वचन सबसे बुरा,
जारि कर तन छार।
साधु वचन जल रूप है,
बरसे अमृत धार।।
सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन

CamScanner

हिंदू जलाते हैं शरीर को। क्योंकि जब तक
शरीर जल न जाए, तब तक आत्मा शरीर के
आस-पास भटकती है। पुराने घर का मोह
थोड़ा सा पकड़े रखता है।..

ों ने इस बात को बहुत सदियों पूर्व समझ लि
को बचाना ठीक नहीं है। इसलिए हिंदुओं ने
र को नहीं रखा। क्योंकि उससे आत्मा की य
क बाधा पड़ती है। जब तक शरीर बचा रहेगा
ुत, तब तक आत्मा वहां चक्कर लगाती रहेग

ओशो

मेरा मुझमें कुछ

CamScanner

9:09 am 0 KB/s VoLTE 4G 100%

एक ईसाई मां अपने बच्चे को समझा रही थी कि बेटा, दूसरों की सेवा करना चाहिए। भगवान ने तुम्हें इसीलिए बनाया है कि तुम दूसरों की सेवा करो।

बेटा बुद्धिमान था, उस छोटे–से बच्चे ने–और छोटे बच्चे अक्सर ऐसी बातें पूछ लेते हैं कि बूढ़े जवाब न दे सकें–उस छोटे बच्चे ने कहा: यह तो मैं समझ गया कि मुझे इसलिए बनाया है कि दूसरों की सेवा करूं। दूसरों को किसलिए बनाया है? इसका भी उत्तर चाहिए।

मां जरा मुश्किल में पड़ी होगी, अब क्या कहे? अगर कहे, दूसरों को इसलिए बनाया है कि तुम सेवा करो, तो यह तो बड़ा अन्याय है, कि मुझको सेवा करने के लिए बनाया और उनको सेवा करवाने के लिए! यह तो मूल से अन्याय हो गया! अगर मां यह कहे कि दूसरों को इसलिए बनाया है कि वे तुम्हारी सेवा करें और तुम्हें इसलिए बनाया है कि तुम उनकी सेवा करो, तो बेटा कहेगा, अपनी–अपनी सब कर लें, क्यों फिजूल की झंझट खड़ी करनी!

मैं यही कह रहा हूं। इस दुनिया में बहुत हो चुकी दूसरों की सेवा, कुछ सार हाथ नहीं आया। दूसरों की सेवा के नाम पर बहुत थोथे धंधे चल चुके। सेवा के नाम पर सत्ताधिकारियों ने लोगों का शोषण किया है। जो भी सेवक बनकर आता है, आज नहीं कल सत्ताधिकारी हो जाता है। जो तुम्हारे पैर दबाने से शुरू करता है, एक दिन तुम्हारी गर्दन दबाएगा! जब तुम्हारे पैर दबाए तभी चेत जाना, अन्यथा पीछे बहुत देर हो जाती है। फिर चेतने से कुछ सार नहीं। क्यों करेगा कोई सेवा तुम्हारी? और सेवा करेगा, तो बदला मांगेगा; पुरस्कार चाहेगा।

मेरी दीक्षा यही है तुम्हें: अपने आनंद से जीयो। इतना ही पर्याप्त होगा कि तुम किसी दूसरे के आनंद में बाधा न बनो। इतना ही पर्याप्त होगा कि तुम अपने आनंद का नृत्य नाचो और अपना गीत गाओ। शायद तुम्हारे आनंद की तरंग दूसरों को भी लग जाए और वे भी आनंदित हो जाएं। शायद थोड़ी गुलाल तुमसे उड़े और वे भी लाल हो जाएं! थोड़ा रंग तुमसे छिटके और वे भी रंग जाएं। यह दूसरी बात है। तुमने सेवा की, ऐसा सोचना मत।

CamScanner

जो वैराग्य
पचहत्तर के बाद उठता,
वह कोई वैराग्य है?
वह तो यंत्रवत है।
वह तो उठता ही है।
वह तो
मौत करीब आने लगी,
उसकी छाया है।
वह कोई वैराग्य है?
वैराग्य तो वह है
जो भरी जवानी
उठता है।

CamScanner

हरि गुन गावे हरषि के,

हिरदय कपट न जाए।

आपण तो समझे नहीं,

औरहि ज्ञान सुनाए॥

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन

CamScanner

एक समझदार इंसान अपने
भीतर की कमियों को उसी
प्रकार से दूर कर लेता है, जिस
प्रकार से एक सुनार सोने की
अशुद्धियों को थोड़ा-थोड़ा करके
और इस प्रक्रिया को बार-बार
करके दूर करता है।

CamScanner

इसके पहले कि बुढ़ापा
तुम्हे दीन दुर्बल कर जाए,
अपनी ऊर्जा को ध्यान में उड़ेल देना।
इसके पहले कि मौत
तुम्हारी छाती पर बैठने लगे,
तुम समाधि को निमंत्रण दे देना।
इसके पहले कि संसार तुम्हे फेंकने लगे,
तुम सन्यास की दुनिया में प्रवेश कर जाना।

CamScanner

है। यह भूल ही गया।

जब वह वापस लौटा आश्रम कहीं से भिक्षा मांगकर, तो वह भूल ही चुका था कि रास्ते में क्या हुआ। गिरि ने देखा कि उसके चेहरे पर चोट है, तो उन्होंने पूछा, यह चोट कहां लगी? तो वह एकदम से खयाल ही नहीं आया उसे कि क्या हुआ। फिर उसे खयाल आया। उसने कहा कि आपने अच्छी याद दिलाई। रास्ते में एक आदमी ने मुझे मारा। तो गिरि ने पूछा, लेकिन तू भूल गया इतनी जल्दी! तो उसने कहा कि मैंने सोचा कि जो होना था, वह हो गया। और जो होना ही था, वह हो गया, अब उसको याद भी क्या रखना! अतीत भी निश्चिंतता से भर जाता है, भविष्य भी। लेकिन एक और बड़ी बात इस घटना में है आगे।

गिरि ने उसको कहा, लेकिन तूने अपने को रोका तो नहीं था? जब वह तुझे मार रहा था, तूने क्या किया? तो उसने कहा कि एक क्षण तो मुझे खयाल आया था कि एक मैं भी लगा दूं। फिर मैंने अपने को रोका कि जो हो रहा है, होने दो। तो गिरि ने कहा कि फिर तूने ठीक नहीं किया। फिर तूने थोड़ा रोका। जो हो रहा था, वह पूरा नहीं होने दिया। तूने थोड़ी बाधा डाली। उस आदमी के कर्म में तूने बाधा डाली, गिरि ने कहा।

उसने कहा, मैंने बाधा डाली! मैंने उसको मारा नहीं, और तो मैंने कुछ किया नहीं। क्या आप कहते हैं, मुझे मारना था! गिरि ने कहा, मैं यह कुछ नहीं कहता। मैं यह कहता हूं जो होना था, वह होने देना था। और तू वापस जा, क्योंकि तू तो निमित्त था। कोई और उसको मार रहा होगा।

और बड़े मजे की बात है कि वह संन्यासी वापस गया। वह आदमी बाजार में पिट रहा था। लौटकर वह गिरि के पैरों में पड़ गया। और उसने कहा कि यह क्या मामला है?

गिरि ने कहा कि जो तू नहीं कर पाया, वह कोई और कर रहा है। तू क्या सोचता है, तेरे बिना नाटक बंद हो जाएगा! तू निमित्त था।

बड़ी अजीब बात है यह। और सामान्य नीति के नियमों के बड़े पार चली जाती है।

ओशो; गीता दर्शन--भाग--5, अध्याय--11

CamScanner

जिनके पास केवल सोने और चांदी के ठिकरे है,
उनको मैं भीखमंगे कहता हूं।
धनी तो वह है, जिसके ह्रदय में शांति है,
आनंद है, उल्लास है, जिसके पैरो में
नृत्य है, जिसकी श्वासो में बांसुरी है।
जिसके भीतर परमात्मा ने थोडी सी झलक
दिखा दी है।
बस वही केवल धनी है सब गरीब है।

ओशो

CamScanner

कबीरा सब जग निर्धना,
धनवंता नही कोय।
धनवंता सोई जानिए,
राम नाम धन होय।।

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन

CamScanner

शरीर में मत उलझे रहो।
जीवन शरीर का नही है।
शरीर का मालूम पड़ता है, क्योकि अभी
चलता है, उठता है, बैठता है, बोलता है,
खाता है, पिता है।
मगर फिर भी याद रखो जीवन तो भीतर
छुपी आत्मा का है।
ज्यू था त्यु ठहराया
ओशो

CS CamScanner

“जिसे मै की हवा लगी, उसे फिर ना दवा लगी न दुआ।”

-बाबा बुल्लेशाह

CamScanner

उस दा मुख इक जोत है, घुंघट है संसार ।
घुंघट में ओह छुप्प गया, मुख पर आंचल डार ।।
उन को मुख दिखलाए हैं, जिन से उस की प्रीत ।
उनको ही मिलता है वोह, जो उस के हैं मीत ।।

CamScanner

मन यानी मांग। मन यानी वासना। मन यानी आकांक्षा। यह मिले, वह मिले! और मिले, और मिले! इस सबके जोड़ का नाम मन है। फिर चाहे तुम बैकुंठ मांगो, चाहे मोक्ष मांगो, फर्क नहीं पड़ता। यह वही मन है जो धन मांगता था, पद मांगता था। मांग संसार है।

ओशो

CamScanner

CamScanner

8:18 am 17 KB/s 100%

facebook

#viralreelsシ #viralreels #viralreelsfb #viralreelsfacebook #viralvideoreels #expl... See more

55 1 comment • 13 shares • 267 views

Like Comment Share

ओशो-रूमी
1h ·

CamScanner

CamScanner

9:22 pm 0 KB/s VoLTE 4G 40%

जियो और मौज करो....मस्त रहों...

जीवन के पहलू का मतलब वह समझ भी नहीं पाते। जीवन के पहलू का मतलब सुख ,दुख , काम , खुशी , क्रोध ,लोभ ,मोह , राग , द्वेष ,लालच , ईर्ष्या , कल्पना , प्रेम , करुणा , भय , निरंतर विचार ....जो जो भाव हैं ...यह सब जीवन के पहलू हैं जीवन के आयाम हैं...इन सब का जोड़ अंहकार हैं...

घंटी, यह सब जो जीवन के पहलू हैं इस में से हर पहलू....हर पल हर मानव पर आता हैं। कोई इस से बच नहीं सकता। तुम ने सुना होगा लोग अक्सर कहते है ...सुख दुख दो पहलू है। सुख दुख भी भाव ही हैं। इस तरह दुसरे भाव भी जीवन के पहलू ही हैं....वह तुम्हारे साथ साथ हैं...जैसे काम , क्रोध उस से भागना नहीं हैं...दमन भी नहीं करना हैं...बस जब भी कोई अच्छा बुरा भाव आए उसे होशपूर्वक देखना हैं....क्रोधित हो कर भी होश में रहना है...क्रोध को भी जीना है...तभी तुम उसे समझ पाओगे....

कुछ भाव सकारात्मक हैं और कुछ भाव नाकारात्मक हैं। मानव नकारात्मक भाव जैसे क्रोध , द्वेष ,लालच, ईर्ष्या...इत्यादी से मन बचना चाहता है...इन्हे अनदेखा करता हैं। इसलिए वह इन पहलूओं को जान नहीं पाता ....यानि अनुभव नही कर पाता...यह सब मानव के पास प्राकृतिक हैं और ठीक ठीक अनुपात में संतुलित हैं। संतुलन तब बिगड़ता है जब काम वासना में क्रोध द्वेष में बदल जाता हैं और क्रोध बहुत मात्रा में होकर बुद्धि का हरण कर लेता हैं।

ओशो का यह वक्तव्य कि जीवन के हर पहलू को ...हर आयाम को जियो...होशपूर्वक जियो...का मतलब यह हैं कि जानते हुये क्रोध करो....जानते हुये काम में उतरो...भय को जानते भय को अपने ऊपर हावी मत होने दो.....जानते हुये होशपूर्वक सब करो...इसे ही हर पहलू को जियो कहते हैं....

आज इतना ही.....

CamScanner

9:21 pm 0 KB/s 41%

Like Comment Share

Prem ! Prbhu Osho...
Ma Dhyaan Upasna Pawar · 13h

🌏🌾😊
यह
स्वीकार करना कि
मुझ में विकार हैं, धर्म की शुरुआत है।
यह पहली सीढ़ी है।
इस स्वीकृति के बाद ही आप
परमात्मा से जुड़ते हैं।
आपके विकार कितने होंगे ?
उसकी असीम करुणा के सामने
आपके विकारों चाहे जितने भी अधिक हों
मात्र एक छोटे से तिनके के समान हैं।
आपको पता भी नहीं चलेगा बह जाएंगे।
लेकिन छिपाया तो कुछ नहीं होगा।
परमात्मा महान है।
उसके सामने सब खोल दें,
वह सर्वज्ञ है, उससे कुछ न छिपाएं।
कह दें कि भला, बुरा जैसा भी हूँ
आपका हूँ, स्वीकार करें।
ओशो नमन
🙏

CamScanner

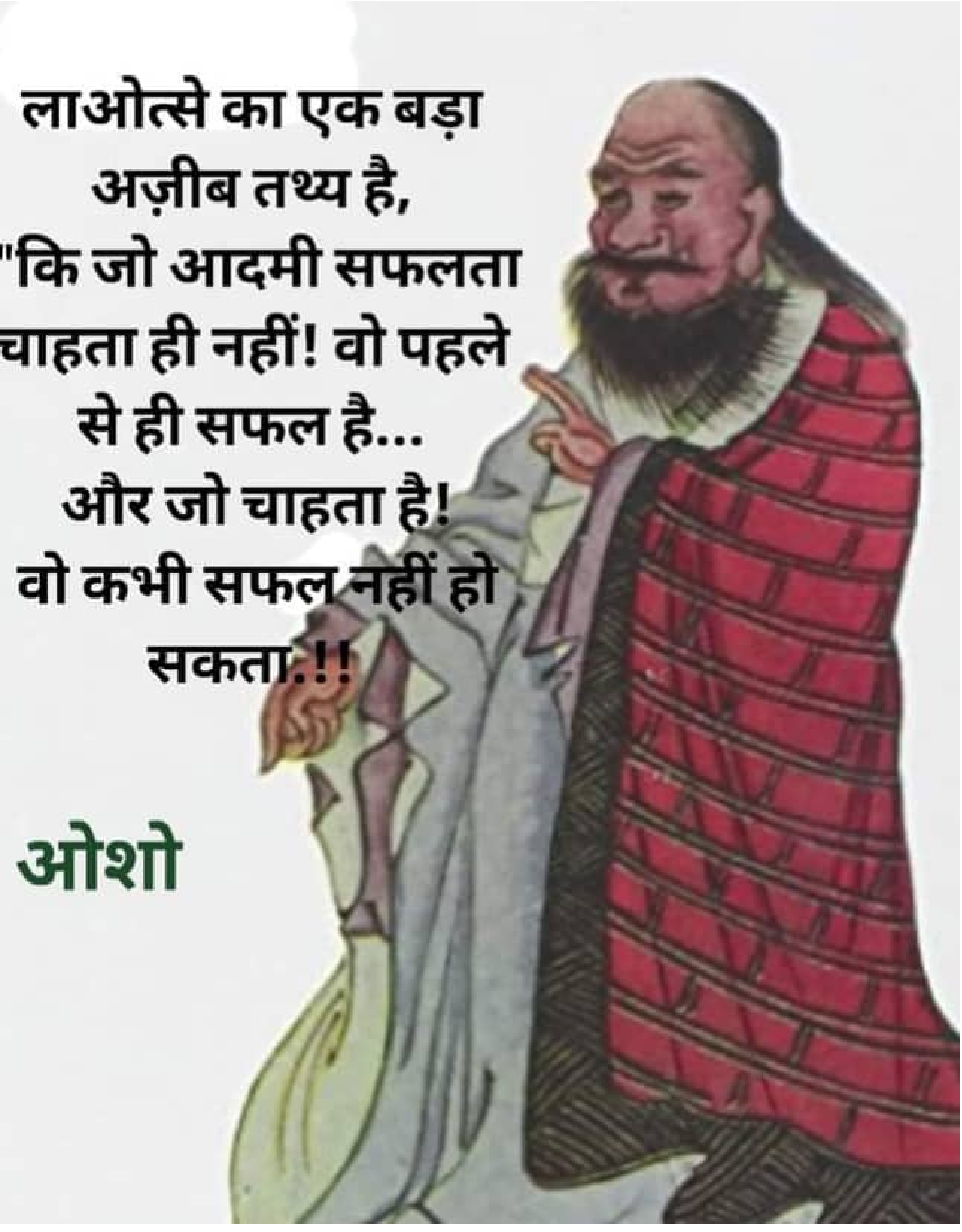
लाओत्से का एक बड़ा
अज़ीब तथ्य है,
"कि जो आदमी सफलता
चाहता ही नहीं! वो पहले
से ही सफल है...
और जो चाहता है!
वो कभी सफल नहीं हो
सकता.!!
ओशो

CamScanner

9:19 pm 3 KB/s 41%

34 3 comments • 1 share

Like Comment Share

अहोभाव

1d ·

अहोभाव

एक छोटेसे अहंकार को गिरा देने से सब हो जाता है।
इस अहंकार के कारण तुम अन्य मालूम हो रहे हो परमात्मा से। अन्य होने के कारण तुम तड़प रहे हो, परेशान हो रहे हो। अन्य होने के कारण मछली सतर के बाहर पड़ गयी है। अनन्य हो जाओ, फिर सागर में डुबकी लगा लो, फिर कोई पीड़ा नहीं है। फिर कोई संताप नहीं, कोई चिंता नहीं। फिर तुम घर लौट आए। फिर यह अस्तित्व तुम्हारा शत्रु नहीं है। फिर यह अस्तित्व तुम्हारा मित्र है - अथातो भक्ति जिज्ञासा #33

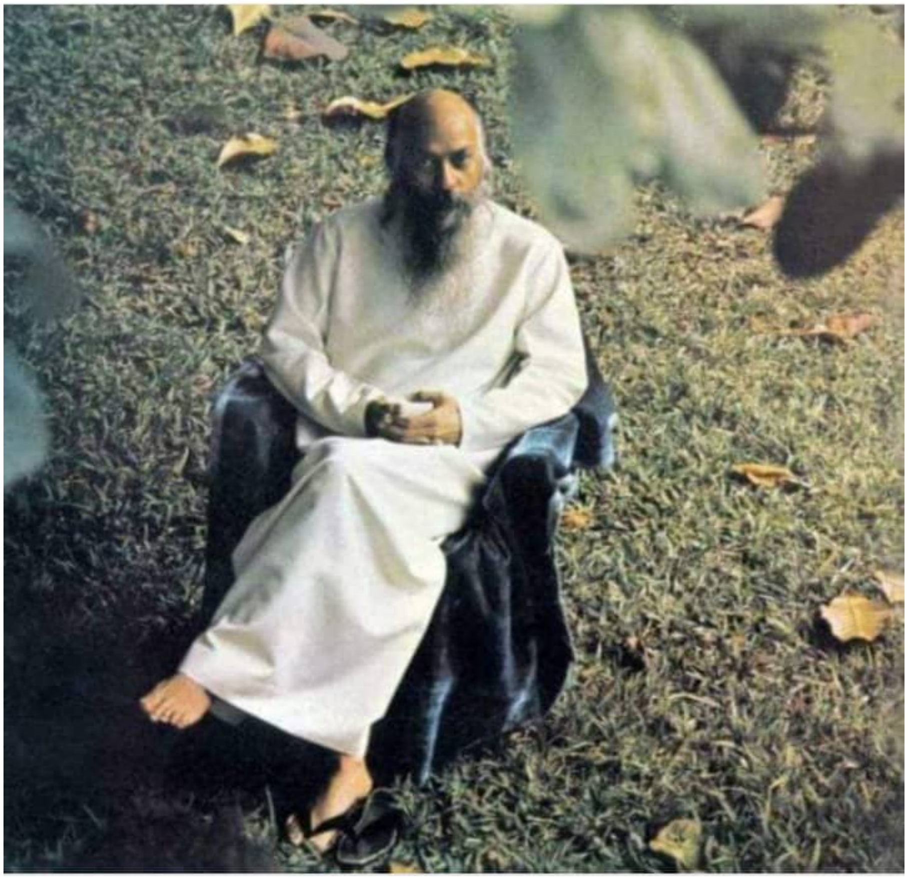

CamScanner

पांच तत्व और तीन गुण कैसे हुए-

(पांच तत्व)

1-धीरज/धैर्य से आकाश तत्व बना।

2-दया से वायु तत्व बना।

3-शील/शालीनता से अग्नि तत्व बना।

4-विचार से जल तत्व बना।

5-सत्य से पृथ्वी तत्व बना।

(तीन गुण)

पृथ्वी और जल से सतोगुण (विष्णु)

अग्नि और वायु से रजोगुण (ब्रह्मा)

आकाश से तमोगुण (शिव)

(Time and Nature)

CS CamScanner

9:07 pm 0 KB/s 42%

🌹The truth of Life 🌹

Raj Malhotra · 9h ·

"ओशो" प्रेम नमन 🙏🌹🙏

"ओशो" : कोई तुम्हें पत्थर मारता है, तो चोट खा लेते हो या खुद को बचा लेते हो? वैसे ही जो शब्द तुम्हें बुरे लगते हैं, खुद को बचा लेना, मन पर मत लेना। कुछ ही पलों में वो सब तिरोहित हो जाएगा। यदि मन पर ले लिया तो पीड़ा होगी, जैसे पत्थर से चोट लगने पर होती है। इससे एक और फायदा होगा कि, कोई प्रतिक्रिया ना देने से सामने वाले व्यक्ति का आहत होना निश्चित है कि, वार किया और विफल गया। उसके अहंकार को चोट पहुंचेगी और तुम शांत भाव से आगे निकल जाओगे।

ठीक वैसे ही परिस्थियों के साथ भी होता है, जो किसी के वश में नहीं होती। उनसे उलझकर अपनी ऊर्जा को व्यर्थ गवाना बेकार है।

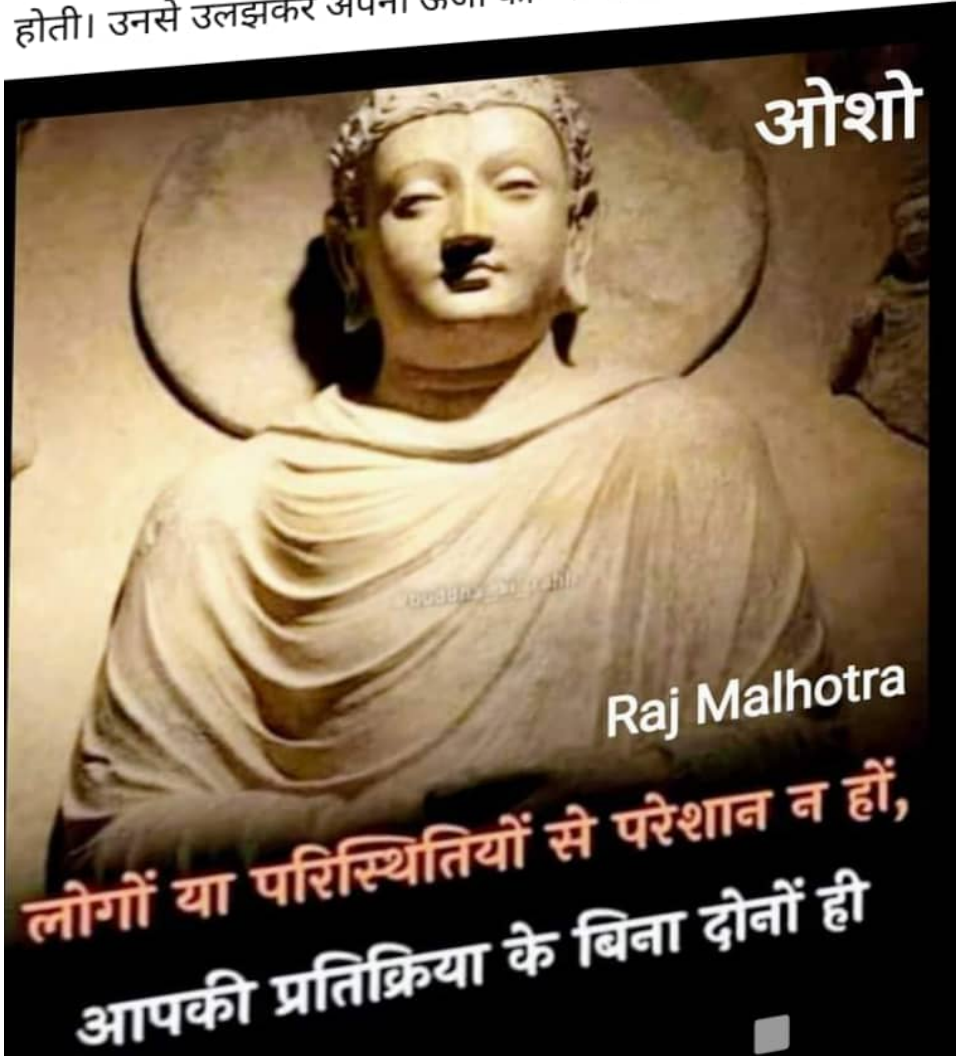

CamScanner

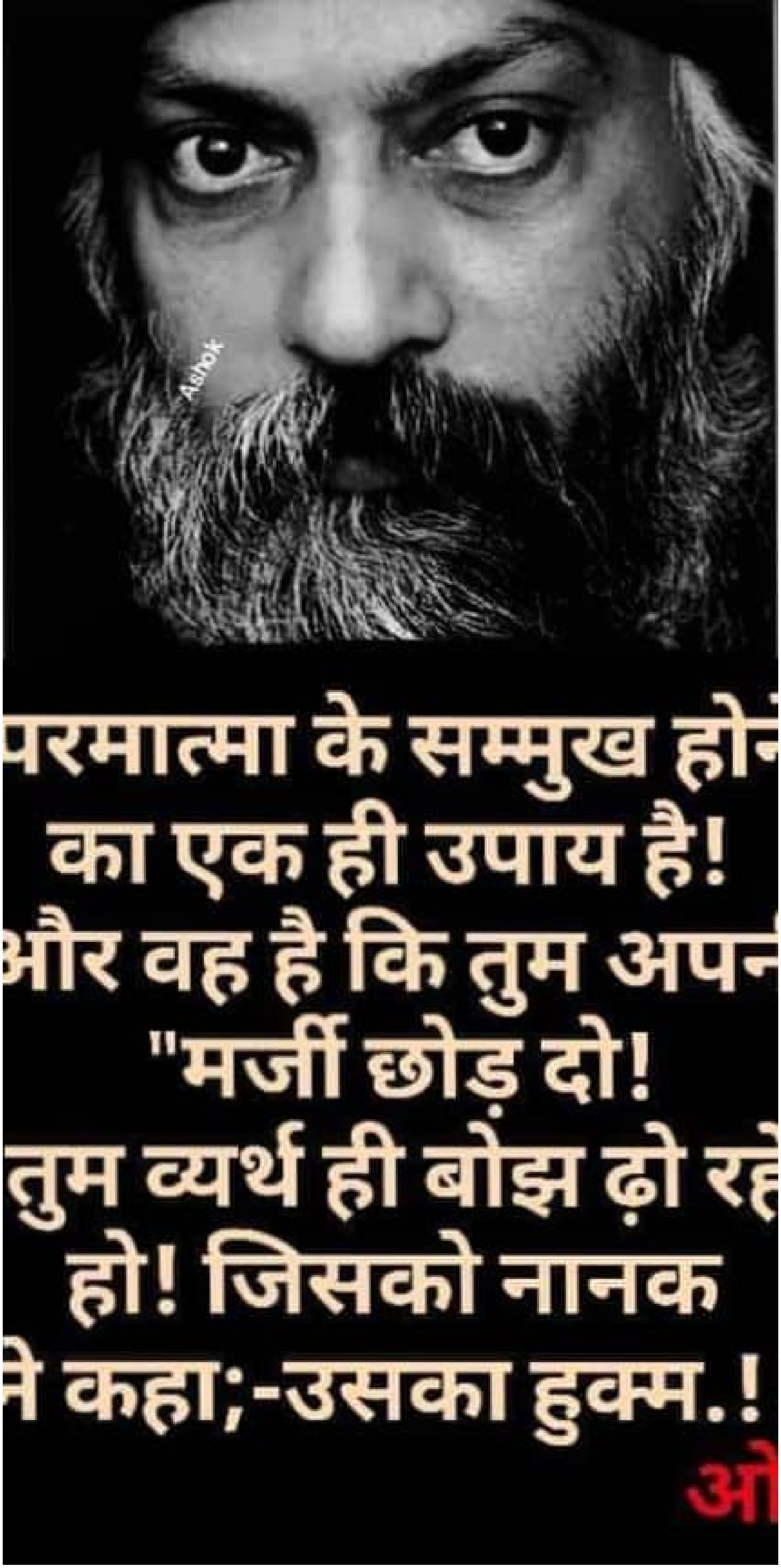
Ashok
परमात्मा के सम्मुख होन
का एक ही उपाय है!
और वह है कि तुम अपन
"मर्जी छोड़ दो!
तुम व्यर्थ ही बोझ ढ़ो रहे
हो! जिसको नानक
ने कहा;-उसका हुक्म.!
ओ

CamScanner

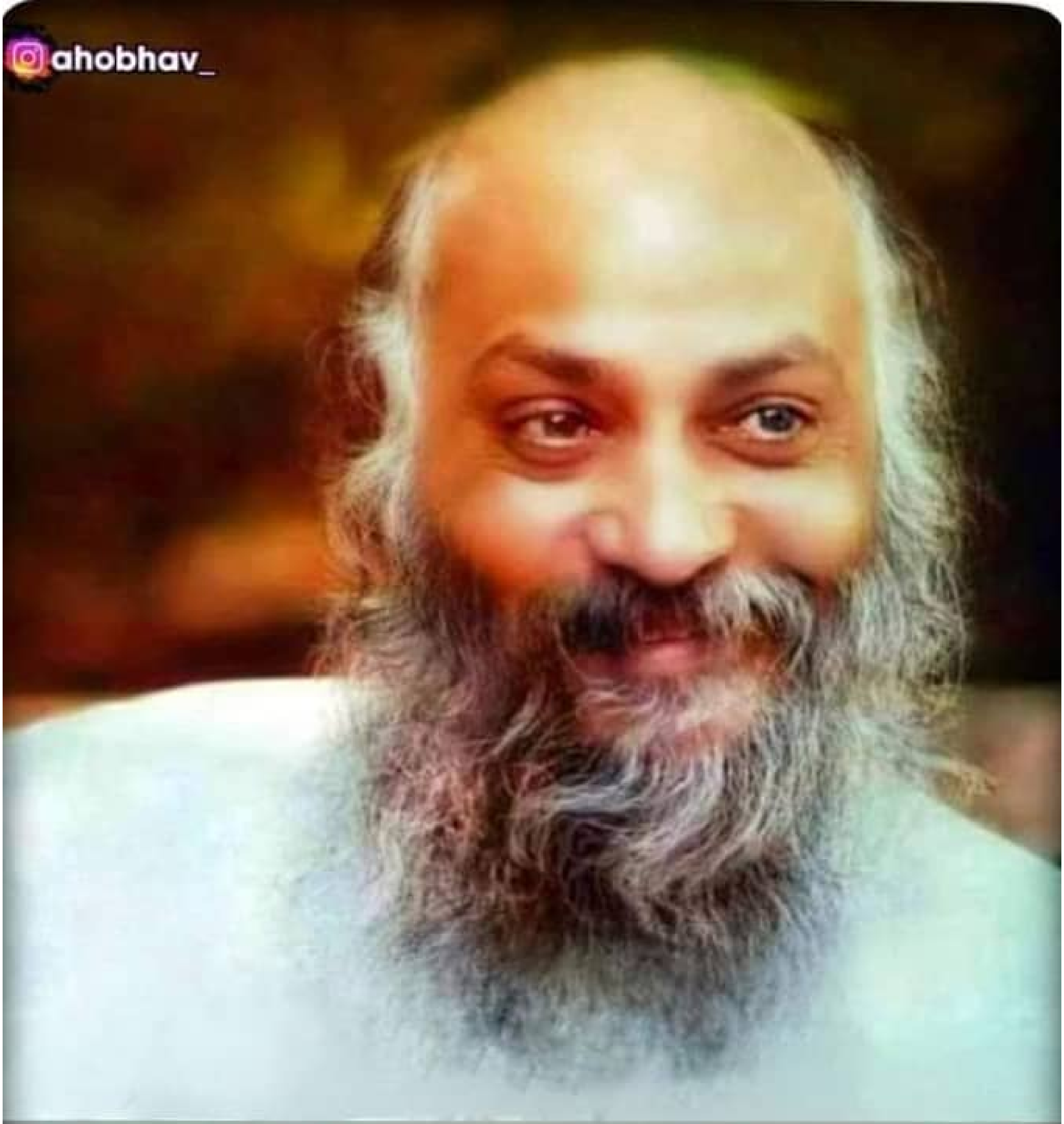

मौत क्या छिनेंगी अगर तुम शून्य होना जानते हो? अगर तुम शून्य होना जानते हो तो पूर्ण उतर आएगा तुम मे। मौत तुमसे कुछ भी न छीन सकेंगी – ओशो अहोभाव

CS CamScanner

8:56 pm 0 KB/s VoLTE 4G 44%

facebook

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य

Virendra Kumar · 3h ·

आप जानकार हैरान होंगे, अगर सत्य, शिव या सुंदर में से एक भी केंद्र आपमें जग जाए, तो दो केंद्र अपने आप जगने शुरू हो जाएंगे। और यह भी मैं आपको उल्लेख कर दूं कि तीन तरह के लोग होते हैं जगत में। एक वे लोग होते हैं, जिनके भीतर सत्य के केंद्र के विकसित होने की शीघ्र संभावना होती है। एक वे लोग होते हैं, जिनके भीतर शुभ के केंद्र के विकसित होने की शीघ्र संभावना होती है। और एक वे लोग होते हैं, जिनके भीतर सौन्दर्य के विकसित होने की शीघ्र सम्भावना होती है।

यह हो सकता है कि आपमें से सबके केंद्र अलग हों। लेकिन अगर एक केंद्र भी जग जाए, तो दो अपने आप जगने शुरू हो जाते हैं। अगर कोई व्यक्ति सौन्दर्य को ठीक से प्रेम करने लगे, तो असत्य नहीं बोल सकता। क्योंकि असत्य बोलना बड़ी असुंदर बात है, बड़ी कुरूप बात है। अगर कोई व्यक्ति सुंदर को ठीक से प्रेम करने लगे, तो अशुभ कृत्य नहीं कर सकता है, क्योंकि अशुभ कृत्य कुरूप होता है। यानी वह इसलिए चोरी नहीं कर सकता है कि चोरी करना बड़ा कुरूप कृत्य है। तो अगर उसकी सौन्दर्य के प्रति भी पूरी आकांक्षा पैदा हो जाए, तो भी बहुत कुछ हो जाएगा।

🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷

🙏💕🙏

ध्यान-सूत्र

CamScanner

8:50 pm 4 KB/s VoLTE 4G 45%

पानी पी लेता। और वह आंख बंद करके बस एक ही चिंतन में लग गया, एक ही ध्यान में कि मैं कौन हूं?

शरीर मैं नहीं हूं। उसने एक महीने तक इसका ही निरंतर ध्यान किया कि शरीर मैं नहीं हूं, शरीर मैं नहीं हूं। एक महीने तक इस एक शब्द के सिवा उसने कोई उपयोग न किया कि शरीर मैं नहीं हूं। सोते-जागते, उठते-बैठते, होश में, बेहोशी में, जानता रहा, दोहराता रहा, समझता रहा, स्मरण करता रहा–शरीर मैं नहीं हूं। एक महीने के बाद उसने आंख खोलकर अपने शरीर को देखा और पाया कि निश्चित ही शरीर मैं नहीं हूं। एक यात्रा का पड़ाव पूरा हो गया।

और उसने लिखा है कि जिस दिन मैंने पाया कि मैं शरीर नहीं हूं, फिर मैंने आंख बंद की और मैंने कहा कि अब मैं जानने चलूं कि मैं कौन हूं! एक बात तो पूरी हुई कि क्या मैं नहीं हूं। अब मैं जानूं कि मैं कौन हूं!

और जब मैंने भीतर झांका, तो मुझे छांदोग्य की बात समझ में आई कि भीतर एक अंतर-गुफा है हृदय की, जहां मैं हूं, जो मैं हूं। और जैसे-जैसे उस अंतर-गुफा में मैंने प्रवेश किया, तो मैंने पाया, आश्चर्य! इतना बड़ा आकाश भी नहीं है, जितनी बड़ी वह अंतर-गुफा है। और जैसे-जैसे मैं उसमें भीतर गया, वैसे-वैसे एक रहस्य उदघाटित हुआ कि जैसे-जैसे चला भीतर, वैसे-वैसे मैं मिटता गया। खाली, शून्य ही रह गया। एकांत ही रह गया। सिर्फ एकांत, मैं भी न रहा। मेरी मौजूदगी भी तो एकांत में बाधा है।

तो आपको एकांत का अंतिम अर्थ कहता हूं, जिससे कृष्ण का प्रयोजन है। अगर आप भी बच रहे, तो भी एकांत नहीं है। एक क्षण ऐसा आता है, जब आप भी नहीं हैं; सिर्फ चैतन्य रह जाता है, आप भी नहीं होते हैं। आपको पता भी नहीं होता कि मैं भी हूं, सिर्फ होना रह जाता है। उस शुद्ध होने में एकांत है। उस एकांत में प्रभु को ध्याया जाता है। ध्याया क्या जाता है, उस एकांत में प्रभु को जान ही लिया जाता है। उस एकांत में प्रभु से मिलन ही हो जाता है।

गीता दर्शन👣ओशो

CamScanner

8:50 pm 1 KB/s 45%

एक आंग्ल-भारतीय विचारक आबरी मेनन ने एक छोटी-सी किताब लिखी है। उसके पिता तो भारतीय थे, उसकी मां अंग्रेज थी। आबरी मेनन ने एक छोटी-सी किताब लिखी है, दि स्पेस आफ दि इनर हार्ट, अंतर-हृदय का आकाश। किताब बहुत मधुर संस्मरण से शुरू की है।

वेटिकन के पोप से मिलने गया था मेनन; तो वेटिकन के पोप के चरणों में सिर झुकाकर आशीर्वाद लेने को झुका। तभी वेटिकन के पोप ने अपने साथ खड़े हुए महासचिव को पूछा, किस जाति का व्यक्ति है यह, कौन है? किस जाति का व्यक्ति है यह, कौन है? साथ खड़े हुए सेक्रेटरी ने वेटिकन के पोप को कहा, अंग्रेज है, आंग्ल है। वेटिकन के पोप ने मेनन के चेहरे पर हाथ फेरा और कहा, नहीं। इसके चेहरे का ढंग भारतीय है।

झुका हुआ मेनन अपने मन में सोचने लगा, सच में मैं कौन हूं? उसको एक सवाल उठा कि मैं भारतीय हूं या अंग्रेज हूं? लेकिन अंग्रेज होना और भारतीय होना चमड़ी से ज्यादा गहरी बात नहीं है। भीतर मैं कौन हूं? चमड़ी तो मेरी दोनों की है। अंग्रेज की भी है थोड़ी चमड़ी मेरे पास और एक भारतीय की भी चमड़ी है थोड़ी मेरे पास। खून भी मेरे पास भारतीय का है और अंग्रेज का भी है। फिर मैं कौन हूं? क्या यही चमड़ी और खून का जोड़ मैं हूं? या मैं कुछ और भी हूं? वह झुका हुआ मेनन नीचे सोचने लगा।

उठकर खड़ा हुआ, वेटिकन के पोप ने फिर पूछा कि कहो, कौन हो तुम? तो उसके मन में हुआ कि वेटिकन के पोप के संबंध में कहा जाता है कि वह इनफालिबल है, वह कभी भूल नहीं करता। ईसाई मानते हैं कि उनका जो बड़ा पुरोहित है, वह कभी भूल नहीं करता। मधुर मान्यता है। मेनन को खयाल आया कि अगर मैं कहूं कि आंग्ल-भारतीय हूं, आधा भारतीय आधा अंग्रेज हूं, तो कहीं पोप को दुख न हो। वह यह न सोचे कि मैंने उसे फालिबल सिद्ध किया, मैंने कहा कि वह भी गलती कर सकता है। तो मेनन ने कहा कि हां, आप ठीक कहते हैं महानुभाव! मैं भारतीय हूं।

पोप बहुत खुश हुआ। मेनन ने अपनी किताब में लिखा है कि इसलिए

CamScanner

इस देश में विज्ञान सिर्फ तुमने
स्कूल और कालेज में पढ़ा है,
सिर्फ ऊपर-ऊपर है।
विज्ञान भी पढ़ रहे हैं,
हाथ में हनुमान जी का
ताबीज भी बांधे हुए बैठे हैं।
विज्ञान की परीक्षा देने जाते हैं,
पहले हनुमान जी के मंदिर में
नारियल फोड़ आते हैं!
वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा नहीं हो पाया है।
उधार है हमारा सब विज्ञान;
पढ़-लिख लेते हैं, समझ लेते हैं,
मगर भीतर, भीतर हम वही के वही हैं।
भीतर हमारे विश्वास के
आधार वही के वही हैं।

फिर अमरित की बूंद पडी, ओशो

CamScanner

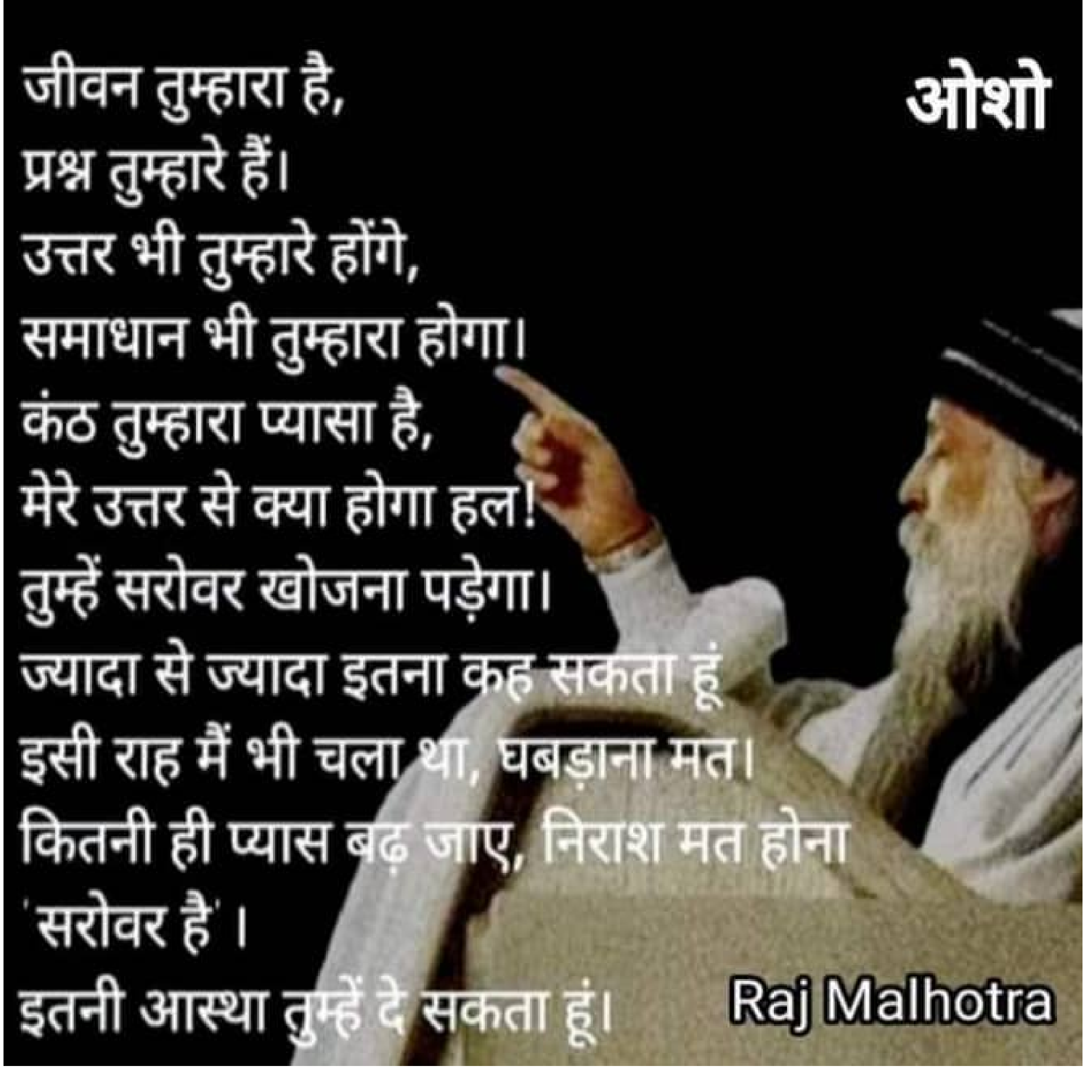

CS CamScanner

8:31 pm 0 KB/s VoLTE 4G 47%
facebook

ओशो का हिन्दी साहित्य
Rahul Kumar Ojha · 3h ·

बोध कथा

एक फकीर ट्रेन में दाखिल हुआ, एक खाली सीट पर बैठ गया और गाड़ी में सभी लोग उसे घूरकर देखने लगे। उसने अपना बैग सिर पर उठा रखा था. बैठने के बाद भी उसने इसे अपने पैरों के नीचे या सामान रैक के ऊपर नहीं रखा।

थोड़ी देर बाद एक सहयात्री ने कहा, सिर पर बैग लेकर बैठने की जरूरत नहीं है। इसे नीचे रख दे।

फकीर ने कहा, मैंने तो सिर्फ अपना ट्रेन का टिकट खरीदा है। बैग का नाही. मुझे लगता है कि रेल पर इतना वजन डालना गलत है।

ये जवाब सुनकर कोच में मौजूद सभी यात्री हंसने लगे. उनमें से एक ने मुस्कुराहट दबाते हुए कहा, "अंकल, अरे, आप बैग को सिर पर उठाकर पैरों के नीचे रखें या रैक पर रखें, वजन तो पटरी पर ही पड़ेगा।" आपके टिकट में उतने वजन का टिकट है.तो फार आप इसे अपने सिर पर क्यों रखते हैं?

फकीर मुस्कुराया और बोला, अरे, क्या तुम्हें पता है? तो फिर आप सब जीवन के सफर में इतना बोझ अपने सिर पर क्यों लेकर चल रहे हैं?

ओशो

CamScanner

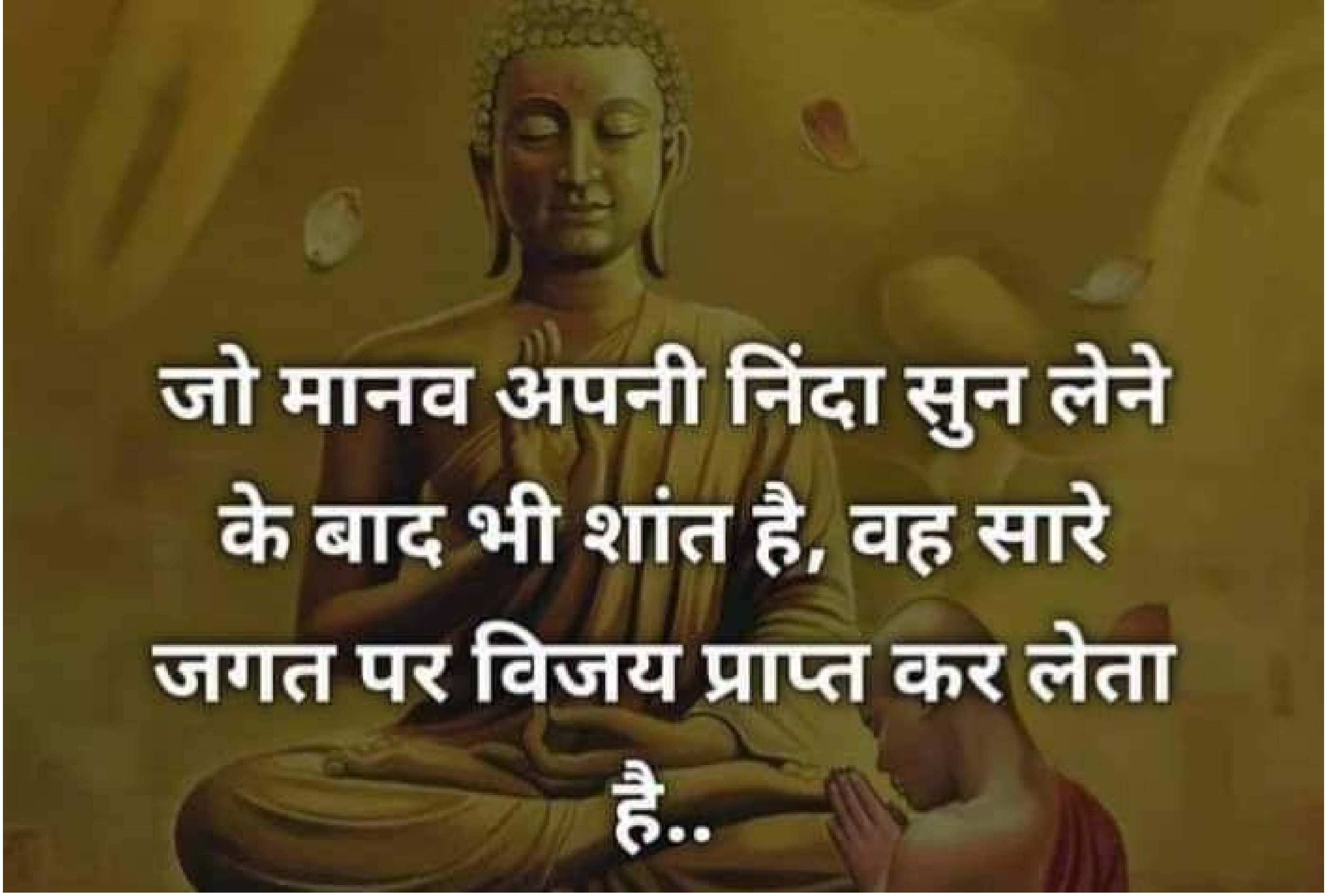

CamScanner

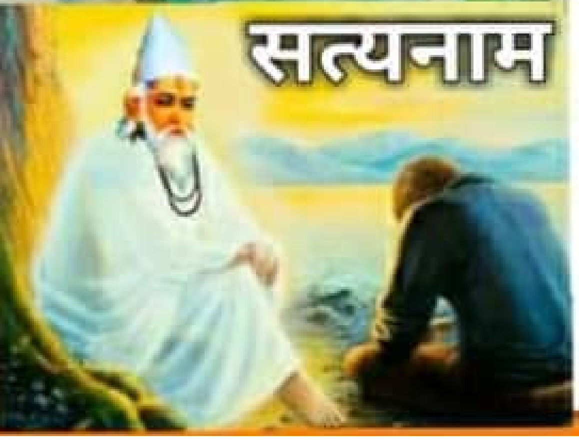

मोको कहां ढूंढ़ो रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।

ना मैं बकरी ना मैं भेड़ी, ना मैं छुरी गंड़ास में।।

नहिं खाल में नहिं पोंछ में, ना हड्डी ना मांस में।

ना मैं देवल ना मैं मस्जिद, ना काबे कैलास में।।

ना तो कौनो क्रिया कर्म में, नहिं जोग बैराग में।

खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।।

मैं तो रहौं सहर के बाहर, मेरी पुरी मवास में।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब सांसों की सांस में।।

संत कबीर साहेब

CamScanner

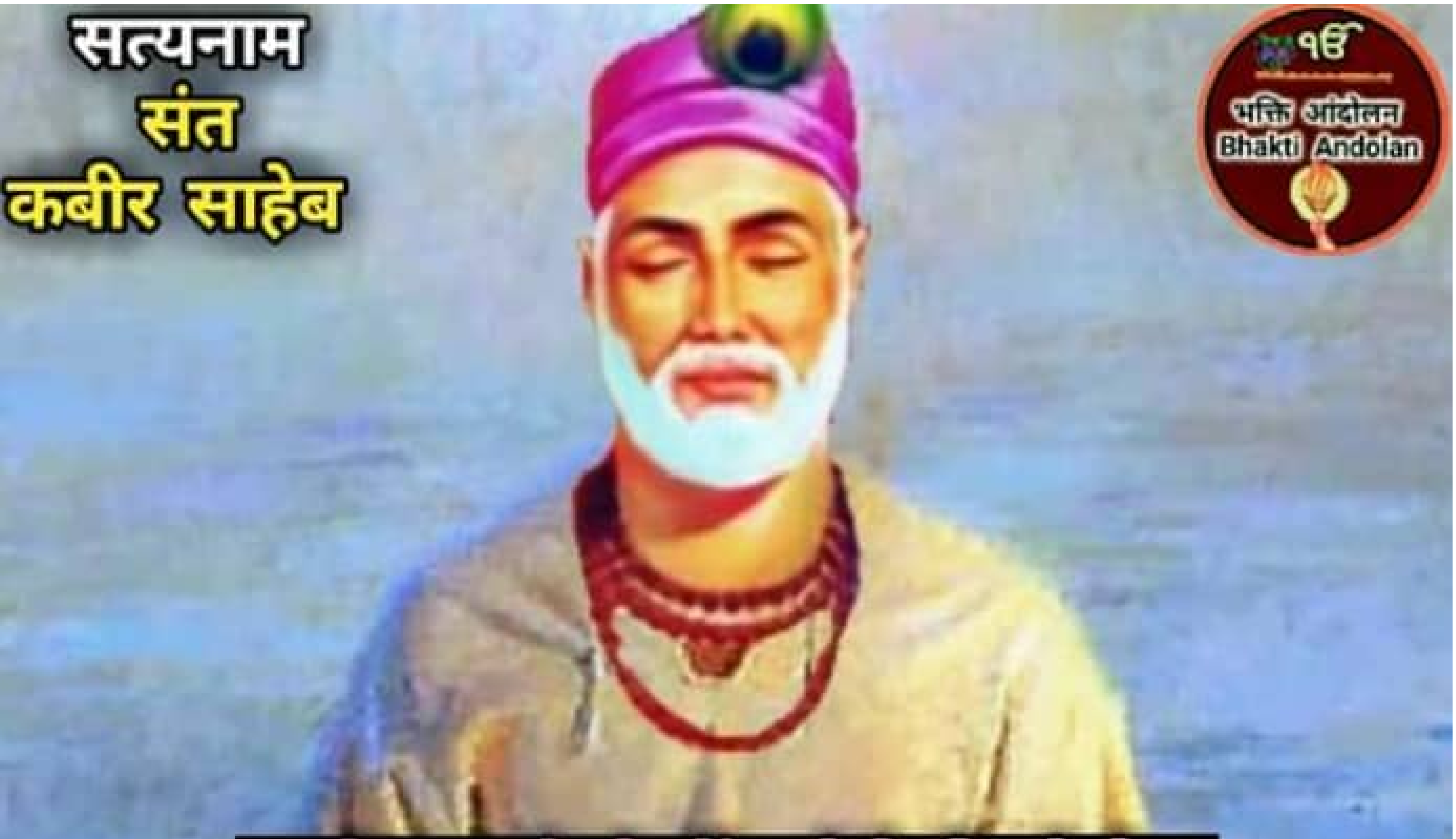

उमरिया धोखे में खोये दियो रे ।

पांच बरस का भोला-भाला बीस में जवान भयो ।
तीस बरस में माया के कारण, देश विदेश गयो ।
चालिस बरस अन्त अब लागे, बाढ़े मोह गयो ।
धन धाम पुत्र के कारण, निस दिन सोच भयो ।।
बरस पचास कमर भई टेढ़ी, सोचत खाट परयो ।
लड़का बहुरी बोलन लागे, बूढ़ा मर न गयो ।।
बरस साठ-सत्तर के भीतर, केश सफेद भयो ।
वात पित कफ घेर लियो है, नैनन निर बहो ।
न हरि भक्ति न साधो की संगत, न शुभ कर्म कियो ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, चोला छुट गयो ।।

CS CamScanner

अहंकार में बिलकुल बहाव
नहीं होता है,
प्रेम में बहाव होता है..!!
इसलिए जब तक अहंकार
होता है,
तब तक प्रेम पैदा नहीं
होता..!!

CamScanner

10:15 pm 0 KB/s VoLTE 4G 33%
58 49

शरीर जहां चाहता है, आपकी चेतना वहां चली जाती है। आप जहां चाहते हैं, वहां नहीं जाती। क्योंकि आपने उसका कोई अभ्यास नहीं किया। अभी भूख लगती है तो चेतना तत्काल पेट में चली जाती है। वह आपसे आज्ञा नहीं लेती कि मैं पेट की तरफ जाऊं। वह चली जाती है। आप कुछ कर नहीं पाते। क्योंकि आपने कभी यह अब तक सोचा ही नहीं कि चेतना का प्रवाह, मेरी इंटेंशन, मेरी अभीप्सा पर निर्भर है। इसका थोड़ा प्रयोग करें।

रात बिस्तर पर पड़े हैं, सारी चेतना को पैर के अंगूठे में ले जायें। सब तरफ से भूल जायें, सिर्फ अंगूठे रह जायें। ले जायें, भीतर... भीतर... भीतर... अंगूठे में ठहर जायें जाकर। जैसे आपकी आत्मा अंगूठे में ठहर गयी। बहुत लाभ होगा, नींद तत्काल आ जायेगी। क्योंकि मस्तिष्क से अंगूठा बहुत दूर है। जब चेतना सारी वहां पहुंच जाती है, मस्तिष्क खाली हो जाये, तो आप गहरी नींद में गिर जायेंगे।

चेतना को थोड़ा हटाना सीखें। आंख बंद कर लें। कहीं भी एक बिंदु पर चेतना को स्थिर करने की कोशिश करें, आप पायेंगे, जिस बिंदु पर चेतना को ले जायेंगे, वहीं प्रकाश पैदा हो जायेगा। आंख बंद कर लें, सोचें कि सारी चेतना हृदय पर आ गयी, इंटेंशनल, अभिप्राय से सारी चेतना को हृदय पर ले आये, हृदय की धड़कन ही केंद्र बन गयी। आप अचानक पायेंगे, हृदय के पास धीमा—सा प्रकाश होना शुरू हो गया।

चेतना को बदलने के ये प्रयोग करते रहें। कभी भी कर सकते हैं, इसमें कोई अड़चन नहीं है। कुर्सी पर खाली बैठे हैं, ट्रेन में, बस में, कार में बिलकुल कर सकते हैं। कहीं कोई अलग समय निकालने की जरूरत नहीं है। धीरे— धीरे आपको लगेगा, आपकी मास्टरी हो गयी। यह मास्टरी वैसी है जैसे कि कोई कार की ड्राइविंग सीखता है। ऐसे ही चेतना की ड्राइविंग सीखनी पड़ती है।

एक आदमी साइकिल चलाना सीखता है। आप भी साइकिल चलाना जानते हैं, लेकिन अब तक कोई बता नहीं सका कि साइकिल कैसे चलायी जाती है। अभी तक तो नहीं बता सका कोई। चलाकर बता सकते है आप, लेकिन कैसे चलाई जाती है, क्या है ट्रिक, क्या है

CS CamScanner

जीवन के सात सच्चे मंत्र !

1. दर्पण - झूठ नहीं बोलने देगा!
2. ज्ञान - भयभीत नहीं होने देगा!
3. अध्यात्म - मोह नहीं करने देगा!
4. सत्य - कमजोर नहीं करने देगा!
5. प्रेम - ईर्ष्या नहीं करने देगा!
6. विश्वास - दुःखी नहीं करने देगा!
7. कर्म - असफल नहीं होने देगा!

CamScanner

जितने जल्दी यह बात समझ में आ जाए
उतना शुभ है कि यह कुछ भी हमारा नही है।
यह पड़ाव है, मंजिल नही। रात भर विश्राम
कर लो, लेकिन सुबह चल पड़ना है।
खोजना है, तलाशना है। जीवन केवल
उनका है जिनकी अंतरात्मा में अन्वेषण है।
अस्तित्व केवल उनका है जो सत्य की निरंतर
शोध में लगे है, जिन्होंने एक क्षण को भी यह
बात बुलाई नही है कि हम कही से आए है
और हमें कही जाना है।

ओशो

CS CamScanner

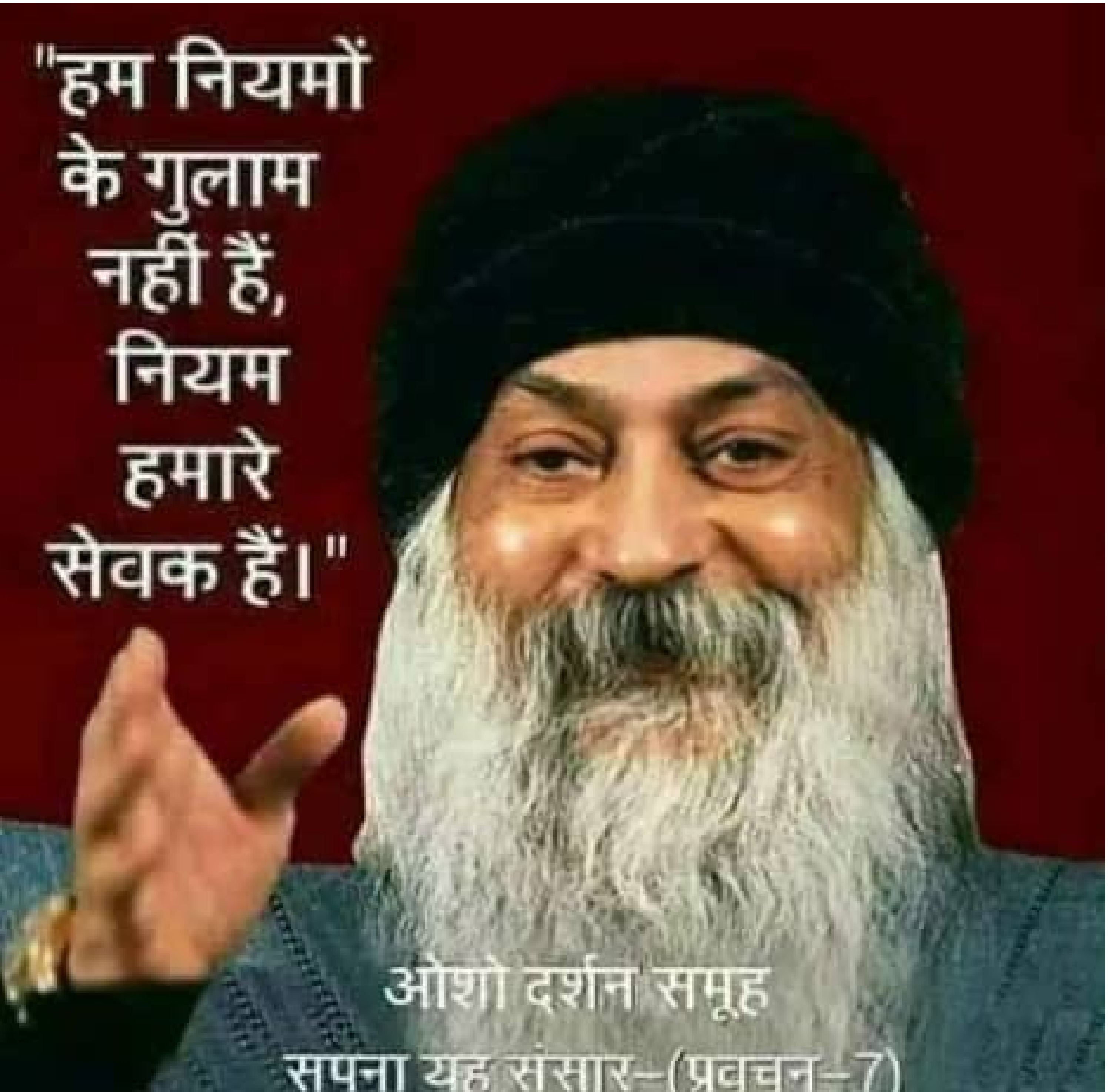

CamScanner

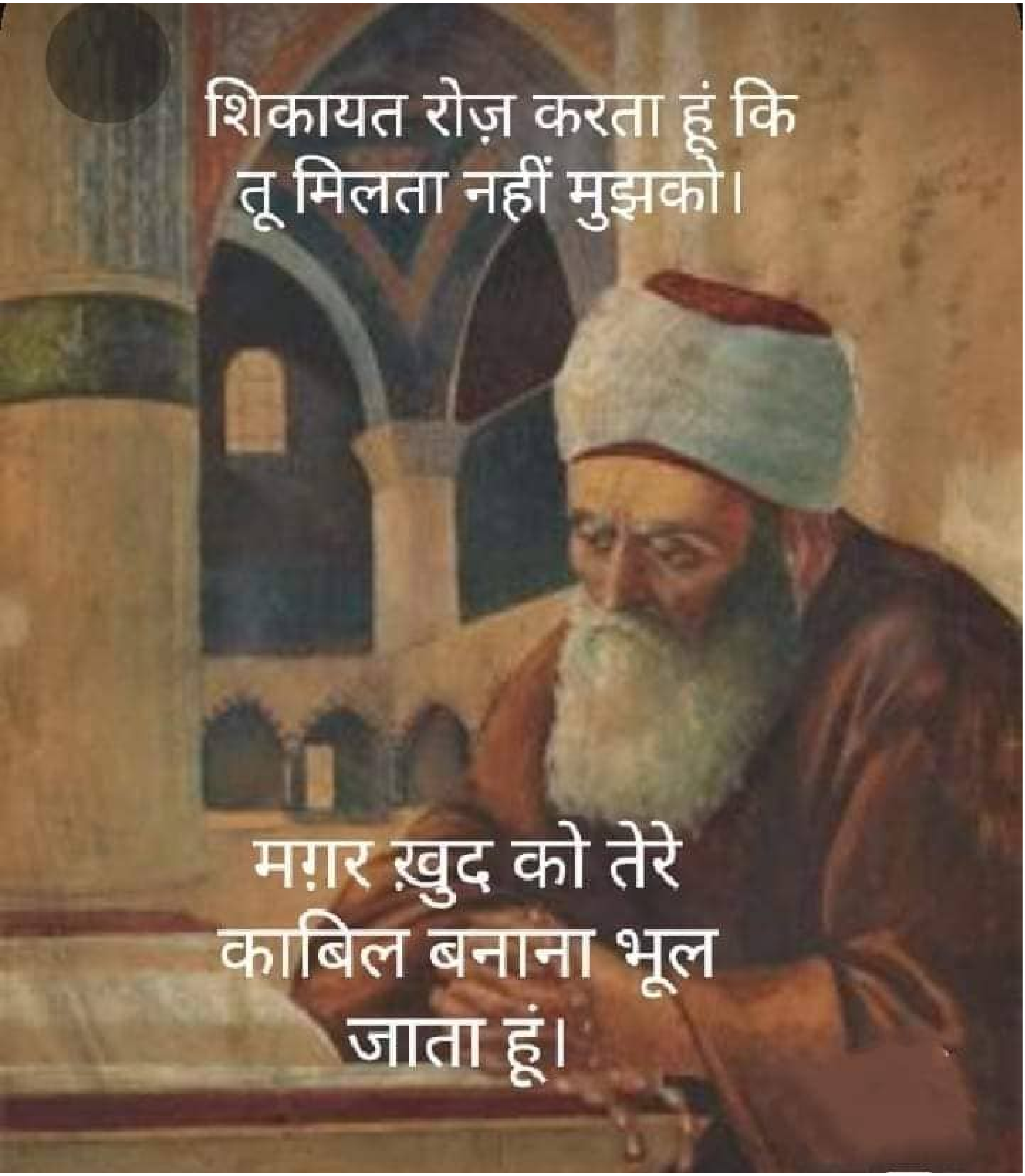

CamScanner

संत सहजो बाई जी कहती है की इस संसार मे चार प्रकार के गुरु होते है सब के अपने अपने अंग है जो गुरु जहाँ तक का पहुंच वाला है वह अपने शिष्य को भी उस मंजिल तक पंहुचा देता है। पारस गुरु पारस पत्थर के समान होता है जो लोहे रुपी शिष्य को सोना बना देता है। दीपक गुरु दीपक के समान होता है जो शिष्य के अज्ञान रुपी अंधकार को दूर कर ज्ञान रुपी प्रकाश प्रदान करता है। मलायगिरी गुरु मल्यागिरी पर्वत के समान होता है जो साधरण वृक्ष के समान शिष्य को मूल्यवान चन्दन का वृक्ष बना देता है। और भृंगी गुरु भृंगी कीड़े के समान होता है जो कीट रूपी शिष्य को अपने जैसा भृंगी ही बना देता है अर्थात जैसा गुरु होता है वैसे ही चेले को भी बना देता है।

CamScanner

10:32 pm 0 KB/s VoLTE 4G 31%
58 49

एक शहर में एक बहुत ही सुंदर युवती अचानक कहीं से आ गई। कोई नहीं जानता था कि वह कहाँ से आई है, उसका ठिकाना पूरी तरह से अज्ञात था। लेकिन वह इतनी सुंदर, इतनी मोहक रूप से सुंदर थी कि किसी ने यह भी नहीं सोचा कि वह कहां से आई है। लोग इकट्ठे हो गए, पूरा शहर इकट्ठा हो गया – और सभी युवक, लगभग तीन सौ युवक, उस युवती से शादी करना चाहते थे।

युवती ने कहा, "देखो, मैं एक हूं और तुम तीन सौ हो। मेरी शादी सिर्फ एक से हो सकती है, तो तुम एक काम करो। मैं कल फिर आउंगी, मैं तुम्हें चौबीस घंटे देती हूं। यदि तुम में से कोई बुद्ध के कमल सूत्र को दोहरा सकता है, तो मैं उससे विवाह करूँगी।"

सब युवक अपने अपने घरों की ओर दौड़ पड़े। उन्होंने खाना नहीं खाया, उन्हें नींद नहीं आई, उन्होंने पूरी रात सूत्र का पाठ किया, उन्होंने उसे रटने की कोशिश की। दस सफल हुए। अगली सुबह युवती आई और उन दस लोगों ने कमल सूत्र का पाठ करने की पेशकश की। युवती ने सुनी। वे सफल हुए थे।

उसने कहा, "ठीक है, लेकिन मैं एक हूं। मैं दस से शादी कैसे कर सकती हूँ? मैं तुम्हें फिर से चौबीस घंटे दूंगी। जो कमल सूत्र का अर्थ भी समझा सकता है, मैं उसी से विवाह करूंगी। तो तुम समझने की कोशिश करो— क्योंकि जप करना एक साधारण सी बात है, तुम यंत्रवत् रूप से किसी चीज को दोहरा रहे हो और तुम उसका अर्थ नहीं समझते।"

बिल्कुल भी समय नहीं था – केवल एक रात – और कमल सूत्र एक लंबा सूत्र है। लेकिन जब आप पागल हो जाते हैं तो आप कुछ भी कर सकते हैं। वे वापस घरों की ओर दौड़े, उन्होंने बहुत कोशिश की। अगले दिन तीन व्यक्ति दिखाई दिए। वे इसका अर्थ समझ चुके थे।

और युवती ने कहा, "फिर से मुश्किल बनी हुई है। संख्या कम है, लेकिन परेशानी बनी हुई है। तीन सौ से तीन तक आ जाना बहुत अच्छी बात है, लेकिन मैं तीन व्यक्तियों से विवाह नहीं कर सकती, मैं केवल एक से विवाह कर सकती हूं। तो चौबीस घंटे और। और जिसने न केवल इसे समझा है बल्कि उसका स्वाद भी चखा है, मैं उसी व्यक्ति से शादी

CamScanner

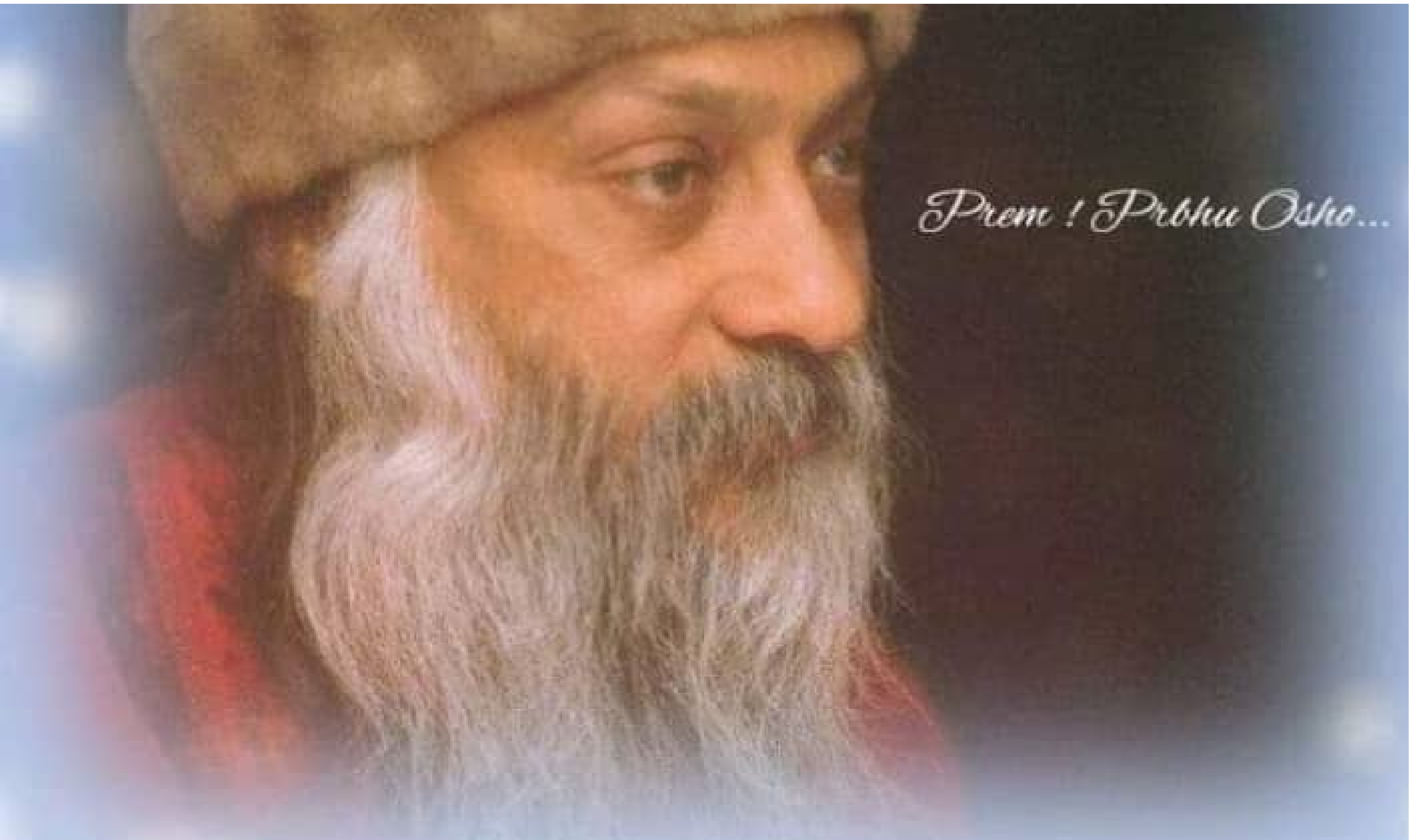

एकांत , मौन , शून्य होने की कला में निष्णात होओ, नहीं तो यह जाल जन्मों से चल रहे हैं। यह कोई पहला जन्म है तुम्हारा ? जन्म-जन्म हो गए , यही धंदा----गोरखधंधा करते-करते !

जो व्यक्ति अपने एकांत में आनंदित है, वह दूसरे के साथ जुड़ कर आनंद को हजार गुना कर लेता है। दोनों का आनंद गुणनफल हो जाता है। कई गुना हो जाता है ।

ओशो...

CamScanner

10:37 pm 41 KB/s 30%
58 49

व्रत

स्त्रि से पति, पुत्र-मोह का फायदा उठाकर उनसे कष्ट कटवाने में समाज को क्या लाभ मिला होगा !

उपवास क्यों होता है ? उपवास करने से काम-ऊर्जा क्षीण होती है । लोगो ने सोचा की पति बाहर जाएगा नौकरी ,काम आदि पर ,उसकी अनुपस्थिति में स्त्री कोई उपद्रव न कर बैठे, इसलिए उससे उपवास करवाना बहुत जरूरी है ।

सीधे-सीधे तो करवाया नहीं जा सकता । इसके लिए कोई बहाना चाहिए । वह भी मजबूत बहाना । स्त्री को पति से प्यार होता है, इसलिए कुछ उपवास पति के नाम करवा लो । स्त्री को पुत्र से मोह होता है, इसलिए कुछ व्रत पुत्र के नाम से करवा कर उसे अच्छी तरह बांध लो ।

पता नहीं कितने वर्षों से बेचारी बंधी हुई हैं । बंधन-मुक्ति का एक ही मार्ग है ज्ञान । ज्यों-ज्यों उनकी अक्ल खुलती जा रही है, त्यों-त्यों वे इन झूठे उपवासों के कष्ट से बाहर होती जा रही हैं । उन्हें सिर्फ इतना पता चलना चाहिए कि यह झूठा है । उन्हें इतना भर पता चलना चाहिए कि जिन जगहों में, जिन देशों मे स्त्रियां जिउतिया को नहीं जानती हैं, उनके बच्चे बचते हैं कि नहीं ? उन्हें पुत्र से प्यार होता है कि नहीं ?

जितिया के दिन मेरे गांव में एक जवान लड़का का करंट लगने से मृत्यु हो गई । क्या जितिया वर्ती का बेटा का मरना चाहिए ? जब मां खुद व्रत में है ?

जिसने भी ये नियम बनाया है बड़ा दुष्ट रहा होगा वह आदमी जिसने सुसुप्त स्त्रियों के अवचेतन में इस व्रत को डाल दिया होगा ।

51 13 comments • 11 shares
Like Comment Share
Osho Rishi Valley. Shimla
Reels · 3h ·
CamScanner

CS CamScanner

सीढ़ियां चढ़कर तो उसके पैरों में बल था, लौटा तो दीवाल का सहारा लेकर उतर रहा था, पैर उसके कंप रहे थे। घर जाकर घर के लोगों को कहा; रोना – धोना शुरू हो गया। पास – पड़ोस के के लोग इकट्ठे हो गये। उस दिन तो घर में फिर चूल्हा ही न जला, पास – पड़ोस के लोगों ने लाकर भोजन करवाया। उसने तो भोजन ही नहीं किया; अब क्या भोजन! वह तो बोला ही नहीं, वह तो आंख बंद करके बिस्तर पर पड़ा रहा। सात दिन में उसकी हालत मरणासन्न जैसी हो गयी। बार–बार सातवें दिन पूछता था – सूरज के डूबने में और कितनी देर है ?

और सूरज डूबने के ठीक पहले एकनाथ ने द्वार पर दस्तक दी। एकनाथ भीतर आये। एकनाथ उसके पास गये। वह तो आंख बंद किये पड़ा था। हाथ से उसकी आंखें खोलीं और कहा कि एक बात तुझे बताने आया हूं। यह तू क्या कर रहा है, ऐसा क्यों पड़ा है?

उसने कहा: और क्या करूँ ? सूरज डूबने में कितनी देर है ? ये सात दिन मैंने इतना नर्क भोगा है जितना कभी नहीं। अब तो ऐसा लगता है मर ही जाऊं तो झंझट कटे।

एकनाथ ने कहा कि मैं तुझे तेरे प्रश्न का उत्तर देने आया हूं। वह तूने मुझसे पूछा था न कि आपके मन में पाप कभी उठता है। मैं पूछने आया हूं तुझसे कि सात दिन में तेरे मन में कोई पाप उठा?

उस आदमी ने कहा: कहां की बातें कर रहे हो! कैसा पाप, कैसा पुण्य ? सात दिन तो कोई विचार ही नहीं उठा, बस एक ही विचार ही था – मौत, मौत, मौत।

एकनाथ ने कहा: तो उठ, अभी तुझे मरना नहीं है। तेरी हाथ की रेखा अभी काफी लंबी है। यह तो मैंने सिर्फ तेरे प्रश्न का उत्तर दिया था। ऐसे ही जिस दिन से मुझे मौत दिखाई पड़ गयी है, पाप नहीं उठा। जिसको मौत दिखाई पड़ जाती है पाप नहीं उठता, एकनाथ ने कहा।
ओशो

Osho Prem Naman 🙏💞
Osho international

CamScanner

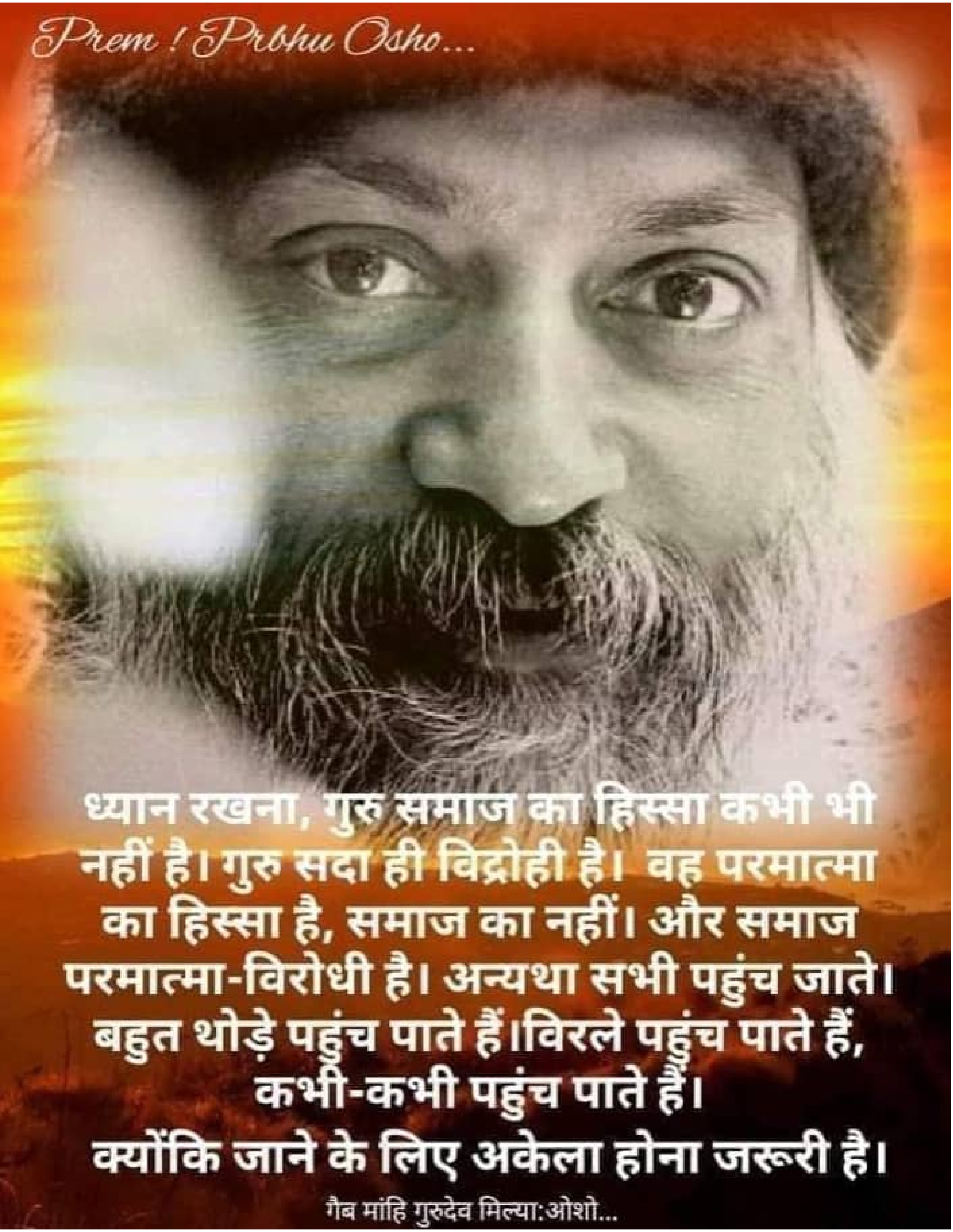
Prem ! Prbhu Osho...
ध्यान रखना, गुरु समाज का हिस्सा कभी भी
नहीं है। गुरु सदा ही विद्रोही है। वह परमात्मा
का हिस्सा है, समाज का नहीं। और समाज
परमात्मा-विरोधी है। अन्यथा सभी पहुंच जाते।
बहुत थोड़े पहुंच पाते हैं।विरले पहुंच पाते हैं,
कभी-कभी पहुंच पाते हैं।
क्योंकि जाने के लिए अकेला होना जरूरी है।
गैब मांहि गुरुदेव मिल्या:ओशो...

CamScanner

10:46 pm 9 KB/s VoLTE 4G 29%
58 49
Osho ki Mehk
Raj Malhotra · 3d ·

"ओशो" प्रेम नमन 🙏🌹🙏

"ओशो" : तुम्हारे जन्म से पहले ही सबकुछ तय हो जाता है। तुम्हारे जन्म का समय-जगह भी, साथ ही तुम्हारी मृत्यु का समय-स्थान भी। फिर क्यों अपेक्षा करते हो कि कि, इन दोनों के बीच जैसा तुम चाहो हो वो सब हो जाए। नाहक असंतुष्ट, अशांत होने की जिद है तुम्हारी और कुछ नहीं।

48
18 comments • 9 shares
Like Comment Share
CamScanner

10:51 pm 0 KB/s VoLTE 4G 29%
58 49

भगवान अब भी मेरी प्रतीक्षा में उसी वृक्ष के नीचे बैठे होंगे।

.

यह सोचते ही बाढ़ नदारद हो गई। गांव भी अतंर्धान हो गया। वे तो घने वन में खड़े थे।

.

नारद जी पछताते और शरमाते हुए दौड़े, देखा कुछ ही दूर पर उसी वृक्ष के नीचे भगवान लेटे हैं।

.

नारद जी को देखते ही वे उठ बैठे और बोले, 'अरे भाई नारद, कहां चले गए थे, बड़ी देर लगा दी। पानी लाए या नहीं।'

.

नारद जी भगवान के चरण पकड़कर बैठ गए और लगे अश्रु बहाने। उनके मुंह से एक बोल भी न फटा।

.

भगवान मुस्कराए और बोल, 'तुम अभी तो गए थे। कुछ अधिक देर थोड़े ही हुई है।' लेकिन नारद जी को लगता है कि वर्षों बीत गए।

.

अब उनकी समझ में आया कि सब भगवान की माया थी, जो उनके अभिमान को चूर-चूर करने के लिए पैदा हुई थी।

.

उन्हें बड़ा घमण्ड था कि उनसे बढ़कर त्रिलोक में दूसरा कोई भक्त नहीं है। जरा सी देर में ढेर हो गया। वे पुनः सरलता और विनय के साथ भगवान के गुण गाने लगे।

.

इस कथा से हमें यह शिक्षा मिलती है कि यदि हमारे पास कुछ है, हमने अथक परिश्रम, लगन तथा निष्ठा से कुछ प्राप्त कर लिया है चाहे वह अपार धन हो, शारीरिक शक्ति हो, भरा-पूरा परिवार हो या फिर कोई ऊंची योग्यता, पद या यश हो तो उस पर घमण्ड क्यों करें।

.

क्या हमसे ऊपर और लोग नहीं हैं ? क्या हम ही सर्वोपरि हैं ? अनेक हमसे पहले हो चुके हैं और आगे भी होगें फिर घमण्ड कैसा।

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

((((((((((जय जय श्री राधे))))))))))

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

21 2 comments • 7 shares
CamScanner

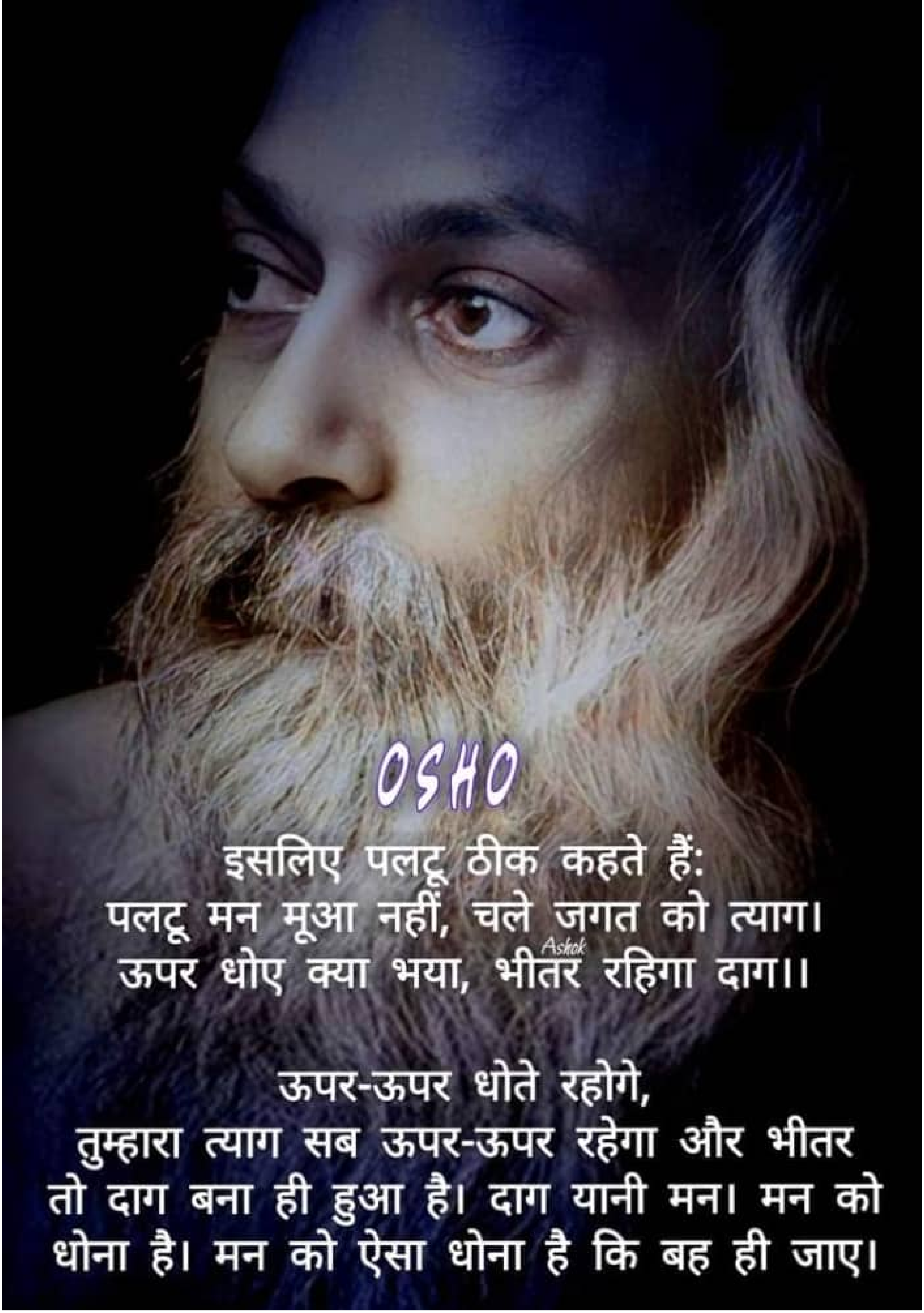
OSHO
इसलिए पलटू ठीक कहते हैं:
पलटू मन मूआ नहीं, चले जगत को त्याग।
ऊपर धोए क्या भया, भीतर रहिगा दाग।।
Ashok
ऊपर-ऊपर धोते रहोगे,
तुम्हारा त्याग सब ऊपर-ऊपर रहेगा और भीतर
तो दाग बना ही हुआ है। दाग यानी मन। मन को
धोना है। मन को ऐसा धोना है कि बह ही जाए।

CamScanner

धीरे-धीरे प्रेम हो गया। विधवा पैर भी दबाए, रोटी भी खिलाए, स्नान भी करवाए।

स्वभावत:, प्रेम हो गया। फिर बच्चे हुए। जो होना था सो हुआ! बिल्ली कहां तक पहुंची! फिर बच्चों के विवाह करने पड़े। बात बढ़ती ही गई, बढ़ती ही गई, बढ़ती ही गई। इस दुनिया में बात कोई रुकती ही नहीं, बढ़ती ही चली जाती है। फिर बात में से बात, बात में से बात।

तो उस मरते हुए गुरु ने कहा कि देख, तुझे मैं समझाए जाता हूं। यह मत समझना कि मैं सठिया गया हूं। बिल्ली भर मत पालना। यह भूल मैंने की, जिंदगी गई यह। अगली जिंदगी खयाल रखूंगा कि बिल्ली नहीं पालनी।

मन साथ होगा तो बिल्ली नहीं पालोगे तो कुत्ता पालोगे। इससे क्या फर्क पड़ने वाला है कि क्या पालोगे? कुछ पालोगे। मन होगा, खेती न करोगे तो दुकान करोगे; फिर चाहे वह दुकान पूजा की ही क्यों न हो, यज्ञ-हवन की ही क्यों न हो। मन कुछ न कुछ करवाएगा। मन बिना कर्ता हुए नहीं रह सकता है। मन के प्राण ही उसके कर्ता होने में हैं।

इसलिए पलटू ठीक कहते हैं:
पलटू मन मूआ नहीं, चले जगत को त्याग।
ऊपर धोए क्या भया, भीतर रहिगा दाग।।

ऊपर-ऊपर धोते रहोगे, तुम्हारा त्याग सब ऊपर-ऊपर रहेगा और भीतर तो दाग बना ही हुआ है। दाग यानी मन। मन को धोना है। मन को ऐसा धोना है कि बह ही जाए।

लेकिन यह भूल हुई है। और अब भी जारी है। और लगता नहीं कि आगे भी रुकेगी। लोग मन से तो मुक्त होते नहीं और संसार से भाग खड़े होते हैं।

काहे होत अधीर--(प्रवचन--17)

CamScanner

8:59 am 0 KB/s 99%
facebook
61 49

मंत्र दे दिया। सैयद इब्राहीम श्रीकृष्ण की पूजा करता, उनकी छवि को निहारते-निहारते प्रेमपूर्वक गुरूमंत्र का जप करता।
धीरे-धीरे वे कृष्णप्रेम-रस में रँगते गये, उनको अंतरात्मा का रस आने लगा और उनका नाम पड़ गया - 'रसखान'।
उन्होंने श्रीकृष्ण-प्रेम के अनेकों पद और कविताएँ लिखीं जो भारतीय साहित्य में आज भी देखने को मिलती हैं। 'गुरूग्रंथ साहिब' में बाबा फरीद के वचन दर्ज किये गये हैं और हिन्दी साहित्य में सैयद इब्राहीम-रसखान, रैयाना तैयब, जलालुद्दीन रोमी आदि के वचन मिलते हैं। कितनी विशाल हृदय है भारतीय संस्कृति !
रसखान लिखते हैं-
तेरी माननी तो हियो, हेरी मोहिनी मान।
प्रेमदेव की छवि लखी, भये मिया रसखान।।
एक हाड़-मांस की पुतली में सुख खोजने की बेवकूफी मिटी, वहाँ से मुख मोड़ा और लाखों सुंदरियों-सुंदरों से भी प्यारे, यहाँ तक कि कामदेव से भी प्यारे कृष्ण को देखकर मियाँ से रसखान हो गया। हे रसीले कृष्ण ! मैं तेरा दीवाना हो गया.....
रसखान लिखते हैं-
सेस गनेस महेस दिनेस सुरेसहु जाहि निरंतर गावैं।
जाहि अनादि अनंत अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावैं।।
नारद से सुक व्यास रहैं पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं।
ताहि अहीर की छोहरिया छछिया भरी छाछ पै नाच नचावैं।।
भगवान शेष, गणेश, महेश, सूर्य, इन्द्र आदि जिन सच्चिदानंद परमात्मा कृष्ण का गुणगान करते है, जो अनादि, अनंत, अखंड, अछेद्य और अभेद हैं, शुकदेवजी जिनका स्मरण करके समाधिस्थ हो जाते हैं, व्यासजी जिनकी व्याख्या करते अघाते नहीं हैं, नारदजी जिनके नाम रस में मग्न रहते हैं, वे ही ग्वालिनों के प्रेम से छछियनभरी छाछ के लिए नाचने को तैयार हो जाते हैं !
कैसा है उस प्रेमास्पद श्रीकृष्ण की प्रेमाभक्ति का प्रभाव कि एक मुसलमान सैयद, कहाँ तो शरीर के सुख-भोग में फँसा था और पढ़ी प्यारे श्रीकृष्ण की लीलाएँ तो उनके प्रेमरस में दीवाना हो इब्राहीम से रसखान हो गया !
जय श्री राधे राधे जी 🙏 🙏 🙏 🙏

CamScanner

साक्षी...

जिस शक्ती से पर को जाना जाता हैं वह शक्ती स्वयं को भी जानने में समर्थ हैं। जो अन्य को जान सकती हैं वह स्वयं को कैसे नही जानेंगी? केवल दिशा परिवर्तन की बात हैं।

जो दिख रहा हैं उससे उस पर चलना हैं,जो की देख रहा हैं। द्रश्य से द्रष्टा पर ध्यान परिवर्तन ही आत्मज्ञान की कुंजी हैं।

Osho

S.R.B.

CamScanner

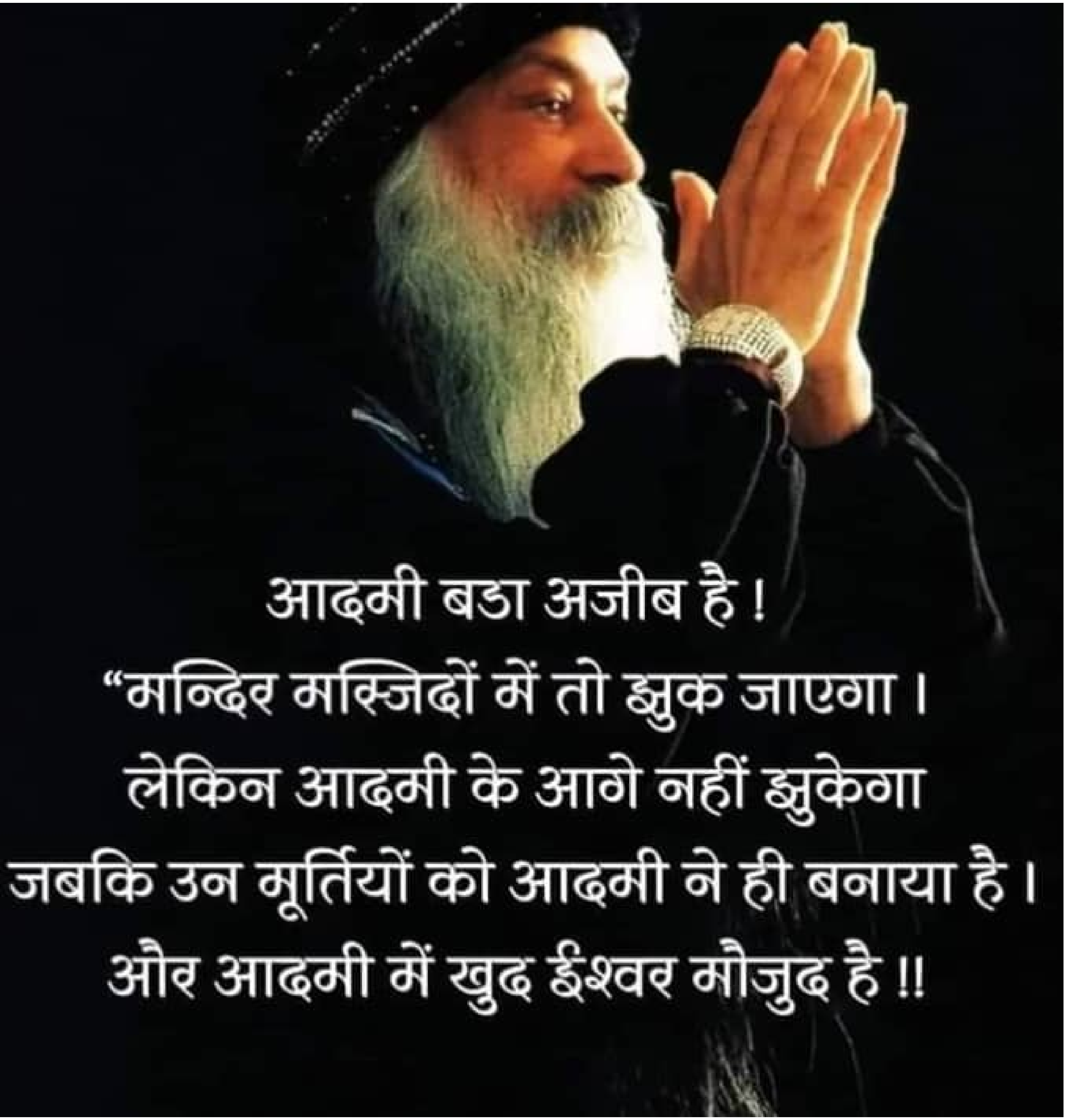
आदमी बडा अजीब है !
“मन्दिर मस्जिदों में तो झुक जाएगा ।
लेकिन आदमी के आगे नहीं झुकेगा
जबकि उन मूर्तियों को आदमी ने ही बनाया है ।
और आदमी में खुद ईश्वर मौजुद है !!

CamScanner

प्र: *मुक्ति तक पहुँचने में कितनी देर लगती है?*

उ: मुक्ति भविष्य में प्राप्त नहीं होती। वह हमेशा है अतः अभी यहाँ है।

प्र: *मैं यह मानता हूँ लेकिन मुझे उसका अनुभव नहीं होता।*

उ: अनुभव अभी और यहाँ है। कोई भी अपने आत्मा का निषेध नहीं कर सकता।

प्र: *उसका अर्थ है कि वह सत्ता है आनंद नहीं।*

उ: सत्ता और आनंद एक हैं, और आनंद तथा अस्तित्व एक हैं। मुक्ति शब्द कई कल्पनाएं जगाता है। कोई उसे क्यों ढूँढे? लोग मान लेते हैं कि बंधन है, इसलिये मुक्ति ढूँढते हैं। लेकिन वस्तुतः बंधन नहीं है, केवल मुक्ति है। उसे नाम देकर आप क्यों ढूँढते हैं?

प्र: *सच है, लेकिन हम अज्ञानी हैं।*

उ: केवल इस अज्ञान को दूर कीजिये, बस इतना ही करना है। मुक्ति विषयक सारे प्रश्न अस्वीकार्य हैं। मुक्ति का अर्थ बंधन से छूटना है। इससे बंधन का अस्तित्व सूचित होता है। बंधन नहीं है, अतः मुक्ति भी नहीं है।

श्री रमण महर्षि

CamScanner

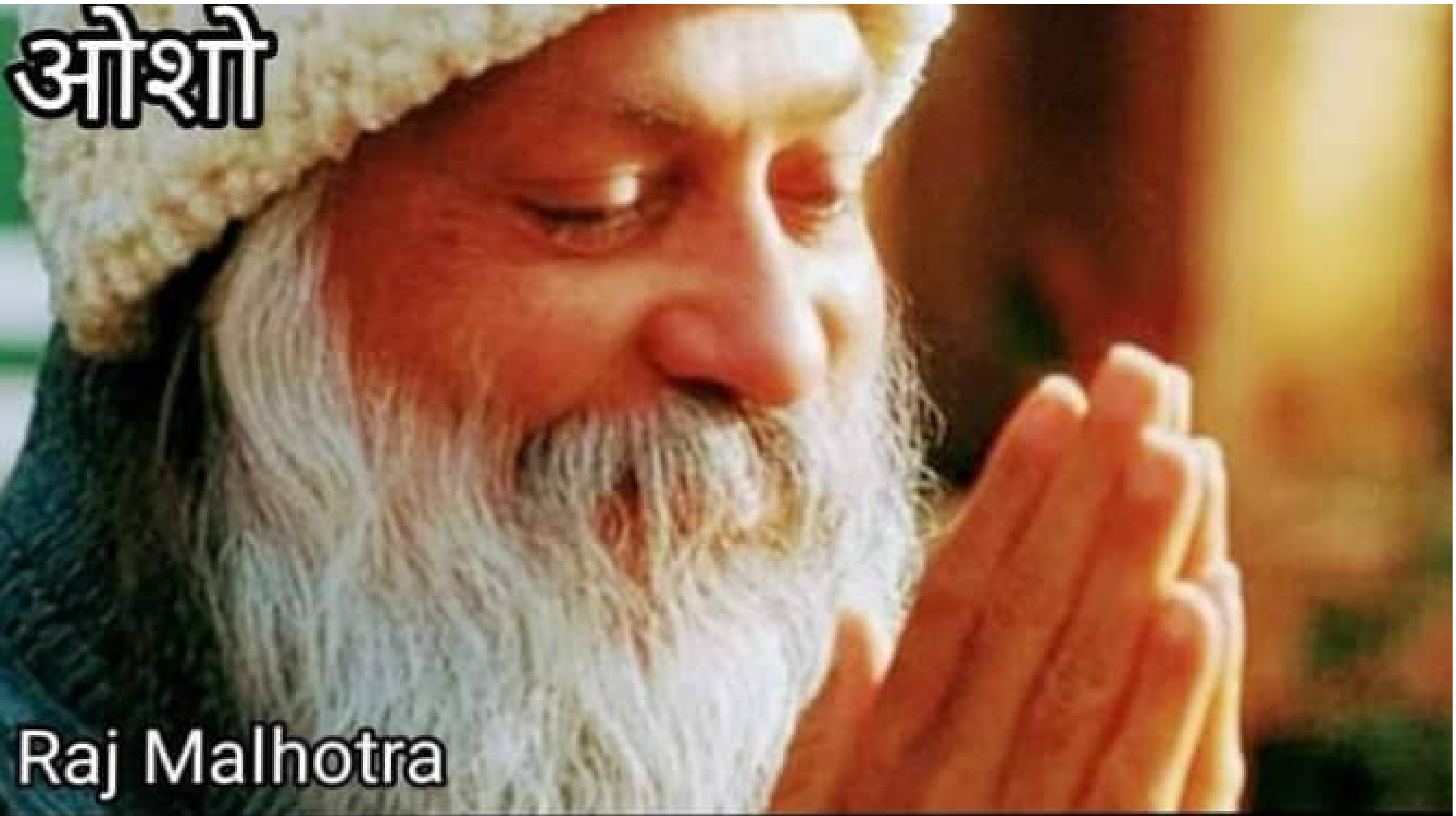

स्वतंत्रता जीवन की सुगंध है यह हवा
की तरह है,
आप इसे नहीं देख सकते हैं लेकिन
इसे महसूस कर सकते हैं..!!

CamScanner

"प्रतिष्ठा तो वही खोजते हैं , जिन्हें आनंद न मिला हो । प्रतिष्ठा का अर्थ है कि हमें भीतर तो कुछ नहीं मिला , तो चलो बाहर के लोग ही कुछ प्रतिष्ठा दे दें , उससे ही शायद ऐसा लगे कि कुछ पा लिया है । प्रतिष्ठा का अर्थ है, दूसरे हमें थोड़ा भर दें , हम तो खाली हैं ।

दूसरे कहें ,
आप सुंदर ;
दूसरे कहें ,
आप शुभ ;
दूसरे कहें ,
आप शिव ;
दूसरे कहें ,
आप साधु -
दूसरे कह दें ;
हम तो भीतर खाली हैं ।
अगर दूसरे न कहेंगे , तो हमारे भीतर कुछ भी नहीं है । प्रतिष्ठा का अर्थ है , उधार , कोई कह दे।" - ओशो

CS CamScanner

2:03 pm 0 KB/s VoLTE 4G 67%

10 49

जिया भी नही, मै तो अभी तक आपने काम में व्यस्त था", अतः मुझे अपनी कमाई हुई धन दौलत का उपयोग करने के लिए समय चाहिए।*

यमराज ने उत्तर दिया – "मैं तुम्हें और समय नही दे सकता, तुम्हारे जीवन के दिन समाप्त हो गये है, और अब दिनों को और नही बढाया जा सकता"।

यमराज की यह बात सुनकर उस आदमी ने कहा- "प्रभु मेरे पास इतना पैसा है, आप चाहो तो आधा धन लेकर मुझे जीवन का एक और बर्ष दे दीजिये"।

प्रतियुत्तर में यमराज ने कहा ऐसा संभव नही। इस पर आदमी ने कहा – "आप चाहो, तो मेरा 90 प्रतिशत धन लेकर मुझे 1 महीने का समय ही दे दीजिए।"

यमराज ने फिर मना कर दिया।फिर आदमी ने कहा- "आप मेरा सारा धन लेकर 1 ही घंटा दे दीजिये"। तब यमराज ने उसको समझाया – बीते हुए समय को धन से दोबारा प्राप्त नही किया जा सकता।

इस प्रकार जिस आदमी को अपने धन पर अभिमान था, उसे वह सब व्यर्थ लगने लगा, क्योंकि उसने अपना संपूर्ण जीवन उस व्यर्थ चीज को कमाने में लगा दिया, जो आज उसे जिंदगी का 1 घंटा भी ख़रीद के नही दे पाई। दुखी मन से वह अपनी मौत के लिए तैयार हो गया।

जिस आदमी ने अपना संपूर्ण जीवन जिसको कमाने में लगा दिया, वही चीज उसके लिए एक सेकंड का समय भी नही ख़रीद पाई। जीवन भगवान द्वारा दिया गया वहुमुल्य उपहारों में से एक है, जिसको पैसे से प्राप्त नही किया जा सकता। इसलिए जीवन के हर पल का आनंद लीजिये एवं उसको एन्जॉय करिए। कहा गया है जीवन बहुत अमूल्य है, इसको व्यर्थ ना जाने दे, हर पल को ख़ुशी के साथ जिए तभी आप अपने जीवन से खुश हो सकते है।

18 5 comments • 1 share

Like Comment Share

CamScanner

234 47 comments · 4 shares

Like Comment Share

Oshoislive
27 Sep ·

ओशो कौन हैं?
- ओशो आग हैं, ऐसा आग जो तुम्हारे अंदर सारी नकारात्मक ऊर्जा को जलाकर राख कर देगी। एक ऐसा आग जिसमे जलकर ही तुम शीतल होते हो। ओशो नशा भी है और दावा भी। ओशो को जिसने सुना उसे फिर किसी और सत्संग में मन नहीं लगता। ओशो वो हथौड़ा हैं जिसका मार अगर एक बार पड़ जाए तो तुम्हारे अंदर बने सारे सामाजिक ढांचे, अंधविश्वास टूटकर चखनाचूर हो जाते हैं। ओशो को सुनने के बाद तुम समाज से खुद को काटा हुआ महसूस करोगे और ये एहसास तुम्हे अच्छा लगेगा। ओशो तुम्हे अकेला कर देंगे और इस अकेलापन का एक अलग ही मजा है। यही अकेलापन तुममें जितना गहरा होता जायेगा तुम परमात्मा के और निकट होते जाओगे।

137 14 comments • 6 shares

Like Comment Share

Girishbhai Patel
ओशो ओशो है और आप आप ही है लेकिन ओशो को गहराई से समझोगे तब एक दिन परमात्मा में लीन जरूर हो जायेंगे

Like Reply

Write a comment...

Osho Rishi Valley. Shimla
Reels · 18h ·

मैं तो मानता हूँ इस पृथ्वी पर ना कोई ऊँचा है ना कोई नीचा.....
#viralreelsシ #viralreels #viralreelsfb

CamScanner

2:08 pm 3 KB/s 66%

मै तो मानता हूं इस पृथ्वी पर ना कोई ऊंचा है ना कोई नीचा.....
#viralreelsシ #viralreels #viralreelsfb #viralreelsfacebook #viralvideoreels #explorereels #explorereel #v... See more

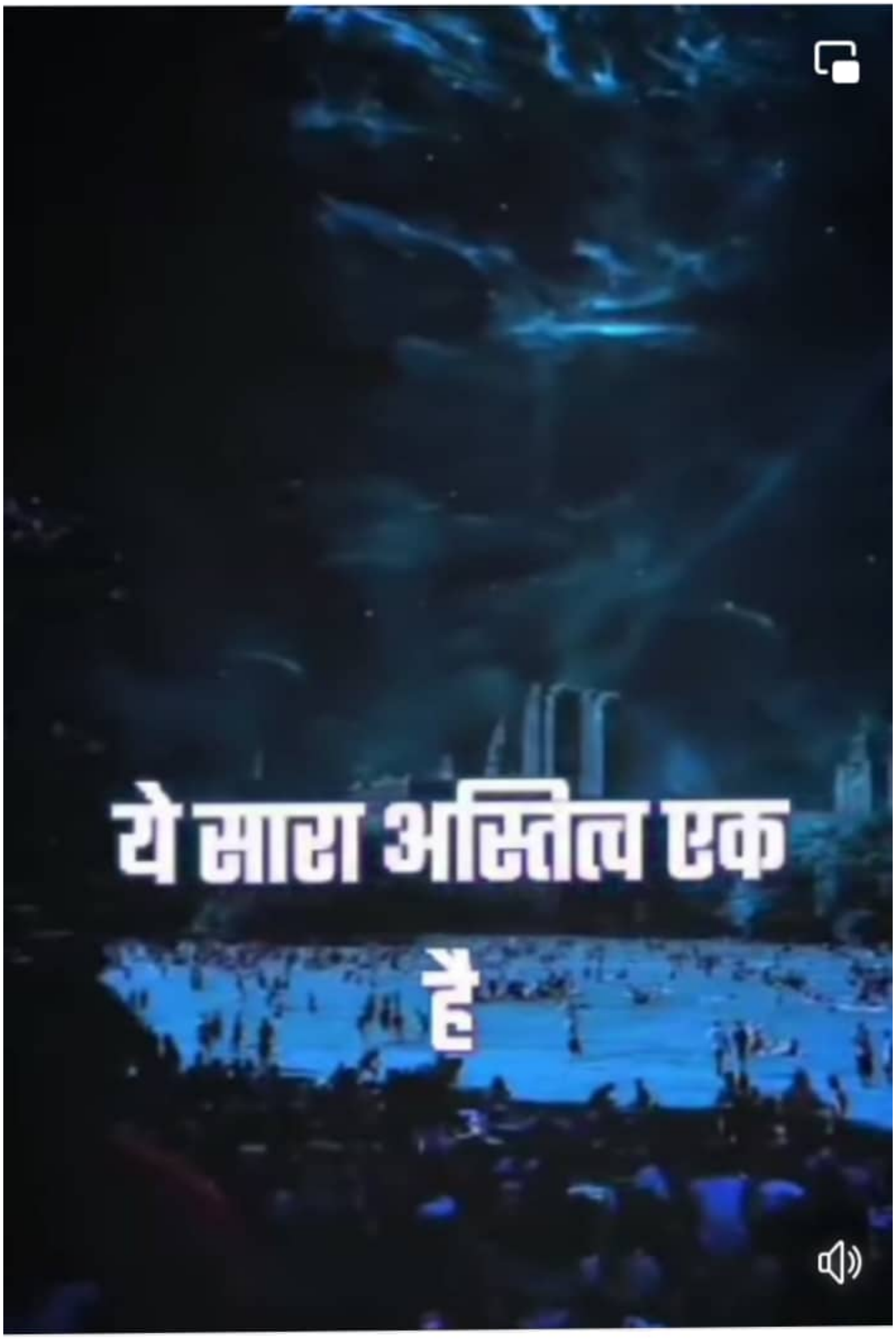

171 2 comments • 20 shares • 1.4K views

Like Comment Share

CamScanner

तुम मुझे शास्त्र मत बनाओ, तुम मुझे अनुभव बनाओ।
मुझसे सुनो, जीवन में परीक्षा करो।
मुझसे सुनो, समझो! जीवन में जाकर जीवन से पूछो,
क्या यह सही है? जो सुना, क्या यह सही है?
जीवन तुम्हें उत्तर देगा। जीवन कसौटी है।
एस धम्मो सनंतनो-५५ ओशो

CamScanner

प्रः "सोहम्" "मैं कौन हूँ?" के समान है?

उः उनमें केवल "अहम्" समान है। एक सोहम् है। दूसरा कोहम् है। ये दो भिन्न है। हमें क्यों सोहम् कहते रहना चाहिये? मनुष्य को सच्चा अहं ढूंढ निकालना चाहिये। "मैं कौन हूँ" प्रश्न में "मैं" अहंकार है, उसकी तलाश करके उसके मूल स्थान को पाने पर पता चलता है कि उसका अलग अस्तित्व नहीं है, तब वह सच्चे अहं से एकरूप हो जाता है।

आप कठिनाई देख रहे हैं? "शिवोहम्" अथवा "सोहम्" ध्यान से विचार भिन्न पद्धति है। मैं अधिकतर आत्मा के ज्ञान पर बल देता हूँ, क्योंकि आप विश्व तथा उसके मालिक को जानने का प्रयत्न शुरू करें, उससे पहले आपको स्वयं को जानने की इच्छा होना स्वाभाविक है। "सोहम्" अथवा "अहं ब्रह्मास्मि" ध्यान थोड़ा बहुत मानसिक विचार है। लेकिन आत्मानुसंधान, जिसकी मैं बात करता हूँ, सीधी पद्धति है, और वस्तुतः अन्य सब ध्यान पद्धतियों से श्रेष्ठ है। जिस क्षण आप आत्मा की तलाश का प्रारंभ करते हैं, और अधिकाधिक गहराई में जाते हैं, तो वहाँ सच्चा आत्मा आपको भीतर ले जाने के लिये आपकी राह देख रहा होता है। तब जो कुछ होता है, वह किसी और के द्वारा किया जाता है, जिसमें आपका कोई हाथ नहीं होता। इस प्रक्रिया में सारे संशय एवं चर्चाएँ अपने आप छूट जाते हैं, जैसे सोते समय मनुष्य तत्काल के लिये सब चिन्ताओं को छोड़ देता है।

प्रः *क्या भरोसा है कि वहाँ मेरे सत्कार के लिये कोई खड़ा है?*

उः पर्याप्त रूप से पक्व होने पर साधक स्वाभाविक रूप से आश्वस्त होता है।

श्री रमण महर्षि

CamScanner

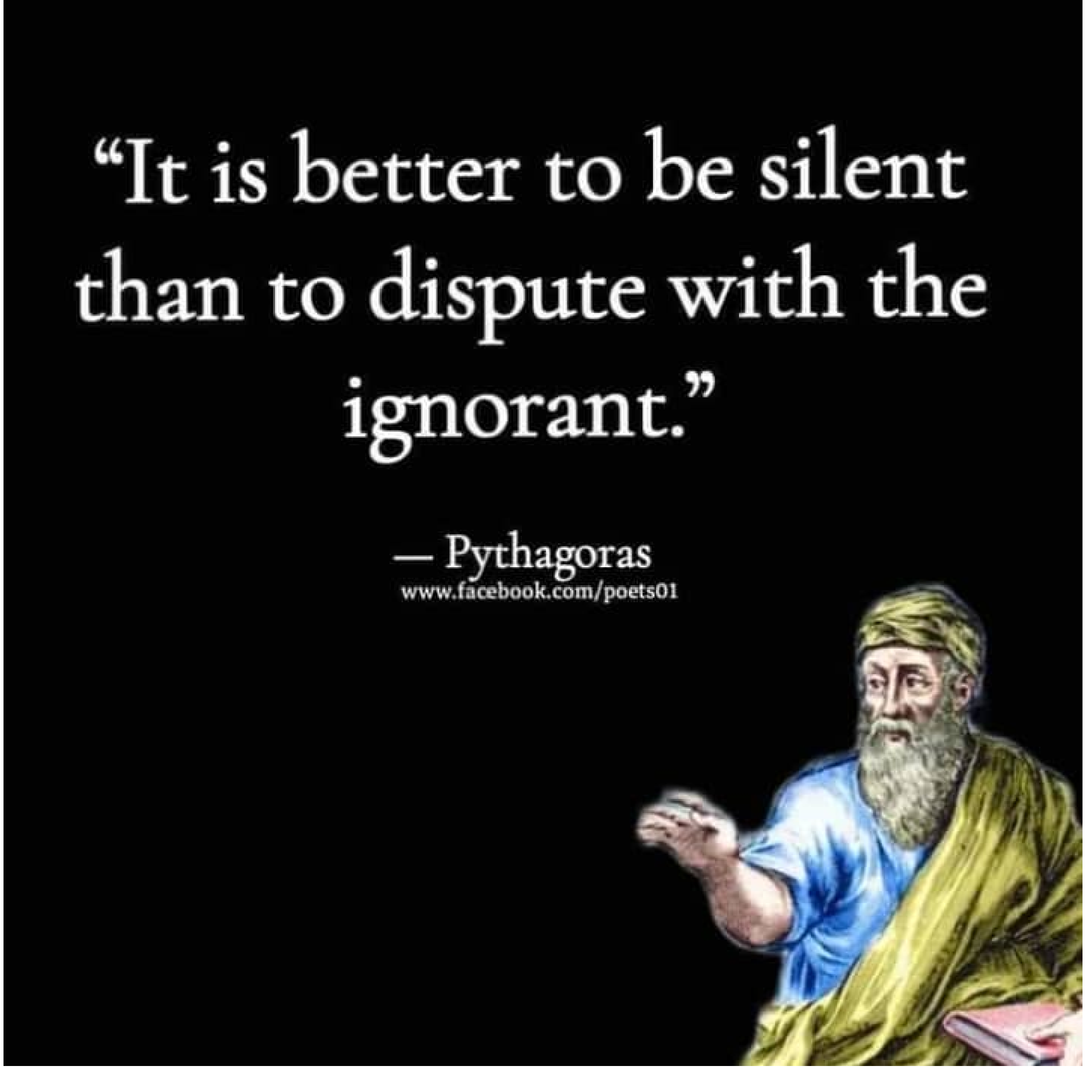
"It is better to be silent than to dispute with the ignorant."
— Pythagoras
www.facebook.com/poets01

CamScanner

CS CamScanner

प्रेम तो एक तरफा ही होता है।
दोनो तरफा तो , सिर्फ व्यापार होता है।।
ओशो जी

CamScanner

CamScanner

CamScanner

देह तो बस फूल है। देखते हो न, जब कोई मर जाता है और उसे हम जला आते हैं, फिर तीसरे दिन हम इकट्ठा करने जाते हैं, तो कहते हैं--फूल इकट्ठे करने जा रहे हैं! क्यों कहते हैं फूल इकट्ठे करने जा रहे हैं? बस, फूल जैसा ही सब है यहां क्षणभंगुर! प्यारा शब्द है फूल! क्षणभंगुरता का प्रतीक है फूल। काश, जिसकी हड्डियां हैं उसने ही जागकर देख लिया होता कि ये सब फूल हैं--अभी हैं, अभी कुम्हला जायेंगे; सुबह हैं, सांझ पंखुड़ियां झड़ जायेंगी। तो शायद कब्र न बनती, समाधि बनती। तो शायद मृत्यु तो होने ही वाली थी, लेकिन भीतर कोई अमृत को जानता हुआ विदा होता। उस क्रांति की तलाश करो ।

मुझसे सांत्वना न खोजो, मैं सत्य ही दे सकता हूं।

CamScanner

अधिक से अधिक भोले, कम ज्ञानी और
बच्चों की तरह बनिए,
जीवन को मजे के रूप में लीजिए
क्योंकि वास्तविकता में यही जीवन है।
-ओशो

CamScanner

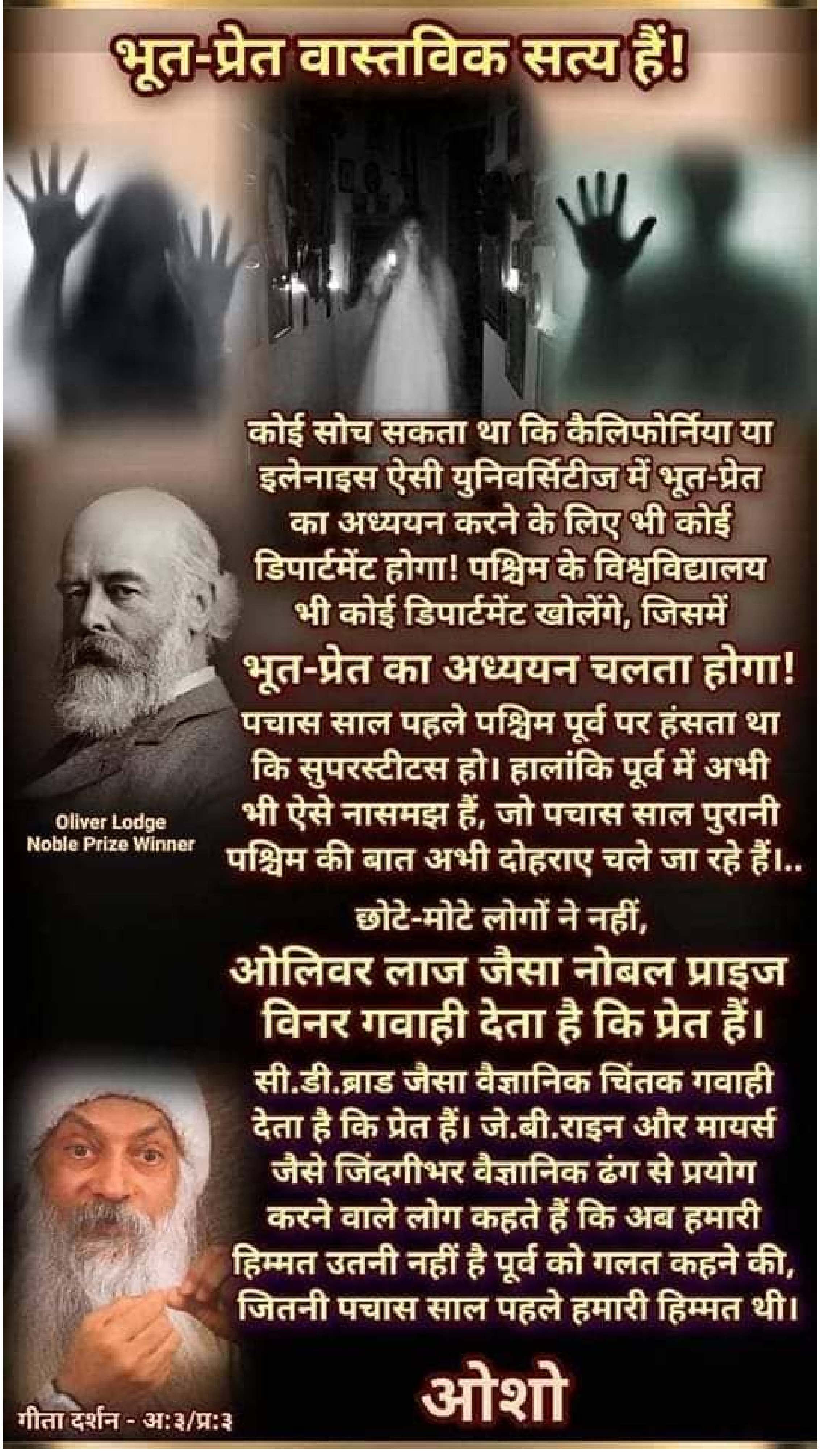

CS CamScanner

2:26 pm 0 KB/s VoLTE 4G 62%
facebook
10 49
तुम्हें बदहजमी हो सकती; और तुम आदी हो सकते हो मौजूदगी के।
नहीं, वह ठीक नहीं है।

जब भी मुझे लगता है कि किसी को जरूरत है अकेले होने की, जब भी मुझे लगता है कि किसी को मुझ से दूर चले जाना चाहिए, तो मैं उसे दूर भेज देता हूं।

सदगुरु के पास होने और सदगुरु के पास न होने की एक लय चाहिए। उस लय में बहुत सी संभावनाएं खुलती हैं, क्योंकि अंततः तुम्हें निर्भर होना है स्वयं पर।
गुरु तुम्हारे साथ सदा सदा के लिए नहीं रह सकता। एक दिन मैं अचानक खो जाऊंगा, मिट्टी मिट्टी में गिर जाएगी, तुम मुझे कहीं नहीं खोज पाओगे।

तब, अगर तुम मेरे प्रति बहुत आसक्ति बना लोगे और तुम मेरे बिना रह ही न सकोगे तो तुम दुख पाओगे, नाहक पीड़ित होओगे। और मैं यहां तुम्हें पीड़ा देने के लिए नहीं हूं : मैं यहां तुम्हें और ज्यादा आनंदित होने में सक्षम बनाने के लिए हूं।
कई बार यह अच्छा होता है कि तुम दुनिया में कहीं दूर चले जाओ, अपने साथ रहो, अपने एकांत में रहो, भीतर उतरो, अकेले में जीओ।

और जो कुछ भी तुमने मेरे साथ यहां पाया है, उसे संसार में कसौटी पर कसो, क्योंकि आश्रम संसार नहीं है।
आश्रम ज्यादा से ज्यादा एक सीखने की जगह हो सकता है, वह कोई वैकल्पिक संसार नहीं है। अधिक से अधिक यह एक स्कूल हो सकता है जहां तुम्हें थोड़ी झलक मिलती है।
फिर तुम उस झलक के साथ जाते हो संसार में,
वहां होती है कसौटी, वहां होती है परीक्षा। अगर वे अनुभव वहां भी खरे उतरते हैं, केवल तभी वे वास्तविक हैं।

ओशो
पतंजलि: योगसूत्र--(भाग--3) प्रवचन--52

CamScanner

2:27 pm 0 KB/s VoLTE 4G 62%

10 49

2

Like Comment Share

Osho leela Ashram

26 Sep ·

26-September ओशो नव संन्यास दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
मेरा संन्यास वसंत है। मेरा संन्यास फागुन मास है। मेरा संन्यास फूलों की भांति है। यह जीवन का उत्सव है। यह परमात्मा के प्रति धन्यवाद है, अनुग्रह का भाव है। यह त्याग नहीं है। यह भोग भी नहीं है। यह त्याग और भोग दोनों का अतिक्रमण है। यह इस भांति भोगना है कि भोगो भी और बंधने भी न पाओ। गुजरना है ऐसे संसार से कि गुजर भी जाओ और संसार की धूल तुम पर जमने भी न पाए। संसार तुम्हें छूने भी न पाए, अछूते निकल जाओ। गीत गाते हुए निकल जाओ। यह कोई रोता हुआ संन्यास नहीं है। यह कोई उदासीन संन्यास नहीं है। यह नाचता हुआ संन्यास है।

🙏 ओशो 🙏 प्रीतम छबि नैनन बसी 🌹 3 🌹

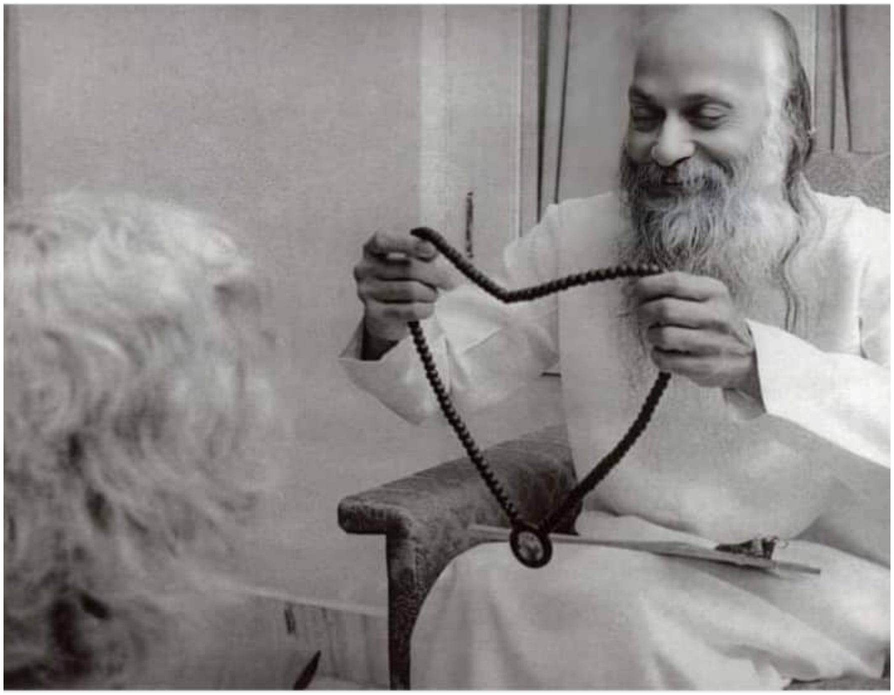

75 10 comments • 4 shares

CamScanner

ईशावास्य
उपनिषद्
प्रारम्भ
भक्ति आंदोलन
Bhakti Andolan
ॐ
पूर्ण मदः पूर्ण मिदं
पूर्णात पूर्ण मुदचत्ये,
पूर्णस्य पूर्ण मादाये
पूर्ण मेवावशिश्यते ॥
वह सूक्ष्म जगत पूर्ण है, यह स्थूल जगत
पूर्ण है, पूर्ण परमेश्वर से ही इस पूर्ण जगत
का उदय होता है, पूर्ण परमेश्वर पूर्ण
जगत रूप ले लेने पर भी वह अपने सूक्ष्म
स्वरुप में पूर्ण ही शेष रहता है।

CamScanner

OSHO

जीवन की एकमात्र कसौटी है आनंद
SGB
जिस जीवन को आप जी रहे हैं
उसमें अगर आनंद नहीं आ रहा है
तो जानना चाहिए कि आप गलत जी रहे हैं
दुख गलत होने का सबूत है
और आनंद ठीक होने का
इसलिए जीवन का उत्सव मनाओ

CamScanner

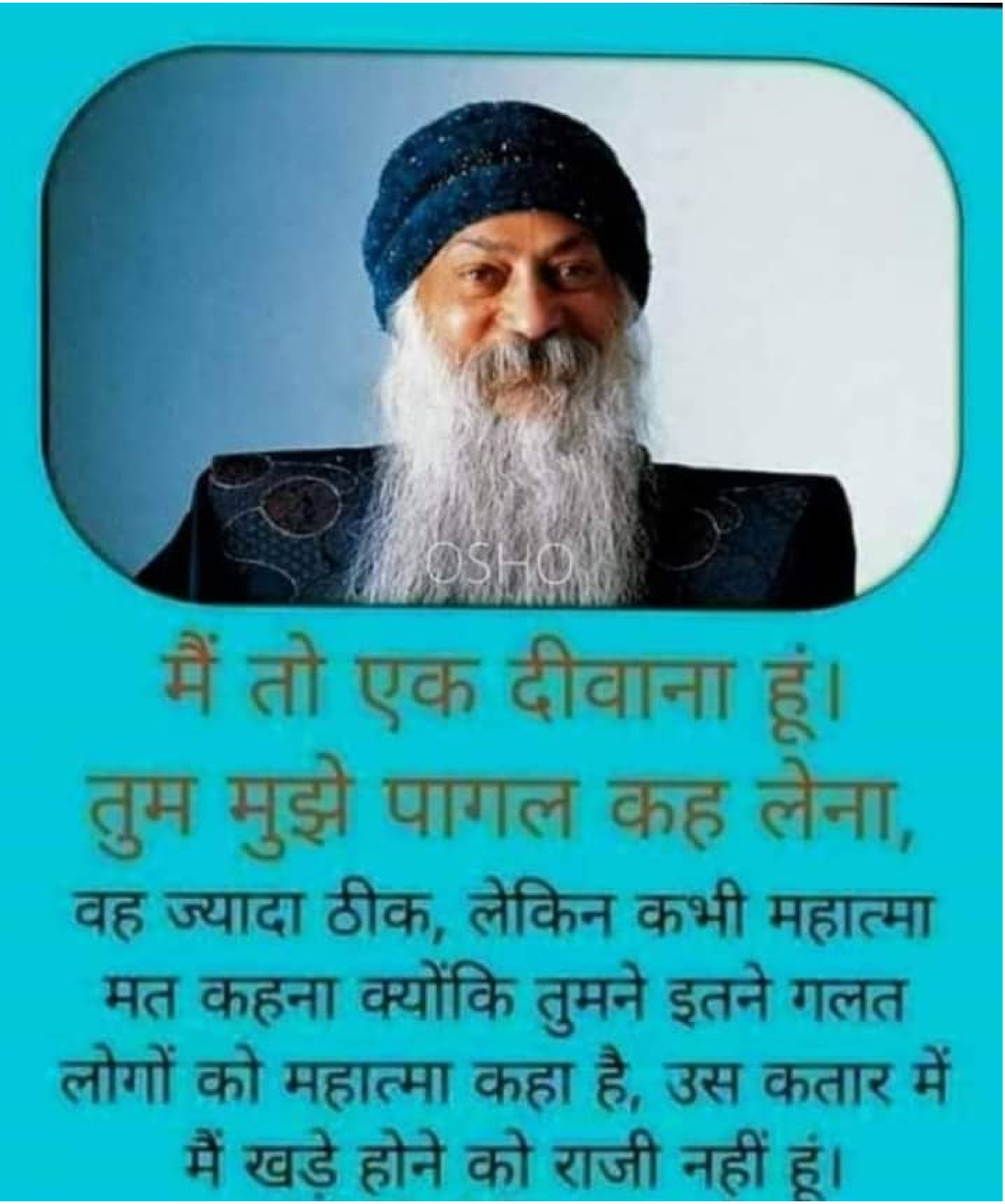
OSHO
मैं तो एक दीवाना हूं।
तुम मुझे पागल कह लेना,
वह ज्यादा ठीक, लेकिन कभी महात्मा
मत कहना क्योंकि तुमने इतने गलत
लोगों को महात्मा कहा है, उस कतार में
मैं खड़े होने को राजी नहीं हूं।

CamScanner

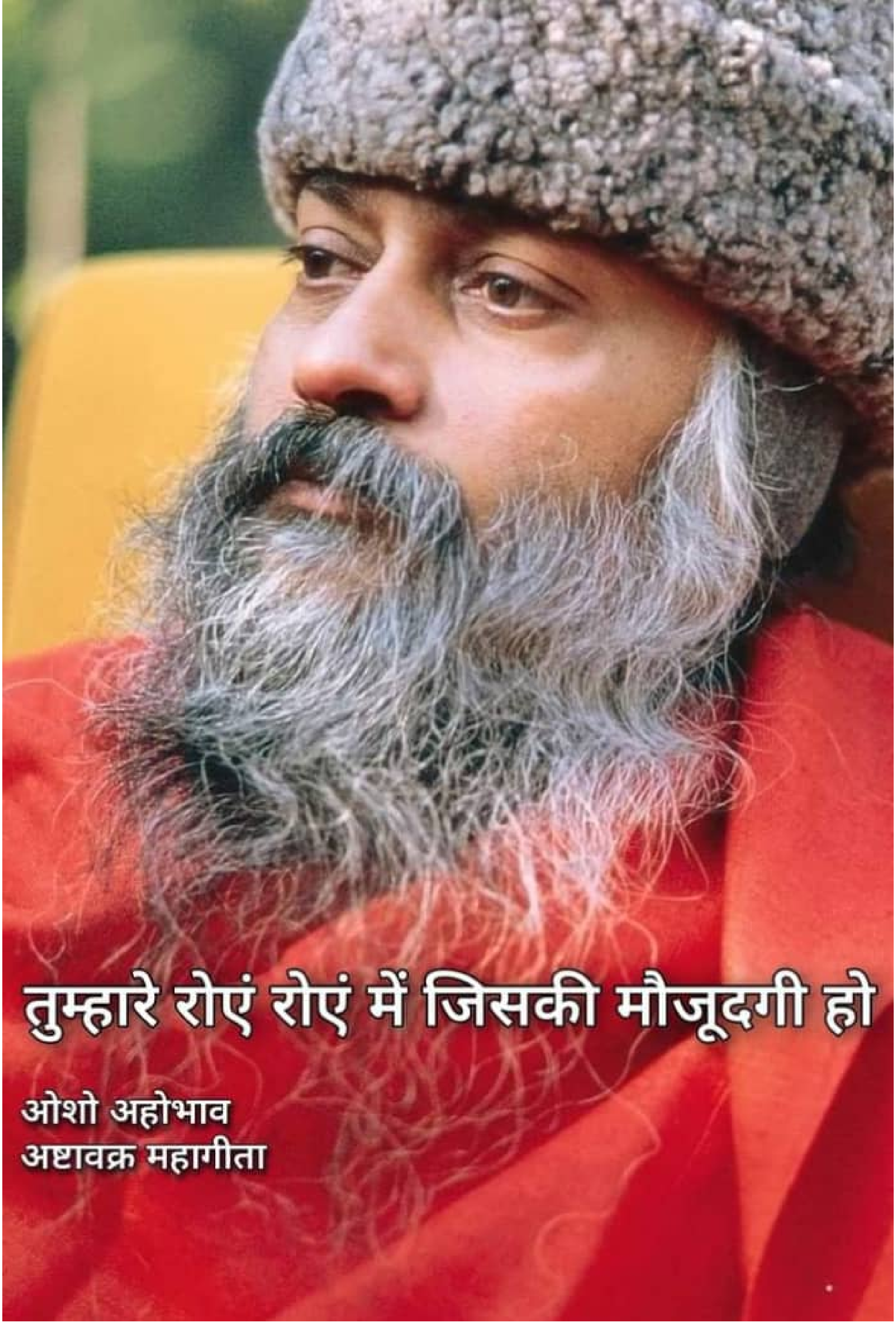

CamScanner

Osho leela Ashram
29 Sep ·

Nothingness is the way to be Wholeness..
अर्पित है मेरा कर्म--इसे स्वीकार करो!
अर्पित मेरा अस्तित्व--इसे स्वीकार करो!
रंगों की सुषमा रच, मधुऋतु जल जाती है,
सौरभ बिखरा कर फूल--धूल बन जाता है,
धरती की प्यास बुझा जाता गल कर बादल,
पाषाणों से टकरा कर निर्झर गाता है,
तुमने ही तो पागलपन का संगीत दिया,
करुणा बन गलना तुमने मुझको सिखलाया
तुमने ही मुझको यहां धूल से ममता दी
रंगों में जलना मैंने तुम से ही पाया।
उस ज्ञान और भ्रम में ही तो तुम चेतन हो
जिनसे मैं बरबस उठता गिरता रहता हूं
निज खंड-खंड में हे असीम तुम हे अखंड!
अर्पित मेरा अस्तित्व--इसे स्वीकार करो!

एक बार सब छोड़ दो उस अज्ञात के चरणों में--अपने अहंकार को, अपने कर्ताभाव को। कह दो उससे: तेरी जो मर्जी! जैसा नचाएगा नाचेंगे! जो कराएगा करेंगे! हम करने वाले नहीं, हम सिर्फ अभिनेता हैं। तू जो निर्णय लेगा, जो पात्र बनने की आज्ञा देगा वही बन जाएंगे। न हमारा कोई निर्णय है, न हमारी अपनी कोई नियति है। तेरे हाथों में सब है।
इतना समर्पण जो कर सके वह पूर्ण शून्य हो जाता है। और जब तुम पूर्ण शून्य हो जाते हो, तो तुम्हारा शून्य, तुम्हारा शून्य ही उस पूर्ण के लिए निमंत्रण है।

🙏ओशो 🙏 प्रीतम छबि नैनन बसी 🌹 1 🌹

CamScanner

इजरायल फिलिस्तीन संघर्ष

मैं आपको पूरी मानवीय स्थिति के बारे में अपनी विहंगम दृष्टि देना चाहता हूं, क्योंकि इजरायल में यहूदियों और अरबों के बीच जो हो रहा है वह कोई नई बात नहीं है। यह पूरी दुनिया में हो रहा है, अलग-अलग नामों में - हिंदुओं और मुसलमानों के बीच, ईसाई और यहूदियों के बीच..बस नाम अलग हैं, लेकिन एक ही हिंसा, एक ही हत्या, एक ही पीड़ा।

जब तक 'ईश्वर' है, मनुष्य जाति शांति से नहीं रह सकती। यह ईश्वर है जो मनुष्य को विभाजित कर रहा है। वह मानवता का परम शत्रु है; अन्यथा हिंदू और मुसलमान और ईसाई और यहूदी में क्या अंतर है? - केवल ईश्वर के बारे में उनके विचार। और वह विचार और कुछ नहीं, एक 'विचार' मात्र है, बस एक खाली परिकल्पना है।

ओशो

CamScanner

5:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G 37%
facebook
तुम्हारे छूने से कोई सूखा वृक्ष हरा हो जाए। ऐसी कुछ बात मांग लो कि तुम्हारे हाथ में संजीवनी का प्रभाव आ जाए।*_
उस फकीर ने कहा: यह तो ठीक है। लेकिन इसमें खतरा है। अभी मैं बिलकुल नहीं मिट गया हूं। इसमें अकड़ पैदा हो जाने का डर है कि मेरे छूने से सूखा झाड़ हरा हो गया; कि मेरे छूने से बेमौसम में फूल आ गए; कि मेरे छूने से मुरदा जाग गया। अभी मैं मरा नहीं हूं। अभी मैं थोड़ा-थोड़ा हूं। यह तो खतरनाक बात है। लेकिन तुम अगर जिद्द ही करते हो, तो ऐसा करो कि मेरी छाया को यह आशीर्वाद दे दो--कि मेरी छाया अगर सूखे वृक्ष पर पड़ जाए, तो वृक्ष हरा हो जाए; कि मेरी छाया अगर किसी मुरदे को छू ले, तो वह जीवित हो जाए।*_
फरिश्ते ने कहा: इससे क्या फर्क पड़ेगा? उसने कहा इससे फर्क पड़ेगा। मैं पीछे लौट कर कभी देखूंगा ही नहीं। तो छाया से जो होगा, छाया जाने। मेरा इससे कुछ संबंध न जुड़ेगा।*_
और तब कहते हैं: वह फकीर भागता रहता था--एक गांव से दूसरे गांव, एक मोहल्ले से दूसरे मोहल्ले, एक आदमी से दूसरे आदमी। और उस फकीर ने जिंदगी में कभी पीछे लौट कर नहीं देखा। बस, वह दौड़ता रहता कि जितने ज्यादा लोगों को छाया उसकी लग जाए। तो कोई बीमार ठीक हो जाए; कोई मुर्दा उठ जाए; कोई वृक्ष सूखा था, हरा हो जाए; कोई पानी का स्रोत सूख गया था, तो झरना प्रगट हो जाए। मगर वह भागता रहता था। वह पीछे लौटकर नहीं देखता था। वह कभी एक गांव में नहीं रुकता था, क्योंकि जितने दूर-दूर भाग सके और जितने लोगों पर उसकी छाया पड़ जाए, उतना ही अच्छा। और उसे कभी याद भी नहीं पड़ा कि कौन-कौन ठीक हुए। उसने कुछ हिसाब भी न रखा। अगर तुम उससे पूछते जीवन के अंत में--खुद परमात्मा पूछता, तो वह नहीं बता सकता था--कितने मुर्दा जीए, कितने वृक्ष हरे हुए, कितने झरने बहे, कितनी बीमारियां मिटीं। उसके पास कोई हिसाब न होता। प्रेम हिसाब जानता ही नहीं। #प्रेम पीछे लौट कर देखता ही नहीं। प्रेम में गणित का उपाय ही नहीं है।।*_

कन थोरे कांकर घने,
प्रवचन-१०

CamScanner

11:05 pm 0 KB/s VoLTE 4G 25%

facebook

10

Like Comment Send

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg

Parshotam Rai · 1d ·

एक बार एक ग्वालन दूध बेच रही थी और सबको दूध नाप नाप कर दे रही थी। उसी समय एक नौजवान दूध लेने आया तो ग्वालन ने बिना नापे ही उस नौजवान का बरतन दूध से भर दिया।

वही थोड़ी दूर पर एक साधु हाथ में माला लेकर मनको को गिन गिन कर माल फेर था। तभी उसकी नजर ग्वालन पर पड़ी और उसने ये सब देखा और पास ही बैठे व्यक्ति से सारी बात बताकर इसका कारण पूछा।

उस व्यक्ति ने बताया कि जिस नौजवान को उस ग्वालन ने बिना नाप के दूध दिया है वह उस नौजवान से प्रेम करती है इसलिए उसने उसे बिना नाप के दूध दे दिया ।

यह बात साधु के दिल को छू गयी और उसने सोचा कि एक दूध बेचने वाली ग्वालन जिससे प्रेम करती है तो उसका हिसाब नही रखती और मैं अपने जिस ईश्वर से प्रेम करता हुँ, उसके लिए सुबह से शाम तक मनके गिनगिन कर माला फेरता हुँ।

मुझसे तो अच्छी यह ग्वालन ही है और उसने माला तोड़कर फेंक दी। हमारे जीवन भी कुछ ऐसा ही है। जहाँ प्रेम होता है वहाँ हिसाब किताब नही होता है, और जहाँ हिसाब किताब होता है वहाँ प्रेम नही होता है, सिर्फ व्यापार होता है।

सौजन्य से - श्री विवेक कुमार जी

14 · 1 comment • 2 shares

Like Comment Share

CamScanner

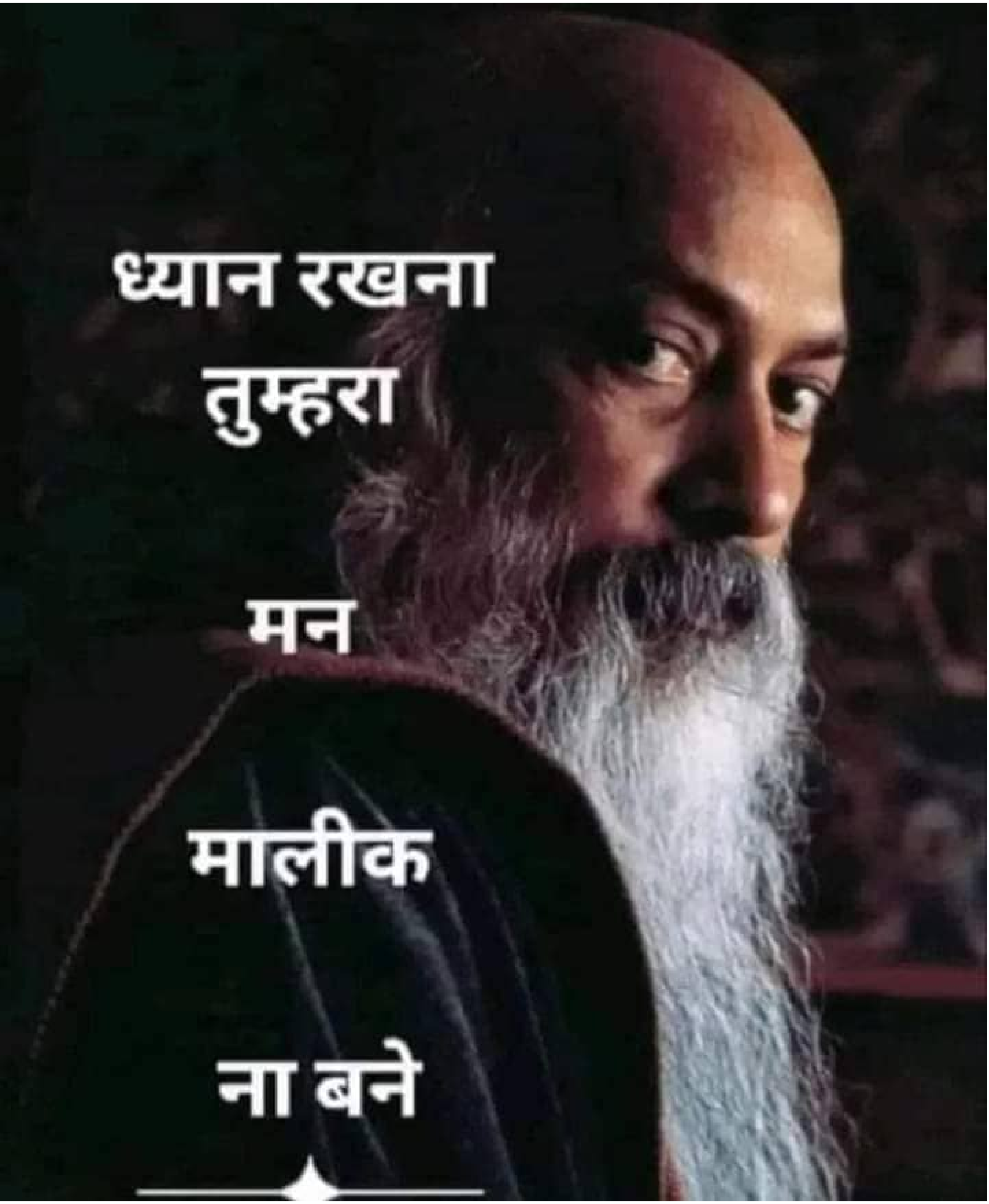

CamScanner

CamScanner

धर्म है व्यक्ति और समष्टि के बीच प्रेम की एक प्रतीति--
ऐसे प्रेम की जहां बूंद खो देती है,
अपने को सागर में और सागर हो जाती है
जहां सागर खो देता है अपने को बूंद में और बूंद हो जाता है
व्यक्ति और समष्टि के बीच ध्यान का ऐसा क्षण,
जब दो नहीं बचते, एक ही शेष रह जाता है,
प्रार्थना का एक ऐसा पल, जहां व्यक्ति तो शून्य हो जाता है
और समष्टि महाव्यक्तित्व की गरिमा से भर जाती है।
इसलिए तो हम उस क्षण को ईश्वर का साक्षात्कार कहते हैं।
व्यक्ति तो मिट जाता है,
समष्टि में व्यक्तित्व छा जाता है सारी समष्टि
एक महाव्यक्तित्व का रूप ले लेती है।

CS CamScanner

CamScanner

मृत्यु एक असत्य है -- सबसे बड़ा असत्य। न कभी घटा , न कभी घटेगा। मनुष्य दो तत्वों का जोड़ है। एक तत्व तो है मरणधर्मा , जो मर ही हुआ है।जो मर ही हुआ है , उसकी तो मृत्यु कैसे होगी? और दूसरा तत्व है अमृत। जो अमृत है , उसकी तो मृत्यु कैसे होगी? फिर मृत्यु किसकी होती है ? न शरीर मर सकता है , क्योंकि शरीर मरा ही हुआ है । न आत्मा मर सकती है , क्योंकि आत्मा अमृत है। फिर मरता कौन है ? कोई भी नहीं मरता ; सिर्फ शरीर और आत्मा का संबंध छूट जाता है। ओर तुम संबंध को ही अगर जीवन समझते हो तो फिर संबंध छूटने को तुम मृत्यु समझ लेते हो। संबंध को जीवन समझने की भ्रांति से मृत्यु पैदा होती है। संबंध यानी तादात्म्य। तुमने अगर यह मान रखा है कि मैं शरीर हूं , तो फिर मृत्यु घटेगी। ओर अगर जान लो मैं शरीर नहीं हूं , फिर किसी मृत्यु ! शरीर मरेगा , मरा ही हुआ था। और आत्मा मर नही सकती , आत्मा अमृत है। काश तुम जीवन में ही इस तत्व को जान लो तो तुम मृत्यु में भी हंसते हुए , नाचते हुए , गीत गाते हुए प्रवेश करोगे , क्योंकि सिर्फ संबंध छूट रहा है।

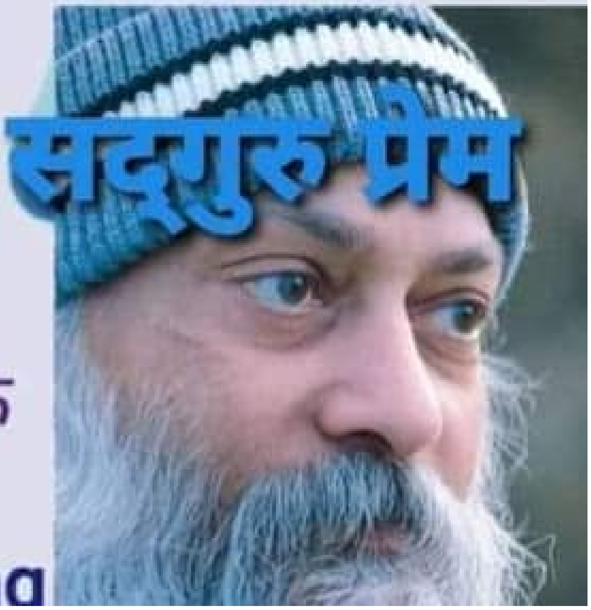

ओशो (Dr Sohan Lal Narang

CamScanner

CamScanner

CS CamScanner

@ahobhav_
Osho says Whenever you catch yourself getting unhappy, give a good jerk and be happy again. Shake the whole body and be happy again. It is just a knack, an art. अहोभाव

CamScanner

"The existence loves you, otherwise you would not be here. Relax into your being, you are cherished by the whole."

OSHO

CS CamScanner

10:22 am 16 KB/s 91%

21 1

अंग्रेजी में शब्द है, पर्सनेलिटी। वह बहुत कीमती शब्द है। यूनान में जो नाटक होते थे, उन नाटकों में पात्रों को अपने चेहरे पर एक मुखौटा लगाना पड़ता था। उस मुखौटे का नाम परसोना होता था। और उसी शब्द परसोना से पर्सनैलिटी बना है। पर्सनैलिटी का अर्थ है, ओढ़ा हुआ व्यक्तित्व, ओढ़ा हुआ मुखौटा। जो आप नहीं हैं, वैसा चेहरा।

तो जो व्यक्ति अपने भीतर की प्रकृति के विपरीत होता है, अनिवार्य रूप से उसे उस प्रकृति के विपरीत एक मुखौटा निर्मित करना होता है। एक व्यक्तित्व की खोल अपने चारों तरफ बना लेता है। यह खोल अंतरात्मा से मिलन न होने देगी। निसर्ग आपके खिलाफ नहीं है, लेकिन आपका व्यक्तित्व आपके खिलाफ है। और हर आदमी व्यक्तित्व बनाए हुए है, और उसको मजबूत किए चला जाता है।

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं कि आत्मा को जानना है, लेकिन व्यक्तित्व को छोड़ने की जरा भी तैयारी नहीं होती। वे अपने व्यक्तित्व को पकड़ कर ही आत्मा को पाना चाहते हैं! यह असंभव है। इस व्यक्तित्व को ठीक से समझ लेना जरूरी है, तो ही आप आत्मा की खोज में आगे बढ़ सकेंगे, अन्यथा आप हमेशा भटकते रहेंगे। क्योंकि जिसको आपने पकड़ा है, वही तो बाधा है।

ऐसा समझ लें कि एक आदमी जेल के बाहर आना चाहता है, और जेल की दीवालों को जोर से पकडे हुए है, और कहता है कि ये दीवालें मैं कभी न छोड़ूंगा, क्योंकि इन दीवालों के साथ मैं इतने दिन रहा हूं। अपनी ही जंजीरों को तोड्ने के लिए राजी नहीं है! कहता है, ये मेरे आभूषण हैं, ये बड़े कीमती हैं! और कहता है, इन आभूषणों के बिना तो मैं सो भी न सकूंगा! इनके बिना तो मुझे नींद भी न आएगी। इनके बिना तो मुझे खाली खाली, नंगापन मालूम पड़ेगा! इनको मैं नहीं छोड़ सकता। लेकिन मुझे स्वतंत्र होना है, मुझे मुक्त होना है! आपकी अवस्था ऐसी ही है। जिसको आप बचाना चाहते हैं, वही है दीवाल। और उसको तोड़े बिना आप अंतरात्मा में प्रवेश न कर पाएंगे।

'अपनी अंतरात्मा का पूर्णरूप से सम्मान करो। क्योंकि तुम्हारे हृदय के द्वारा वह प्रकाश प्राप्त होता है, जो जीवन को आलोकित कर सकता है

CS CamScanner

10:20 am 0 KB/s 91%

मैं शेपर्ड की एक पुस्तक बियान्ड सेक्स थैरेपी (सेक्स उपचार के पार) पढ़ रहा था

उसमें इससे सम्बंधित वह एक प्रसंग का जिक्र करता है
वह एक युवा स्त्री के प्रेम में पड़ गया था
कुछ मित्र उससे मिलने के लिए आए लेकिन वह पूरे समय उस स्त्री के साथ बातचीत करता हुआ उसके ही साथ बना रहा, जैसे मानो मित्रों में उसकी कोई दिलचस्पी ही न हो

उन्होंने कुछ अपमान का अनुभव करते हुए उस स्त्री से कहा–" हम आपकी अपेक्षा शेपर्ड को अधिक अच्छी तरह से जानते हैं
यह कई स्त्रियों के साथ प्रेम करता रहा है,
एक स्त्री जाती थी और दूसरी आती थी
इसलिए स्मरण रखियेगा कि देर–सबेर यह किसी दूसरी स्त्री में दिलचस्पी लेने लगेगा, तब आप क्या करेंगी?"
उस स्त्री ने कहा–" मैं ईर्ष्या का अनुभव करूंगी, लेकिन वह मेरी अपनी समस्या होगी, लेकिन मैं यह चाहती हूं कि यह मेरा आदमी हर तरह के प्रेम को जाने, अपने मरने से पूर्व, जो कुछ भी सम्भव है, वह सभी कुछ जाने
मैं यदि ईर्ष्या भी करूंगी तो वह मेरी अपनी समस्या है
उसे मुझे सुलझाना होगा और उससे बाहर आना होगा
उससे उनका कुछ भी लेना–देना नहीं होगा

जहां तक उनका सम्बंध है, मेरी यही इच्छा है कि उन्हें सब कुछ जानना चाहिए जो वह मृत्यु से पहले जानना चाहते हैं,
क्योंकि एक बार जो जाता है वह बस हमेशा के लिए ही चला जाता है
मैं चाहती हूं कि जितना भी सम्भव हो, वह उतनी ही अधिक अनुभव की सम्पदा लेकर जीये
यदि ईर्ष्या जैसी या अन्य जो भी समस्याएं आती हैं, तब वे मेरी अपनी समस्याएं होंगी।"

यही है वह, जिसे प्रेम कहते हैं
वह प्रेम और ईर्ष्या के बीच का अंतर भली भांति जानती है
इस बारे में उसे कोई भ्रम नहीं है

CS CamScanner

कर्मों का फल

एक बार की कथा है, देवऋषि नारद और ऋषि अन्गारा कहीं जा रहे थे। रास्ते में उनकी नजर एक मिठाई की दुकान पर पड़ी। दुकान के नजदीक ही झूठी पतलों का ढेर लगा हुआ था। उस झूठन को खाने के लिए जैसे ही एक कुत्ता आता है, बैसे ही उस दुकान का मालिक उसको जोर से डन्डा मारता है। डन्डे की मार खा कर कुत्ता चीखता हुआ वहां से चला जाता है।

ये दृश्य देख कर, देवऋषि को हंसी आ गयी। ऋषि अन्गारा ने उन से हंसी का कारण पूछा, नारद बोले: हे ऋषिवर ! यह दुकान पहले एक कन्जूस व्यक्ति की थी। अपनी जिंदगी में उसने बहुत सारा पैसा इकट्ठा किया। और इस जन्म में वो कुत्ता बन कर पैदा हुआ और यह दुकान मालिक उसी का पुत्र है, देखें ! जिस के लिए उस ने बेशुमार धन इकट्ठा किया। आज उसी के हाथों से, उसे जूठा भोजन भी नहीं मिल सका। कर्मफल के इस खेल को देखकर मुझे हंसी आ गई।

मनुष्य को अपने शुभ और अशुभ कर्मों का फल जरूर मिलता है बेशक इस लिए उसे जन्मों-जन्मों की यात्रा क्यों न करनी पड़े।

जय जय श्री राधे

CamScanner

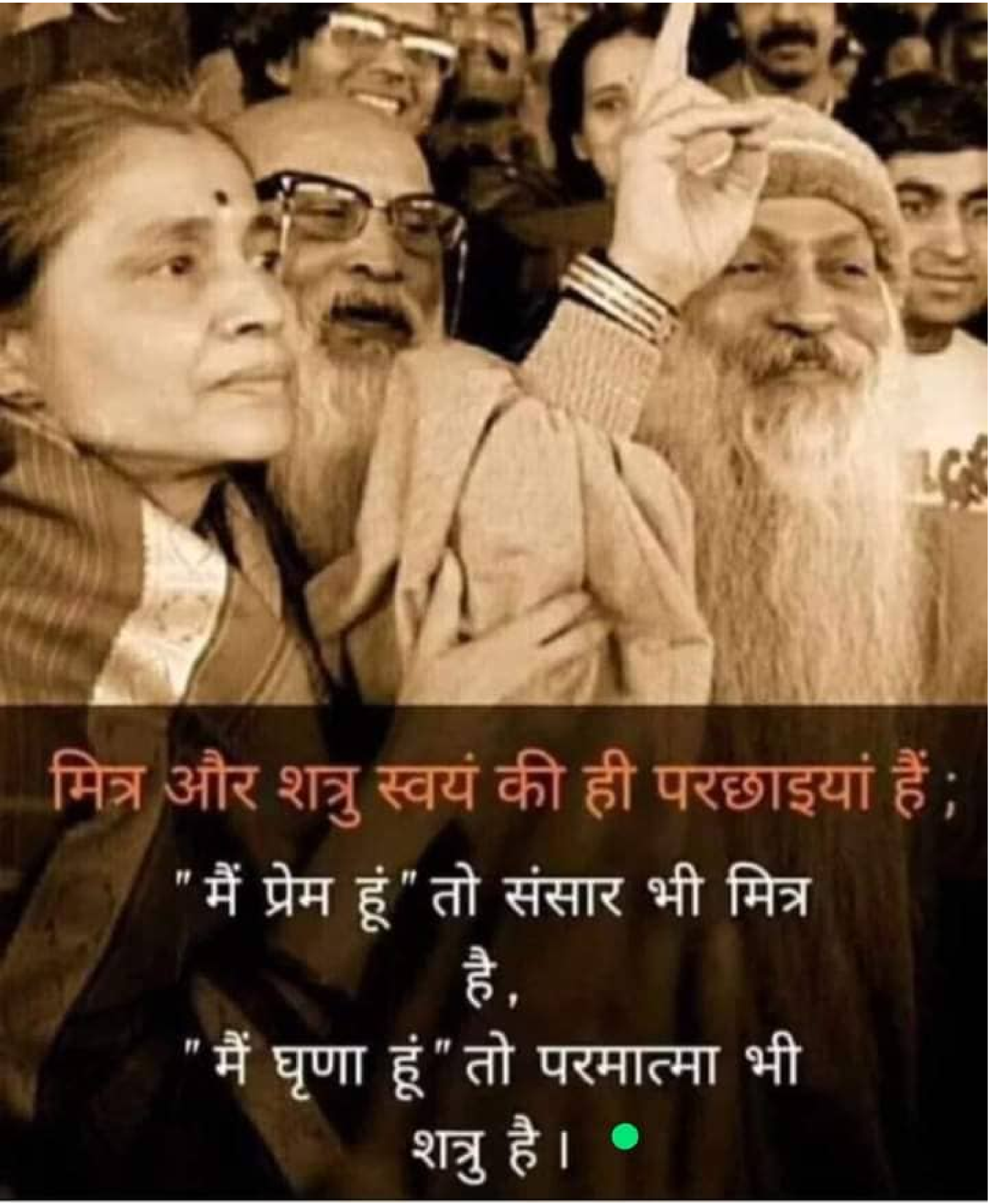

CamScanner

OSHO
दुख पर ध्यान दोगे तो हमेशा दुखी रहोगे।
सुख पर ध्यान देना शुरू करो।
दरअसल, तुम जिस पर ध्यान देते हो
वही चीज सक्रिय हो जाती है।
FRAGRANCE
www.oshofragrance.org

CamScanner

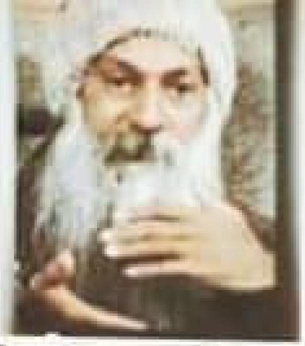

तुम किसी को स्नेह करते हो तो कहते हो,
मेरी माँ है, इसलिए प्रेम करता हूं। तुम्हारे प्रेम में
'इसलिए' है। मेरी पत्नी है इसलिए प्रेम करता हूं।
मेरा बेटा है। थोड़ा समझो। तुम आज तक अपने
बेटे के लिए अपनी जान देने को तैयार थे।
तुम्हारा बेटा है। पढ़ाते थे, लिखाते थे, श्रम करते
थे, मेहनत करते थे, बड़ी आकांक्षा करते थे, बड़ा
हो, यशस्वी हो, सफल हो। और आज तुम्हें
अचानक एक पत्र हाथ में लग गया पुरानी संदूक
टटोलते हुए, जिससे पता चला कि बेटा तुम्हारा
नहीं है, तुम्हारी पत्नी किसी के प्रेम में थी,
उसका है। इसी क्षण तुम्हारा प्रेम समाप्त हो
जाएगा। और यह भी हो सकता है कि पत्र
झूठा हो, बेटा तुम्हारा ही हो। लेकिन तुम्हारा
प्रेम इसी क्षण जैसे कपूर उड़ जाए, ऐसे उड़
जाएगा। प्रेम की तो बात दूर रही, अब तुम इस
बेटे को घृणा करने लगोगे, तुम चाहोगे यह मर
ही जाए तो अच्छा। यह तो एक कलंक है।
अभी क्षण भर पहले यह बेटा तुम्हारा था,
तो प्रेम था। अब तुम्हारा नहीं है तो प्रेम नहीं रहा।
तुम्हारा प्रेम बड़ा सशर्त है। मेरा है तो प्रेम,
मेरा नहीं तो प्रेम नहीं।

OSHO

CamScanner

10:13 am 77 KB/s
VoLTE 4G 92%

facebook

21 1

कुछ महान भक्ति कवियों की रचनाओं को संग्रहित करता है।
तुलसीदास, कबीर, रैदास, सूरदास, और मीरा बाई के बे... See more

rekhtabooks.com
देवनागरी में पुस्तक
भक्ति काल के कवियों का संग्रह ख़रीदिए
Order now

16

Like Comment Share

CamScanner

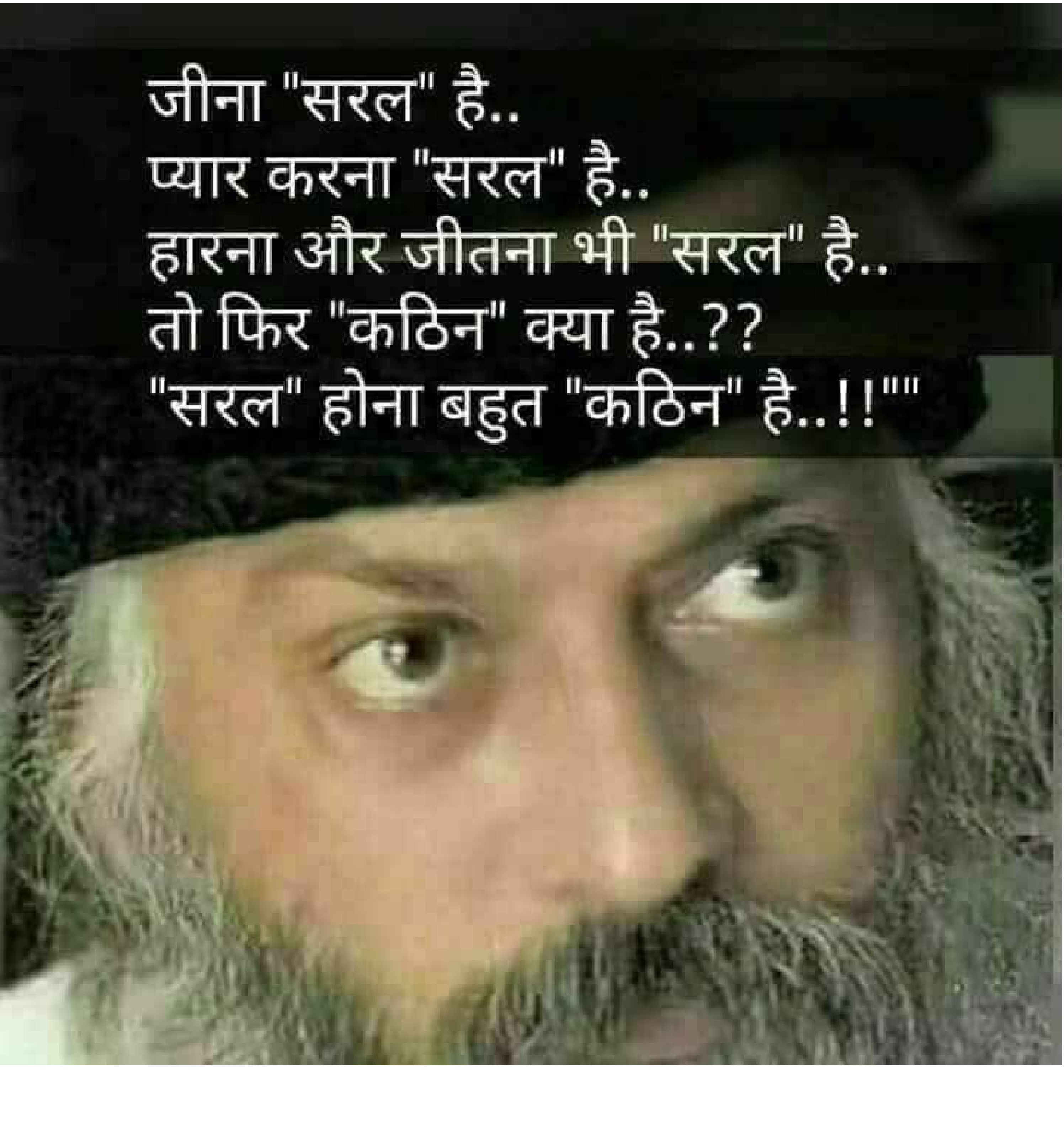

CS CamScanner

10:12 am 0 KB/s 93%

facebook

3

Like Comment Share

रजनीश ओशो की सत्य की खोज

46m ·

ध्यान विधि

जब भी तुम्हें लगे कि कोई चीज तुम्हें प्रभावित कर रही है, तुम पर हावी हो रही है, तुम्हें तुमसे दूर ले जा रही है, तुमसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो रही है -- तो गहरी श्वास लो और छोड़ो, और श्वास बाहर छोड़ने से पैदा हुए उस छोटे-से अंतराल में उस चीज की ओर देखो -- कोई सुंदर चेहरा, कोई सुंदर शरीर, कोई सुंदर मकान, या कुछ भी!

यदि तुम्हें यह कठिन लगे, अगर श्वास बाहर छोड़ने भर से ही तुम अंतराल पैदा न कर पाओ, तो एक काम और करो -- श्वास बाहर छोड़ो, औए एक क्षण को श्वास का भीतर लेना रोक लो ताकि पूरी वायु बाहर निकल जाए। रुक जाओ, भीतर श्वास मत लो; फिर उस चीज की ओर देखो।

जब वायु पूरी बाहर है, या भीतर है, जब तुमने श्वास लेना बंद कर दिया है, तो कुछ भी तुम्हें प्रभावित नहीं कर सकता। उस क्षण में तुम सेतुहीन हो जाते हो, सेतु टूट जाता है।

श्वास ही सेतु है!

CamScanner

ऊपर कौन है, जो मुझे रोक सके तुम्हें स्वर्ग भेजने से! उस आदमी ने कहा, मैं हूं। क्योंकि मैं सुख की कल्पना ही नहीं कर सकता और हर सुख को दुख में बदल लेने में मैं इतना निष्णात हो गया हूं। तुम मुझे स्वर्ग न भेज सकोगे। तुम भेजोगे, मैं नर्क बना लूंगा। मैंने सुख का स्वप्न भी नहीं देखा। सुख की कल्पना भी नहीं कर सकता हूं, तुम मुझे स्वर्ग कैसे भेजोगे?

और कहते हैं, मामला वहीं अटका है। परमात्मा सोच रहा है, इस आदमी को कहां भेजें? नर्क भेज नहीं सकता, क्योंकि नर्क में वह रहा ही है। स्वर्ग भेज नहीं सकता, क्योंकि स्वर्ग भेजने का उपाय नहीं है।

इस कहानी को ध्यानपूर्वक समझने की कोशिश करना। यह किसी और आदमी की कहानी नहीं, सभी आदमियों की कहानी है। तुम वहीं भेजे जा सकते हो, जहां तुम जाना चाहते हो। और अगर सुख की तुम्हारे जीवन में स्वप्न की भी क्षमता खो गयी है, तो तुम्हें कोई भी स्वर्ग नहीं दे सकता। स्वर्ग कोई दान नहीं। स्वर्ग किसी के अनुग्रह से न मिलेगा। अर्जित करना होगा।

सुख भी सीखना पड़ता है। सुख का स्वाद भी सीखना पड़ता है। और अगर तुम स्वाद को न जानो, तो सुख पड़ा रहेगा तुम्हारी थाली में, तुम उसे चख न सकोगे, तुम उसे अपना खून-मांस-मज्जा न बना सकोगे, वह तुम्हारी रक्त की धार में न बह सकेगा, वह तुम्हारे जीवन की रसधार न बनेगी। और दुख भी तुम्हारा जीवन का ढंग है। तुम्हारे हाथ में जो पड़ जाता है, तुम दुख में बदल देते हो।

जो देखते हैं दूर और गहरा, उनसे अगर पूछो, जागे हुओं से पूछो, तो वे कहेंगे, सुख और दुख होते ही नहीं। तुम्हीं हो। वही घटना सुख बन जाती है किसी के हाथ में, वही घटना दुख बन जाती है। कोई उसी घटना को दुर्भाग्य बना लेता है, कोई उसी को सौभाग्य बना लेता है। सारी बात तुम पर निर्भर है। तुम आत्यंतिक निर्णायक हो। परमात्मा भी तुम्हें स्वर्ग नहीं भेज सकता, नर्क नहीं भेज सकता। तुम जहां होना चाहते हो, वहीं हो और वहीं रहोगे। तुम्हारी स्वतंत्रता अंतिम है। तुम अपने मालिक हो।

CS CamScanner

हिम्मत करो! भयभीत न रहो! जिंदगी चार दिन की है इस चार दिन की जिंदगी में क्या भय करना! किसका भय करना! बहुत से बहुत मौत ही तो हो सकती है न! मौत तो होनी ही है। इसलिए मौत एक ऐसी चीज़ है जिसको कि बिल्कुल एक किनारे रख दो। उसकी तो कोई कीमत ही मत मानो। जो होना ही है वो होना ही है! उसके लिए क्या फिकर करनी? जीने का मज़ा क्यों छोड़ो? जीने की पूर्णता क्यों छोड़ो? जीने का निखार क्यों छोड़ो? हाँ, अगर ऐसा होता कि मौत से सदा के लिए बच सकते! तो बात सोचने की भी थी - विचारने की भी थी। बच तो सकोगे नहीं! ऐसे भी मरोगे - वैसे भी मरोगे। मिट जाना है - मिट्टी में गिर जाना है। इसके पहले कि मिट्टी में गिरो - अपने भीतर अमृत को खोज लेना आवश्यक है.!

❤❤ओशो❤❤

CS CamScanner

पंख झड़ गए थे, पँजे गिर गए थे, अंधा भी हो गया था, बस कंकाल मात्र ही शेष रह गया था !

सिकन्दर ने कहा, 'तू रोकने वाला कौन...?'

🦅 *कौवे ने उत्तर दिया, 'मेरी कहानी सुन लो...मैं अमृत की तलाश में था और यह गुफा मुझे भी मिल गई थी !, मैंने यह अमृत पी लिया !*

🦅 *अब मैं मर नहीं सकता, पर मैं अब मरना चाहता हूँ... !*
🦅 *देख लो मेरी हालत...अंधा हो गया हूँ, पंख झड़ गए हैं, उड़ नहीं सकता, पैर गल गए हैं, एक बार मेरी ओर देख लो फिर उसके बाद यदि इच्छा हो तो अवश्य अमृत पी लेना!*

🦅 *देखो...अब मैं चिल्ला रहा हूँ...चीख रहा हूँ...कि कोई मुझे मार डाले, लेकिन मुझे मारा भी नहीं जा सकता !*

🦅 *अब प्रार्थना कर रहा हूँ परमात्मा से कि प्रभु मुझे मार डालो !*

🦅 *मेरी एक ही आकांक्षा है कि किसी तरह मर जाऊँ !*

🦅 *इसलिए सोच लो एक बार, फिर जो इच्छा हो वो करना.'!*

🦅 *कहते हैं कि सिकन्दर सोचता रहा....बड़ी देर तक.....!*

आखिर उसकी उम्र भर की तलाश थी अमृत ! 💧

उसे भला ऐसे कैसे छोड़ देता !

सोचने के बाद फिर चुपचाप गुफा से बाहर वापस लौट आया, बिना अमृत पिए !

सिकन्दर समझ चुका था कि जीवन का आनन्द ✨उस समय तक ही रहता है, जब तक हम उस आनन्द को भोगने की स्थिति में होते हैं!

You

CamScanner

एकान्त

उस एक का भी अन्त है

जो नहीं रहा वही हो तुम

CamScanner

इस दुनिया में कुछ पाना हो तो दौड़ना जरूरी है,और परमात्मा को पाना हो तो ठहरना जरूरी है, दौड़ने से वस्तुएं मिलती है और ठहरने से वस्तुओं का मालिक मिलता है

दौड़ना संसार की विधि है और ठहरना धर्म की, दौड़े तो संसार में बहुत कुछ पाओगे लेकिन परमात्मा को चूक जाओगे,और सारा जगत मिल जाए पर परमात्मा ना मिले तो क्या मिला

@Osho Gyan Hindi English

CamScanner

कोई शिक्षक, कोई गुरु, कोई मित्र, कोई परिवार, कोई समाज, कोई संस्था, कोई देश, कोई सम्प्रदाय, कोई धर्म, कोई शास्त्र, और कोई ईश्वर तुम्हें कुछ नहीं दे सकता। तुम्हें ख़ुद ही अपने बूते पर अपनी पूरी सजगता से जीना होगा. मुझे इसकी परवाह नहीं कि कोई मेरी बात समझता है या नहीं.

CamScanner

6:14 pm 3 KB/s ⏰ VoLTE 4G 50%

Like Comment Share

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg
Parshotam Rai · 6h ·

🌻 सुंदर पंक्ति 🌻

झाँक रहे है इधर उधर सब।
अपने अंदर झांकें कौन ?
ढूंढ़ रहे दुनियाँ में कमियां ।
अपने मन में ताके कौन ?
दुनियाँ सुधरे सब चिल्लाते ।
खुद को आज सुधारे कौन ?
पर उपदेश कुशल बहुतेरे ।
खुद पर आज विचारे कौन ?
हम सुधरें तो जग सुधरेगा
यह सीधी बात स्वीकारे कौन?"

👍 7

Like Comment Share

आध्यात्मिक और प्रेरणादायक कहानियां
Satish Kumar Garg · 59m ·

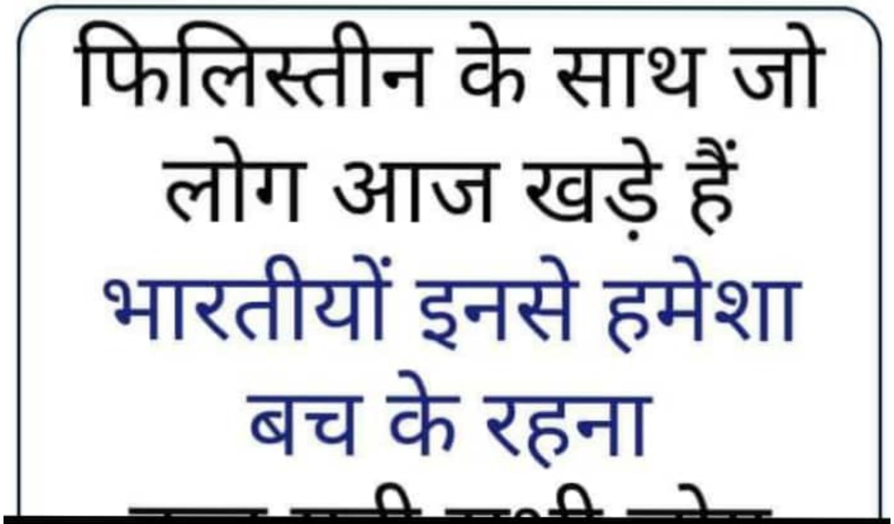

6:13 pm 0 KB/s 51%

International Meditation Resort.

3h ·

इस जगत में जिस व्यक्ति के पास ध्यान नहीं है, उसको एक लाभ है, उसके पास खोने को कुछ नहीं है। और जिस व्यक्ति के पास ध्यान है, उसके लिए एक खतरा है, उसके पास खोने को कुछ है। और जितनी ध्यान की संपदा बढ़ेगी, उतना ही खतरा बढ़ता जाता है। और मन अपनी पूरी ताकत लगाता है, क्योंकि ध्यान का बढ़ना मन की मृत्यु है। कौन मरना चाहता है?

मन अपनी सुरक्षा के सब आयोजन करेगा। हजार तरह से समझाएगा--कि किस झंझट में पड़ गए हो? शांत बैठोगे तो मन कहेगा, ऐसे बैठने से क्या होगा? क्या बुद्धू बने बैठे हो! अरे, कुछ करो! उठो! इतनी देर में तो कुछ कमा लेते! कुछ मजा कर लेते! कुछ नहीं था, सिनेमा हो आते, क्लब-घर पहुंच जाते। दुनिया राग-रंग में मजा कर रही है, तुम यहां बैठे आंख बंद किए। बुद्धू बने हो?

बुद्ध शब्द से ही बुद्धू बना है, खयाल रखना। क्योंकि बुद्ध ने आंखें बंद कर लीं, राज-पाट छोड़ दिया। तो लोग कहने लगे, हो गया बुद्धू। तब से वह शब्द निर्मित हुआ है। शब्द बड़ा कीमती है। बुद्ध से आया है। अब भी लोग कहते हैं, अगर तुम ध्यान करने बैठोगे, घर के ही लोग कहने लगेंगे, क्या बुद्धूपन में पड़े हो? समय कहां है? कुछ काम करो, कुछ धाम करो।

इन्हीं लोगों ने इस तरह की कहावतें गढ़ रखी हैं--कि खाली मन शैतान का घर; कि शैतान का कारखाना। बात बिलकुल उलटी है। जब खाली मन होता है, तब तुम परमात्मा के मंदिर होते हो, शैतान का कारखाना नहीं। चलता मन शैतान का कारखाना। कारखाना तो चलता ही होना चाहिए, तभी हो सकता है! खटर-पटर होती रहे, शोरगुल मचता रहे, तो ही कारखाना हो सकता है। कारखाना और सूने मन में कैसे होगा? शून्य का कहीं कोई कारखाना हुआ है? शून्य में तो मंदिर होता है। जब तुम शून्य बैठोगे, मन कहेगा, कुछ करो! हजार-हजार बातें उठाएगा, हजार वासनाएं उठाएगा, पुरानी यादें दिलाएगा, पुराने मीठे सपनों को खूब बड़ा-बड़ा करके बताएगा। मन बड़ा चालबाज है। अतिशयोक्तियां करेगा।

CamScanner

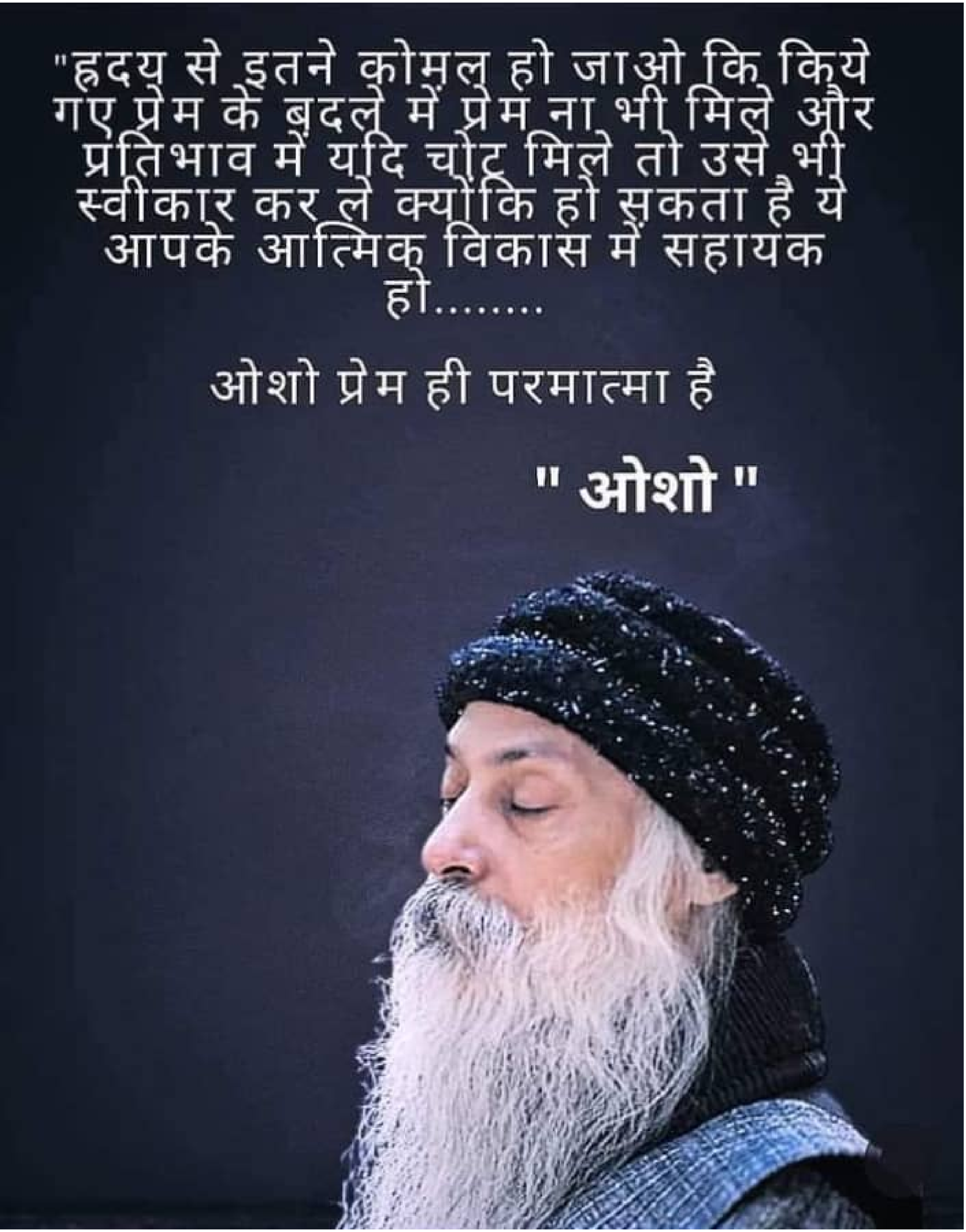
"ह्रदय से इतने कोमल हो जाओ कि किये गए प्रेम के बदले में प्रेम ना भी मिले और प्रतिभाव में यदि चोट मिले तो उसे भी स्वीकार कर ले क्योंकि हो सकता है ये आपके आत्मिक विकास में सहायक हो........
ओशो प्रेम ही परमात्मा है
" ओशो "

CamScanner

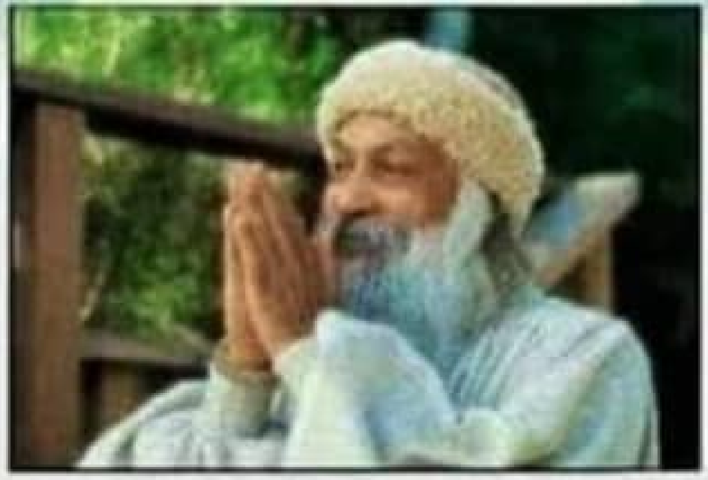

जिसने तुम्हारा अपमान किया है,
वह उसकी मौज है। उसे जो ठीक लगा,
उसने किया। जिसने तुम्हारा सम्मान
किया है, उसकी मौज। उसे जो
ठीक लगा उसने किया।
जो उसके पास था, उसने दिया।
तुम अपमान और सम्मान दोनों को
एक ही धन्यवाद के भाव से स्वीकार
कर लेना, दोनों का आभार प्रगट कर
देना और आंख मूंदकर भीतर
डुबकी लगा लेना। "ओशो"

CS CamScanner

बच्चे में एक खूबी है कि जो भी घटता वह क्षण के पार नहीं जाता। तुमने बच्चे को डांट दिया, वह नाराज हो गया, आंखें उसकी लाल हो गईं, पैर पटकने लगा, क्रोध से भर गया। तुमसे कहा, अब सदा के लिए तुमसे दुश्मनी हो गई। अब कभी तुम्हारा चेहरा न देखेंगे। और घड़ी भर बाद बाहर घूम कर आया, सब भूल— भाल गया, तुम्हारी गोद में बैठ गया।उसमें जो भी होता वह क्षण के लिए है। रुकता नहीं, बह जाता है। पकड़ कर नहीं रह जाता। गांठ नहीं बनती है बच्चे में, तुममें गांठ बंध जाती है। किसी ने अपमान कर दिया, गांठ बंध गई। अब यह हो सकता है, बीस साल पहले अपमान किया था, गांठ अभी भी बंधी है। पचास साल पहले किसी ने गाली दी थी, गांठ अभी भी बंधी है। गाली देने वाला जा चुका, गांठ रह गई। तुम दुखी और रुग्ण हो तो अपनी इन गांठो के कारण। छोड़ो अतीत हो जाओ बच्चे जैसे सरल और निर्दोष।

CamScanner

इस संसार में तो उन्हीं को वापस आना पड़ता है, जिनका अनुभव आधा रह गया, कच्चा रह गया। यह संसार तो विद्यापीठ है। यहां विद्यार्थी जो अनुत्तीर्ण हो जाते हैं, वे ही वापस लौट आते हैं। जो उत्तीर्ण हो जाते हैं, वे मुक्त हो जाते हैं। उन उत्तीर्ण पुरुषों को ही हमने बुद्ध, सिद्ध, जिन कहा है।
#- कहे कबीर दीवाना, प्रवचन-११, ओशो

CamScanner

शादी भी हो गई। शादी में इनकार नहीं किया।
इसको मैं खूबी कहता हूं रामकृष्ण की।
इसलिए रामकृष्ण से मुझे प्रेम है, एक लगाव है।
यह आदमी अदभुत है। शादी करने में इनकार
ही नहीं किया। नोट देख कर आंख बंद करने वाला
आदमी नहीं है यह। अरे शादी से भी नहीं भागा।
मगर शादी भी किस मस्ती से की! कहा कि
मेरी मां है। और फिर जीवन भर मां ही माना।
मां ही कहते थे वे शारदा को।

CamScanner

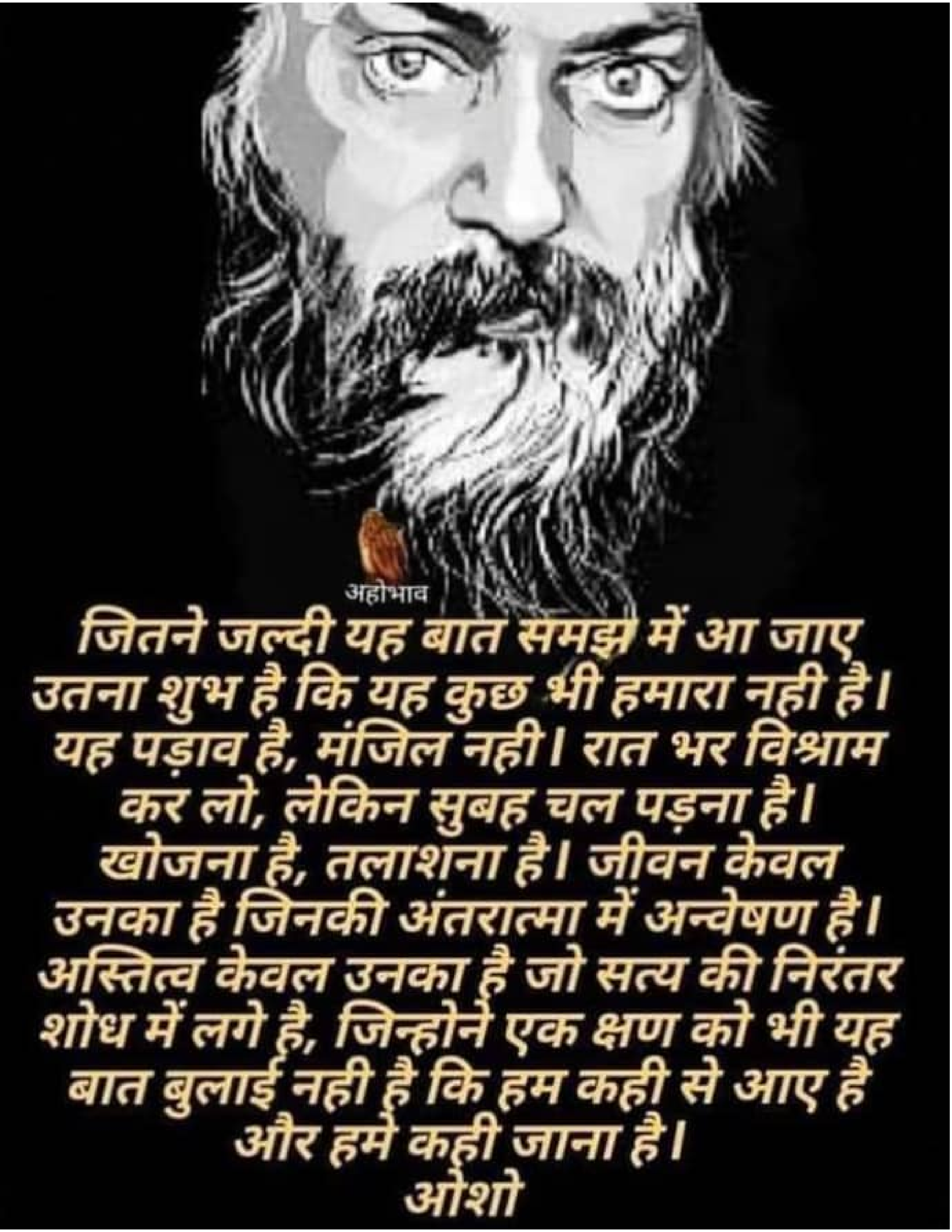
अहोभाव
जितने जल्दी यह बात समझ में आ जाए
उतना शुभ है कि यह कुछ भी हमारा नही है।
यह पड़ाव है, मंजिल नही। रात भर विश्राम
कर लो, लेकिन सुबह चल पड़ना है।
खोजना है, तलाशना है। जीवन केवल
उनका है जिनकी अंतरात्मा में अन्वेषण है।
अस्तित्व केवल उनका है जो सत्य की निरंतर
शोध में लगे है, जिन्होने एक क्षण को भी यह
बात बुलाई नही है कि हम कही से आए है
और हमें कही जाना है।
ओशो

CamScanner

5:44 pm 0 KB/s VoLTE 4G 5%

दिशा वही रहती है!
लोग सोचते हैं कि जो आत्महत्या करते हैं, वे जीवन के खिलाफ हैं -- यह सत्य नहीं है। वे जीवन के प्रति बहुत अधिक लालसा रखते हैं, वे जीवन के लिए बहुत अधिक वासना रखते हैं। और चूँकि जीवन उनकी वासनायें पूरी नहीं करता, तो गुस्से में, तनाव, विषाद और हताशा में वे स्वयं को नष्ट कर लेते हैं।
मैं तुम्हें आत्महत्या का सही तरीका सिखाऊँगा। देह को नष्ट करके नहीं, देह तो अस्तित्व का सुंदरतम उपहार है! मन अस्तित्व का उपहार नहीं है, मन समाज से संस्कारित है। देह उपहार है, और आत्मा उपहार है -- और इन दोनों के बीच समाज तुम्हारे साथ तरकीब खेलता है; इसलिये समाज ने मन को बनाया। यह तुम्हें महत्वाकांक्षा देता है, यह तुम्हें ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, हिंसा देता है, यह तुम्हें हर तरह की गंदी बीमारियाँ देता है। लेकिन इस मन का अतिक्रमण किया जा सकता है, मन को एक तरफ रखा जा सकता है। यह मन जरूरी नहीं है!
मैं तुम्हारे सामने बैठा हूँ, और अपने अनुभव से तुम्हें कह रहा हूँ, अपने अधिकार से कह रहा हूँ कि मन को एक तरफ रखा जा सकता है। यह बड़ा आसान है, तुम्हें बस इसका तरीका आना चाहिये।
और, आत्महत्या में मरना इतना पीड़ादायी है, क्योंकि यह प्राकृतिक बात नहीं है, यह सर्वाधिक अप्राकृतिक बात है। कभी भी कोई वृक्ष आत्महत्या नहीं करता -- सिर्फ आदमी करता है,प्रकृति आत्महत्या के बारे में कुछ नहीं जानती, यह आदमी की खोज है! यह सबसे अधिक भद्दा और कुरूप कृत्य है। और जब कभी तुम स्वयं के साथ कोई बहुत ही भद्दी और कुरूप बात करते हो तो तुम आशा नहीं रख सकते कि तुम्हें आगे एक बेहतर जीवन मिलेगा। तुम मन की बेहद निकृष्ट दशा में मरोगे, और तुम बहुत ही निकृष्ट गर्भ में प्रवेश कर लोगे।
लेकिन आत्महत्या की जरूरत ही क्या है? जरा प्रश्न करो!
तुम निश्चित ही गलत ढंग से जीये हो, इसी कारण जीवन एक सुंदर गीत नहीं बना। तुम निश्चित ही मूर्खतापूर्ण ढंग से जीये हो, मूढ़तापूर्वक, अज्ञानी की तरह -- इसी कारण जीवन में उत्सव नहीं आया। तुम सितारों के साथ आनंद में नाच नहीं सकते, और न फूलों के साथ नाच सकते, और न हवाओं के साथ, न बरसात में मस्त होकर नाच सकते -- क्योंकि तुम गलत तरीके से जीये हो, जो तुम्हारे जैसे ही लोगों ने तुम्हारे ऊपर थोप दिये हैं।

CamScanner

5:43 pm 0 KB/s VoLTE 4G 5%

होना चाहते थे -- अब इस जीवन को ही तुम नष्ट कर देना चाहते हो। लोग आत्महत्या इसलिये नहीं करते हैं कि वे जीवन से सच में थक गये हैं, बल्कि इस कारण करते हैं क्योंकि यह जीवन उनकी मांगें पूरी नहीं कर रहा। लेकिन कभी भी किसी की मांगें जीवन पूरी नहीं करता है। तुम हमेशा कुछ न कुछ चूकते ही चले जाओगे। यदि तुम्हारे पास धन है, पर हो सकता है कि तुम सुंदर न हो। यदि तुम सुंदर हो, तो हो सकता है कि तुम बुद्धिमान न हो। यदि तुम बुद्धिमान हो, पर हो सकता है कि तुम्हारे पास धन न हो। और, हो सकता है कि कोई हर चीज पा ले, तब भी यह कैसे मदद करेगा? तुम अतृप्त रहोगे!

हर जीवन में यही बातें दोहराती जाती हैं, देह बदल जाती है, लेकिन दिशा वही रहती है!

लोग सोचते हैं कि जो आत्महत्या करते हैं, वे जीवन के खिलाफ हैं -- यह सत्य नहीं है। वे जीवन के प्रति बहुत अधिक लालसा रखते हैं, वे जीवन के लिए बहुत अधिक वासना रखते हैं। और चूँकि जीवन उनकी वासनायें पूरी नहीं करता, तो गुस्से में, तनाव, विषाद और हताशा में वे स्वयं को नष्ट कर लेते हैं।

मैं तुम्हें आत्महत्या का सही तरीका सिखाऊँगा। देह को नष्ट करके नहीं, देह तो अस्तित्व का सुंदरतम उपहार है! मन अस्तित्व का उपहार नहीं है, मन समाज से संस्कारित है। देह उपहार है, और आत्मा उपहार है -- और इन दोनों के बीच समाज तुम्हारे साथ तरकीब खेलता है; इसलिये समाज ने मन को बनाया। यह तुम्हें महत्वाकांक्षा देता है, यह तुम्हें ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, हिंसा देता है, यह तुम्हें हर तरह की गंदी बीमारियाँ देता है। लेकिन इस मन का अतिक्रमण किया जा सकता है, मन को एक तरफ रखा जा सकता है। यह मन जरूरी नहीं है!

मैं तुम्हारे सामने बैठा हूँ, और अपने अनुभव से तुम्हें कह रहा हूँ, अपने अधिकार से कह रहा हूँ कि मन को एक तरफ रखा जा सकता है। यह बड़ा आसान है, तुम्हें बस इसका तरीका आना चाहिये।

और, आत्महत्या में मरना इतना पीड़ादायी है, क्योंकि यह प्राकृतिक बात नहीं है, यह सर्वाधिक अप्राकृतिक बात है। कभी भी कोई वृक्ष आत्महत्या नहीं करता -- सिर्फ आदमी करता है,प्रकृति आत्महत्या के बारे में कुछ नहीं जानती, यह आदमी की खोज है! यह सबसे अधिक भद्दा और कुरूप कृत्य है। और जब कभी तुम स्वयं के साथ कोई बहुत ही भद्दी और कुरूप बात करते हो तो तुम आशा नहीं रख सकते कि तुम्हें आगे एक बेहतर जीवन मिलेगा। तुम मन की बेहद निकृष्ट दशा में मरोगे

CamScanner

5:42 pm 0 KB/s 4G 5%

तुम आत्महत्या के बारे में क्यों सोचते हो? क्या तुम पागल हो या और कुछ?

मुझे पता है कि तुम जीवन से ऊब गये हो। यदि तुम सचमुच ऊब गये हो तो आत्महत्या नहीं करो, क्योंकि आत्महत्या तुम्हें फिर इसी जीवन में घसीट लायेगी -- और हो सकता है कि इससे भी अधिक भद्दा जीवन तुम्हें मिले, जैसाकि अभी तुम्हारा है; क्योंकि आत्महत्या तुम्हारे भीतर और भी अधिक गंदगी पैदा कर देगी।

आत्महत्या करना अस्तित्व का अनादर है! अस्तित्व ने तुम्हें विकसित होने के लिये जीवन का अवसर दिया, और तुम इस अवसर को यूँ ही व्यर्थ गँवा देते हो।

और जब तक कि तुम विकसित नहीं होते और विकसित होकर बुद्ध नहीं बन जाते, तब तक तुम जीवन में बार-बार फेंके जाओगे। लाखों बार पहले भी यह हो चुका है -- अब समय है, अब जागो! इस अवसर को चूको मत!

यहाँ मेरे साथ रहकर असली आत्महत्या की कला सीखो। असली कला में अपनी देह को नष्ट नहीं किया जाता है। देह सुंदर है, देह ने कुछ भी गलत नहीं किया है। यह तो मन है, जो असुंदर है। आत्मा भी सुंदर है, लेकिन देह और आत्मा के बीच कुछ है, जो न तो देह है, न ही आत्मा -- यह बीच की घटना ही मन है!

यह मन ही है, जो तुम्हे बार-बार गर्भ में घसीट लाता है!

जब तुम मरते हो, यदि तुम आत्महत्या करते हो, तब तुम जीवन के बारे में ही सोच रहे होओगे। आत्महत्या करने का मतलब है कि तुम जीवन के बारे में सोच रहे हो। तुम ऊब चुके हो, जीवन से थक चुको हो, तुम पूरा अलग ही जीवन चाहते हो -- इसी कारण तुम आत्महत्या कर रहे हो, न कि तुम जीवन के खिलाफ हो। तुम सिर्फ 'इस' जीवन के खिलाफ हो।

हो सकता है कि जैसे तुम हो, वैसा तुम नहीं चाहते हो -- हो सकता है कि तुम सिकंदर, नेपोलियन या हिटलर बनना चाहते हो, हो सकता है कि तुम इस दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति बनना चाहते हो, और तुम हो नहीं! यह जीवन असफल हो गया, और तुम प्रसिद्ध होना चाहते थे, सफल होना चाहते थे -- अब इस जीवन को ही तुम नष्ट कर देना चाहते हो। लोग आत्महत्या इसलिये नहीं करते हैं कि वे जीवन से सच में थक गये हैं, बल्कि इस कारण करते हैं क्योंकि यह जीवन उनकी मांगें पूरी नहीं

CamScanner

5:41 pm 75 KB/s 5%

#viralreelsシ #viralreels #viralreelsfb #viralreelsfacebook #viralvideoreels #explorereels #explorereel #v... See more

382 11 comments • 158 shares • 8.3K views

Like Comment Share

CamScanner

5:39 pm 2 KB/s VoLTE 4G 5%

"#अर्धनारीश्वर का गूढ़तम अर्थ"

आपका वीर्य-कण दो तरह की आकांक्षा रखता है। एक आकांक्षा तो है बाहर की स्त्री से मिलकर।

फिर एक नए जीवन की पूर्णता पैदा करने की एक और गहन आकांक्षा है, जिसको हम अध्यात्म कहते है, वह आकांक्षा है, स्वयं के भीतर की छिपी स्त्री या स्वयं के भीतर छिपे पुरूष से मिलने की।

अगर बाहर की स्त्री से मिलना होता है, तो संभोग घटित होता है। वह भी सुखद है, क्षण भर के लिए।

अगर भीतर की स्त्री से मिलना होता है, तो समाधि घटित होती है। वह महासुख है, और सदा के लिए। क्योंकि बाहर की स्त्री से कितनी देर मिलेगा? देह ही मिल पाती है, मन नहीं मिल पाते, मन भी मिल जाए, तो आत्मा नहीं मिल पाती। और सब भी मिल जाए तो मिलन क्षण भर ही हो सकता है।

भीतर की स्त्री से मिलना शाश्वत हो सकता है। बाहर की स्त्री से मिलना है, तो वीर्य-कण की जो देह का मिलन तो देह के सहारे ही हो सकता है। अगर भीतर की स्त्री से मिलना है तो देह की कोई जरूरत नहीं है। वीर्य-कण की देह तो अपने केंन्द्र में, काम-केंद्र में पड़ी रह जाती है; और वीर्य-कण की ऊर्जा उससे मुक्त हो जाती है वही ऊर्जा भीरत की स्त्री से मिल जाती है।

इस मिलन की जो अत्यांतिक घटना है, वह सहस्त्रार में घटित होती है। क्योंकि सहस्त्रार ऊर्जा का श्रेष्ठतम केंद्र है, और काम केंद्र देह का श्रेष्ठतम केंद्र है। ऊर्जा शुद्ध हो जाती है सहस्त्रार में पहुंच कर; सिर्फ ऊर्जा रह जाती है। प्योर इनर्जी।

और सहस्त्रार में आपकी स्त्री प्रतीक्षा कर रही है। और आप अगर स्त्री हैं, तो सहस्त्रार में आपका पुरूष आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यह मिलन भीतर मिलन है। इस मिलन को ही हमने अर्धनारीश्वर कहा है।

ओशो🔥🌼🩸🌷🌳🌸

CamScanner

5:33 pm 0 KB/s 4G 6%

तुम ध्यान रखना, कहते हो—मैं तो प्रेम से बहुत पीड़ित हो चुका हूं! तो जरा तलाश करना। प्रेम के कारण? प्रेम के कारण कोई कभी पीड़ित नहीं होता, प्रेम के साथ कुछ और जुड़ा होगा, कुछ और लगा होगा; प्रेम का नाम होगा, भीतर कुछ और होगा—अहंकार होगा, ईर्ष्या होगी, परिग्रह का भाव होगा, मालकियत होगी। तो फिर तुम कष्ट पाओगे। और उस कष्ट के पाने के कारण तुम प्रेम से घबड़ा जाओगे और तुम कहने लगोगे—प्रेम गलत है। तब तुमने दूसरी भूल की। क्योंकि प्रेम ही प्रीति बनता और प्रीति ही भक्ति बनता, अब तुम उससे भी वंचित हुए। तुम प्रेम से भी गए और परमात्मा से भी गए। मैं तुमसे कहना चाहता हूं—ठीक से विश्लेषण करो, ठीक से निदान करो, और प्रेम के मार्ग पर जो—जो अड़चनें दूसरी हों उन्हें हटा दो, प्रेम इतना बहुमूल्य है कि उसके लिए सब कुछ कुर्बान किया जा सकता है—अहंकार, मालकियत, सब कुर्बान किया जा सकता है।

मगर दुनिया में अजीब लोग हैं। बातें प्रेम की करते हैं, और जब भी कुर्बानी का सवाल आता है तो प्रेम की कुर्बानी देते है। अगर अहंकार और प्रेम के बीच चुनना है तो तुम अहंकार चुनते हो, प्रेम नहीं चुनते। और फिर दोष भी प्रेम को देते हो!

मेरे पास रोज लोग आते हैं, कोई छोटी सी बात पति—पत्नी में हो गई और उनमें झगड़ा खड़ा हो गया। इतनी छोटी बात कि जब वे मुझे बताने आते हैं तो संकोच करते हैं, पत्नी पति से कहती है—आप ही कह दें, पति कहता है—नहीं, तुम ही कह दो। मैं पूछता हूं—बात क्या है, कहते क्यों नहीं? वे कहते है—बात इतनी छोटी है कि यहा इतने लोगों के सामने कहने में संकोच होता है। जब बात इतनी छोटी है, और तलाक तक नौबत आ पहुंची है, तो मामला क्या है? तुमने प्रेम किया ही नहीं। या किया भी तो बड़ा विषाक्त किया। और आज एक छोटी सी बात पर...।

प्रेम ने कभी पीड़ा नहीं दी। प्रेम ने सदा सुख दिया है। प्रेम ने सदा शांति दी है। प्रेम ही तो एकमात्र वस्तु है इस जगत मे जिस मे परमात्मा की थोड़ी झलक है। प्रेम ही तो एकमात्र ऊर्जा है यहा जो आदमी की बनाई हुई नहीं है। जो अकृत्रिम है, स्वाभाविक है। जो तुम्हारे प्राणो के प्राण में

CamScanner

🌹 एक झेन फकीर से किसी ने पूछा कि
तुम्हारे जीवन में इतना आनंद क्यों है?...

मेरे जीवन में क्यों नहीं? उस फकीर ने कहा: मैं अपने होने से राजी हूं और तुम अपने होने से राजी नहीं हो। फिर भी उसने कहा, कुछ तरकीब बताओ। फकीर ने कहा, तरकीब मैं कोई नहीं जानता। बाहर आओ मेरे साथ यह झाड़ छोटा है, वह झाड़ बड़ा है। मैंने कभी इन दोनों को परेशान नहीं देखा कि मैं छोटा हूं, तुम बड़े हो। कोई विवाद नहीं सुना। तीस साल में मैं यहां रहता हूं। छोटा अपने छोटे होने में खुश है, बड़ा अपने बड़े होने में खुश है; क्योंकि तुलना प्रविष्ट नहीं हुई। अभी उन्होंने तौला नहीं है।
घास का एक पत्ता भी उसी आनंद से डोलता है हवा में, जिस आनंद से कोई देवदार का बड़ा वृक्ष डोलता है। कोई भी नहीं है। घास का फूल भी उसी आनंद से खिलता है, जिस आनंद से गुलाब का फूल खिलता है। कोई भेद नहीं है।
तुम्हारे लिए भेद है। तुम कहोगे: यह घास का फूल है, और यह गुलाब का फूल। लेकिन घास और गुलाब के फूल के लिए कोई तुलना नहीं, वे दोनों अपने आनंद में मग्न हैं। जो तुलना छोड़ देता है, वह मग्न हो जाता है। जो मग्न हो जाता है, उसकी तुलना छूट जाती है।।।।।

💞परम प्यारे ओशो💞

➡️सुन भई साधो-(प्रवचन-10)

CS CamScanner

8:24 pm 139 KB/s VoLTE 4G 53%

#osho
#oshoquotes... See more

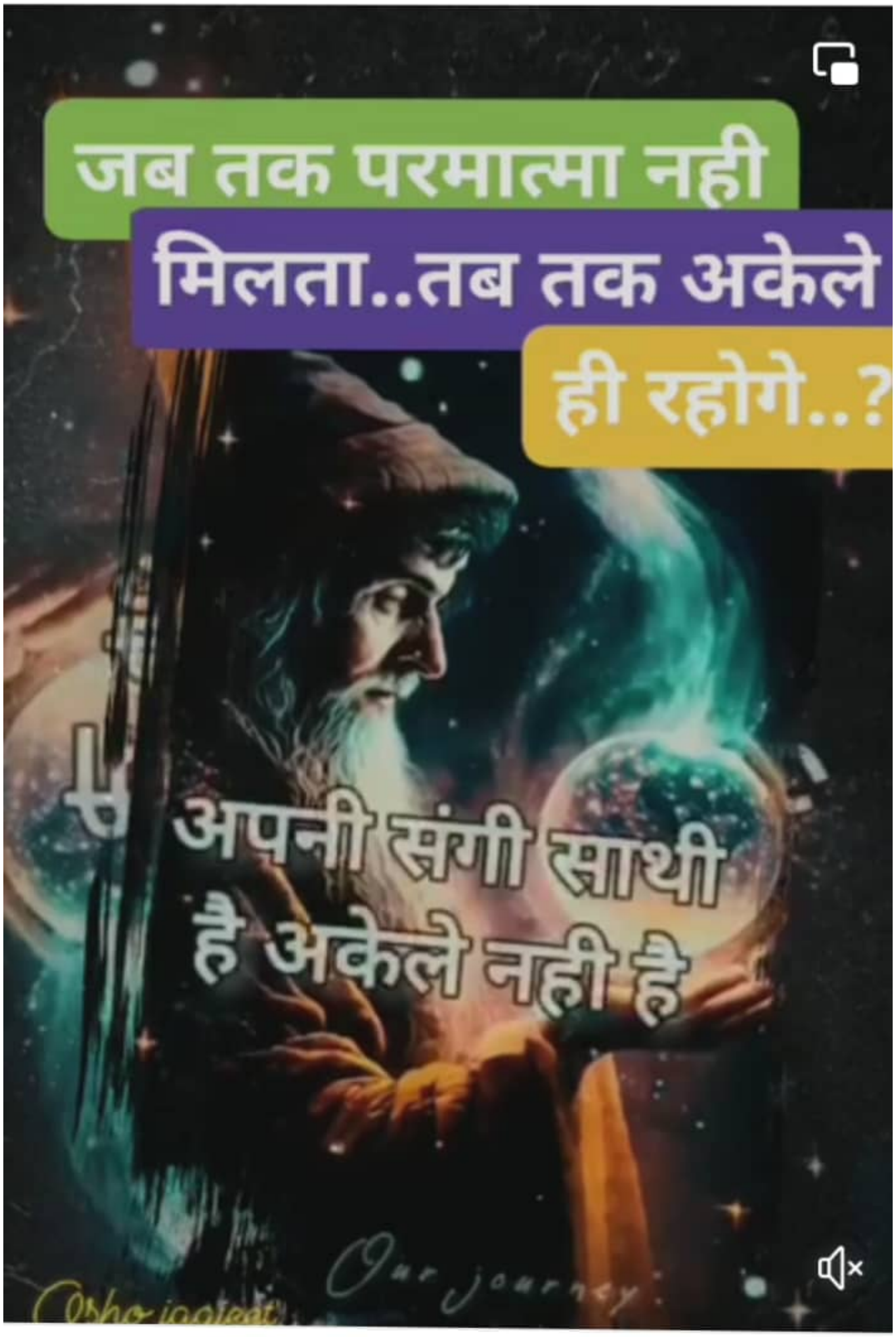

63 2 comments • 16 shares • 1.4K views

Like Comment Share

OSHO Dhyan Mandir
6d ·

CamScanner

धर्म की शिक्षा
अगर लोमड़ी से ली जाए तो
मुर्गी चुराना भी
पुण्य का काम लगता है।
PATEL JI
Quotes Creator

CamScanner

रिटर्न टिकट तो कनफर्म है
इसलिए मन भरकर जिएं
मन में भरकर ना जिएं।।
छोड़िए शिकायत शुक्रिया अदा कीजिए।।
जितना है पास पहले उसका मज़ा लीजिए।।
चाहे जिधर से गुजरिए
मीठी सी हलचल मचा दीजिए।।
उम्र का हर एक दौर मजेदार है,
अपनी उम्र का मजा लीजिए।।
क्योंकि
रिटर्न टिकट तो कनफर्म है।।

CamScanner

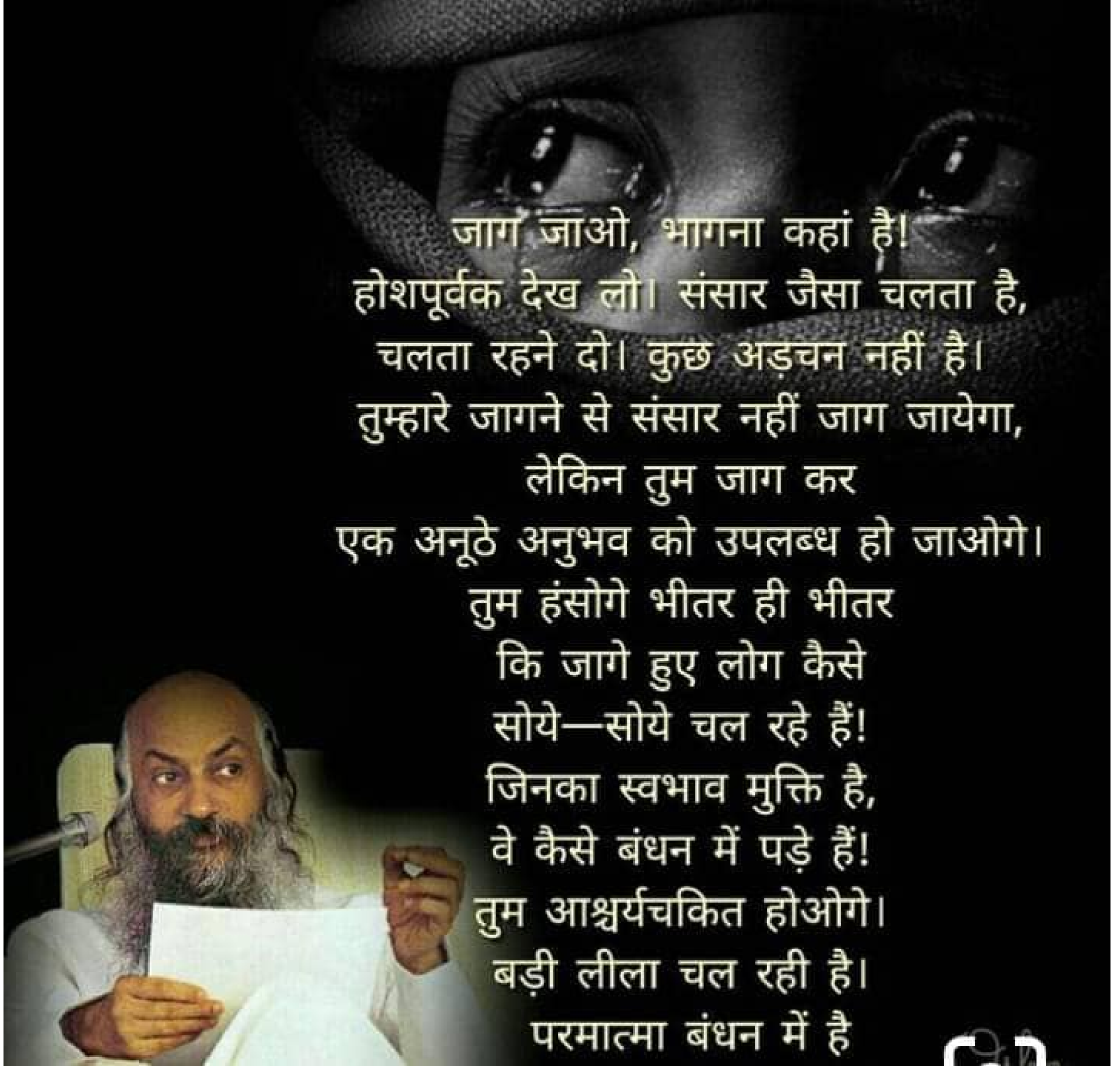
जागो जाओ, भागना कहां है!
होशपूर्वक देख लो। संसार जैसा चलता है,
चलता रहने दो। कुछ अड़चन नहीं है।
तुम्हारे जागने से संसार नहीं जाग जायेगा,
लेकिन तुम जाग कर
एक अनूठे अनुभव को उपलब्ध हो जाओगे।
तुम हंसोगे भीतर ही भीतर
कि जागे हुए लोग कैसे
सोये—सोये चल रहे हैं!
जिनका स्वभाव मुक्ति है,
वे कैसे बंधन में पड़े हैं!
तुम आश्चर्यचकित होओगे।
बड़ी लीला चल रही है।
परमात्मा बंधन में है

CamScanner

बुद्धि कभी भी एक सीमा में रहने से नहीं बढ़ती, बुद्धि तो प्रयोगों से बढ़ती है, बुद्धि हमेसा चुनौतियों को अपनाने से बढ़ती है।

किसी से किसी भी तरह की प्रतिस्पर्धा कि आवश्यकता नहीं है, आप स्वयं में जैसे हैं एक दम सही हैं, खुद को स्वीकारिये!

सत्य कुछ बाहरी नही है जिसे खोजा जाना है, ये कुछ अंदरूनी है जिसका एहसास किया जाना है।

ठोकरें खा कर भी न संभले तो वो मुसाफ़िर का नसीब था, वरना पत्थरों ने तो अपना फर्ज अदा कर ही दिया था।

जीवन, आनंद और अध्यात्म के चरम को जानने के लिए मिला है, इसलिए अपने को इतना व्यस्त कर लो, कि अन्य विचार मस्तिष्क में न आ सके।

हम अपने को ऐसा बना सकते हैं कि दूसरों के छल कपट को स्वीकार कर सकें, क्यूंकि कर्म उसका है, तो फ़ल भी उसका ही होगा।

जीवन नियमों के बिना अस्तित्व में है, खेल नियमों के बिना अस्तित्व में नहीं हो सकते. केवल झूठे धर्मों के नियम होते हैं, क्योंकि झूठे धर्म एक खेल हैं।

CS CamScanner

8:18 pm 0 KB/s VoLTE 4G 53%

वह आदमी व्यर्थ जी रहा है, जिसके पास एक घंटा भी अपने लिए नहीं है। वह आदमी जी ही नहीं रहा, जो एक घंटा भी अपनी इस भीतर की खोज के लिए नहीं लगा रहा है। क्योंकि आखिर में जब सारा हिसाब होता है, तो जो भी हमने शरीर के तल पर कमाया है, वह तो मौत छीन लेती है; और जो हमने भीतर के तल पर कमाया है, वही केवल मौत नहीं छीन पाती। वही हमारे साथ होता है।

इसे खयाल रखें कि मौत आपसे कुछ छीनेगी, उस समय आपके पास बचाने योग्य है, कुछ भी? अगर नहीं है, तो जल्दी करें। और एक घंटा कम से कम रोज क्षेत्रज्ञ की तलाश में लगा दें।
इतना ही करें, बैठ जाएं घंटेभर। कुछ भी न करें, एक बहुत छोटा-सा प्रयोग करें। इतना ही करें कि तादात्म्य न करूंगा घंटेभर, आइडेंटिफिकेशन न करूंगा घंटेभर। घंटेभर बैठ जाएं। पैर में चींटी काटेगी, तो मैं ऐसा अनुभव करूंगा कि चींटी काटती है, ऐसा मुझे पता चल रहा है। मुझे चींटी काट रही है, ऐसा नहीं।

इसका यह मतलब नहीं कि चींटी काटती रहे और आप अकड़कर बैठे रहें। आप चींटी को हटा दें, लेकिन यह ध्यान रखें कि मैं जान रहा हूं कि शरीर चींटी को हटा रहा है। चींटी काट रही है, यह भी मैं जान रहा हूं। शरीर चींटी को हटा रहा है, यह भी मैं जान रहा हूं। सिर्फ मैं जान रहा हूं।
पैर में दर्द शुरू हो गया बैठे-बैठे, तो मैं जान रहा हूं कि पैर में दर्द आ गया। फिर पैर को फैला लें। कोई जरूरत नहीं है कि उसको अकड़ाकर बैठे रहें और परेशान हों। पैर को फैला लें। लेकिन जानते रहें कि पैर फैल रहा है कष्ट के कारण, मैं जान रहा हूं।

भीतर एक घंटा एक ही काम करें कि किसी भी कृत्य से अपने को न जोड़े, और किसी भी घटना से अपने को न जोड़े। आप एक तीन महीने के भीतर ही गीता के इस सूत्र को अनुभव करने लगेंगे, जो कि आप तीस जन्मों तक भी गीता पढ़ते रहें, तो अनुभव नहीं होगा। एक घंटा, मैं सिर्फ ज्ञाता हूं इसमें डूबे रहें। कुछ भी हो, पत्नी जोर से बर्तन पटक दे...। क्योंकि पति जब ध्यान करे, तो पत्नी बर्तन पटकेगी। या पत्नी ध्यान करे, तो पति रेडिओ जोर से चला देगा, अखबार पढ़ने लगेगा, बच्चे उपद्रव मचाने लगेंगे।

CamScanner

10:04 pm 0 KB/s VoLTE 4G 36%
facebook

जब प्रेम की हवा तुम्हारे चारो तरफ हो, तो ध्यान और गहरा हो जाना चाहिए। लेकिन अगर तुम अधकचरे भाग आए संसार से, तो डगमगाओगे। तो उनके लिए मेरे पास कोई जगह नहीं। उनको मैं कहता हूं तुम वापस जाओ।

प्रेम को मैं कसौटी बनाता हूँ ध्यान का, और ध्यान को मैं कसौटी बनाता हूं प्रेम की। पुरुष अगर ध्यान में हो, तो स्त्री कितना ही प्रेम करे, पुरुष डगमगाएगा नहीं। उसके निष्कंप ध्यान से ही करुणा उतरेगी स्त्री की तरफ, वासना नहीं। और वही करुणा तृप्त करती है। वासना किसी स्त्री को कभी तृप्त नहीं करती।

इसलिए तो कितनी ही वासना मिल जाए स्त्री बेचैन बनी रहती है। कुछ खोया-खोया लगता है।

मेरा जानना है कि स्त्री को जब तक परमात्मा ही प्रेमी की तरह न मिले, तब तक तृप्ति नहीं होती। और जब तुम किसी ध्यानी व्यक्ति के प्रेम में पड़ जाओ तो परमात्मा मिल गया।

तो ध्यान प्रेम को बढ़ाएगा। क्योंकि ध्यान तुम्हारे प्रेमी को दिव्य बना देता है। और प्रेम ध्यान को बढ़ाएगा, क्योंकि प्रेम जो तुम्हारे चारों तरफ एक परिवेश निर्मित करता है, उस परिवेश में ही ध्यान का अँकुरण हो सकता है।

इसलिए मैं ध्यान और प्रेम में कोई विरोध नहीं देखता। ध्यान और प्रेम में एक गहरा समन्वय देखता हूं। होना ही चाहिए। जब स्त्री और पुरुष में इतना गहरा संबंध है, तो ध्यान और प्रेम में भी इतना ही गहरा संबंध होना चाहिए। और जब स्त्री और

पुरुष से मिलकर एक जीवन पैदा होता है, एक बच्चा पैदा होता है, तो मेरी समझ है कि ध्यान और प्रेम के मिलने से ही पुनर्जीवन उपलब्ध होता है, तुम्हारा नव-जन्म होता है।

CS CamScanner

10:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 36%

प्रश्न : बुद्ध ने स्त्रियों को संन्यास देने से टालना चाहा। शंकर भी स्त्रियों को संन्यास देने के पक्ष में नहीं थे। संन्यास जीवन की स्त्रियों से ऐसी क्या विपरीतता है? क्या स्त्रियों से उसका कोई तालमेल नहीं है, या कम है? क्या उन्हें संन्यास लेने की जरूरत पुरुषों की अपेक्षा कम है?

पुरूष और स्त्री का मार्ग मूलत: अलग-अलग है। पुरुष का मार्ग ध्यान का है; स्त्री का मार्ग प्रेम का। पुरुष का मार्ग ज्ञान का है; स्त्री का मार्ग भक्ति का। उन दोनों की जीवन-चित्तदशा बड़ी भिन्न है, बड़ी विपरीत है। पुरुष को प्रेम लगता है बंधन; स्त्री को प्रेम लगता है मुक्ति। इसलिए पुरुष प्रेम भी करता है तो भी भागा-भागा, डरा-डरा कि कहीं बंध न जाएं। और स्त्री जब प्रेम करती है तो पूरा का पूरा बंध जाना चाहती है, क्योंकि बंधन में ही उसने मुक्ति जानी है। तो पुरुष की भाषा जो है वह है-कैसे छुटकारा हो? कैसे संसार से मुक्ति मिले? और स्त्री की जो खोज है वह है-कैसे वह डूब जाए पूरी-पूरी, कुछ भी पीछे न बचे?

तो संन्यास मूलतः पुरुषगत है। इसलिए बुद्ध भी झिझके। स्त्रियां प्रभाव में आ गयी-स्त्रियां जल्दी प्रभाव में आती हैं, क्योंकि उनके पास ज्यादा संवेदनशील हृदय है-वे मांगने लगीं कि हमें भी संन्यास दो। बुद्ध डरे। महावीर ने तो उनसे साफ कहा कि दे भी दूं, तो भी तुम्हारी मुक्ति इस जन्म में नहीं होगी, जब तक तुम पुरुष न हो जाओ। पुरुष-पर्याय से ही मुक्ति होगी।

कारण साफ है। महावीर का मार्ग भक्ति का नहीं है, और बुद्ध का मार्ग भी भक्ति का नहीं है। इसलिए अड़चन है। स्त्री के लिए उनके मार्ग पर कोई सुविधा नहीं है। और स्त्री जब भी मुक्ति को उपलब्ध हुई है तो वह मीरा की तरह नाचकर, प्रेम में परिपूर्ण डूबकर मुक्त हुई है। संसार से भागकर नहीं, संबंध से छूटकर नहीं, संबंध में पूरी तरह डूबकर। वह इतनी डूब गयी कि मिट गयी।

मिटने के दो उपाय हैं। या तो तुम भीतर की तरफ जाओ, अपने केंद्र की तरफ जाओ, और उस जगह पहुंच जाओ जहां तुम ही बचे। जहां तुम ही बचे और कोई न बचा, वहा तुम भी मिट जाओगे, क्योंकि मैं के बचने के लिए तू की जरूरत है। के बिना मैं नहीं बच सकता। अगर तू बिलकुल

CamScanner

मैंने तुम्हें अपना मित्र कहा है

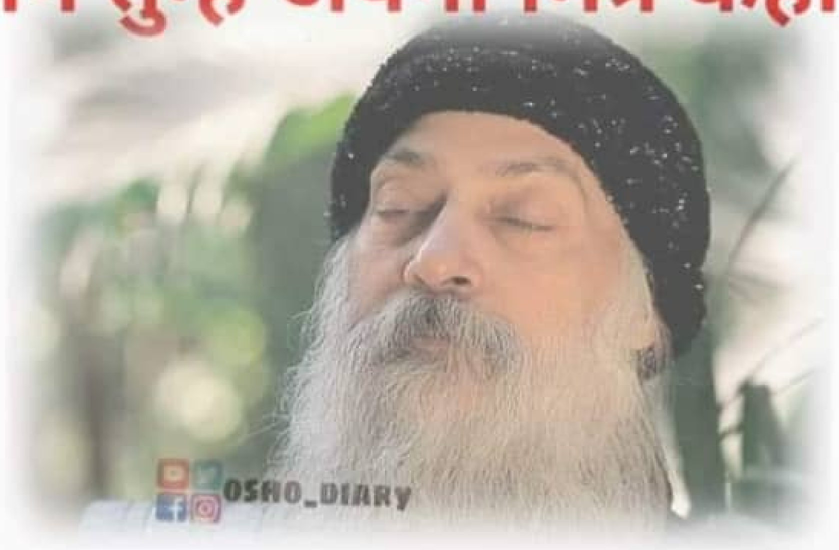

मैं वचन देता हूँ
कि जब भी तुम्हें मेरी जरुरत होगी
मैं तुम्हारे पास आ जाऊंगा
बस मेरी जरुरत महसूस भर करो ।

CamScanner

CamScanner

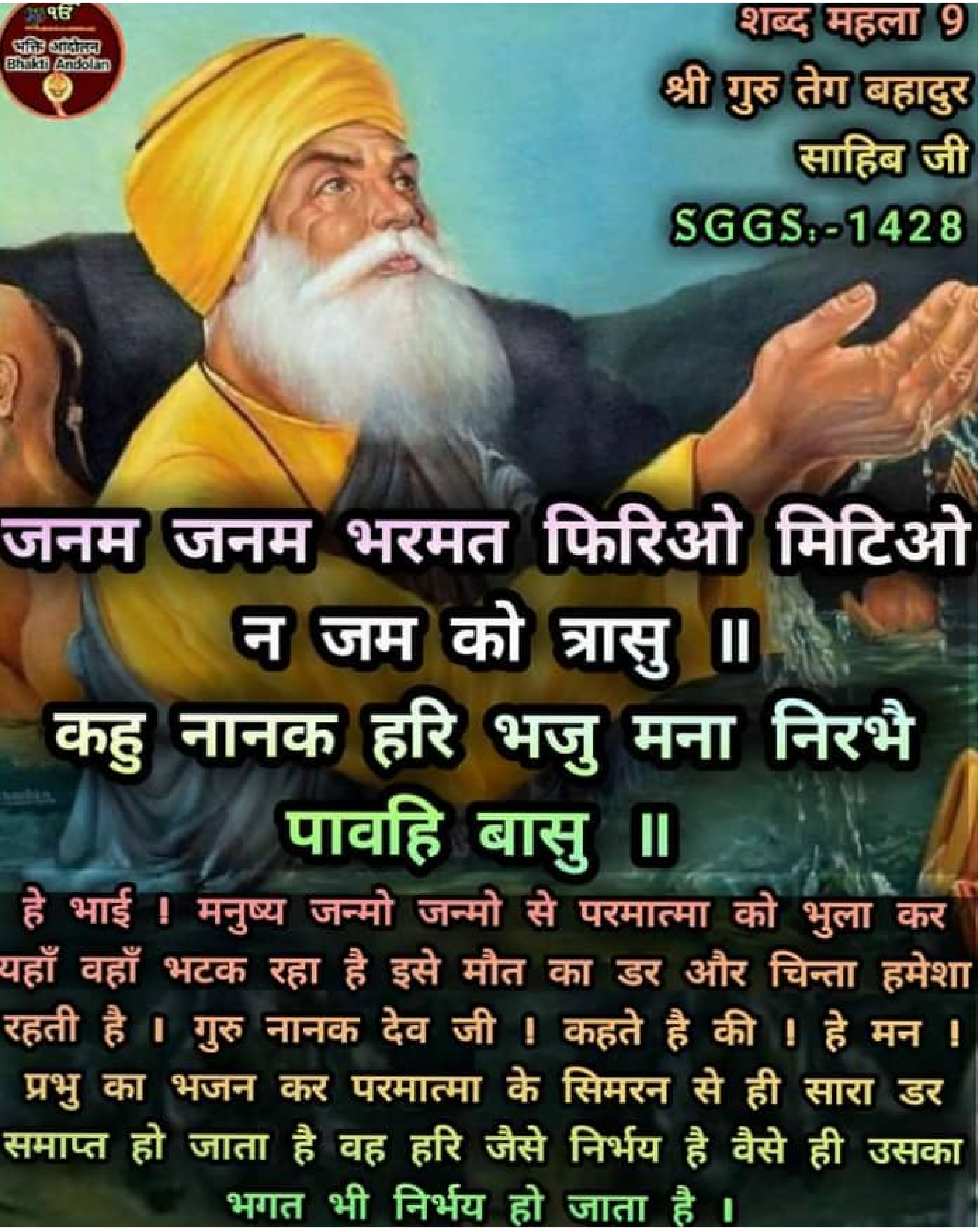

CS CamScanner

12:20 pm 329 KB/s VoLTE 4G 31%

6 1 comment

Like Comment Share

Osho Ravi Yog
Reels · 16h ·

मन से मुक्त होने का,
सिर्फ़ एक ही उपाय हैं!!
.
.
.

साक्षी

#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog #oshkosh #oshawa #oshoquotes #oshomeditation #oshkoshbgosh #reels #Os

CamScanner

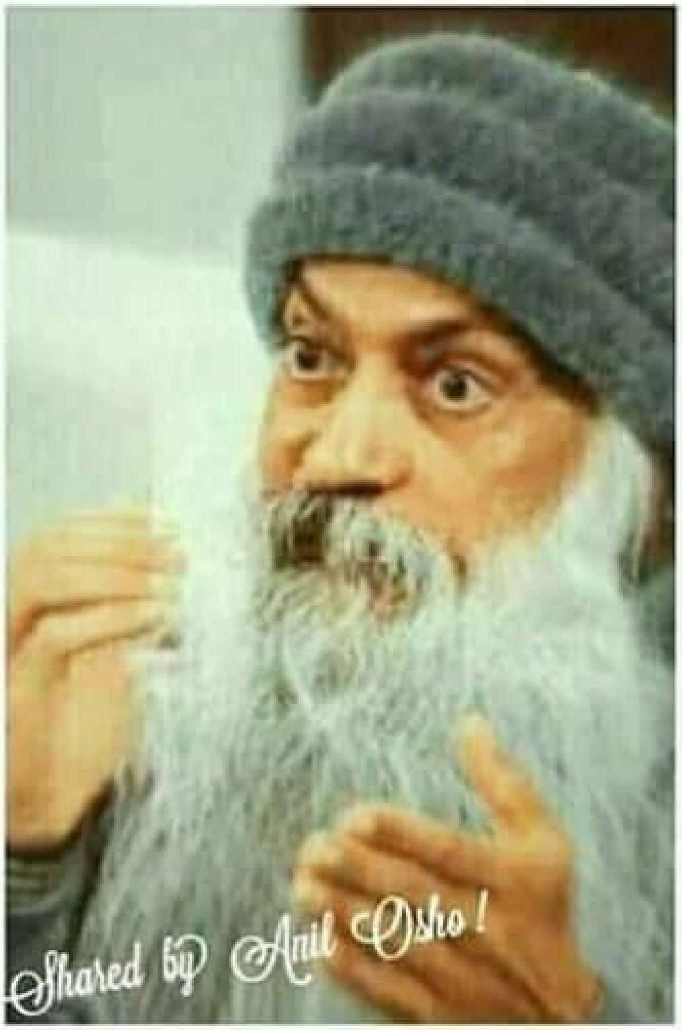

अगर होठों पे

मुस्कराहट हो तो,

कारण भीतर है !

अगर आंखों में

आंसु हो तो,

कारण भीतर है !

CS CamScanner

12:18 pm 35 KB/s 31%

Like Comment Share

Shashi Shubhangee

Reels · 2d ·

84 242 shares • 22K views

Like Share

CamScanner

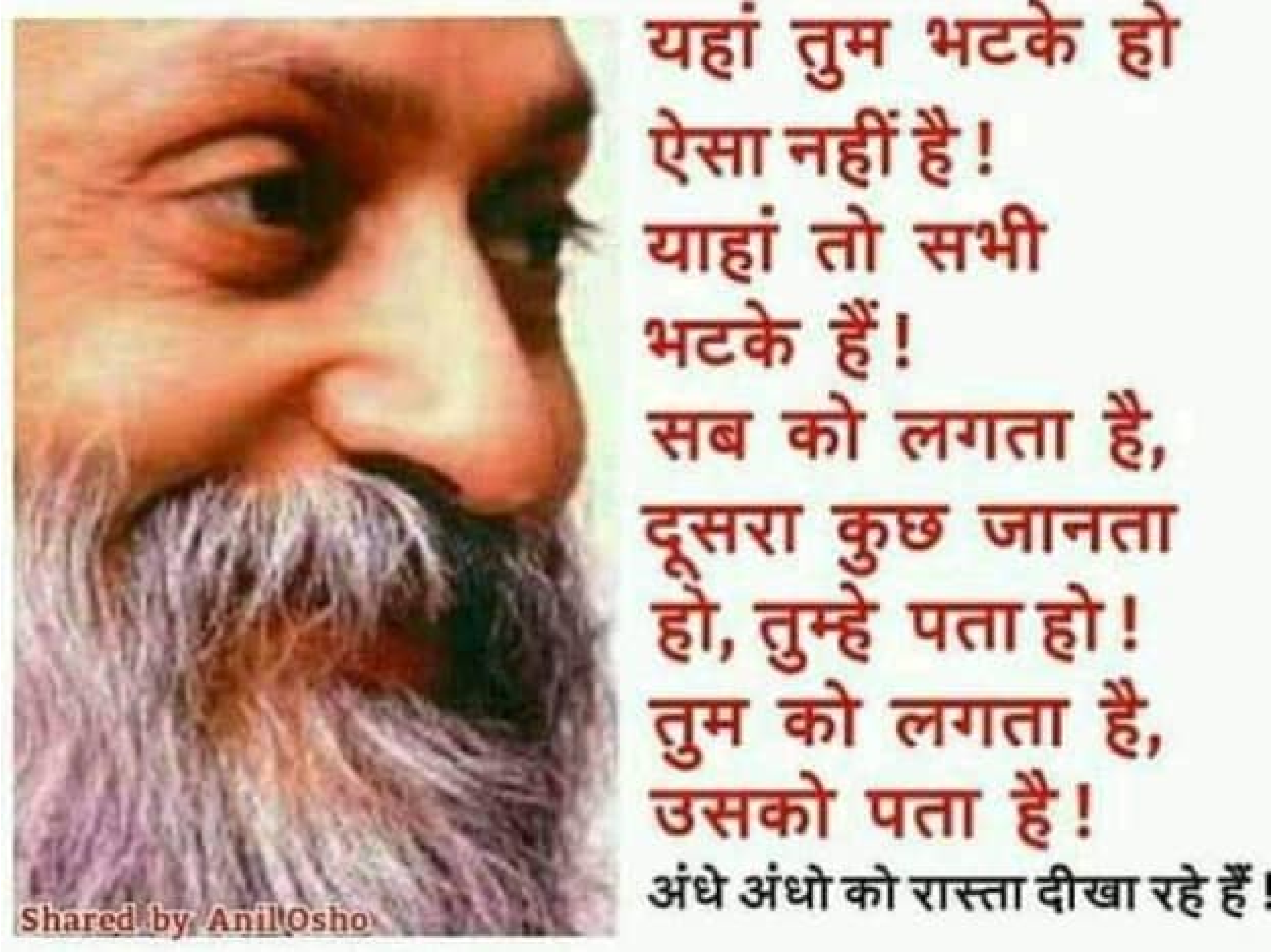
यहां तुम भटके हो
ऐसा नहीं है!
याहां तो सभी
भटके हैं!
सब को लगता है,
दूसरा कुछ जानता
हो, तुम्हे पता हो!
तुम को लगता है,
उसको पता है!
अंधे अंधो को रास्ता दीखा रहे हैं!
Shared by Anil Osho

CamScanner

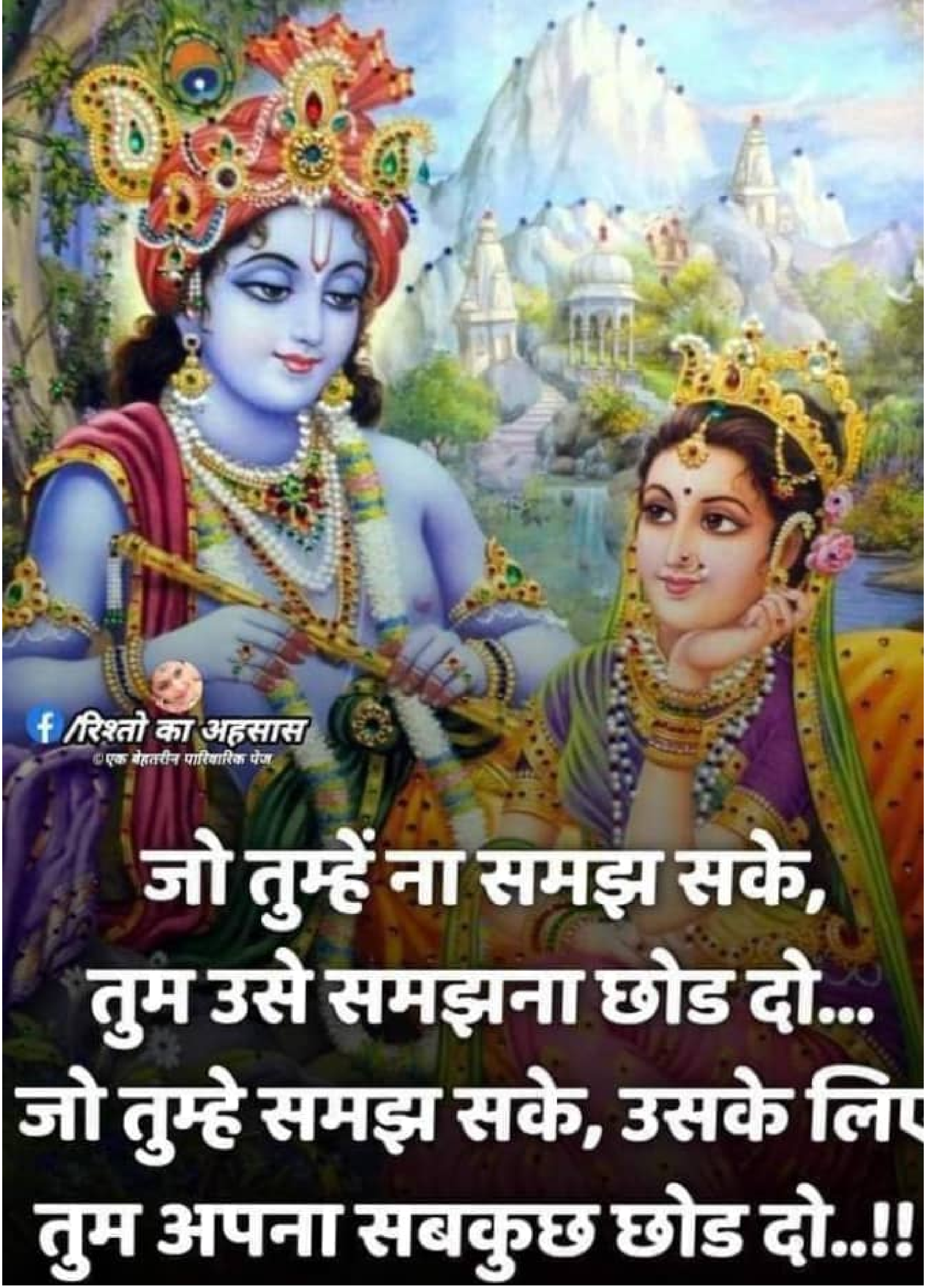

CS CamScanner

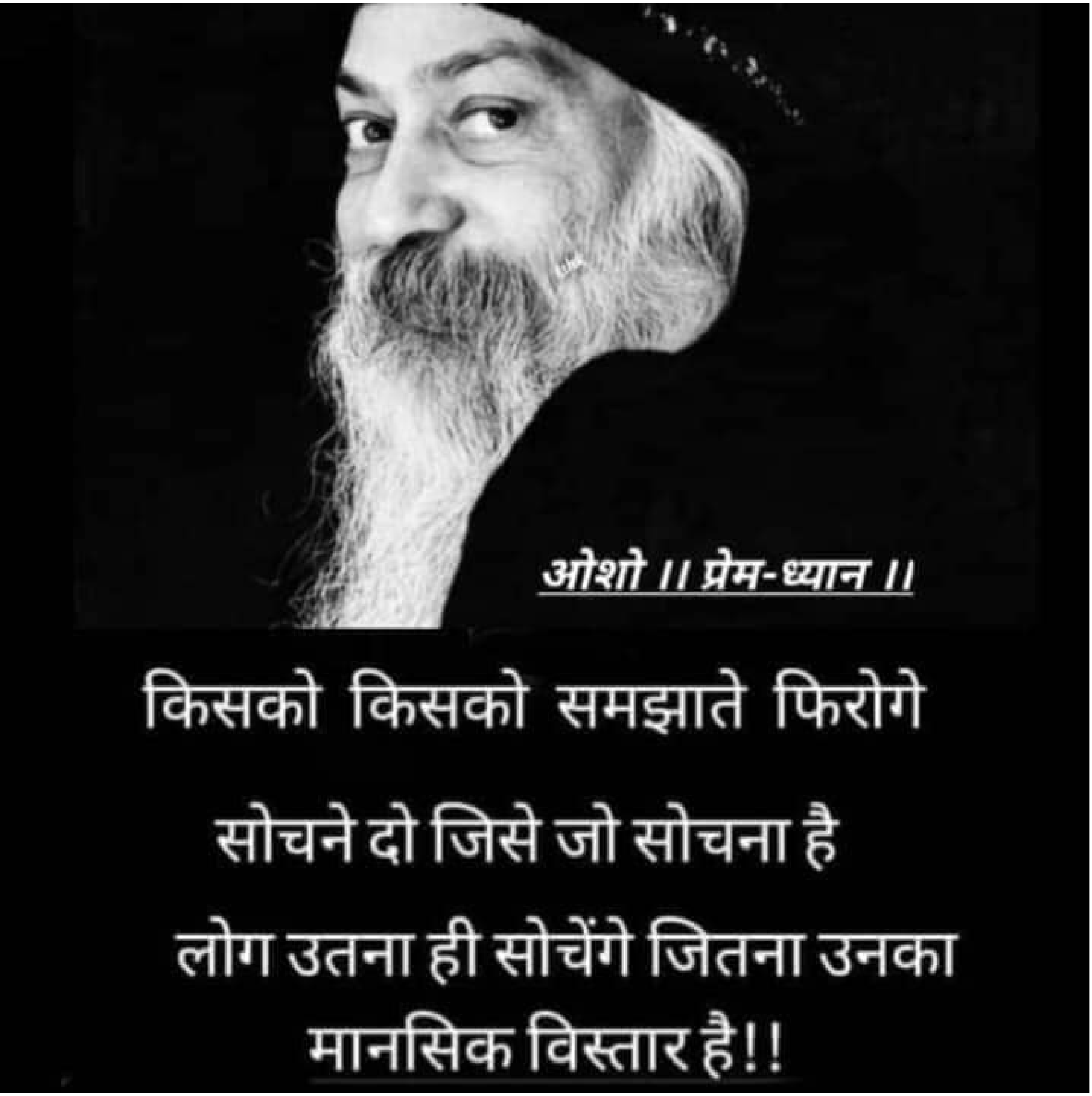
ओशो ।। प्रेम-ध्यान ।।
किसको किसको समझाते फिरोगे
सोचने दो जिसे जो सोचना है
लोग उतना ही सोचेंगे जितना उनका
मानसिक विस्तार है!!

CamScanner

भारत बहुत समझदार है--
जरूरत से ज्यादा समझदार है--
बिना जाने बहुत कुछ जान लेने
की भ्रांति भारत को पैदा हो गई है;
पंडित तो हो गया है मन,
प्रज्ञावान नहीं हो पाया है;
शब्द तो भर गए हैं, निःशब्द के लिए
जगह नहीं बची है।

CamScanner

CamScanner

12:13 pm 0 KB/s 33%

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन

1d ·

धृतराष्ट्र अंधे बने,गए सुत मोह बिकाय।
तुम क्यों अंधे हो रहे,दोनो आंख दिखाय।।
साहेब बंदगी🙏🙏🙏,साहेब!... See more

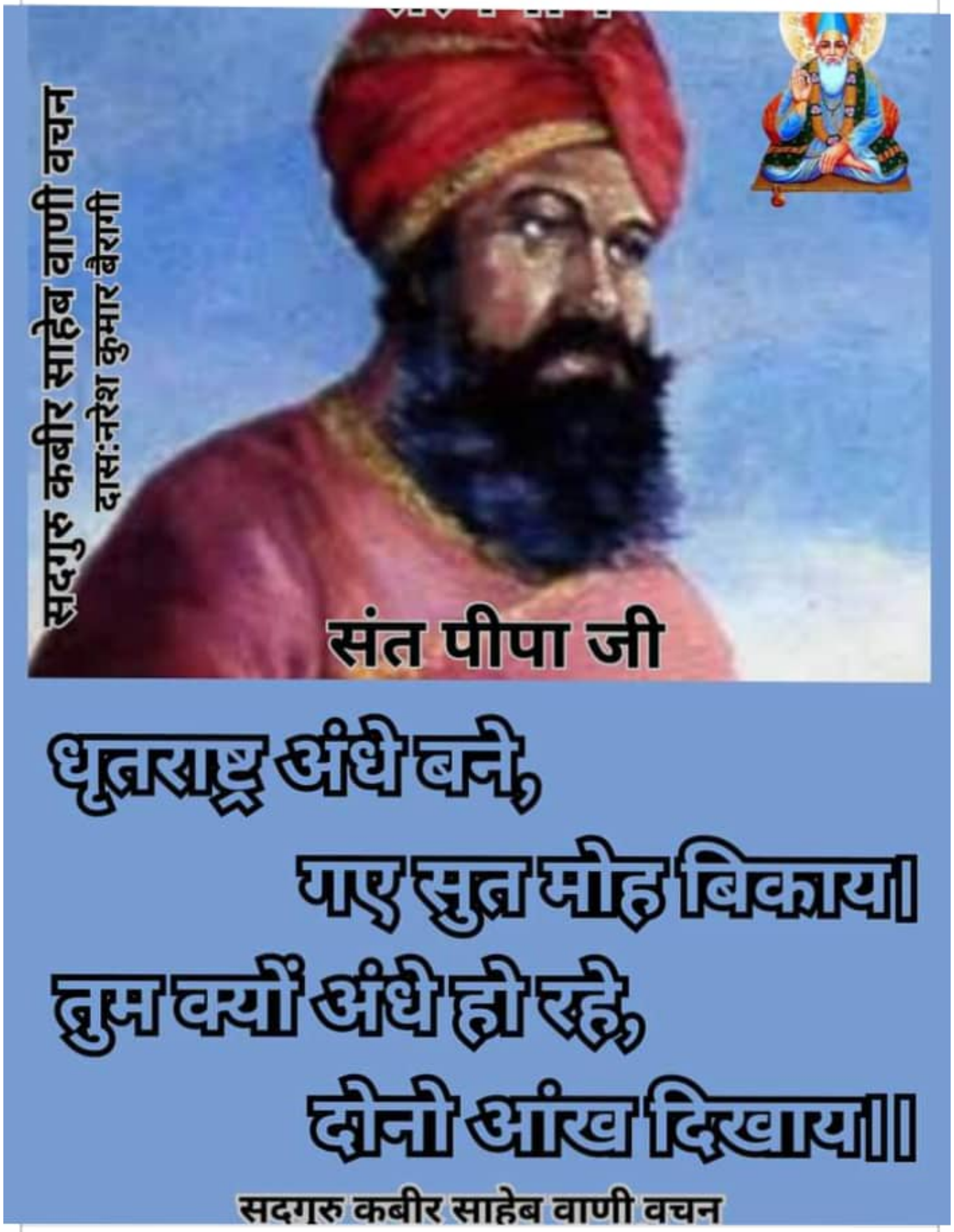

25 5 comments • 1 share

Like Comment Share

CamScanner

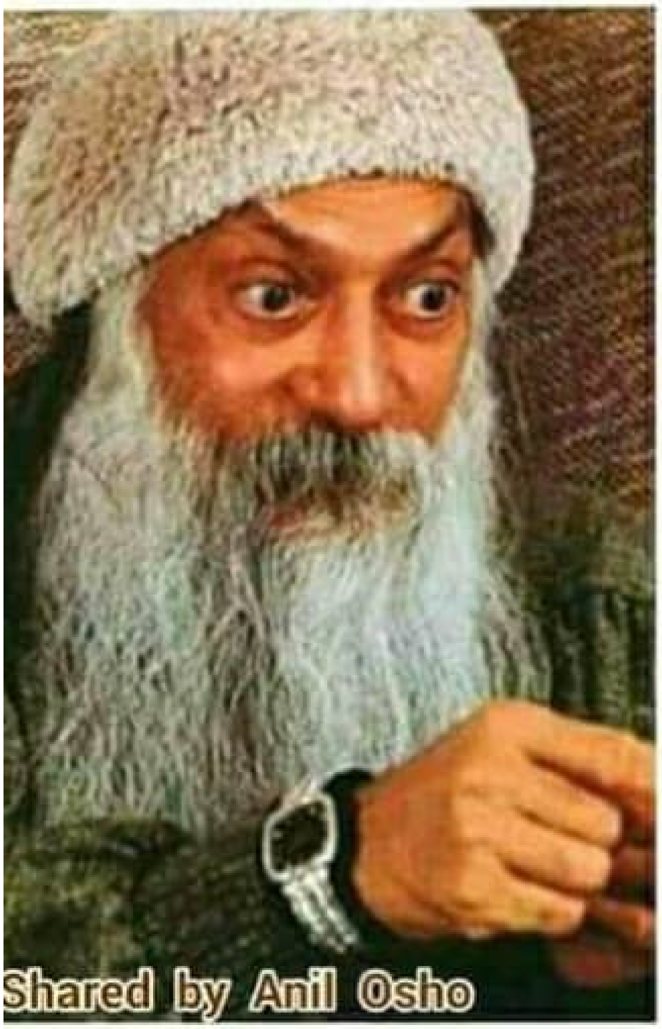

बदलने की जल्दी मत करना, क्योंकि बदलना बचने की तर्किब है !
बेईमान ज़िंदगी भर ईमानदार होने की कोशिश करता है और बेईमान ही मरता है !
तुम भले भुरे का विचार मत करना, तुम पहले तो खोज लेना क्या है !
तुम अपनी तस्वीर को नग्न देख लेना !

CamScanner

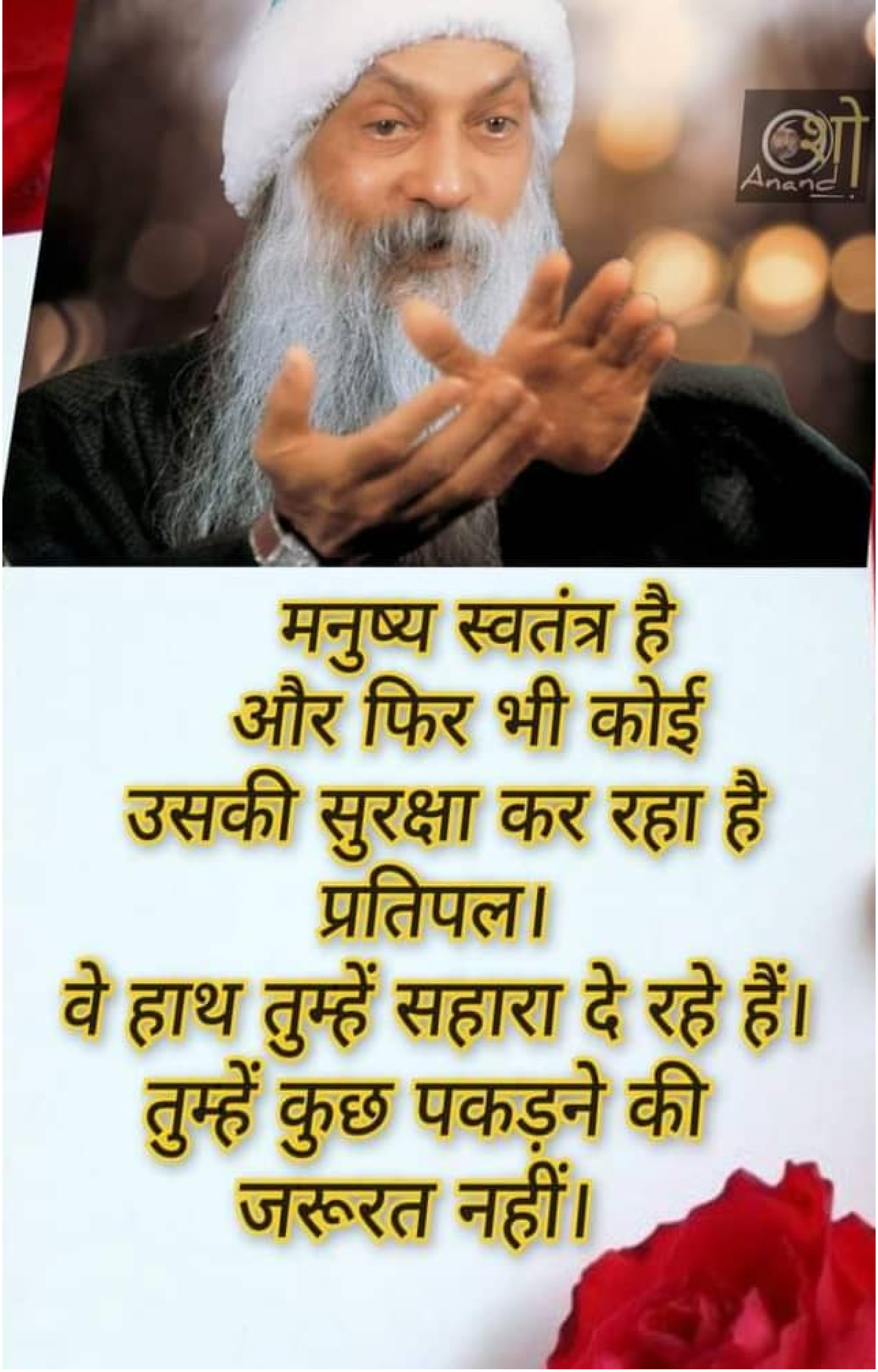
मनुष्य स्वतंत्र है
और फिर भी कोई
उसकी सुरक्षा कर रहा है
प्रतिपल।
वे हाथ तुम्हें सहारा दे रहे हैं।
तुम्हें कुछ पकड़ने की
जरूरत नहीं।

CamScanner

क्षणभंगुर है तो तत्क्षण लोभी चित्त कहता है, तो क्षणभंगुर में क्या सार है? इसलिए पकड़े तो क्या पकड़े?
पकड़ने की जरूरत क्या है? उसने तुम्हें पकड़ा हुआ है, तुम उसे क्या पकड़ोगे? तुम उसके हाथ में हो। उसने तुम्हें जन्माया, वही तुम्हें जिलाता है, वही तुम्हें एक दिन उठा ले जाएगा। तुम उसे क्या पकड़ोगे? तुम्हें उसे पकड़ने की कोई जरूरत भी नहीं है। तुम पृथ्वी को तो नहीं पकड़ते। डरते तो नहीं कि कहीं पकड़ा नहीं पृथ्वी को तो छूट न जाएं, नहीं तो इतना अनंत आकाश है, गिर पड़े कहीं!
छोटे—छोटे बच्चे ऐसा प्रश्न पूछते हैं कि जमीन गोल है, तो लोग गिर क्यों नहीं पड़ते? कम—से—कम अमरीका के लोग तो गिर ही जाएं, बिलकुल नीचे हैं, जमीन गोल है। और अमरीका के बच्चे पूछते हैं कि कम—से—कम भारत के लोग तो गिर जाएं, मगर कोई गिरता नहीं और कोई जमीन को पकड़े नहीं है। जमीन ने तुम्हें पकड़ा है, उसके गुरुत्वाकर्षण ने तुम्हें पकड़ा है।
और जैसे जमीन का अदृश्य गुरुत्वाकर्षण है, इससे भी ज्यादा अदृश्य परमात्मा का गुरुत्वाकर्षण है। वह तुम्हें पकड़े हुए है। तुम्हें उसे पकड़ने की कोई जरूरत नहीं है। और उसकी पकड़ ऐसी पकड़ है कि तुम्हें बांधती भी नहीं, तुम्हारे आसपास जंजीरें भी नहीं खड़ी करती। उसकी पकड़ ऐसी पकड़ है कि तुम्हें पूरी स्वतंत्रता भी दी हुई है। तुम्हें छोड़ भी नहीं दिया है और तुम्हें कारागृह में बंद भी नहीं कर दिया है। जैसे मां एक आंख से देखती रहती है बच्चा कहां खेल रहा है, छोड़ा भी हुआ है, लेकिन एकदम छोड़ भी नहीं दिया है। एक आंख उसका पीछा कर रही है। हजार काम में लगी रहती है, लेकिन हृदय में उसे स्मरण बना रहता है कि बच्चा बाहर खेल रहा है, कहीं दूर न निकल जाए, कहीं सड़क पर न पहुंच जाए, कहीं गाड़ी, घोड़े की चपेट में न आ जाए!
मनुष्य स्वतंत्र है और फिर भी कोई उसकी सुरक्षा कर रहा है प्रतिपल। वे हाथ तुम्हें सहारा दे रहे हैं। तुम्हें कुछ पकड़ने की जरूरत नहीं।

ओशो 🌹
मरौ है जोगी मरौ

CamScanner

12:11 pm 0 KB/s VoLTE 4G 33%

संसार क्षणभंगुर है!
क्षण क्या है? क्षण शाश्वत की लहर है; शाश्वत में उठी तरंग है। तो क्षण में ही छिपा है शाश्वत, समय में ही छिपा है नित्य। भागो मत, डूबो। डुबकी मार दो क्षण में। लेकिन तुम्हें उल्टी बातें समझायी गई हैं। और इतने दिन तक समझायी गई हैं कि तुम्हें ठीक—ठीक लगने लगी हैं। बहुत बार दोहराने से झूठ भी सच मालूम होने लगते हैं। इसलिए तो विज्ञापनदाता झूठों को दोहराए चले जाते हैं, दोहराते रहो; इसकी फिक्र ही नहीं करते कि कोई मानता है कि नहीं मानता। लोग अपने— आप मान ही लेते हैं। तुम तो दोहराते रहो कि लक्स टायलेट साबुन, सबसे अच्छी साबुन है। न कोई प्रमाण देने की जरूरत है। हजारों साबुन हैं, मगर तुम दोहराते रहो, इंगित देते रहो, इशारे देते रहो, जहां से भी आदमी गुजरे, अखबार खोले तो लक्स टायलेट साबुन दिखायी पड़े, रेडियो सुने तो लक्स टायलेट साबुन सुनायी पड़े, टेलीविजन पर जाए तो लक्स टायलेट साबुन दिखायी पड़े, रास्ते से गुजरे तो बड़े—बड़े बोर्ड लगे हैं। बस उसके मन पर गुजाते रहो लक्स टायलेट साबुन, लक्स टायलेट साबुन। एक दिन जब वह जाएगा खरीदने बाजार साबुन और दुकानदार पूछेगा, क्या? वह कहेगा लक्स टायलेट साबुन, और सोचेगा कि मैं खुद ही सोचकर कह रहा हूं। यह सोचा हुआ नहीं है। यह केवल संस्कारित है।
इसी तरह तुम धर्म भी दोहरा रहे हो। तुम्हारे धर्म में और तुम्हारे लक्स टायलेट साबुन में जरा भी भेद नहीं है। इसी तरह तुम प्रार्थना—पूजा भी कर रहे हो, इसी तरह तुम सिद्धात की बड़ी—बड़ी ऊंची बातें भी छान रहे हो, मगर सब सुनी बकवास है। तुम्हारा अपना कोई भी अनुभव नहीं। अब तुम कहते हो संसार में सब क्षणभंगुर है। जानते हो? क्षण में उतरे हो? क्षण में डुबकी मारी? क्षण के पीछे झांका, कौन खड़ा है परदे के पीछे? परदे के पीछे तो वही राम हैं। जरा टटोलो तो! नहीं, मगर मुर्दा बातें सदियों से दोहरायी गईं, तुम्हें पकड़ लेती हैं। फिर तुम उन पर कभी पुनर्विचार नहीं करते। और जब एक दफा मान लिया कि संसार क्षणभंगुर है तो तत्क्षण लोभी चित्त कहता है, तो क्षणभंगुर में क्या सार है? इसलिए पकड़े तो क्या पकड़े?
पकड़ने की जरूरत क्या है? उसने तुम्हें पकड़ा हुआ है, तुम उसे क्या पकड़ोगे? तुम उसके हाथ में हो। उसने तुम्हें जन्माया, वही तुम्हें जिलाता है, वही तुम्हें एक दिन उठा ले जाएगा। तुम उसे क्या पकड़ोगे? तुम्हें उसे पकड़ने की कोई जरूरत भी नहीं है। तुम पृथ्वी को तो नहीं पकड़ते। डरते तो नहीं कि कहीं पकड़ा नहीं पृथ्वी को तो छूट न जाएं, नहीं तो

CamScanner

12:10 pm 0 KB/s VoLTE 4G 33%

प्रश्न:🎈
संसार में सब क्षणभंगुर है? इसलिए पकड़े तो क्या पकड़े?

🔆राम कीर्ति, क्षणभंगुर में ही शाश्वत छिपा है। क्षणभंगुर को छोड़ा कि शाश्वत से भी चूके। जैसे लहर—लहर में सागर छिपा है, तुम लहर—लहर से बच गए, सागर से भी बच जाओगे। नाव छोड़ने के पहले अगर नाविक पूछे कि 'सागर कहां है? ये तो छोटी—मोटी लहरें हैं, इनमें कैसे नाव छोडूं? लहरों में कोई नाव छोड़ता, सागर कहां है? ये उथली छोटी—छोटी लहरें, इनका भरोसा भी क्या, अभी हैं अभी गईं, क्षण— भर तो टिकती नहीं, इनमें नाव छोड़ दूं? यह तो खतरा हो जाएगा। यह तो जोखिम की बात है। सागर कहां है? मैं तो सागर में नाव छोडूंगा। ' तो फिर तुम बैठे रहना नाव रखे किनारे पर; तुम भी सड़ोगी, नाव भी सड़ेगी।
लहर के भीतर सागर ही है। लहर सागर ही है। छोड़ो नाव, लहर के नीचे ही सागर भी मिल जाएगा।
क्षणभंगुर कह कर संसार की निंदा मत करो। क्षण उस शाश्वत की अभिव्यक्ति है। वही बोला है, वही झलका है, वही झांका है। तुम देखो जरा आंख खोलकर चारों तरफ, कितना सौंदर्य है, कितना छंद है, और तुम पिटी—पिटाई बातें लिए बैठे हो! तुम्हें कोई भी कहता रहा है कि संसार क्षणभंगुर है, तुमने सीख लिया, तोते की तरह रट ली यह बात : संसार क्षणभंगुर है!
क्षण क्या है? क्षण शाश्वत की लहर है; शाश्वत में उठी तरंग है। तो क्षण में ही छिपा है शाश्वत, समय में ही छिपा है नित्य। भागो मत, डूबो। डुबकी मार दो क्षण में। लेकिन तुम्हें उल्टी बातें समझायी गई हैं। और इतने दिन तक समझायी गई हैं कि तुम्हें ठीक—ठीक लगने लगी हैं। बहुत बार दोहराने से झूठ भी सच मालूम होने लगते हैं। इसलिए तो विज्ञापनदाता झूठों को दोहराए चले जाते हैं, दोहराते रहो; इसकी फिक्र ही नहीं करते कि कोई मानता है कि नहीं मानता। लोग अपने— आप मान ही लेते हैं। तुम तो दोहराते रहो कि लक्स टायलेट साबुन, सबसे अच्छी साबुन है। न कोई प्रमाण देने की जरूरत है। हजारों साबुन हैं, मगर तुम दोहराते रहो, इंगित देते रहो, इशारे देते रहो, जहां से भी आदमी गुजरे, अखबार खोले तो लक्स टायलेट साबुन दिखायी पड़े, रेडियो सुने तो लक्स टायलेट साबुन सुनायी पड़े, टेलीविजन पर जाए तो लक्स टायलेट साबुन

CS CamScanner

कोई तुम्हारी स्तुति कर जाता है, तुम फूलने लगते हो। और कोई तुम्हारी निंदा कर जाता है–और पंक्चर कर गया और एकदम हवा निकल जाती है। ऐसी छोटी-छोटी बातें, मगर तुम्हें आंदोलित करती हैं तो तुम कभी परमात्मा को उपलब्ध न हो सकोगे। उसे पाने के लिए तो तुम्हारे भीतर एक ऐसी परम शांति चाहिए, जिसको कोई चीज खंडित न करती हो–न स्तुति, न निंदा; न सफलता, न असफलता; न जीवन, न मृत्यु। कुछ मिल जाए तो ठीक; कुछ खो जाए तो ठीक। जिसके भीतर का ठीक-पन कभी नष्ट ही न होता हो। जिसके भीतर का ठीक-पन बना ही रहता हो।

OSHO

CamScanner

12:08 pm 0 KB/s VoLTE 4G 34%

गुजरता था बड़ा पहाड़ी नदी था, भयंकर गड्ढ था, मक्खी ने कहा कि 'देख, दो हैं, कहीं पुल टूट न जाए! अगर ऐसा कुछ डर लगे तो मुझे बता देना। मेरे पास पंख हैं, मैं उड़ जाऊंगी।' हाथी के कान में थोड़ी-सी कुछ भिनभिनाहट पड़ी, पर उसने कुछ ध्यान न दिया। फिर मक्खी के बिदा होने का वक्त आ गया। उसने कहा, 'यात्रा बड़ी सुखद हुई। तीर्थयात्रा थी, साथी-संगी रहे, मित्रता बनी, अब मैं जाती हूं। कोई काम हो, तो मुझे कहना।'

तब मक्खी की आवाज थोड़ी हाथी को सुनाई पड़ी। उसने कहा, 'तू कौन है कुछ पता नहीं। कब तू आयी, कब तू मेरे शरीर पर बैठी, कब तू उड़ गयी, इसका कोई हिसाब नहीं है। लेकिन मक्खी तब तक जा चुकी थी।
लुकमान कहता है, 'हमारा होना भी ऐसा ही है। इस बड़ी पृथ्वी पर हमारे होने न होने से कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बड़े अस्तित्व में हाथी और मक्खी के अनुपात से भी हमारा अनुपात छोटा है।

क्या भेद पड़ता है? लेकिन हम बड़ा शोरगुल मचाते हैं। हम बड़ा शोरगुल मचाते हैं! वह शोरगुल किसलिये है? वह मक्खी क्या चाहती थी? वह चाहती थी हाथी स्वीकार करे, तू भी है; तेरा भी अस्तित्व है।
हमारा अहंकार अकेले तो नहीं जी सक रहा है। दूसरे उसे मानें, तो ही जी सकता है। इसलिए हम सब उपाय करते हैं कि किसी भांति दूसरे उसे मानें, ध्यान दें, हमारी तरफ देखें; उपेक्षा न हो।

हम वस्त्र पहनते हैं तो दूसरों के लिये, स्नान करते हैं तो दूसरों के लिये, सजाते-संवारते हैं तो दूसरों के लिये। धन इकट्ठा करते, मकान बनाते, तो दूसरों के लिये। दूसरे देखें और स्वीकार करें कि तुम कुछ विशिष्ट हो। तुम कोई साधारण नहीं। तुम कोई मिट्टी से बने पुतले नहीं हो। तुम कोई मिट्टी से आये और मिट्टी में नहीं चले जाओगे, तुम विशिष्ट हो। तुम्हारी गरिमा अनूठी है। तुम अद्वितीय हो। अहंकार सदा इस तलाश में है-वे आंखें मिल जाएं, जो मेरी छाया को वजन दे दें।

ओशो
बिन बाती बिन तेल — प्रवचन 17

CamScanner

12:05 pm 0 KB/s 34%

🕉~~~तुम्हारी मृत्यु बताएगी कि तुम कैसे जिए~~~🕉

"जिस व्यक्ति ने अपना जीवन पूर्णता से जिया है, तीव्रता से, भावपूर्ण रूप से, बिना किसी भय के--बिना किसी ऐसे भय के जो सदियों-सदियों से पंडितों ने तुम्हारे भीतर पैदा कर दिया है--यदि कोई व्यक्ति अपना जीवन बिना किसी भय के, प्रमाणिक रूप से, सहज रूप से जीता है तो मृत्यु उसके भीतर कोई भय उत्पन्न नहीं करेगी, बिल्कुल भी नहीं। वास्तव में तब मृत्यु एक महान विश्रांती के रूप में आएगी। तब मृत्यु जीवन की परम खिलावट की तरह आएगी। वह मृत्यु का भी आनंद ले पाएगा; वह मृत्यु का भी उत्सव मना पाएगा।

“और याद रखना, यह मापदंड है। यदि कोई व्यक्ति अपनी मृत्यु का भी आनंद और उत्सव माना सकता है, तो यह बताता है कि उसने अपना पूरा जीवन ठीक से जिया, इसके अलावा और कोई मापदंड नहीं। तुम्हारी मृत्यु साबित कर देगी कि तुम कैसे जिए।"

तुम्हारा भीतरी भाव मृत्यु है

"ऐसा है, तुम्हारी आस्तित्वगत भीतरी अवस्था मृत्यु कि है, तुम इसे छिपाने का प्रयास कर सकते हो, और तुम इसे नज़रंदाज़ कर सकते हो लेकिन मृत्यु तुम्हारी भीतरी आस्तित्वगत अवस्था है। हर क्षण तुम मृत्यु के भय से कम्पित हो। हर क्षण मृत्यु तुम्हारे भीतर गूंजायमान है। तुम्हारा शरीर मृत्यु की और तेजी से गति कर रहा है। हर क्षण मृत्यु को और निकट ले आता है, और चारों और से मृत्यु तुम पर नजर रखे हुए है। तुम एक वृद्ध को देखते हो और तुम्हें मृत्यु की याद आ जाती है; तुम एक नष्ट, धूल-ध्वसित घर देखते हो और तुम्हारे भीतर मृत्यु की स्मृतियां हलन-चलन करने लगती हैं; एक मुरझाया फूल ही मृत्यु की गंध तुम तक लाने के लिए पर्याप्त है; एक झरना जो सूख गया है—फिर वह मृत्यु ही है जो तुम्हें देख रही है। कहीं भी देखो मृत्यु हर तरफ छाई है, और तुम उससे कम्पित हो।"

ओशो ज्ञान 🙏🌹

CamScanner

12:04 pm 55 KB/s VoLTE 4G 34%

Humare Whatsapp Group Se Judne K Liye Niche wale Link Par Click Karen... See more

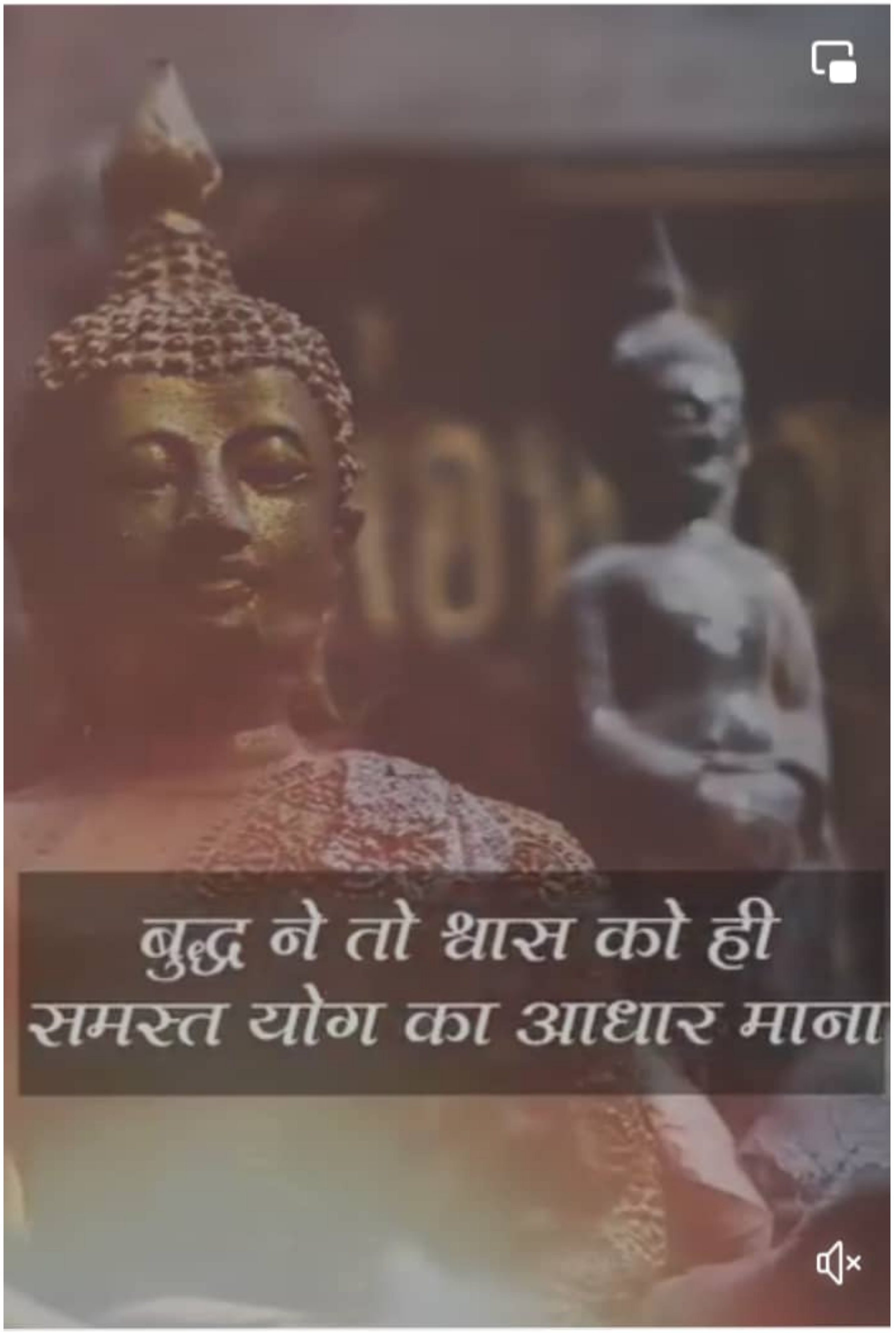

2 views

Like Comment Share

Pocket Novels
Sponsored ·

CamScanner

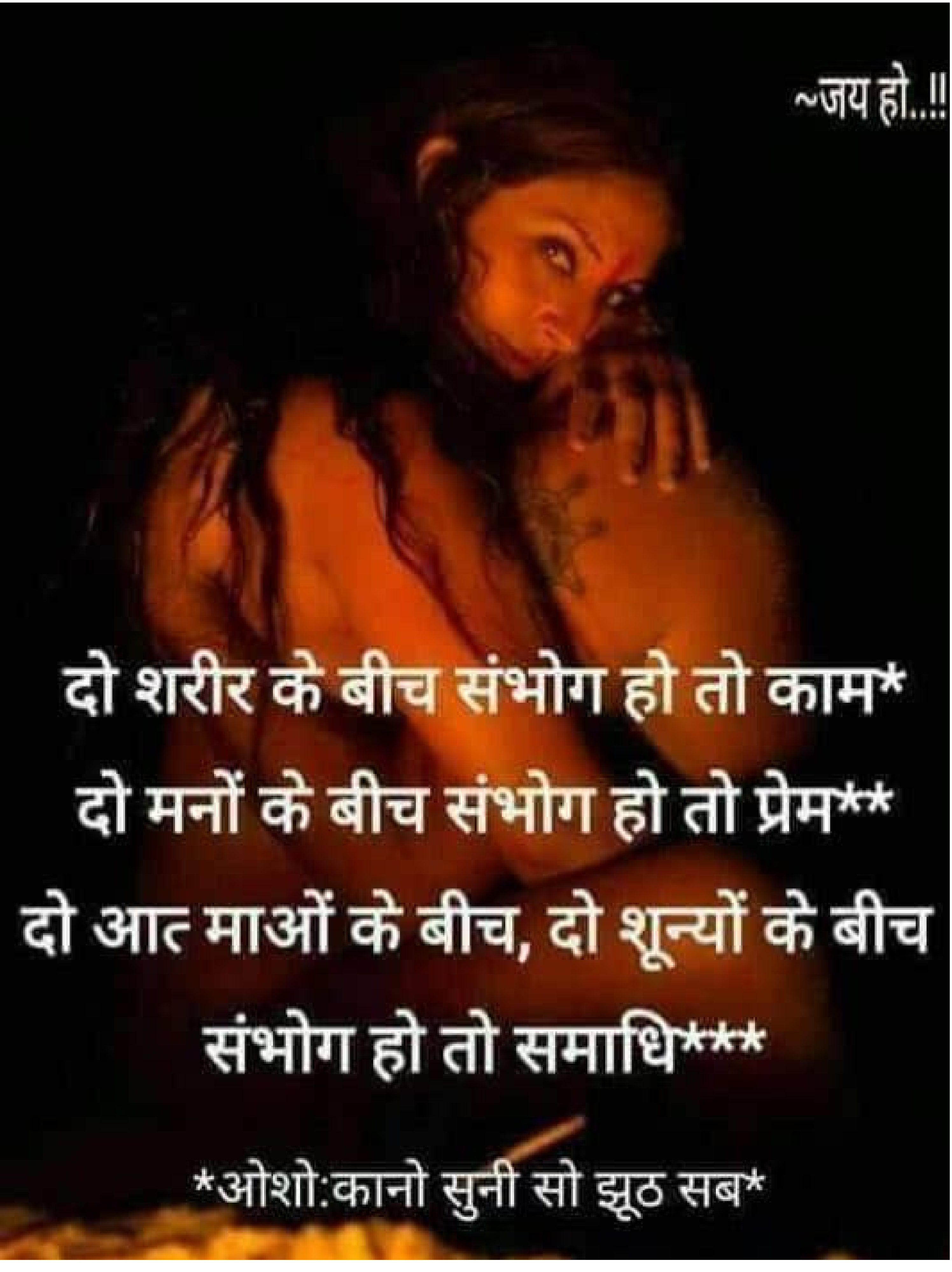

CS CamScanner

12:03 pm 0 KB/s VoLTE 4G 35%

काफी कुशल हो गए हो।

मेरे पास लोग आते हैं, वे कहते हैं, ध्यान तो ठीक, लेकिन कुछ और बताएं कि हम क्या करें, क्या खाएं, क्या पीएं, क्या पहनें, कब सोएं, कब जागें? ये व्यर्थ की बातें तुम्हीं सोच लेना। तुम सिर्फ ध्यान करो। अगर तुम्हारा मन शांत और जागरूक होता जाए, तो तुम खुद ही पाओगे कि और नियम अपने आप उसके पीछे आने लगे।
होशपूर्ण व्यक्ति अपने आप शराब न पीएगा। क्योंकि शराब तो होश के विपरीत है। वह तो होश को नष्ट कर देगी। उसे नियम देने की जरूरत नहीं कि शराब मत पीयो। होशपूर्ण व्यक्ति अपने-आप मांसाहार छोड़ देगा। क्योंकि जिसको जरा सा भी होश आया उसे इतना न दिखायी पड़ेगा कि दूसरे का जीवन लेना सिर्फ पेट भरने के लिए! अगर इतना भी न दिखायी पड़े होश में तो वह होश दो कौड़ी का है। उसका क्या मूल्य है? होशपूर्ण व्यक्ति क्या चोरी करेगा? किसी की जेब काटेगा? होशपूर्ण व्यक्ति को अणुव्रत देने की जरूरत नहीं है कि चोरी मत करो, हिंसा मत करो, बेईमानी मत करो। ये विस्तार की बातें तो इसीलिए देनी पड़ती हैं कि होश नहीं है, होश खो गया है। और ये सब तुम पूरी कर सकते हो। इनमें कुछ अड़चन नहीं है। तुम दान कर सकते हो, ईमानदारी कर सकते हो, सेवा कर सकते हो, बस एक चीज में अड़चन आती है--तुम होश नहीं साध सकते।
और अगर मैं तुम्हें एक हजार एक विस्तार की बातें दे दूं, तो तुम कहोगे, एक हजार एक में से एक हजार का तो हम पालन कर रहे हैं, अगर एक ध्यान का नहीं भी कर रहे, तो क्या हर्जा है?
मैं तुम्हें एक ही देता हूं, ताकि जीवन-स्थिति साफ रहे। पाखंड के पैदा होने का उपाय न हो। मैं तुम्हें नियम नहीं देता, ताकि तुम नियम तोड़ न सको। मैं तुम्हें नियम नहीं देता, ताकि तुम नियम पालकर धोखा न दे सको। मैं तुम्हें नियम नहीं देता, सिर्फ एक सूत्र देता हूं। शास्त्र नहीं देता, सिर्फ सूत्र देता हूं--होश।

ओशो 🌻
एस धम्मो सनंतानो #4

CS CamScanner

12:02 pm 0 KB/s VoLTE 4G 35%

2d ·

"'^कितनी बेहूदगी की बात है; प्रेम और पूजा के लिए भी नौकर^'"

उसे भी तुम दूसरे से करवा लेते हो पैसे के बल पर। तो अगर तुमने एक पुजारी को सौ रुपया महीना दिया, और उसने रोज आकर तीन दफा भगवान की पूजा की, तो अगर ठीक से समझो तो हिसाब ऐसा है कि तुमने भगवान को सौ रुपए दिए। और क्या दिया? तुम्हारे पास थे, तुम दे सकते थे। और शायद यह सौ रुपए देकर तुम करोड़ों पाने की आकांक्षा कर रहे हो। यह भी शायद रिश्वत है।
नियम तो पूरे किए जा सकते हैं। नियम के पूरे करने से कोई धार्मिक नहीं होता। पाखंडी हो जाता है, हिपोक्रेट हो जाता है।
इसलिए मैंने कोई नियम तुम्हें नहीं दिए। या तो तुम धार्मिक होओ, या अधार्मिक। बीच की मैंने तुम्हें सुविधा नहीं दी है। इसलिए मैं तुम्हें वही आखिरी बात कहता हूं जो बुद्ध ने आनंद को कही, होश साधना। आंख बंद करना, न करना; क्या फर्क पड़ता है। मेरी दृष्टि में ऐसा है कि अगर तुमने होश साधा--आंख खुली रखो, स्त्री को छुओ, धन कमाओ, मकान में रहो, बाजार में बैठो, कोई अंतर नहीं पड़ता। होश न सधा--आंख बंद रखी, जंगल में भाग गए, धन न छुआ, नंगे खड़े हो गए, सब त्याग दिया, तो भी कोई फर्क नहीं पड़ता। होश से ही क्रांति होती है।

इसलिए होश अकेला नियम है, एकमात्र नियम। एस धम्मो सनंतनो। यही एकमात्र सनातन नियम है। यही एकमात्र सनातन धर्म है कि तुम जागकर जीना, और मैं तुमसे कुछ भी नहीं मांगता। विस्तार की बातों में तो तुम बहुत बार धोखा दे गए हो। मैं तुम्हें विस्तार का मौका ही नहीं देता। बस एक छोटा सा शब्द देता हूं: अवेयरनेस, होश। ताकि तुम साफ रहो। सधे तो साफ रहो, न सधे तो साफ रहो। दोनों के बीच में धोखा देने की सुविधा नहीं देता।
इसलिए मैंने कोई नियम नहीं दिए। तुम यह मत समझना कि मैंने नियम नहीं दिए। नियम दिया है। नियम नहीं दिए हैं। और नियम काफी है। कहावत है, सौ सुनार की एक लुहार की। मेरा नियम लुहार वाला है। डिटेल्स और विस्तार की बातों में मैं नहीं पड़ा हूं। क्योंकि तुम उनमें काफी कुशल हो गए हो।

मेरे पास लोग आते हैं. वे कहते हैं. ध्यान तो ठीक. लेकिन कछ और

CamScanner

लेकिन तेरा यहां कुछ भी नहीं है। और जब तेरा है ही नहीं, तो छोड़ना कैसे?

तो एक तो फकीर है, जो छोड़ कर भागता है; लेकिन छोड़कर भागने में तो 'मेरा' था, यह भ्रांति बनी ही रहती है। मेरा नहीं था, तो छोड़ा कैसे! दो भ्रांतियां हैं--एक पकड़ने की भ्रांति; एक छोड़ने की भ्रांति। असली फकीरी भ्रांति से मुक्ति का नाम है। न तो मेरा है कुछ, तो पकडूं कैसे? न मेरा है कुछ, तो छोडूं कैसे? छोड़ने वाला मैं कौन; पकड़ने वाला मैं कौन? जिसने मुझे भेजा, वही जाने; उसकी मरजी, जो चाहे करा ले।

'मन लागो मेरा यार फकीरी में।'

और एक बात खयाल में लेना: 'यार' की फकीरी। उस प्यारे से प्रेम लग गया, इसलिए फकीरी।

एक फकीरी है, जैसे जैन मुनि को फकीरी होती है। उस फकीरी में गणित है, प्रेम नहीं। उस फकीरी में हिसाब-किताब है, प्रेम नहीं है। उस फकीरी में वही पुरानी दुकान है। हिसाब लगा रहा है: 'इतने उपवास करूं, तो कितना पुण्य होगा! इतने व्रत रखूं, तो कितना पुण्य होगा! इतना-इतना पुण्य हो जाएगा, तो किस-किस स्वर्ग में जाऊंगा--पहले, कि दूसरे, कि सातवें?' मगर प्रेम वहां कुछ भी नहीं है।

एक और फकीरी है। कबीर उसी की बात कर रहे हैं। वह फकीरी: उसकी यारी से पैदा होती है; उसके प्रेम में पड़ने से पैदा होती है। और दोनों में जमीन-आसमान का फर्क है, याद रखना। इसलिए जैन, तथाकथित जैन मुनि के चेहरे पर तुम आनंद की आभा न पाओगे। हिसाब पाओगे, गणित पाओगे, तर्क पाओगे; लेकिन मस्ती न पाओगे। बेखुदी न पाओगे। कोई झरना फूटा हो--ऐसा नहीं पाओगे। सब सूख गया--ऐसा पाओगे। वृक्ष में अब फूल तो नहीं लगते, यह तो सच है। अब पत्ते भी नही उगते, यह भी सच है। रूखा-सूखा वृक्ष खड़ा है, ऐसा जैन मुनि है। बसंत नहीं आता अब। बसंत से सबंध टूट गया। पतझड़ से ही उसने नाता बना लिया।

सूफी फकीर है, उसकी फकीरी और ढंग की। उसकी फकीरी में प्रभु का प्रेम है। उसने संसार में कुछ छोड़ा नहीं है। अगर कुछ छोड़ना पड़ा है, अगर कुछ छूट गया है, तो वह उसके प्रेम से छूटा है।

-- कहै कबीर मैं पूरा पाया # 8

🌹🙏🌹ओशो

CamScanner

11:54 am 0 KB/s 37%

जाते हैं। यह मेरी पूजा। यह मेरी आराधना।
गुण तो बदला लेकिन काम वही का वही रहा। तो कबीर की फकीरी का मतलबः घर-द्वार छोड़ कर भाग जाने से नहीं है। कबीर की फकीरी बड़ी आंतरिक है। बड़ी हार्दिक है। कबीर की फकीरी समझ की क्रांति है।
'मन लागो मेरा यार फकीरी में।'
तो फकीरी का अर्थ क्या? फकीरी का अर्थः जो है, उससे तृप्ति। जैसा है, उससे तृप्ति। और की आकांक्षा मर गई। परिग्रह के भाव मुक्ति हो गई। इसलिए कबीर कहते हैं: क्या मेरा क्या तेरा? शरम नहीं आती--कबीर कहते हैं--किसी चीज को अपनी बताने में? सब परमात्मा की है। सबै भूमि गोपाल की। तुझे बीच में अपना दावा करते शर्म नहीं आती? न तो कुछ लेकर आया, न कुछ लेकर जाएगा। और बीच में दावा कर लेता है? धन्यवाद दे परमात्मा को कि वस्तुओं के उपयोग का तुझे मौका दिया। लेकिन तेरा यहां कुछ भी नहीं है। और जब तेरा है ही नहीं, तो छोड़ेगा कैसे?
तो एक तो फकीर है, जो छोड़ कर भागता है; लेकिन छोड़कर भागने में तो 'मेरा' था, यह भ्रांति बनी ही रहती है। मेरा नहीं था, तो छोड़ा कैसे! दो भ्रांतियां हैं--एक पकड़ने की भ्रांति; एक छोड़ने की भ्रांति। असली फकीरी भ्रांति से मुक्ति का नाम है। न तो मेरा है कुछ, तो पकड़ूं कैसे? न मेरा है कुछ, तो छोड़ूं कैसे? छोड़ने वाला मैं कौन; पकड़ने वाला मैं कौन? जिसने मुझे भेजा, वही जाने; उसकी मरजी, जो चाहे करा ले।
'मन लागो मेरा यार फकीरी में।'
और एक बात खयाल में लेनाः 'यार' की फकीरी। उस प्यारे से प्रेम लग गया, इसलिए फकीरी।
एक फकीरी है, जैसे जैन मुनि को फकीरी होती है। उस फकीरी में गणित है, प्रेम नहीं। उस फकीरी में हिसाब-किताब है, प्रेम नहीं है। उस फकीरी में वही पुरानी दुकान है। हिसाब लगा रहा है: 'इतने उपवास करूं, तो कितना पुण्य होगा! इतने व्रत रखूं, तो कितना पुण्य होगा! इतना-इतना पुण्य हो जाएगा, तो किस-किस स्वर्ग में जाऊंगा--पहले, कि दूसरे, कि सातवें?' मगर प्रेम वहां कुछ भी नहीं है।
एक और फकीरी है। कबीर उसी की बात कर रहे हैं। वह फकीरीः उसकी यारी से पैदा होती है; उसके प्रेम में पड़ने से पैदा होती है। और दोनों में जमीन-आसमान का फर्क है, याद रखना। इसलिए जैन, तथाकथित जैन मुनि के चेहरे पर तुम आनंद की आभा न पाओगे। हिसाब पाओगे,

CamScanner

11:53 am 0 KB/s VoLTE 4G 37%

Osho Human Being To Be.In.God
13h ·

कबीर ने कभी दुकान नहीं छोड़ी, याद रखना। कबीर ने अभी अपना काम नहीं छोड़ा, पत्नी नहीं छोड़ी, बच्चे नहीं छोड़े। कबीर परमज्ञान को उपलब्ध हो गए लेकिन जुलाहे थे, सो जुलाहे रहे। बुनते थे, सो बुनते रहे। कपड़े बुनते थे तो कपड़ों का बुनना जारी रहा। अब उन्हीं कपड़ों में राम की धुन भी बनने लगे। अब उन्हीं कपड़ों में अपना हृदय भी फैलाने लगे। पहले साधारण आदमियों के लिए बुनते थे, फिर राम के लिए बुनने लगे। फिर हर ग्राहक राम हो गया। यह क्रांति तो हुई। फिर ग्राहक-ग्राहक को रमा कहने लगे; साहिब कहने लगे। यह तो फर्क हुआ। लेकिन जो काम था, वह वैसाही चलता रहा।

कबीर के भक्त उनसे कहते थे...। हजारों उनके भक्त थे। उनसे कहते थे: 'अब आप ये कपड़े बुनना बंद कर दें; शोभा नहीं देता। आपको कमी क्या है? हम हैं, हम सब फिक्र करने को तैयार हैं।' मगर कबीर हंसते। वे कहते कि जो प्रभु ने मुझे अवसर दिया है और जो करने की आज्ञा दी है, वह मैं करता रहूंगा। जब तक हाथ-पैर में बल है, जो मैं जानता हूं वह करता रहूंगा। फिर मुझे बड़ा आनंद है। फिर तुमने देखा नहीं: वे जो बाजार में राम कभी-कभी मेरा कपड़ा लेने आते है, कितने प्रसन्न होकर जाते हैं। यह मेरी पूजा। यह मेरी आराधना।

गुण तो बदला लेकिन काम वही का वही रहा। तो कबीर की फकीरी का मतलब: घर-द्वार छोड़ कर भाग जाने से नहीं है। कबीर की फकीरी बड़ी आंतरिक है। बड़ी हार्दिक है। कबीर की फकीरी समझ की क्रांति है।

'मन लागो मेरा यार फकीरी में।'

तो फकीरी का अर्थ क्या? फकीरी का अर्थ: जो है, उससे तृप्ति। जैसा है, उससे तृप्ति। और की आकांक्षा मर गई। परिग्रह के भाव मुक्ति हो गई। इसलिए कबीर कहते हैं: क्या मेरा क्या तेरा? शरम नहीं आती--कबीर कहते हैं--किसी चीज को अपनी बताने में? सब परमात्मा की है। सबै भूमि गोपाल की। तुझे बीच में अपना दावा करते शर्म नहीं आती? न तो कुछ लेकर आया, न कुछ लेकर जाएगा। और बीच में दावा कर लेता है? धन्यवाद दे परमात्मा को कि वस्तुओं के उपयोग का तुझे मौका दिया। लेकिन तेरा यहां कुछ भी नहीं है। और जब तेरा है ही नहीं, तो छोड़ेगा कैसे?

CamScanner

9:46 am 0 KB/s VoLTE 4G 47%
facebook

उसने आखिरी दम लगा दी – भागा – भागा...। सूरज डूबने लगा; इधर सूरज डूब रहा है, उधर वो भाग रहा है...। सूरज डूबते – डूबते बस जाकर गिर पड़ा। कुछ पाँच – सात गज की दूरी रह गई है, घिसटने लगा।
अभी सूरज की आखिरी कोर क्षितिज पर रह गई घिसटने लगा। और जब उसका हाथ उस जमीन के टुकड़े पर पहुँचा, जहाँ से भागा था, उस खूँटी पर, सूरज डूब गया।

वहाँ सूरज डूबा, यहाँ यह आदमी भी मर गया। इतनी मेहनत कर ली! शायद हृदय कर दौरा पड़ गया। और सारे गाँव के सीधे – सादे लोग जिनको वह समझाता था, हँसने लगे और एक – दूसरे से बात करने लगे!

ये पागल आदमी आते ही जाते हैं! इस तरह के पागल लोग आते ही रहते हैं! यह कोई नई घटना न थी; अक्सर लोग आ जाते थे खबरें सुनकर, और इसी तरह मरते थे। यह कोई अपवाद नहीं था; यही नियम था। अब तक ऐसा एक भी आदमी नहीं आया था, जो घेरकर जमीन का मालिक बन पाया हो।

यह कहानी तुम्हारी कहानी है, तुम्हारी जिंदगी की कहानी है, सबकी जिंदगी की कहानी है। यही तो तुम कर रहे हो – दौड़ रहे हो कि कितनी जमीन घेर लें! बारह भी बज जाते हैं, दोपहर भी आ जाती है, लौटने का भी समय होने लगता है – मगर थोड़ा और दौड़ लें! न भूख की फिक्र है, न प्यास की फिक्र है।

जीने का समय कहाँ है; पहले जमीन घेर लें, पहले जितोड़ी भर लें, पहले बैंक में रुपया इकट्ठा हो जाए, फिर जी लेंगे, फिर बाद में जी लेंगे, एक ही दिन का तो मामला है। और कभी कोई नहीं जी पाता। गरीब मर जाते हैं भूखे; अमीर मर जाते हैं भूखे, कभी कोई नहीं जी पाता। जीने के लिए थोड़ी विश्रांति चाहिए। जीने के लिए थोड़ी समझ चाहिए। जीवन मुफ्त नहीं मिलता – बोध चाहिए।

CamScanner

'यदि आपको याद हो, जब मैं चौथी क्लास में पढ़ता था, तब एक दिन सुबह सुबह मेरे सहपाठी ने उस दिन उसकी महंगी घड़ी चोरी होने की आपसे शिकायत की थी।
आपने क्लास का दरवाज़ा बन्द करवाया और सभी बच्चों को क्लास में पीछे एक साथ लाइन में खड़ा होने को कहा था। फिर आपने सभी बच्चों की जेबें टटोली थी। मेरे जेब से आपको घड़ी मिल गई थी जो मैंने चुराई थी। पर चूंकि आपने सभी बच्चों को अपनी आंखें बंद रखने को कहा था तो किसी को पता नहीं चला कि घड़ी मैंने चुराई थी।
मैम, उस दिन आपने मुझे लज्जा व शर्म से बचा लिया था और इस घटना के बाद कभी भी आपने अपने व्यवहार से मुझे यह नहीं लगने दिया कि मैंने एक गलत कार्य किया था।
आपने बगैर कुछ कहे मुझे क्षमा भी कर दिया और दूसरे बच्चे मुझे चोर कहते, इससे भी बचा लिया था।'

यह सुनकर टीचर बोली, 'मुझे भी नहीं पता था बेटा कि वो घड़ी किसने चुराई थी।'

वो व्यक्ति बोला,'नहीं मैम, ये कैसे संभव है ? आपने स्वयम् अपने हाथों से चोरी की गई घड़ी मेरे जेब से निकाली थी।'

टीचर बोली.....
'बेटा मैं जब सबके पॉकेट चेक कर रही थी, उस समय मैंने कहा था कि सब अपनी आँखें बंद रखेंगे और वही मैंने भी किया था। मैंने स्वयम् अपनी भी आँखें बंद रखी थी।'

किसी को उसकी ऐसी शर्मनाक परिस्थिति से बचाने का इससे अच्छा उदाहरण और क्या हो सकता है?

आइये प्रण करें कि यदि हमें किसी की कमजोरी मालूम भी पड़ जाए तो उसका दोहन न करें। उस व्यक्ति को स्वयम् उसकी नज़रों में गिरायें। उसका चारित्रिक उत्थान करें। आपका व्यक्तित्व स्वयम् ही, और भी बढ़ जायेगा।
💐आपका जीवन शुभ हो 🙏😊

CamScanner

9:43 am 0 KB/s VoLTE 4G 47%

कंडक्टर हो गया, फिर वहां से शक्ति प्रवाहित नहीं होती। तो अगर ऐसे व्यक्ति के पास जो समग्र भांति भीतर से शून्य है, और जो कुछ नहीं करना चाहता आपके लिए– कुछ करता ही नहीं वह–उसके वैक्यूम से, उसके शून्य से, उसके द्वार से, उसके मार्ग से परमात्मा की शक्ति आप तक पहुंच सकती है; और गति बहुत तीव्र हो सकती है। कल दोपहर के मौन में इसको खयाल में लें।

तो कल के लिए दो सूचनाएं भी मैं इसके साथ दे दूं।

शक्तिपात का अर्थ है कि परमात्मा की शक्ति आप पर उतर गई। शक्ति दो तरह से संभव है–या तो आपसे शक्ति उठे और परमात्मा तक मिल जाए, या परमात्मा से शक्ति आए और आप तक मिल जाए। बात एक ही है, दो तरफ से देखने के ढंग हैं। वह वैसे ही, जैसे कोई गिलास में आधा गिलास पानी भरा रखा हो, और कोई कहे कि आधा गिलास खाली, और कोई कहे आधा गिलास भरा। और अगर पंडित हों तो विवाद करें, और तय न हो पाए कभी भी कि क्या मामला है! क्योंकि दोनों ही बातें सही हैं।

ऊपर से भी शक्ति उतरती है और नीचे से भी शक्ति जाती है। और जब उनका मिलन होता है, जहां आपके भीतर सोई हुई ऊर्जा विराट की ऊर्जा से मिलती है, तब एक्सप्लोजन, विस्फोट हो जाता है। उस विस्फोट के लिए कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। उस विस्फोट से क्या होगा, यह भी नहीं कहा जा सकता। उस विस्फोट के बाद क्या होगा, यह भी नहीं कहा जा सकता। वैसे उस विस्फोट के बाद, दुनिया में जिन लोगों को भी वह विस्फोट हुआ है, वे जिंदगी भर यही चिल्लाते रहे कि आओ और तुम भी उस विस्फोट से गुजर जाओ। कुछ हुआ है जो अनिर्वचनीय है।

शक्तिपात का अर्थ है, ऊपर से शक्ति आ जाए। आ सकती है। रोज आती है। और किसी ऐसे व्यक्ति के माध्यम को ले सकती है वह शक्ति जो सब भांति शून्य हो। तो वह कंडक्टर हो जाता है, और कुछ भी नहीं। लेकिन अगर अहंकार थोड़ा भी है इतना भी कि मैं कर दूंगा शक्तिपात, तो नॉन–कंडक्टर हो गया वह आदमी, उससे शक्ति नहीं प्रवाहित होगी।

ओशो

जिन खोजा तिन पाइया, प्रवचन - 6

CamScanner

9:43 am 0 KB/s VoLTE 4G 48%

शक्तिपात क्या है?

एक अंतिम सवाल एक मित्र पूछते हैं कि ओशो शक्तिपात क्या है? क्या कोई शक्तिपात कर सकता है?

शक्तिपात और अहंशून्य माध्यम:

कोई कर नहीं सकता, लेकिन किसी से हो सकता है। कोई कर नहीं सकता। और अगर कोई कहता हो कि मैं शक्तिपात करता हूं तो फिर सब धोखे की बातें हैं। कोई कर नहीं सकता, लेकिन किसी क्षण में किसी से हो सकता है। अगर कोई बहुत शून्य व्यक्ति है, सब भांति समर्पित, सब भांति शून्य, तो उसके सान्निध्य में शक्तिपात हो सकता है। वह कंडक्टर का काम कर सकता है—जानकर नहीं। परमात्मा की विराट शक्ति उसके माध्यम से किसी दूसरे में प्रवेश कर सकती है।
लेकिन कोई जानकर कंडक्टर नहीं बन सकता, क्योंकि कंडक्टर बनने की पहली शर्त यह है कि आपको पता न हो; ईगो न हो। नहीं तो नॉन—कंडक्टर हो जाते हैं फौरन। जहां ईगो है बीच में, वहां आदमी नॉन—कंडक्टर हो गया, फिर वहां से शक्ति प्रवाहित नहीं होती। तो अगर ऐसे व्यक्ति के पास जो समग्र भांति भीतर से शून्य है, और जो कुछ नहीं करना चाहता आपके लिए— कुछ करता ही नहीं वह—उसके वैक्यूम से, उसके शून्य से, उसके द्वार से, उसके मार्ग से परमात्मा की शक्ति आप तक पहुंच सकती है; और गति बहुत तीव्र हो सकती है। कल दोपहर के मौन में इसको खयाल में लें।
तो कल के लिए दो सूचनाएं भी मैं इसके साथ दे दूं।
शक्तिपात का अर्थ है कि परमात्मा की शक्ति आप पर उतर गई। शक्ति दो तरह से संभव है—या तो आपसे शक्ति उठे और परमात्मा तक मिल जाए, या परमात्मा से शक्ति आए और आप तक मिल जाए। बात एक ही है, दो तरफ से देखने के ढंग हैं। वह वैसे ही, जैसे कोई गिलास में आधा गिलास पानी भरा रखा हो, और कोई कहे कि आधा गिलास खाली, और कोई कहे आधा गिलास भरा। और अगर पंडित हों तो विवाद करें, और तय न हो पाए कभी भी कि क्या मामला है! क्योंकि दोनों ही बातें सही हैं।
ऊपर से भी शक्ति उतरती है और नीचे से भी शक्ति जाती है। और जब

CamScanner

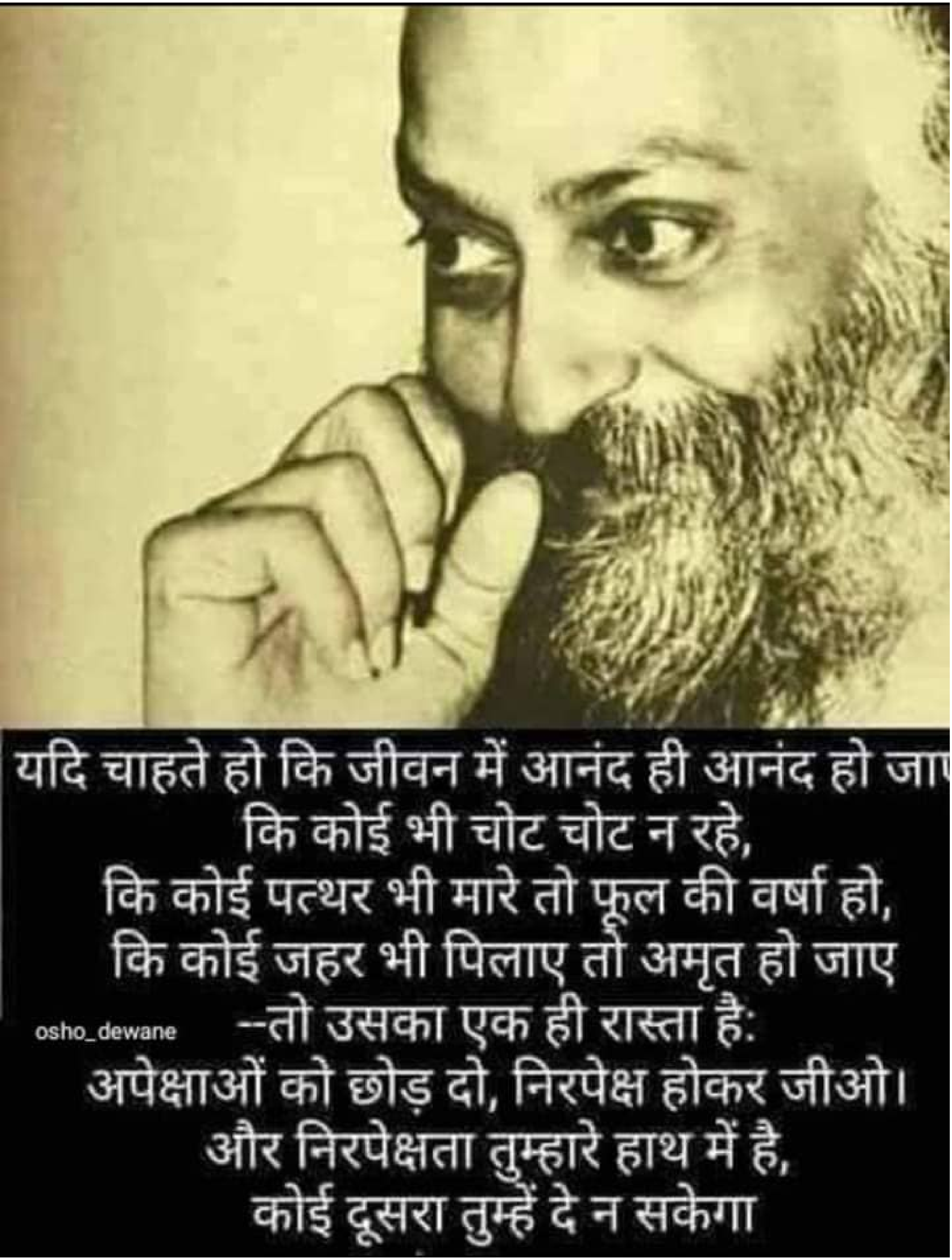
यदि चाहते हो कि जीवन में आनंद ही आनंद हो जा
कि कोई भी चोट चोट न रहे,
कि कोई पत्थर भी मारे तो फूल की वर्षा हो,
कि कोई जहर भी पिलाए तो अमृत हो जाए
--तो उसका एक ही रास्ता है:
अपेक्षाओं को छोड़ दो, निरपेक्ष होकर जीओ।
और निरपेक्षता तुम्हारे हाथ में है,
कोई दूसरा तुम्हें दे न सकेगा
osho_dewane

CamScanner

9:34 am 0 KB/s VoLTE 4G 49%

आशा नहीं टूटती, हताशा नहीं आती। वह फिर वापस गुफा में चला गया। तीन साल तक कहते हैं, फिर उसने हिम्मत करके ध्यान किया। कुछ न हुआ। सब श्रम लगा दिया, लेकिन कुछ न हुआ। फिर घबड़ाकर एक दिन बाहर आ गया और कहा, अब बहुत हो गया!

फिर उस वृक्ष के नीचे बैठा था कि देखा एक मकड़ी जाला बुन रही है। गिर-गिर जाती है, जाले का धागा सम्हलता नहीं, फिर-फिर बुनती है। फिर उसे खयाल आया कि आश्चर्य की बात है, ऐसी चीजें मुझे बाहर आते ही से दिखायी पड़ जाती हैं। अभी मकड़ी भी नहीं हारी, मैं क्यों हारूं? एक बार और कोशिश कर लूं। कहते हैं, वह फिर तीन साल ध्यान किया। कुछ न हुआ। बहुत परेशान हुआ। अब उसने सोचा, अब बाहर निकलूंगा पता नहीं फिर कुछ हो जाए, तो अब की दफे आंख बंद करके ही चले जाना है। अब कुछ भी हो रहा हो बाहर--मकड़ी हो कि चिड़िया हो कि कुछ भी हो, परमात्मा कोई भी इशारे दे, अब बहुत हो गया, नौ साल कोई थोड़ा वक्त नहीं, सारा जीवन गंवा दिया!

वह आंख बंद करके भागा। वह जैसे ही पहाड़ से नीचे उतर रहा था, उसने देखा एक कुतिया, उसकी पीठ सड़ गयी है, उसमें कीड़े पड़ गये हैं--वह उसे दिखायी पड़ी। उससे न रहा गया। बैठा, उसके कीड़े अलग किये, जब वह उसके घाव धो रहा था, तभी ध्यान घटा। जो नौ साल में नहीं घटा था, वह घटा। अचानक, जैसे कुछ गहन में भीतर खींचे लिये चला गया। आंख बंद हो गयीं, वह भीतर पहुंच गया। जिसकी तलाश थी, वह रोशनी सामने खड़ी है। जिसकी तलाश थी, वह बुद्धत्व खिला। उसने कहा, हे प्रभु! इतने दिन तक खोजता था--नौ वर्ष अथक श्रम किये, तब तुम न दिखायी पड़े, तब यह रोशनी न मिली, अब! तो कहते हैं उस रोशनी से उत्तर आया कि मैं तो तब भी तेरे ही भीतर था, लेकिन तेरे ध्यान की चेष्टा बड़ी अहंकार-पूर्ण थी। तेरा अहंकार बाधा बन रहा था। इस कुतिया के घाव धोते वक्त एक क्षण को तेरा अहंकार मौजूद न रहा। करुणा हो, तो अहंकार मौजूद नहीं रहता। प्रेम हो, तो अहंकार समाप्त हो जाता है। मैं तो सदा से तेरे पास था--नौ महीने से भी और नौ सालों से भी, नौ जन्मों से भी । मैं तो भीतर था ही, मैं तेरा स्वभाव हूं, लेकिन तू भीतर नहीं आ पाता था। ध्यान भी कर रहा था तू, तो उसमें अकड़ थी--मैं पाकर रहूंगा। वह अहंकार की उदघोषणा थी।

🪷आचार्य श्री रजनीश ओशो🪷

एस धम्मो सनंतनो

CamScanner

9:32 am 0 KB/s 49%

एक बौद्ध भिक्षु हुआ--आर्य असंग। बड़ा बहुमूल्य भिक्षु हुआ। उसके जीवन में बड़ी अनूठी कथा है। नालंदा में आचार्य था। फिर समझ आयी संसार की व्यर्थता की तो सब छोड़कर चला गया। तय कर लिया कि अब तो ध्यान में ही डूबूंगा, हो गया ज्ञान बहुत। जान लिया सब, और जाना तो कुछ भी नहीं। पढ़ डाले शास्त्र सब, हाथ तो कुछ भी न आया। छोड़कर पहाड़ चला गया। एक गुफा में बैठ गया। तीन साल अथक ध्यान किया। लेकिन कहीं मंजिल करीब आती मालूम न पड़ी। हतोत्साह, हताशा से भरा गुफा से बाहर निकल आया। सोचा लौट जाऊं। तभी उसने क्या देखा कि एक चिड़िया वृक्षों से पत्ते तोड़त्तोड़कर लाती है, पत्ते गिर-गिर जाते हैं, घोंसला बनता नहीं; मगर फिर चली जाती है, फिर ले आती है, फिर चली जाती है, फिर ले आती है। उसने सोचा क्या इस चिड़िया से भी कमजोर है मेरा साहस और मेरी आशा और मेरी आस्था? घोंसला बन नहीं रहा है, लेकिन इसकी कहीं भी आशा नहीं टूटती, हताशा नहीं आती। वह फिर वापस गुफा में चला गया। तीन साल तक कहते हैं, फिर उसने हिम्मत करके ध्यान किया। कुछ न हुआ। सब श्रम लगा दिया, लेकिन कुछ न हुआ। फिर घबड़ाकर एक दिन बाहर आ गया और कहा, अब बहुत हो गया!
फिर उस वृक्ष के नीचे बैठा था कि देखा एक मकड़ी जाला बुन रही है। गिर-गिर जाती है, जाले का धागा सम्हलता नहीं, फिर-फिर बुनती है। फिर उसे खयाल आया कि आश्चर्य की बात है, ऐसी चीजें मुझे बाहर आते ही से दिखायी पड़ जाती हैं। अभी मकड़ी भी नहीं हारी, मैं क्यों हारूं? एक बार और कोशिश कर लूं। कहते हैं, वह फिर तीन साल ध्यान किया। कुछ न हुआ। बहुत परेशान हुआ। अब उसने सोचा, अब बाहर निकलूंगा पता नहीं फिर कुछ हो जाए, तो अब की दफे आंख बंद करके ही चले जाना है। अब कुछ भी हो रहा हो बाहर--मकड़ी हो कि चिड़िया हो कि कुछ भी हो, परमात्मा कोई भी इशारे दे, अब बहुत हो गया, नौ साल कोई थोड़ा वक्त नहीं, सारा जीवन गंवा दिया!
वह आंख बंद करके भागा। वह जैसे ही पहाड़ से नीचे उतर रहा था, उसने देखा एक कुतिया, उसकी पीठ सड़ गयी है, उसमें कीड़े पड़ गये हैं--वह उसे दिखायी पड़ी। उससे न रहा गया। बैठा, उसके कीड़े अलग किये, जब वह उसके घाव धो रहा था, तभी ध्यान घटा। जो नौ साल में नहीं घटा था, वह घटा। अचानक, जैसे कुछ गहन में भीतर खींचे लिये चला गया। आंख बंद हो गयीं, वह भीतर पहुंच गया। जिसकी तलाश

CamScanner

कलयुग केवल नाम अधारा,

सुमिर सुमिर नर उतरहि पारा॥

भावार्थ:- इस कलयुग में भगवान का नाम ही आधार है। केवल नाम सुनने से, जपने से मानव भाव सागर से उतर जाता है।

CamScanner

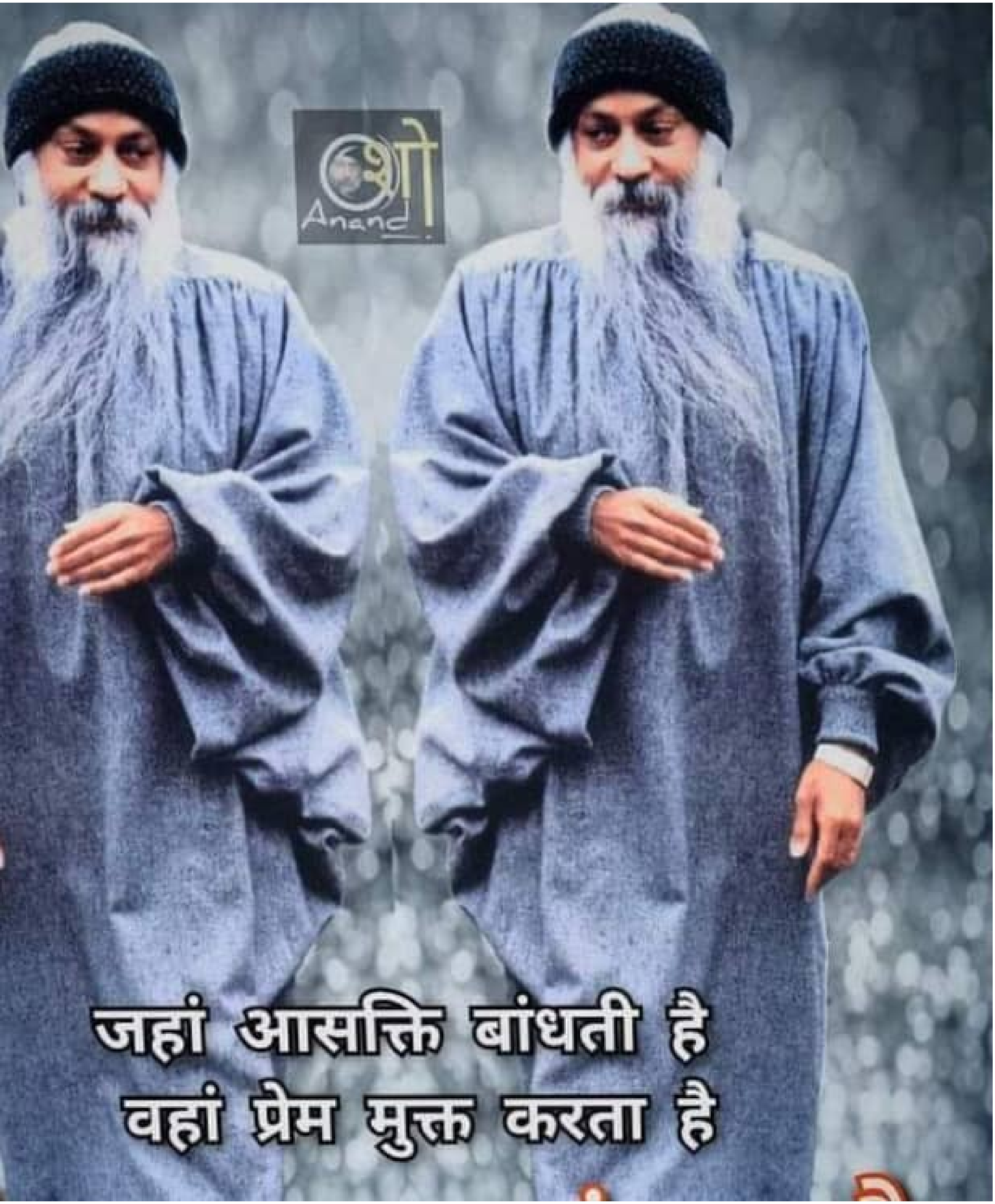

CamScanner

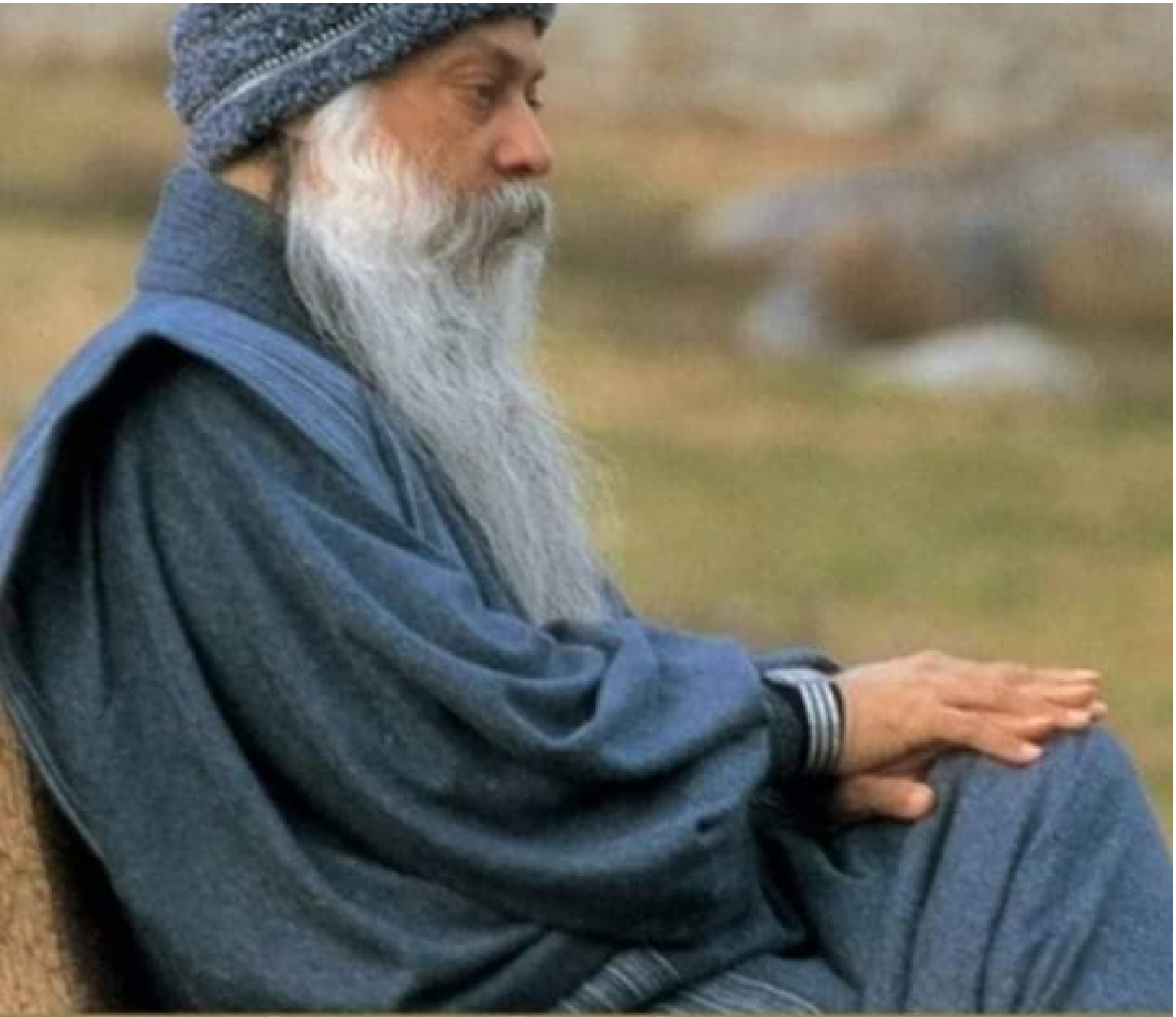

हृदय एक रोता हुआ भिखारी का पात्र है,
जिसमें कुछ भी ना पड़ा और जीवन ऐसे ही गया।
ओशो अहोभाव

CamScanner

कि मैं जो कह रहा हूं उसे केवल रचनात्मक, समृद्ध, शिक्षित, बुद्धिमान, सुसंस्कृत ही समझ सकता है।
कोई भिखारी मेरे पास कभी नहीं आ सकता.
गरीब कभी मेरे पास नहीं आ सकते. मेरे और उसके बीच फासला बहुत है.
वे मुझे सुन तो सकते हैं
लेकिन समझ नहीं सकते। तो यह स्वाभाविक है कि
मैं अमीरों का गुरु हूं।

CamScanner

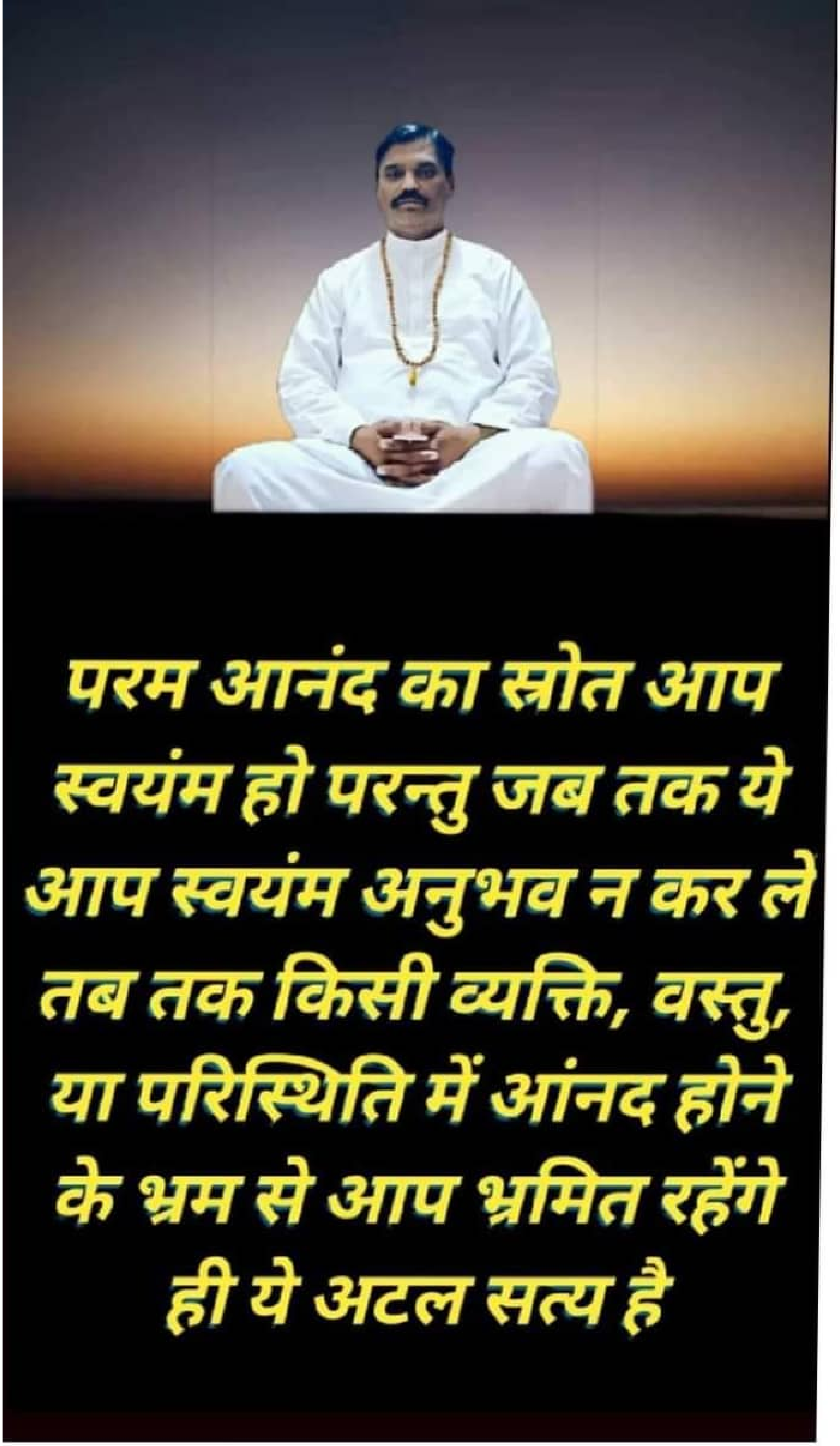
परम आनंद का स्रोत आप
स्वयंम हो परन्तु जब तक ये
आप स्वयंम अनुभव न कर ले
तब तक किसी व्यक्ति, वस्तु,
या परिस्थिति में आंनद होने
के भ्रम से आप भ्रमित रहेंगे
ही ये अटल सत्य है

CamScanner

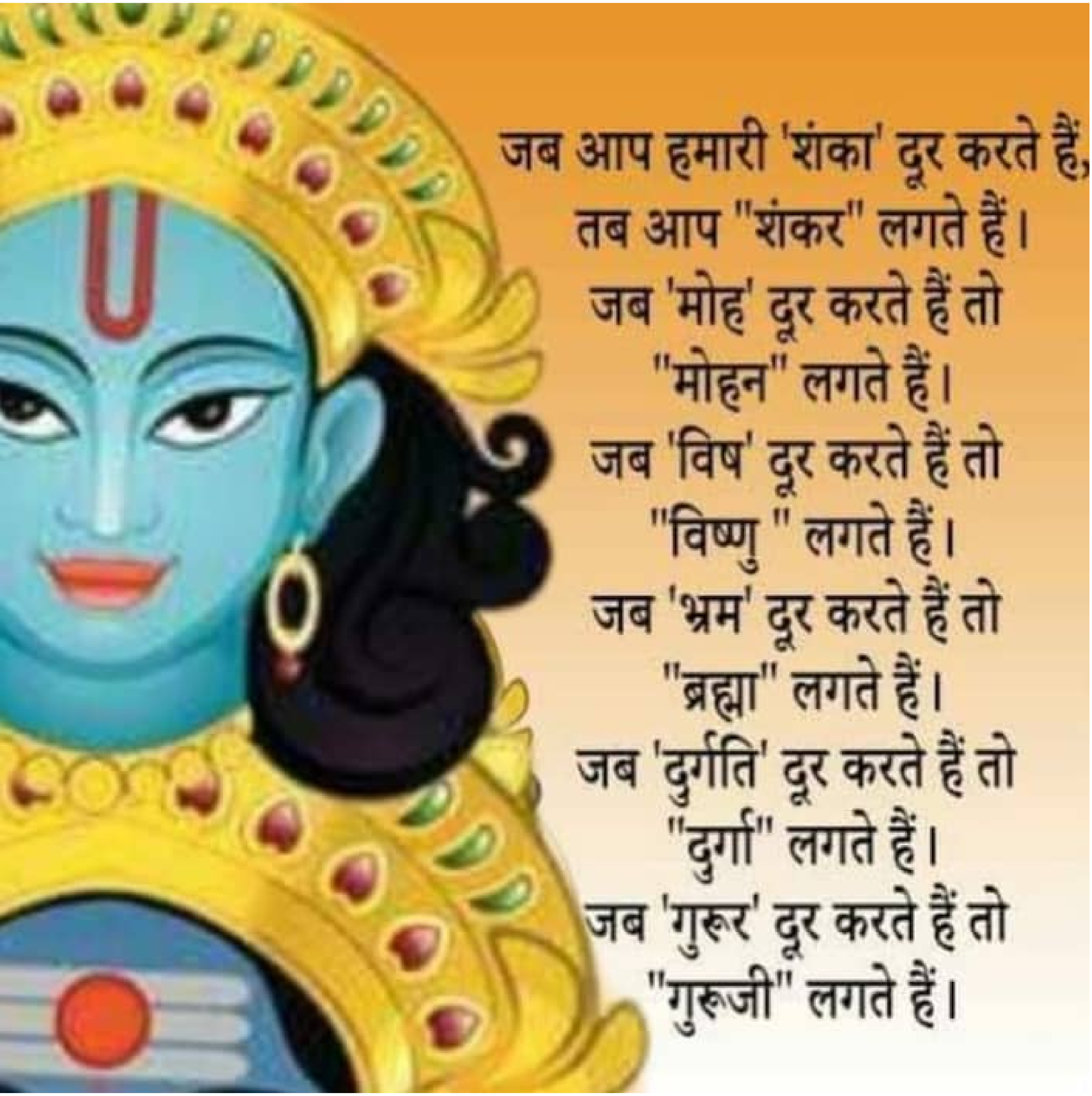
जब आप हमारी 'शंका' दूर करते हैं,
तब आप "शंकर" लगते हैं।
जब 'मोह' दूर करते हैं तो
"मोहन" लगते हैं।
जब 'विष' दूर करते हैं तो
"विष्णु " लगते हैं।
जब 'भ्रम' दूर करते हैं तो
"ब्रह्मा" लगते हैं।
जब 'दुर्गति' दूर करते हैं तो
"दुर्गा" लगते हैं।
जब 'गुरूर' दूर करते हैं तो
"गुरूजी" लगते हैं।

CamScanner

1:29 pm 0 KB/s VoLTE 4G 15%

दोनों दूसरे किनारे पर ही हैं। तुम पानी पर चलकर उस पार जाओ और माझी को बुला लाओ।

मिलरेपा चला गया। वह पानी पर चलकर दूसरे किनारे पहुंच गया और नाव को इस पार ले आया। अब तो गुरु को भी पक्का गया कि यह चमत्कार है। उसने मिलरेपा से पूछा कि तुमने यह कैसे किया? मिलरेपा ने कहा कि मैं बस आपका नाम लेकर चला जाता हूं। गुरुदेव, आपका नाम लेने भर से काम हो जाता है।

गुरु ने सोचा कि जब मेरे नाम से हो जाता है तो मैं ही क्यों न प्रयोग करूं! और उसने पानी पर चलने की कोशिश की, लेकिन वह नदी में डूब गया। और तब से फिर किसी ने उस गुरु के संबंध में कुछ नहीं सुना।

यह कैसे हुआ? समर्पण असली चीज है, गुरु या वह व्यक्ति नहीं जिसके प्रति समर्पण किया जाता है। कोई मूर्ति, कोई मंदिर, वृक्ष, पत्थर, कुछ भी काम दे देगा। अगर तुम समर्पण करते हो तो तुम अस्तित्व के प्रति खुले हो जाते हो, तब समस्त अस्तित्व तुम्हें अपनी बाहों में ले लेता है। हो सकता है कि यह कथा कथा ही हो, लेकिन इसका अर्थ यह है कि जब तुम समर्पण करते हो तो सारा अस्तित्व तुम्हारे साथ हो जाता है। तब आग, पर्वत, नदी, घाटी, सब तुम्हारे साथ हैं, कोई भी तुम्हारे विरोध में नहीं है। क्योंकि जब तुम ही किसी के विरुद्ध नहीं रहे तो सारी शत्रुता समाप्त हो जाती है।

अगर तुम पहाड़ से गिरते हो और तुम्हारी हड्डियां टूट जाती हैं तो वे तुम्हारे अहंकार की हड्डियां हैं जो टूटती हैं। तुम प्रतिरोध कर रहे थे, तुमने घाटी को तुम्हारी सहायता करने का मौका नहीं दिया। तुम स्वयं अपनी सहायता करने में लगे थे, तुम अपने को अस्तित्व से ज्यादा बुद्धिमान समझते थे।

समर्पण का अर्थ है कि तुम्हें यह समझ आ गई कि मैं जो भी करूंगा वह मूढ़तापूर्ण होगा। और तुमने जन्मों–जन्मों ये मूढ़ताएं की हैं। अब इसे अस्तित्व पर छोड़ दो। तुमसे कुछ होने वाला नहीं है। तुम्हें यह समझना

Text copied to clipboard

CamScanner

1:33 pm 0 KB/s VoLTE 4G 14%

6 Oct ·

🔆संन्यास के तीन बुनियादी सूत्र खयाल में ले लेने जैसे हैं।

1️⃣जीवन एक प्रवाह है। उसमें रुक नहीं जाना, ठहर नहीं जाना, वहां कहीं घर नहीं बना लेना है। एक यात्रा है जीवन। पड़ाव है बहुत, लेकिन मंजिल कहीं भी नहीं। मंजिल जीवन के पार परमात्मा में है।
2️⃣जीवन जो भी दे उसके साथ पूर्ण संतुइष्ट और पूर्ण अनुग्रह, क्योंकि जहां असंतुष्ट हुए हम तो जीवन जो देता है, उसे भी छीन लेता है और जहां संतुष्ट हुएहम कि जीवन जो नहीं देता, उसके भी द्वार खुल जाते हैं। और—
3️⃣जीवन में सुरक्षा का मोह न रखना। सुरक्षा संभव नहीं है। तथ्य ही असंभावना का है। असुरक्षा ही जीवन है। सच तो यह है कि सिर्फ मृत्यु ही सुरक्षित हो सकती है। जीवन तो असुरीक्षत होगा ही। इसलिए जितना जीवंत व्यक्तित्व होगा, उतना असुरक्षित होगा और जितना मरा हुआ व्यक्तित्व होगा, उतना सुरक्षित होगा।
सुना है मैंने, एक सूफी फकीर मुल्ला नसरुद्दीन ने अपने मरते वक्त वसीयत की थी कि मेरी कब्र पर दरवाजा बना देना और उस दरवाजे पर कीमती से कीमती, वजनी से वजनी, मजबूत से मजबूत ताला लगा देना, लेकिन एक बात ध्यान रखना, दरवाजा ही बनाना, मेरी कब्र की चारों तरफ दीवार मत बनाना। आज भी नसरुद्दीन की कब्र पर दरवाजा खड़ा है, बिना दीवारों के, ताले लगे हैं—जोर से, मजबूत। चाबी समुद्र में फेंक दी गई, ताकि कोई खोज न ले। नसरुद्दीन की मरते वक्त यह आखिरी मजाक थी—संन्यासी की मजाक, संसारियों के प्रति। हम भी जीवन में कितने ही ताले डालें, सिर्फ ताले ही रह जाते हैं। चारों तरफ जीवन असुरक्षित है सदा, कहीं कोई दीवार नहीं है।
जो इस तथ्य को स्वीकार करके जीना शुरू कर देता है—कि जीवन में कोई सुरक्षा नहीं है, असुरक्षा के लिए राजी हूं मेरी पूर्ण सहमति है, वही संन्यासी है और जो असुरक्षित होने को तैयार हो गया—निराधार होने को —उसे परमात्मा का आधार उपलब्ध हो जाता है।

'नव— संन्यास क्या?
से संकलित 'संन्यास: मेरी दृष्टि में' :
रेडिओ—वार्ता आकाशवाणी बम्बई से प्रसारित

CamScanner

7:10 pm 0 KB/s VoLTE 4G 38%

यह कहानी तो आपने सुनी ही होगी कि राजपुत्रों के गुरू द्रोणाचार्य द्वारा अस्वीकार कर दिए जाने पर, एक लव्य ने उनकी मिट्टी की मूर्ति बना कर धनुर्विद्या का अभ्यास किया।
एक दिन एक लव्य प्रतिदिन की ही भांति अभ्यास कर रहा था, कि एक कुत्ता उसे देख कर जोर जोर से भौंकने लगा। ध्यान भंग होता देख, एक लव्य ने एक के बाद एक कईं तीर इस प्रकार छोड़े कि कुत्ते के मुँह में कोई घाव भी नहीं हुआ और उसका मुँह तीरों से बंद भी हो गया।
वह कुत्ता व्याकुल होकर पास ही में लगे राज शिविर से होकर गुजरा। जहाँ अर्जुन आदि सहित गुरू द्रोण ने उसे देखा और वे ऐसे विचित्र धनुर्धारी को खोजते हुए एक लव्य के पास पहुँच गए।
एक लव्य ने गुरूजी को देखा तो चरणों में प्रणाम किया। मालूम पड़ने पर कि यह एक लव्य उन्हें ही गुरू मान कर धनुर्विद्या में पारंगत हुआ है, गुरू द्रोण ने दक्षिणा स्वरूप एक लव्य के दाहिने हाथ का अंगूठा माँग लिया, जो एक लव्य ने सहज ही गुरूजी के चरणों में समर्पित कर दिया।
अब इस कथा का आध्यात्मिक रहस्य-
एक इष्ट में लौ लग जाना ही एक लव्य हो जाना है। साधन पथ की प्रारंभिक कक्षा का विद्यार्थी क्षुद्र नाम से जाना जाता है, जो कालांतर में, इसी जन्म में, इसी देह से, उत्तरोत्तर साधन करता हुआ, वैश्य और क्षत्रिय श्रेणी पार कर ब्राह्मणत्व की प्राप्ति करता है।
गुरूजी का स्वरूप अपने अंत:करण में उतार लेना ही उनकी मूर्ति बनाना है। यही "ध्यानमूलं गुरूर्मूर्तिम्" है। ध्यान ही धनुष है, गुरूदेव का उपदेश ही बाण है। गुरूजी के उपदेश पर मनन करना ही धनुर्विद्या का अभ्यास करना है।
मन ही कुत्ता है। मन में बार बार सांसारिक विचार उठना ही उस कुत्ते का बार बार भौंकना है, जो साधन मार्ग में सब से बड़ी बाधा है। एकनिष्ठ, श्रद्धावान, दृढ़ प्रतिज्ञ साधक, अभ्यास के बल से, बिना मन को चोट पहुँचाए, निर्विचार में प्रतिष्ठित होता है, पूर्णत्व को प्राप्त होता है।
तब गुरूजी कर्तृत्वाभिमान से छुड़ा लिया करते हैं। अंगुठा कर्तृत्व का ही प्रतीक है। साधक कर्तृत्व का त्याग कर धन्य हो जाता है। तब वह कर्ता नहीं रहता, इसीलिए भोक्ता भी नहीं रहता। तब वह हर प्रकार के दुख द्वंद्व से सदा सदा के लिए छूट जाता है।
लोकेशानन्द कहता है कि हमें भी एक लव्य होने का प्रयास करना चाहिए।

CamScanner

7:10 pm 2 KB/s VoLTE 4G 38%

धनुर्विद्या का अभ्यास किया।
एक दिन एक लव्य प्रतिदिन की ही भांति अभ्यास कर रहा था, कि एक कुत्ता उसे देख कर जोर जोर से भौंकने लगा। ध्यान भंग होता देख, एक लव्य ने एक के बाद एक कई तीर इस प्रकार छोड़े कि कुत्ते के मुँह में कोई घाव भी नहीं हुआ और उसका मुँह तीरों से बंद भी हो गया।
वह कुत्ता व्याकुल होकर पास ही में लगे राज शिविर से होकर गुजरा। जहाँ अर्जुन आदि सहित गुरू द्रोण ने उसे देखा और वे ऐसे विचित्र धनुर्धारी को खोजते हुए एक लव्य के पास पहुँच गए।
एक लव्य ने गुरूजी को देखा तो चरणों में प्रणाम किया। मालूम पड़ने पर कि यह एक लव्य उन्हें ही गुरू मान कर धनुर्विद्या में पारंगत हुआ है, गुरू द्रोण ने दक्षिणा स्वरूप एक लव्य के दाहिने हाथ का अंगूठा माँग लिया, जो एक लव्य ने सहज ही गुरूजी के चरणों में समर्पित कर दिया।
अब इस कथा का आध्यात्मिक रहस्य-
एक इष्ट में लौ लग जाना ही एक लव्य हो जाना है। साधन पथ की प्रारंभिक कक्षा का विद्यार्थी क्षुद्र नाम से जाना जाता है, जो कालांतर में, इसी जन्म में, इसी देह से, उत्तरोत्तर साधन करता हुआ, वैश्य और क्षत्रिय श्रेणी पार कर ब्राह्मणत्व की प्राप्ति करता है।
गुरूजी का स्वरूप अपने अंतःकरण में उतार लेना ही उनकी मूर्ति बनाना है। यही "ध्यानमूलं गुरूर्मूर्तिम्" है। ध्यान ही धनुष है, गुरूदेव का उपदेश ही बाण है। गुरूजी के उपदेश पर मनन करना ही धनुर्विद्या का अभ्यास करना है।
मन ही कुत्ता है। मन में बार बार सांसारिक विचार उठना ही उस कुत्ते का बार बार भौंकना है, जो साधन मार्ग में सब से बड़ी बाधा है। एकनिष्ठ, श्रद्धावान, दृढ़ प्रतिज्ञ साधक, अभ्यास के बल से, बिना मन को चोट पहुँचाए, निर्विचार में प्रतिष्ठित होता है, पूर्णत्व को प्राप्त होता है।
तब गुरूजी कर्तृत्वाभिमान से छुड़ा लिया करते हैं। अंगुठा कर्तृत्व का ही प्रतीक है। साधक कर्तृत्व का त्याग कर धन्य हो जाता है। तब वह कर्ता नहीं रहता, इसीलिए भोक्ता भी नहीं रहता। तब वह हर प्रकार के दुख द्वंद्व से सदा सदा के लिए छूट जाता है।
लोकेशानन्द कहता है कि हमें भी एक लव्य होने का प्रयास करना चाहिए।

CamScanner

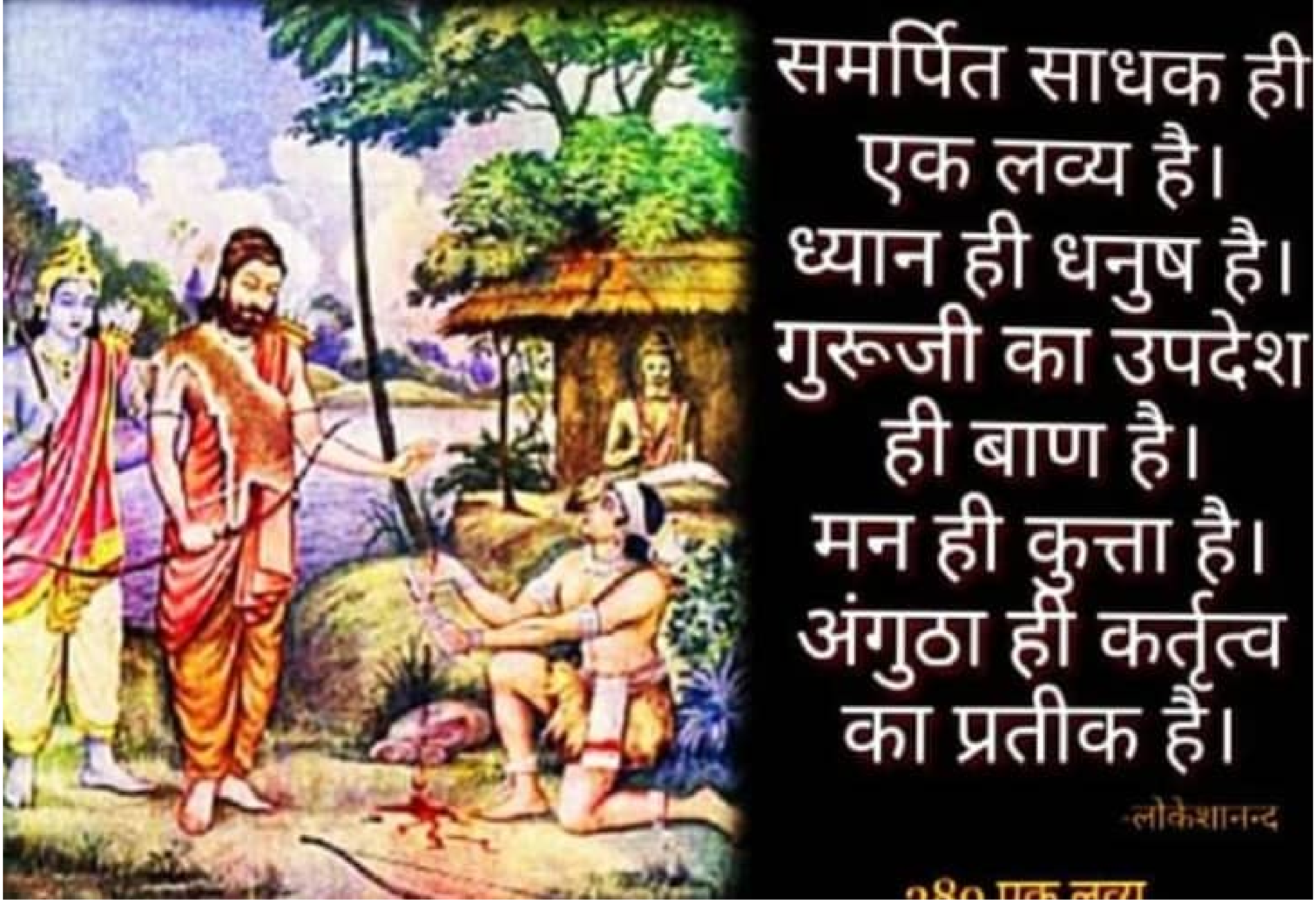
समर्पित साधक ही
एक लव्य है।
ध्यान ही धनुष है।
गुरूजी का उपदेश
ही बाण है।
मन ही कुत्ता है।
अंगुठा ही कर्तृत्व
का प्रतीक है।
-लोकेशानन्द

CamScanner

7:08 pm 0 KB/s VoLTE 4G 38%

119 1 share

Like Comment Share

Prem ! Prbhu Osho...
Virendra Kumar · 4h ·

राबिया थी एक फकीर औरत सूफी। उसने अपने धर्मग्रंथ में पढ़ा कि शैतान को घृणा करो! उसने उस किताब में वह लकीर काट दी। एक मित्र फकीर हसन उसके घर मेहमान था। उसने सुबह-सुबह धर्मग्रंथ खोला और देखा कि उसमें तो धर्मग्रंथ में सुधार किया है किसी ने। तो उसने राबिया को पूछा कि तू पागल हो गई है, तूने सुधार किया है यह? धर्मग्रंथ में कहीं सुधार किया जा सकता है?
राबिया ने कहा कि मुझे बड़ी मजबूरी हो गई, इसलिए सुधार करना पड़ा। जब से मुझे परमात्मा दिखाई पड़ना शुरू हुआ, मुझे शैतान दिखाई ही नहीं पड़ता है। और इस किताब में लिखा है: शैतान को घृणा करो! शैतान मुझे दिखाई ही नहीं पड़ता है, अब तो जो भी दिखाई पड़ता है परमात्मा ही दिखाई पड़ता है। शैतान भी सामने खड़ा हो जाए तो परमात्मा ही दिखाई पड़ता है। एक तो यह कठिनाई हो गई। और दूसरी कठिनाई यह हो गई कि जब से परमात्मा ही दिखाई पड़ता है, तब से प्रेम के अतिरिक्त मेरे भीतर कुछ रह नहीं गया; घृणा नहीं रह गई। अब मैं घृणा कैसे करूं? एक तो शैतान दिखाई नहीं पड़ता, दूसरी मेरे भीतर घृणा नहीं रह गई, इसलिए इस लकीर को मैंने काट दिया कि यह लकीर मेरे लिए अव्यावहारिक हो गई है।
🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷
🙏💓🙏

तृषा गई एक बूंद से

CamScanner

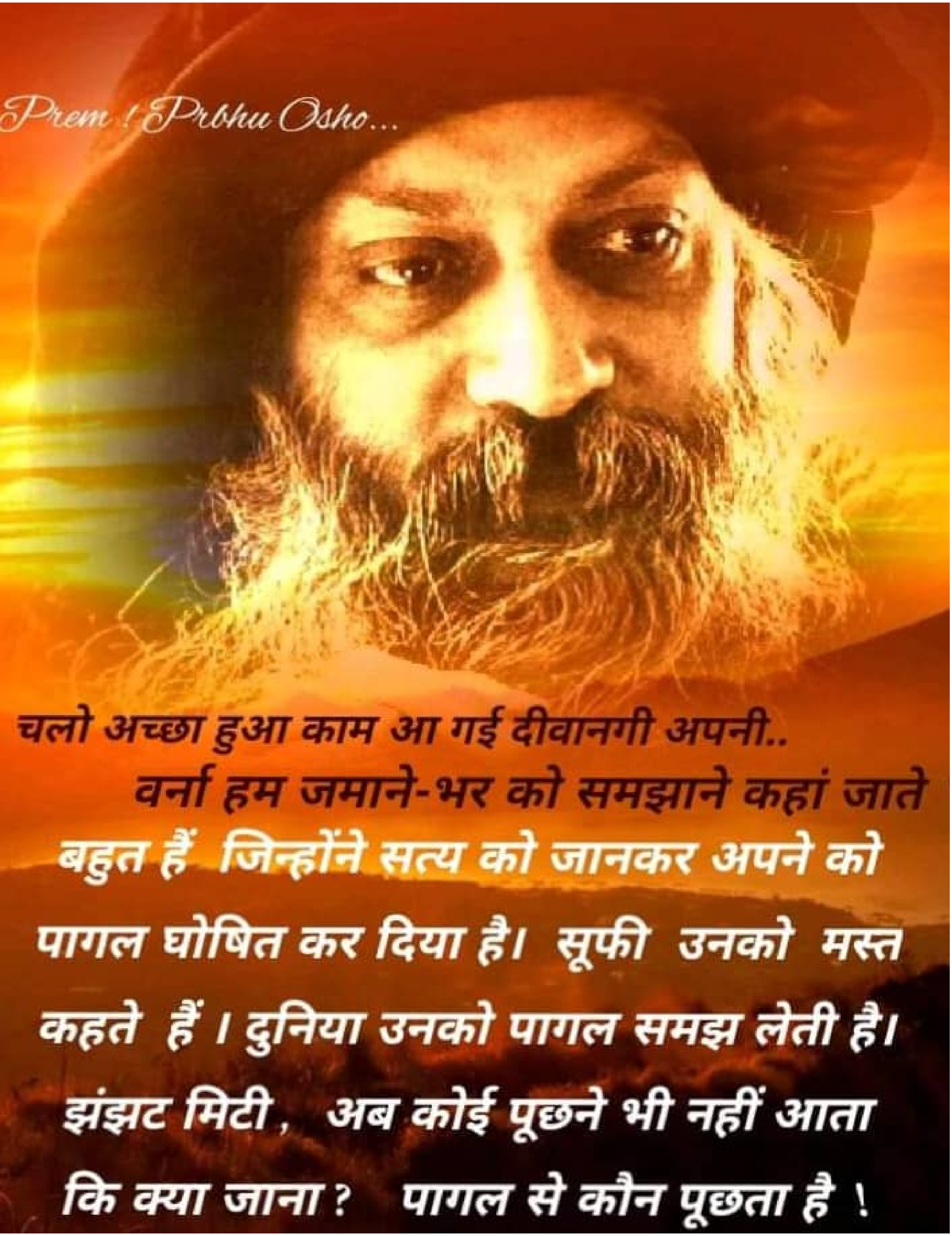
Prem ! Prbhu Osho...
चलो अच्छा हुआ काम आ गई दीवानगी अपनी..
वर्ना हम जमाने-भर को समझाने कहां जाते
बहुत हैं जिन्होंने सत्य को जानकर अपने को
पागल घोषित कर दिया है। सूफी उनको मस्त
कहते हैं । दुनिया उनको पागल समझ लेती है।
झंझट मिटी, अब कोई पूछने भी नहीं आता
कि क्या जाना ? पागल से कौन पूछता है !

CamScanner

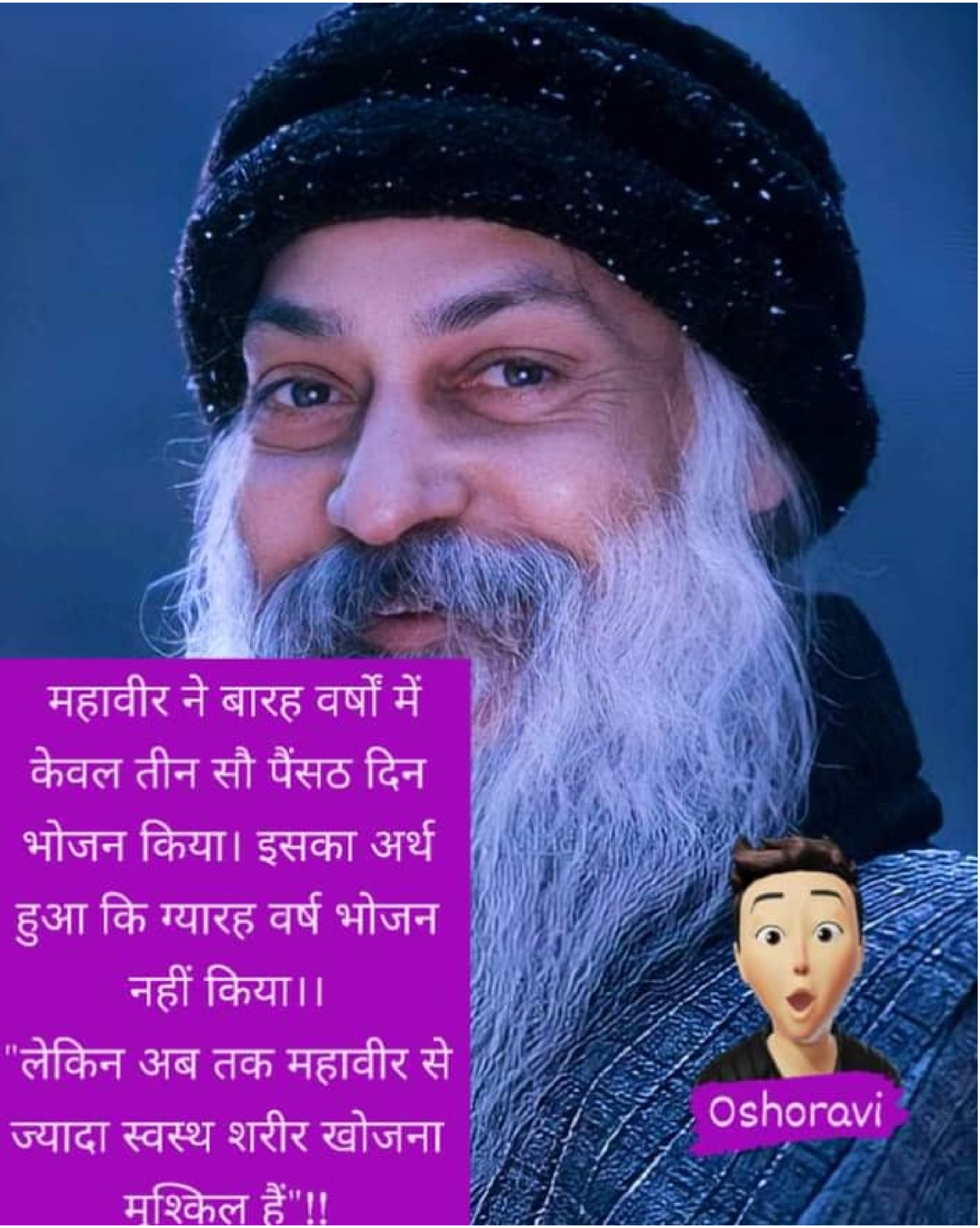
महावीर ने बारह वर्षों में
केवल तीन सौ पैंसठ दिन
भोजन किया। इसका अर्थ
हुआ कि ग्यारह वर्ष भोजन
नहीं किया।।
"लेकिन अब तक महावीर से
ज्यादा स्वस्थ शरीर खोजना
मुश्किल हैं"!!
Oshoravi

CamScanner

6:29 pm 0 KB/s 4G 43%

facebook

Osho Ravi Yog

1h ·

💓प्रेम और 🙃मोह में अंतर साफ़~साफ़ समझ लो!!

6 25 views

Like Comment Share

CamScanner

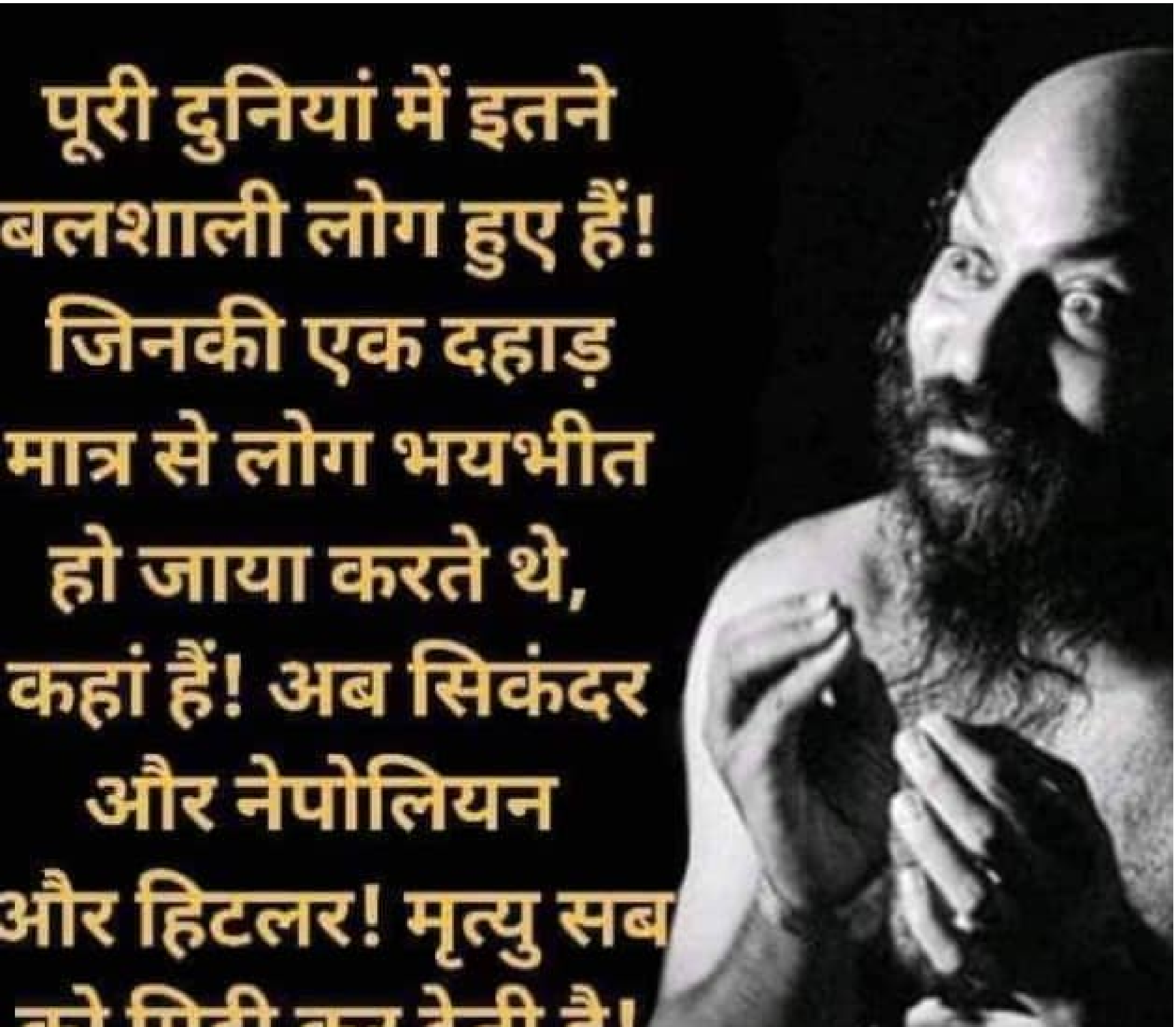
पूरी दुनियां में इतने
बलशाली लोग हुए हैं!
जिनकी एक दहाड़
मात्र से लोग भयभीत
हो जाया करते थे,
कहां हैं! अब सिकंदर
और नेपोलियन
और हिटलर! मृत्यु सब
को मिट्टी कर देती है!
ओशो

CamScanner

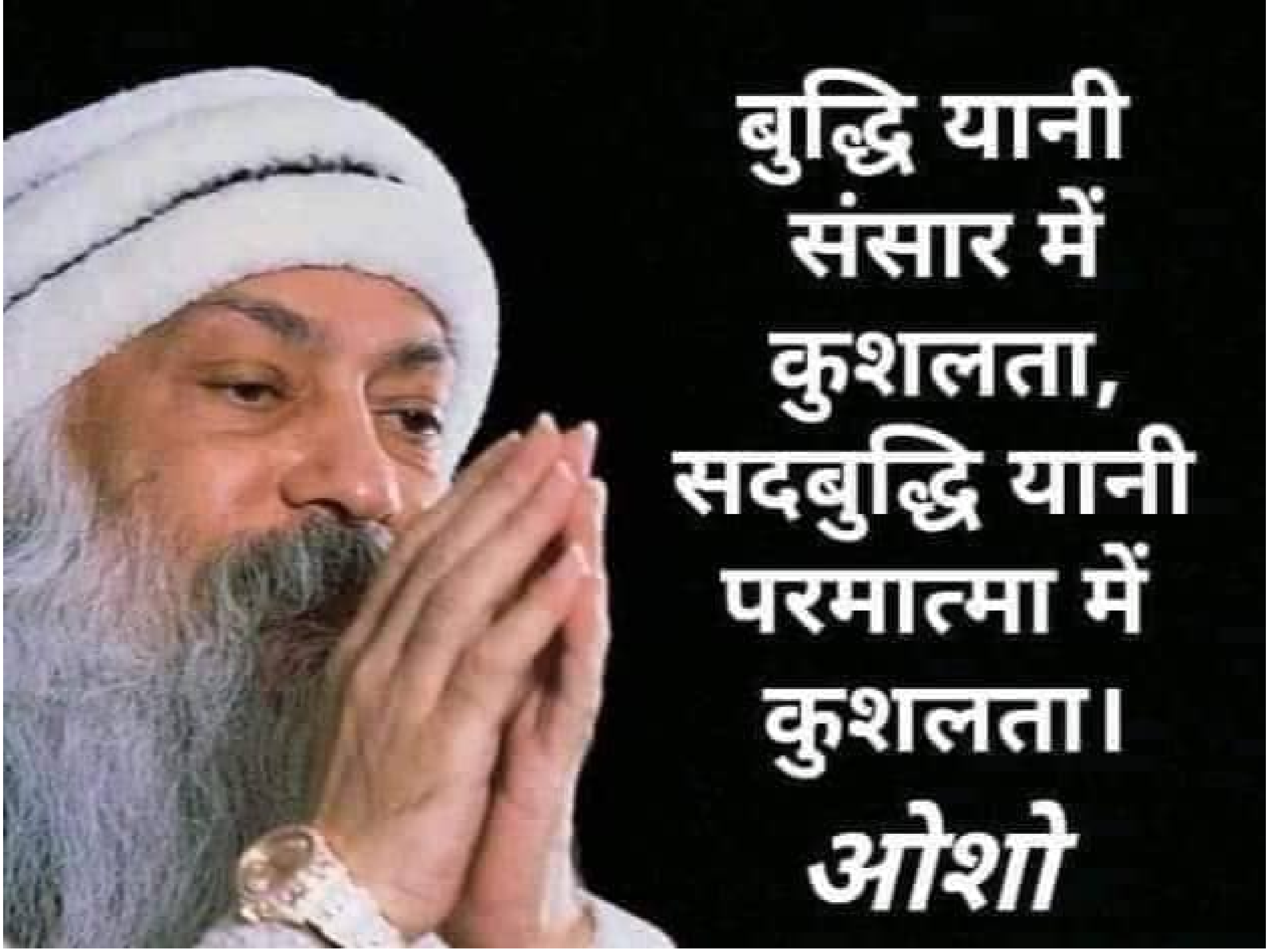

CamScanner

मैं तुमसे कहता हूं, कठिनाई का
मुकाबला करने से ही मनुष्य निर्मित
होता है। जितनी चोट पड़ती है,
उतनी जाग आती है। जितने तार
तुम्हारे छेड़े जाएंगे, उतना संगीत
निखरेगा। जितनी छेनी तुम पर
पड़ेगी, उतना ही रूप प्रगट होगा।
ओशो

CamScanner

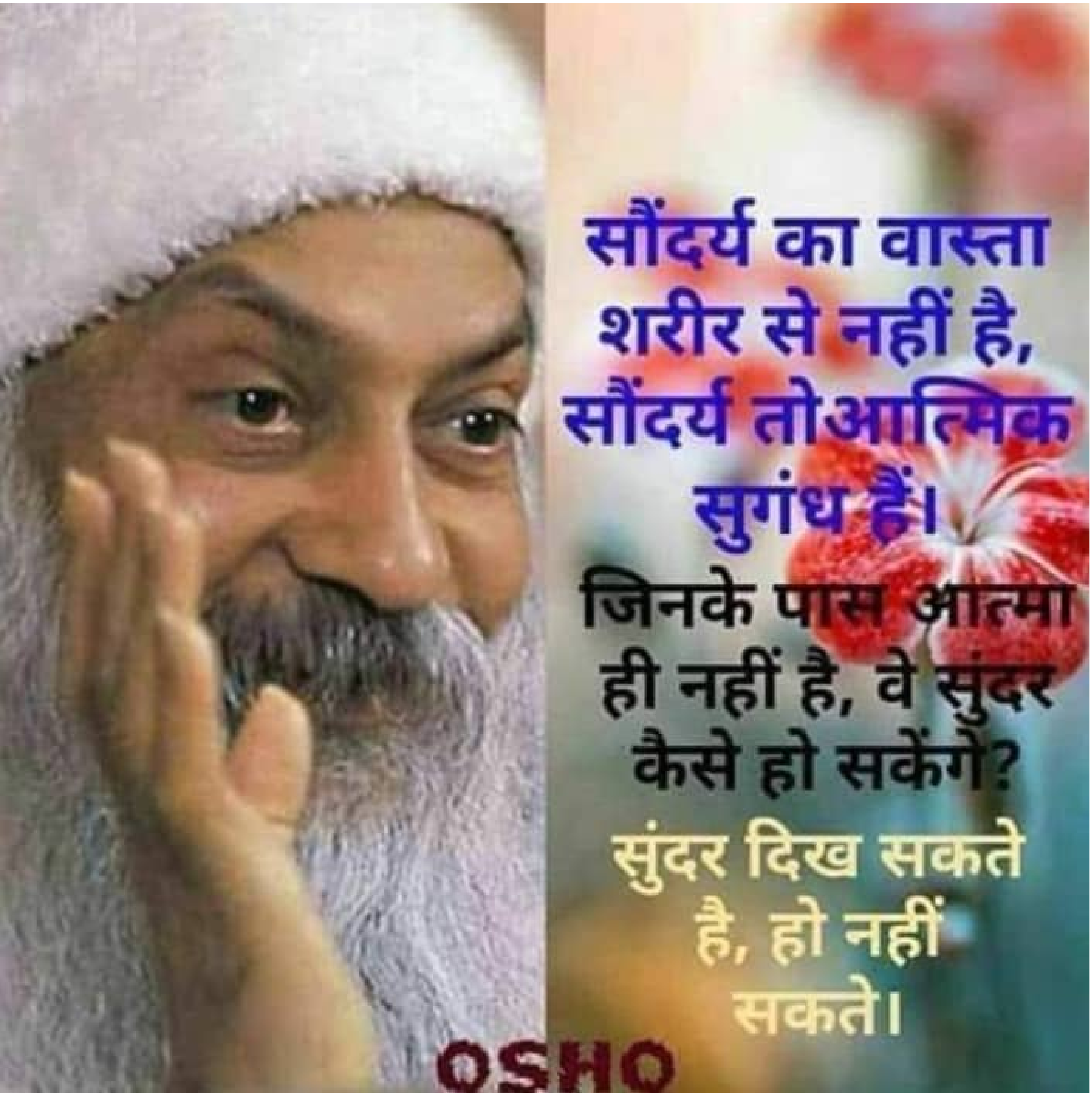
सौंदर्य का वास्ता
शरीर से नहीं है,
सौंदर्य तोआत्मिक
सुगंध हैं।
जिनके पास आत्मा
ही नहीं है, वे सुंदर
कैसे हो सकेंगे?
सुंदर दिख सकते
है, हो नहीं
सकते।
OSHO

CamScanner

CamScanner

CamScanner

जब कोई आदमी मर
जाता है..
तो उसके ठीक
3-4 मिनट तक उसकी
चेतना शरीर के पास
ही रहती है..!
और अपने आसपास
रोने वालों को देखकर,
सोचता है कि..
ये सब क्यों रो रहे हैं,
मैं तो मौजूद हूं...!!
ओशो

CamScanner

5:32 pm 0 KB/s VoLTE 4G 46%

facebook

आया। तब तक लक्ष्मी ने भोजन बनाकर तैयार कर रखा था। साधु ने पेट भर भोजन किया। वह प्रसन्न हुआ। उसने हँसकर किसान से कहा...बहुत दिनों बाद कुबेर के घर का भोजन मिला है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ।*

अब तुम्हारी याद आती रहे, इसलिए मुझे कान भर मोती देना। मैं तुम दंपति को सदैव याद करूँगा।' उस पर किसान ने हँसकर कहा - 'साधु महाराज ! मैं अनपढ़ किसान आपको कान भर मोती कैसे दे सकता हूँ। आप ज्ञान संपन्न हैं। इस कारण हम दोनों आपसे कान भर मोतियों की अपेक्षा रखते हैं।' साधु ने आँखें भींचकर कहा - 'नहीं किसान राजा, तुम अनपढ़ नहीं हो। तुम तो विद्वान हो। इस कारण तुम मेरी इच्छा पूरी करने में सक्षम रहे।

मेरी विचित्र माँग पूरी होने तक मैं हमेशा भूखा-प्यासा हूँ। जब तुम जैसा कोई कुबेर मिल जाता है तो पेट भर भोजन कर लेता हूँ।' साधु ने किसान की ओर देखा - जो फसल के दानों, पानी की बूँदों और उपदेश के शब्दों को मोती समझता है। वही मेरी दृष्टि से सच्चा कुबेर है। मैं वहाँ पेट भरकर भोजन करता हूँ। फिर वह भोजन दाल-रोटी हो या चटनी रोटी। प्रसन्नता का नमक उसमें स्वाद भर देता है। जहाँ आतिथ्य का वास है। वहाँ मुझे भोजन अवश्य मिल जाता है। अच्छा अब मुझे चलने की अनुमति देना। ईश्वर तुम्हारा कल्याण करे।'

किसान दंपत्ति को आशीर्वाद देकर साधु आगे चल पड़ा। कहा भी है..

पृथ्वियां त्रीणि रत्नानि जलमन्नंसुभाषितम्।
मूढ़ैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञाभिधीयते।।

पृथ्वी पर तीन ही रत्न हैं। जल, अन्न और सुभाषित। मूर्ख लोग ही पत्थर के टुकड़ों हीरे, मोती माणिक्य आदि को ही रत्न कहते हैं

34 7 comments • 8 shares

Like Comment Share

CamScanner

CamScanner

आयी तो बिल्लियों ने उसे घेर लिया और कहा, क्या देखा, इंग्लैंड में क्या क्या देखा ? रानी के दर्शन किये कि नहीं ? उसका सिंहासन देखा कि नहीं ? कोहनूर जड़ा उसका मुकुट देखा कि नहीं ?

तो उसने कहा गयी थी देखने, देख नहीं पायी। क्योंकि रानी सिंहासन पर बैठी थी, सिंहासन सुंदर था, मुकुट भी बड़ा प्यारा था, मुकुट में हीरा भी चमक रहा था, मगर मैं मुश्किल में पड़ गयी, क्योंकि एक चूहा सिंहासन के नीचे बैठा था। उस चूहे को देखने के कारण मैं कुछ और देख नहीं पाई। मैं तो चूहे को ही देखती रही,बड़ा प्यारा चूहा था। बड़ा गजब का चूहा था। एकदम लार टपकने लगी थी।

अब बिल्ली अगर इंग्लैंड जाए, तो और देखे भी क्या? कोहनूर भी पड़ा रहे और उसी के पास एक चूहा बैठा हो, तो बिल्ली क्या देखे? भाड़ में जाए कोहनूर। कोहनूर का करोगे क्या? खाओगे, पीओगे कि पहनोगे ? जब चूहा मौजूद हो तो कौन कोहनूर की फिकिर करता है।

ऋषि अपनी भाषा बोलते हैं, हम अपनी भाषा समझते हैं। वहीं चूक हो जाती है। जब ऋषि ने कहा, सब सुखी हों, तो ऋषि यह कह रहा है कि जैसा मैं सुखी हुआ, ऐसे सब हों। तुमने सुना, तुमने कहा कि ठीक है, तो ऋषि यह कह रहे हैं कि कार मिले, बड़ा मकान मिले, कि सुंदर स्त्री मिले। तुम अपना सुख सुनने लगे,तुम अपना सुख समझने लगे। ऋषि तो अपने सुख की बात कर रहा है।

ऋषियों का सुख क्या है? कि सबको परमात्मा मिले। वहीं तो पहुँच कर सारे लोग दुख के पार होते हैं। इस संसार में तो दुख ही दुख है। मगर तुम्हें दुखी होने की कोई आवश्यकता नहीं है, अनिवार्यता नहीं है, तुम सुखी हो सकते हो। मैं सुखी हूँ और तुमसे कहता हूँ कि तुम भी ऐसे हो सकते हो। मैं गवाह हूँ, सारे ऋषि गवाह हैं लेकिन तुम तो ऋषियों के पास भी जाते हो तो आशीर्वाद वही माँगते हो कि चूहा मिल जाए....

क्यों कि हम सामने वाले की बातों का अर्थ अपने मन के हिसाब से लगाते हैं।

CamScanner

तुम कभी पूजा पाठ ना करते
अगर तुम्हें लालच ना होता

लालच पाप माफ़ कराने का..

और

लालच नये पाप करने का..
तुम्हारे इस सच को ना मानने
से क्या होगा, कुछ भी नहीं.

CS CamScanner

दोष देखना भी दोष है

मनुष्य दूसरों को सुधारने के लिये उनके दोष देखता है और आलोचना करता है, परिणाम यह होता है कि दूसरों के दोषों का सुधार तो होता नहीं, दोषों का लगातार चिन्तन करने से वे दोष संस्काररूप से उसके अपने अन्दर घर कर लेते हैं, इससे पहले के रहे दोषों की पुष्टि होती है, उन्हें बल मिल जाता है। फिर अपने दोषों का दीखना बन्द हो जाता है, बल्कि कहीं-कहीं तो उनमें गौरवबुद्धि हो जाती है। जिससे पतन का पथ प्रशस्त हो जाता है।

जब मनुष्य दूसरे को सुधारने के लिये उसके दोष देखता है, तब स्वाभाविक ही वह मानता है कि मुझमें दोष नहीं हैं, गुण हैं। इससे गुणों का अभिमान बढ़ जाता है और दोष बढ़ते रहते हैं। जहाँ अपने दोष देखने की आदत छूटी कि फिर उसका जीवन ही दोषमय बन जाता है।

CamScanner

बड़े मजे की बात है कि पवित्र भगवान का मंदिर, अपवित्र आदमी के घुसने से अपवित्र हो जाता है! होना तो उलटा चाहिए था कि अपवित्र आदमी पवित्र मंदिर में पहुंच जाए तो पवित्र हो जाए। लेकिन होता यह है कि खुद भगवान ही अपवित्र हो जाते हैं! यह अपवित्र आदमी बहुत मजबूत है, भगवान बहुत कमजोर कोई बल नहीं मालूम होता उनमें। एक अपवित्र आदमी चला गया और भगवान अपवित्र हो गए, मंदिर ही अपवित्र हो गया! ऐसे कमजोर मंदिरों से धर्म कैसे आ सकेगा ? ऐसे मंदिर चाहिए, जहां अपवित्र घुसे और पवित्र होकर वापस लौट आए।उसको ही हम मंदिर कह सकते हैं। इसको कैसे मंदिर कह सकते हैं ?

Osho Universal _ Dhaval Parmar

ओशो

माटी कहे कुम्हार सूं

CamScanner

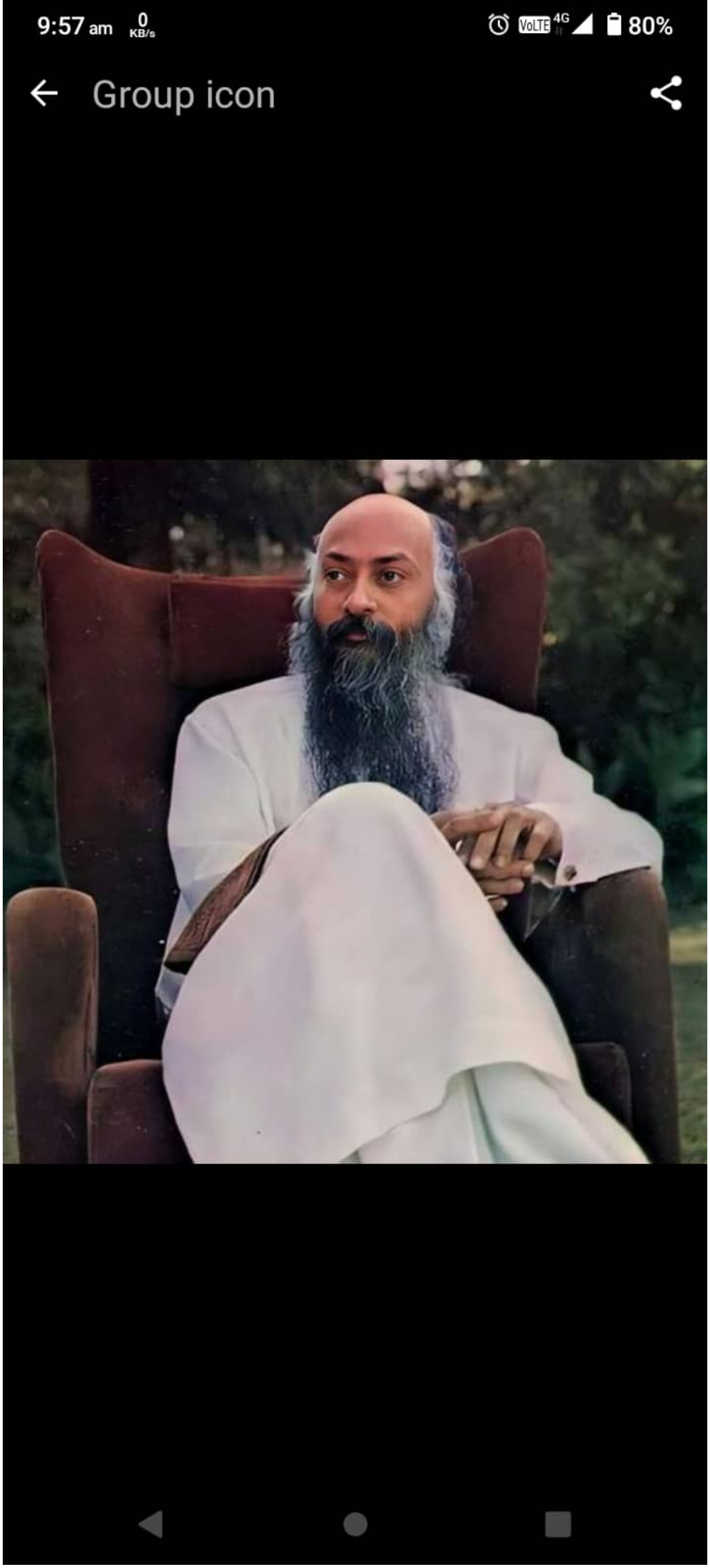

CamScanner

तुम सत्यनारायण की कथा करवा लेते हो,
कभी हवन भी करवा लेते हो,
कभी यज्ञ करवा लेते हो,
और बड़ा आश्चर्य है,
करोड़ों रुपये यज्ञ पर फूंके जाते हैं,
और यज्ञ धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं है।
यजन है, भजन नहीं है।
घी डालो, गेहू डालो, जो तुम्हें डालना हो डालते रहो,
सब आग खा जाएगी।
तुम जब तक अपने को न डालोगे
तब तक कोई यज्ञ पूरा नहीं होता।
जिस दिन तुम यह गेहू और घी
इत्यादि डालने का पागलपन छोड़ोगे,
अपने को डाल दोगे आग में,
तुम जिस दिन कहते कि मैं जलने को तैयार हूं
उस दिन क्रांति घटती है, उस दिन भक्त का जन्म होता है।

Oshoravi

अथातो भक्ति जिज्ञासा, भाग -२, प्रवचन #७, ओशो

CS CamScanner

8:13 am 0 KB/s 4G 95%

तो मैं मानने वाला नहीं, फूल सफेद थे, और सफेद रहेंगे—मेरी कथा में सफेद रहेंगे।
इस तरह के हिम्मतवर लोग भी तो होते हैं। ये बड़े प्यारे लोग हैं। ये कहते हैं कि तुम राम को ले आओ तो उनकी फिकर मानने वाला नहीं हूं कह दिया सफेद, सफेद। मैं था या नहीं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं जानता हूं फूल सफेद थे। बात तो बिगड़ गयी। हनुमान बहुत उछल—कूद मचाने लगे। उन्होंने कहा, चलना पड़ेगा रामचंद्रजी के पास, अब वही निर्णय करें।

तो कथा कहती है कि रामचंद्रजी के पास ले जाया गया, रामदास गए—हनुमान ले गए उनको उड़ाकर—राम के सामने निवेदन किया गया। राम ने हनुमान से कहा कि तुझे बीच में नहीं बोलना चाहिए। तू शांत रहा कर। एक तो ऐसी जगह तुम गए किसलिए? गए भी तो अपना कंबल ओढ़े बैठे रहते, चुपचाप सुन लेते तुम्हें सुनना था तो। रामदास ठीक कहते हैं, फूल सफेद थे। हनुमान ने कहा, यह तो हद हो गयी, अन्याय हुआ जा रहा है, मैं खुद गया.।

राम ने कहा, तुम गए थे, वह मुझे मालूम है, लेकिन तुम इतने क्रोध से भरे थे, तुम्हारी आंखों में खून था, तुम्हें लाल दिखायी दिए होंगे, फूल सफेद ही थे। तुम्हारी आख में क्रोध था, खून से भरी थीं आंखें, तुम दीवानी हालत में थे। यह रामदास बैठकर शाति से अपनी कहानी कह रहा है, इसको कोई दीवानगी थोड़े ही है! इसको कुछ लेना—देना थोड़े ही है! तुम पागल हुए जा रहे थे—सीता कैद हो गयी थी, तुम जिसे प्रेम करते हो वह राम दिक्कत में पड़ा था, सारी बात अस्तव्यस्त थी, हार होगी कि जीत कुछ पक्का नहीं था, तुम उस अड़चन में थे—तुम्हें कहां ठिकाना कि फूल सफेद थे कि लाल थे। रामदास ठीक कहता है। तुम इससे क्षमा मांग लो।

आख की बात है। संसार की बात नहीं है। तुम्हारी आख में कामवासना का रंग है तो सब तरफ कामवासना है। तुम्हारी आख में राम बस गए, सब तरफ राम। फूल वैसे ही हो जाते हैं जैसे तुम्हारी आख का रंग है।

~ओशो, एस धम्मो सनन्तनो

CamScanner

तुम्हारी आख में
कामवासना का रंग है
तो सब तरफ
कामवासना है। तुम्हारी
आख में राम बस
गए, सब तरफ राम।
फूल वैसे ही हो जाते हैं
जैसे तुम्हारी आख का
रंग है।
~ओशो, एस धम्मो
सनन्तनो

CS CamScanner

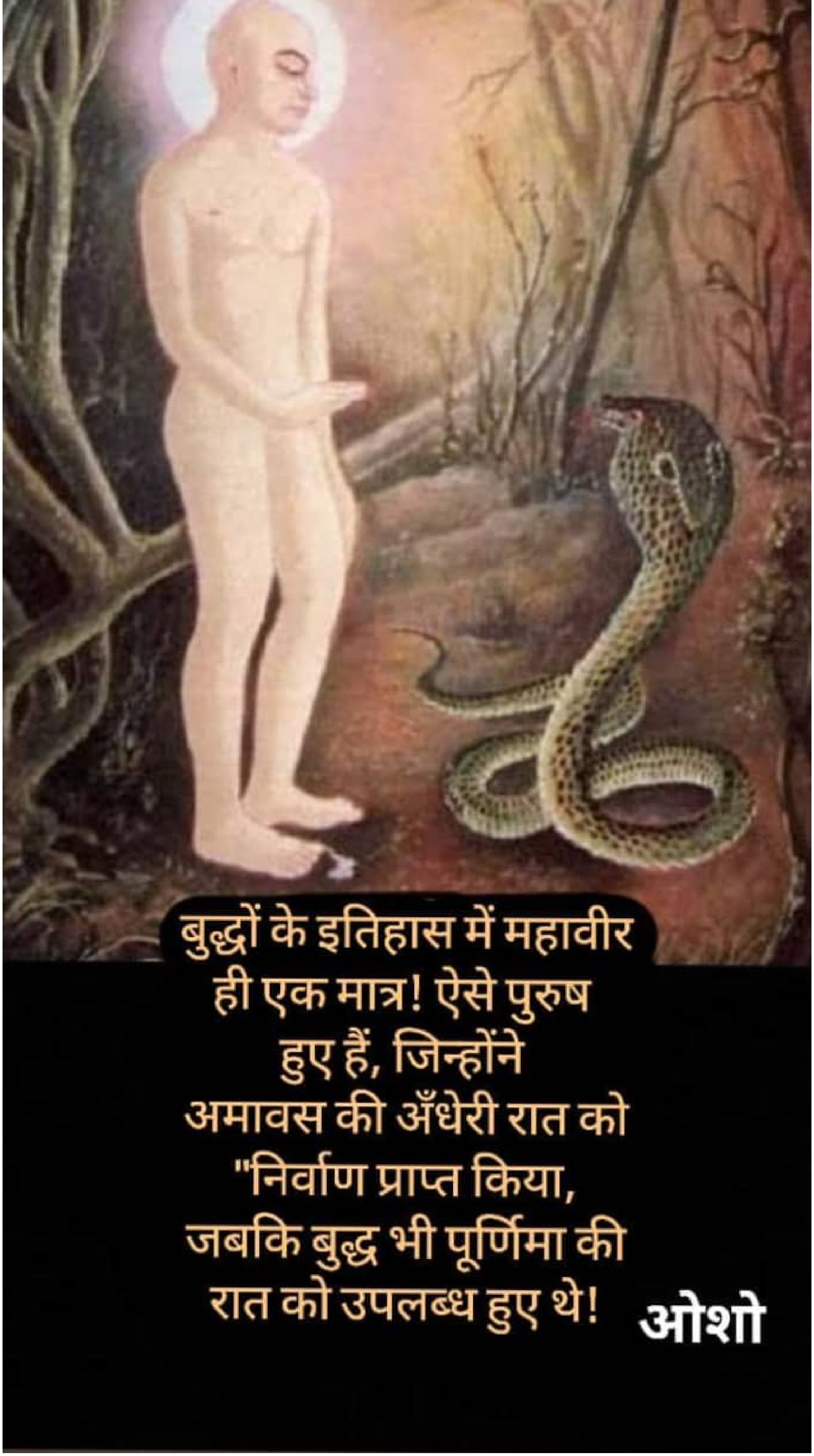
बुद्धों के इतिहास में महावीर
ही एक मात्र! ऐसे पुरुष
हुए हैं, जिन्होंने
अमावस की अँधेरी रात को
"निर्वाण प्राप्त किया,
जबकि बुद्ध भी पूर्णिमा की
रात को उपलब्ध हुए थे!
ओशो

CamScanner

7:46 pm 19 KB/s 35%

ध्यान शून्य लाता है। अगर तुमने जल्दबाजी की तो शून्य को भरने की तृष्णा पैदा होगी। अगर जल्दबाजी न की और तुम शून्य के साथ रहने को राजी हो गए, तुमने उसे स्वीकार कर लिया, तो तुम पाओगे धीरे-धीरे शून्य अपने आप भर दिया गया। क्योंकि प्रकृति शून्य को बरदाश्त नहीं करती; शून्य तुम करो, भर देती है प्रकृति। न परमात्मा शून्य को बरदाश्त करता है। तुम शून्य पैदा करो, परमात्मा भर देता है।

शून्य भर चाहिए, पूर्ण तो उतर आता है। जैसे कहीं गङ्ढा हो, वर्षा हो, तो सारा पानी चारों तरफ से दौड़ कर गङ्ढे में भर जाता है। ऐसे ही तुम जब शून्य होते हो, परमात्मा चारों तरफ से तुम्हारी तरफ दौड़ने लगता है। तुमने गङ्ढा बना दिया, अब भरना उसे है। आधा तुम करते हो, आधा परमात्मा करता है। और तुम्हारा करना कुछ खास नहीं, असली करना तो उसी का है। तुम्हारा करना इतना ही है कि तुम खाली होने को राजी हो जाओ। इसलिए सारे बुद्धपुरुष–भरने की तृष्णा से बचो, बटोरने की तृष्णा से बचो–इसका इतना आग्रह करते हैं। क्योंकि अगर तुमने स्वयं ही भर लिया, तो तुम परमात्मा को भरने का मौका ही नहीं देते हो।

एक आदमी एक मनोवैज्ञानिक के पास गया। उसकी मुसीबत यह थी कि उसे हर चीजें दो दिखाई पड़ती थीं। मुश्किल पड़ गई थी अड़चन होने लगी थी। और एक दिन तो अड़चन बहुत बढ़ गई क्योंकि जब उसने अपनी पत्नी से यह कहा यूं तो छिपाए रहा मगर कब तक छिपाता पत्नी भी पूछने लगी कि बात क्या है? तुम्हारा चलना, उठना, बैठना कुछ बेढंगा हो गया है!

अब जिस आदमी को दो कुर्सी दिखाई पड़ रही हों वह पहले टटोल कर देखे कि कौन सी असली है। बिना टटोले उसको पता न चले। फिर तो धीरे-धीरे उसे अपने हाथ भी दो दिखाई पड़ने लगे। फिर तो वह टटोले तो भी उसको अनुभव हो कि वह दो को टटोल रहा है। बात बिगड़ती चली गई। वह अपनी पत्नी को भी गले लगाए तो पहले टटोले देखे कि कौन असली है।

आखिर एक दिन उसने पत्नी से कहा कि अब तू मानती नहीं पूछती है

CamScanner

21 48 comments

Like Comment Share

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg

Parshotam Rai · 9h ·

परमात्मा जब किसी से नाराज़ होता है तो वह उसका भोजन नहीं बन्द करता और न ही जीव को कोई दुख देता है और न ही सूर्य को आज्ञा देता है कि इसके आंगन को रोशनी नहीं देना बल्कि परमात्मा जब किसी से नाराज़ होता है तो वह उसका वो वक्त छीन लेता है जिस वक्त वह पूजा-पाठ कर सके। परमात्मा की पूजा-पाठ न कर सकना उस परमात्मा की नाराज़गी की सबसे बड़ी निशानी है।और जो जीव हर रोज भजन पूजन करते हैं तो वह खुशनसीब हैं कि परमात्मा उस जीव से बहुत खुश हैं।और जीव को पल पल परमात्मा का आशीर्वाद अपने ऊपर समझना चाहिए।

🙏🏼🙏🏼

34 6 comments • 4 shares

Like Comment Share

CGTN – China Global TV Network

Sponsored ·

CamScanner

7:44 pm 0 KB/s VoLTE 4G 35%

facebook

Osho Human Being To Be.In.God

5h ·

"'^अर्धनारीश्वर का गूढ़तम अर्थ^'"

आपका वीर्य-कण दो तरह की आकांक्षा रखता है। एक आकांक्षा तो है बाहर की स्त्री से मिलकर, फिर एक नए जीवन की पूर्णता पैदा करने की एक और गहन आकांक्षा है, जिसको हम अध्यात्म कहते है, वह आकांक्षा है, स्वयं के भीतर की छिपी स्त्री या स्वयं के भीतर छिपे पुरूष से मिलने की। अगर बाहर की स्त्री से मिलना होता है, तो संभोग घटित होता है। वह भी सुखद है, क्षण भर के लिए।

अगर भीतर की स्त्री से मिलना होता है, तो समाधि घटित होती है। वह महासुख है, और सदा के लिए। क्योंकि बाहर की स्त्री से कितनी देर मिलेगा? देह ही मिल पाती है, मन नहीं मिल पाते, मन भी मिल जाए, तो आत्मा नहीं मिल पाती। और सब भी मिल जाए तो मिलन क्षण भर ही हो सकता है। भीतर की स्त्री से मिलना शाश्वत हो सकता है। बाहर की स्त्री से मिलना है, तो वीर्य-कण की जो देह का मिलन तो देह के सहारे ही हो सकता है। अगर भीतर की स्त्री से मिलना है तो देह की कोई जरूरत नहीं है। वीर्य-कण की देह तो अपने केंन्द्र में, काम-केंद्र में पड़ी रह जाती है; और वीर्य-कण की ऊर्जा उससे मुक्त हो जाती है वही ऊर्जा भीरत की स्त्री से मिल जाती है। इस मिलन की जो अत्यांतिक घटना है, वह सहस्त्रार में घटित होती है। क्योंकि सहस्त्रार ऊर्जा का श्रेष्ठतम केंद्र है, और काम केंद्र देह का श्रेष्ठतम केंद्र है। ऊर्जा शुद्ध हो जाती है सहस्त्रार में पहुंच कर; सिर्फ ऊर्जा रह जाती है। प्योर इनर्जी। और सहस्त्रार में आपकी स्त्री प्रतीक्षा कर रही है। और आप अगर स्त्री हैं, तो सहस्त्रार में आपका पुरूष आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। यह मिलन भीतर मिलन है। इस मिलन को ही हमने अर्धनारीश्वर कहा है।

ओशो; समाधि के सप्त द्वार

CamScanner

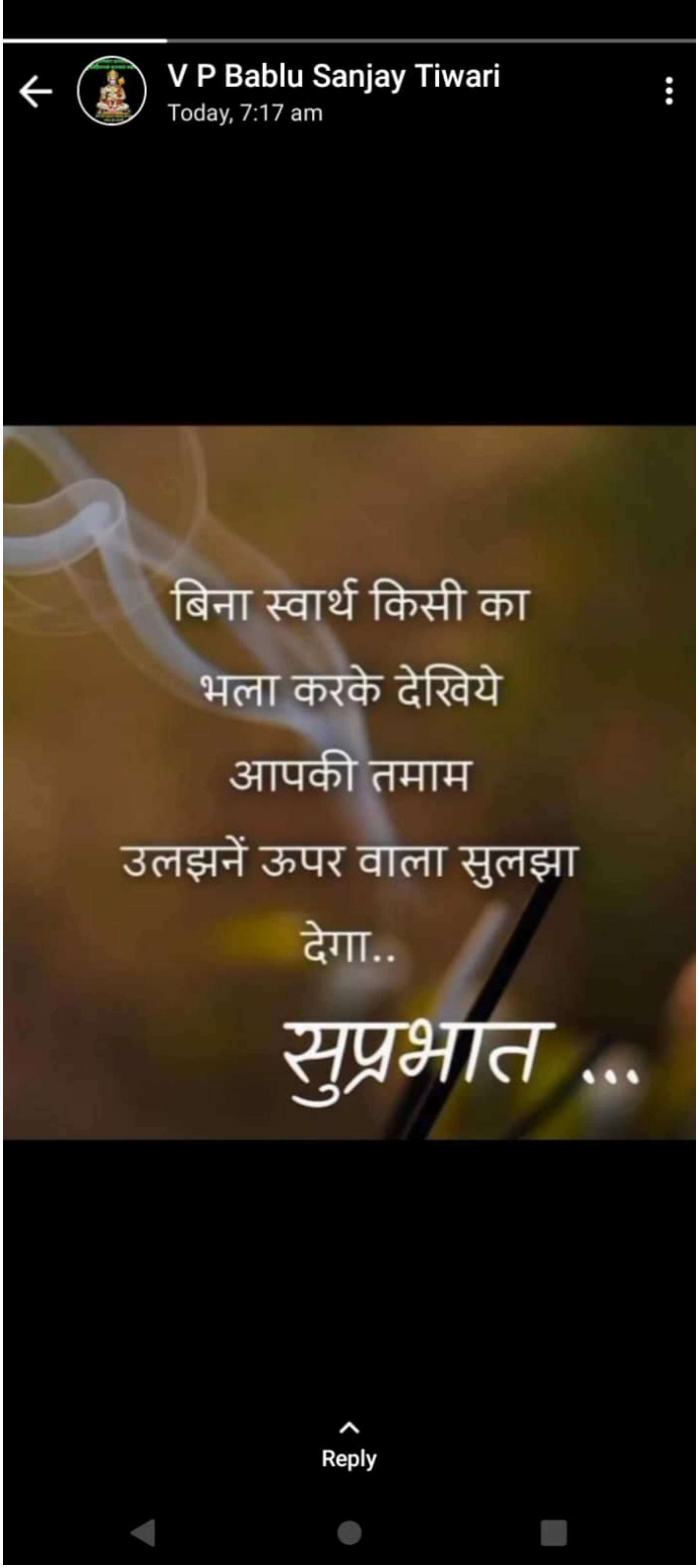
V P Bablu Sanjay Tiwari
Today, 7:17 am
बिना स्वार्थ किसी का
भला करके देखिये
आपकी तमाम
उलझनें ऊपर वाला सुलझा
देगा..
सुप्रभात ...
Reply

CamScanner

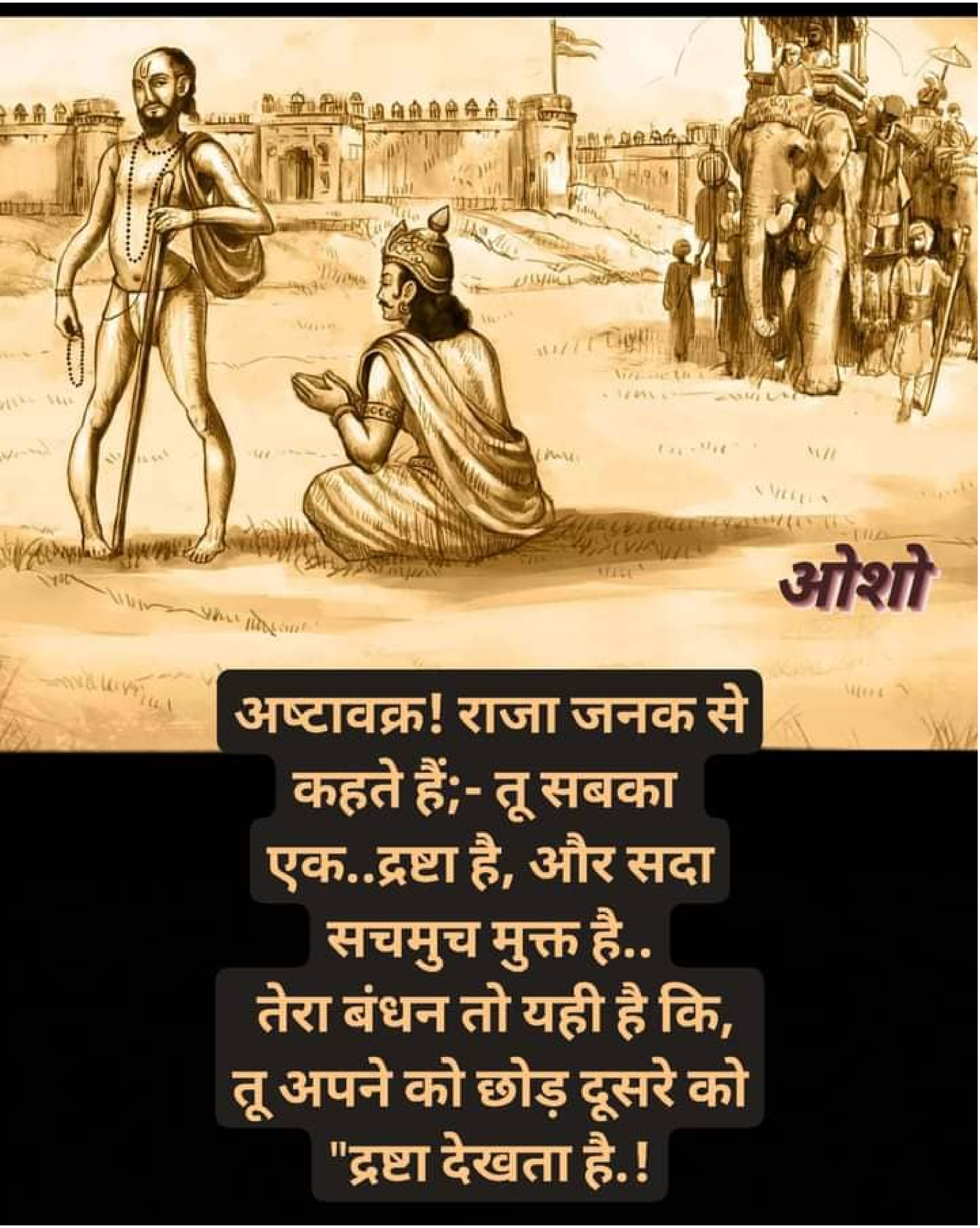

CS CamScanner

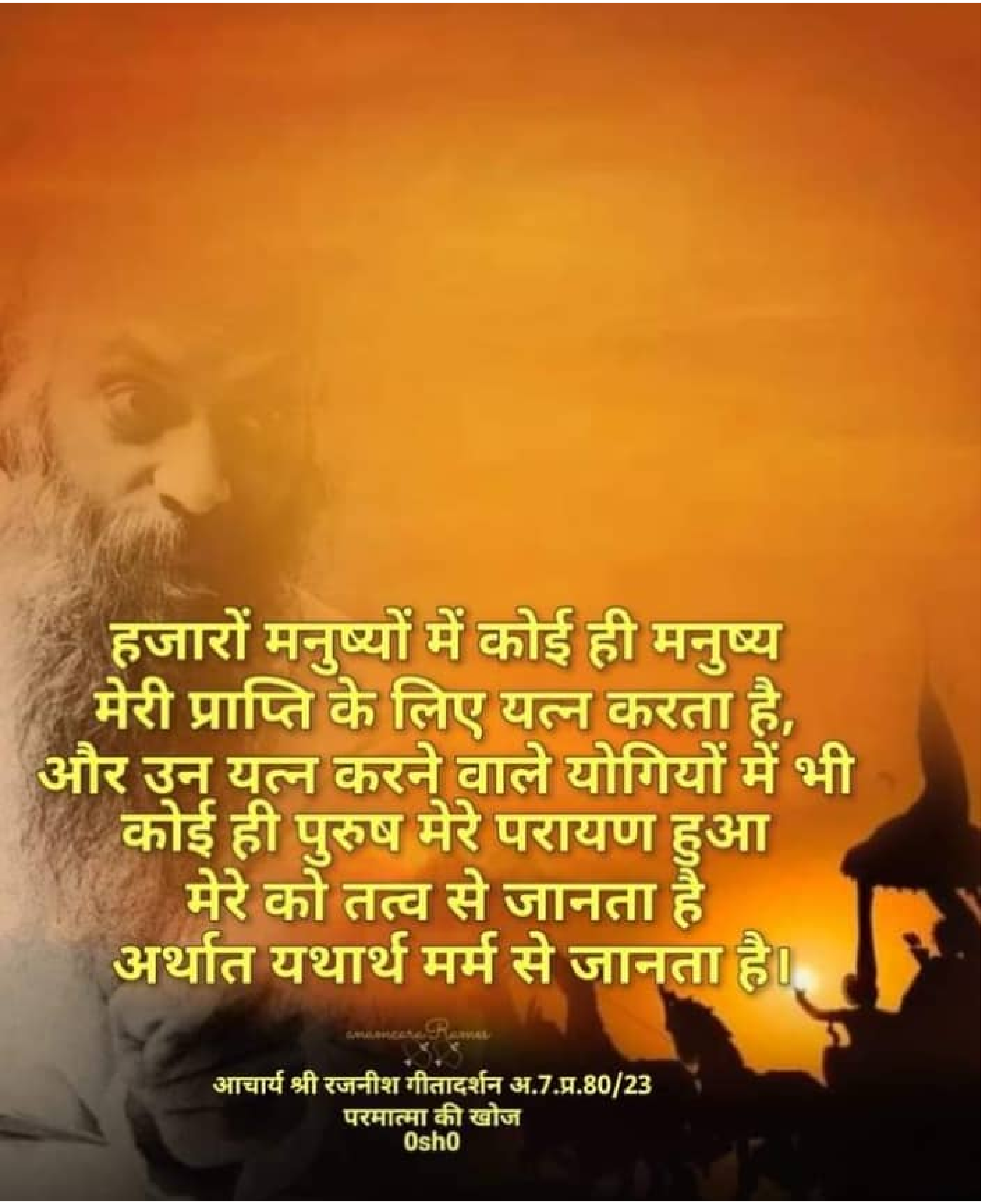
हजारों मनुष्यों में कोई ही मनुष्य
मेरी प्राप्ति के लिए यत्न करता है,
और उन यत्न करने वाले योगियों में भी
कोई ही पुरुष मेरे परायण हुआ
मेरे को तत्व से जानता है
अर्थात यथार्थ मर्म से जानता है।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.80/23
परमात्मा की खोज
0sh0

CamScanner

2:59 pm 0 KB/s 63%

में सोचा कि किसी व्यक्ति ने अपनी नाव
मेरी नाव से टकरा दी है।
और मुझे क्रोध आ गया।

मैंने आंखें खोली और मैं उस
व्यक्ति को क्रोध में कुछ कहने ही
जा रहा था कि मैंने देखा कि दूसरी नाव खाली है।
अब मुझे कुछ करने का कोई उपाय न रहा।
किस पर यह क्रोध प्रकट करूं? नाव तो खाली है।

और वह नाव धार के साथ बहकर आई थी।
और मेरी नाव से टकरा गई थी।
अब मेरे लिए कुछ भी करने को न था।
एक खाली नाव पर क्रोध उतारने
की कोई संभावना न थी।
तब फिर एक ही उपाय बाकी रहा।

मैंने आंखें बंद कर ली।
और अपने क्रोध को पकड़ कर
उलटी दिशा में बहने लगा।
और में पहूंच गया अपने केंद्र पर।
वह खाली नाव में आत्म ज्ञान का कारण बन गई।
उस मौन रात में मैं आपने भीतर सरक गया।
और क्रोध मेरी सवारी बन गया।
और खाली नाव मेरी गुरु हो गई।

और फिर लिंची ने कहा,
अब जब कोई आदमी मेरा अपमान करता है
तो मैं हंसता हूं और कहता हूं कि यह नाव भी खाली है।
मैं आंखें बंद करता हूं और अपने भीतर चला जाता हूं।

इस विधि को प्रयोग करो।
यह तुम्हारे लिए चमत्कार कर सकती है'"^

CS CamScanner

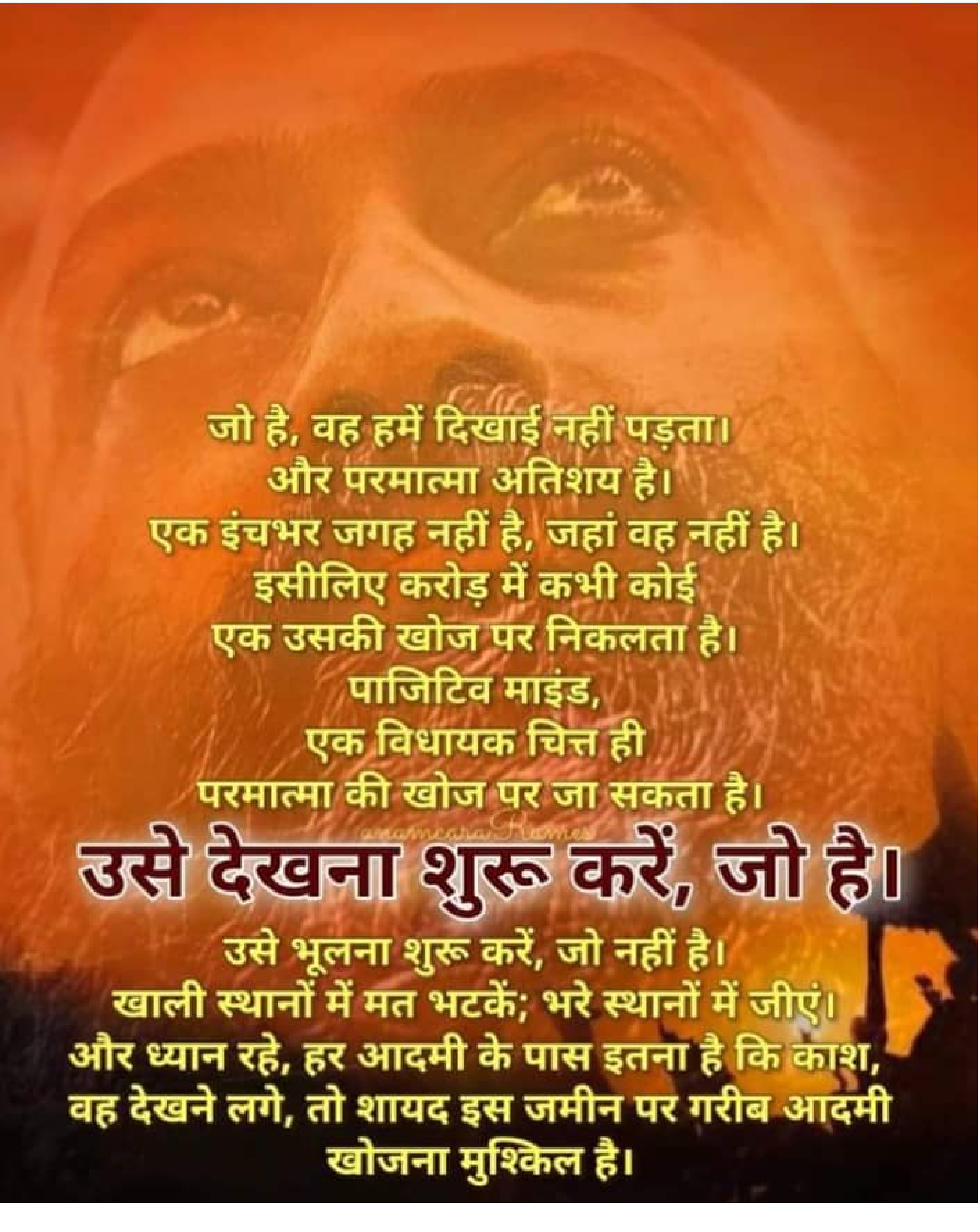

CS CamScanner

अगर आप समझते हैं, की सुन कर ही आप को समझ में आ गया ! तो इतनी जल्दी मत करना, अगर सुन कर समझ में आता होता, तो हम कभी के समझ गए होते ! सुन कर ही समझ में आता होता, तो इस दुनिया में समझदारों की कमी नहीं होती, ना समझ खोजना मुश्किल हो जाता !

मगर गौर से देखें नासमझ ही नासमझ हैं

CamScanner

पुरुष-मुरुष कहां, जरा-सी बात में झुका लो।

स्त्रियों के मन में पति के प्रति आदर नहीं रह जाता। कारण? पतियों का खुद का व्यवहार है। पति जल्दी ही समझौते कर लेते हैं। पत्नियां इतने जल्दी समझौते नहीं करतीं। मेरे हिसाब में पत्नियां ज्यादा आत्मबल प्रगट करती हैं। और तुम्हें सभी को अनुभव होगा इस बात का। अगर तुममें और तुम्हारी पत्नी में झंझट हो गई तो झुकना तुम्हीं को पड़ता है, पत्नी नहीं झुकती। दिन बीतें, दो दिन बीतें, तीन दिन बीतें, नहीं झुकती। रोयेगी, खाने में ज्यादा नमक डालेगी,रोटियां जलायेगी, बच्चों को पीटेगी, बर्तन गिरायेगी, दरवाजे भड़कायेगी, सब करेगी--मगर झुकेगी नहीं! तुम्हें सता डालेगी सब तरफ से। आखिर तुम्हें उस हालत में कर देगी कि अब या तो पागल हो जाओ और या झुक जाओ। मगर ध्यान रखना, जब तुम झुकते हो तभी तुम्हारे प्रति श्रद्धा समाप्त हो जाती है।

स्त्री का मन उस पति को आदर देता है जो संकल्पवान है। अगर तुम न झुको, पहली बार न झुको...पहली बार ही भूल हो जाती है।

एक गांव के गंवार ने शादी की...शहरी होता तो इतनी हिम्मत नहीं रख सकता था...गांव का गंवार था। पत्नी को लेकर चला वापिस। घोड़ा गाड़ी थी उसके पास। घोड़ा बीच में अटक गया। उसने एक कोड?ा मारा घोड़े को और कहा कि एक...! घोड़ा एकदम चल पड़ा। फिर अटका। उसने फिर उसे दो कोड़े मारे और कहा दो...! पत्नी बैठी-बैठी सुन रही थी कि यह हो क्या रहा है! फिर तीसरी बार घोड़ा अटका। वह उतरा नीचे, निकाली उसने बंदूक और घोड़े को वहीं मार दी गोली। धड़ाम से घोड़ा नीचे गिर गया। दो दफे चेतावनी दे दी,पर्याप्त; अब तीसरा मौका आ गया। पत्नी ने कहा: यह तुमने क्या किया? उसने कहा: एक...! बस...फिर उसके बाद दो की नौबत नहीं आई। मगर वह तो गांव का गंवार था। मामला पहली दफा रफा-दफा हो गया। ऐसे पुरुष का स्त्री आदर करती है!

,, ओशो,,

CamScanner

12:06 am 0 KB/s 21%

Osho Human Being To Be.In.God
1m ·

मरने लगे कबीर तो काशी छोड़कर चले गए। काशी लोग मरने आते हैं। मरे मराए लोग काशी मरने आते हैं।

खयाल है कि काशी में जो मरता है, वह स्वर्ग में जन्म लेता है। काशी के पास एक छोटा सा गांव है, मगहर। कि जो मगहर में मरता है, वह गधा होता है नर्क में।

कबीर मरते वक्त मगहर चले गए। बहुत समझाया मित्रों ने, प्रियजनों ने, शिष्यों ने कि क्या करते हैं,

मगहर में कोई मरता ही नहीं! मगहर में आदमी मर भी जाए, तो उसके रिश्तेदार उसे लेकर भागते हैं कि अभी थोड़ी सांस चल रही है, मगहर के बाहर निकाल लो, नहीं तो नर्क में गधा होता है।

तो काशी लोग मरने आते हैं दूर–दूर से और तुम काशी जिंदगीभर रहे और मरने के वक्त मगहर जा रहे हो, दिमाग खराब तो नहीं हो गया!

कबीर ने कहा कि काशी में रहकर अगर मैं मरा और स्वर्ग में गया, तो कर्ता का भाव पकड़ जाएगा–अपनी वजह से। मगहर में मरूं, तो जहां उसकी मर्जी हो। नर्क का गधा बना दे,
तो भी उसकी मर्जी रही।

हम तो मगहर में ही मरेंगे। और अगर स्वर्ग गए तो फिर कह सकेंगे, तेरी अनुकंपा, तेरी कृपा। मरे तो मगहर में थे, होना तो गधा था। लेकिन काशी में मरकर अहंकार पकड़ेगा कि काशी में मरे, रहे काशी में, गए काशी–इसलिए। हमारे हर कर्म के पीछे कर्ता खड़ा हो जाता है, मैं कर रहा हूं।

ओशो; निर्वाण उपनिषद

CamScanner

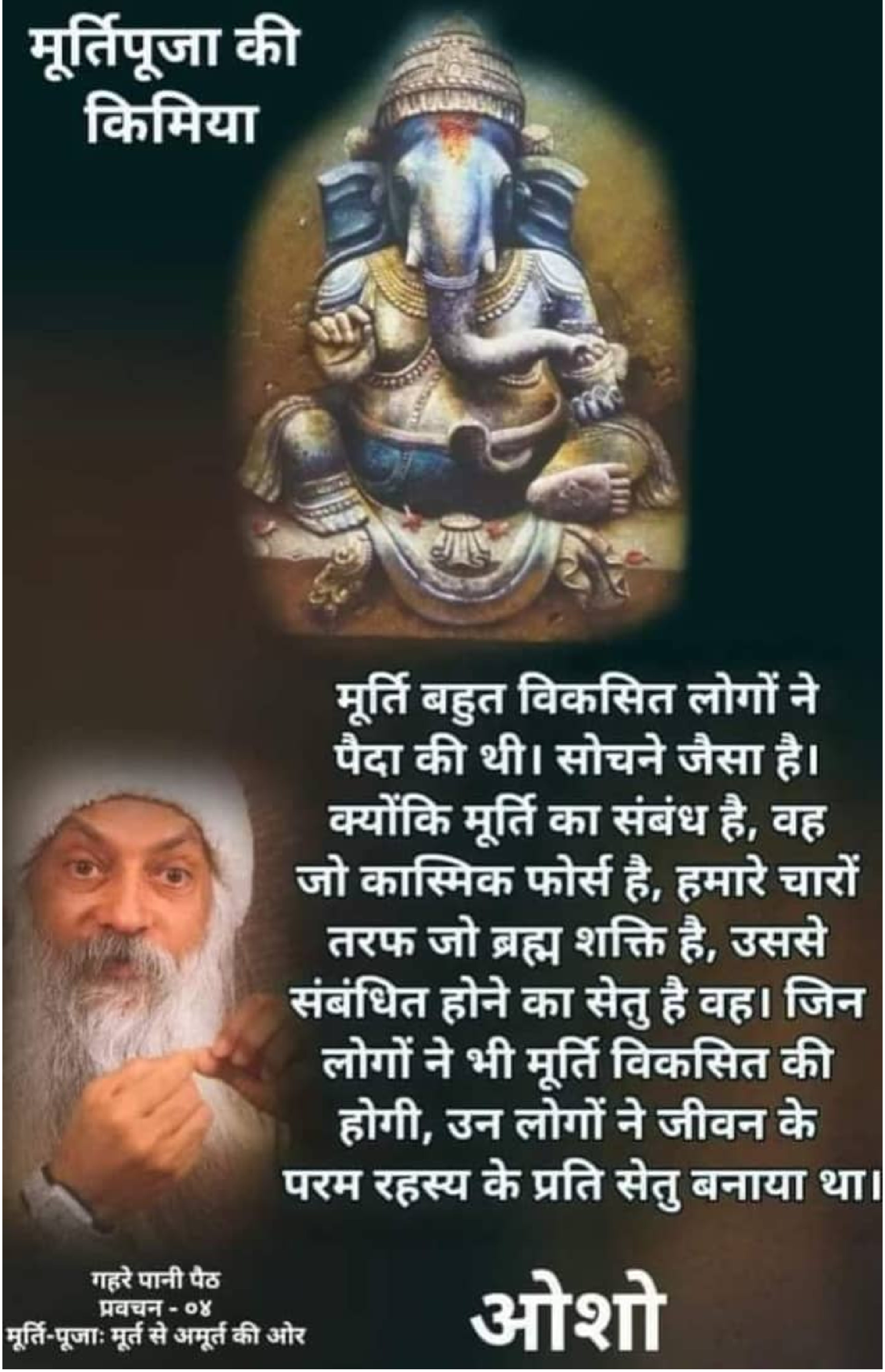
मूर्तिपूजा की किमिया
मूर्ति बहुत विकसित लोगों ने पैदा की थी। सोचने जैसा है। क्योंकि मूर्ति का संबंध है, वह जो कास्मिक फोर्स है, हमारे चारों तरफ जो ब्रह्म शक्ति है, उससे संबंधित होने का सेतु है वह। जिन लोगों ने भी मूर्ति विकसित की होगी, उन लोगों ने जीवन के परम रहस्य के प्रति सेतु बनाया था।
गहरे पानी पैठ
प्रवचन - ०४
मूर्ति-पूजा: मूर्त से अमूर्त की ओर
ओशो

CamScanner

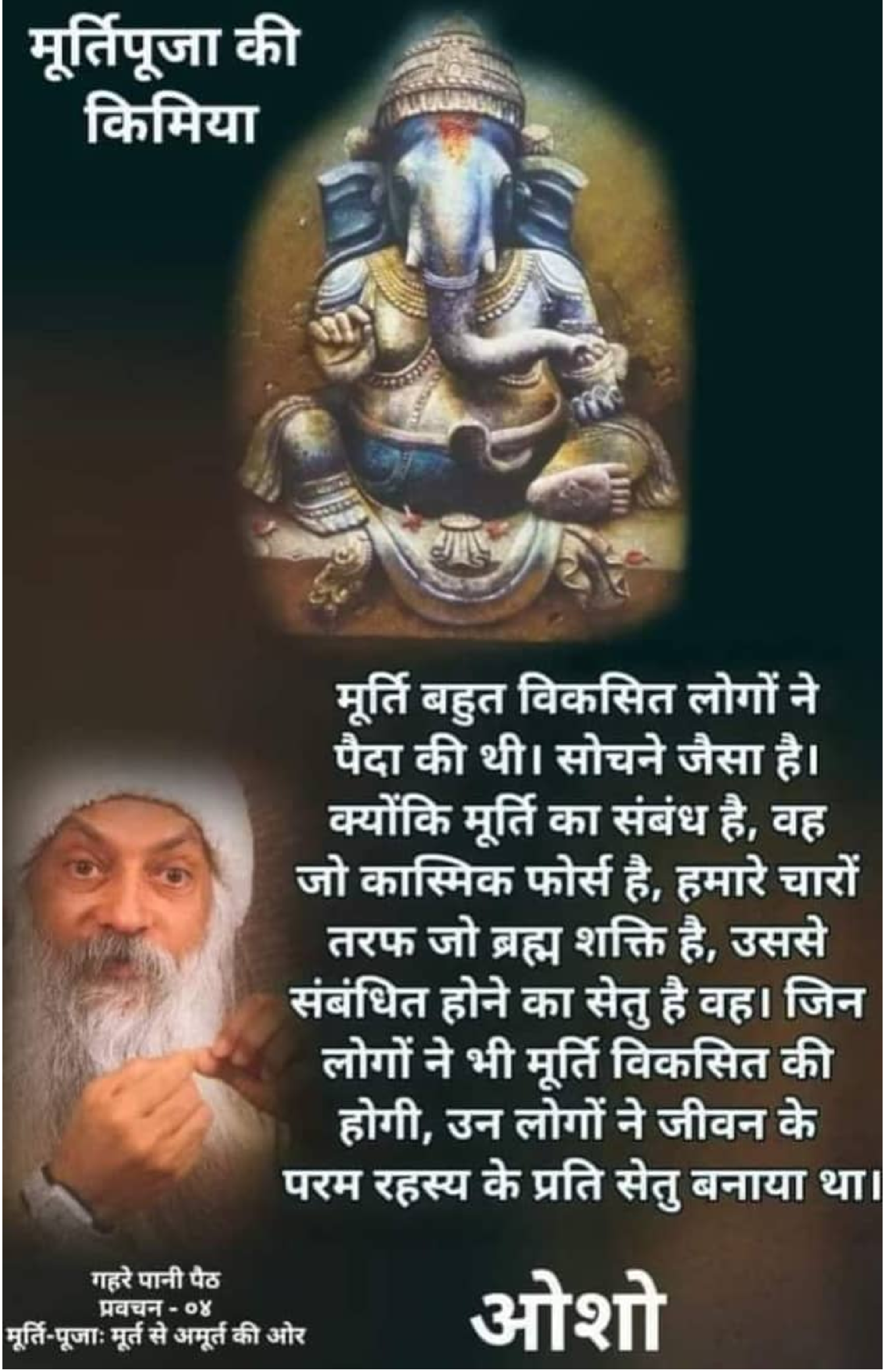
मूर्तिपूजा की
किमिया
मूर्ति बहुत विकसित लोगों ने पैदा की थी। सोचने जैसा है। क्योंकि मूर्ति का संबंध है, वह जो कास्मिक फोर्स है, हमारे चारों तरफ जो ब्रह्म शक्ति है, उससे संबंधित होने का सेतु है वह। जिन लोगों ने भी मूर्ति विकसित की होगी, उन लोगों ने जीवन के परम रहस्य के प्रति सेतु बनाया था।
गहरे पानी पैठ
प्रवचन - ०४
मूर्ति-पूजा: मूर्त से अमूर्त की ओर
ओशो

CamScanner

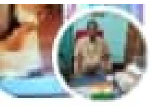

💓 OSHO TOMORROW 💓

Swami Anand Sahaz · 4d ·

Prem ! Prbhu Osho...

Bani Dsai · 6d ·

मैं लाओत्सु के शास्त्रों पर बोला हूं, बुद्धों के शास्त्रों पर बोला हूं, जैनों के शास्त्रों पर बोला हूं, हिंदुओं के शास्त्रों पर बोला हूं, मुसलमानों के शास्त्रों पर बोला हूं, यहूदियों के शास्त्रों पर बोला हूं, ईसाइयों के शास्त्रों पर बोला हूं। मैंने करीब-करीब सारे धर्म...सिक्खों के शास्त्रों पर बोला हूं। सारे धर्मों पर बोला हूं। इसलिए, ताकि तुमसे मैं कह सकूं कि सभी धर्मों में हीरे मौजूद हैं और सभी धर्मों में कचरा भी मौजूद है। कचरे से सावधान। और हीरा जहां भी मिले, अपना है। और कचरा कहीं भी हो, अपने ही शास्त्रों में क्यों न हो, जला देने योग्य है। और जितना जल्दी हो उतना अच्छा है। डर यह है कहीं कचरे में हीरे न खो जाएं। खो गए हैं।

ओशो

CamScanner

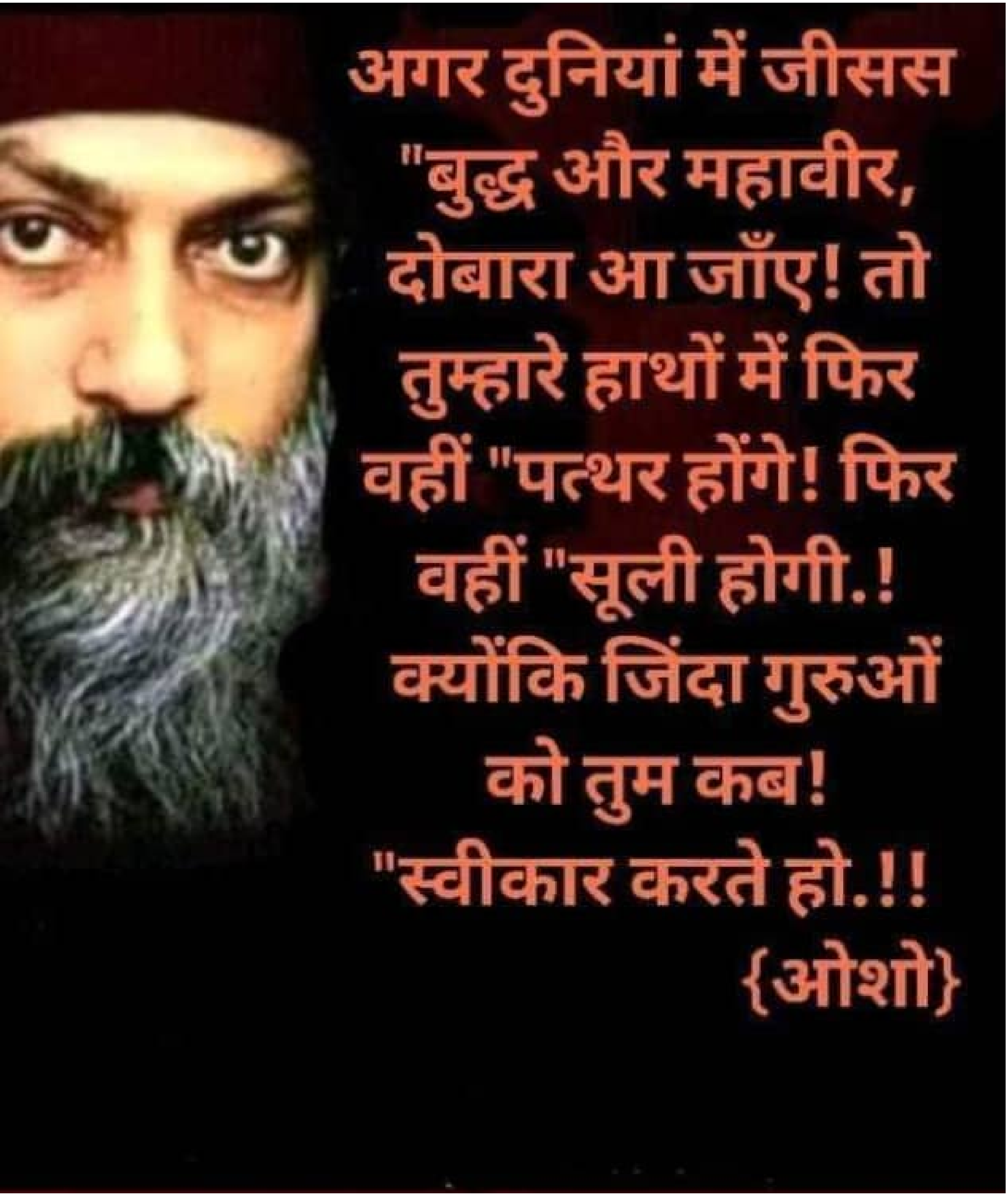
अगर दुनियां में जीसस
"बुद्ध और महावीर,
दोबारा आ जाँए! तो
तुम्हारे हाथों में फिर
वहीं "पत्थर होंगे! फिर
वहीं "सूली होगी.!
क्योंकि जिंदा गुरुओं
को तुम कब!
"स्वीकार करते हो.!!
{ओशो}

CamScanner

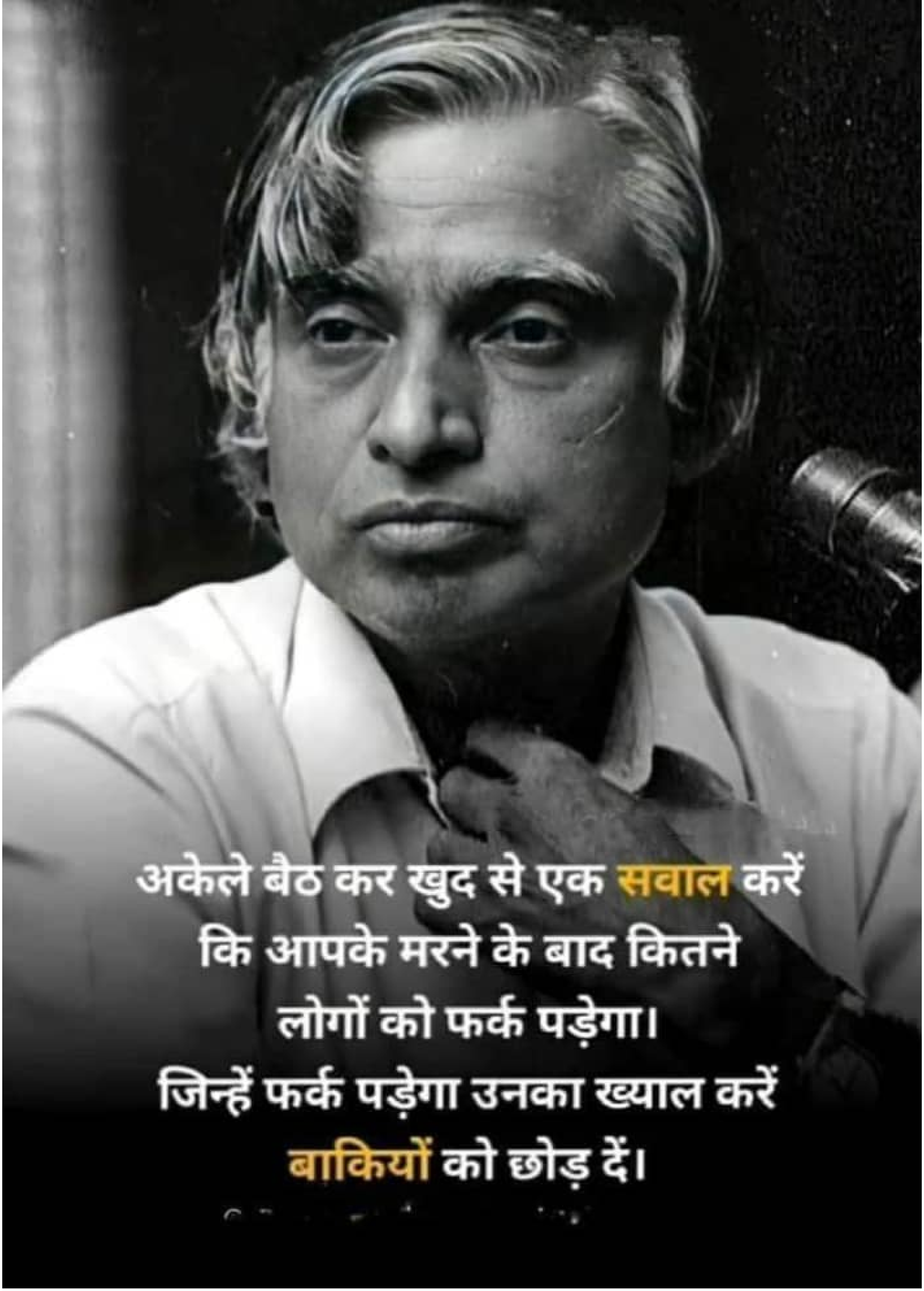
अकेले बैठ कर खुद से एक सवाल करें
कि आपके मरने के बाद कितने
लोगों को फर्क पड़ेगा।
जिन्हें फर्क पड़ेगा उनका ख्याल करें
बाकियों को छोड़ दें।

CamScanner

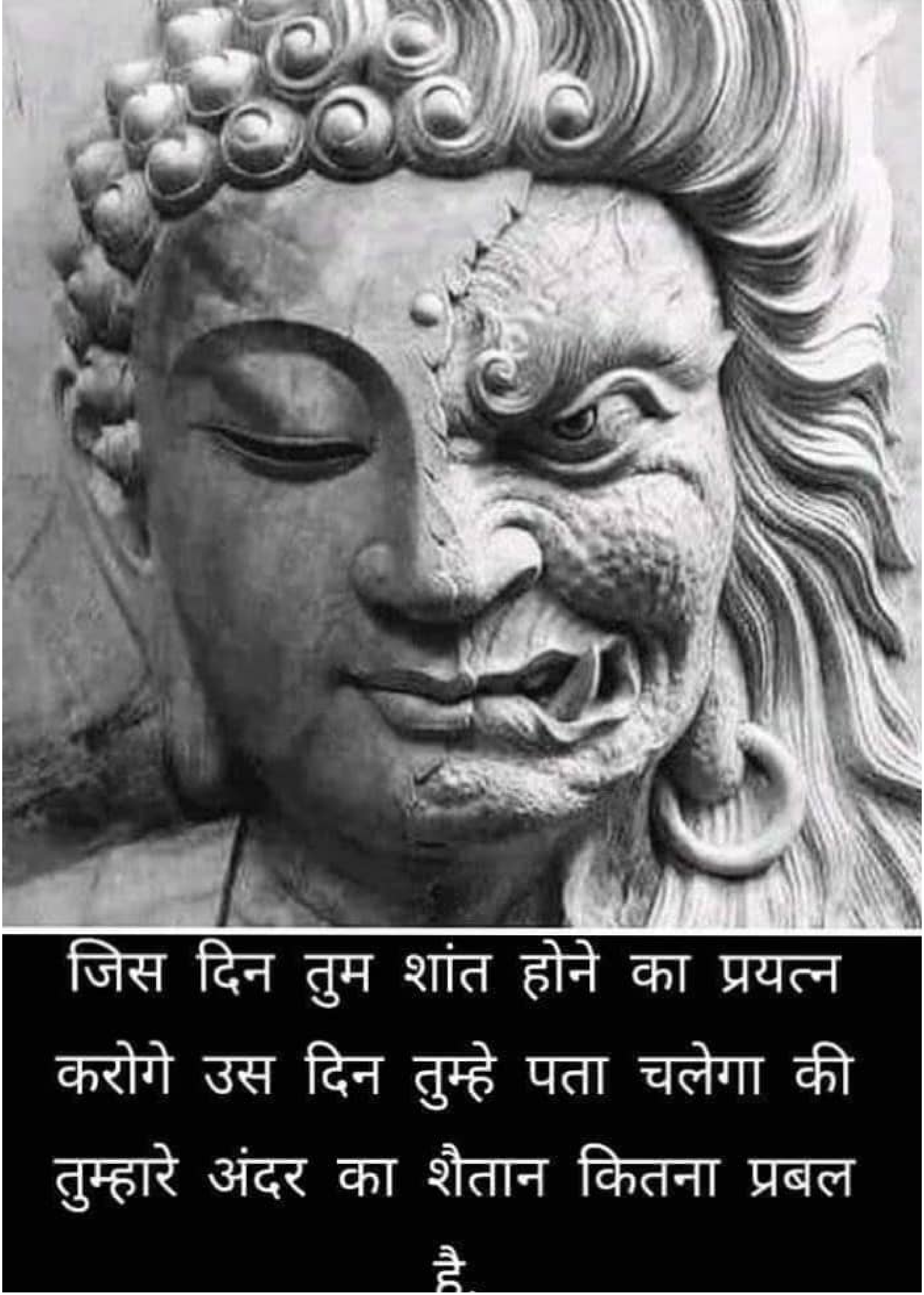
जिस दिन तुम शांत होने का प्रयत्न करोगे उस दिन तुम्हे पता चलेगा की तुम्हारे अंदर का शैतान कितना प्रबल है.

CamScanner

11:47 pm 0 KB/s VoLTE 4G 23%

ओ शो वाणी

Seema Mangal · 5d ·

ऑस्ट्रेलिया के एक बौद्ध भिक्षु का इंटरव्यू सुना, पत्रकार भिक्षु से पूछता है कि कोई अगर आपकी पवित्र धार्मिक पुस्तक त्रिपिटक को फाड़कर शौचालय के कमोड में फेंक दे तब आप क्या करेंगे ?

बौद्ध भिक्षु ने उत्तर दिया कि मैं सबसे पहले प्लम्बर को फोन करूंगा ताकि नाली चोक न हो जाए। इस पर पत्रकार को हंसी आती है।

दूसरा प्रश्न पूछता है कि बामियान में तालिबान द्वारा बुद्ध प्रतिमाएं नष्ट कर दी गईं, इस पर आप क्या कहेंगे ?

बौद्ध भिक्षु ने कहा कि धम्म(धर्म) न तो मूर्तियों में है और न ही प्रेस पर छपी किताबों में है। धम्म हमारे दिलों में और उससे भी आगे हमारे व्यवहार में जब तक जिंदा है तब तक किताबों को फाड़ने से कुछ नहीं होता है,किताब हम दोबारा छपवा लेंगे, मूर्तियां नई बना ली जाएंगी लेकिन अगर हम अपने आचरण और अपने दिलों में धम्म को खो देते हैं और किताबों, मूर्तियों को बचा लेते हैं तो कोई फायदा नहीं है। तब केवल मूर्तियां और किताबें रह जाएंगी, धम्म खो चुका होगा, उसके प्राण खो चुके होंगे।

पूरा इंटरव्यू सुनने लायक है और बाकी के सभी धर्मों हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, पारसी, यहूदी आदि को इसे समझने की जरूरत है। किसी को भी, किसी का भी अपमान नहीं करना चाहिए लेकिन अपमान यदि कोई करे तब उसे उस देश की कानून व्यवस्था के तहत सजा दिलाओ अन्यथा हमारी धार्मिक किताबों का अपमान हो गया? तो हम सब देश जला देंगे? शास्त्र तो हमें प्रेम और शांति का संदेश देता था? तब हम अपनी किताब की रक्षा के लिए प्रेम और शांति को नष्ट कर देते हैं? क्या आप शांति और प्रेम खोकर उस किताब को बचा लेते हैं, जिसमें प्रेम और शांति का संदेश लिखा था? 🙏🍁

CamScanner

11:46 pm 1 KB/s 4G 23%

facebook

नवनीत विचार

5 Oct ·

चीन में एक "अदभुत आदमी हुआ.. लाओत्से.! उसको एक राज्य का कानून मंत्री बनाया गया.!

एक बार एक आदमी ने चोरी की! और पहला ही "मुकदमा.. लाओत्से के सामने आया, तो उसने चोर को छह महीने की सजा दी, और साहूकार को भी छह महीने की सजा दे दी!

साहूकार ने कहा;- आप पागल हो गए हैं! यह किस कानून में लिखा है कि जिसके घर चोरी हो! वह भी सजा काटे?

लाओत्से ने कहा, पागल मैं नहीं हो गया हूं अब तक सारा कानून पागल था! तूने सारे गांव की संपत्ति इकट्ठी कर ली है, चोरी नहीं होगी तो अब क्या होगा गांव में? यह चोर तो नंबर दो है जिम्मेवार चोरी में, नंबर एक तू जिम्मेवार है। इतना धन जहां इकट्ठा होगा वहां चोरी होगी। इस चोर को चोरी करवाने में तूने ही टेंपटेशन, तूने ही प्रेरणा दी है। और इस आदमी ने अगर चोरी की है, तो तुम दोनों चोरी में समान भागीदार हो। मैं तो तुम दोनों को ही सजा दूंगा।

राजा ने कानून मंत्री को बुला कर कहा कि आपका दिमाग दुरुस्त है? कभी दुनिया में यह हुआ है? लाओत्सु ने कहा, नहीं हुआ दुनिया में इसीलिए दुनिया से चोरी नहीं मिट सकी है और नहीं मिट सकेगी। और मैं कहता हूं कि जो मैं कह रहा हूं अगर यह हो, तो दुनिया में चोरी मिट सकती है।

लाओत्सु की बात नहीं सुनी गई। आज भी पूरी तरह नहीं सुनी गई है! लेकिन जब तक नहीं सुनी जाएगी, वह वर्डिक्ट, वह लाओत्सु का कथन खड़ा रहेगा आकाश में, चमकते हुए अक्षरों में लिखा रहेगा कि तब तक नहीं मिट सकती चोरी जब तक चोर के साथ साहूकार भी दंडित नहीं होगा, नहीं मिटेगी।

ओशो..✍

CamScanner

लाओत्से को कानून मंत्री
बनाया गया.! एक फैसले
के दौरान.. उन्होंने,
"चोर को सज़ा दी, और
उतनी ही सज़ा साहुकार को
दी, जिसके घर चोरी
हुई थी.!!
..ओशो 😅🙏
{लाओ त्से नमन}

CamScanner

11:42 pm 0 KB/s VoLTE 4G 23%

सबसे पवित्र क्या है ...🖊

पण्डितजी एक दिन एक बच्चे से बात करते हुए उलझ गये ।
बच्चे ने भी एक प्रश्न दाग दिया कि--
वो कौन-सी वस्तु है, जो कभी अपवित्र नहीं होती......?

पण्डित जी टोपी उतार कर पसीने-पसीने हो गये, मगर, उस बच्चे के प्रश्न का जवाब नहीं दे पाये ।

आखिर हार मान कर बोले, चल तू बता ।

बच्चे ने कहा कि कभी न अपवित्र होने वाली वस्तु है ....

टेन्ट हाउस के गद्दे, जिसे हिन्दू -मुसलमान, पण्डित, हरिजन, कुम्हार , डोम और बाल्मीकि सभी धर्म के लोग खुश होकर इस्तेमाल करते हैं ।
ये गद्दे मौत से लेकर पूजापाठ, विवाह पण्डाल तक और धार्मिक कथा से लेकर उठावना तक हर मौके पर बिछते हैं ।
इनको कोई सूतक भी नहीं लगता ।
बाराती भी इन गद्दों पर सोम-रस पीने के बाद वमन करते हैं ।
छोटे बच्चों को सुविधानुसार इन पर पेशाब करा दिया जाता है ।
इतना ही नहीं, इन पर बिछी चादरों से जूते भी चमका लिये जाते हैं ।
हद तो तब होती है, जब हलवाई इन चादरों में पनीर का चक्का लटका देता है उसी पनीर से क्या मजे का मटर-पनीर बनता है....
पण्डित जी चारों खाने चित थे और बच्चा पण्डित जी पर पानी के छींटे मार रहा था......

इस पोस्ट को एक चुटकुले या हास्य के नजरिए से ना देखा जाए।
यह एक परम सत्य है जिसे हम सब जानते हैं पर मानते नहीं हैं ।
सिर्फ दिखावा करते हैं ।
।। जय श्री कृष्णा ।।
🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

16 1 comment • 6 shares

CamScanner

जिसे संवारने में उम्र गुजार दी..! वह जिस्म तो महज रूह का लिबास निकला...

बुल्ले शाह

CamScanner

11:41 pm 0 KB/s 23%

facebook

Humare Whatsapp Group Se Judne K Liye Niche wale Link Par Click Karen... See more

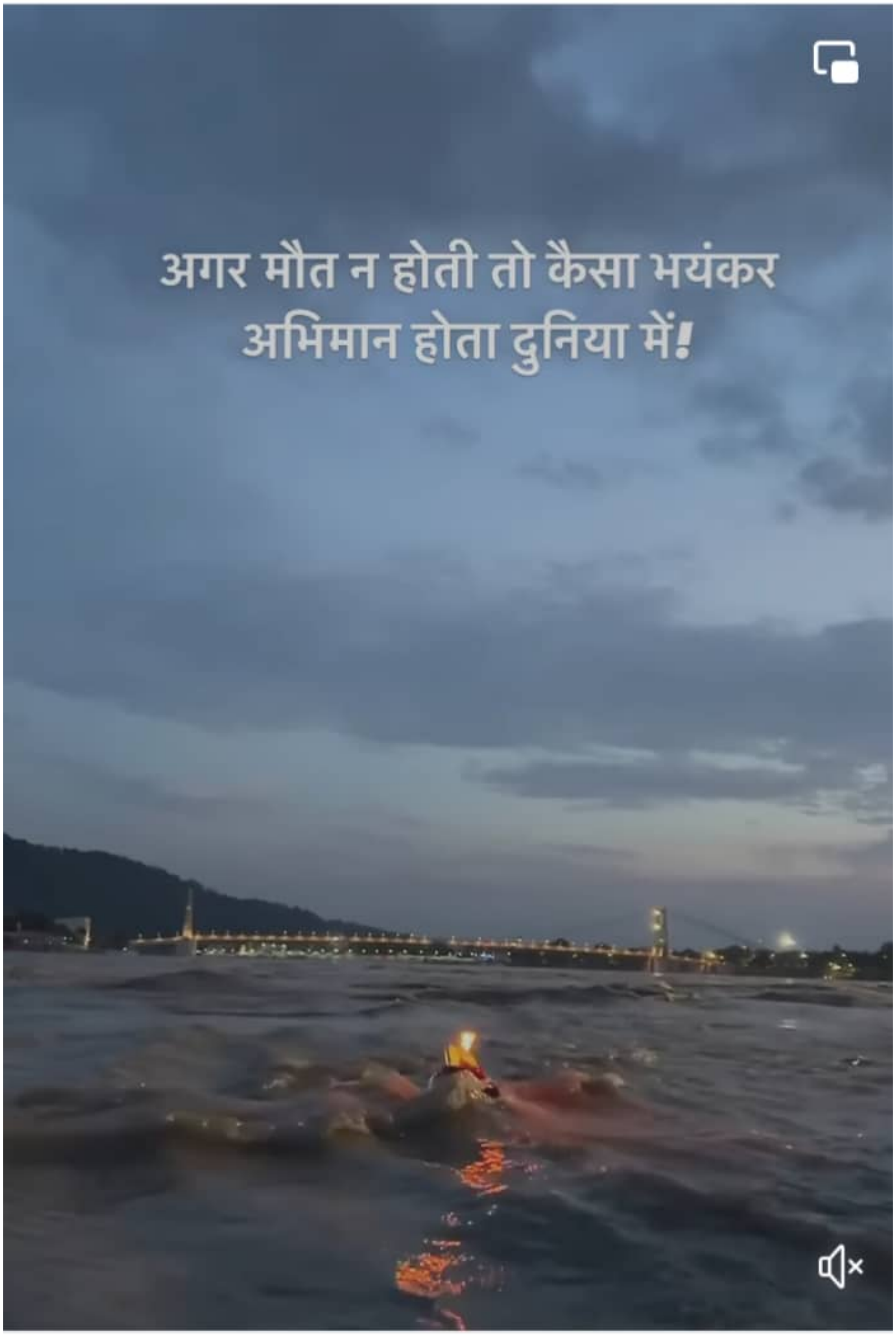

216 1 comment • 93 shares • 5.1K views

Like Comment Share

CamScanner

11:38 pm 0 KB/s 4G 24%

Like Comment Share

osho suvichar

3d ·

तुम्हारा मन प्रार्थना भी करेगा तो भी प्रार्थना न होने देगा। तुम्हारा मन प्रार्थना से भी अहंकार को भरने लगेगा। अपने ध्यान की चर्चा मत करना,उसे छिपाना। उसे संभालना जैसे कोई बहुमूल्य हीरा मिल गया हो,उसे तुम छिपाते हो,उछालते नहीं फिरते। संपदा को तुम गड़ा देते हो ऐसे ही ध्यान को गड़ा देना। उसकी तुम चर्चा मत करना। उससे तुम अहंकार मत भरने लगना। अन्यथा मन की बेल वहां भी पहुंच लेगी और सब चूस लेगी। और जहाँ मन पहुंच जाता है वहां धर्म नहीं। मन बहिर्मुखी है। उसका ध्यान दूसरे पर होता है ,अपने पर नहीं। ध्यान अंतर्मुखी है। ध्यान का अर्थ है अपने पर ध्यान देना दूसरे पर नहीं। मन का अर्थ है दूसरे पर ध्यान देना। ध्यान करो अगर तुम दो पैसे गरीब को दे देते हो तो तुम देखते हो कि लोग देखते हैं कि नहीं। तुम मंदिर बनाते हो तो बड़ा पत्थर लगाते हो अपने नाम का तुम दान देते हो तो अखबार में खबर छपवाते हो, सब व्यर्थ हो जाता है।

प्रवचन-शिवसूत्र

ओशो

42 1 comment • 3 shares

Like Comment Share

Reels and short videos

CamScanner

11:36 pm 0 KB/s VoLTE 4G 24%
facebook

Like Comment Share

नवनीत विचार
2d ·

चार आदमियों ने तय किया कि मौन की साधना करेंगे। वे चारों गए, एक मंदिर में बैठ गए... चौबीस घंटे मौन से रहेंगे। कोई घड़ी भी नहीं गुजरी थी कि पहला आदमी बोला अरे अरे, पता नहीं मैं ताला लगा आया कि नहीं घर का! दूसरा मुस्कुराया, उसने कहा कि तुमने मौन खंडित कर दिया नासमझ, मूढ़! तूने बोल कर सब मौन खराब कर दिया! तीसरा बोला कि खराब तो तुम्हारा भी हो गया है! तुम क्या खाक उसको समझा रहे हो? चौथा बोला : हे प्रभु! एक हम ही बचे, जिसका मौन अभी तक खराब नहीं हुआ।

बोले बिना रहा नहीं जाता। अगर बिना बोले रह जाओ तो बहुत कुछ हो। अगर मौन रह जाओ तो महान घट सकता है।

शब्द से सत्य के घटने में कोई सहारा नहीं मिलता—शून्य से ही सहारा मिलता है। अगर ऐसा भाव मन में उठ रहा है मौन रह जाने का, तो रह ही जाओ, इतना भी मत कहो; इतना कहने से भी खराब हो जाएगा। - ओशो

CamScanner

15:48

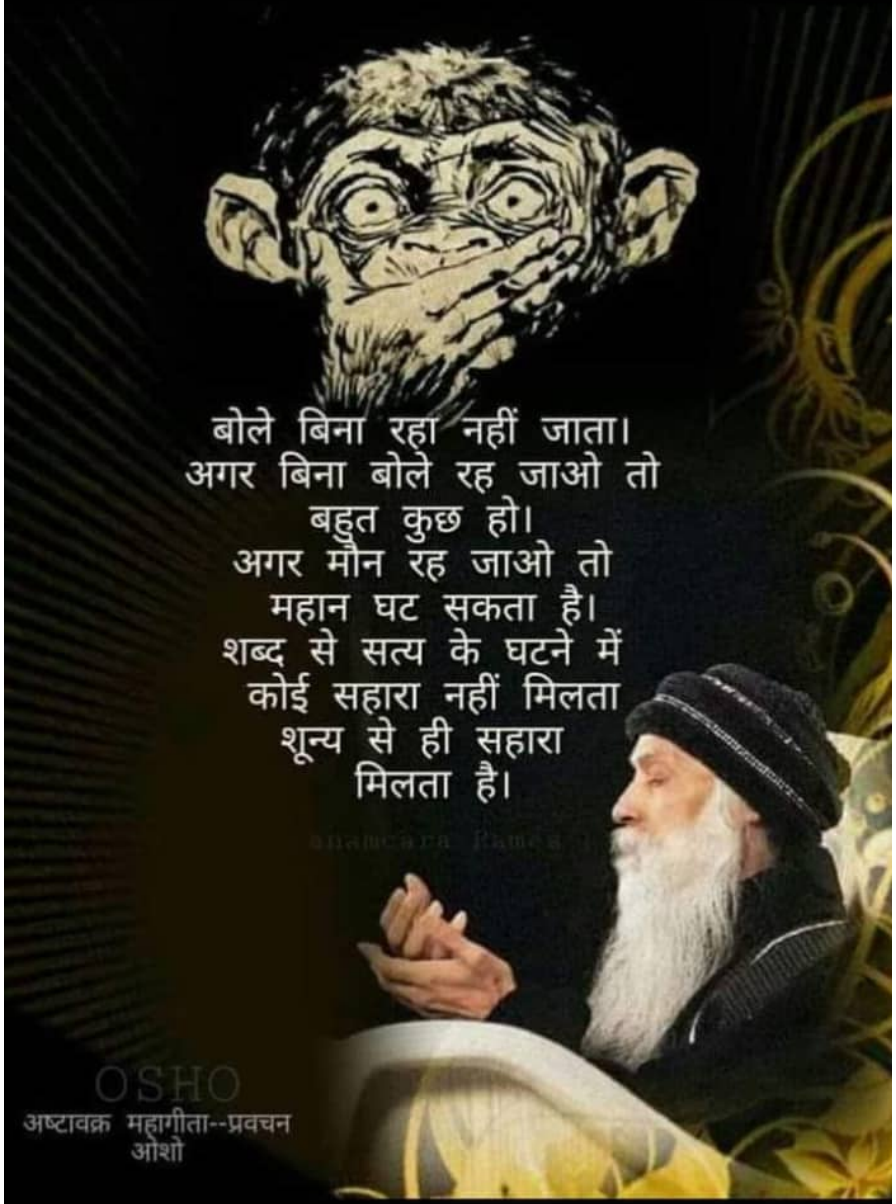

CamScanner

Write a comment...

Idanim
Sponsored ·

सुखदायक विपश्यना ध्यान | Connect With Your Inner Self

www.idanim.com
विपश्यना ध्यान | Body Scan Meditation
Watch more

922 · 33 comments • 23 shares

Like Comment Share

नवनीत विचार
2d ·

चार आदमियों ने तय किया कि मौन की साधना करेंगे। वे चारों गए, एक मंदिर में बैठ गए... चौबीस घंटे मौन से रहेंगे। कोई घड़ी भी नहीं गुजरी थी कि पहला आदमी बोला अरे अरे, पता नहीं मैं ताला ... See more

CamScanner

11:35 pm 0 KB/s   VoLTE 4G 24%

32   1 share

Like   Comment   Share

osho suvichar
2d ·

जापान में झेन फकीरों की परम्परा है,उनसे तुम पूछोगे कि ध्यान के लिए क्या करें तो वे कहते हैं कुछ न करो बस बैठ जाओ। ध्यान रखना कि जब वे कहते है कि कुछ न करो तो इसका मतलब है कुछ भी न करना, बस बैठ जाना। बस इतना ही करना कि बैठ गए और कुछ भी मत करना,क्योंकि तुमने कुछ किया कि मन आया। बात बड़ी सरल लगती है पर है बड़ी कठिन। यही तो मुसीबत है कि बैठना मुश्किल है। आंख बंद की, काम शुरू हुआ, फिर वही दौड़। शरीर बैठा हुआ दिखाई पड़ता है लेकिन मन जाग रहा है।
अगर तुम सिर्फ बैठ जाओ और कुछ भी न करो तो ध्यान ।

41   5 comments • 1 share

Like   Comment   Share

Pappu Gupta

Like   Reply   1

Write a comment...

Idanim
Sponsored ·

CamScanner

किसी दूसरे के सम्मान के आकांक्षी न बने,
परमात्मा ने पैदा करके हमें जो सम्मान दिया है
उससे बड़ा और कोई सम्मान नहीं हो सकता...

OSHO

CamScanner

तुम्हारे मन में विचार चलते हैं–तुम देखते हो विचारों को, दूसरा भी उनको देख सकता है; उसकी कला है। लेकिन, विचारों को देखने की उस कला का धर्म से कोई भी संबंध नहीं। न किताब को पढ़ने की कला से धर्म का कोई संबंध है। न दूसरे के मन को पढ़ने की कला से धर्म का कोई संबंध है। जादूगर सीख लेते हैं–वे कोई सिद्ध–पुरुष नहीं है।

लेकिन तुम बहुत चमत्कृत होओगे। तुम गये किसी साधु के पास और उसने कहा कि आओ; तुम्हारा नाम लिया, तुम्हारे गांव का पता बताया और कहा कि 'तुम्हारे घर के बगल में एक नीम का झाड़ू है' –तुम दीवाने हो गये! लेकिन, साधु को नीम के झाड़ू से क्या लेना, तुम्हारे गांव से क्या लेना, तुम्हारे नाम से क्या मतलब? साधु तो वह है जिसे यह पता चल गया है कि किसी का कोई नाम नहीं, रूप नहीं, किसी का कोई गांव नहीं। ये गांव, नाम, रूप –सब संसार के हिस्से है। तुम संसारी हो! वह साधु भी तुम्हें प्रभावित कर रहा है, क्योंकि वह तुमसे गहरे संसार में है। उसने और भी कला सीख ली।

CamScanner

EkKadamSafaltakiOrr
हर वक्त कोई ना कोई दुनिया छोड़ रहा है।
आप भी इसी लाइन में है,जाने से पहले जी
लो,ताकि किसी चीज़ का अफसोस ना रहे।

CamScanner

CS CamScanner

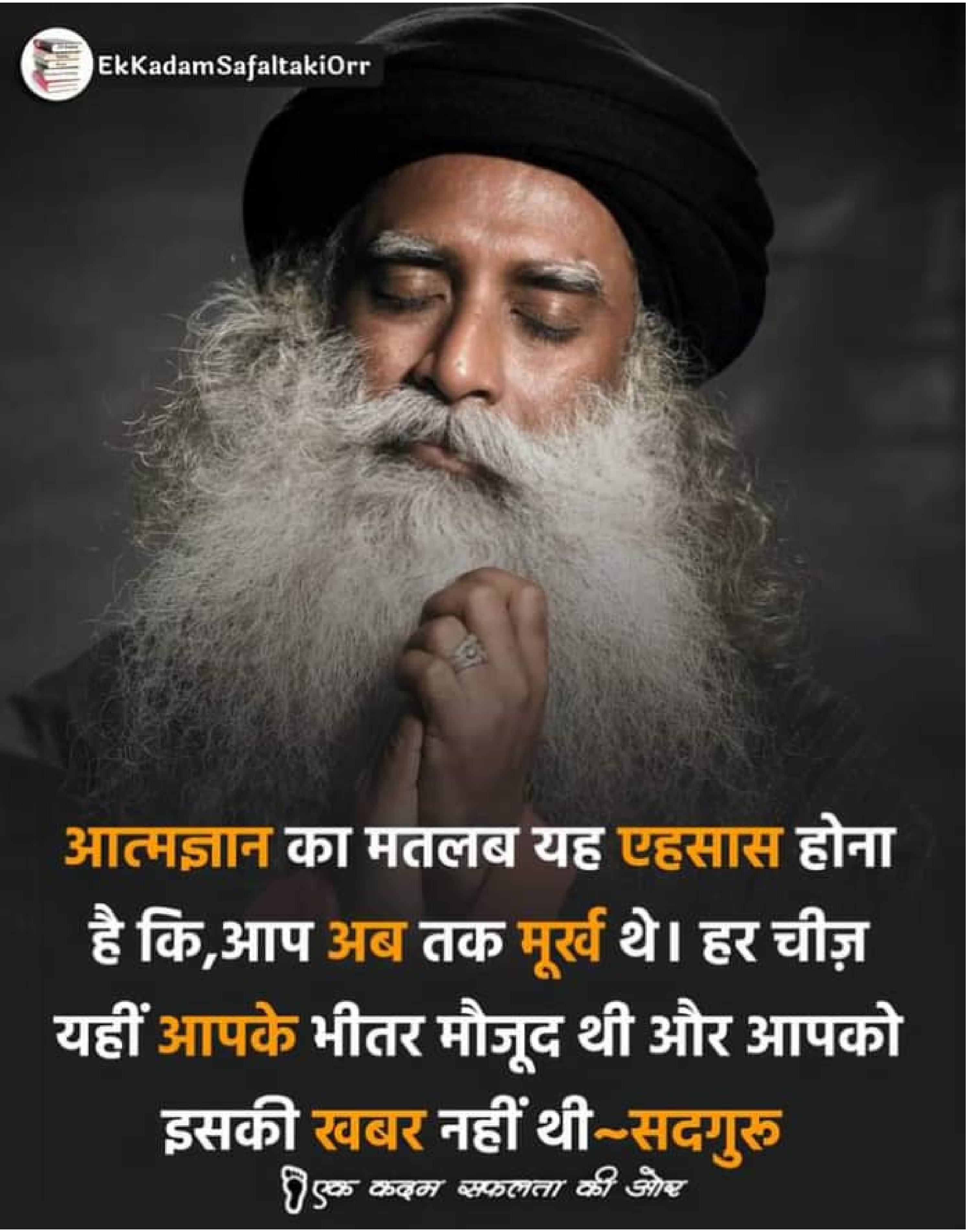
EkKadamSafaltakiOrr
आत्मज्ञान का मतलब यह एहसास होना
है कि,आप अब तक मूर्ख थे। हर चीज़
यहीं आपके भीतर मौजूद थी और आपको
इसकी खबर नहीं थी~सदगुरु
एक कदम सफलता की ओर

CamScanner

11:23 pm 99 KB/s 25%

Like Comment Share

osho suvichar

1d ·

इस दुनिया में सरलतम चीजें ही कठिन होती हैं। तुमसे कोई करने को कहे कि हिमालय चढ़ जाओ यह इतना कठिन नहीं है। पसीना आएगा, थकान होगी मगर चढ़ जाओगे। तुमसे कोई कहे कि न करो तो मुसीबत हो गयी। हालांकि वह तुमसे इतना ही कह रहा है कि कुछ मत करो बस बैठो।

अगर चुपचाप बैठे रहे तो क्या होगा? पहले तो जैसे ही तुम बैठोगे तो शरीर में अनेक स्थानों पर गति शुरू हो जाएगी? कहीं पेअर में लगेगा कि क्या चुभ रहा है? कहीं लगेगा कि शरीर के किसी कोने में खुजलाहट हो रही है। कहीं लगता है कि कमर में कहीं दर्द हो रहा है, कहीं लगता है कि गर्दन में पीड़ा हो रही है। और एक क्षण पहले तक यह कुछ नहीं हो रहा था तुम बिल्कुल ठीक थे। अचानक सब तरफ से शरीर बगावत कर रहा है। वह कह रहा है कि कुछ करो अगर कुछ न करो तो खुजलाओ लेकिन कुछ करो। कुछ नहीं तो शरीर की करवट बदल लो। क्योंकि जीवन इस संसार में कृत्य के बल पर टिका है,जैसे ही तुम कृत्य से शून्य हुए की यह संसार खोया। जैसे ही तुम शांत बैठना चाहते हो तो शरीर कहता है कि कुछ करो।

शरीर की बात को मत सुनना क्योंकि मालिक तुम हो अगर तुमने थोड़े दिन न सुना तो यह अपने आप चुप हो जाएगा आखिर कितनी देर तक चिल्लायेगा? तुम ध्यान देते हो, तुम पोषण देते हो तुम कह देने एक घंटे कुछ भी हो जाये मैं कुछ नहीं करने वाला। तुम्हें थोड़े दिन अपनी मालकियत की घोषणा करनी पड़ेगी। क्योंकि इस ग़ुलाम को तुमने बहुत दिनों तक मालिक बनाया है अब उसकी मालकियत छीननी पड़ेगी।

प्रवचन-शिवसूत्र

ओशो

CamScanner

CONTENTS

S. No.	Exercise	Page No.
1.	To study about Tillage and Tillage Implements	1
2.	To study about Deshi Plough	3
3.	To study about Mould Board Plough	5
	3.1 Meston Plough	10
	3.2 Shabash Plough	11
	3.3 Care Plough	12
	3.4 U. P. No. 1 Plough	13
	3.5 U. P. No. 2 Plough	14
	3.6 Wah-Wah Plough	15
	3.7 Victory Plough	16
	3.8 Punjab Plough	17
4.	To study about Disc Plough	18
5.	To study about the different types of Cultivators	20
	5.1 Kanpur Cultivator	22
	5.2 R. N. Cultivator	23
	5.3 Mecormic Cultivator	24
	5.4 Shabash Cultivator	25
	5.5 Wah-Wah Cultivator	26
6.	To study about different types of Harrows	27
	6.1 Triangular Harrow	31
	6.2 Spring tooth Harrow	32
	6.3 Disc Harrow	33
	6.4 Offset disc Harrow	34
	6.5 Structural differences between Harrow and Cultivator	35
	6.6 Function Differences between Harrow and Cultivator	36
7.	Calculation of Horse Power, Drawbar Horse Power, Draft & Area covered	37

Rotate screen Play Share Search

CamScanner

गलत 🍔 भोजन असंतोष

उत्पन्न करता है,

और तुम्हारी भूख संतुष्ट नहीं

होगी,,

क्योंकि भूख भी भोजन नहीं

🥗 पोषण चाहती हैं।।

CamScanner

10:03 pm 3 KB/s VoLTE 4G 21%

ये तुम जो पितृ-पक्ष इत्यादि मनाते हो, इसका मतलब तुम्हें चाहे पता हो या न हो! इसका मतलब है कि हे पिता जी, अब आप उसी तरफ रहना! यहां सब ठीक चल रहा है। श्राद्ध किए दे रहे हैं! जिंदगी भर जिनकी श्रद्धा में दो फूल नहीं चढ़ाए थे, मरने पर लोग उनकी श्राद्ध करते हैं! गया जाते हैं, श्राद्ध करने! अगर पिता जिंदा होते और कहते: बेटा, मुझे गया ले चलो, तो कोई ले जाने को राजी नहीं था--जिंदा पिता को कोई गया ले जाने को नहीं था, कि काहे के लिए, क्या जरूरत है? फिजूलखर्ची करवाना है! शांति से घर में बैठो। तुम्हें बुढ़ापे में और न मालूम कहां-कहां के खयाल आते हैं! मगर पिता जी चल बसे, फिर बेटा जी गया जाते हैं! डर, कि अब किसी तरह छुटकारा करो इनका; जो कुछ लेना-देना है, निपटारा करो; कहीं आ-वा न जाएं!

मनुष्य डरता है, इसलिए मुर्दे की पूजा करता है। जिंदा का सम्मान नहीं है, जीवन का सम्मान नहीं है, मृत्यु का भय है।
तुम परमात्मा को दो ढंग से खोज सकते हो। एक तो मृत्यु का भय। उससे तुम परमात्मा को खोजने चलो तो तुम्हारी खोज प्रथम से ही गलत हो गई। और एक जीवन का प्रेम। उससे तुम परमात्मा को खोजने चलो तो तुम्हारे कदम ठीक रास्ते पर पड़ने लगे।

मैं तुम्हें जीवन का प्रेम सिखाना चाहता हूं। मैं तुम्हें चाहता हूं तुम फूलों से संबंध जोड़ो, तुम इस जगत के सौंदर्य से संबंध जोड़ो, तुम्हारे जीवन में प्रेम उमगे। और इस जगत में जो सर्वाधिक प्रेम करने योग्य स्थल है तो वह है किसी ऐसे संत को खोज लेना जो मिट गया हो..वहां समर्पित हो जाना।

साध तें बड़ा न कोई। कहि राम सुनावत सोई।।
राम कही, हम साधा।...
जगजीवन कहते हैं: राम ने कहा और हमने साधा। उन्होंने जो कहा, वैसा साधा। हमने कुछ उसमें हेर-फेर न किया।

ओशो

CamScanner

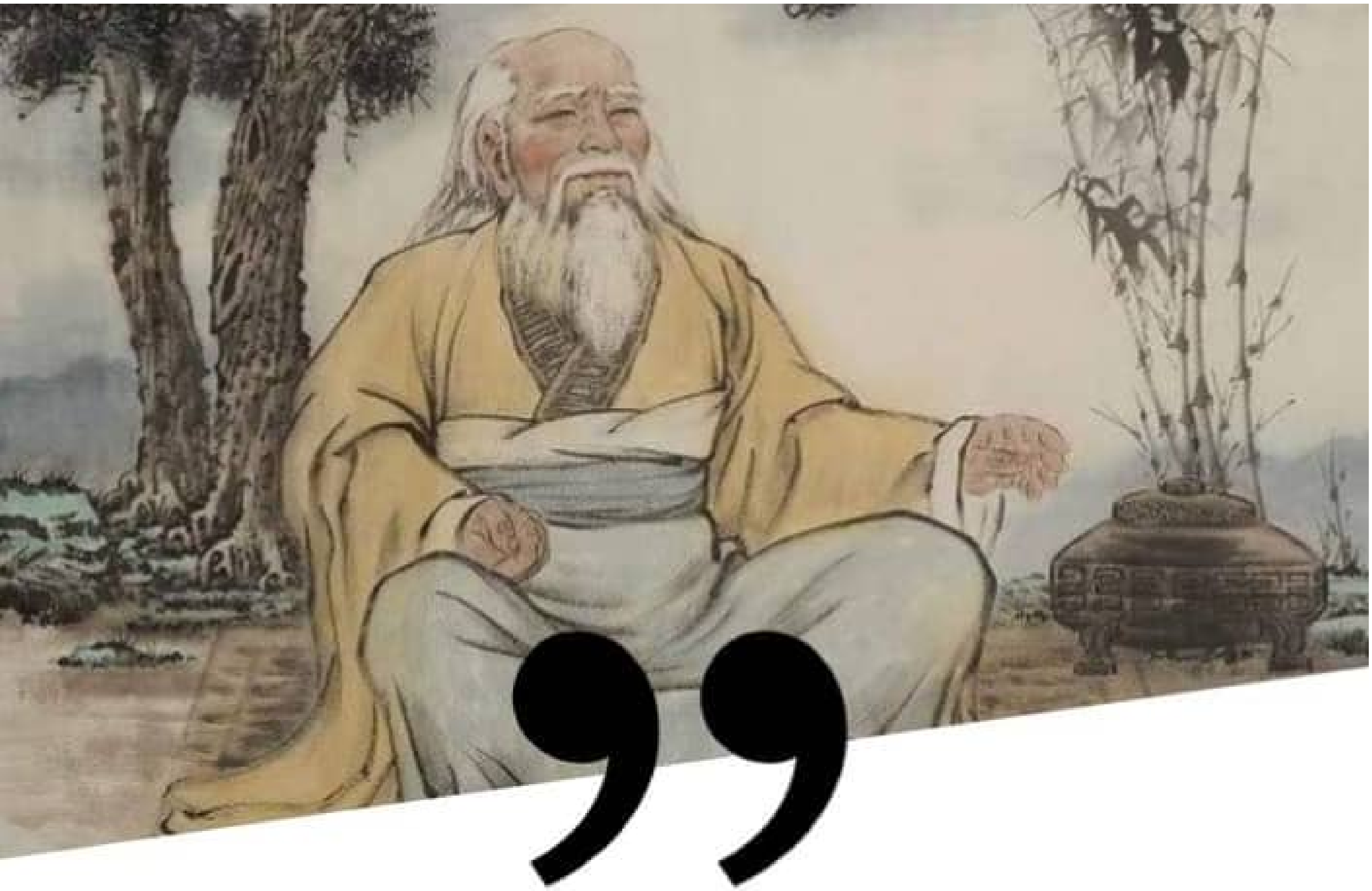

अगर खोना है..!! तो दौड़ो, पाना है, तो ठहर जाओ..!!

_Lao Tazu

INSTA/ @PHILOSOPHY_GYAN

CamScanner

CamScanner

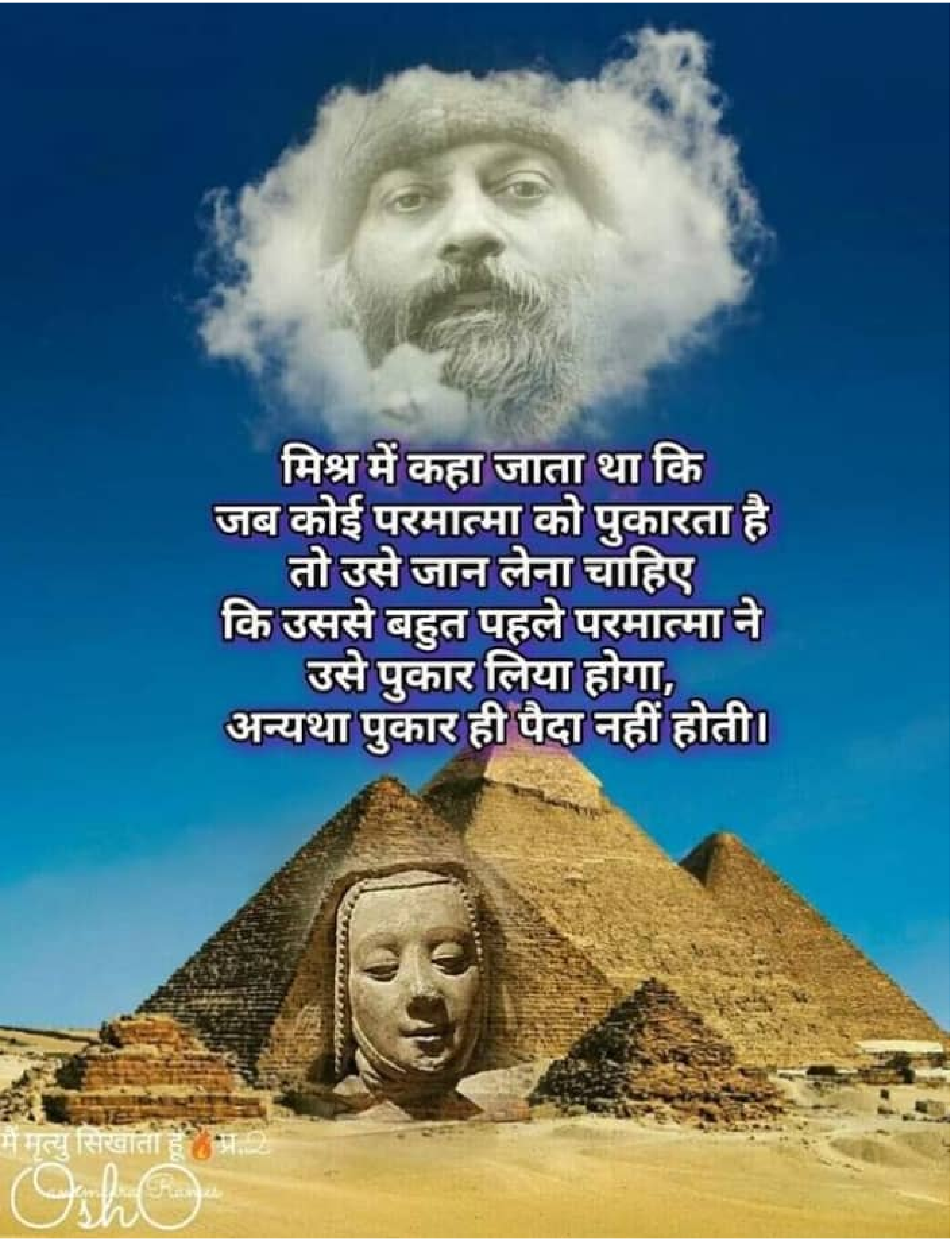
मिश्र में कहा जाता था कि
जब कोई परमात्मा को पुकारता है
तो उसे जान लेना चाहिए
कि उससे बहुत पहले परमात्मा ने
उसे पुकार लिया होगा,
अन्यथा पुकार ही पैदा नहीं होती।
मैं मृत्यु सिखाता हूं प्र..2

CamScanner

10:01 pm 0 KB/s 21%

Skin Radiance Cream

7.5K 1.1K comments • 316 shares

Like Comment Share

ओ शो वाणी

ललित राजपाल · 9h

* दूध : मांसाहार, अंडा : शुद्ध शाकाहार *

अब यह भी बड़े सोचने की बात है कि किसने तुम्हें कहा कि दूध सात्विक आहार है? कैसे तुमने जान लिया कि दूध सात्विक आहार है? दूध तो मांसाहार और शाकाहार के बीच में पड़ता है। यह आधा मांसाहार है, क्योंकि दूध आता है रक्त और मांस से। यह शाकाहार तो निश्चित ही नहीं है। यह कोई झाड़ों में नहीं लगता दूध। यह हड्डी-मांस-मज्जा की देह से निकलता है। अंडे और दूध में कुछ फर्क नहीं है। और अब तो अंडे ऐसे भी निकलते हैं जो शाकाहारी अंडे हैं, मगर अभी तक कोई शाकाहारी दूध नहीं निकला है। शाकाहारी अंडे खा लेना भी उतना बड़ा पाप नहीं है जितना दूध पीना, क्योंकि दूध तो एनिमल-फ़ूड है, वह तो पशु से आ रहा है। और तुम्हारे लिए बना भी नहीं था।

अब जैसे गाय का दूध तुम पी रहे हो, वह बना था सांड के लिए। सांड के लिए जो चीज बनी थी, उसको पीकर तुम सात्विक हो जाओगे? सांड हो जाओगे! सात्विक कैसे हो जाओगे?

ओशो🙏

CamScanner

Ramana Hridayam
28m ·

Question: The book "Who Am I?" says: 'The mind has a unique power (shakti) whereby thoughts are generated.' What is that shakti and where are its root and origin?

Bhagavan: It is the mind itself. Kill the mind completely and thoughts cannot arise, for without mind there are no questions, no arising of self, world, and Ishwara.

Question: Then Ishwara too, is only in the mind?
Answer: There is no thought of 'another' without the thought of 'me'.

Question: Then, I am the beginning and the end? That there is nothing save what is seen of the mind itself?

- Talks of Bhagavan with Samuel T. Rappold
Answer: Yes I am the beginning and the end. He who sees his Self, sees the Self of all, and does not heed the differences, which is duality.

See translation

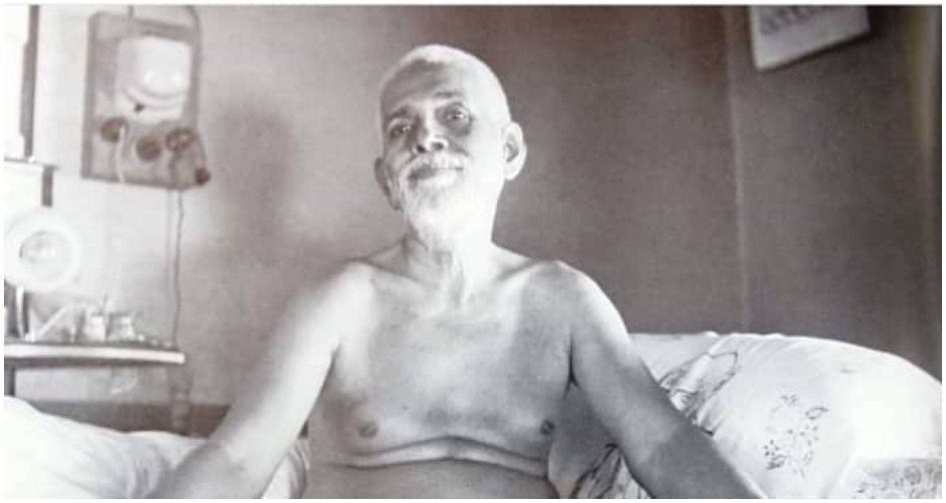

CS CamScanner

10:00 pm 0 KB/s 4G 21%

4

6

Like Comment Share

Osho leela Ashram

9m ·

सदगुरुओं के शब्दों में जो उलझ जाए, वह चूक जाता है। सदगुरुओं की सन्निधि में डूबो। उनके शब्द तभी तुम समझ पाओगे जब उनका मौन समझने लगोगे। सदगुरुओं के साथ एक प्रीति में बंधो, एक संगीत में बंधो। तुम्हारे और तुम्हारे गुरु के हृदय की धड़कन एक हो उठे, लयबद्ध हो जाए, तो शायद जो नहीं कहा जा सकता उसकी थोड़ी सी झलक, थोड़ी सी पुलक तुम तक पहुंच जाए। थोड़ी सी लहर, सागर तो नहीं, मगर थोड़ी सी लहर, हवा का एक झोंका आए--गंध ले आए थोड़ी तुम तक--तुम्हारे नासापुटों तक।

🙏 ओशो 🙏 प्रीतम छवि नैनन बसी 🌹8 🌹

CamScanner

9:07 pm 217 KB/s VoLTE 4G 30%

हमारा चित्त बहुत अजीब है। अक्सर हम शब्दों से खेलना शुरू कर देते हैं, शब्दों को समझना नहीं। और अक्सर शब्दों में जो इशारे होते हैं, उनको भी जानने की हमारी कोई खोज नहीं होती। हम शब्दों को पकड़ लेते हैं और उनसे चिपक जाते हैं। और जो आदमी जितना शब्दों में चिपकने में समर्थ हो जाता है, उतना बड़ा ज्ञानी हो जाता है, उतना समझदार हो जाता है। सच्चाई यह है कि शब्दों को पकड़ने और शब्दों से चिपके रहने वाले लोगों से ज्यादा नासमझ इस जमीन पर कोई और दूसरे नहीं हैं। शब्दों का अर्थ नहीं है, शब्द तो इशारे हैं। और जो इशारों को पकड़ लेगा, मैं आपको अंगुली उठाऊं और दिखाऊं कि वह चांद है, और आप मेरी अंगुली पकड़ लें और कहें कि कहां है इसमें चांद? तो मैं मुश्किल में पड़ जाऊंगा। अंगुली में चांद बिलकुल नहीं है। अंगुली जिस ओर इशारा कर रही है, वहां है चांद और जो अंगुली को पकड़ लेगा, उसे चांद तक देखने की कोई गुंजाइश नहीं रह जाएगी। शब्द इशारे हैं, शब्दों में कुछ भी नहीं है। लेकिन किस तरफ वे इशारे कर रहे हैं, उस तरफ देखने की बात है और अगर उस तरफ न देखा और शब्दों को पकड़ कर हिसाब-किताब लगाया, तो न तो कुछ समझ पैदा हो सकती है और न आंखें उस तरफ उठ सकती हैं, जो शब्दों के बिलकुल बाहर है। जीवन शब्दों के बिलकुल बाहर है।

शब्द इशारे कर सकते हैं, लेकिन शब्द जीवन नहीं हैं। मैंने आपसे यह नहीं कहा है कि कल के बाबत आप सब भांति से सोचना-विचारना, योजना करना बंद कर दें। मैंने आपसे यह कहा है कि जीवन में जो पोस्टपोनमेंट की जो हमारी आदत है, जो स्थगित कर देने की हमारी आदत है, और हम बड़े अदभुत हैं, अगर अभी मैं आपको गाली दूंगा तो आप यह नहीं कहेंगे कि कल मैं इसका उत्तर दूंगा, आप अभी इसी वक्त गाली देंगे। और अगर मैं आपको धक्का दूं और आपको क्रोध आ जाए, तो आप यह नहीं कहेंगे कि ठहरिए, दो दिन बाद जब मुझे फुरसत होगी, तब मैं क्रोध करूंगा। अभी मुझे फुरसत नहीं है, अभी मैं काम से जा रहा हूं। नहीं गाली का उत्तर आप अभी देंगे, उसे स्थगित नहीं करेंगे, पोस्टपोन नहीं करेंगे। लेकिन अगर आपको एक अच्छे काम करने का खयाल आ जाए तो आप कहेंगे कल कर लूंगा, परसों कर लूंगा।

CamScanner

9:07 pm 392 KB/s 30%

एक बहुत बड़े धनपति के घर में एक नये-नये आदमी को नौकर रखा गया। लेकिन दो-चार दिन में ही पाया गया कि नौकर में कुछ खूबियां हैं। और खूबियां ऐसी हैं कि अगर वे चलें तो नौकरी चलनी बहुत कठिन है। मालिक ने उसे कहा: बड़े आश्चर्य की बात है कि तीन अंडे खरीदने तुम्हें बाजार तीन बार जाना पड़ता है! तीन अंडे एक ही बार में खरीद कर लाए जा सकते हैं, एक-एक अंडे को बार-बार जाकर खरीदने की कोई जरूरत नहीं है। इस भांति काम नहीं चल सकेगा, अपना सुधार कर लो और या विदा ले लो। उस नौकर ने कहा: मालिक, मैंने सुधार कर लिया और ऐसी भूल अब दुबारा नहीं होगी। कोई आठ दिन बाद ही वह मालिक बीमार पड़ गया और उसने कहा कि जाओ डाक्टर को बुला लाओ। वह नौकर गया, डाक्टर को अपने साथ लाया और साथ में एक पूरी भीड़ भी ले आया। और उसने आकर अपने मालिक को कहा: मैं डाक्टर को भी लिवा लाया हूं, और बाकी लोगों को भी लिवा लाया हूं। उसके मालिक ने पूछा: ये बाकी लोग और कौन हैं? तो उसने कहा: डाक्टर निश्चित ही निरीक्षण करेगा और दवाई के लिए कहेगा, तो मैं दवा वाले दुकानदार को भी बुला लाया हूं। और हो सकता है डाक्टर की दवा काम न कर सके, तो मैं कब्र खोदने वाले लोगों को भी बुला लाया हूं। मैं सबको लिवा लाया हूं एक ही बार में, और अब बार-बार जाने की कोई भी जरूरत नहीं है।

जहां तक शब्दों को समझने का अर्थ है, उस नौकर ने कोई गलती नहीं की। और जहां तक मैंने दो दफा यह कहा, मैंने कहा कि कल पर जीवन को मत छोड़ना और मैंने यह कहा कि कल मैं उत्तर दूंगा; आपने भी शब्दों को समझने में कोई भूल नहीं की। लेकिन जिस भांति वह नौकर ने शब्दों को समझा, उसी भांति आपने भी समझा।

हमारा चित्त बहुत अजीब है। अक्सर हम शब्दों से खेलना शुरू कर देते हैं, शब्दों को समझना नहीं। और अक्सर शब्दों में जो इशारे होते हैं, उनको भी जानने की हमारी कोई खोज नहीं होती। हम शब्दों को पकड़ लेते हैं और उनसे चिपक जाते हैं। और जो आदमी जितना शब्दों में चिपकने में समर्थ हो जाता है, उतना बड़ा ज्ञानी हो जाता है, उतना समझदार हो जाता है। सच्चाई यह है कि शब्दों को पकड़ने और शब्दों से चिपके रहने वाले लोगों से ज्यादा नासमझ इस जमीन पर कोई और उससे नहीं हैं। शब्दों का अर्थ नहीं है, शब्द तो इशारे हैं। और जो इशारों

CamScanner

9:05 pm 106 KB/s 31%

Like Comment Share

Osho Ravi Yog

1d ·

।।ओशो नमन।।

****

"विचारों का निरीक्षण"

प्रत्येक व्यक्ति 24 घंटे में अपने विचारों को कम से कम चार बार बदलता है,

जिसने अपने आप को इन चारों क्षणों में अपने आप को स्थिर कर लिया और क्या घटित हो रहा है,

इस को साक्षी भाव से देख लिया, उस को दूनिया की कोई भी ताकत प्रज्ञावान होने से नहीं रोक सकती , जिसने ऐसा अनुभव किया है,

वो ही वास्तव में महाज्ञानी हैं!!

.

.

.

#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog

CamScanner

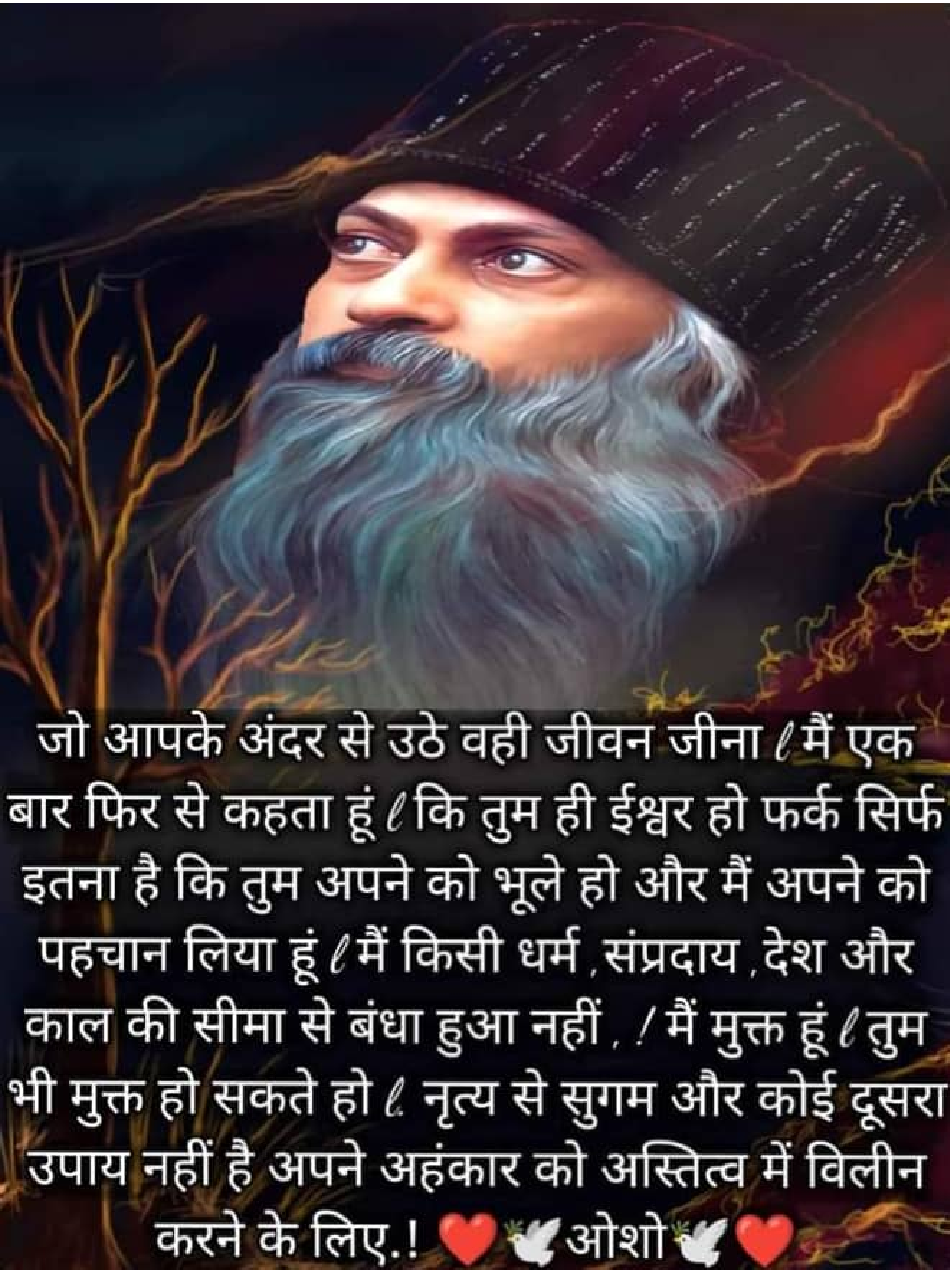
जो आपके अंदर से उठे वही जीवन जीना । मैं एक
बार फिर से कहता हूं । कि तुम ही ईश्वर हो फर्क सिर्फ
इतना है कि तुम अपने को भूले हो और मैं अपने को
पहचान लिया हूं । मैं किसी धर्म , संप्रदाय , देश और
काल की सीमा से बंधा हुआ नहीं , । मैं मुक्त हूं । तुम
भी मुक्त हो सकते हो । नृत्य से सुगम और कोई दूसरा
उपाय नहीं है अपने अहंकार को अस्तित्व में विलीन
करने के लिए.! ❤️🕊️ओशो🕊️❤️

CamScanner

9:02 pm 84 KB/s VoLTE 4G 31%
facebook

देखता है जिन्हें कोई संत देखता है, जिन्हें कोई बुद्ध पुरुष देखता है। ठीक उसी तरह ही देखता है। बच्चा करीब-करीब संत ही होता है। लेकिन वह केवल एक समय तक ही ऐसा रहता है। यदि बच्चा छह महीने तक, नौ महीने तक, एक साल तक नहीं बोलता—तो उस समय तक बच्चा आभा-मंडल देखेगा, अनुभव करेगा गहराई से। जब बच्चा बोलना शुरू कर देता है, तो वह बच्चा फिर बच्चा नहीं रहता। फिर बच्चा संसार का हिस्सा हो जाता है; भाषा के, बुद्धि के, मन के संसार का हिस्सा हो जाता है। तब धीरे-धीरे वे गुण तिरोहित होने लगते हैं।

भारत में हमारे पास एक मान्यता है, और बड़ी सच्ची बात छिपी है उसमें। भारत में ऐसा कहा जाता है कि छह महीने तक बच्चे को पिछले जन्म की स्मृति रहती है। यह बात सच है, क्योंकि छह महीने तक बच्चा बहुत शांत और मौन रहता है और उसका बोध बहुत गहरा होता है। फिर रोज-रोज संसार और— और ज्यादा जुड़ता जाता है उसके साथ—हम सिखाते हैं उसे, संस्कारित करते हैं उसे—तो बच्चा समाज का हिस्सा ज्यादा हो जाता है और अस्तित्व से उसका संबंध टूटता जाता है। बच्चा संसार में खो जाता है। यही है आदम का गिरना, ज्ञान का फल चख लिया जाता है। ज्ञान के वृक्ष का फल तब चखा जाता है जब बच्चा बोलना शुरू करता है।

फिर दोबारा अगर तुम उस निर्दोषता को पाना चाहते हो, उसे फिर आविष्कृत करना चाहते हो, तो तुम्हें मौन सीखना होगा—इसीलिए तो मौन के लिए, ध्यान के लिए इतना ज्यादा जोर है। तुम्हें फिर भाषा को भूलना होगा। भीतर की सब बातचीत, भीतर का सारा शोरगुल बंद करना होगा। तुम्हें फिर निर्दोष, भाषाविहीन होना होगा—भीतर कोई शब्द न रहें, शुद्ध अंतस सत्ता मात्र रह जाए, फिर से तुम बच्चे हो जाओ। स्मरण रखना, जीसस बार-बार कहते हैं, 'जो बच्चों की भांति हैं केवल वही प्रवेश करेंगे मेरे प्रभु के राज्य में।'
ओशो
पतंजलि: योगसूत्र - 3(56)

CamScanner

9:03 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%

यह फल कोई प्रार्थना नहीं है। यह फल कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है।

ध्यान या प्रार्थना का अर्थ मेरे लिए मौन है, सायलेंस है।

तो घड़ी, आधा घड़ी को चौबीस घंटे में बिलकुल मौन होकर रह जाएं और चुपचाप जीवन के साथ एकता का अनुभव करें, वही प्रभु-स्मरण है। यह नाम-जप वगैरह प्रभु-स्मरण नहीं है। फिर प्रभु का कोई नाम है जो आप उसका नाम जप करेंगे?

नाम तो आदमियों के भी झूठे हैं। आप पैदा हुए, तब आपको नाम दिया गया। आए आप बिना नाम के–अनाम। फिर मां-बाप काम चलाने के लिए नाम दे देते हैं कि इनका नाम राम है, इनका नाम विष्णु है, इनका नाम कृष्ण है। ये नाम सब कामचलाऊ हैं, झूठे हैं, ऊपर से चिपकाए गए हैं।

कोई आदमी का कोई नाम नहीं है। यह सामने वृक्ष खड़ा है, इसका कोई नाम है? वृक्ष का कोई नाम नहीं है। सब नाम आदमियों के दिए हुए हैं।

अगर पृथ्वी पर आदमी समाप्त हो जाए, तो किसी चीज का कोई नाम रह जाएगा? किसी चीज का कोई नाम नहीं रह जाएगा। फिर भी दरख्त होंगे, आम होगा; फिर भी होगा। चांदत्तारे होंगे, लेकिन नाम नहीं होगा। नाम अभी भी नहीं है उनका।

नाम कहीं है ही नहीं जगत में, सिर्फ आदमी की ईजाद है। और हम इतने होशियार हैं कि हमने चीजों के भी नाम रख लिए हैं, और परमात्मा का भी नाम रख लिया है। नाम जैसी चीज बिलकुल मिथ, बिलकुल कल्पना है। तो परमात्मा का कोई नाम नहीं है। सिवाय मौन के, शून्य भाव के उससे कहीं मिलन नहीं हो सकता। इसलिए शून्य भाव को, मौन भाव को ही मैं ध्यान कहता हूं।

.
.
.

#ओशो #osho #oshoravi #oshoraviyog

CamScanner

9:02 am 0 KB/s VoLTE 4G 92%

भारत में कोई विज्ञान पैदा नहीं हो सका–यह राम-राम के जप जैसी प्रक्रियाओं की वजह से। भारत की सारी प्रतिभा नष्ट हो गई, क्योंकि पुनरुक्ति से प्रतिभा नष्ट होती है। दोहराएं और प्रतिभा नष्ट होगी। प्रतिभा चाहती है नया, प्रतिभा चाहती है नवीन। और पुराने, पुराने, पुराने को दोहराने से घबड़ाहट पैदा होती है और नींद पैदा होती है।

कोई जप कहीं नहीं ले जा सकता। मौन ले जाता है; और जप मौन नहीं है। शून्य भाव, मौन भाव, सायलेंस, चुप हो जाना प्रभु तक ले जाता है। यह जप वगैरह सब बकवास है। एक ही शब्द को बार-बार दोहराएं या अनेक शब्दों को अलग-अलग दोहराएं, कोई भी स्थिति में मौन नहीं होता, हर हालत में मौन टूट जाता है। मौन पहुंचाएगा। मौन है प्रार्थना, मौन है द्वार, मौन है मार्ग–जप नहीं।

और अब तो सारी दुनिया इस तथ्य को अनुभव कर रही है। नया मनोविज्ञान नई-नई खोजें कर रहा है, और उन खोजों में, सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक यह है कि पुनरुक्ति मनुष्य की चेतना को क्षीण करती है, डल करती है, शिथिल करती है, विकसित नहीं करती। इसीलिए धार्मिक लोग जगत में कोई प्रतिभा का लक्षण नहीं प्रकट कर पाते। होना तो यह चाहिए कि धार्मिक मनुष्य के भीतर ऐसी प्रतिभा का जन्म हो कि सारा जगत आलोकित हो, लेकिन यह नहीं हो पाता। यह नहीं हो पाने का कारण है।

किसी नाम का मैं विरोध नहीं कर रहा हूं। मुझे राम से कोई विरोध नहीं है। आप यह मत समझ लेना कि मैं राम-राम जपने को नहीं कह रहा हूं, तो मैं राम का विरोधी हूं। नहीं, कोई भी शब्द–राम हो, अल्लाह हो, ओंकार हो, ओम हो, कुछ भी हो। और शब्द कोई भी काम कर सकता है। अगर बैठ कर आप कुर्सी, कुर्सी, कुर्सी, कुर्सी कहें, तो भी वही फल होगा, जो राम-राम कहने से होता है। उसका जो फल है चेतना पर, वह शब्द की पुनरुक्ति का परिणाम है। इसलिए कोई भी शब्द की पुनरुक्ति कर लें। अल्लाह-अल्लाह कर लें, राम-राम करें, कुछ भी करें, कुछ भी! और उससे वही फल हो जाएगा। यह फल कोई चेतना का ध्यान नहीं है। यह फल कोई प्रार्थना नहीं है। यह फल कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है।

CamScanner

जिस दिन तुमने समझा की मैं देह नहीं हूं
उस दिन तुम मिट्टी से मुक्त हो जाते हो।
ओशो अहोभाव

CamScanner

CamScanner

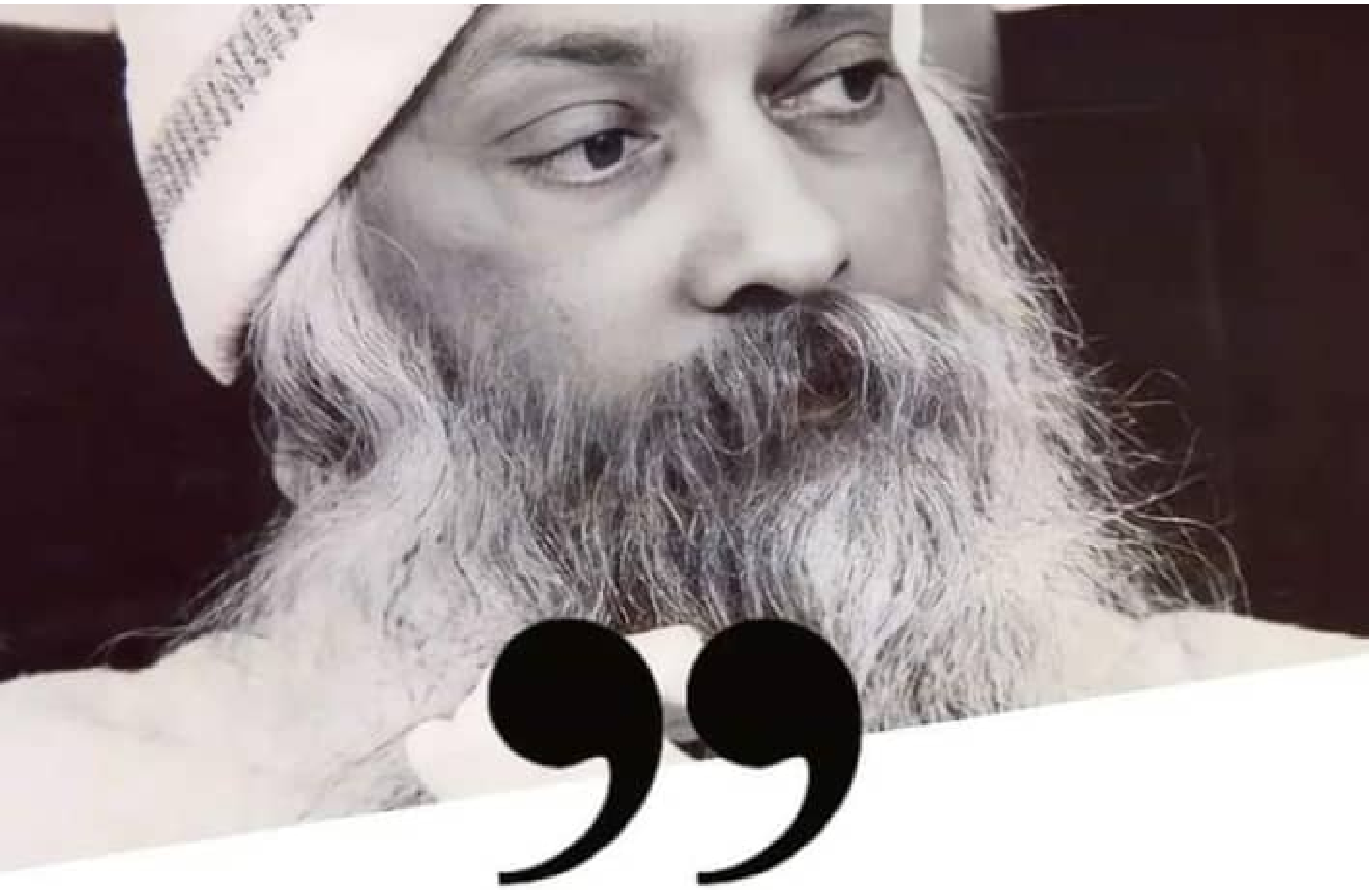

संबंध बड़ी-बड़ी बातें करने से नहीं छोटे छोटे भावों को समझने से गहरे होते हैं..!!

_Osho

INSTA/@PHILOSOPHY_GYAN

CS CamScanner

तुम डरे हो।
और जहां भय है वहां भगवान से
कोई संबंध न हो सकेगा।
तुम जितने पूजा-पाठ कर रहे हो,
वे भय के कारण हैं, भगवान के प्रेम में नहीं।
तुम तीर्थ जा रहे हो, स्नान कर रहे हो,
धूप-दीप जला रहे हो, वे सब भय
के कारण हैं, भगवान के प्रेम में नहीं।
तुम्हारा धर्म तुम्हारे भय की औषधि है,
तुम्हारे आनंद का उत्सव नहीं।
तुम करते हो सब सुरक्षा के लिए,
तुम इंतजाम सब जुटाते हो;
जैसे तुम धन जुटाते हो,
मकान बनाते हो, बैंक बैलेंस बनाते हो,
बीमा करवाते हो,
ऐसा ही भगवान भी तुम्हारा बीमा है।
तुम्हारे तीर्थ, तुम्हारे स्नान,
तुम्हारे पूजा-पाठ, सब तुम्हारी सुरक्षाएं हैं
भय की।
ओशो

CS CamScanner

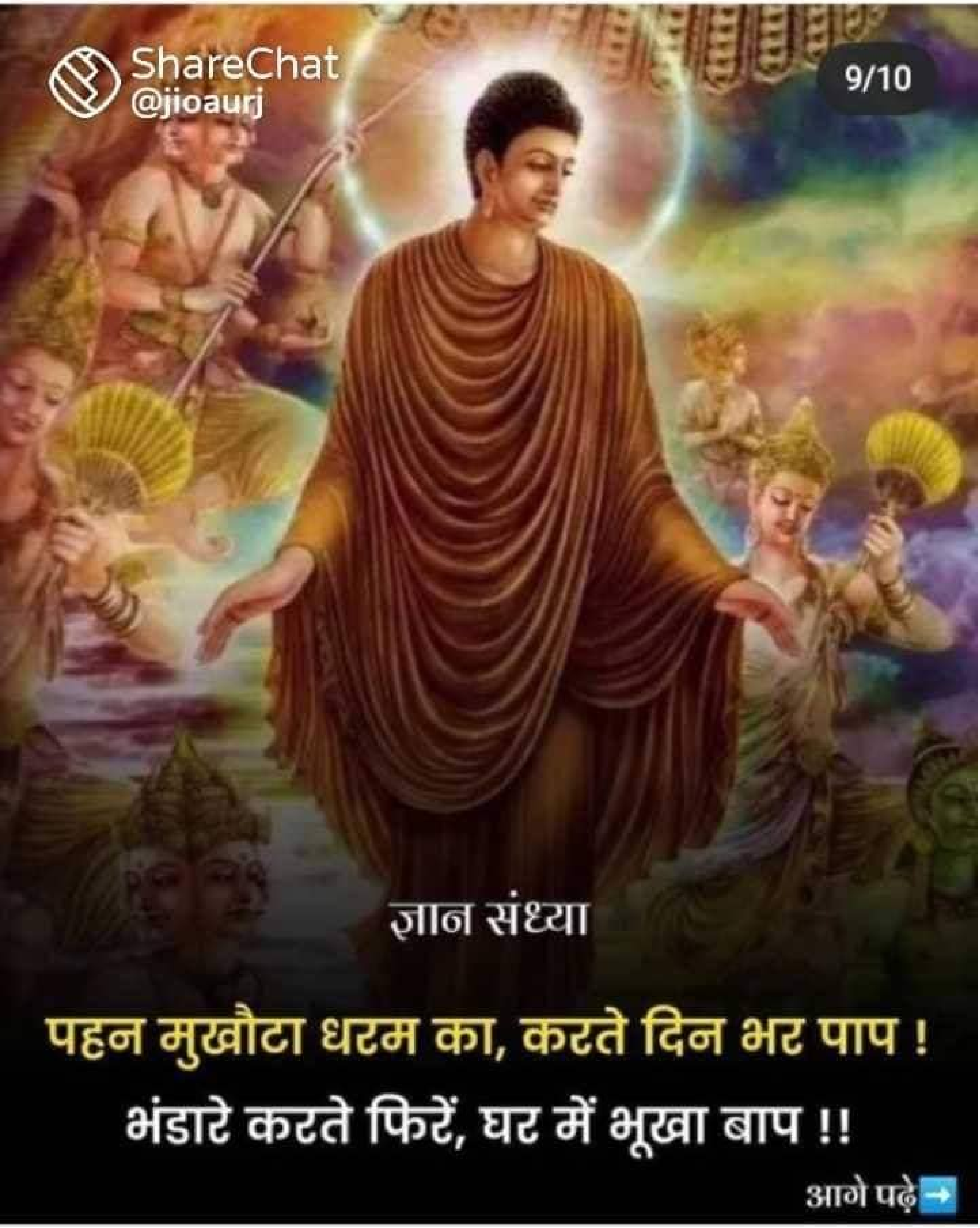
ShareChat
@jioaurj
9/10
ज्ञान संध्या
पहन मुखौटा धरम का, करते दिन भर पाप !
भंडारे करते फिरें, घर में भूखा बाप !!
आगे पढ़े

CamScanner

CamScanner

3:52 pm 0 KB/s VoLTE 4G 54%
facebook

भरना चाहता हू पर यह मेर प्याले मे समाता ही नही।"
बच्चे की बात सुनकर सुकरात विस्माद में चले गये और स्वयं रोने लगे।
अब पूछने की बारी बच्चे की थी।
बच्चा कहने लगा- आप भी मेरी तरह रोने लगे पर आपका प्याला कहाँ है?'

सुकरात ने जवाब दिया- बालक, तुम छोटे से प्याले में समुन्द्र भरना चाहते हो,और मैं अपनी छोटी सी बुद्धि में सारे संसार की जानकारी भरना चाहता हूँ।

आज तुमने सिखा दिया कि समुन्द्र प्याले में नहीं समा सकता है , मैं व्यर्थ ही बेचैन रहा।"

यह सुनके बच्चे ने प्याले को दूर समुन्द्र में फेंक दिया और बोला- "सागर अगर तू मेरे प्याले में नहीं समा सकता तो मेरा प्याला तो तुम्हारे में समा सकता है।"इतना सुनना था कि सुकरात बच्चे के पैरों में गिर पड़े और बोले-
"बहुत कीमती सूत्र हाथ में लगा है|

हे परमात्मा ! आप तो सारा का सारा मुझ में नहीं समा सकते हैं पर मैं तो सारा का सारा आपमें लीन हो सकता हूँ।"

ईश्वर की खोज में भटकते सुकरात को ज्ञान देना था तो भगवान उस बालक में समा गए।
सुकरात का सारा अभिमान ध्वस्त कराया। जिस सुकरात से मिलने के सम्राट समय लेते थे वह सुकरात एक बच्चे के चरणों में लोट गए थे।

ईश्वर जब आपको अपनी शरण में लेते हैं तब आपके अंदर का "मैं " सबसे पहले मिटता है।

या यूँ कहें....जब आपके अंदर का "मैं" मिटता है तभी ईश्वर की कृपा होती है। ।।🙏।

CS CamScanner

कड़वी जूतिया ©

हर बार बोलते हैं आख़री बार और हर बार नई शुरुआत करते हैं,शराबी और जुआरी किसी के नहीं होते.
ठीक ऐसे ही सब के जीवन में जहर घोल के पूजा पाठ के कोई मायने नहीं होते.

sarfxsolutions

किसी का लेहाज न करें.

CS CamScanner

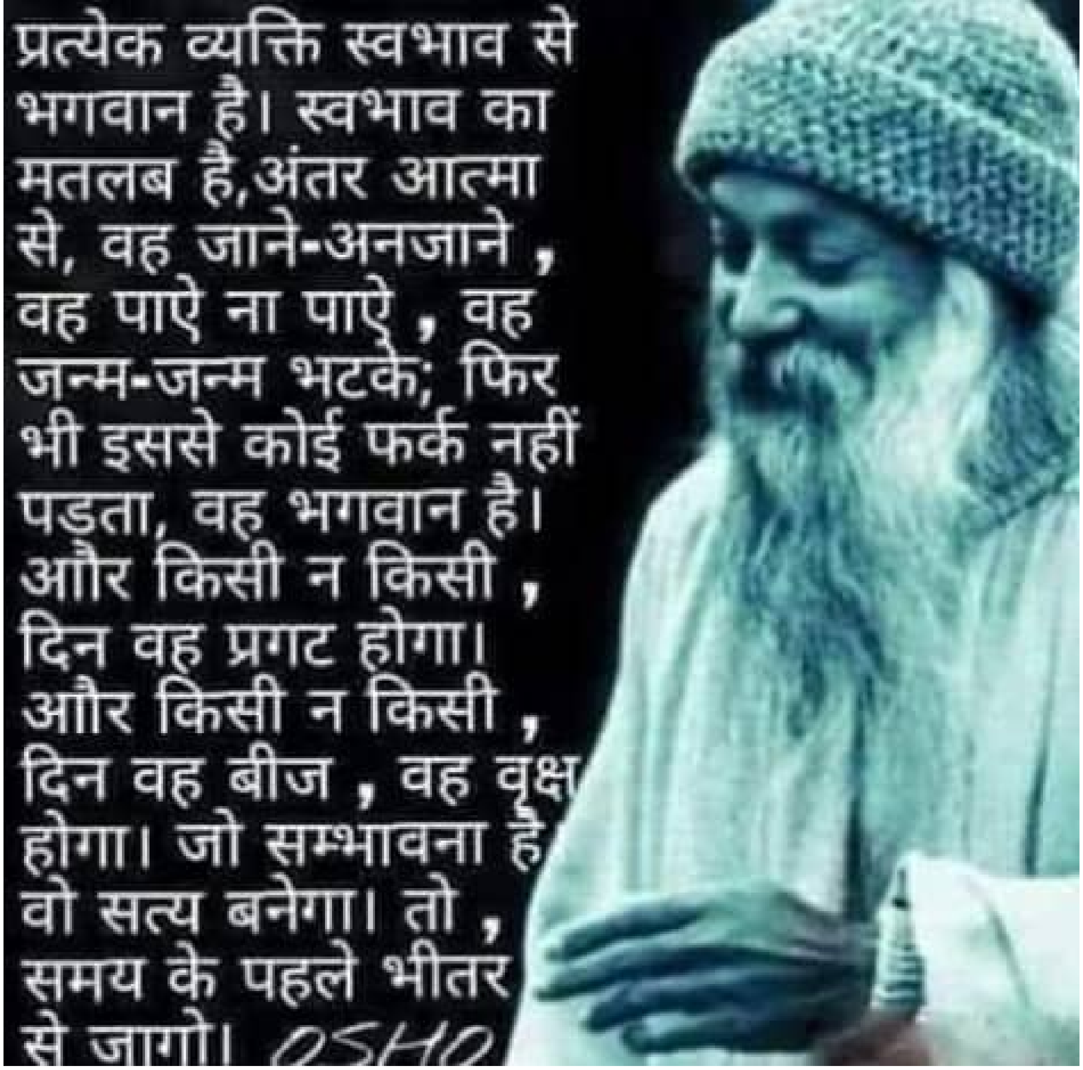
प्रत्येक व्यक्ति स्वभाव से
भगवान है। स्वभाव का
मतलब है,अंतर आत्मा
से, वह जाने-अनजाने ,
वह पाऐ ना पाऐ , वह
जन्म-जन्म भटके; फिर
भी इससे कोई फर्क नहीं
पडता, वह भगवान है।
और किसी न किसी ,
दिन वह प्रगट होगा।
और किसी न किसी ,
दिन वह बीज , वह वृक्ष
होगा। जो सम्भावना है
वो सत्य बनेगा। तो ,
समय के पहले भीतर
से जागो। OSHO

CamScanner

ओशो - जीवन-मृत्यु
Jigisha Soni · 3h

कहते है बुल्लेशाह को जो देखता था दीवाना हो जाता था। जग जीवन राम भी दिवाने हो गये। मां बाप अपने बच्चों को बुल्लेशाह के पास नहीं जाने देते थे। जिस गांव में बुल्लेशाह जाते, लोग अपने बच्चो को छुप लेते थे। खबरें थी की वह दीवाना ही नहीं है, उसकी दीवानगी संक्रामक है। उसके पीछे बावरी पथ चला, पागलों का पंथ।

पागल से कम में परमात्मा मिलता भी नहीं। उतनी हिम्मत तो चाहिए ही। तोड़कर सारा तर्क जाल, छोड़ कर सारी बुद्धि ,छोड़ दे सारी बुद्धि-बद्धिमत्ता डूबा, कर सब चतुराई चालाकी जो चलते है, वह ही पहुंचते है। उन्हीं को पागल कहते है लोग, दीवाना कहते है।

ओशो

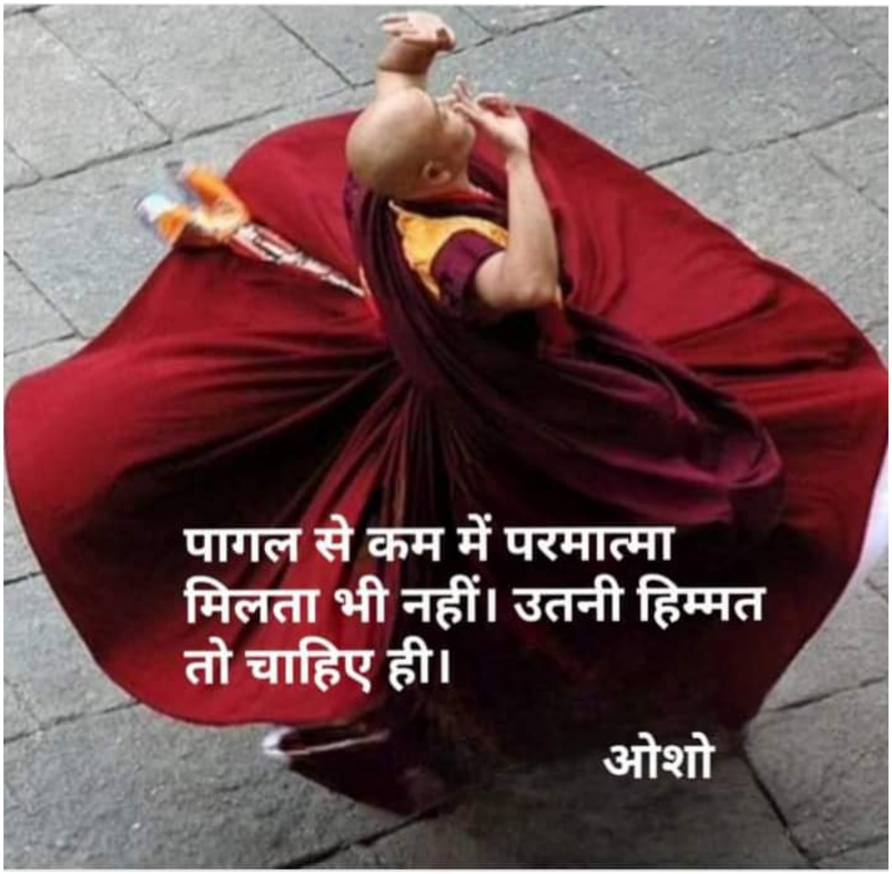

CamScanner

CamScanner

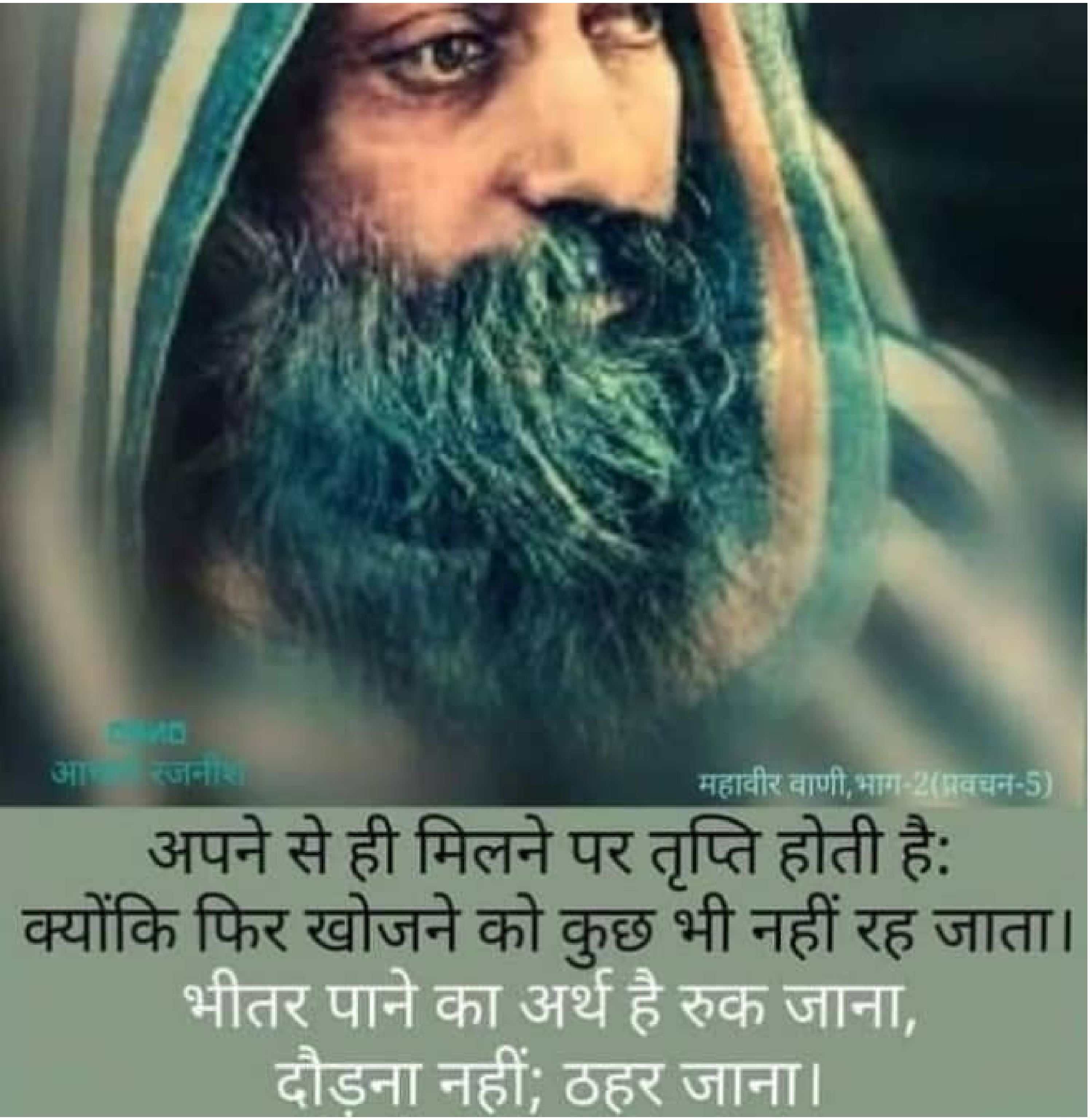
महावीर वाणी, भाग-2(प्रवचन-5)
अपने से ही मिलने पर तृप्ति होती है:
क्योंकि फिर खोजने को कुछ भी नहीं रह जाता।
भीतर पाने का अर्थ है रुक जाना,
दौड़ना नहीं; ठहर जाना।

CamScanner

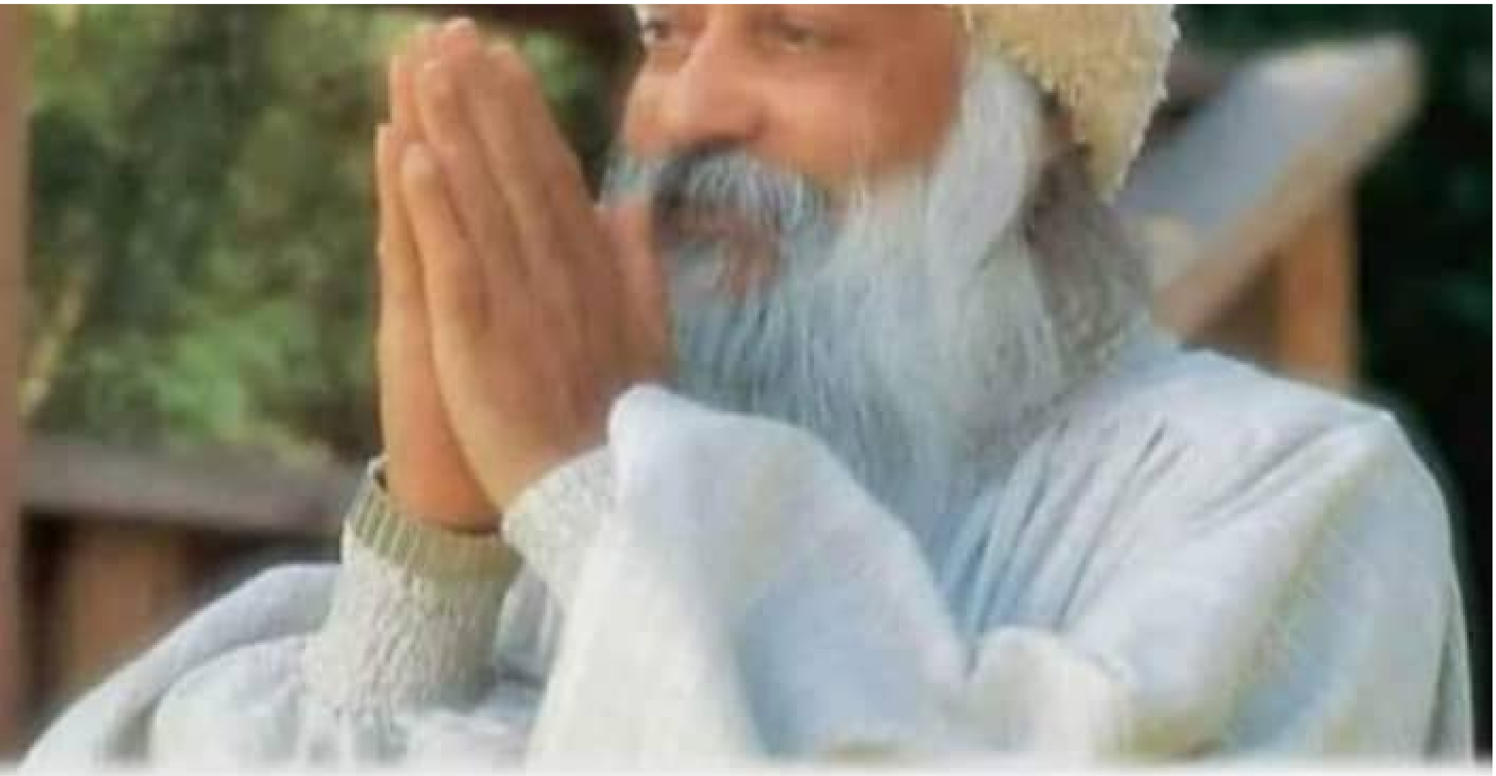

जागो !

इस शोरगुल में बहुत उलझ मत जाना!एक और सन्नाटा है भीतर जिससे पहचान करनी है

CamScanner

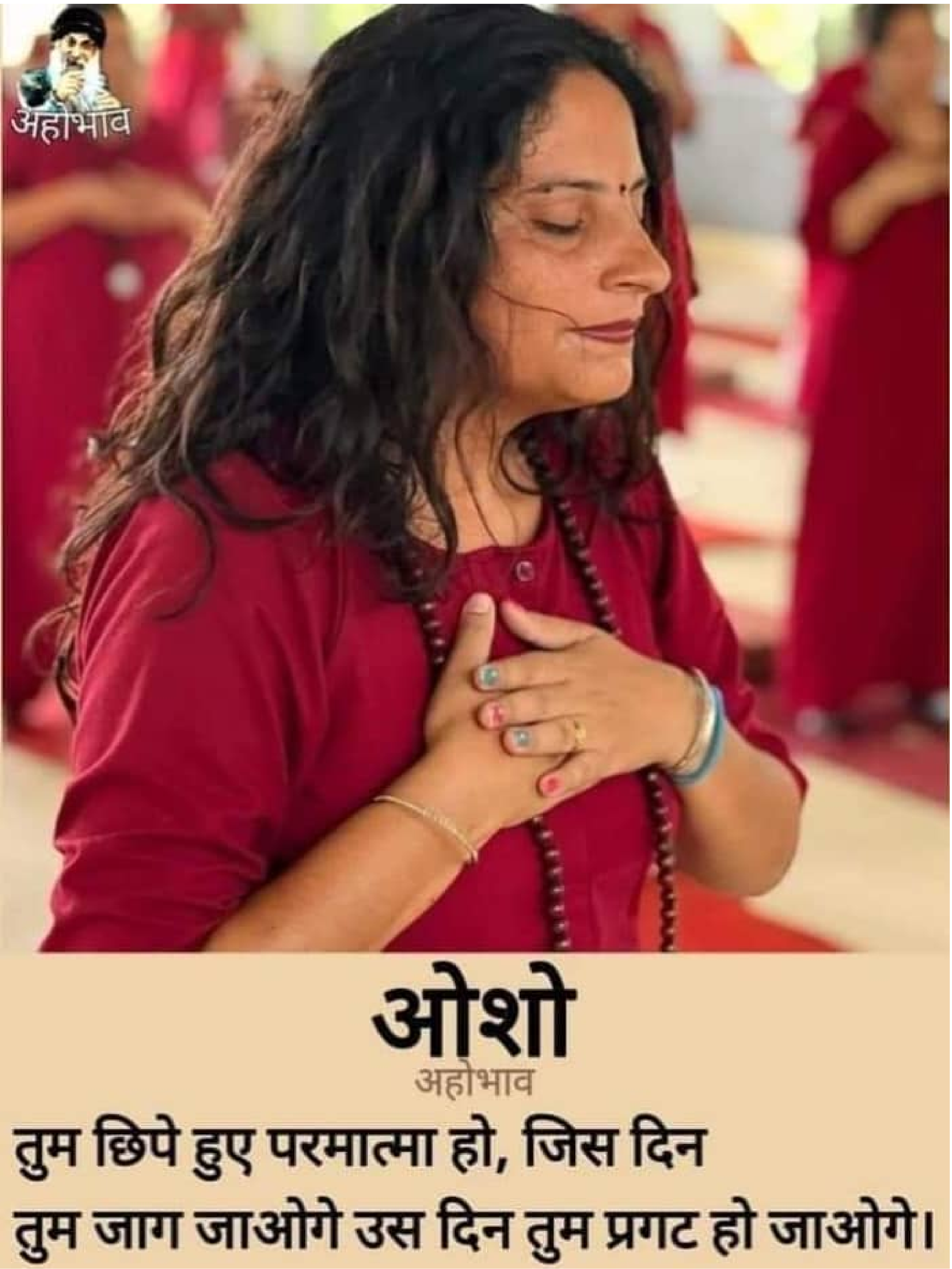

CamScanner

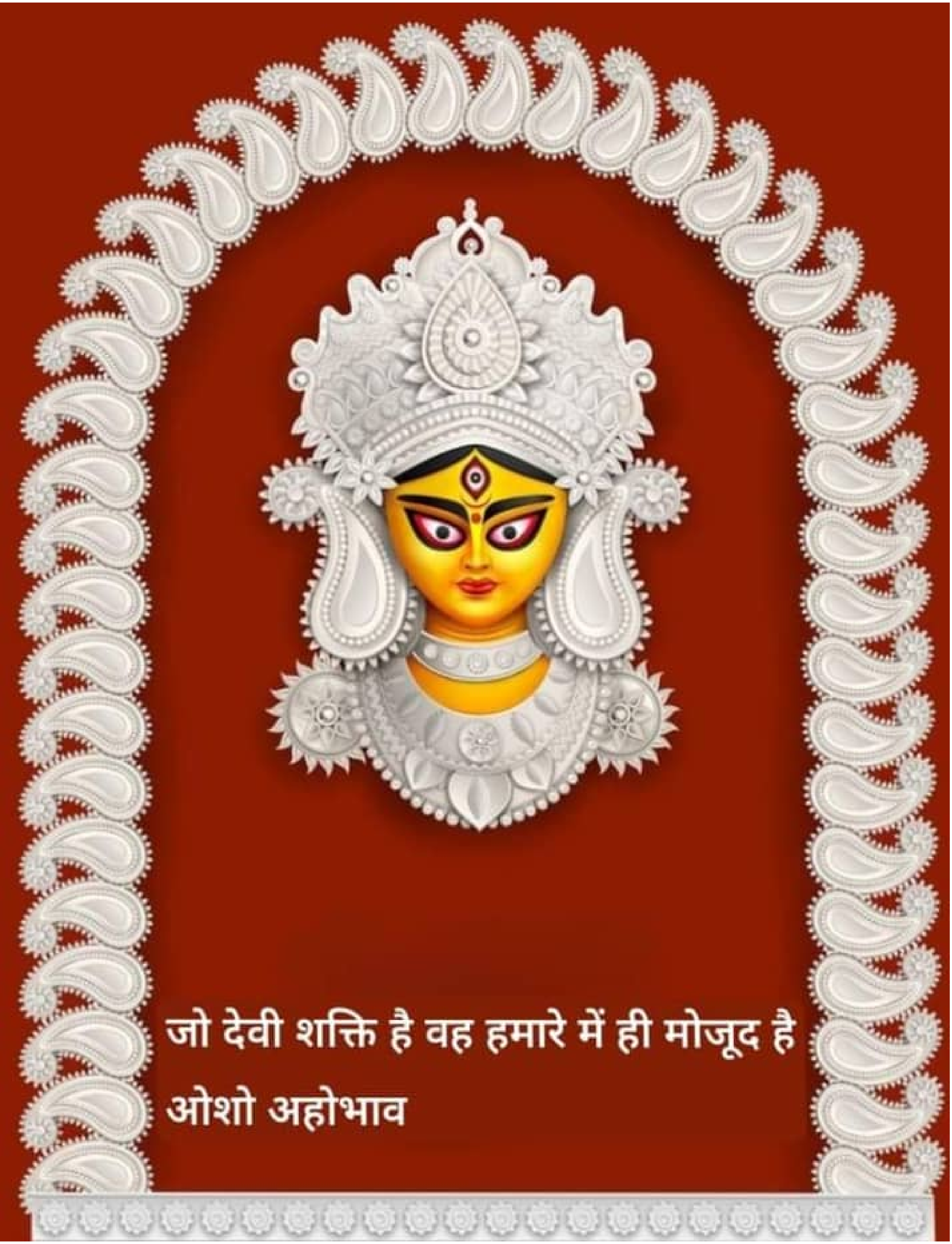

CamScanner

अहोभाव

1h ·

अहोभाव

नवरात्री पर्व अपनी उर्जा को ही प्रेम और रूपान्तर करने की नो दिन रात्रि की साधना का पर्व है यदि कोई यह समझता की किसी धर्म जाती से यह पर्व जुड़ा है तो वह मुर्ख है, जिस देवी की आराधना होती है वह कोई दूसरी देवी नहीं अपनी ही उर्जा सवारने की साधना पर्व है यह पर्व की रात्रि व्यवस्था का कारण इस दिनों में रात्रि मोसम साधना के लिए अति उत्तम और अनुकूल है ना गर्मी ना सर्दी ना बरसात है इसलिए इस समय की रात्रि को देवी रात्रि कहा है यदि कोई समझता की किसी लोक में कोई देविया बेठी है और प्रसन्न हो जाएगी तो वह भी मुर्ख है जो देवी शक्ति है वह हमारे में ही मोजूद है यदि हमारे में देवी नहीं है तो बहार भी कोई देवी नहीं है यह बाहर की देवी अतीत का संकेत उस चोथे शरीर की मनुष्य की व्यवस्था है आज भी जो शरीर में जी रहा है, उसे यह कहा जाये की तुम्हारे में ही देवी शक्ति है लेकिन वह कहने वाले को ही मुर्ख समझेगा क्योकि उसका भी दोष नही है, उसे आज सिर्फ शरीर दिख रहा है और वह अपने को शरीर ही समझ रहा, बाहरी देवी एक शरुआती समझने की प्राथमिकता है सत्य नहीं है

ओशो...

CamScanner

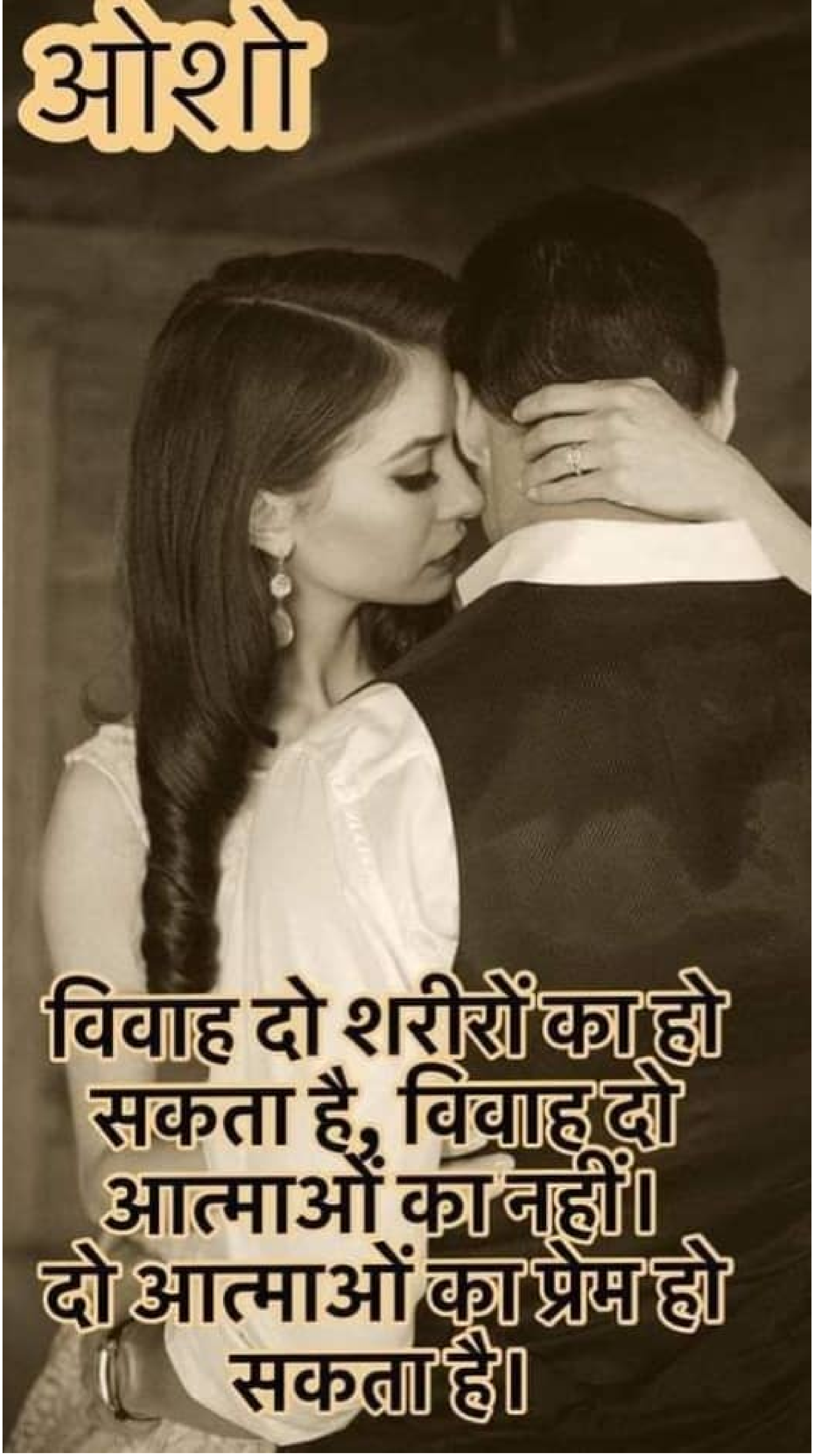

CamScanner

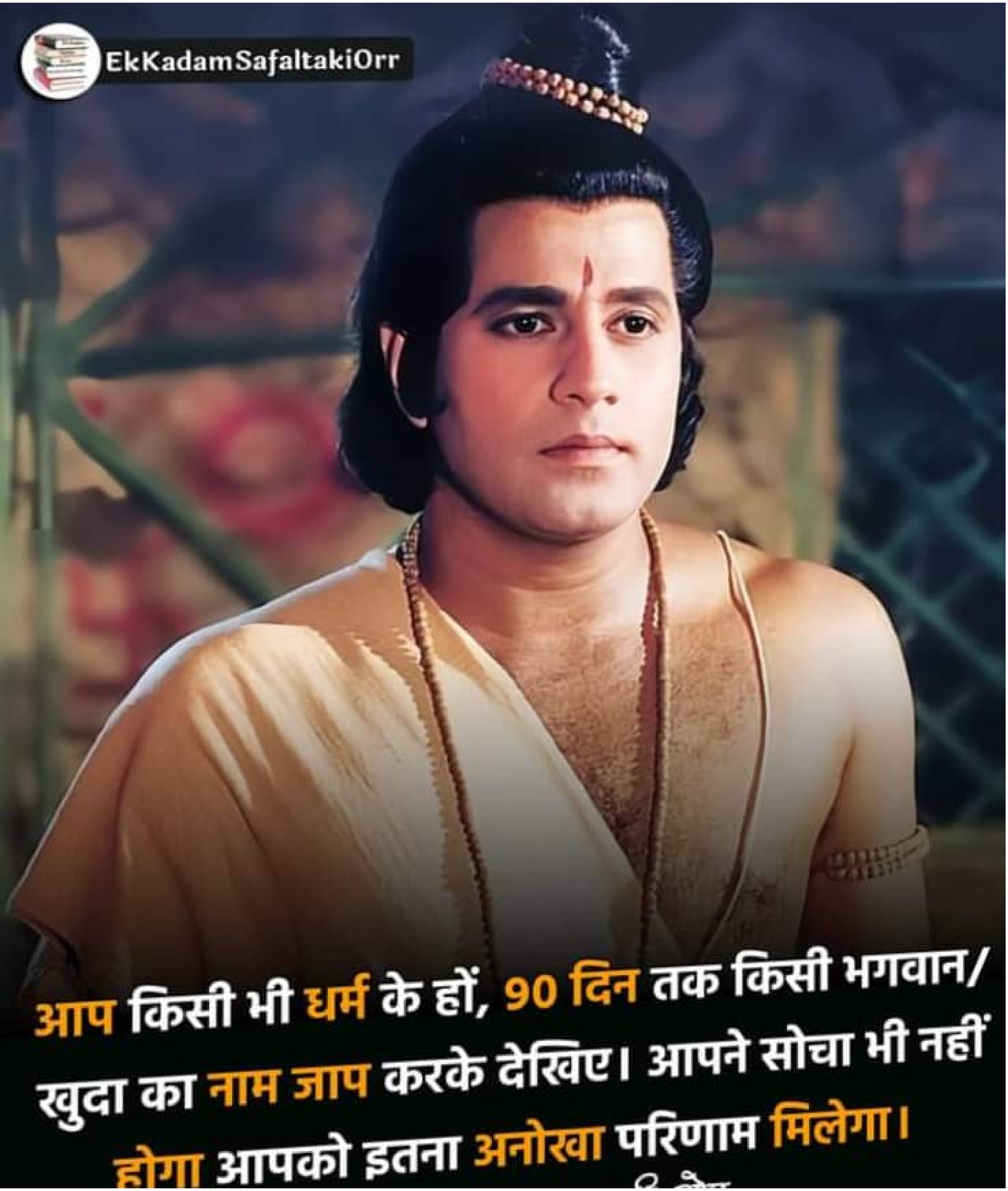
EkKadamSafaltakiOrr
आप किसी भी धर्म के हों, 90 दिन तक किसी भगवान/
खुदा का नाम जाप करके देखिए। आपने सोचा भी नहीं
होगा आपको इतना अनोखा परिणाम मिलेगा।

CamScanner

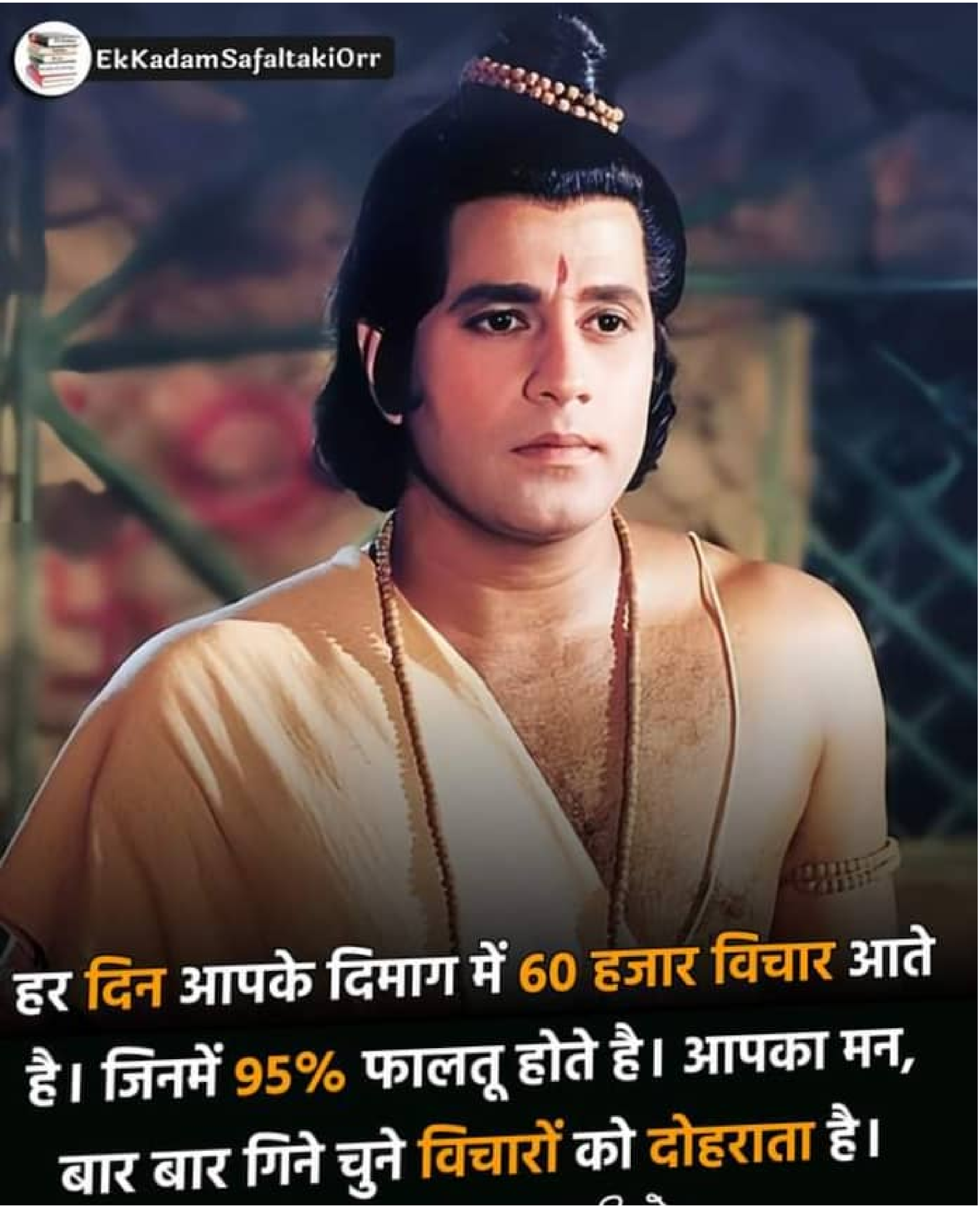
EkKadamSafaltakiOrr
हर दिन आपके दिमाग में 60 हजार विचार आते
है। जिनमें 95% फालतू होते है। आपका मन,
बार बार गिने चुने विचारों को दोहराता है।

CamScanner

CS CamScanner

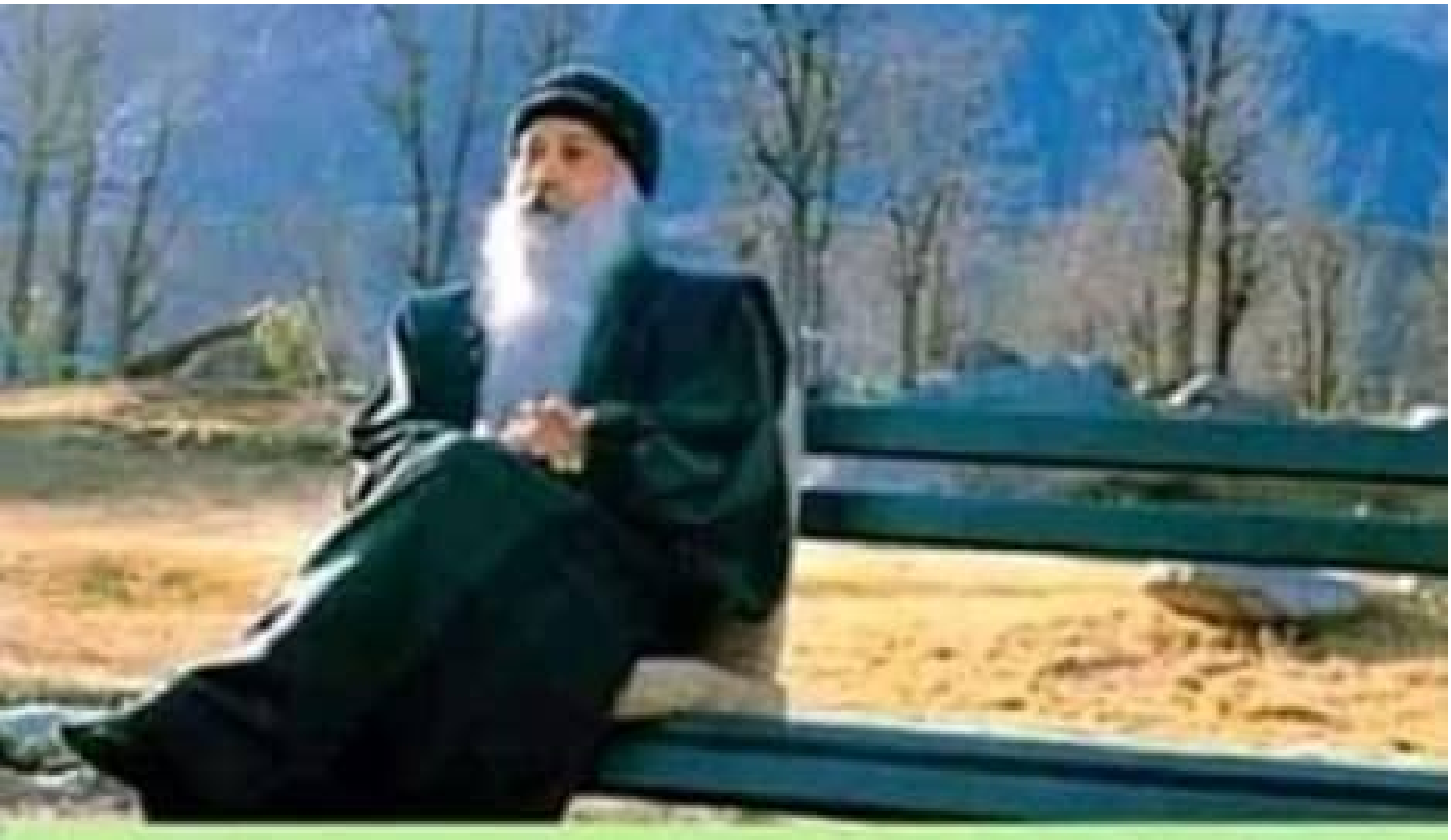

उम्र बढ़ने के साथ साथ,आनंद बढ़ना चाहिए,लेकिन हम हर रोज और ज्यादा दुखी और उदासीन होते जाते हैं। इसका मतलब हमारी जीवन ऊर्जा कुछ भूल भरे मार्गों पर प्रवाहित हो रही है। इसकी निरंतर खोज बिन,इसका परीक्षण,इसकी कसौटी मन में साफ़ करते जाओ। और जिस दिन यह परीक्षण यह खोज साफ़ हो जाती है की मेरी ऊर्जा गलत दिशाओं में बह रही है, तो उस दिन ठीक बहने के लिए सिवाय तुम्हारे और कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता। इस बोध के होते ही तुम्हारे नये जीवन की यात्रा प्रारम्भ होती है।

CamScanner

3:30 pm 0 KB/s 56%

।।ओशो नमन।।

✨मरने लगे कबीर तो काशी छोड़कर चले गए।✨

काशी लोग मरने आते हैं। मरे मराए लोग काशी मरने आते हैं।

खयाल है कि काशी में जो मरता है, वह स्वर्ग में जन्म लेता है।
काशी के पास एक छोटा सा गांव है, मगहर। कि जो मगहर में मरता है, वह गधा होता है नर्क में।

कबीर मरते वक्त मगहर चले गए। बहुत समझाया मित्रों ने, प्रियजनों ने, शिष्यों ने कि क्या करते हैं,

मगहर में कोई मरता ही नहीं! मगहर में आदमी मर भी जाए,
तो उसके रिश्तेदार उसे लेकर भागते हैं कि अभी थोड़ी सांस चल रही है, मगहर के बाहर निकाल लो, नहीं तो नर्क में गधा होता है।

तो काशी लोग मरने आते हैं दूर—दूर से और तुम काशी जिंदगीभर रहे और मरने के वक्त मगहर जा रहे हो, दिमाग खराब तो नहीं हो गया!

कबीर ने कहा कि काशी में रहकर अगर मैं मरा और स्वर्ग में गया, तो कर्ता का भाव पकड़ जाएगा—अपनी वजह से। मगहर में मरूं, तो जहां उसकी मर्जी हो। नर्क का गधा बना दे,
तो भी उसकी मर्जी रही।

हम तो मगहर में ही मरेंगे। और अगर स्वर्ग गए तो फिर कह सकेंगे, तेरी अनुकंपा, तेरी कृपा। मरे तो मगहर में थे, होना तो गधा था। लेकिन काशी में मरकर अहंकार पकड़ेगा कि काशी में मरे, रहे काशी में, गए काशी—इसलिए। हमारे हर कर्म के पीछे कर्ता खड़ा हो जाता है, मैं कर रहा हूं।

ओशो; निर्वाण उपनिषद

.
.
.

CS CamScanner

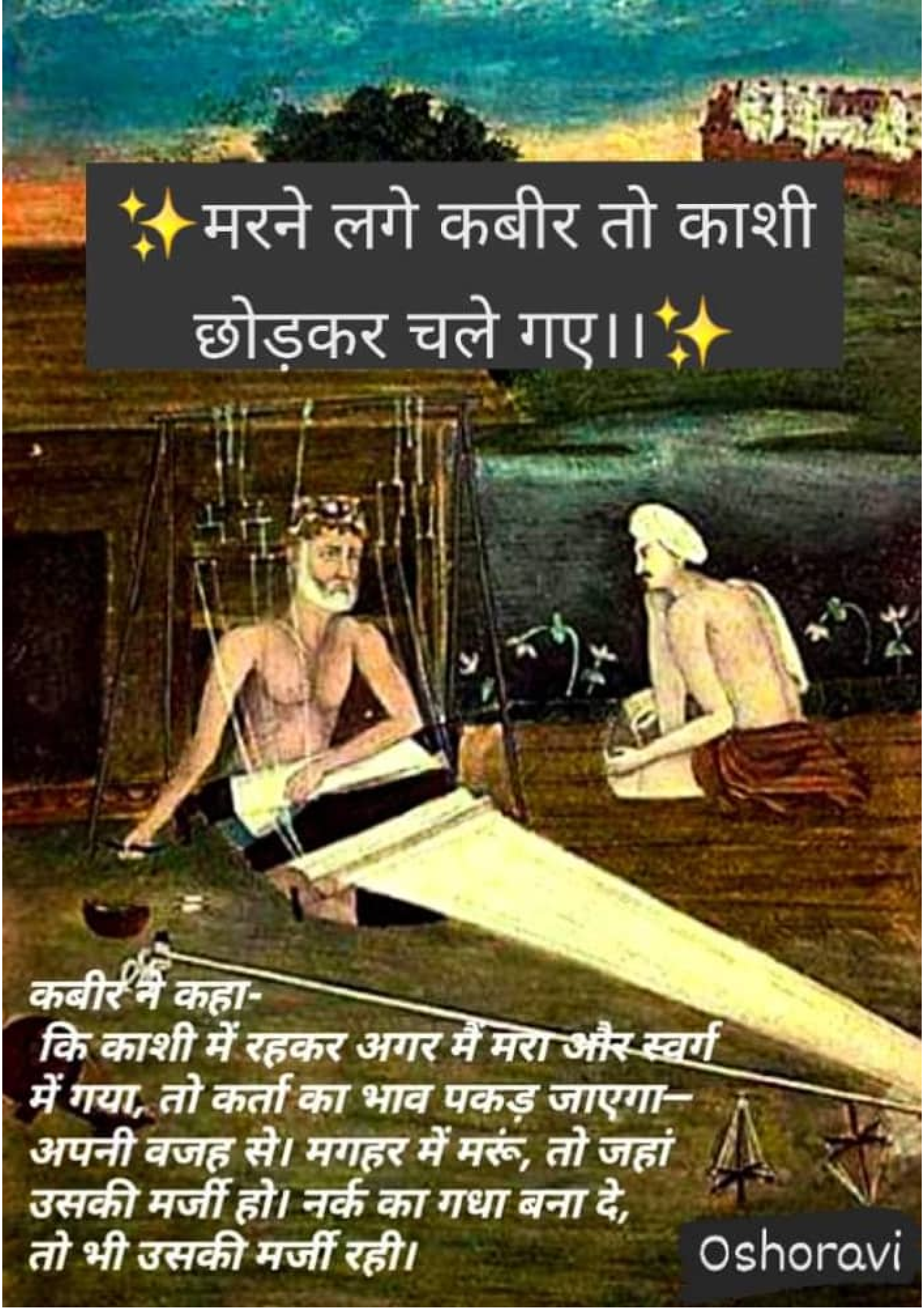
✨मरने लगे कबीर तो काशी छोड़कर चले गए।।✨
कबीर ने कहा-
कि काशी में रहकर अगर मैं मरा और स्वर्ग में गया, तो कर्ता का भाव पकड़ जाएगा– अपनी वजह से। मगहर में मरूं, तो जहां उसकी मर्जी हो। नर्क का गधा बना दे, तो भी उसकी मर्जी रही।
Oshoravi

CamScanner

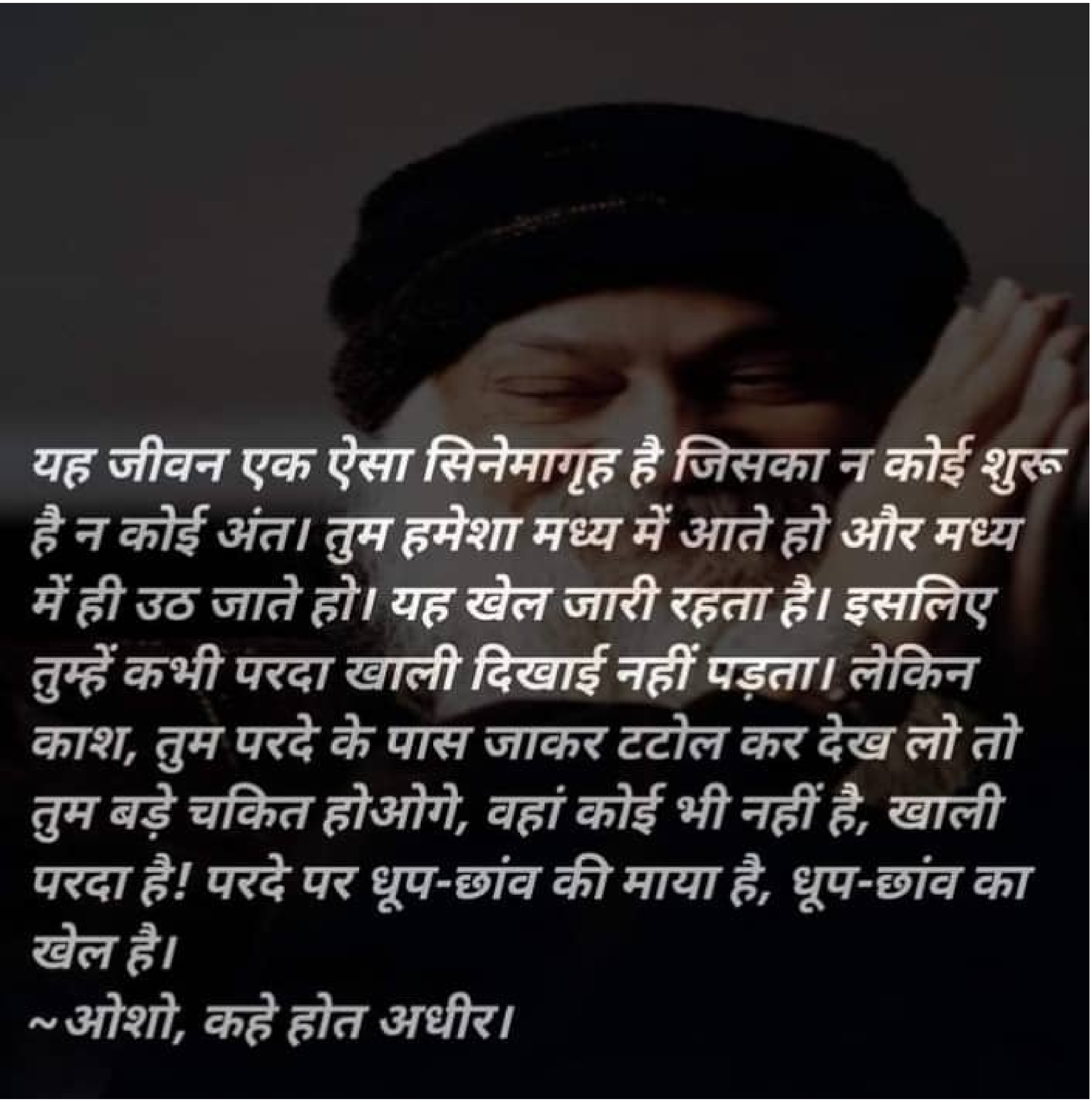
यह जीवन एक ऐसा सिनेमागृह है जिसका न कोई शुरू
है न कोई अंत। तुम हमेशा मध्य में आते हो और मध्य
में ही उठ जाते हो। यह खेल जारी रहता है। इसलिए
तुम्हें कभी परदा खाली दिखाई नहीं पड़ता। लेकिन
काश, तुम परदे के पास जाकर टटोल कर देख लो तो
तुम बड़े चकित होओगे, वहां कोई भी नहीं है, खाली
परदा है! परदे पर धूप-छांव की माया है, धूप-छांव का
खेल है।
~ओशो, कहे होत अधीर।

CamScanner

आप सभी को नवरात्री के शुभ अवसर
पर हार्दिक बधाई ।
मां दुर्गा के आशीर्वाद से आप सभी के
जीवन में खुशियों की बहार आये ।
आपका जीवन मंगल दीपों से
प्रज्वलित हो ।

CamScanner

HAPPY
Navratri
PROF. DIWAKER SINGH
PRINCIPAL
P. G. COLLEGE MALIKPURA GHAZIPUR

CamScanner

CamScanner

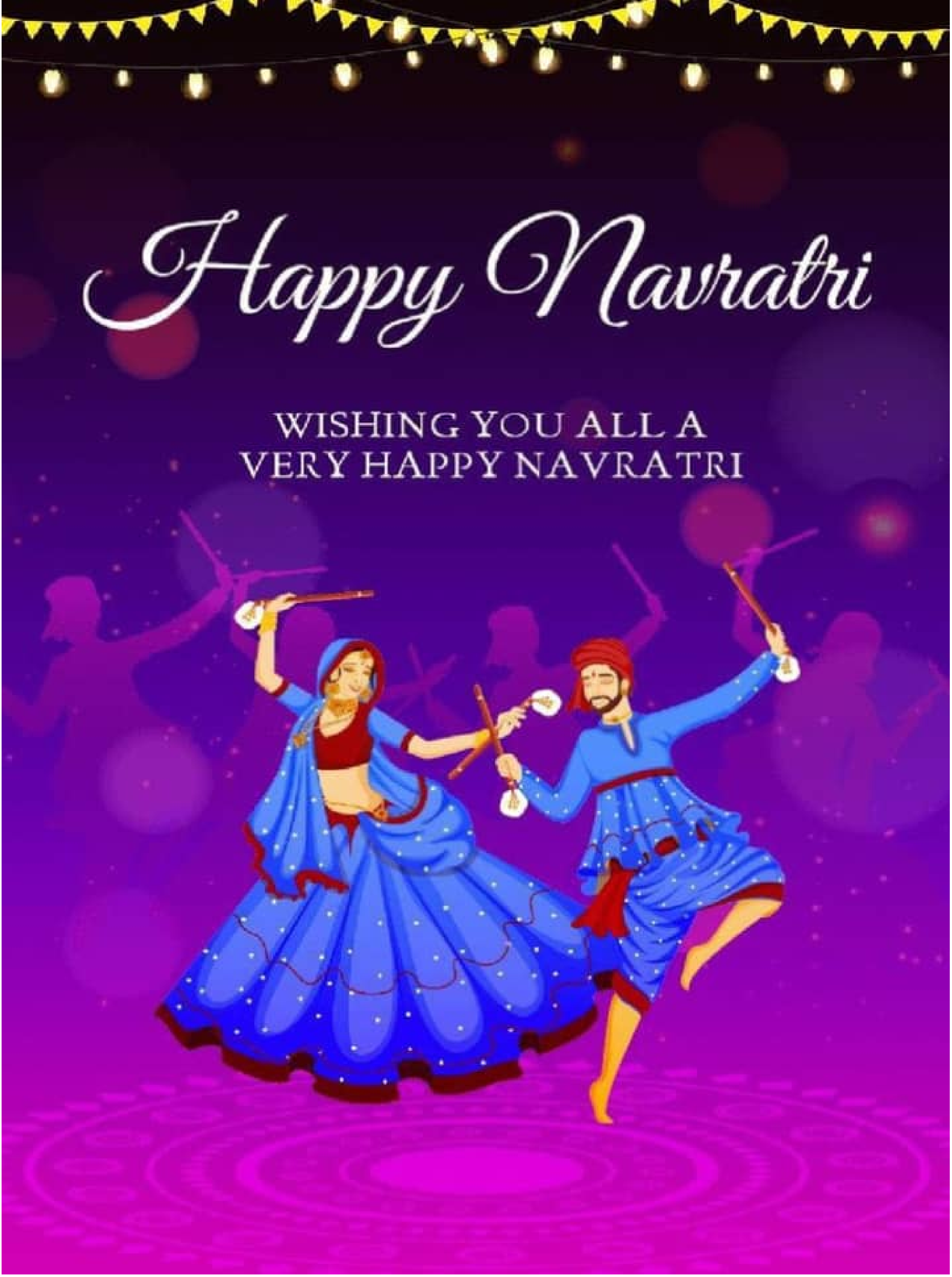

CamScanner

10:21 am 2 KB/s 83%

शारदीय नवरात्रि 2023 पूजा विधि

इसके अलावा घटस्थापना का एक अन्य मुहूर्त सुबह 11 बजकर 44 मिनट से दोपहर 12 बजकर 30 मिनट तक है। ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, इस साल 10:30 बजे से पहले और दोपहर 01:30 बजे के बाद कलश स्थापना अति उत्तम माना जा रहा है।

15 दिनों के भीतर लगेंगे 2 ग्रहण, जान लें सूतक काल का समय

नवरात्रि कलश स्थापना मूहूर्त 46 मिनट

Kalash Sthapna Kab Hai Navratri 2023 Kab Hai, कलश स्थापना शुभ मुहूर्त, Navratri Kalash Sthapn...

1.4 lakh views 17 hr ago ...more

Facts With Amit Pathak 2.68 lakh Subscribe

2.1K Share Remix Download

Comments 18

F Bhai ke liye like to banta hai. Jai mata di

CamScanner

Kalash Sthapna Kab Hai Navratri 2023 Kab Hai, कलश स्थापना शुभ मुहूर्त, Navratri Kalash Sthapn...

1.4 lakh views 17 hr ago ...more

Facts With Amit Pathak 2.68 lakh Subscribe

2.1K Share Remix Download

Comments 18

F Bhai ke liye like to banta hai. Jai mata di

Easy Navratri Pooja vidhi 2023 !! नवरात्र पूजन की सरल विधि !! नवरात्र चौकी स्थापन पहले दिन की पूजा

Meenakshi's Kitchen & Indian Culture · 40 lakh views · 1 year ago

CamScanner

ओशो

रामकृष्ण मरणशय्या पर थे। उनकी पत्नी शारदा रोने लगी और उसने पूछा कि परमहंस देव! आप तो जा रहे है, मेरा क्या होगा?

Oshoravi

उन्होंने आंख खोली और कहा कि जा रहा हूं! पागल, कहां जाऊंगा? जाने को कोई जगह कहां है? यहीं था, यहीं रहूंगा। अभी देह मे था, अब बिना देह के रहूंगा।

CamScanner

9:58 am 1 KB/s VoLTE 4G 87%
facebook

Like Comment Share

Swami Dev Sundar

Reels · 2 Oct ·

अगर तुममें थोड़ी समझ हो तो तुम धन्यवाद दोगे मुझे। तुम कहोगे, जब समझ में आ गया तभी जल्दी है। यह भी हो सकता था, कोई न मिलता कहने वाला और तुम ताश के घर बनाते-बनाते ही मिट जाते। तुम झूठी और व्यर्थ की धारणाओं में ही जीते और समाप्त हो जाते। उनमें ही रहते और वे ही तुम्हारी कब्रें बन जाते। जब जागे तब सबेरा।फिर मुझे क्या फर्क पड़ता है कि कौन मित्र बना, कौन शत्रु बना! शत्रु बन कर भी मेरा क्या बिगड़ जाने वाला है! जीसस का भी तुमने क्या बिगाड़ लिया? यूं भी तो आदमी को मर जाना होता है। मरने से तो कोई बच सकता नहीं। देह तो गिरेगी ही गिरेगी। चार दिन के लिए है। तो क्यों न सत्य का ही आनंद ले लिया जाए! क्यों न सत्य के ही फूल खिला लिए जाएं! क्यों झूठ के कांटे बोने! कोई तो सुनेगा। सभी तो बहरे नहीं हैं। सभी तो अंधे नहीं हैं। सभी तो कायर नहीं हैं।ओशोOSHO Mystery School

CamScanner

लाओत्से को बहुत प्रिय है झुकने की कला

ओशो
ताओ उपनिषद

लाओत्से कहता है तुम छोटे घास के पोधे की भांति हो जाना। तुफान आता है, धास का पौधा जमीन पर लेट जाता है। अकड़ रखता ही नहीं। तुफान जहां जा रहा हो, वो तूफान के साथ मैत्री कर लेता है, सहयोग कर लेता है। वह सो जाएगा जमीन पर, तुफान गुजर जायेगा।

जीत लेने दो। उतना ही तुम्हारे जीवन से संधर्ष और प्रतिरोध कम हो जायेगा।

रि.चं.आ

CamScanner

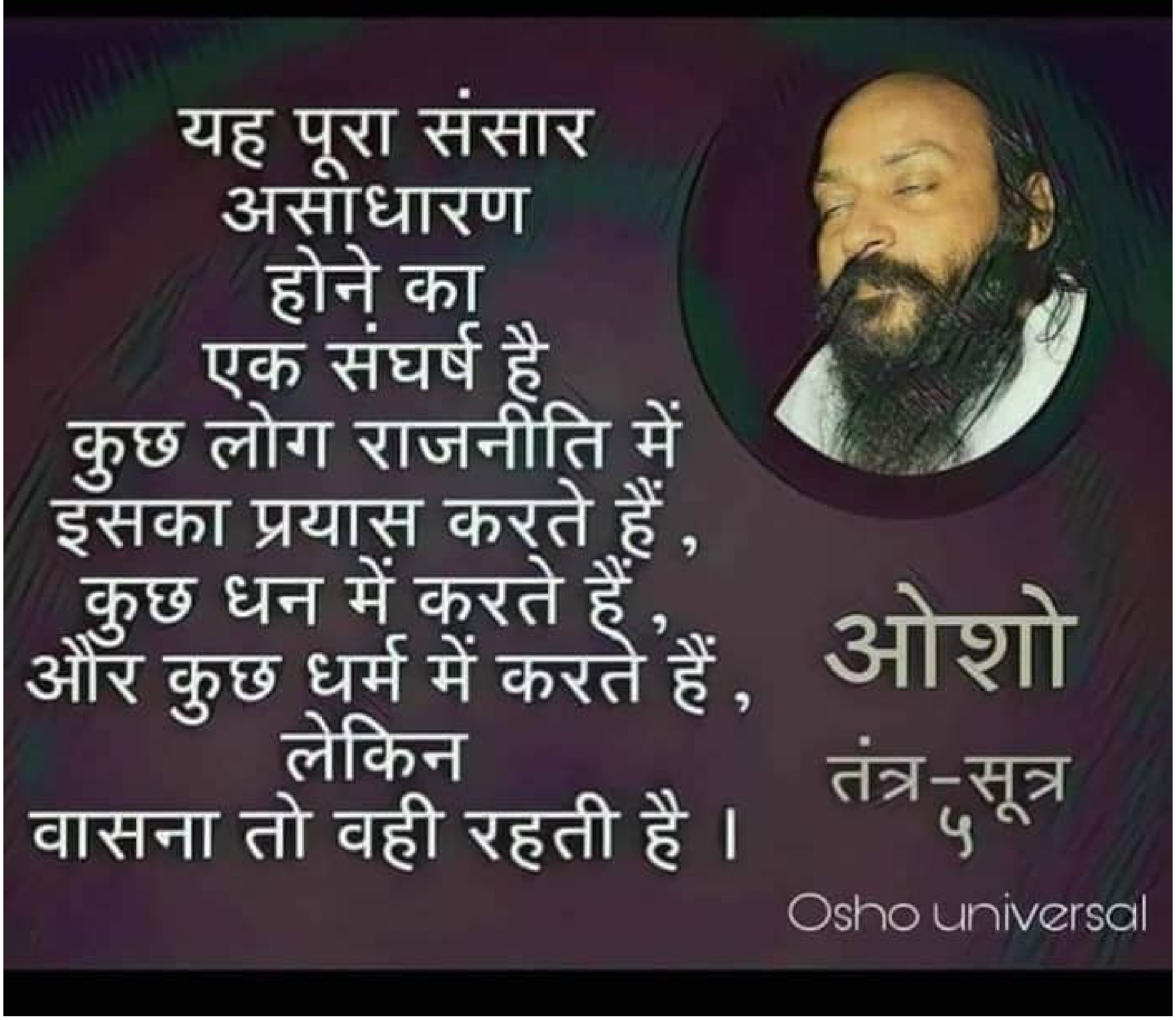
यह पूरा संसार
असाधारण
होने का
एक संघर्ष है
कुछ लोग राजनीति में
इसका प्रयास करते हैं,
कुछ धन में करते हैं,
और कुछ धर्म में करते हैं,
लेकिन
वासना तो वही रहती है।
ओशो
तंत्र-सूत्र
५
Osho universal

CamScanner

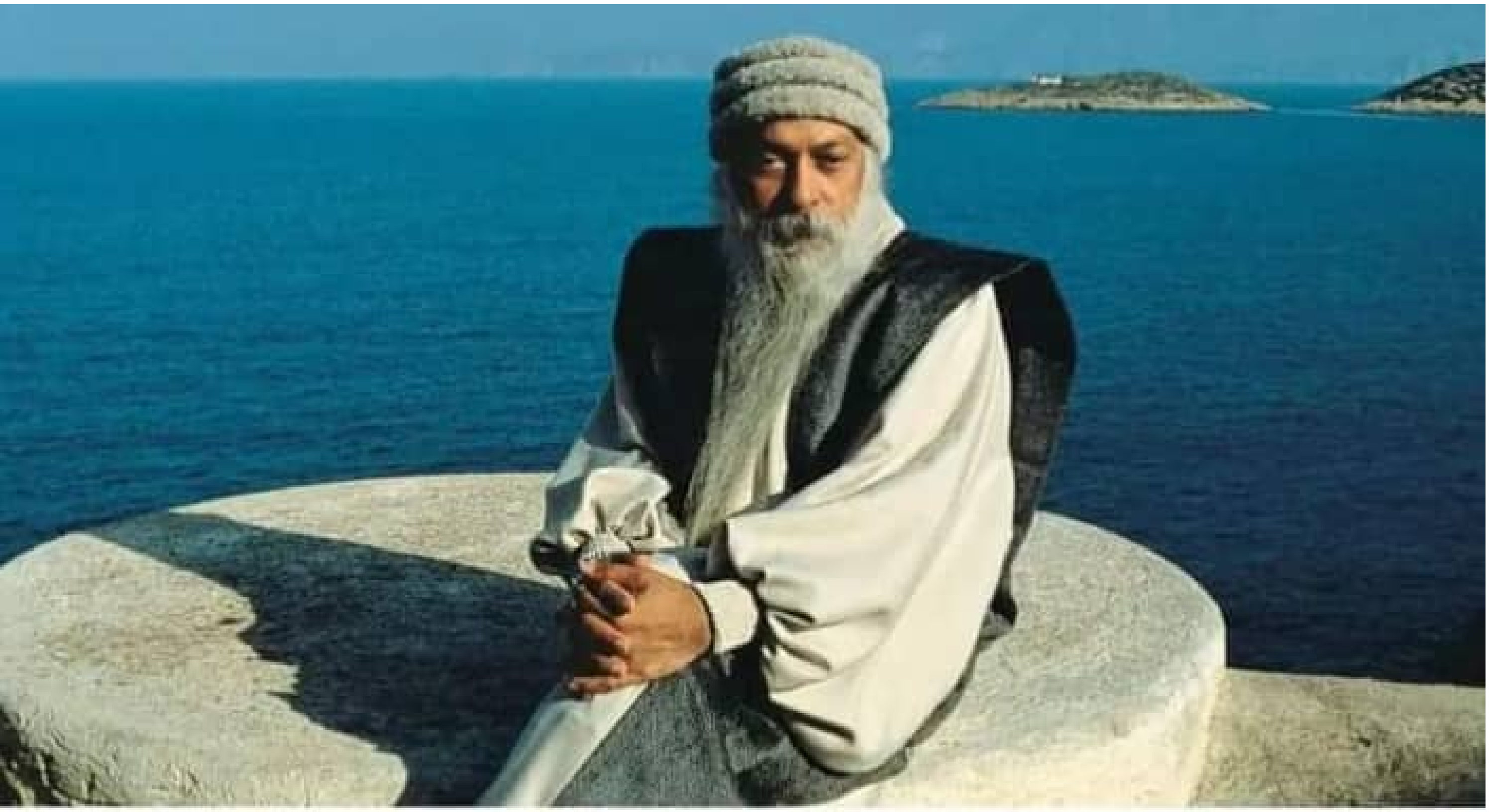

जिस दिन तुम्हें अपना मूल्य पता लग गया।
उस दिन के बाद तुम्हें किसी के द्वारा की गई प्रशंसा
या निंदा से कोई फर्क नहीं पड़ेगा...

ओशो

CamScanner

9:55 am 0 KB/s VoLTE 4G 87%

facebook

उन्होंने समझाना शुरू किया, "जब तुमने कुछ किया ही नहीं है तो मैं तुम्हें क्षमा क्यों करूं? तुमने क्या गलत किया है? मैं तुम्हारे किस व्यवहार के लिए क्षमा करूं?"

व्यापारी ने उत्तर दिया, "कल एक व्यक्ति इस सभा में आया था और क्रोध में आकर उसने आपके मुँह पर थूक दिया था। मैं वही व्यक्ति हूं!"

बुद्ध ने कहा, "वह व्यक्ति अब यहाँ नहीं है, जिस पर कल तुमने थूका था। यदि मैं कभी उस व्यक्ति से मिलूंगा, जिस पर कल तुमने थूका था, तो मैं उसे तुमको क्षमा करने के लिए कह दूँगा।"

गौतम बुद्ध ने कहा, "मेरे लिए, वह व्यक्ति जो इस क्षण मेरे सामने खड़ा हैं, वह एक अद्भुत व्यक्ति हैं। तुमने कुछ भी गलत नहीं किया है।"

हम हमारे जीवन में किसी भी व्यक्ति को वास्तव में कब क्षमा करते हैं.......?

सच्ची क्षमा तब होती है जब हम किसी व्यक्ति को क्षमा कर देते हैं और उसे पता भी नहीं चलता कि वह क्षमा किया जा रहा है। उन्हें गलती के लिए दोषी भी महसूस नहीं कराना चाहिए।

यह सच्ची क्षमा है।

अगर हम किसी को माफ कर देते हैं और उन्हें उनकी गलती की याद दिलाते रहते हैं और उन्हें हर समय दोषी महसूस कराते हैं तो इसका अर्थ यह है कि, हमने वास्तव में अभी तक उन्हें क्षमा नहीं किया है।

किसी व्यक्ति के लिए अपराधबोध ही पर्याप्त सजा है।

"किसी के साथ हुए कटु अनुभव के भावनात्मक बोझ से छुटकारा पाने का एकमात्र उपाय उसे दिल से भलाकर क्षमा कर देना है।"

CamScanner

9:24 am 0 KB/s VoLTE 4G 89%

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg
Parshotam Rai · 22h ·

🌿तरक्की अंदर की🌿

भजन सुमिरन में तरक्की हम अक्सर उदास, निराश हो जाते हैं लेकिन बाबा जी हमेशा अपने सत्संगों में फरमाते हैं कि संतमत में असफलता नाम की कोई चीज नहीं है।

इसे एक उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है, चाईनींस बांस होता है, इस के पौधे को आप लगाएंगे, तो देखेंगे, कि 1 साल तक इसमें कोई वृद्धि नहीं हुई , 2 साल, 3 साल, 4 साल, 5 साल इसमें कोई वृद्धि नहीं होती।

5 साल के बाद यह अचानक बढ़ने लगता है और जमीन से सीधा 40 फुट ऊपर चला जाता है तो क्या हम यह कहेंगे कि इसमें 5 साल बाद वृद्धि हुई? क्या इसका विकास 5 साल बाद हुआ है? नहीं ऐसा नहीं कहा जाएगा, बल्कि, यह कहा जाएगा, कि इसकी जड़ ने 5 साल लगा दिए, धीरे-धीरे बढ़ने में, जब इसकी जड़ मजबूत हुई, तभी अचानक से बढ़ा और 40 फीट ऊपर चला गया।

भजन सिमरन भी ठीक इसी तरह है अंदर ही तरक्की होती रहती है, लेकिन यह उस कुल मालिक के ऊपर है, कि हमें इसका फल कब मिलेगा ? इसीलिए, बिना नाउम्मीदी के, बिना निराश हुए, हमें हमेशा रोज बिना नागा किये भजन सिमरन में बैठना है असफलता तो संतमत में होती ही नहीं है। हाँ कितनी देर लगेगी? यह जरूर उस कुल मालिक के ऊपर है।

15 8 comments • 1 share
Like Comment Share

CaRMENRIBES
Sponsored ·

CamScanner

9:23 am 0 KB/s VoLTE 4G 89%

facebook

Create story
Osho Ravi Yog

🌷OSHO TODAY🌷
💓 OSHO TOMORROW💓
Swami Anand Sahaz · 2d ·

Tirth Kumar Pandey
3d ·

कबीर' भाठी कलाल की, बहुतक बैठे आइ ।
सिर सौंपे सोई पिवै, नहीं तौ पिया न जाई ॥

कबीर कहते हैं -कलाल की भट्ठी पर बहुत सारे आकर बैठ गये हैं, पर इस मदिरा को एक वही पी सकेगा, जो अपना सिर कलाल को खुशी-खुशी सौंप देगा, नहीं तो पीना हो नहीं सकेगा । [कलाल है सद्गुरु, मदिरा है प्रभु का प्रेम-रस और सिर है अहंकार ।]

CamScanner

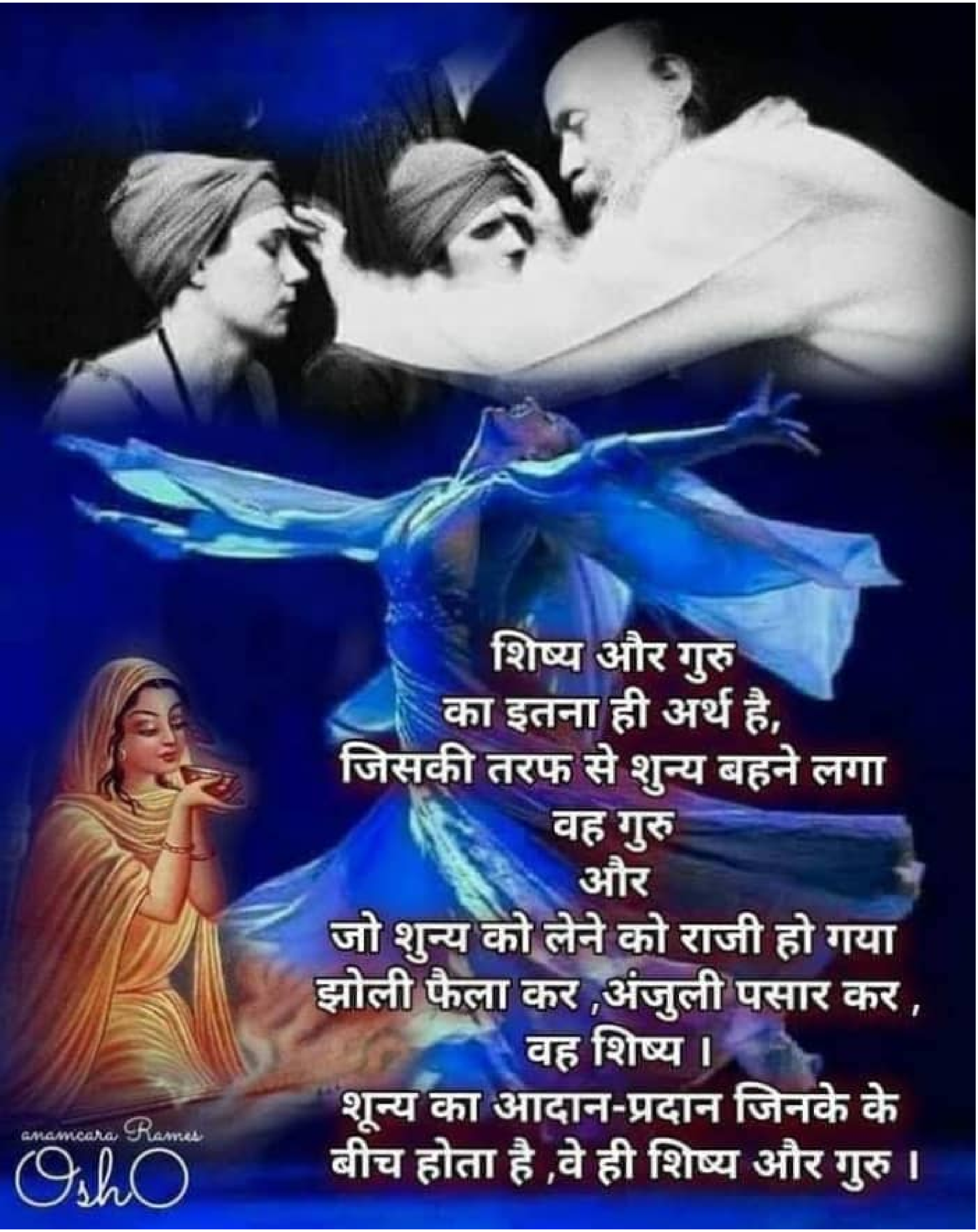
शिष्य और गुरु
का इतना ही अर्थ है,
जिसकी तरफ से शुन्य बहने लगा
वह गुरु
और
जो शुन्य को लेने को राजी हो गया
झोली फैला कर ,अंजुली पसार कर ,
वह शिष्य ।
शून्य का आदान-प्रदान जिनके के
बीच होता है ,वे ही शिष्य और गुरु ।
anamcara Rames
OshO

CamScanner

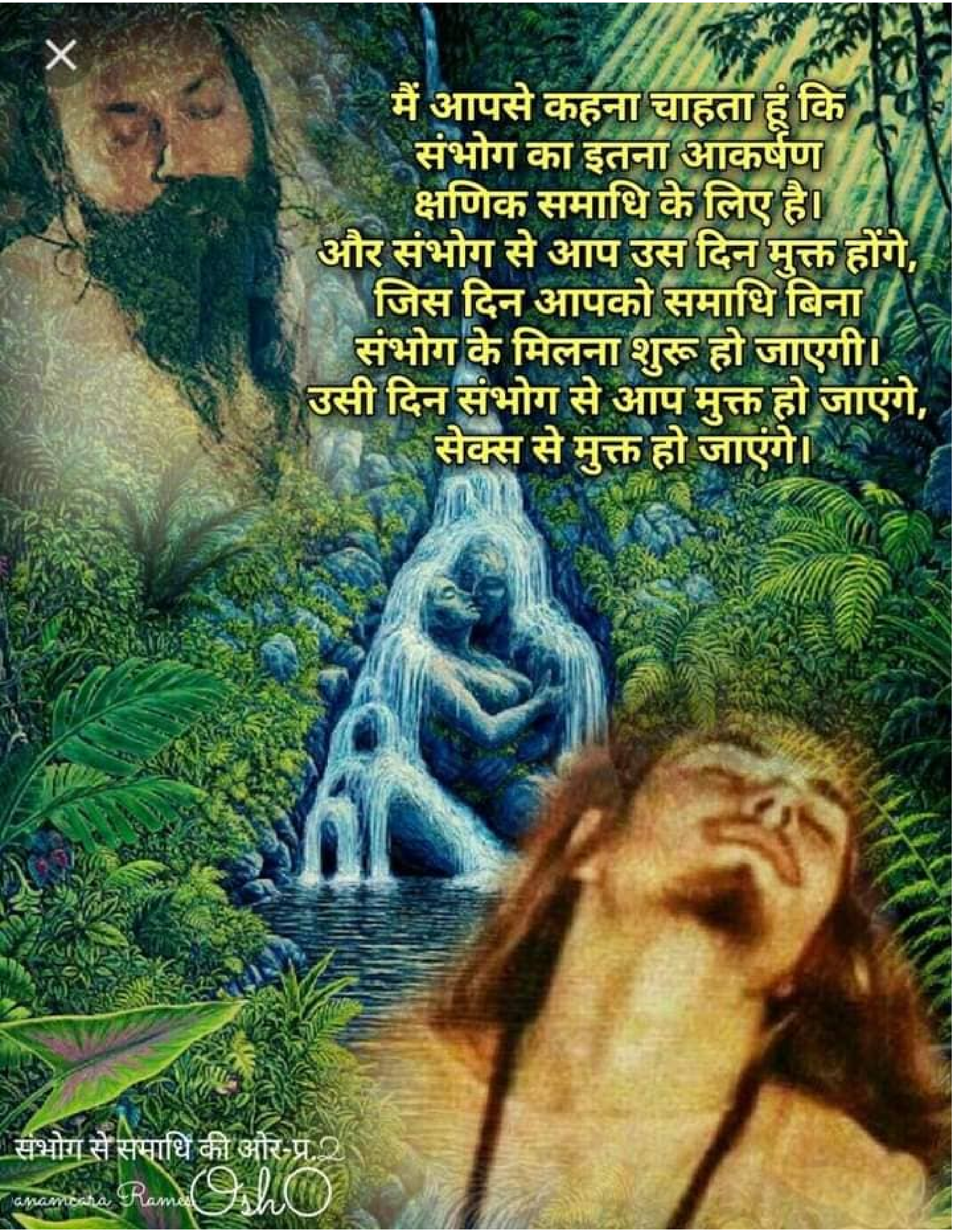

मैं आपसे कहना चाहता हूं कि
संभोग का इतना आकर्षण
क्षणिक समाधि के लिए है।
और संभोग से आप उस दिन मुक्त होंगे,
जिस दिन आपको समाधि बिना
संभोग के मिलना शुरू हो जाएगी।
उसी दिन संभोग से आप मुक्त हो जाएंगे,
सेक्स से मुक्त हो जाएंगे।
संभोग से समाधि की ओर-प्र.2
OshO

CamScanner

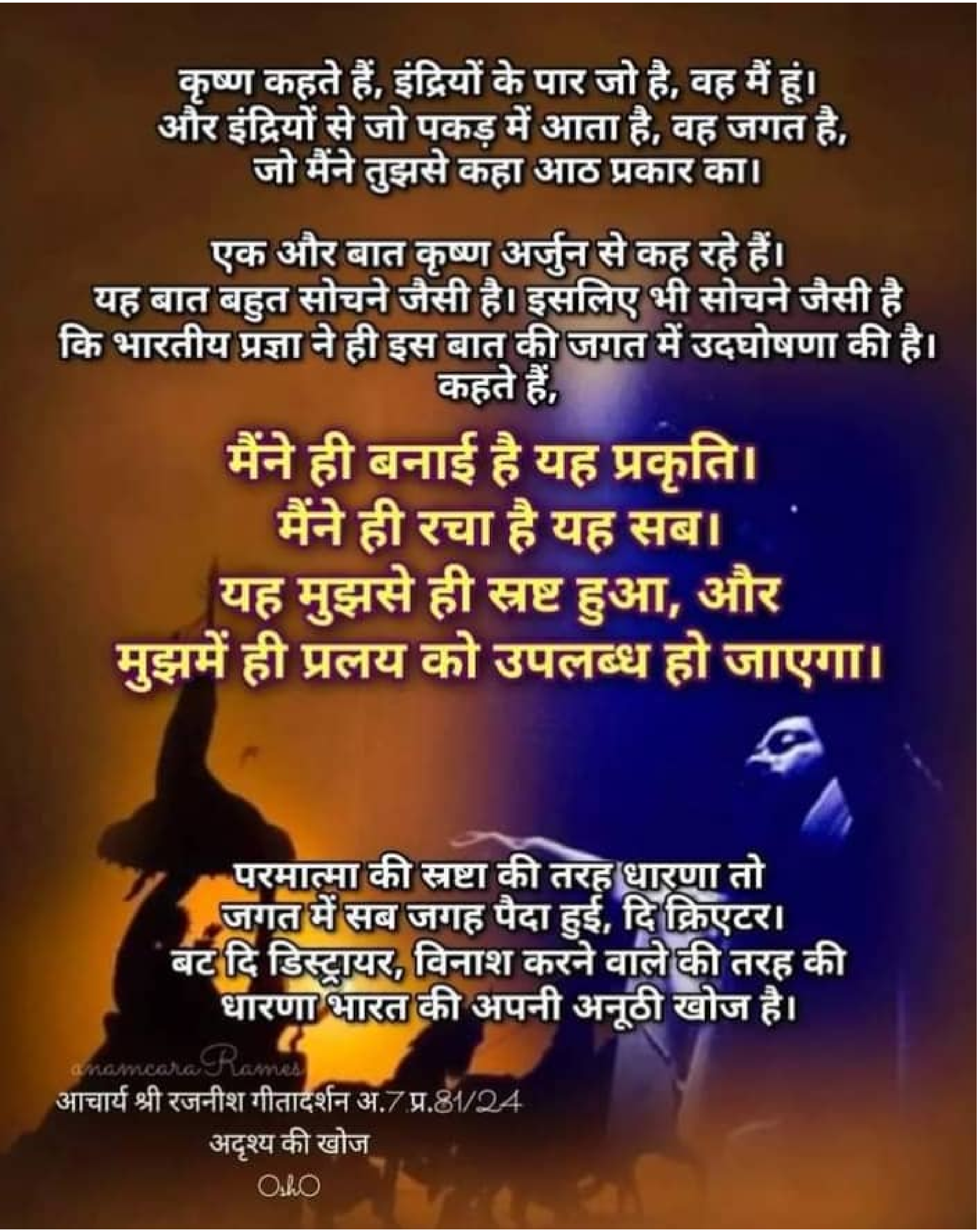
कृष्ण कहते हैं, इंद्रियों के पार जो है, वह मैं हूं।
और इंद्रियों से जो पकड़ में आता है, वह जगत है,
जो मैंने तुझसे कहा आठ प्रकार का।
एक और बात कृष्ण अर्जुन से कह रहे हैं।
यह बात बहुत सोचने जैसी है। इसलिए भी सोचने जैसी है
कि भारतीय प्रज्ञा ने ही इस बात की जगत में उदघोषणा की है।
कहते हैं,
मैंने ही बनाई है यह प्रकृति।
मैंने ही रचा है यह सब।
यह मुझसे ही स्रष्ट हुआ, और
मुझमें ही प्रलय को उपलब्ध हो जाएगा।
परमात्मा की स्रष्टा की तरह धारणा तो
जगत में सब जगह पैदा हुई, दि क्रिएटर।
बट दि डिस्ट्रायर, विनाश करने वाले की तरह की
धारणा भारत की अपनी अनूठी खोज है।
anamcara Ramesh
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.81/24
अदृश्य की खोज
OshO

CamScanner

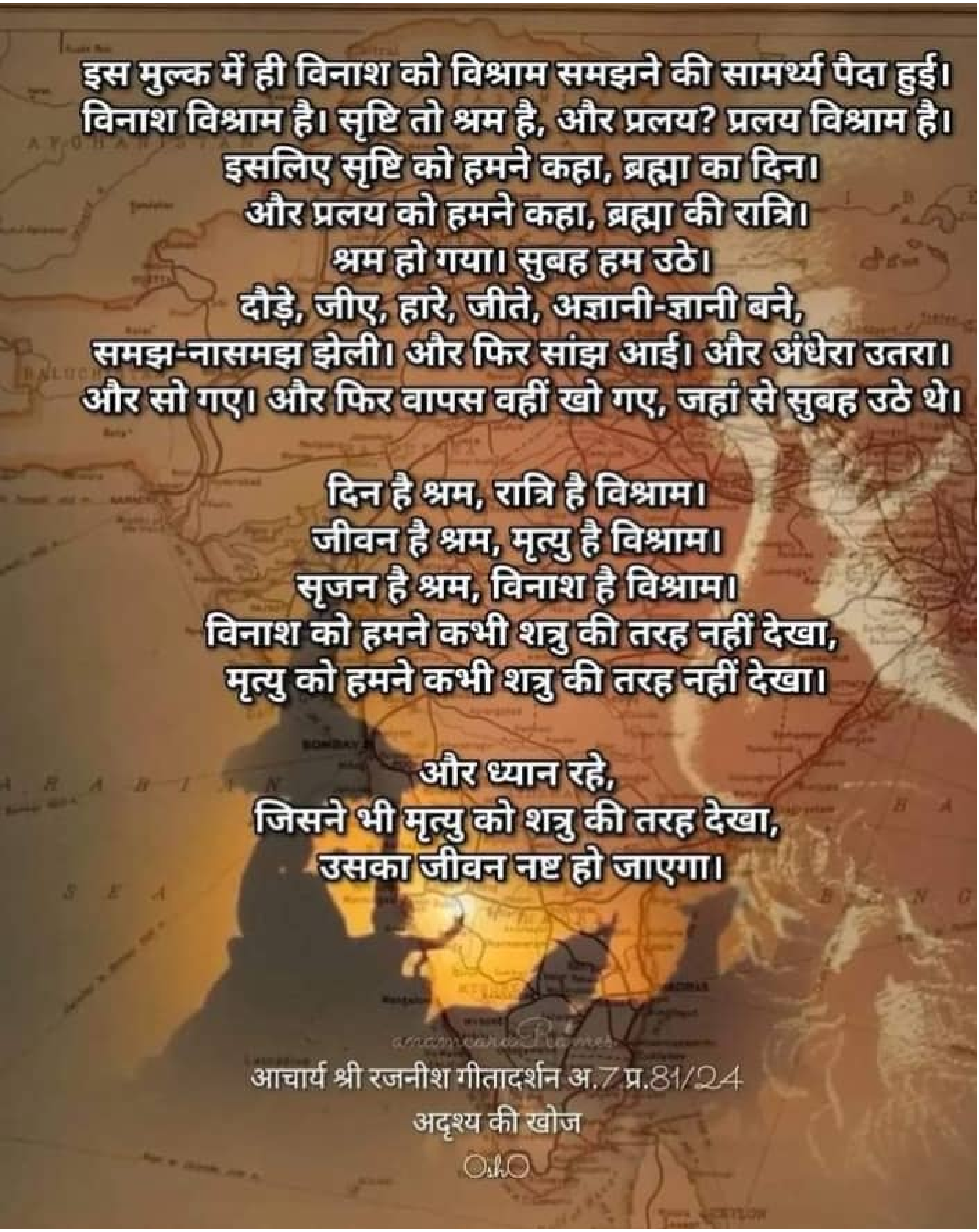
इस मुल्क में ही विनाश को विश्राम समझने की सामर्थ्य पैदा हुई।
विनाश विश्राम है। सृष्टि तो श्रम है, और प्रलय? प्रलय विश्राम है।
इसलिए सृष्टि को हमने कहा, ब्रह्मा का दिन।
और प्रलय को हमने कहा, ब्रह्मा की रात्रि।
श्रम हो गया। सुबह हम उठे।
दौड़े, जीए, हारे, जीते, अज्ञानी-ज्ञानी बने,
समझ-नासमझ झेली। और फिर सांझ आई। और अंधेरा उतरा।
और सो गए। और फिर वापस वहीं खो गए, जहां से सुबह उठे थे।
दिन है श्रम, रात्रि है विश्राम।
जीवन है श्रम, मृत्यु है विश्राम।
सृजन है श्रम, विनाश है विश्राम।
विनाश को हमने कभी शत्रु की तरह नहीं देखा,
मृत्यु को हमने कभी शत्रु की तरह नहीं देखा।
और ध्यान रहे,
जिसने भी मृत्यु को शत्रु की तरह देखा,
उसका जीवन नष्ट हो जाएगा।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.81/24
अदृश्य की खोज
OshO

CamScanner

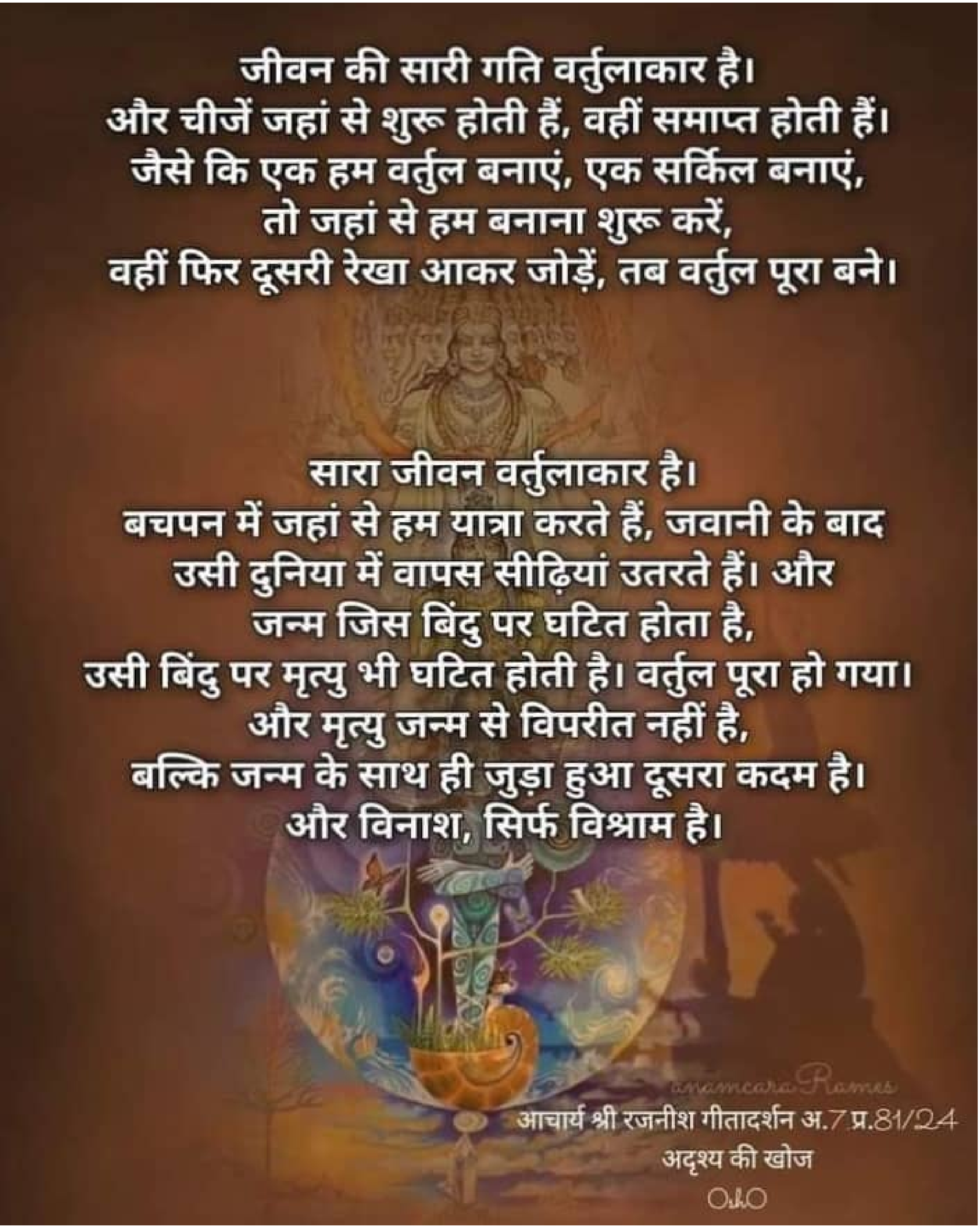
जीवन की सारी गति वर्तुलाकार है।
और चीजें जहां से शुरू होती हैं, वहीं समाप्त होती हैं।
जैसे कि एक हम वर्तुल बनाएं, एक सर्किल बनाएं,
तो जहां से हम बनाना शुरू करें,
वहीं फिर दूसरी रेखा आकर जोड़ें, तब वर्तुल पूरा बने।
सारा जीवन वर्तुलाकार है।
बचपन में जहां से हम यात्रा करते हैं, जवानी के बाद
उसी दुनिया में वापस सीढ़ियां उतरते हैं। और
जन्म जिस बिंदु पर घटित होता है,
उसी बिंदु पर मृत्यु भी घटित होती है। वर्तुल पूरा हो गया।
और मृत्यु जन्म से विपरीत नहीं है,
बल्कि जन्म के साथ ही जुड़ा हुआ दूसरा कदम है।
और विनाश, सिर्फ विश्राम है।
anamcara Ramos
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.81/24
अदृश्य की खोज
OSHO

CamScanner

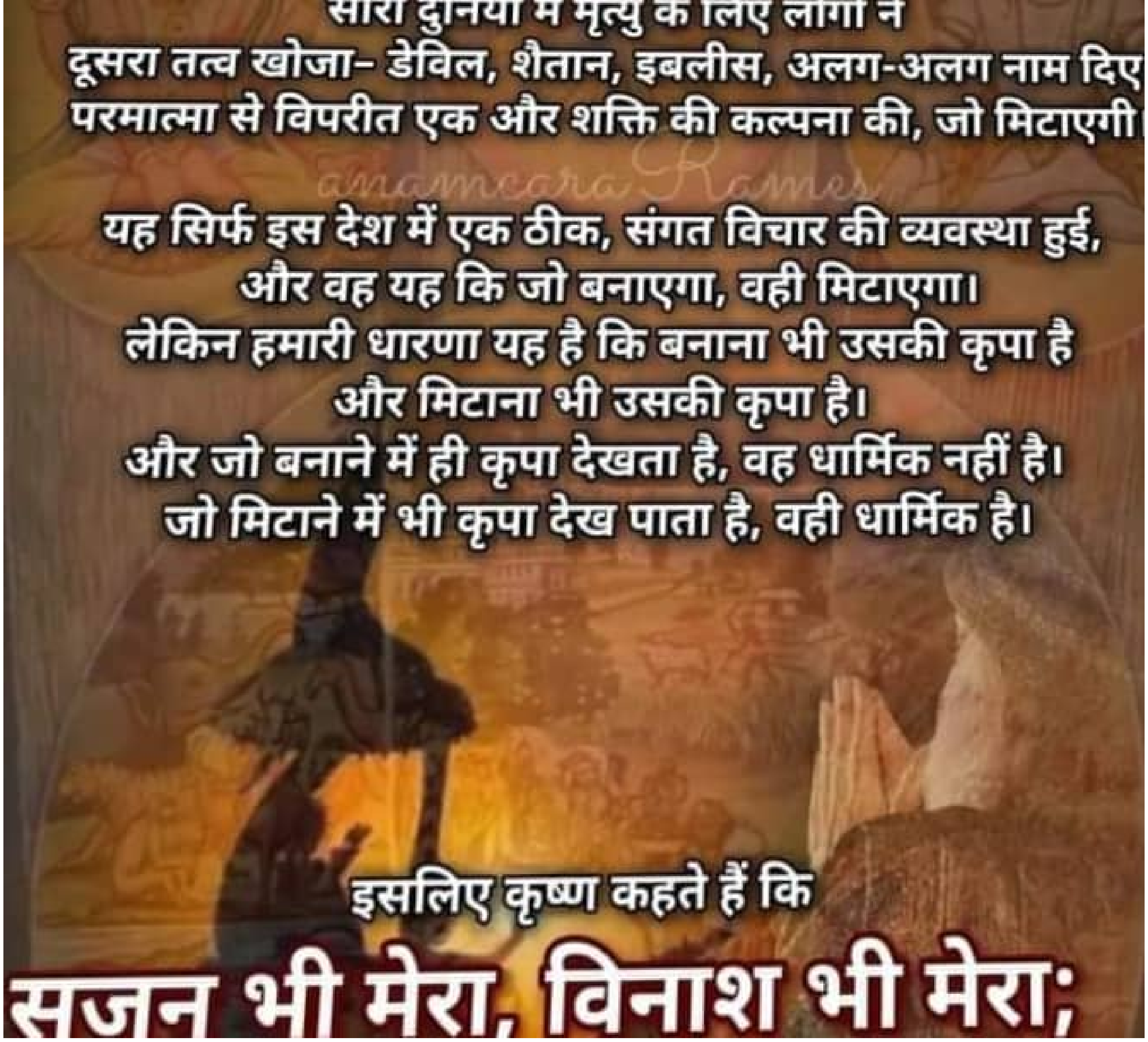
सारी दुनिया में मृत्यु के लिए लोगों ने
दूसरा तत्व खोजा- डेविल, शैतान, इबलीस, अलग-अलग नाम दिए
परमात्मा से विपरीत एक और शक्ति की कल्पना की, जो मिटाएगी।
यह सिर्फ इस देश में एक ठीक, संगत विचार की व्यवस्था हुई,
और वह यह कि जो बनाएगा, वही मिटाएगा।
लेकिन हमारी धारणा यह है कि बनाना भी उसकी कृपा है
और मिटाना भी उसकी कृपा है।
और जो बनाने में ही कृपा देखता है, वह धार्मिक नहीं है।
जो मिटाने में भी कृपा देख पाता है, वही धार्मिक है।
इसलिए कृष्ण कहते हैं कि
सृजन भी मेरा, विनाश भी मेरा;

CamScanner

जिसने भी मृत्यु को शत्रु की तरह देखा, वह जी न पाएगा;
वह जिंदगीभर मृत्यु से डरेगा और बचेगा। जीना असंभव है।
लेकिन जिसने मृत्यु को भी मित्र माना, वही जी पाएगा।
क्योंकि जिसे मृत्यु भी दुख नहीं दे पाती, उसे जीवन कैसे दुख देगा!
और जिसे मृत्यु भी मित्र है, उसे जीवन तो महामित्र हो जाएगा।
और जिसे जीवन से विपरीत नहीं दिखाई पड़ती मृत्यु, बल्कि जीवन की ही
पूर्णता दिखाई पड़ती है-जैसे कि वृक्षों पर फल पक जाते हैं,
ऐसे ही जीवन पर मृत्यु पकती है-जिसे मृत्यु जीवन की ही
परिपूर्णता दिखाई पड़ती है और प्रलय भी सृजन का
अंतिम चरण मालूम होता है, उसका जीवन आह्लाद से भर जाए,
तो कोई आश्चर्य नहीं है। और आह्लाद से न भरे जीवन,
तो धर्म का हमें कोई भी पता नहीं है।
इसलिए कृष्ण जब कहते हैं, मैं ही हूं सृजन और मैं ही विनाश।
इस तरह की हिम्मत की घोषणा कहीं भी नहीं की गई है।
अगर कहीं घोषणाएं भी की गई हैं, तो कहा गया है कि,मैं हूं स्रष्टा, और वह
जो शैतान है, वह है दुष्ट। वह कर रहा है विनाश। तू उससे सावधान रहना।

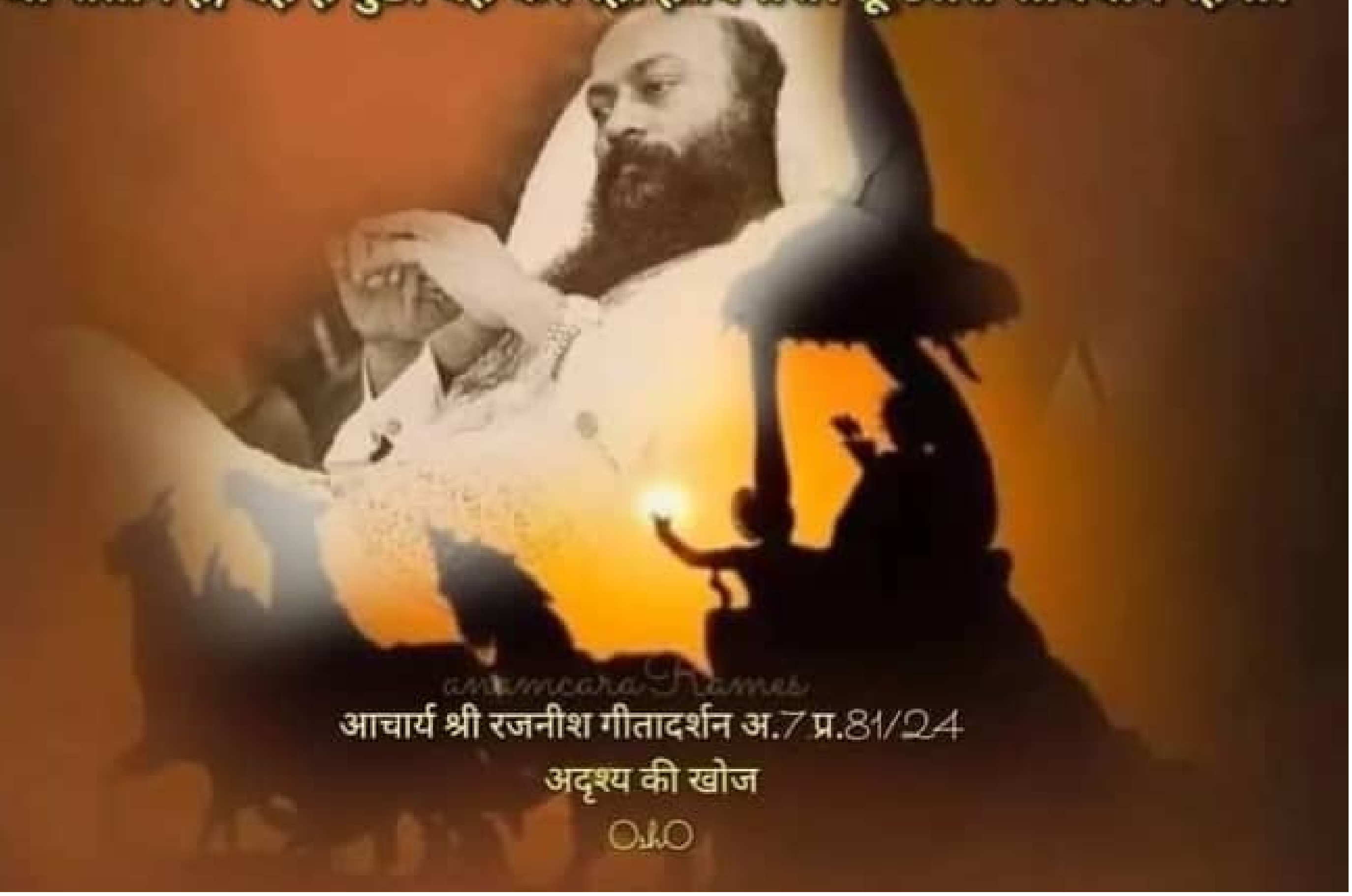

आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.81/24

अदृश्य की खोज

OSHO

CamScanner

जीवन और मृत्यु एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
और अंधेरा और प्रकाश भी एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।
यहां, जिसे हम विरोध कहते हैं,
वह विरोध भी विरोध नहीं है, केवल दूसरा अंग है।
इसलिए कृष्ण बड़ी सरलता से कह पाते हैं कि
मैं ही हूं सृजन, मैं ही प्रलय।
सब मुझसे ही पैदा होता और मुझमें ही लीन हो जाता है।
यहां हमने परमात्मा को अविभाजित, अनडिवाइडेड जाना है।
और ध्यान रहे, अगर हम परमात्मा को अविभाजित न जानें,
तो हमारे भीतर अविभाजित श्रद्धा होने की कोई संभावना नहीं है।
और हमने एक बार जगत को दो हिस्सों में तोड़ा कि
हमारे भीतर का हृदय भी दो हिस्सों में टूट जाएगा।
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7 प्र.81/24
अदृश्य की खोज
OSHO

CamScanner

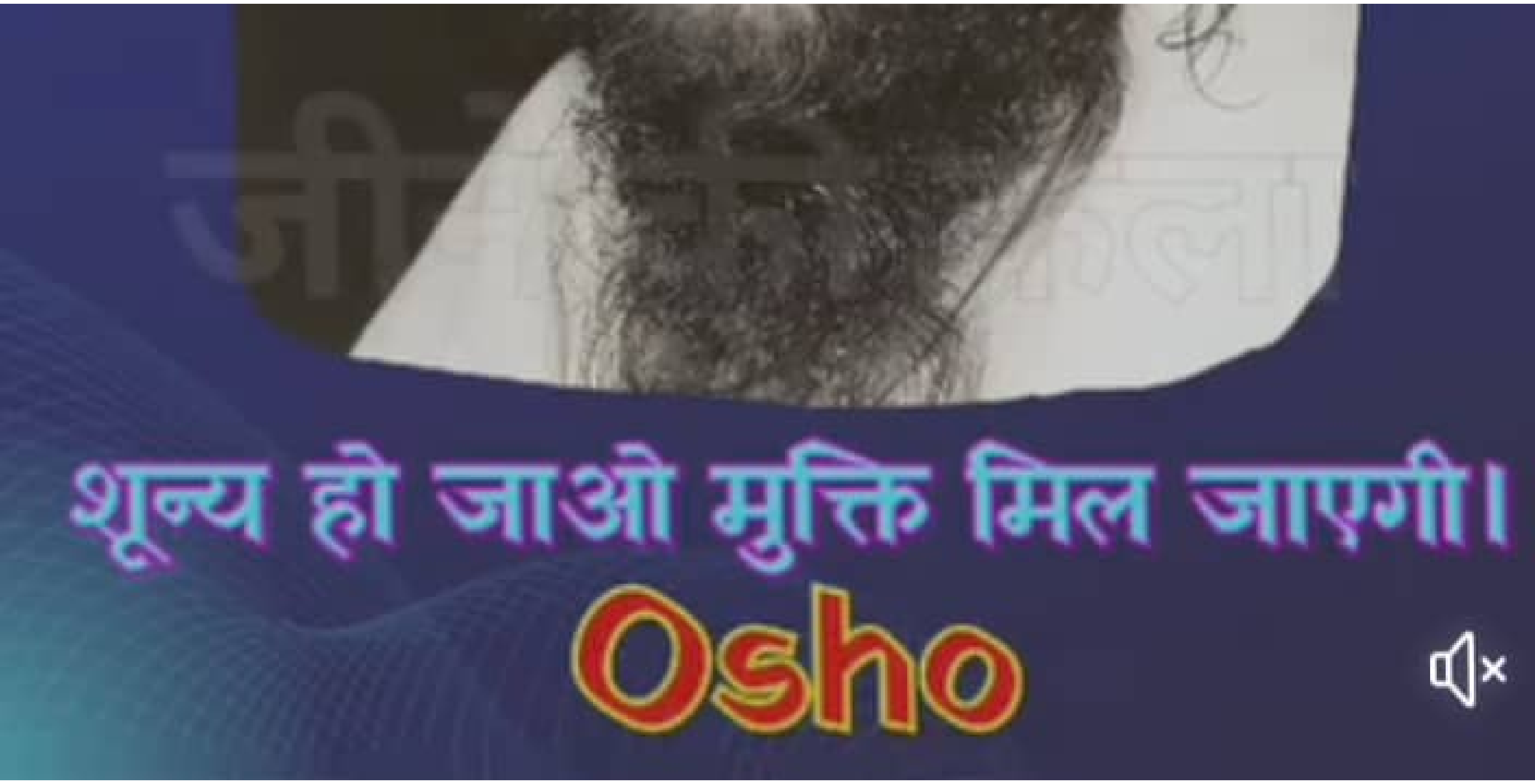

CamScanner

6:29 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%

ठीक, साधना के आठ अंग मैं तेरे विकृत किए देता हूं अब तू कैसे पाएगा?

और अष्टावक्र ने फिर भी पाया। अष्टावक्र के सारे उपदेश का सार इतना ही है कि सत्य मिला ही हुआ है, न शास्त्र से मिलता है न साधना से मिलता है। साधना तो उसके लिए करनी होती है जो मिला न हो। सत्य तो हम लेकर ही जन्मे हैं। सत्य तो हमारे साथ गर्भ से ही है, सत्य तो हमारा स्वरूप—सिद्ध अधिकार है। जन्म—सिद्ध भी नहीं, स्वरूप—सिद्ध अधिकार! सत्य तो हम हैं ही, इसलिए मिलने की कोई बात नहीं। आठ जगह से टेढ़ा, चलो कोई हर्जा नहीं; लेकिन सत्य टेढ़ा नहीं होगा। स्वरूप टेढ़ा नहीं होगा। यह शरीर ही इरछा—तिरछा हो जाएगा।

साधना की पहुंच शरीर और मन के पार नहीं है। तो तुम अगर इरछे—तिरछे का अभिशाप देते हो तो शरीर तिरछा हो जाएगा, मन तिरछा हो जाएगा, लेकिन मेरी आत्मा को कोई फर्क न पड़ेगा। यही तो अष्टावक्र ने जनक से कहा कि राजन! आंगन के टेढ़े —मेढ़े होने से आकाश तो टेढ़ा—मेढ़ा नहीं हो जाता। घड़े के टेढ़े —मेढ़े होने से घड़े के भीतर भरा हुआ आकाश तो टेढ़ा—मेढ़ा नहीं हो जाता। मेरी तरफ देखो सीधे; न शरीर को देखो न मन को।

अष्टावक्र की पूरी देशना यही है कि न शास्त्र से मिलता न साधना से मिलता। इसलिए तो मैंने बार—बार तुम्हें याद दिलाया कि कृष्णमूर्ति की जो देशना है वही अष्टावक्र की है। कृष्णमूर्ति की भी देशना यही है कि न शास्त्र से मिलता न साधना से मिलता। तुम घबड़ा कर पूछते हो. तो फिर कैसे मिलेगा? देशना यही है कि कैसे की बात ही पूछना गलत है—मिला ही हुआ है। जो मिला ही हुआ है, पूछना कैसे मिलेगा—असंगत प्रश्न पूछना है।

सत्य के लिए कोई शर्त नहीं है; सत्य बेशर्त मिला है। पापी को मिला है, पुण्यात्मा को मिला है, काले को मिला है, गोरे को मिला है; सुंदर को, असुंदर को; पुरुष को, स्त्री को। जिन्होंने चेष्टा की, उन्हें मिला है, जिन्होंने चेष्टा नहीं की, उन्हें भी मिला है। किन्हीं को प्रयास से मिल गया है, किन्हीं को प्रसाद से मिल गया है। न तो प्रयास जरूरी है, न प्रसाद की मांग जरूरी है, क्योंकि सत्य मिला ही हुआ है।

खिलता है रात में बेला

CamScanner

आपने बताया कि जब अष्टावक्र मां के गर्भ में थे, उनके पिता ने उन्हें शाप दिया, जिसकी वजह से उनका शरीर आठ जगहों से आड़ा –तिरछा हो गया। भगवान, इस आठ का क्या रहस्य है? वे अठारह जगह से भी टेढ़े–मेढ़े हो सकते थे और अष्टावक्र कहलाते। यह आठ का ही आंकड़ा क्यों?

यह आठ आंकड़ा अर्थपूर्ण है। ये छोटी–छोटी कहानियां गहरे सांकेतिक अर्थ लिए हैं। इन्हें तुम इतिहास मत समझना। इनका तथ्य से बहुत कम संबंध है। इनका तो भीतर के रहस्यों से संबंध है। आठ का आंकड़ा योग के अष्टांगों से संबंधित है। पतंजलि ने कहा है. आठ अंगों को जो पूरा करेगा–यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि–वही केवल सत्य को उपलब्ध होगा। यह पिता की नाराजगी, यह पिता का अभिशाप सिर्फ इतनी ही सूचना देता है कि वे आठ अंग, जिनसे व्यक्ति परम सत्य को उपलब्ध होता है, मैं तेरे विकृत किए देता हूं।

तुम्हें घटना फिर से याद दिला दूं। पिता वेदपाठी थे। वे सुबह रोज उठ कर वेद का पाठ करते। ख्यातिलब्ध थे, सारे देश में उनका नाम था। बड़े शास्त्रार्थी थे। और अष्टावक्र गर्भ में सुनता। एक दिन अचानक बोल पड़ा गर्भ से कि हो गया बहुत, इस तोता–रटन से कुछ भी न होगा। जाने बिना सत्य का कोई पता नहीं चलता–पढ़ो कितना ही वेद, शास्त्र सत्य नहीं है–सत्य तो अनुभव से उपलब्ध होता है।

पिता नाराज हुए। पिता के अहंकार को चोट लगी। पंडित और पिता दोनों साथ–साथ। बेटे की बात बाप माने, यह बड़ी अनहोनी घटना है। नाराज ही होता है। बाप कभी यह मान ही नहीं पाता कि बेटा भी कभी समझदार हो सकता है। बेटा सत्तर साल का हो जाए तो भी बाप समझता है कि वह नासमझ है। स्वाभाविक है। बेटे और बाप का फासला उतना ही बना रहता है जितना शुरू में, पहले दिन होता है, उसमें कोई अंतर नहीं पड़ता। अगर बाप बीस साल बड़ा है तो वह सदा बीस साल बड़ा होता है। उतना अंतर तो बना ही रहता है। तो बेटे से ज्ञान ले लेना कठिन, फिर पंडित, तो और भी कठिनाई। बाप तो सोचता था मैं जानता हूं, और अब यह गर्भस्थ शिशु कहने लगा कि तुम नहीं जानते हो–यह तो हद हो गई! अभी पैदा भी नहीं हुआ। तो बाप ने अभिशाप दिया होगा; वह अभिशाप ज्ञान के आठ अंगों को

CamScanner

11:39 pm 4 KB/s 4G 24%

Posts

O'SHO FRIENDS (ओं'शो मित्र)

Lyly Lozin · 6h ·

तुम न श्रेष्ठ रहोगे न नीच --
और मैं तुमसे कहता हूँ कि यह आत्मा की श्रेष्ठता है। यह कभी तुलना नहीं करता है।
तुलना करो, और नीचता पैदा होती है।
तुलना मत करो, और आप बस - अद्वितीय हैं ... ओशो😍💙💜💚

· Rate this translation

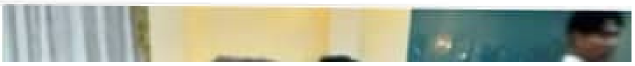

CamScanner

#गोरख के गुरु थे मच्छीन्द्रनाथ। मछली उनका प्रतीक है--मीन..। गोरख कहते हैं, घटि घटि गोरख घटि घटि मीन। बड़ा प्यारा वचन है!

कि हर एक के घट में गोरख भी छिपा है और मच्छीन्द्रनाथ भी छिपा है। हर-एक के भीतर चेला भी छिपा है और गुरु भी। लेकिन लोग पहचान ही नहीं पाते कि तुम्हारे भीतर दोनों छिपे हैं। जिसे जागना है वह भी छिपा है और जो जगायेगा वह भी छिपा है। तुम्हारे भीतर दोनों चकमक पत्थर मौजूद हैं; जरा-सी घर्षण की बात है कि आग पैदा हो जायेगी।

जिस गुरु को तुम बाहर खोज लेते हो वह असल में और कुछ भी नहीं, तुम्हारे भीतर के गुरु की प्रतिछवि है। बाहर का गुरु तो दर्पण है, जिसमें तुम भीतर के छिपे गुरु को देख लेते हो। इसलिए खयाल रखना, बाहर का गुरु आत्यंतिक नहीं है; सिर्फ भीतर के गुरु की याद दिलाने का उपकरण मात्र है। जैसे बाहर किसी ने वीणा बजायी और तुम्हारे हृदय में गुदगुदी फैल गयी और तुम्हारे हृदय में एक संगीत झलकने लगा। जैसे बाहर सुबह निकली, ताजगी फैली...और तुम्हारे भीतर नींद टूटी। और तुम्हारे भीतर भी ताजगी आयी और सुबह हुई। जैसे तुमने स्थान किया, स्नान तो बाहर हुआ; लेकिन देह शीतल हुई तो भीतर मन भी शीतल हुआ। ऐसे ही बाहर का गुरु है--भीतर के गुरु को चोट देने के लिए।

घटि घटि गोरख घटि घटि मीन..।

गोरख कहते हैं कि मैं तुम्हें यह कह देना चाहता हूं : तुम्हारा गुरु भी तुम्हारे भीतर छिपा है और तुम्हारा शिष्य भी। मगर यात्रा शिष्य से शुरू करनी पड़ेगी। जो अपने शिष्य को भी नहीं पहचान पाया वह अपने गुरु को कैसे पहचान पायेगा? गुरु तो सभी बनना चाहेंगे। कौन गुरु नहीं बनना चाहता लेकिन शिष्य बनने की क्षमता बहुत थोड़े-से लोगों की होती है। और जिनकी शिष्य बनने की क्षमता होती है वे ही एक दिन गुरु बन पाते हैं। शिष्य बनना अहंकार के विपरीत पड़ता है। गुरु तो कोई भी बनना चाहता है।

यहां मेरे पास लोग आते हैं। दस-पांच दिन यहां ध्यान करेंगे, कुछ देर यहां रुकेंगे, फिर वे तत्क्षण गुरु बनने की आकांक्षा से भर जाते हैं। दूसरों को समझाना शुरू कर देते हैं। अभी खुद भी समझ में पता नहीं है।

CS CamScanner

बहुत कुछ खोया भी जाता है प्रेम में,
बहुत कुछ पाया भी जाता है प्रेम में..!!
खोना मार्ग है पाने का,
खोने से डरे तो पाने से वंचित रह जाओगे..!!

CS CamScanner

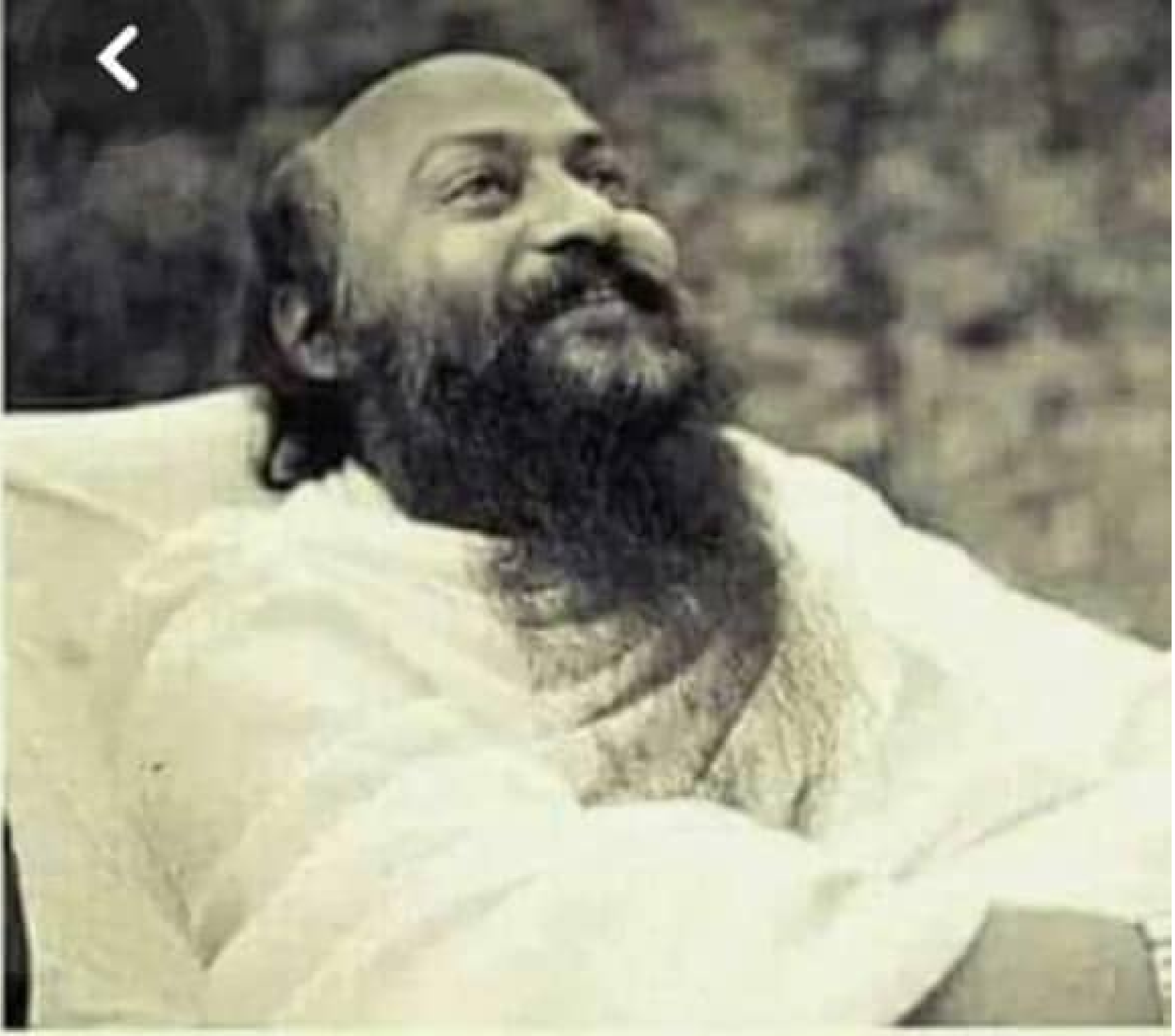

बुद्ध के पास बैठोगे —उठोगे, तो उनका स्वाद लगेगा,
उनकी बूंदें तुम पर बरसेंगी, उनका स्पर्श तुम्हें होगा।
जो हवा उन्हें छुएगी, वही हवा तुम्हें भी छुएगी।
बुद्ध के पास उठोगे——बैठोगे, उनका रंग लगेगा,
उनका ढंग लगेगा।
बुद्ध के पास उठोगे —बैठोगे, तो बुद्धत्व संक्रामक है।
याद रखना, बीमारी ही थोडे ही लगती है, स्वास्थ्य
भी लग जाता है। पागलपन ही थोड़े ही लगता है;
पागलों के साथ रहोगे, पागल हो जाओगे,
मुक्तों के साथ रहोगे तो मुक्त हो जाओगे—होने लगोगे

CamScanner

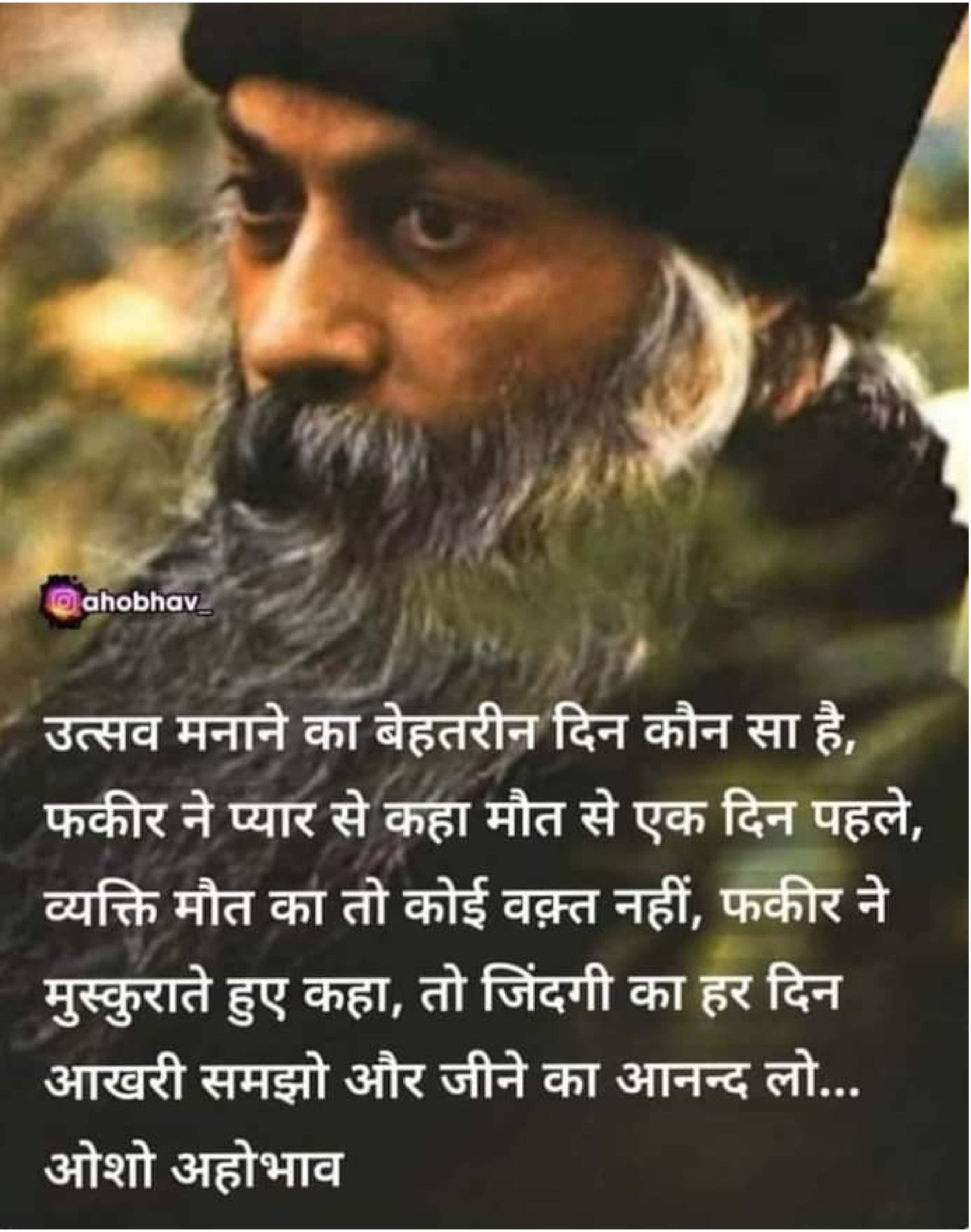
ahobhav_
उत्सव मनाने का बेहतरीन दिन कौन सा है,
फकीर ने प्यार से कहा मौत से एक दिन पहले,
व्यक्ति मौत का तो कोई वक़्त नहीं, फकीर ने
मुस्कुराते हुए कहा, तो जिंदगी का हर दिन
आखरी समझो और जीने का आनन्द लो...
ओशो अहोभाव

CamScanner

ओशो

रामकृष्ण मरणशय्या पर थे। उनकी पत्नी शारदा रोने लगी और उसने पूछा कि परमहंस देव! आप तो जा रहे है, मेरा क्या होगा?

Oshoravi

उन्होंने आंख खोली और कहा कि जा रहा हूं! पागल, कहां जाऊंगा? जाने को कोई जगह कहां है? यहीं था, यहीं रहूंगा। अभी देह मे था, अब बिना देह के रहूंगा।

CS CamScanner

oshoduniya.com

संन्यास- एक नई आंख

एक बीज टूट जाता है और हरे पत्ते निकल आते हैं- परमात्मा का प्रमाण है। और क्या प्रमाण चाहिए? और बड़ा क्या चमत्कार होगा ? मुर्दा से दिखते बीज से हरे पत्ते निकल आए हैं, पत्तों में पत्ते निकलते गए हैं, कलियां आ गई हैं, हरे पत्तों में लाल कलियां आ गई हैं! फूल खिल आया है। जिन पत्तों में कोई गंध न थी, जिस भूमि से पत्ते उठे उस भूमि में कोई गंध न थी, और फूल ने वातावरण को सुगंध से भर दिया, आपूरित कर दिया ! और क्या चमत्कार है? इतना काफी है। जिनके पास आंखें हैं, जिनके पास अनुभव करने को हृदय है, जिनके पास थोड़ी सी भी प्रज्ञा है, जरा सा भी बोध है—उनके लिए परमात्मा का प्रमाण सुबह में मिल जाता है, सांझ में मिल जाता है, उठते-बैठते मिल जाता है, लोगों की आंखों में मिल जाता है। उनके लिए किसी रसूल की कोई जरूरत नहीं है..✍️❤️💻

- बिरहिनी मंदिर दियना बार

❤️ओशो❤️

CamScanner

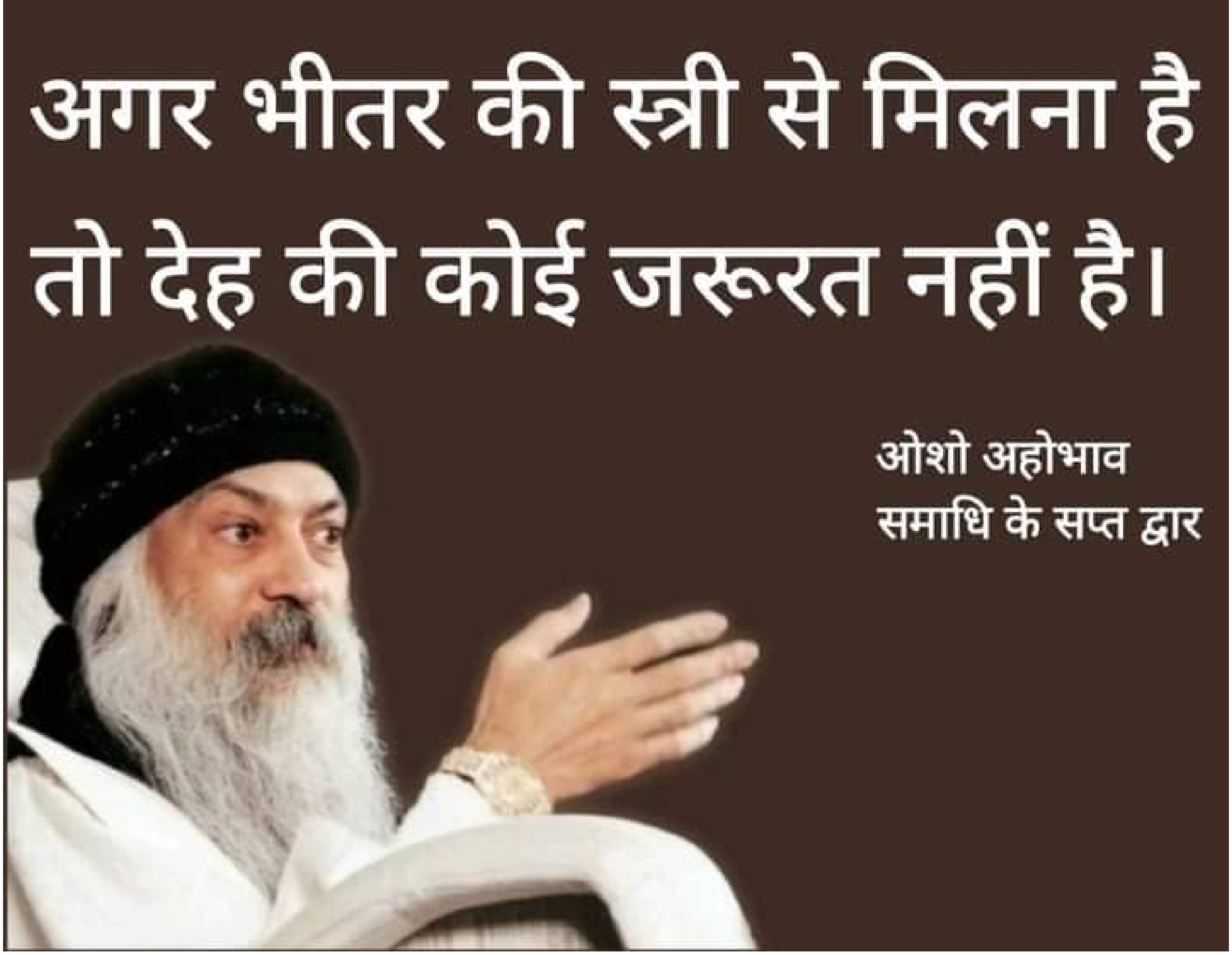

CamScanner

कृष्ण गीता में एक बहुत ही
अनूठी बात कह रहे है।
और वे यह कह रहे है कि
संसारी और संन्यासी विपरीत नहीं है।
एक-दूसरे से उलटे नहीं है।
संसार से भागकर कोई संन्यासी नहीं होता,
संसार में जागकर कोई संन्यासी होता है।
और जागना हो, तो यहीं जाग जाओ।
कहीं भी भागो, इससे कोई अंतर नहीं पड़ता।
जागने के लिए कोई ख़ास जगह नहीं है,
कहीं भी जागा जा सकता है।
सपने मिटाने के लिए
खास सपने देखने की जरुरत नहीं है,
किसी भी सपने में जागा जा सकता है।

गीता-दर्शन, भाग-१, प्रवचन#७, ओशो

CamScanner

Oshoravi
लाओत्से का एक बड़ा ही
क़ीमती.. सूत्र है;- कि,
तुम अगर दुःख को
स्वीकार लो! तो आनंदित
हो जाओगे, क्योंकि
दुःख कभी स्वीकार को
जानता ही नहीं.!!
ओशो

CamScanner

CS CamScanner

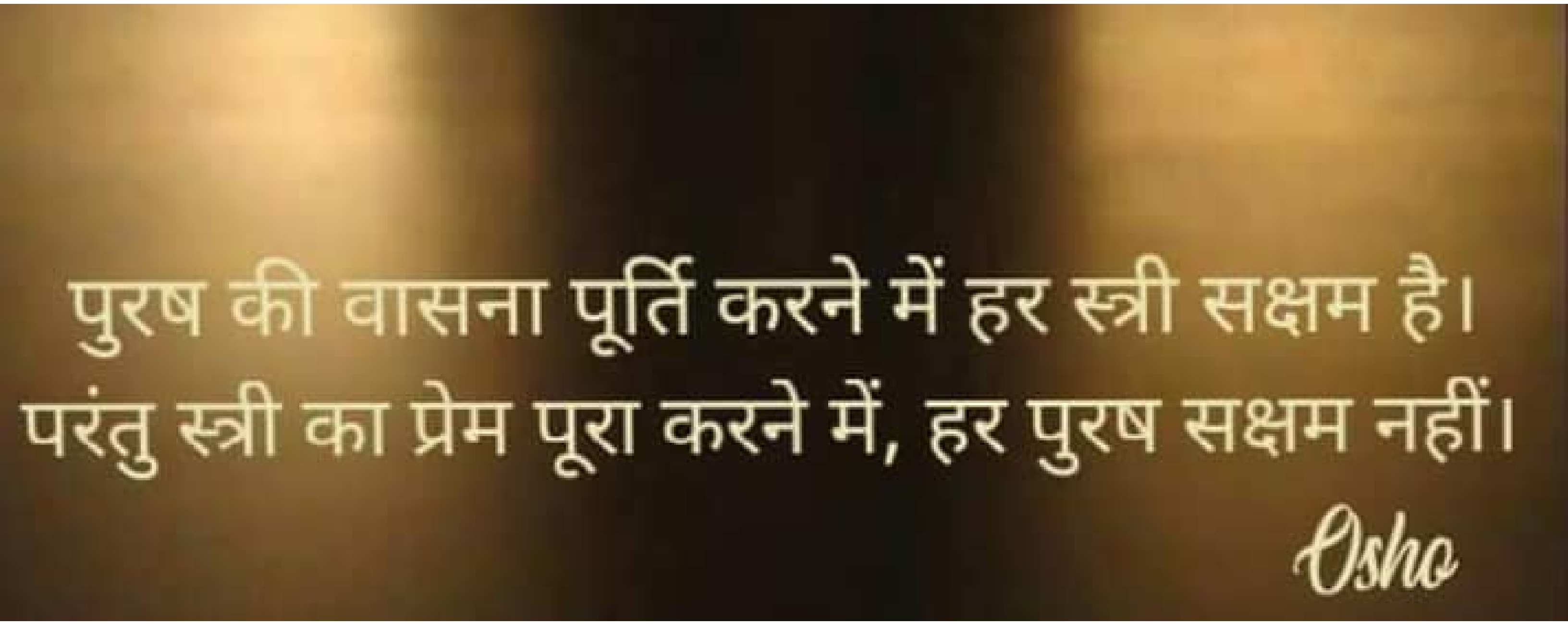
पुरुष की वासना पूर्ति करने में हर स्त्री सक्षम है।
परंतु स्त्री का प्रेम पूरा करने में, हर पुरुष सक्षम नहीं।
Osho

CamScanner

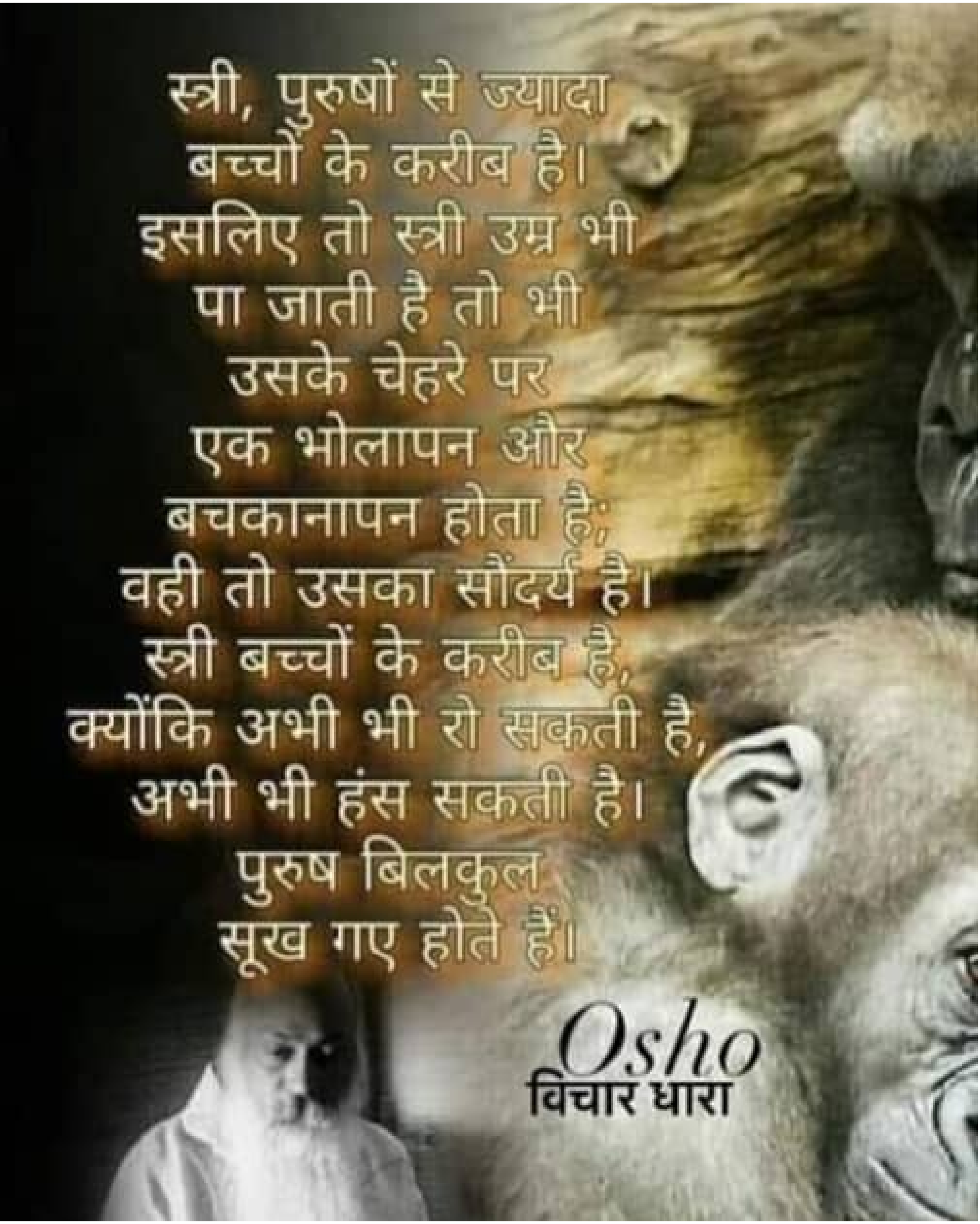

CS CamScanner

संसार में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो तुम्हें परमात्मा के पास जाने से रोक सके । बहुत मार्ग हैं, उसको खोजने के बुद्ध और मीरा दोनो विपरीत छोर पर खडे थे, रास्ते अलग थे पर पाया उसी को

OSHO

CamScanner

CamScanner

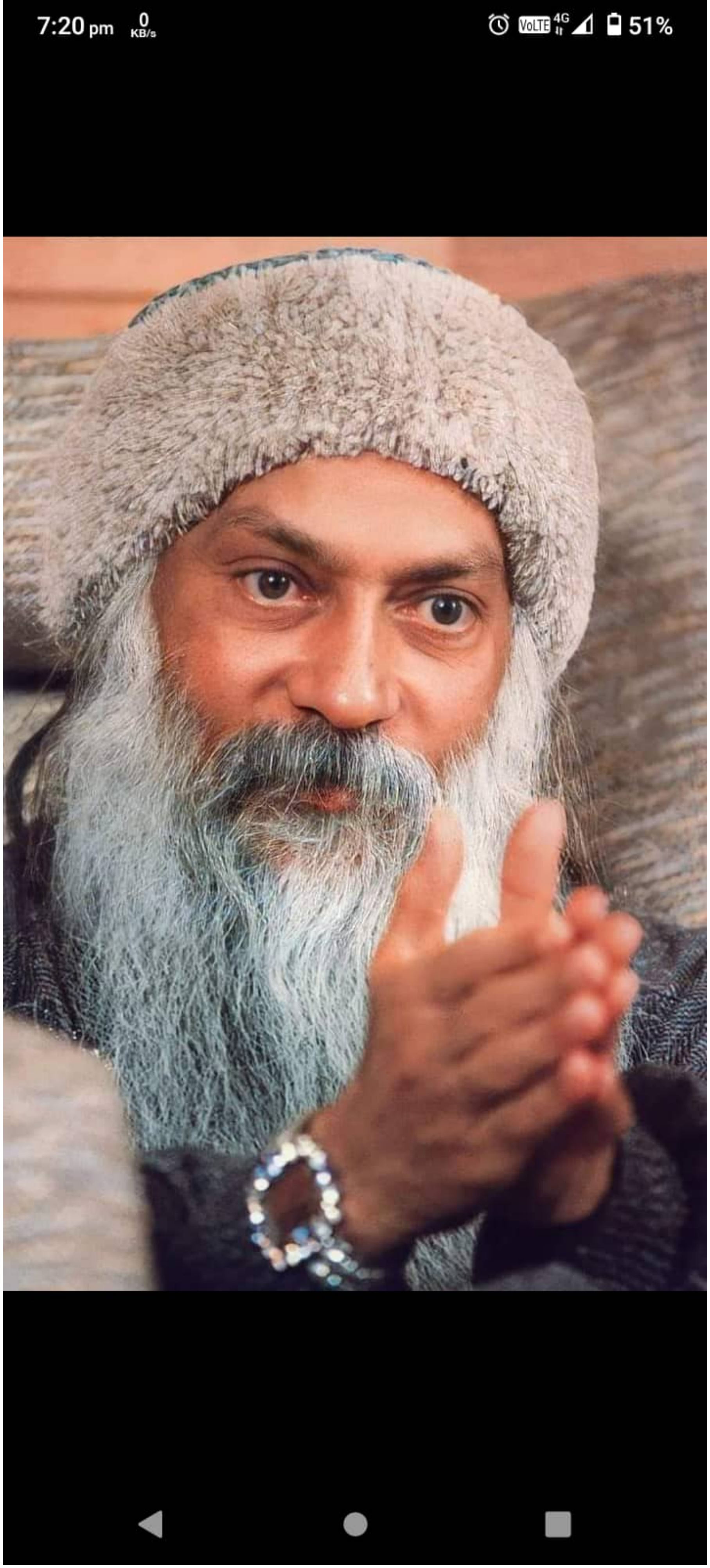

CamScanner

आपका रोम-रोम रोमांचित हो उठता है यह वह अवस्था है जब आप खुद के नियंत्रण से बाहर चले जाते हैं जब आपके अस्तित्व ने आप पर अधिकार कर लिया होता है और आपको खुद पता नहीं रहता कि आप कहां है। यह एक पागलपन है, यह एक नींद की तरह है, यह एक ध्यान है, यह एक मृत्य है।

एक बार ऐसा हुआ कि किसी साधु का शिष्य मर गया था।वह साधु उस शिष्य के घर गया।उसके शिष्य की लाश रखी थी और लोग रोते थे।उस साधु ने जाकर जोर से पूछा:'यह मनुष्य मृत है या जीवित?(Is this man dead or alive?)'इस प्रश्न से लोग बहुत चौंके और हैरान हुए।यह कैसा प्रश्न था!लाश सामने थी और पूछने की बात ही क्या थी?

थोड़ी देर सन्नाटा रहा और फिर किसी ने साधु से कहा:'आप ही बतावें?'

और जानते हैं कि साधु ने क्या कहा?साधु ने कहा:'जो मृत था,वह मृत है; जो जीवित था,वह अभी भी जीवित है।केवल दोनों में संबंध टूटा गया है।'

जीवन की कोई मृत्यु नहीं होती और मृत का कोई जीवन नहीं होता है

जीवन को जो नहीं जानते हैं,वे मृत्यु को जीवन का अंत कहते हैं। जन्म जीवन का प्रराम्भ नहीं है और मृत्यु उसका अंत नहीं है। जीवन-जन्म और मृत्यु के भीतर भी है और बाहर भी है।वह जन्म के पूर्व भी है और मृत्यु के पश्चात भी है।उसमें ही जन्म है, उसमें ही मृत्यु है;पर न उसका कोई जन्म है, न उसकी कोई मृत्यु है।

एक शवयात्रा से लौटा हूँ।वहाँ चिता से लपटें उठीं,तो लोग बोले:'सब समाप्त हो गया।' मैंने कहा:'आंखे नहीं हैं, इसीलिए ऐसा लगता है।'
ओशो

CamScanner

12:59 pm 0 KB/s VoLTE 4G 76%

osho suvichar

1d ·

बुद्ध के सामने कोई बैठा था। वह बैठकर अपने पैर का अंगूठा हिला रहा था। बुद्ध ने कहा ,मेरे भाई यह अंगूठा क्यों हिला रहे हो? जैसे ही बुद्ध ने कहा,वह रुक गया। उसने कहा मुझे खुद पता नहीं। आपने पूछकर मुश्किल में डाल दिया। मैं कोई जानबूझकर तो हिला नहीं रहा था बस हिल रहा था। बुद्ध ने कहा,"पूरी ज़िंदगी तुम्हारी ऐसी ही है।" तुमने जानकर क्या किया है?प्रेम किया है? क्रोध किया है? मोह किया है? लोभ किया है? आखिर तुमने जानकर किया क्या है? बस बेहोशी में पैर का अंगूठा हिल रहा है,पूरी ज़िंदगी ऐसी ही है। घर भी बसा लिया,परिवार भी है,बच्चे भी पैदा हो गए,जानकर तुमने क्या किया है? सब हो रहा है और उस सब होने में तुम यंत्रवत रूप से फंसे हुए हो। होशपूर्वक तुमने क्या किया है ज़िन्दगी में? कोई एक कृत्य है जो तुमने होशपूर्वक किया है? तुम्हारी चेतना से निकला हो। प्रेम किसी से हो गया है तुमने किया नहीं है। झगड़ा किसी से हो गया है तुमने किया नहीं है। आदमियों को तुम देखते हो और देखने भर से ही निर्णय कर लेते हो कि कोई अच्छा है या कोई बुरा है लेकिन होशपूर्वक कौन अच्छा है और कौन बुरा है? तुम जो भी ज़िन्दगी में बन गए हो, सांयोगिक दुर्घटना ही मालूम होती है। तुम होशपूर्वक नहीं चले हो,घटनाएं घट रही हैं और तुम मूर्छित बहे जा रहे हो। तुम नदी में बहते एक तिनके की भांति हो लहरें जहाँ ले जाती हैं वहाँ तुम जाते हो। हालांकि तिनका भी सोचता होगा कि मैं यात्रा कर रहा हूँ। ऐसे ही तुम सोचते हो कि तुम कुछ कर रहे हो। कर्ता हो ही कैसे सकता है जब होश ही नहीं है?

प्रवचन-शिवसूत्र

ओशो

14 1 share

Like Comment Share

भक्ति आंदोलन Bhakti Andolan

भक्ति आंदोलन Bhakti Andolan · 3d ·

CamScanner

बिस्तर पर पड़े-पड़े भी मोक्ष तक पहुचा जा सकता है। लेकिन तब आलस्य को साधना बना लेना जरूरी है।
और तब आलस्य के प्रति सजग हो जाना जरूरी है। भीतर साक्षी जग जाना चाहिए। साक्षी के लिए न तो कर्म की जरूरत है, न अकर्म की, जो भी हो रहा है, उसके प्रति साक्षी होने की जरूरत है,
विटनेसिंग की जरूरत है।
आप अगर आलसी है, तो आलस्य के प्रति सजग हो, उसे देखो।

ओशो

गीता दर्शन

CamScanner

18

Most relevant

Baba Singh
Bogus questions. Creation is still a mysterey and purpose of life is to survive and reproduce
See translation

1d Like Reply

Vinod Bansal
Kitni stik sarthak jawab. Kai bar aisa lagta hai kya aisa bhi koi insaan ho sakta hai. 90 ya 95 percent mujhe woh sahi lagte hai. Sirf ek do baat se mein sehmat nhi ho paata

1d Like Reply

Most relevant is selected, so some comments may have been filtered out.

Write a comment...

CamScanner

12:56 pm 0 KB/s VoLTE 4G 77%

wizloat.com
🔥 Hot Selling 🔥 - Recommended by Experts.
Shop now

6.3K 111 comments • 53 shares • 1M views

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य
Hardev Kaur · 4h ·

भिखमंगे भी इस देश में ज्ञान की बातें कहते हैं, मगर उसका प्रयोजन कुछ ज्ञान से नहीं है। *भिखमंगे भी कहते हैं कि दान से बड़ा पुण्य नहीं है।* कोई न उन्हें पुण्य से मतलब है, न दान से मतलब है। मतलब तुम्हारी जेब से है।

वे तुम्हारे अहंकार को फुसला रहे हैं कि दान से बड़ा पुण्य नहीं है, कहां जा रहे हो, दान करो! और लोभ को पाप का बाप बताते हैं। वह तुमसे कह रहे हैं कि लोभ पाप का बाप है, बचो इससे! दे दो, हम तुम्हें हलका किए देते हैं। और मांग रहे हैं। भिखमंगे हैं। और *मांगना लोभ से हो रहा है, लेकिन शिक्षा वे अलोभ की दे रहे हैं!*

तुम्हारे भिखमंगों में और तुम्हारे साधु—संतों में कुछ बहुत फर्क नहीं है। तुम्हारे भिखमंगे में और तुम्हारे साधु—संतों में इतना ही फर्क है कि भिखमंगे गरीब और साधु—संत थोड़े सुशिक्षित, थोड़े सुसंस्कृत। भिखमंगे थोड़े दीन—हीन, और तुम्हारे साधु—संत तुम्हारा शोषण करने में ज्यादा कुशल हैं।

💓ओशो💓

56 4 comments • 14 shares

Like Comment Share

ओ'शो मित्र मंडली
Ajay Sharma · 4h ·

CamScanner

दैनिक भास्कर

आज का इतिहास

धरती सूर्य का चक्कर लगाती है

ये बताने पर मिली उम्रभर की नजरबंदी

गैलीलियो ने सबसे पहले बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, इसे चर्च ने ईश्वरीय किताबों का अपमान माना।

22 जून 1633 को गैलीलियो को विधर्म का दोषी ठहरा कर नजरबंद कर दिया गया, 8 जनवरी 1642 को नजरबंदी में ही उनकी मौत हो गई।

31 अक्टूबर 1992 को चर्च ने अपनी गलती मानी और कहा कि गैलीलियो का सिद्धांत सही था।

CS CamScanner

हो सकता है परमात्मा हो या न हो, हो सकता है आत्मा हो या न हो, हो सकता है कि यह सब दुनिया जो हम देख रहे हैं ये न हो, हो सकता है सपना हो फिर भी एक बात निश्चित है, एक बात में कोई संदेह नहीं है कि जो यहां है वो सदा यहां नहीं है। एक बात निश्चित है कि मौत है। मौत से बड़ा कोई सत्य नहीं है।

~ओशो, चित चकमक लागे नाही, प्रवचन 1

CS CamScanner

12:53 pm 0 KB/s VoLTE 4G 77%

ये कोई पक्का भरोसा नहीं कि अभी आप जायें और घर पहुंच जाएं। आज पहुंच जाएंगे, कल नहीं पहुंच सकेंगे, कल पहुंच जाएंगे परसों नहीं पहुंच सकेंगे या फिर कितनी देर बचेंगे एक दिन वह होगा कि नहीं पहुंच पाएंगे। तो उसे दूर करके देखने से कोई फर्क नहीं पड़ता कि दस साल बाद वह दिन होगा या बीस साल बाद वह दिन होगा। जो जानता है वह उसे आज की रात ही करके देख लेता है। ऐसा ही सोच कर जाइए कि कल सुबह नहीं उठ सकेंगे फिर क्या करना है। ऐसा ही सोच कर जाइए कि कल सुबह नहीं होना है फिर क्या करना है। एक दिन तो जरूर ऐसी सुबह होगी कि आप नहीं होंगे, इसको तो पक्का मान लीजिए, इसमें कोई शक नहीं है। इसे समझाने की भी कोई जरूरत नहीं है, एक दिन तो पक्का ऐसा होगा कि सूरज उगेगा और आप नहीं होंगे। बहुत लोग जमीन पर थे वे अब नहीं हैं, आप हैं आप भी नहीं होंगे।

जिंदगी में मृत्यु से ज्यादा निश्चित कुछ भी नहीं है लेकिन उस पर भी सबसे कम विचार है और सब अनिश्चित है, और सब संदिग्ध है। हो सकता है परमात्मा हो या न हो, हो सकता है आत्मा हो या न हो, हो सकता है कि यह सब दुनिया जो हम देख रहे हैं ये न हो, हो सकता है सपना हो फिर भी एक बात निश्चित है, एक बात में कोई संदेह नहीं है कि जो यहां है वो सदा यहां नहीं है। एक बात निश्चित है कि मौत है। मौत से बड़ा कोई सत्य नहीं है।

~ओशो, चित चकमक लागे नाही

CamScanner

12:53 pm 0 KB/s VoLTE 4G 77%

राजा तो सोचा कि यदि घोड़ा उड़ना सीख जाए तो अदभुत बात होगी। तो उसने कहा इसमें कोई घबड़ाने की बात नहीं है। मत रो, कितनी देर लगेगी कि ये घोड़ा उड़ना सीख जाए। वजीर ने कहाः केवल एक वर्ष। राजा ने कहा यदि घोड़ा सीख गया तो मृत्यु के दंड से तुम बच ही जाओगे। फिर से तुम्हें वजीर बना देंगे और बहुत धन संपत्ति जो तुम चाहोगे देंगे और इसमें कोई हर्ज नहीं हो रहा है और यदि वर्ष भर बाद घोड़ा उड़ना नहीं सीखा तो तुम्हें फांसी लगा देंगे, वर्ष भर बाद लगा देंगे। वजीर घोड़े पर बैठ कर घर लौट आया। घर तो लोग रो रहे थे कि उसको फांसी हो गई है, उसको घर पर देख कर सब हैरान हुए।

उन सबने पूछा कैसे तुम लौट आए। उसने सारी कथा बताई। तो भी उसकी पत्नी रोती रही, बच्चे रोते रहे। उसने कहा तुम रोना बंद करो, उसकी पत्नी ने कहा मैं तो जानती हूं कि तुम घोड़े को उड़ाने की कोई कला जानते नहीं, तो तुमने ये क्या पागलपन किया। आज मरते तो वर्ष भर बाद मरोगे और हमारे लिए तो ये वर्ष भर भी तुम्हारी मृत्यु की प्रतीक्षा का समय होगा हम तो दुखी ही होंगे। अगर ऐसा ही किया था धोखा ही किया था तो कम से कम बीस वर्ष, पचास वर्ष, ऐसा कोई वक्त मांगते। लेकिन वह वजीर हंसने लगा उसने कहा कि तुम जिंदगी के रिवाज नहीं जानती हो। मैं मर जाऊं, घोड़ा मर जाए, बादशाह मर जाए। साल भर बड़ी बात है। और बीस वर्ष मांगता तो राजा की हिम्मत नहीं हो सकती थी। बीस वर्ष बहुत लम्बा समय होता है। एक वर्ष मांगा है, एक वर्ष बहुत लंबा वक्त है और कुछ भी हो सकता है। मैं मर सकता हूं, घोड़ा मर सकता है, बादशाह मर सकता है। बात टल जाएगी।

यह कहानी उनसे कही और घटना तो ऐसी घटी कि जिसकी कभी कोई कल्पना नहीं थी, वे तीनों ही मर गए उस वर्ष। राजा भी, वजीर भी और घोड़ा भी। यह उनसे कहा। नाला उतर गया, वे गाड़ी लेकर चले गए। और मुझसे बोले कि लौट कर आता हूं तो आपसे मिलूंगा। उन्होंने भी वही बात कही बातें हमारी कुछ ऐसी होती हैं कि कितना ही कहा जाए बार-बार हम फिर-फिर वही कहने लगते हैं, वही करने लगते हैं। उन्होंने फिर जाते वक्त मुझसे यही कहा कि लौट कर आते वक्त आपसे जरूर मिलूंगा, मुझे बहुत आनंद हुआ। मैं हंसने लगा, उनकी गाड़ी निकल गई, फिर पीछे मेरी गाड़ी निकली। दो मील के बाद ही मैंने उन्हें मरा हुआ

CamScanner

12:53 pm 0 KB/s VoLTE 4G 77%

मैं एक यात्रा में था। वर्षा के दिन थे और पहाड़ी नदी के किनारे मुझे थोड़ी देर रूक जाना पड़ा। मेरी गाड़ी रूक गई। एक नाला था और जोर से गिरता था। मेरे पीछे और दो-तीन गाड़ियां थीं, वे भी रूक गईं। जो उनमें थे वे मेरे अपरिचित थे लेकिन मुझे बैठा देख कर मेरे पास आए और मुझसे कुछ बातें शुरू कीं। मैं उनसे बात कर रहा था और उनसे इस संबंध में अचानक बात हो आई उन्होंने मुझसे पूछा कि सबसे ज्यादा सोचने जैसी बात क्या है? तो मैंने उनसे कहा एक ही बात सोचने जैसी है और वह मृत्यु। बहुत उनसे बात होती रही। उन्होंने मुझसे कहा कि लौट कर वे मुझसे मिलेंगे। मैंने मजाक में उनसे कहा कि लौट कर मिलने का कोई पक्का भरोसा नहीं है। हो सकता है मैं न बचूं, हो सकता है आप न बचें, हो सकता है हम दोनों बचें लेकिन मिलने का कोई संयोग न बचे।

उनसे मैंने एक छोटी सी कहानी कही और कभी मेरी कल्पना में न था कि क्या होगा जाते-जाते नाला उतर गया और तब मैंने उनसे एक कहानी कही कि चीन में एक बादशाह अपने वजीर पर नाराज हो गया। उसने उसे कैद कर दिया और तय किया कि फलां-फलां दिन सुबह उसे फांसी दे देगा लेकिन उस राज्य का रिवाज था कि जब भी किसी को फांसी हो तो फांसी के दिन सुबह-सुबह राजा खुद जाकर उस कैदी को मिले और उस कैदी की जो भी मंशा हो तो उसे पूरी करे। फिर तो वह वजीर था ऐसे राजा का बहुत प्यारा रहा था लेकिन कोई भूल-चूक हुई थी और राजा नाराज हुआ था और फांसी की सजा दे दी थी। आज फांसी होनी थी तो सुबह-सुबह ही राजा आया अपने घोड़े से उतरा और वजीर से बोला: कोई तुम्हारी अंतिम इच्छा हो तो मैं पूरी कर दूं। लेकिन ये कहते ही वजीर की आंखों में आंसू आ गए। राजा बहुत हैरान था। वजीर बहुत बहादुर था। रोना उसने जाना नहीं था जीवन में और ये असंभव था कि अपनी मौत के खयाल से वे रोने लगे। ये असंभव था। राजा हैरान हुआ उसने कहा कि तुम्हारी आंखों में आंसू देख कर मैं हैरान हो रहा हूं। वजीर ने कहा इसलिए नहीं रोता हूं कि मेरी मौत करीब आ गई है। रोता हूं किसी और बात से, रोता हूं आपके घोड़े को देख कर। राजा ने कहा कि इसमें मेरे घोड़े को देख कर रोने की क्या बात है। और वजीर ने कहा: मैंने बरसों मेहनत करके एक कला सीखी थी, मैंने एक विज्ञान सीखा था कि घोड़े को मैं उड़ना सिखा सकता था लेकिन जिस

CamScanner

CS CamScanner

The real world is not the problem – the world around your mind is the problem.

OSHO

CamScanner

कृष्ण का आदेश

एक बार, एक अत्यंत गरीब महिला, जो "श्रीकृष्ण" पर, अटूट विश्वास करती थी, अत्यंत ही, विकट स्थिति में आ गई ! कई दिनों से खाने के लिए, पूरे परिवार को नहीं मिला।

एक दिन, उसने रेडियो के माध्यम से, "श्रीकृष्ण" को अपना सन्देश भेजा, कि वे उसकी मदद करें। यह प्रसारण, एक नास्तिक, घमण्डी, और अहंकारी, उद्योगपति ने सुना और उसने सोचा कि, क्यों न, इस महिला के साथ, कुछ ऐसा मजाक किया जाये, कि उसकी "श्रीकृष्ण" के प्रति आस्था, डगमगा जाये। उसने अपने सेक्रेटरी को कहा, कि वह ढेर सारा खाना और महीने भर का राशन, उसके घर पर देकर आये, और जब वह महिला पूछे, किसने भेजा है, तो कह देना कि शैतान ने भेजा है !

जैसे ही, महिला के पास, सामान पहुँचा, पहले तो उसके परिवार ने तृप्त होकर भोजन किया, फिर, वह सारा राशन अलमारी में रखने लगी। जब महिला ने पूछा नहीं कि, यह सब किसने भेजा है। जब सेक्रेटरी से रहा नहीं गया, तो उसने कहा–'आपको क्या जिज्ञासा नहीं होती कि, यह सब किसने भेजा है ?'

उस महिला ने बेहतरीन जवाब दिया–'मैं इतना क्यों सोंचू या पूछूँ ? मुझे मेरे श्रीकृष्ण पर पूरा भरोसा है, मेरा "कृष्ण" जब आदेश देता है, तो, "शैतानों" को भी उस आदेश का पालन करना पड़ता है।'

जय जय श्री राधे

CamScanner

12:42 pm 10 KB/s VoLTE 4G 79%

facebook

380 12 comments • 13 shares

Like Comment Share

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg

Parshotam Rai · 39m ·

रात के दो बजे थे।

एक श्रीमंत को निंद नहीं आ रही थी, चाय पी,टीवी देखा, घर में कई चक्कर लगाये पर चैन नहीं पड़ा। *

आखिर मैं थक कर नीचे आया कार निकाली और शहर की सड़कों पर निकल गया। रास्ते में एक मंदिर दिखा सोचा थोड़ी देर इस मंदिर में भगवान के पास बैठता हूं प्रार्थना करता हूं तो शायद शांति मिल जाय।

वह आदमी मंदिर के अंदर गया तो देखा, एक दूसरा आदमी भगवान की मूर्ति के सामने बैठा था, उदास चेहरा, आंखों में करूणता।

श्रीमंत ने पूछा " क्यों भाई इतनी रात को?"

आदमी ने कहा " मेरी पत्नी अस्पताल में है, सुबह यदि उनका आपरेशन नहीं हुआ तो मर जायेगी और मेरे पास आपरेशन का पैसा नहीं है" ।

इस श्रीमंत ने पाकिट में जीतने रूपए थे दिया। गरिब आदमी के चहरे पे चमक आई।

श्रीमंत ने कार्ड दिया और कहा इस में फोन नं. और पता भी है और जरूरत हो तो निसंकोच बताना।

वह गरिब आदमी ने कार्ड वापीस दिया और कहा "मेरे पास एड्रेस है" यह एड्रेस की जरूरत नहीं है शेठजी।

*आश्चर्य से श्रीमंत ने कहा "किसका एड्रेस है" वह गरिब आदमी ने कहा

"जिसने रात को साढ़े तीन बजे आपको यहां भेजा उनका"

जय श्री राधे गोविन्द ❣️🙏🏼

1 1 comment

Like Comment Share

CamScanner

12:39 pm 6 KB/s VoLTE 4G 79%

टालस्टॉय ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि मैं एक दिन जा रहा था एक राह के किनारे से, एक भिखमंगे ने हाथ फैला दिया। सुबह थी, अभी सूरज ऊगा था और टालस्टॉय बड़ी प्रसन्न मुद्रा में था, इंकार न कर सका। अभी– अभी चर्च से प्रार्थना करके भी लौट रहा था, तो वह हाथ उसे परमात्मा का ही हाथ मालूम पड़ा। उसने अपने खीसे टटोले, कुछ भी नहीं था। दूसरे खीसे में देखा, वहा भी कुछ नहीं था। वह जरा बेचैन होने लगा। उस भिखारी ने कहा कि नहीं, बेचैन न हों, आपने देना चाहा, इतना ही क्या कम है! टालस्टॉय ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। और टालस्टॉय कहता है, मेरी आंखें आंसुओ से भर गईं। मैंने उसे कुछ भी न दिया, उसने मुझे इतना दे दिया। उसने कहा कि आप बेचैन न हों! आपने टटोला, देना चाहा–इतना क्या कम है? बहुत दे दिया!

न दे कर भी देना हो सकता है। और कभी–कभी दे कर भी देना नहीं होता। अगर बेमन से दिया तो देना नहीं हो पाता। अगर मन से देना चाहा, न भी दे पाए, तो भी देना घट जाता है–ऐसा जीवन का रहस्य है। बांटते चलो! धीरे– धीरे तुम पाओगे, जैसे–जैसे तुम बांटने लगे ऊर्जा, वैसे–वैसे तुम्हारे भीतर से कहीं परमात्मा का सागर तुम्हें भरता जाता। नई–नई ऊर्जा आती, नई तरंगें आतीं। और एक दफा यह तुम्हें गणित समझ में आ जाए. .यह जीवन का अर्थशास्त्र नहीं है, यह परमात्मा का अर्थशास्त्र है, यह बिलकुल अलग है। जीवन का अर्थशास्त्र तो यह है कि जो है, अगर नहीं बचाया तो लुटे। इसको तो बचाना, नहीं तो भीख मांगोगे!

मैंने सुना, एक भिखमंगा मुल्ला नसरुद्दीन के द्वार पर भीख मांग रहा था। मुल्ला ने उसे खूब दिल खोल कर दिया। खिलाया, पिलाया, वस्त्र पहनाए, जाने लगा तो दस का नोट भी दिया। फिर मुल्ला ने उससे पूछा कि तुम आदमी तो भले मालूम पड़ते हो, तुम्हारे चेहरे से संस्कार मालूम पड़ता है। तुम्हारे वस्त्र भी यद्यपि दीन, मलिन हैं, फटे–पुराने हैं, लेकिन कीमती मालूम होते हैं। यह दशा तुम्हारी कैसे हुई?

वह कहने लगा, जैसे आप कर रहे हैं, ऐसे ही मैं करता था। जल्दी आपकी भी यही दशा हो जाएगी। दे–दे कर यह दशा हुई। बांटता रहा, उसी में लुट गया।

तो एक तो इस बाहर के जगत का अर्थशास्त्र है : यहां छीनो तो मिलेगा, यहां दो तो खो जाएगा। एक भीतर का अर्थशास्त्र है, कबीर ने कहा दोनों हाथ उलीचिए! उलीचते रही तो नया आता रहेगा। बांटते रहो तो मिलता

CamScanner

तुम लक्ष्मी देकर..
लक्ष्मी जी! की मूर्ति
खरीदते हो..
और फिर उसी मूर्ति से
लक्ष्मी मांगते हो! ये,
कहाँ की बुद्धिमानी है!
ओशो

CamScanner

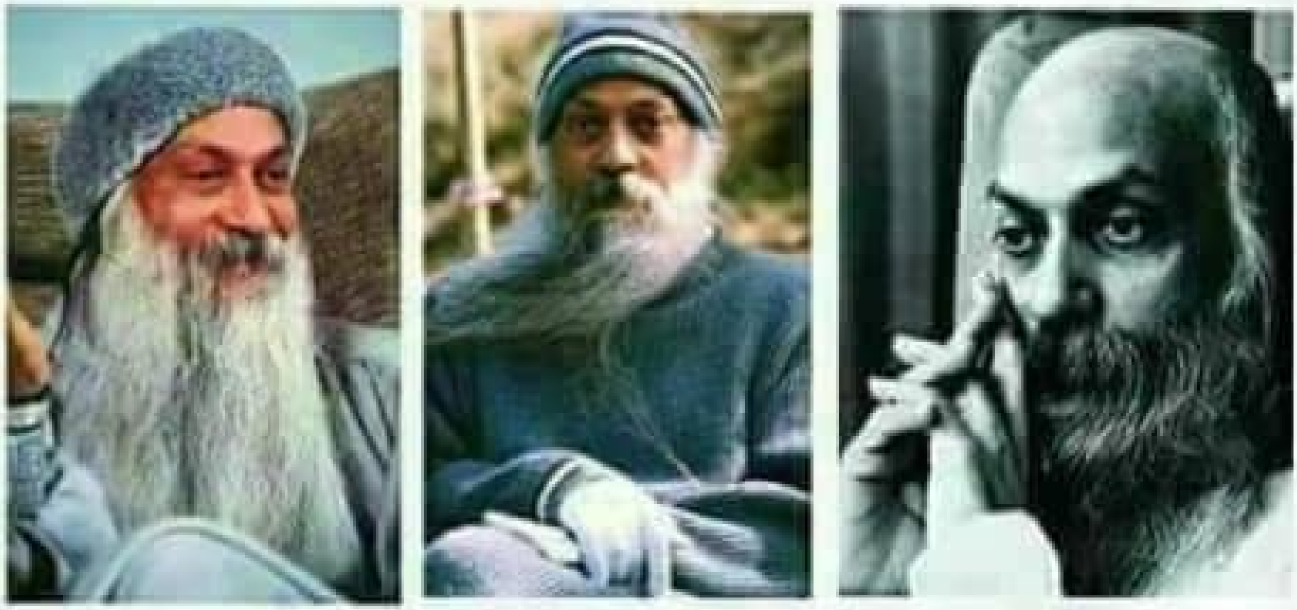

जिस दिन तुम्हारा और तुम्हारी प्रेयसी के
बीच प्रेम चुक जाएगा, उस दिन तुम यह
मत सोचना कि प्रेयसी ने धोखा दिया है;
यह मत सोचना कि प्रेमी दगाबाज
निकला। नहीं, प्रेम दगाबाज है।
न तो प्रेयसी दगाबाज है,
न प्रेमी दगाबाज है
प्रेम दगाबाज है। जिसे तुमने प्रेम जाना
था वह क्षणभंगुर था, पानी का बबूला था।
अभी—अभी बड़ा होता दिखता था।
ओशो अष्टावक्र महागीता

CamScanner

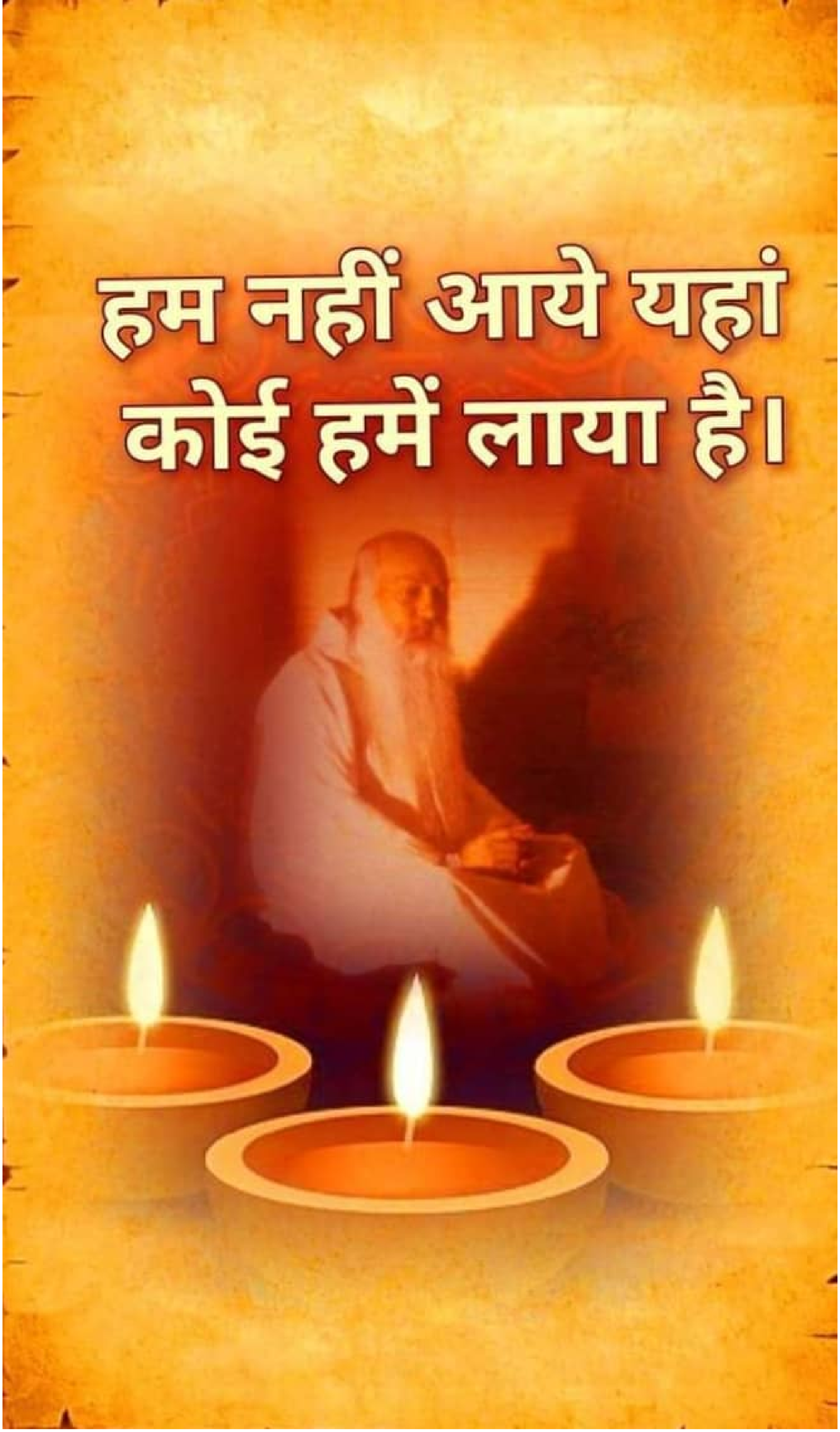

CamScanner

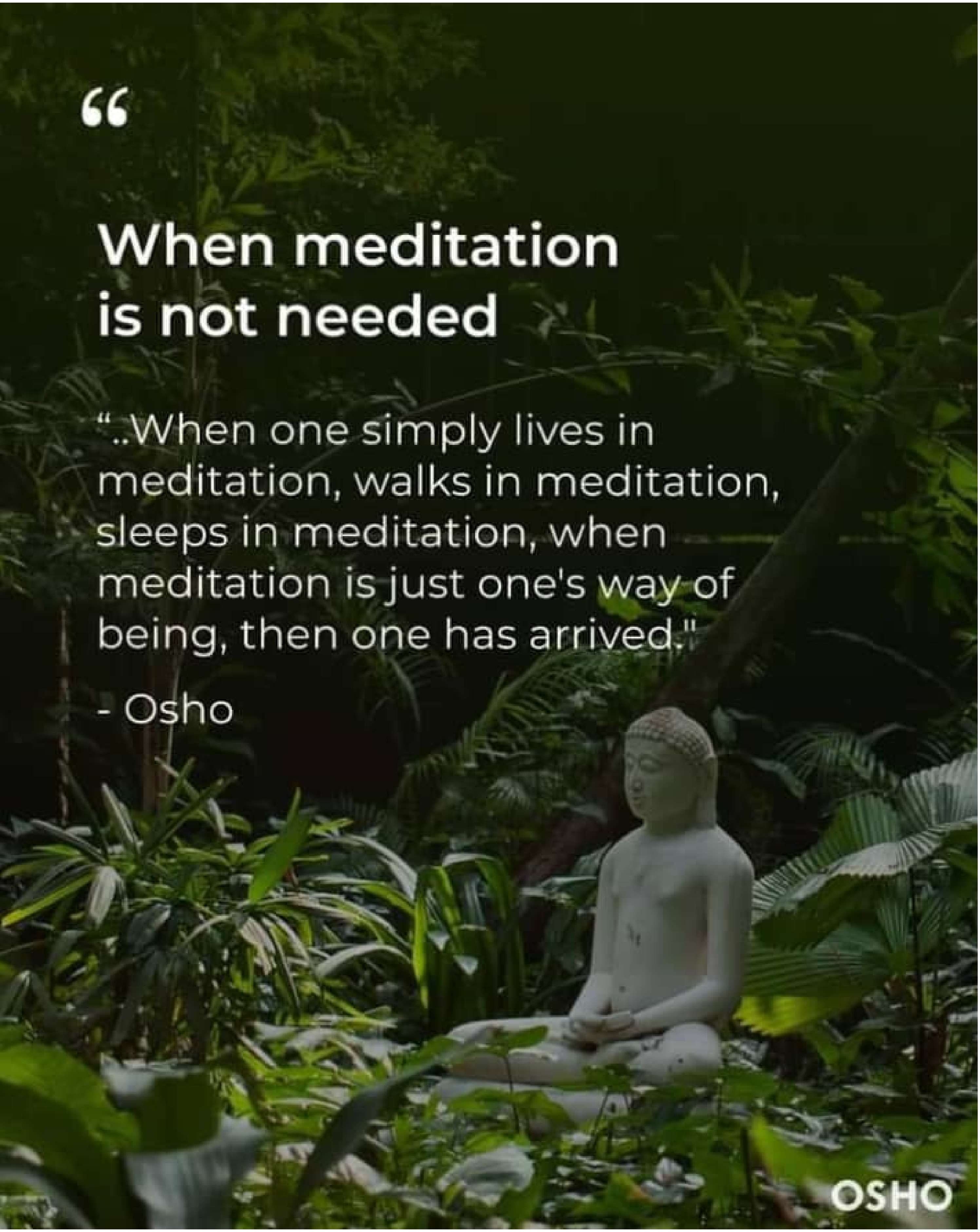
“
When meditation
is not needed
“..When one simply lives in
meditation, walks in meditation,
sleeps in meditation, when
meditation is just one's way of
being, then one has arrived."
- Osho
OSHO

CamScanner

तुम व्यर्थ में ही अच्छे अवसरों को
ढूंढने में लगे हो....तुम जिंदा हो,
क्या ये बड़ा अवसर नही है.....

CamScanner

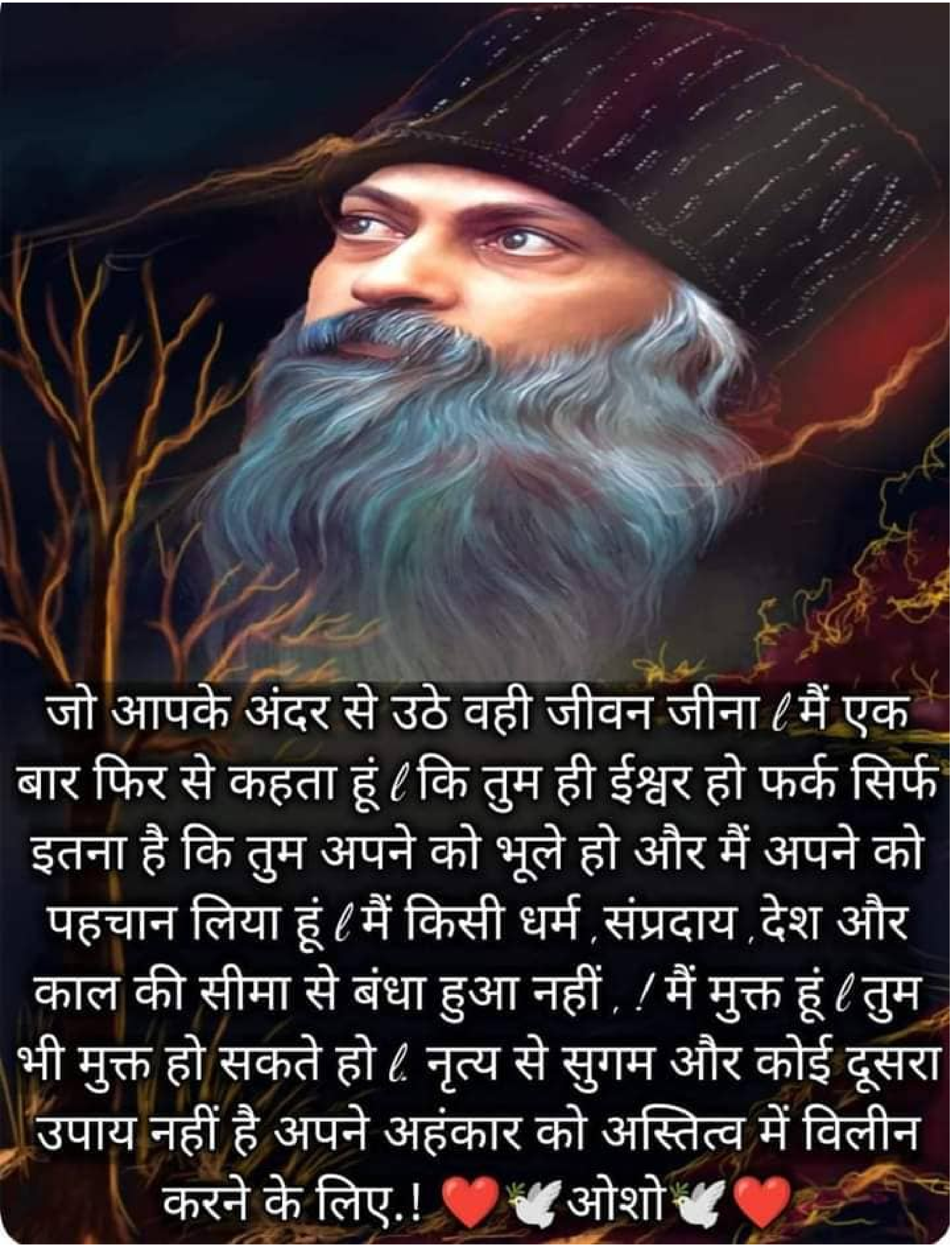

CS CamScanner

7:32 am 0 KB/s VoLTE 4G 99%

5

कि वह ऋषि बगैर कोशिश के हैं।
उपनिषद में एक कथा है की चार मित्र जा रहे है और पहाड़ के ऊपर एक साधु को खडा देखते हैं। एक कहता हैं की वह किसी की राह देख रहा हैं....दुसरा मित्र कहता उस की गाय कही चली गई उसे खोज रहा है...तिसरा मित्र कहता कि वह हमे देख रहा हैं और चौथा कहता हैं साधू को नीचे आना चाहता है सोच रहा है कि धूप हैं नीचे जाऊं या न जाऊ....ऐसे बात चीत करते वह शर्त लगाते है की जिस की बात ठीक निकलेगी...वह शर्त जीत जाएगा और दुसरे लोग उसे दस दस रुपये देंगे... ऐसे में वह पहाड़ पर पहुंच कर उस साधु के पास जा अपनी शर्त बताते हैं और नवेदन करते है कि हम सब में किस की बात सच हैं।
साधु ने कहा मै किसी की राह नहीं देख रहा था,मेरी गाय भी गुम नहीं हुई, मैने आप को तो देखा भी नहीं था...और न ही मुझे नीचे किसी काम से जाना हैं....क्षमा करना आप में से किसी का भी अंदाजा ठीक नहीं मै तो बस यहां हूँ बगैर किसी कारण से हूँ....
घंटी , इसी प्रकार हम भी अपनी धारणाओं ,मानयताओं , संस्कारों , पूर्वाग्रहों ,कल्पनाओं के साथ उलझे रहते हैं और जिस के साथ हम होते हैं हम वहीं हो कर अपना वास्तविक सवरुप भूल कर उसी के गुलाम हो कर अपनी स्वतंत्रता , मुक्ति , मोक्ष , शून्य , निरपेक्ष , सहज , अमृत, निरलेप, अजन्म , एकता , केवली...इत्यादि अवस्था से बाहर हो जाते हैं....

घंटी , यह जो तुम ईश्वर हो.... वह सब स्वतंत्रता , मुक्ति मोक्ष....इत्यादि गुणों का जोड हैं जो बाहर से नहीं दिखाई देते....इन गुणों को जानते जानते मानव गुणों को उपलब्ध हो जाता हैं ...शायद अपने लिए अहंब्रह्यास्मि के उद्घोष करने की भी जरूरत नहीं मगर वह यह मान लेता है कि यह गुण तो नैसर्गिक हैं सब के पास हैं... बस ... वह सब इसे जानते नहीं। यही बात गीता में कृष्ण ने अर्जुन को कहा की मैं जानता हूँ तुम जानते नहीं हो....

घंटी , यह मुक्ति ... जो किसी धर्म जाति देश काल से संबंधित नहीं.... किसी की गुलामी नहीं...वही ऐश्वर्य हैं...इस ऐश्वर्य से ही कोई ईश्वर हैं...चमत्कारी नहीं...स्वतंत्र होना कोई चमत्कार नहीं मगर अचम्भा जरूर हैं....
आज इतना ही......

CS CamScanner

मस्त आदमी का क्या अर्थ होता है? मस्त आदमी का अर्थ होता है: अब कोई चलाने वाला नियंत्रण भीतर न रहा। अब तो छोड़ दिया सब परमात्मा पर। जहां उसकी मरजी हो, ले जाए। डुबाना हो-- डुबा दे; हम गीत गुनगुनाते डूब जायेंगे। मिटना हो--मिटा दे; हम मुस्कुराते मिट जायेंगे। जो उसकी मरजी; जैसी उसकी मरजी।

कन थोरे काकर घने -2

ओशो

OSHO MADHUSHALA

CamScanner

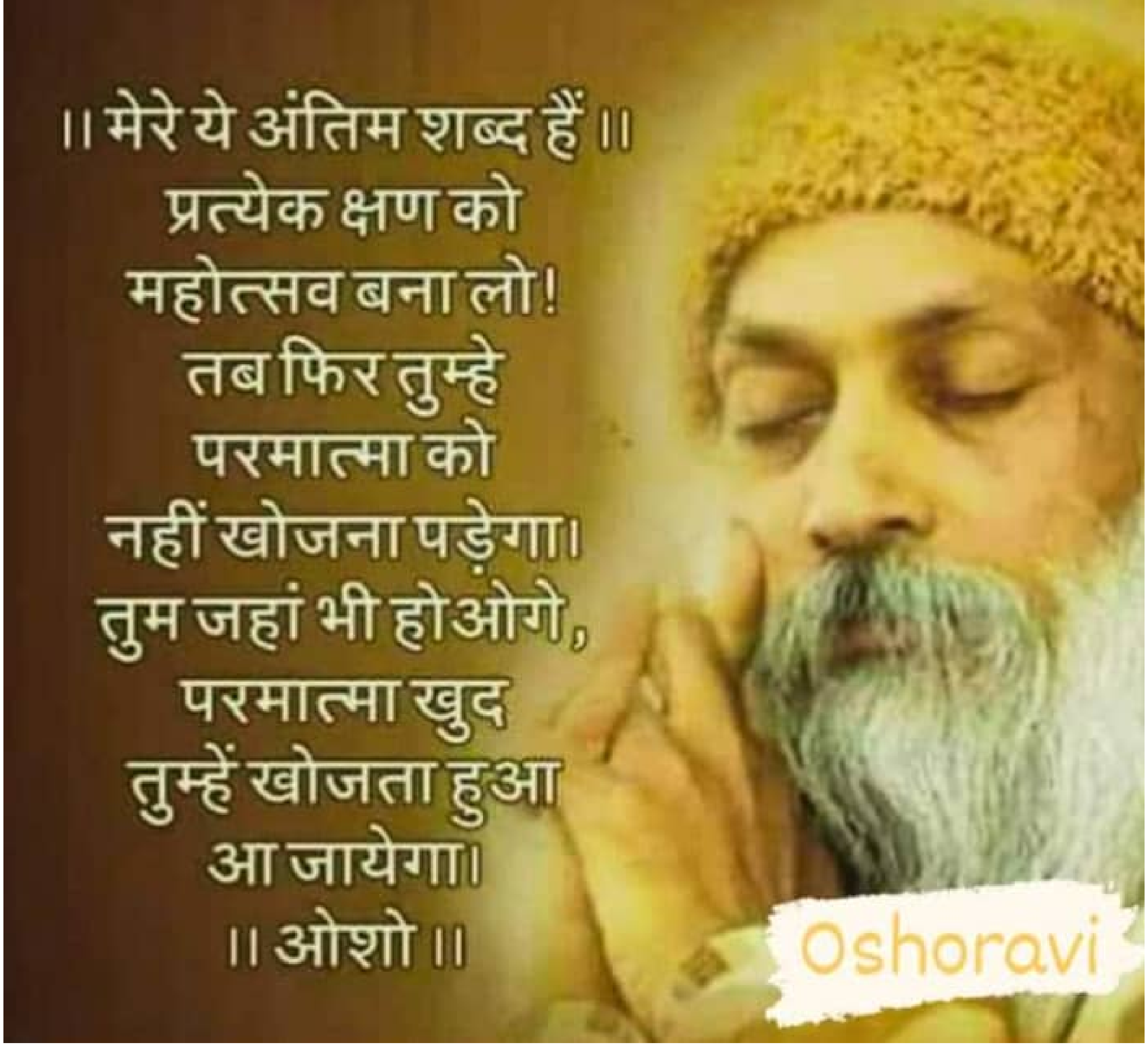
।। मेरे ये अंतिम शब्द हैं ।।
प्रत्येक क्षण को
महोत्सव बना लो!
तब फिर तुम्हे
परमात्मा को
नहीं खोजना पड़ेगा।
तुम जहां भी होओगे,
परमात्मा खुद
तुम्हें खोजता हुआ
आ जायेगा।
।। ओशो ।।
Oshoravi

CamScanner

8:53 pm 0 KB/s VoLTE 4G 38%
facebook

बहे जाते है। उसने कहा नही अब द्वार खुलवाने नही आयी, अब ठहरने नहीं आई केवल धन्यवाद देने आई हूं।

अगर तुम आज मुझे अपने घर में ठहरा लेते तो रात आकाश के तारे ओर फूलो का चटख कर खिल जाना मैं देखने से वंचित ही रह जाती। मैं सिर्फ धन्यवाद देने आई हूं कि तुम्हारी बडी कृपा थी कि तुमने द्वार बंद कर लिये और मैं खुले आकाश के नीचे सो सकी। तुम्हारी बडी कृपा थी कि तुमने घर की दीवालों से बचा लिया और खुले आकाश में मुझे भेज दिया।

जब तुमने भेजा था तब तो मेरे मन को लगा था कैंसे बूरे लोग हैं, अब मैं यह कहने आई हूं कि कैंसे भले लोग हैं इस गांव के मैं धन्यवाद देने आई हूं। परमात्मा तुम पर पर कृपा करें।

जैसी तुमने मुझे एक अनुभव की रात दे दी, जो आनन्द मैंने आज जाना हैं जो फूल मैंने आज खिलते देखे हैं जैसे मेरे भीतर भी कोई चाटख गई हो और खिल गई हो। जैसी आज अकेली रात में आकाश के तारे देखे हैं जैसे मेरे भीतर ही कोई आकाश स्पष्ट हो गया हो, और तारे खिल गये हो मैं उसके लिए धन्यवाद देने आई हूं।भले लोग हैं तुम्हारे गांव के |

परिस्थिति कैसी हैं इस पर कुछ निभर नहीं करता। हम परिस्थिति को कैंसे लेते हैं इस पर सबकुछ निर्भर करता। तब तो राह पर पडे हुए पत्थर भी सीढिया बन जाते है। और जब हम परिस्थतियों को गलत ढंग से लेने के आदि हो जाते हैं तो सीढ़िया भी मंदिर की पत्थर मालूम पडने लगती है।

जिनसे रास्ता रूकता हैं पत्थर सीढी बन सकते है। सीढियां पत्थर मालूम हो सकती है, अवसर दूर्भाग्य मालूम हो सकते है। हम कैंसे लेते हैं हमारी देखने की दृष्टि क्या है। हमारी पकड क्या है, जीवन का कोण हमारा क्या है, हम कैंसे जीवन को लेते हैं और देखते है।

आशा भर कर जीवन को देखें। साधक अगर निराश से जीवन को देखेगा तो गति नही कर सकता है। आशा से भरकर जीवन को देखें। अधैर्य से भरकर अपने जीवन को देखेंगे तो मन को साधक एक कदम आगे नहीं बड सकता है। धैर्य से अनन्त धैर्य जीवन को देखें। उतावले पन में जीवन को देखेंगे , शीघ्रता में भागते हुए तो साधक एक इंच आगे नही बड सकता है।

CamScanner

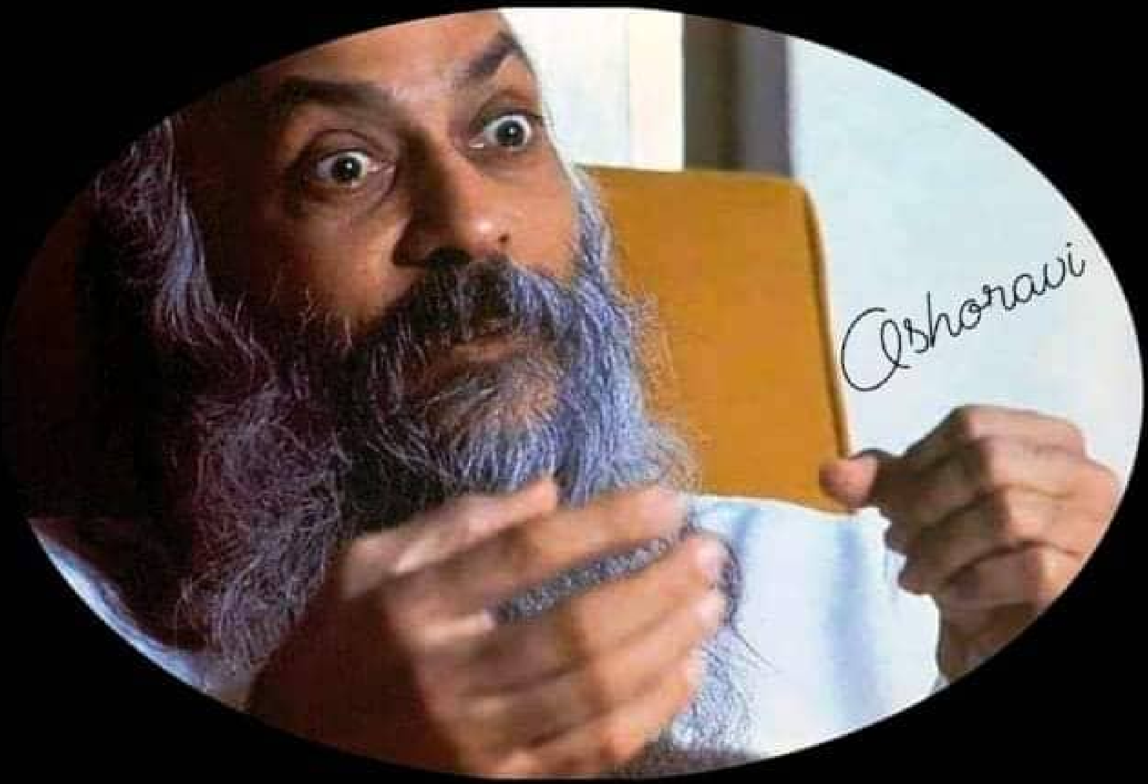

परमात्मा कभी दृश्य नहीं बनता; परमात्मा तो तुम्हारे भीतर छिपे हुए द्रष्टा का नाम है। तुम्हारी आंख से भी जो देख रहा है, वह परमात्मा ही है।

CS CamScanner

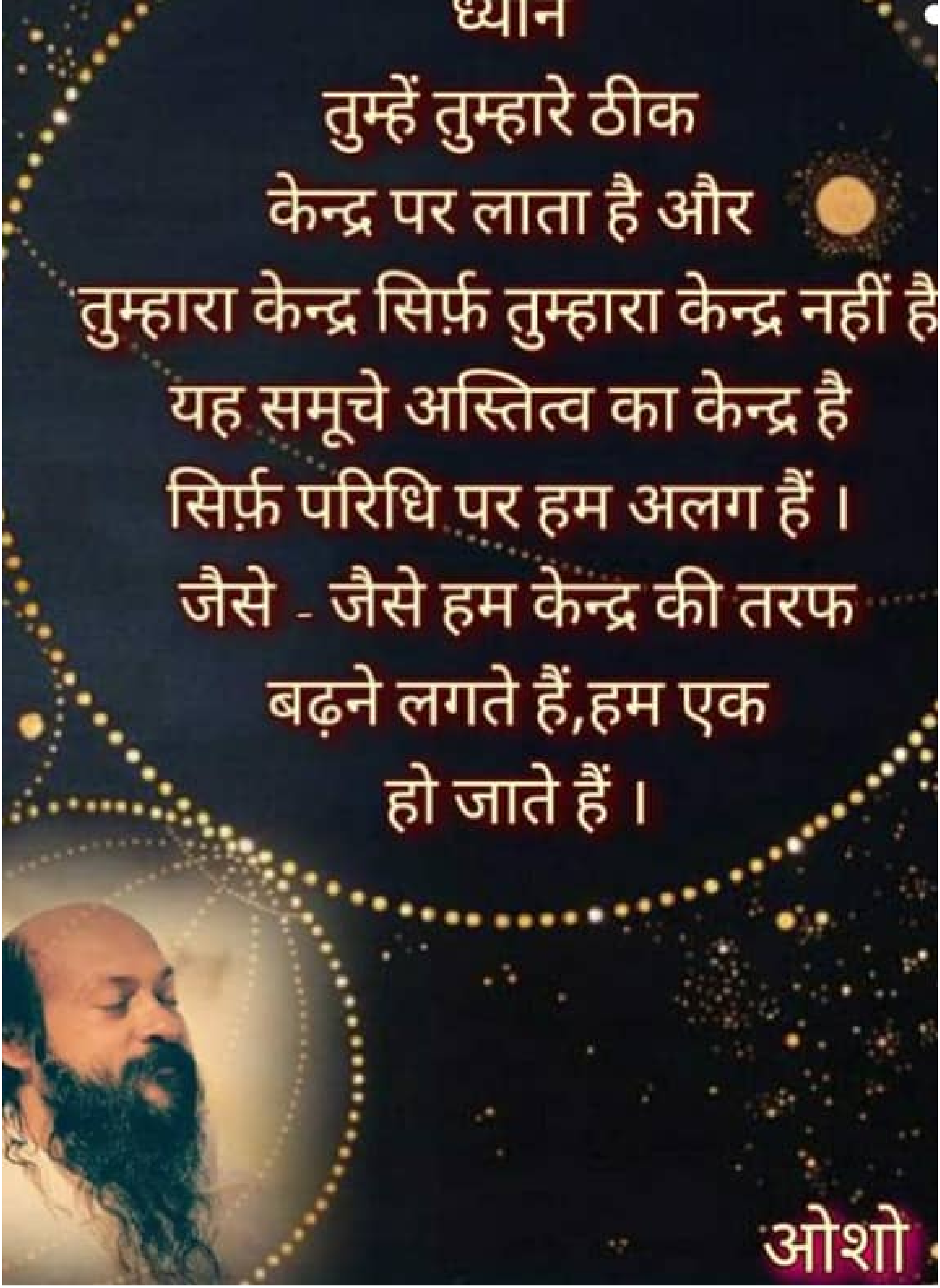

CS CamScanner

" इक साधे सब सधे " – वही एक ध्यान ।
भीतर निर्विचार होने लगो ,
भीतर धीरे-धीरे साक्षी भाव को आने दो ,
भीतर देखो न तुम देह हो, न तुम मन हो, न तुम विचार , न वासना
और धीरे-धीरे एक बात तुम्हारे सामने साफ हो जाए ;
कि तुम सिर्फ साक्षी हो – कि सन्यास फलित हुआ ।
सन्यास उस दिन नही होता , जिस दिन तुम सन्यास लेते हो !
उस दिन तो केवल औपचारिक रुप से शुरुआत होती है ?
सन्यास उस दिन फलित होता है ,
जिस दिन तुम साक्षी का अनुभव कर लेते हो ।

** ओशो **

झरत दसहुं दिस मोती - दसवां प्रवचन
सार-असार की कसौटी ध्यान है से संकलित ।

CamScanner

4:25 pm 0 KB/s VoLTE 4G 61%

एक बार एक संत जंगल में ध्यानमग्न बैठे थे, वह आस पास की गतिविधियों से बिल्कुल बेख़बर होकर भगवान की तपस्या कर रहे थे !

तभी वहाँ से एक अमीर आदमी गुज़रा और वो संत को देखकर बहुत प्रभावित हुआ !

जब संत ने आँखे खोली तो वह उनके आगे हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और अपने थेले से 1000 सोने के सिक्के निकाल कर बोला - महाराज मेरी तरफ से ये सिक्के स्वीकार करें !

मुझे उम्मीद है कि आप इनका उपयोग अच्छे कामों में ही करेंगे !

संत उसे देखकर मुस्कुराए और बोले - क्या तुम अमीर आदमी हो ?

वह बोला - हाँ !

संत ने कहा - क्या तुम्हारे पास और धन है ?

वह बोला - हाँ घर पे मेरे पास और बहुत सारा धन है मैं बहुत अमीर हूँ !

संत बोले - क्या तुम और ज़्यादा अमीर बनाना चाहते हो ?

वह बोला - हाँ मैं रोज भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे और धन दें मैं और अमीर हो जाऊं !

यह सुनकर संत ने उसे सिक्के वापस देते हुए कहा - यह अपना धन वापस लो मैं भिखारी से कभी कुछ नहीं लेता !

वह आदमी अपना अपमान सुनकर गुस्सा हो गया बोला - आप ये क्या बोल रहे हैं ?

संत बोले - मैं तो भगवान का भक्त हूँ मेरे पास सब कुछ है मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं लेकिन तुम तो रोज भगवान से धन माँगते हो तो अमीर तो मैं हूँ तुम तो भिखारी हो !

CamScanner

4:25 pm 0 KB/s 61%

facebook

वह बोला - हाँ घर पे मेरे पास और बहुत सारा धन है मैं बहुत अमीर हूं !

संत बोले - क्या तुम और ज़्यादा अमीर बनाना चाहते हो ?

वह बोला - हाँ मैं रोज भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि मुझे और धन दें मैं और अमीर हो जाऊं !

यह सुनकर संत ने उसे सिक्के वापस देते हुए कहा - यह अपना धन वापस लो मैं भिखारी से कभी कुछ नहीं लेता !

वह आदमी अपना अपमान सुनकर गुस्सा हो गया बोला - आप ये क्या बोल रहे हैं ?

संत बोले - मैं तो भगवान का भक्त हूँ मेरे पास सब कुछ है मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं लेकिन तुम तो रोज भगवान से धन माँगते हो तो अमीर तो मैं हूँ तुम तो भिखारी हो !

अमीर की दौलत उसका चरित्र होता है नाकी धन !

धन दौलत यह सब ऐसी चीज़ें हैं जिससे इंसान का कभी पेट नहीं भरता !

आप किसी अमीर इंसान से जाकर पूछिए कि क्या आप संतुष्ट हैं तो वह कहेगा नहीं क्यूंकि उसे और धन चाहिए !

अमीर वह होता है जो एक अच्छे चरित्र का मालिक है, धन से अमीर तो दुनिया में एक से एक भरे पड़े हैं, तो ऐसा अमीर बनने से क्या होगा !

जिसकी सोच ऊँची हो, विचार शुद्ध हो तब ही वह दुनिया का सबसे अमीर इंसान बन सकेंगा !!

You and 5 others 3 comments • 1 share

Like Comment Share

CamScanner

मौन में आप अपने होने के एहसास को बहुत स्पष्ट देख पाते हैं । यह 'असली मैं' का एहसास है । यह स्वअनुभव है, जो शरीर के सभी अनुभवों से परे है । इसी अनुभव का अनुभव करने के लिए मौन का महत्व है ।

जब असली अनुभव का अनुभव होने लगेगा तो फिर कोई आपको कुछ भी कहे, फर्क नहीं पड़ेगा... कोई कहे 'अरे! तुम्हारे साथ बुरा हुआ... तुम्हारी बेइज्जती हो गई...।' तब भी आप नकली 'मैं' को पहचानकर, उसमें फँसे बिना, अपने एहसास पर रहेंगे ।

आइए, आगे दिए गए ध्यान द्वारा अपने होने के एहसास को पकड़ने का प्रयास करते हैं ।

1. कुछ देर अपनी आँखें बंद करके शांति से बैठें ।
2. अब यह सोचें कि पूरा शरीर बदल चुका है, आपको एक नया चेहरा... नया शरीर दिया गया है ।
3. उस शरीर में रहते हुए आप स्वयं को देख रहे हैं ।
4. अब महसूस करके देखें कि क्या आपका अनुभव, अपने होने का एहसास बदल गया है या वैसे का वैसा ही है ?
5. आप स्पष्ट जान पाएँगे की अनुभव तो वैसे का वैसा ही है । उसमें कोई फर्क नहीं है ।
6. अब धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलें ।

आपने महसूस किया होगा कि शरीर बदलने के बावजूद, आपका अनुभव वही है । यानी असली अनुभव शरीर से परे है । यह एहसास शरीर पर नहीं है । हम उस अनुभव को शरीर पर ढूँढने की कोशिश करते हैं । असली अनुभव को महसूस करने के लिए, 'आपको क्या करना पड़ा ? कुछ नहीं । आपको सिर्फ होना पड़ा । इतना ही आसान है उस अनुभव को पकड़ना ।

CamScanner

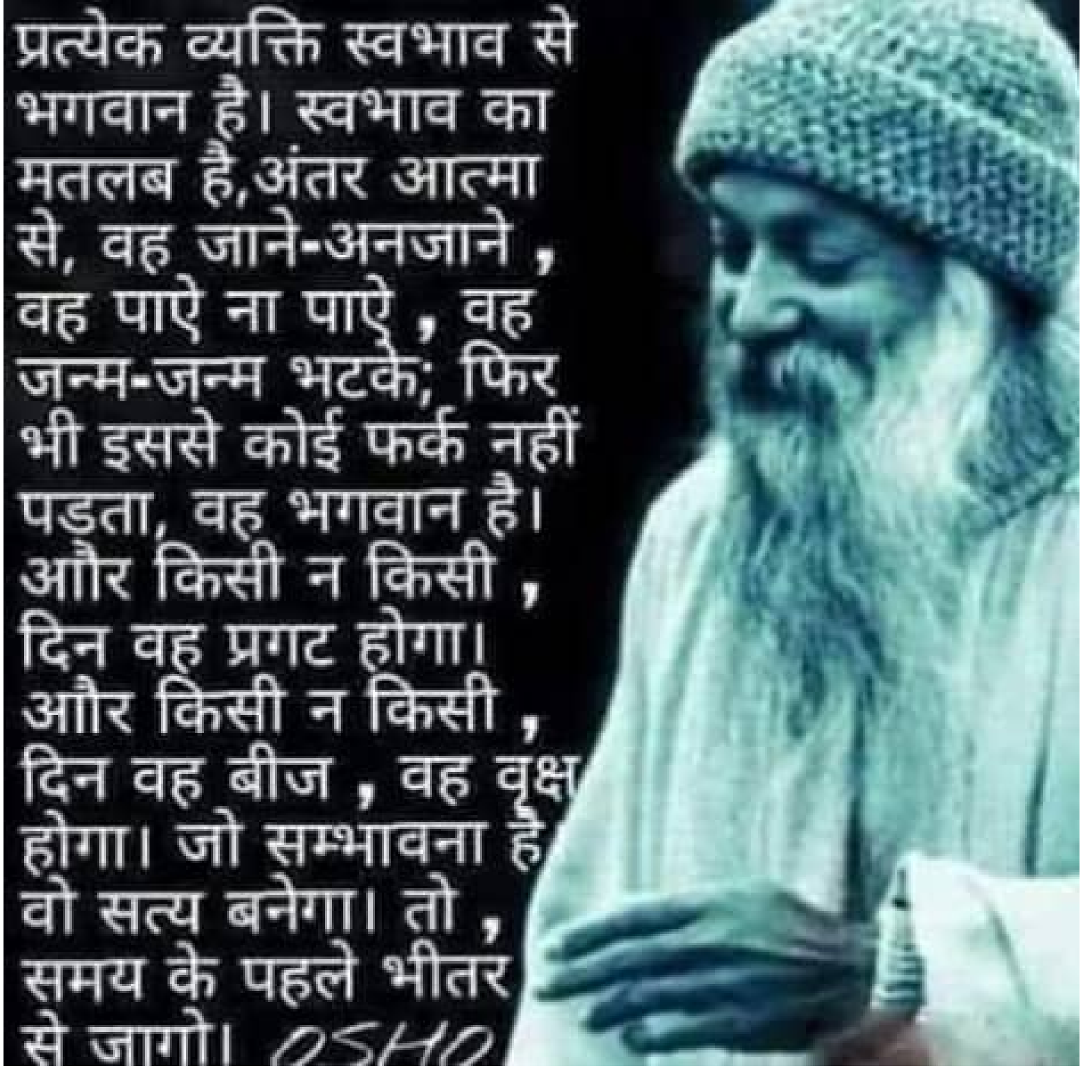
प्रत्येक व्यक्ति स्वभाव से
भगवान है। स्वभाव का
मतलब है,अंतर आत्मा
से, वह जाने-अनजाने ,
वह पाऐ ना पाऐ , वह
जन्म-जन्म भटके; फिर
भी इससे कोई फर्क नहीं
पडता, वह भगवान है।
और किसी न किसी ,
दिन वह प्रगट होगा।
और किसी न किसी ,
दिन वह बीज , वह वृक्ष
होगा। जो सम्भावना है
वो सत्य बनेगा। तो ,
समय के पहले भीतर
से जागो। OSHO

CamScanner

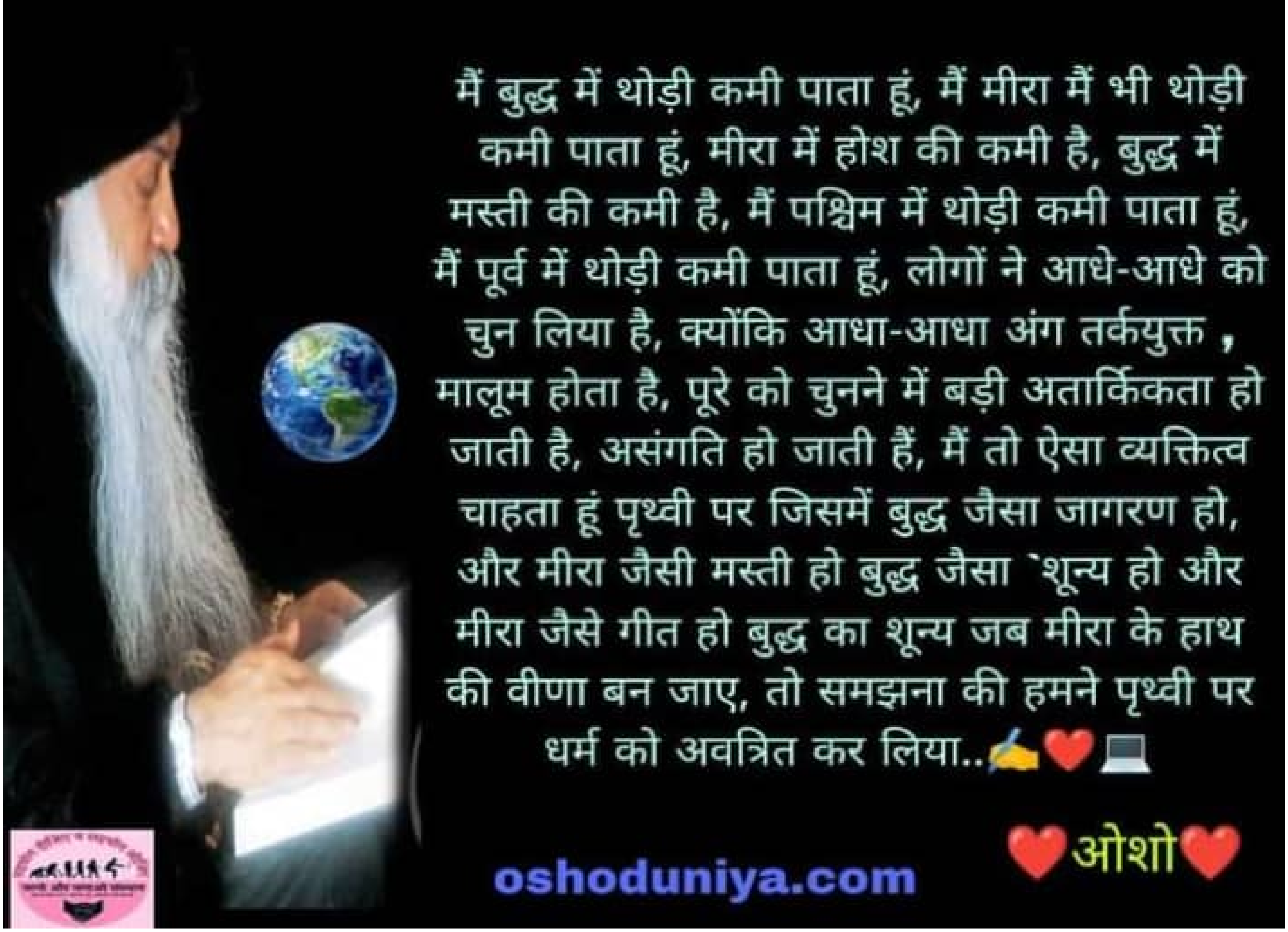
मैं बुद्ध में थोड़ी कमी पाता हूं, मैं मीरा मैं भी थोड़ी कमी पाता हूं, मीरा में होश की कमी है, बुद्ध में मस्ती की कमी है, मैं पश्चिम में थोड़ी कमी पाता हूं, मैं पूर्व में थोड़ी कमी पाता हूं, लोगों ने आधे-आधे को चुन लिया है, क्योंकि आधा-आधा अंग तर्कयुक्त , मालूम होता है, पूरे को चुनने में बड़ी अतार्किकता हो जाती है, असंगति हो जाती हैं, मैं तो ऐसा व्यक्तित्व चाहता हूं पृथ्वी पर जिसमें बुद्ध जैसा जागरण हो, और मीरा जैसी मस्ती हो बुद्ध जैसा `शून्य हो और मीरा जैसे गीत हो बुद्ध का शून्य जब मीरा के हाथ की वीणा बन जाए, तो समझना की हमने पृथ्वी पर धर्म को अवत्रित कर लिया..✍️❤️💻
❤️ओशो❤️
oshoduniya.com

CamScanner

Osho

मन जबतक है
तबतक प्यासा ही रहेगा।
मन का होना ही प्यास है।
अतृप्ति मन का स्वभाव है।
मन कभी तृप्त हुआ, ऐसा सुना नहीं।
मन कभी तृप्त होगा, ऐसा संभव नहीं।
मन तृप्त नहीं हो सकता है।
इसीलिए तो संसार में कोई तृप्ति नहीं है,
क्योंकि संसार मन का फैलाव है।
मन का विस्तार है।
~ ओशो

CS CamScanner

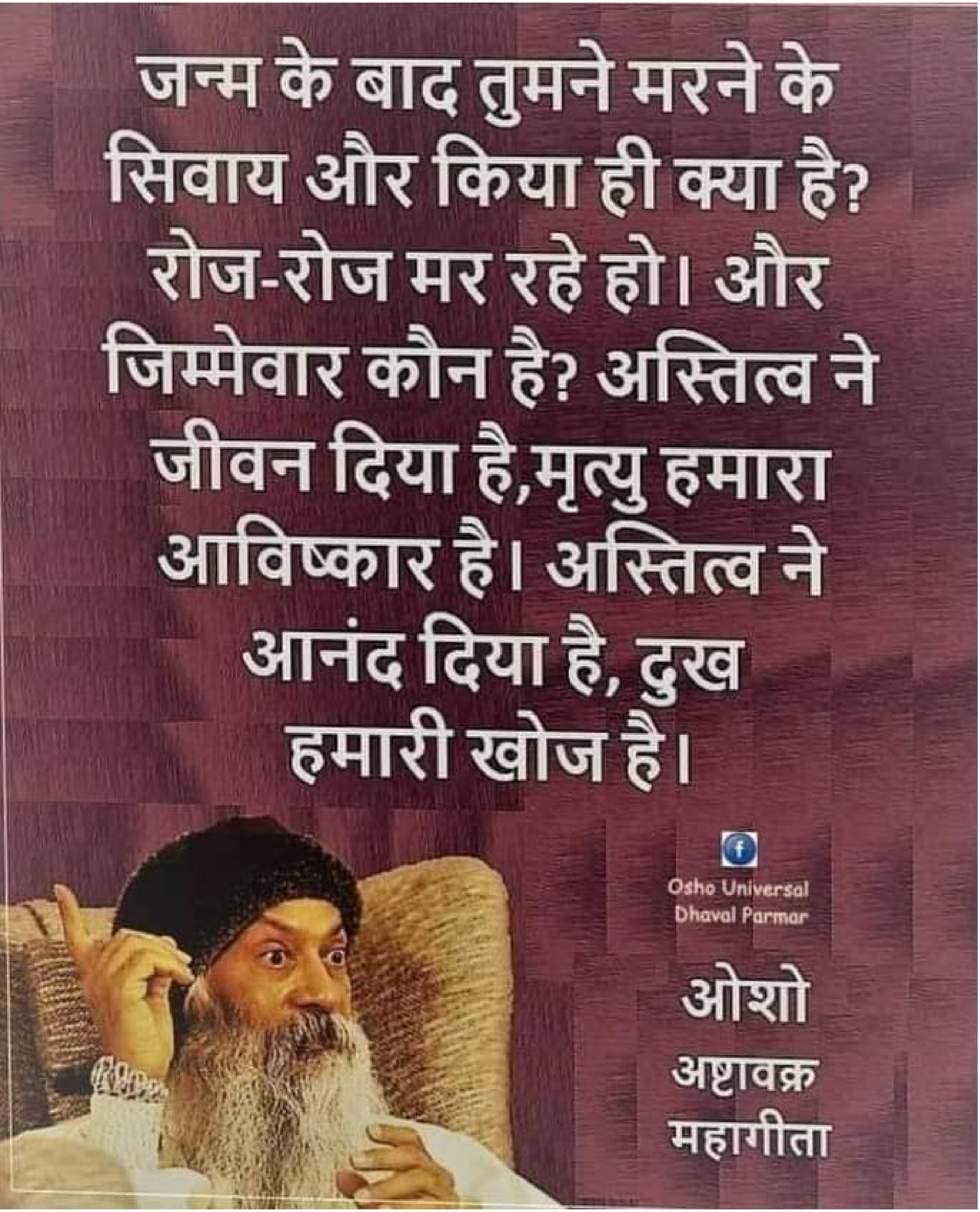
जन्म के बाद तुमने मरने के सिवाय और किया ही क्या है? रोज-रोज मर रहे हो। और जिम्मेवार कौन है? अस्तित्व ने जीवन दिया है, मृत्यु हमारा आविष्कार है। अस्तित्व ने आनंद दिया है, दुख हमारी खोज है।
Osho Universal
Dhaval Parmar
ओशो
अष्टावक्र महागीता

CamScanner

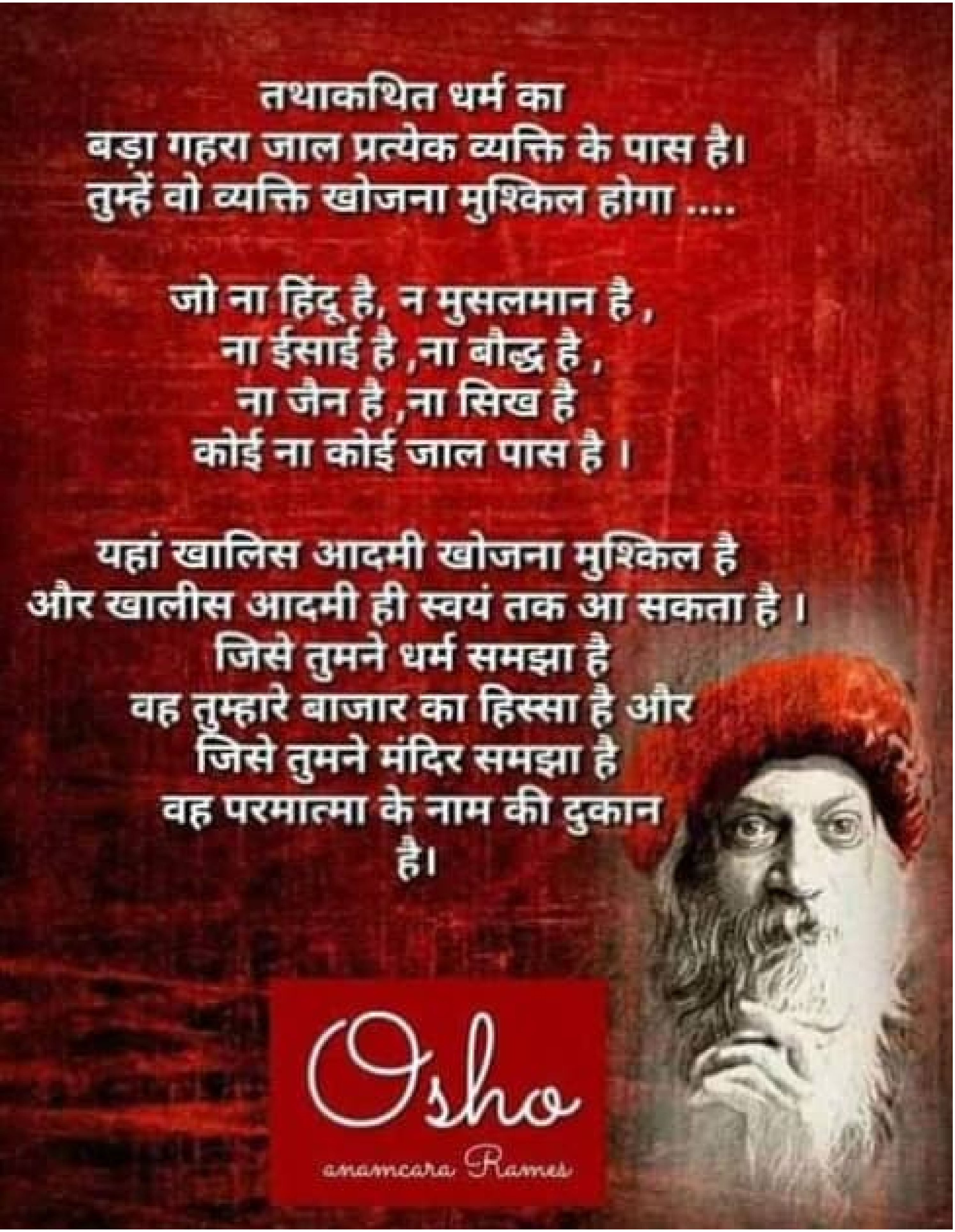
तथाकथित धर्म का
बड़ा गहरा जाल प्रत्येक व्यक्ति के पास है।
तुम्हें वो व्यक्ति खोजना मुश्किल होगा ....
जो ना हिंदू है, न मुसलमान है ,
ना ईसाई है ,ना बौद्ध है ,
ना जैन है ,ना सिख है
कोई ना कोई जाल पास है ।
यहां खालिस आदमी खोजना मुश्किल है
और खालीस आदमी ही स्वयं तक आ सकता है ।
जिसे तुमने धर्म समझा है
वह तुम्हारे बाजार का हिस्सा है और
जिसे तुमने मंदिर समझा है
वह परमात्मा के नाम की दुकान
है।
Osho
anamcara Ramesh

CamScanner

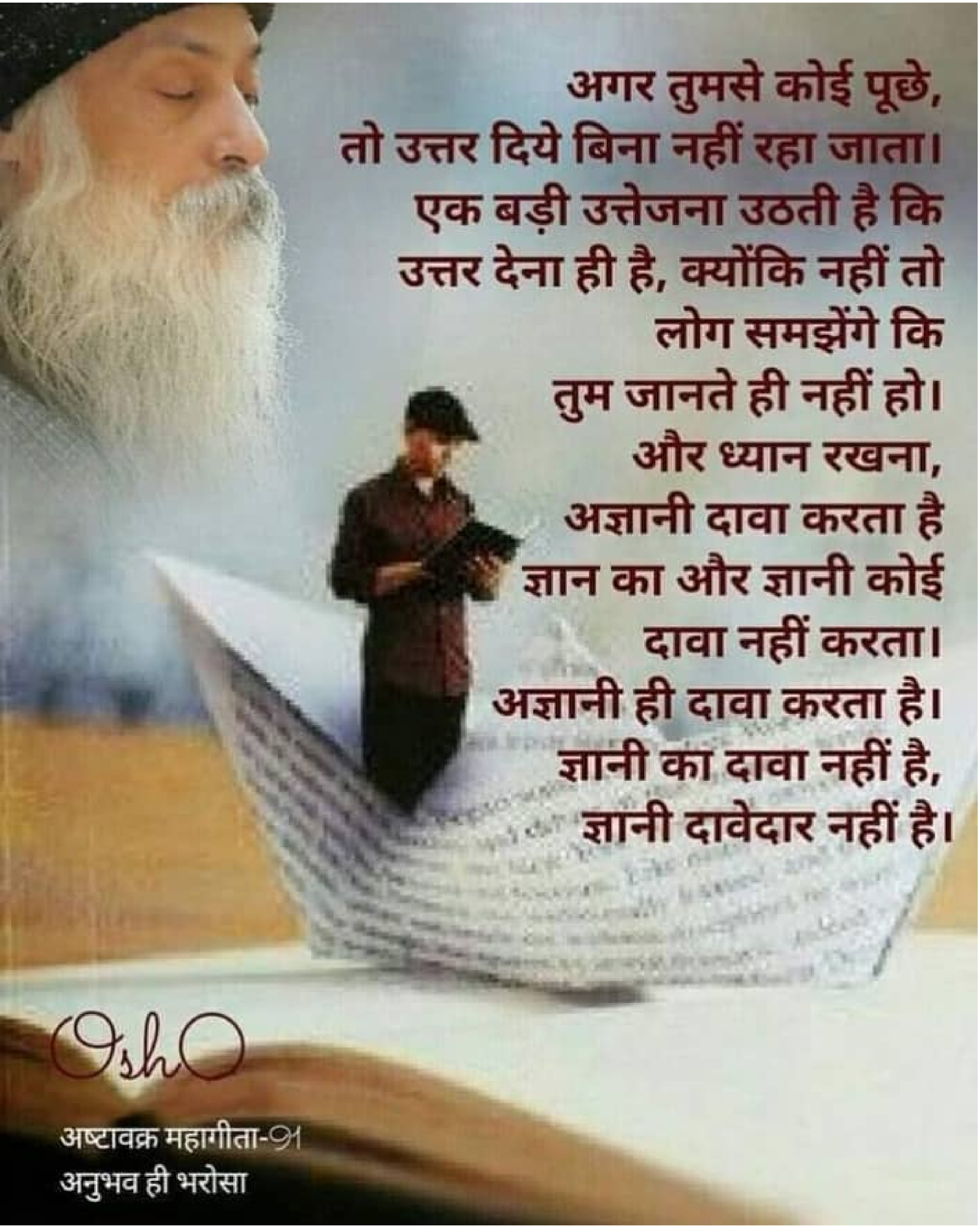
अगर तुमसे कोई पूछे,
तो उत्तर दिये बिना नहीं रहा जाता।
एक बड़ी उत्तेजना उठती है कि
उत्तर देना ही है, क्योंकि नहीं तो
लोग समझेंगे कि
तुम जानते ही नहीं हो।
और ध्यान रखना,
अज्ञानी दावा करता है
ज्ञान का और ज्ञानी कोई
दावा नहीं करता।
अज्ञानी ही दावा करता है।
ज्ञानी का दावा नहीं है,
ज्ञानी दावेदार नहीं है।
Osho
अष्टावक्र महागीता-९१
अनुभव ही भरोसा

CamScanner

मैं महावीर का अनुयायी तो नहीं हूं, प्रेमी हूं। वैसे ही जैसे क्राइस्ट का, कृष्ण का, बुद्ध का या लाओत्से का। और मेरी दृष्टि में अनुयायी कभी भी नहीं समझ पाता है।

और दुनिया में दो ही तरह के लोग होते हैं, साधारणतः। या तो कोई अनुयायी होता है, और या कोई विरोध में होता है। न अनुयायी समझ पाता है, न विरोधी समझ पाता है। एक और रास्ता भी है--प्रेम, जिसके अतिरिक्त हम और किसी रास्ते से कभी किसी को समझ ही नहीं पाते। अनुयायी को एक कठिनाई है कि वह एक से बंध जाता है और विरोधी को भी यह कठिनाई है कि वह विरोध में बंध जाता है। सिर्फ प्रेमी को एक मुक्ति है। प्रेमी को बंधने का कोई कारण नहीं है। और जो प्रेम बांधता हो, वह प्रेम ही नहीं है।

तो महावीर से प्रेम करने में महावीर से बंधना नहीं होता। महावीर से प्रेम करते हुए बुद्ध को, कृष्ण को, क्राइस्ट को प्रेम किया जा सकता है। क्योंकि जिस चीज को हम महावीर में प्रेम करते हैं, वह और हजार-हजार लोगों में उसी तरह प्रकट हुई है।

महावीर को थोड़े ही प्रेम करते हैं। वह जो शरीर है वर्धमान का, वह जो जन्मतिथियों में बंधी हुई एक इतिहास रेखा है, एक दिन पैदा होना और एक दिन मर जाना, इसे तो प्रेम नहीं करते हैं। प्रेम करते हैं उस ज्योति को जो इस मिट्टी के दीए में प्रकट हुई। यह दीया कौन था, यह बहुत अर्थ की बात नहीं। बहुत-बहुत दीयों में वह ज्योति प्रकट हुई है।

Only admins can send messages

CamScanner

अपनी उम्मीद की टोकरी खाली कर दीजिये...
परेशानियाँ नाराज होकर खुद चली जायेगी ।

CamScanner

6:03 am 0 KB/s VoLTE 4G 99%

'"^महामूर्ख^"

एक गांव में एक महामूर्ख था। वह बहुत परेशान था, क्योंकि वह कुछ भी कहता लोग हंस देते; लोग उसको महामूर्ख मान ही लिये थे। वह कभी ठीक भी बात कहता तो भी लोग हंस देते। वह सिकुड़ा-सिकुड़ा जीता था, बोलता तक नहीं था। न बोले तो लोग हंसते थे, बोले तो लोग हंसते थे। कुछ करे तो लोग हंसते थे, न करे तो लोग हंसते थे। उस गांव में एक फकीर आया। उस महामूर्ख ने रात उस फकीर के चरण पकड़े और कहा कि मुझे कुछ आशीर्वाद दो, मेरी जिंदगी क्या ऐसे ही बीत जायेगी सिकुड़े-सिकुड़े? क्या मैं महामूर्ख की तरह ही मरूंगा, कोई उपाय नहीं है कि थोड़ी बुद्धि मुझमें आ जाये?

उस फकीर ने कहा: उपाय है, यह ले सूत्र, तू निंदा शुरू कर दे। उसने कहा: निंदा से क्या होगा? फकीर ने कहा: सात दिन तू कर और फिर मेरे पास आना। उस महामूर्ख ने पूछा: करना क्या है निंदा में? उस फकीर ने कहा: कोई कुछ भी कहे, तू नकारात्मक वक्तव्य देना। जैसे कोई कहे कि देखो, कितना सुंदर सूरज निकल रहा है! तू कहना इसमें क्या सुंदर है? सिद्ध करो, सुंदर कहां है, क्या सुंदर है? रोज निकलता है, अरबों-खरबों सालों से निकल रहा है। आग का गोला है, सुंदर क्या है? कोई कहे कि देखो, जीसस के वचन कितने प्यारे हैं! तू तत्क्षण टूट पड़ना कि क्या है इसमें प्यारा, कौन-सी बात खूबी की है, कौन-सी बात नयी है? सदा से तो यही कहा गया है, सब पिटा-पिटाया है, सब बासा है, सब उधार है। तू नकार ही करना। कोई सुंदर स्त्री को देखकर कहे कितनी सुंदर स्त्री है! तू कहना इसमें है क्या? जरा नाक लंबी हो गयी तो हो क्या गया, कि रंग जरा सफेद हुआ तो हो क्या गया? सफेद तो कोढ़ी भी होते हैं। सुंदर कहां है, सिद्ध करो। तू हर-एक से प्रमाण मांगना और ख्याल रखना यह कि हमेशा नकार में रहना; उनको विधेय में डाल देना, तू नकार में रहना। सात दिन बाद आ जाना।

सात दिन बाद तो जब आया महामूर्ख तो अकेला नहीं आया, उसके कई शिष्य हो गये थे। वह आगे-आगे आ रहा था। फूल-मालाएं उसके गले में डली थीं। बैंड-बाजे बज रहे थे। उसने फकीर से कहा कि तरकीब काम कर गयी! गांव में एकदम सन्नाटा खिंच गया है, जहां निकल जाता हूं लोग सिर नीचा कर लेते हैं। लोगों में खबर पहुंच गयी है कि मैं

CS CamScanner

कि हमेशा नकार में रहना; उनको विधेय में डाल देना, तू नकार में रहना। सात दिन बाद आ जाना।

सात दिन बाद तो जब आया महामूर्ख तो अकेला नहीं आया, उसके कई शिष्य हो गये थे। वह आगे-आगे आ रहा था। फूल-मालाएं उसके गले में डली थीं। बैंड-बाजे बज रहे थे। उसने फकीर से कहा कि तरकीब काम कर गयी! गांव में एकदम सन्नाटा खिंच गया है, जहां निकल जाता हूं लोग सिर नीचा कर लेते हैं। लोगों में खबर पहुंच गयी है कि मैं महामेधावी हूं। मेरे सामने कोई जीत नहीं सकता। अब आगे क्या करना है?

उसने कहा: अब आगे तो कुछ करना ही मत, बस तू इसी पर रुके रहना। अगर तेरे को मेधा बचानी है, कभी विधेय में मत पड़ना। ईश्वर की कोई कहे तो तत्क्षण, तत्क्षण नास्तिकता प्रकट करना। जो भी कहा जाये, तू हमेशा नकारात्मक वक्तव्य देना, तुझे कोई न हरा सकेगा; क्योंकि नकारात्मक वक्तव्य को असिद्ध करना बहुत कठिन है। विधायक वक्तव्य को सिद्ध करना बहुत कठिन है।

ईश्वर को स्वीकार करने के लिए बड़ी बुद्धिमत्ता चाहिए, बड़ी सूक्ष्म संवेदना चाहिए। हृदय का अत्यंत जागरूक रूप चाहिए। चैतन्य की निखरी हुई दशा चाहिए। भीतर थोड़ी रोशनी चाहिए। लेकिन ईश्वर को इनकार करने के लिए कुछ भी नहीं चाहिए। कोई अनिवार्यता नहीं है ईश्वर को इनकार करने के लिए। इसलिए लोग दुनिया में निंदा करते हैं।

निंदा का मनोविज्ञान सस्ता मनोविज्ञान है, सुगम उपाय है। इससे तुम्हारी प्रतिभा सिद्ध होगी। और उसमें कुछ खर्च पड़ता ही नहीं। हल्दी लगे न फिटकरी रंग चोखा हो जाये। इसमें कुछ खर्च होता ही नहीं। इसे सीखने कहीं जाने की जरूरत नहीं। इसके लिए कोई सत्संग करना आवश्यक नहीं। इसलिए हर आदमी निंदा में कुशल है।

CamScanner

कठी न आती जाती।
मीरा रे प्रभु गिरधर नागर ,
मग जोवाँ दिन राती ॥
"सार की बात तो यह है कि बिना सच्चे वैराग्य के घर का त्याग न करें ।"
" धन्य ,धन्य हो मातः !" सब लोग बोल उठे ।
" क्षमा करें मातः! आप ने फरमाया कि भजन अर्थात जप करो । भजन का अर्थ सम्भवतः जप है । पर जप में मन लगता नहीं माँ !" उसने दुखी स्वर में कहा ," हाथ तो माला की मणियाँ सरकाता है , जीभ भी नाम लेती रहती है , किन्तु मन मानों धरा -गगन के समस्त कार्यों का ठेका लेकर उड़ता फिरता है ।ऐसे में माँ , भजन से , जप से क्या लाभ होगा ? ब्लकि स्वयं पर जी खिन्न हो जाता है। "
मीरा ने उनकी जिज्ञासा का समाधान करते हुये कहा ," भजन का अर्थ है कैसे भी ,जैसे हो, मन -वचन -काया से भगवत्सम्बन्धी कार्य हो। हमें भजन का ध्यान ऐसे ही बना रहे , जैसे घर का कार्य करते हुये , माँ का ध्यान पालने में सोये हुये बालक की ओर रहता है याँ फिर सबकी सेवा करते हुये भी पत्नी के मन में पति का ध्यान रहता है। पत्नी कभी मुख से पति का नाम नहीं लेती , किन्तु वह नाम उसके प्राणों से ऐसा जुड़ा रहता है कि वह स्वयं चाहे तो भी उसे हटा नहीं पाती। मन सूक्ष्म देह है ।जो भी कर्म बारम्बार किए जाते है , उसका संस्कार दृढ़ होकर मन में अंकित होता जाता है। बिना मन और बुद्धि के कोई कार्य बार बार करने से मन और बुद्धि उसमें धीरेधीरे प्रवृत्त हो जाते है ।जैसे खारा याँ कड़वा भोजन पहले अरूचिकर लगता है , पर नित्य उसका सेवन करने पर वैसी ही रूचि बन जाती है। "
" जप किया ही इसलिए जाता है कि मन लगे ,मन एकाग्र हो ।पहले मन लगे और फिर जप हो , यह साधारण जन के लिये कठिन है । यह तो ऐसा ही है कि जैसे पहले तैरना सीख लें और फिर पानी में उतरें । जो मन्त्र आप ज�पेंगें , वही आपके लिए , जो भी आवश्यक है, वह सब कार्य करता जायेगा । मन न लगने पर जो खिन्नता आपको होती है , वही खिन्नता आपके भजन की भूमिका बनेगी। बस आप जप आरम्भ तो कीजिए। आरम्भ आपके हाथ में है , वही कीजिए और उसे ईमानदारी से निभाईये। आपका दृढ़ संकल्प , आपकी ,निष्ठा , सत्यता को देख भजन स्वयं अपने द्वार आपके लिए खोल देगा ।"
॥श्री राधारमणाय समर्पणं ॥

CamScanner

10:55 am 0 KB/s 4G 75%

॥जय गौर हरि ॥

🌿मीरा चरित ....

🌿 द्वारिका में ,मीरा एक ऐसे दुखी व्यक्ति जो पुत्र की मृत्यु के पश्चात हताश हो सन्यास लेना चाहता था ,उसका मार्ग दर्शन कर रही है । मीरा ने उसे समझाया कि इस तरह की परिस्थितियों से आये क्षणिक वैराग्य को आप भक्ति का नाम नहीं दे सकते ।

🌿मीरा ने उसे सहज़ता से बताते हुये कहा ," अगर तुम भक्ति पथ पर शुभारम्भ करना ही चाहते हो तो शुष्क वैराग्य और सन्यास से नहीं ब्लकि भजन से करो। भजन का नियम लो , और इस नियम को किसी प्रकार टूटने न दो ।अपने शरीर रूपी घर का मालिक भगवान को बनाकर स्वयं उसके सेवक बन जाओ। कुछ भी करने से पूर्व भीतर बैठे स्वामी से उसकी आज्ञा लो ।जिस कार्य का अनुमोदन भगवान से मिले , वही करो ।इस प्रकार तुम्हारा वह कार्य ही नहीं , ब्लकि समस्त जीवन ही पूजा हो जायेगा ।नियम पूर्ण हो जाये तो भी रसना (जीभ) को विश्राम मत दो । खाने , सोने और आवश्यक बातचीत को छोड़कर , ज़ुबान को बराबर प्रभु के नाम उच्चारण में व्यस्त रखो ।"

🌿" वर्ष भर में महीने दो महीने का समय निकाल कर सत्संग के लिए निकल पड़ो और अपनी रूचि के अनुकूल स्थानों में जाकर महज्जनों की वार्ता श्रवण करो। सुनने का धैर्य आयेगा तो उनकी बातें भी असर करेंगी। उनमें तुम्हें धीरे -धीरे रस आने लगेगा। जब रस आने लगेगा , तो जिसका तुम नाम लेते हो ,वह आकर तुम्हारे भीतर बैठ जायेगा ।ज्यों -ज्यों रस की बाढ़ आयेगी ,ह्रदय पिघल करके आँखों के पथ से निर्झरित होगा ,और वह नामी ह्रदय -सिंहासन से उतर कर आँखों के समक्ष नृत्य करने लगेगा। इसलिए ......

🌿राम नाम रस पीजे मनुवा ,
राम नाम रस पीजे।
तज कुसंग सत्संग बैठ नित,
हरि चर्चा सुन लीजे ॥

🌿काम क्रोध मद लोभ मोह कूँ ,
चित्त से दूर करी जे ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर ,
ताहि के रंग में भीजे ॥

🌿 " आज्ञा हो तो एक बात निवेदन करना चाहता हूँ !" एक सत्संगी ने

CamScanner

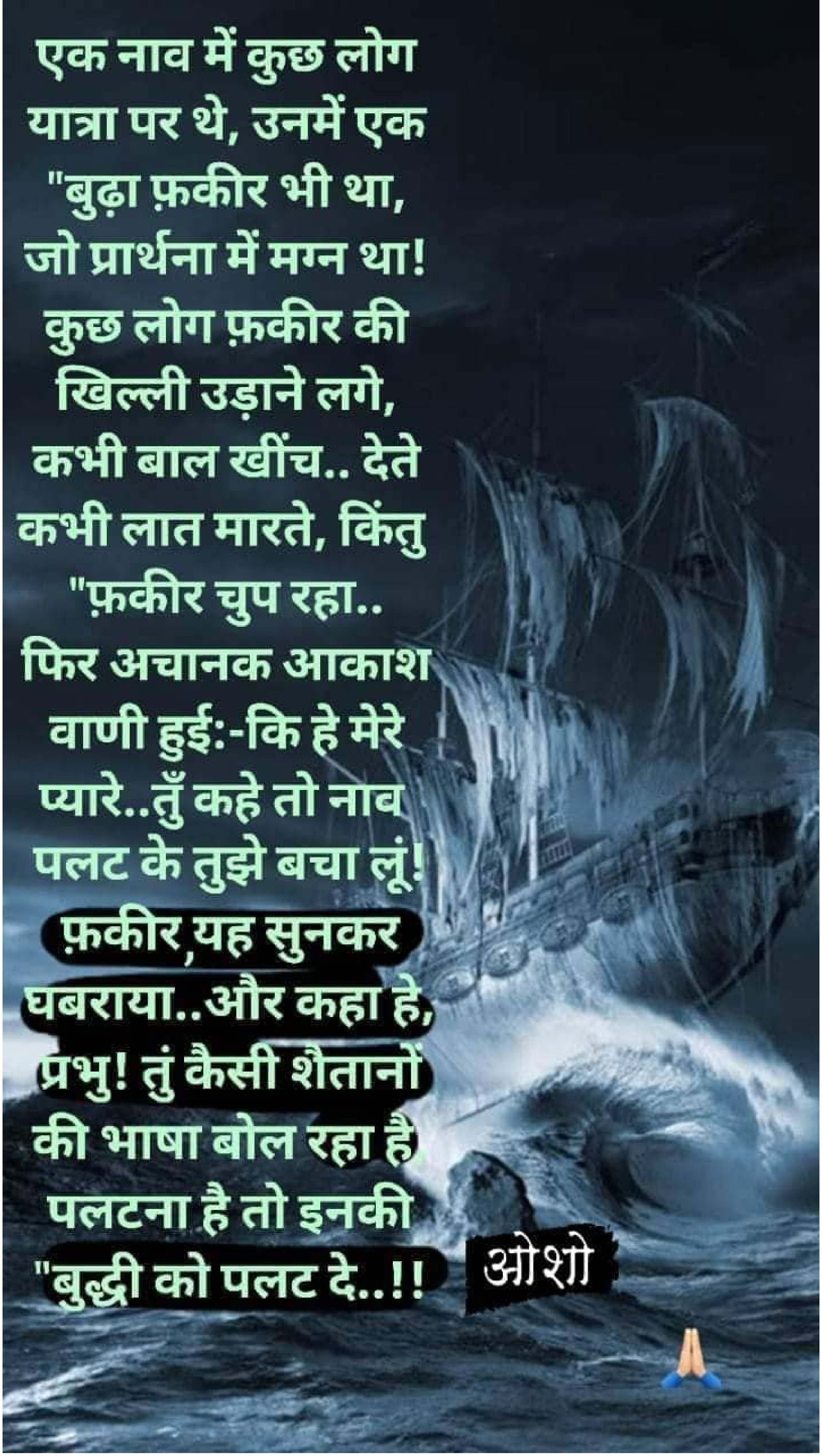
एक नाव में कुछ लोग
यात्रा पर थे, उनमें एक
"बुढ़ा फ़कीर भी था,
जो प्रार्थना में मग्न था!
कुछ लोग फ़कीर की
खिल्ली उड़ाने लगे,
कभी बाल खींच.. देते
कभी लात मारते, किंतु
"फ़कीर चुप रहा..
फिर अचानक आकाश
वाणी हुई:-कि हे मेरे
प्यारे..तुँ कहे तो नाव
पलट के तुझे बचा लूं!
फ़कीर,यह सुनकर
घबराया..और कहा हे,
प्रभु! तुं कैसी शैतानों
की भाषा बोल रहा है,
पलटना है तो इनकी
"बुद्धी को पलट दे..!!
ओशो
🙏

CamScanner

कोई समझाए ये क्या रंग है मैखाने का
आंख साकी की उठे, नाम हो पैमाने का
गर्मिए-शम्मा का अफसाना सुनाने वालो
रक्स देखा नहीं तुमने अभी परवाने का
किसको मालूम थी पहले से खिरद की कीमत
आलमे-होश पे एहसान है दीवाने का
चश्मे-साकी मुझे हर गाम पे याद आती है
रास्ता भूल न जाऊं कहीं मैखाने का
अब तो हर शाम गुजरती है उसी कूचे में
ये नतीजा हुआ नासेह तेरे समझाने का
मंजिले-गम से गुजरना तो है आसां इक बार
इश्क है नाम खुद अपने से गुजर जाने का
कोई समझाए ये क्या रंग है मैखाने का
आंख साकी की उठे, नाम हो पैमाने का

याद करो परमात्मा को, यह बात ही गलत। भूलो मत परमात्मा को, यह बात जरूर सही है। तुम थोड़ी दुविधा में पड़ोगे। तुम कहोगे मैंने फिर पहेली कही। दोहरा दूं: याद करो परमात्मा को,यह बात ही गलत। याद किया हुआ परमात्मा दो कौड़ी का। क्योंकि याद तुम क्या करोगे? तुम्हें याद नहीं है इसीलिए तो याद कर रहे हो। तो तुम जो याद करोगे, वह कल्पना ही होगी, कोई धारणा ही होगी। हिंदू हुए तो कृष्ण।

ये शंकराचार्य अगर ईसाई होते तो कभी भूल कर न कहते कि कृष्ण को याद करो; कहते क्राइस्ट को याद करो। अगर ये बौद्ध होते तो कहते बुद्ध को याद करो। अगर ये जैन होते तो कहते महावीर को याद करो। किसको याद करोगे? याद करोगे तो कल्पना ही होगी। याद नहीं है इसीलिए तो याद करते हो। और जब याद नहीं है तो जाहिर है कि तुम कल्पना ही कर सकते हो, और क्या करोगे?

मैं नहीं कहता कि परमात्मा को याद करो। मैं कहता हूं, बात कुछ ऐसी बनानी है कि परमात्मा भूले नहीं। यह बात बिलकुल और है, अन्यथा है। परमात्मा भूले नहीं। याद नहीं करना है। शरीर से तादात्म्य तोड़ना है, मन से नाता मुक्त करना है, हृदय के पार उठना है, पंख फैलाने हैं। और जैसे ही तुम शरीर, मन और हृदय के पार उठे, जैसे ही तुमने पंख फैलाए और आकाश खुला, कि फिर जो दिखाई पड़ेगा वही परमात्मा की याद है। फिर वह कृष्ण की याद नहीं है, न क्राइस्ट की, न मोहम्मद की, न मूसा की। फिर उसका

CamScanner

बुल्लेशाह का यह वक्तव्य सुनो।
बुल्ला की जाना मैं कौण!
न मैं मोमिन विच मसीतां, न मैं विच कुफर दीयां रीतां।
न मैं पाकां विच पलीतां, न मैं मूसा न फरऔन।।
बुल्ला की जाना मैं कौण!
न मैं अंदर बेद कताबां, न विच भंग न शराबां।
न विच रहिंदा मस्त खवाबां, न विच जागन न विच सौन।।
बुल्ला की जाना मैं कौण!
न विच शादी न गमनाकी, न मैं विच पलीती पाकी।
न मैं आबी न मैं खाकी, न मैं आतश न मैं पौन।।
बुल्ला की जाना मैं कौण!
न मैं अरबी न लाहोरी, न हिंदी न शहर नगौरी।
न मैं हिंदू तुर्क पशौरी, न मैं रहिंदा विच नदौन।।
बुल्ला की जाना मैं कौण!
अव्वल आखर आप नू जाना, न कोई दूजा होर पछाना।
मैथों होर न कोई सयाना, बुल्ला शाह किहड़ा है कौन।।
बुल्ला की जाना मैं कौण!
अर्थात, बुल्लेशाह कहते हैं कि मैं क्या जानूं कि मैं कौन हूं!
बुल्ला की जाना मैं कौण!
ऐसा सन्नाटा है, ऐसी समाधि है, ऐसा शून्य है--कौन जाने, किसको जाने! जानने में द्वैत होता है--जानने वाला और जो जाना जाए; ज्ञात और ज्ञेय।
बुल्ला की जाना मैं कौण!
बुल्लेशाह कहते हैं: "मैं क्या जानूं कि मैं कौन हूं!'
न जानने वाला है कोई, न जानने को है कोई। सब सन्नाटा है, सब शून्य है, निराकार है। यह अवस्था ध्यान की है।
"न मैं मस्जिद में मोमिन हूं।'
मत कहो कि मैं मुसलमान हूं। मेरा क्या लेना-देना मस्जिद से और मुसलमान से!
"न मैं कुफ्र की रीतियों में हूं।'
और यह मत सोचना कि मैं मुसलमान नहीं हूं तो मैं मुसलमान विरोधी हूं। वह भी मैं नहीं हूं।
"न मैं पापियों में पवित्र हूं, और न ही मैं मूसा हूं,न फरऔन हूं।
बुल्ला कहता है, मैं क्या जानूं मैं कौन हूं।'
मत पूछो! मुसलमान हूं, हिंदू हूं, ईसाई हूं, यहूदी हूं--मत पूछो।

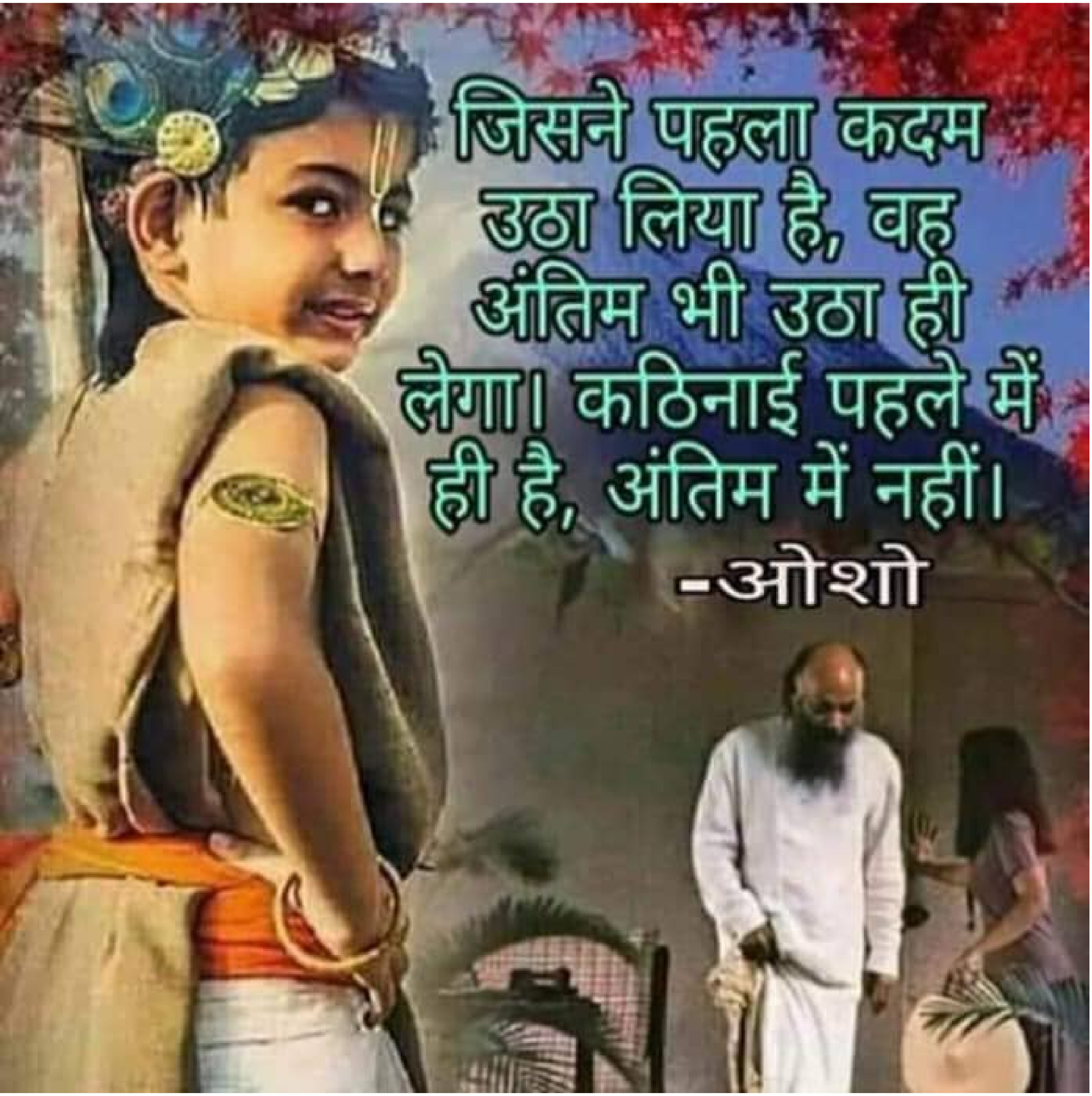

CamScanner

CS CamScanner

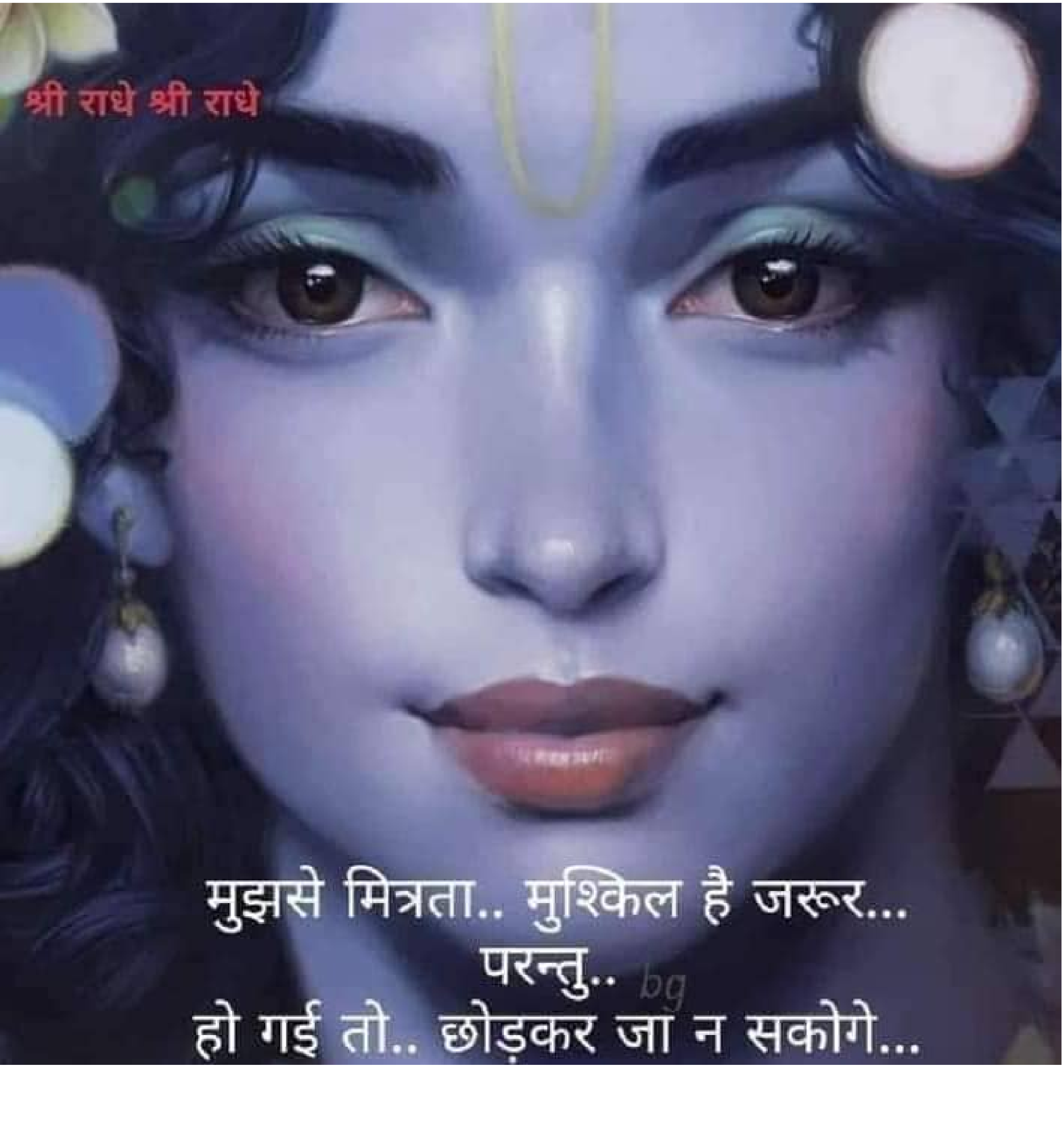

CamScanner

जब आप कोइ अच्छा कर्म
करते है...
तो अनेक आत्माए जो अच्छा
करने में आतुर है,
तत्काल
आपकी सहायता करने के
लिए सक्रिय हो जाती है ।
~ osho (गीतादर्शन)

CamScanner

तुम्हारा धर्म,मंदिर,भगवान..
सब तुम्हारे मन के अंदर है.
भीतर जाओ और पा लो.
_ Osho
बाहर तो ठग का भ्रम बैठा है.

35 1 comment

Like Comment

CS CamScanner

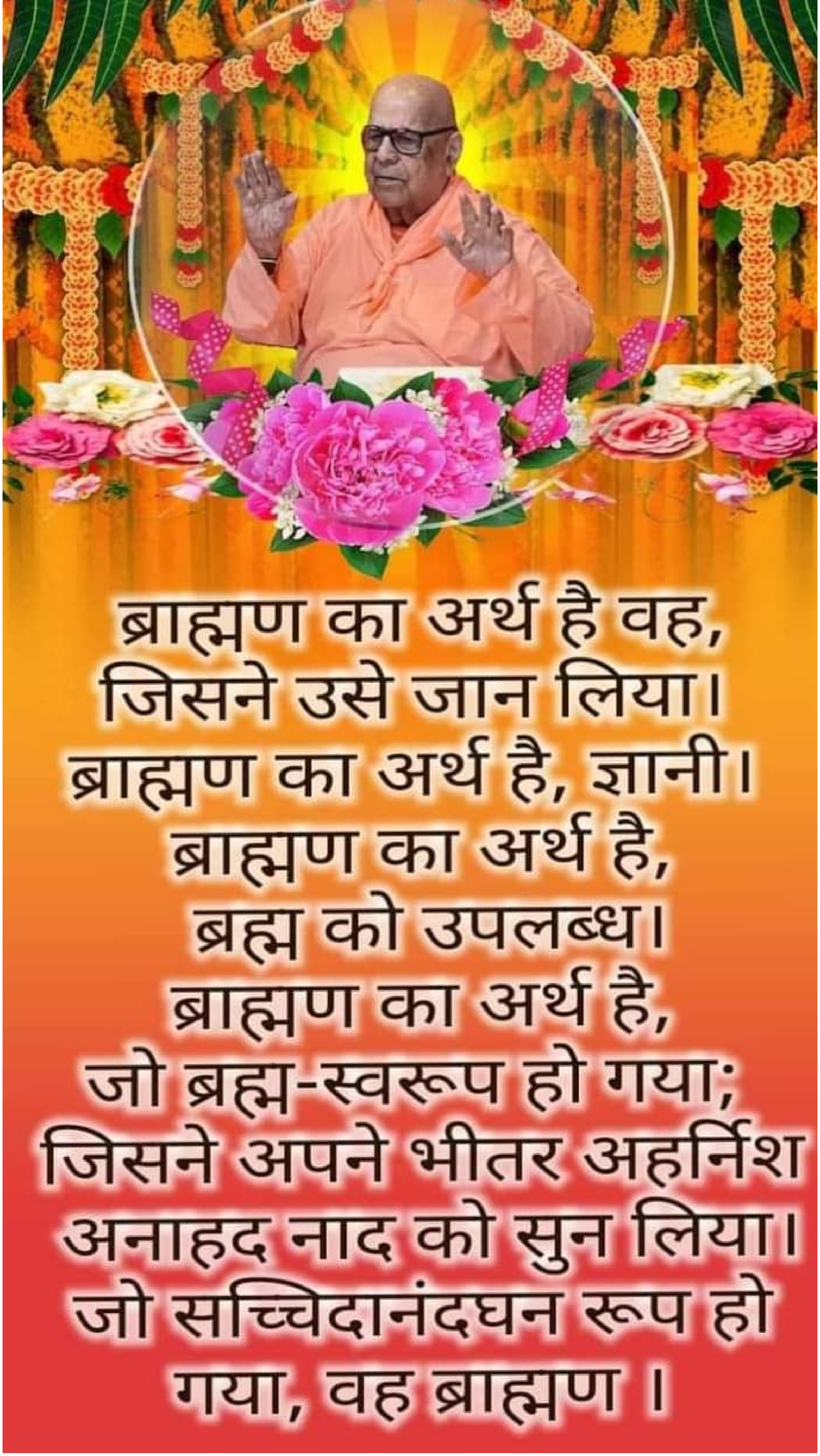

CS CamScanner

8:13 pm 273 KB/s 39%

❤️🙏 #oshohindiquotes #oshointernational #oshomeditation #Jeevan #ओशो #oshozen #oshoquotes #osho #life #osholove

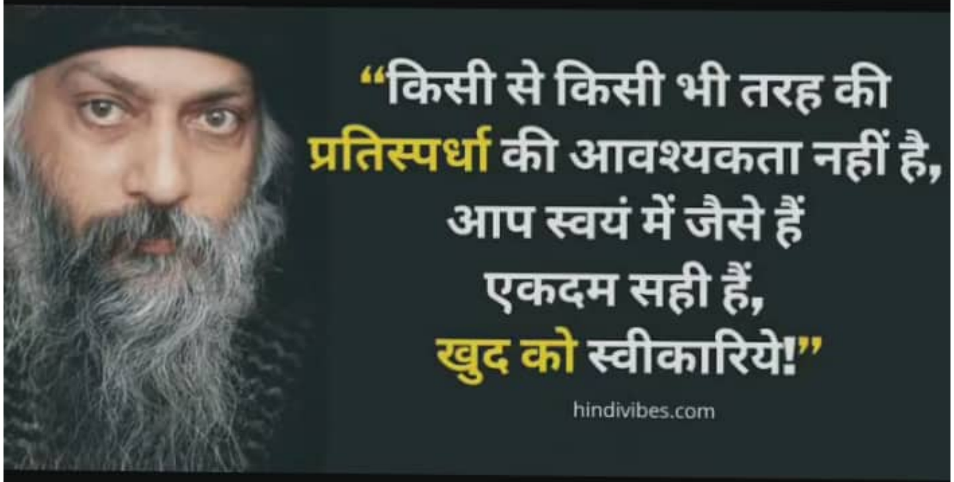

3 1 comment • 29 views

Like Comment Share

CamScanner

अपनी सारी ऊर्जा को ध्यान पर केंद्रित कर दो। मौन हो जाओ, मन के पर्दे पर अपने विचारों को चलते हुए देखो। देखने मात्र से ही एक वे विलीन हो जाएंगे। जल्दी न करो। इन दो महत्वपूर्ण शब्दों को स्मरण रखो : देखना और प्रतीक्षा करना। जब कभी भी समय आएगा, तुम्हारा देखना पूर्ण होगा, विचार विलीन हो जाएंगे। और उनकी विलीनता का अर्थ है संपूर्ण अस्तित्व का खुल जाना।

CamScanner

7:20 pm 246 KB/s 41%
facebook

अंग्रेजी कहावत है,
इट इज बैटर टू डू
समथिंग दैन नथिंग।
और मैं तुमसे यह
कह रहा हूं,
इट बैटर टू डू नथिंग।
कोई चौबीस घंटे कुछ न करो,
यह नहीं कह रहा हूं।
रोटी तो कमानी होगी,
कपड़े तो कमाने होंगे। लेकिन घंटा भर तो
निकाल सकते हो, जब कि तुम मन को
कह दो कि बस, अब तुम चुप हो जाओ।
मगर मुझे घड़ीभर हृदय के साथ जी लेने दो।
इतना मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि मन के
पास तेईस घंटे और हृदय के पास एक
घंटा--जीत हृदय की होने वाली है
ओशो कोपलें फिर फुट आई

InShOt

7 42 views

Like Comment Share

Reels and short videos

CamScanner

और पूंछ हिलाने लगे! इसलिए तो पत्नियों की श्रद्धा पतियों में नहीं रह जाती,क्योंकि पति लल्लो-चप्पो करने लगता है और उन्होंने सोचा था कि किसी पुरुष के पास समर्पण हो रहा है। और फिर पाती है कि पुरुष-मुरुष कहां, जरा-सी बात में झुका लो।

स्त्रियों के मन में पति के प्रति आदर नहीं रह जाता। कारण? पतियों का खुद का व्यवहार है। पति जल्दी ही समझौते कर लेते हैं। पत्नियां इतने जल्दी समझौते नहीं करतीं। मेरे हिसाब में पत्नियां ज्यादा आत्मबल प्रगट करती हैं। और तुम्हें सभी को अनुभव होगा इस बात का। अगर तुममें और तुम्हारी पत्नी में झंझट हो गई तो झुकना तुम्हीं को पड़ता है, पत्नी नहीं झुकती। दिन बीतें, दो दिन बीतें, तीन दिन बीतें, नहीं झुकती। रोयेगी, खाने में ज्यादा नमक डालेगी,रोटियां जलायेगी, बच्चों को पीटेगी, बर्तन गिरायेगी, दरवाजे भड़कायेगी, सब करेगी--मगर झुकेगी नहीं! तुम्हें सता डालेगी सब तरफ से। आखिर तुम्हें उस हालत में कर देगी कि अब या तो पागल हो जाओ और या झुक जाओ। मगर ध्यान रखना, जब तुम झुकते हो तभी तुम्हारे प्रति श्रद्धा समाप्त हो जाती है।

स्त्री का मन उस पति को आदर देता है जो संकल्पवान है। अगर तुम न झुको, पहली बार न झुको...पहली बार ही भूल हो जाती है।

एक गांव के गंवार ने शादी की...शहरी होता तो इतनी हिम्मत नहीं रख सकता था...गांव का गंवार था। पत्नी को लेकर चला वापिस। घोड़ा गाड़ी थी उसके पास। घोड़ा बीच में अटक गया। उसने एक कोड?ा मारा घोड़े को और कहा कि एक...! घोड़ा एकदम चल पड़ा। फिर अटका। उसने फिर उसे दो कोड़े मारे और कहा दो...! पत्नी बैठी-बैठी सुन रही थी कि यह हो क्या रहा है! फिर तीसरी बार घोड़ा अटका। वह उतरा नीचे, निकाली उसने बंदूक और घोड़े को वहीं मार दी गोली। धड़ाम से घोड़ा नीचे गिर गया। दो दफे चेतावनी दे दी,पर्याप्त; अब तीसरा मौका आ गया। पत्नी ने कहा: यह तुमने क्या किया? उसने कहा: एक...! बस...फिर उसके बाद दो की नौबत नहीं आई। मगर वह तो गांव का गंवार था। मामला पहली दफा रफा-दफा हो गया। ऐसे पुरुष का स्त्री आदर करती है!

,, ओशो,,

CS CamScanner

7:19 pm 0 KB/s 42%
facebook

औरत कौन है? उस बूढ़ी औरत ने कहा कि ये मेरी पड़ोसिन की लड़कियां हैं। गरीब औरत थी, उसके शरीर में दूध भी न था। उसके पास पैसे-लत्ते भी नहीं थे। और तीन बच्चे जुड़वां। वह इन्हीं को दूध पिलाते-पिलाते मर गयी। लेकिन मुझे दया आ गयी, मेरे कोई बच्चे नहीं हैं, और मैंने इन तीनों बच्चियों को
पाल लिया।

अगर मां जिंदा रहती तो ये तीनों बच्चियां गरीबी, भूख और दीनता और दरिद्रता में बड़ी होतीं। मां मर गयी, इसलिए ये बच्चियां तीनों बहुत बड़े धन-वैभव में, संपदा में पलीं। और अब उस बूढ़ी की सारी संपदा की ये ही तीन मालिक हैं। और इनका सम्राट के परिवार में विवाह हो
रहा है।

देवदूत तीसरी बार हंसा। और चमार को उसने कहा कि ये तीन कारण हैं। भूल मेरी थी। नियति बड़ी है। और हम उतना ही देख पाते हैं, जितना देख पाते हैं। जो नहीं देख पाते, बहुत विस्तार है उसका। और हम जो देख पाते हैं उससे हम कोई अंदाज नहीं लगा सकते, जो होने वाला है, जो होगा। मैं अपनी मूर्खता पर तीन बार हंस लिया हूं। अब मेरा दंड पूरा हो गया और अब मैं जाता हूं।

तुम अगर अपने को बीच में लाना बंद कर दो, तो तुम्हें मार्गों का मार्ग मिल गया। फिर असंख्य मार्गों की चिंता न करनी पड़ेगी।

छोड़ दो उस पर। वह जो करवा रहा है, जो उसने अब तक करवाया है, उसके लिए धन्यवाद। जो अभी करवा रहा है, उसके लिए धन्यवाद। जो वह कल करवाएगा, उसके लिए धन्यवाद। तुम बिना लिखा चेक धन्यवाद का उसे दे दो। वह जो भी हो, तुम्हारे धन्यवाद में कोई फर्क न पड़ेगा। अच्छा लगे, बुरा लगे, लोग भला कहें, बुरा कहें, लोगों को दिखायी पड़े दुर्भाग्य या सौभाग्य, यह सब चिंता तुम मत करना।

🙏🌻💖 ओशो 💖🌻🙏

CS CamScanner

टालस्टाय ने एक छोटी सी कहानी लिखी है। मृत्यु के देवता ने अपने एक दूत को भेजा पृथ्वी पर। एक स्त्री मर गयी थी, उसकी आत्मा को लाना था।

देवदूत आया, लेकिन चिंता में पड़ गया। क्योंकि तीन छोटी-छोटी लड़कियां जुड़वां–एक अभी भी उस मृत स्त्री से लगी है। एक चीख रही है, पुकार रही है। एक रोते-रोते सो गयी है, उसके आंसू उसकी आंखों के पास सूख गए हैं–तीन छोटी जुड़वां बच्चियां और स्त्री मर गयी है, और कोई देखने वाला नहीं है। पति पहले मर चुका है। परिवार में और कोई भी नहीं है। इन तीन छोटी बच्चियों का क्या होगा?

उस देवदूत को यह खयाल आ गया, तो वह खाली हाथ वापस लौट गया। उसने जा कर अपने प्रधान को कहा कि मैं न ला सका, मुझे क्षमा करें, लेकिन आपको स्थिति का पता ही नहीं है। तीन जुड़वां बच्चियां हैं–छोटी-छोटी, दूध पीती। एक अभी भी मृत से लगी है, एक रोते-रोते सो गयी है, दूसरी अभी चीख-पुकार रही है। हृदय मेरा ला न सका। क्या यह नहीं हो सकता कि इस स्त्री को कुछ दिन और जीवन के दे दिए जाएं? कम से कम लड़कियां थोड़ी बड़ी हो जाएं। और कोई देखने वाला नहीं है।

मृत्यु के देवता ने कहा, तो तू फिर समझदार हो गया; उससे ज्यादा,..... जिसकी मर्जी से मौत होती है, ...जिसकी मर्जी से जीवन होता है!

तो तूने पहला पाप कर दिया, और इसकी तुझे सजा मिलेगी। और सजा यह है कि तुझे पृथ्वी पर चले जाना पड़ेगा। और जब तक तू तीन बार न हंस लेगा अपनी मूर्खता पर, तब तक वापस न आ सकेगा।

इसे थोड़ा समझना। तीन बार न हंस लेगा अपनी मूर्खता पर–क्योंकि दूसरे की मूर्खता पर तो अहंकार हंसता है। जब तुम अपनी मूर्खता पर हंसते हो तब अहंकार टूटता है।

देवदूत को लगा नहीं। वह राजी हो गया दंड भोगने को, लेकिन फिर भी उसे लगा कि सही तो मैं ही हूं। और हंसने का मौका कैसे आएगा?

CamScanner

7:11 pm 2 KB/s 43%

facebook

👍 21 1 comment

Like Comment Send

ओशो - जीवन-मृत्यु

Jigisha Soni · 10h ·

किसी स्त्री या पुरुष के साथ जिससे तुमको प्रेम नहीं है, मत जाओ। किसी सनक के चलते मत जाओ, किसी वासना के कारण मत जाओ। खोजो, क्या किसी व्यक्ति के साथ प्रतिबद्ध रहने की आकांक्षा तुममें जाग चुकी है। क्या गहरा संबंध बनाने के लिए तुम पर्याप्त रूप से परिपक्व हो? क्योंकि यह संबंध तुम्हारे सारे जीवन को बदलने जा रहा है। और जब तुम संबंध बनाओ तो इसको पूरी सच्चाई से बनाओ।

ओशो

CS CamScanner

जब तुम संबंध बनाओ तो
इसको पूरी सच्चाई से बनाओ।
क्योंकि यह संबंध तुम्हारे सारे
जीवन को बदलने जा रहा है
ओशो

CamScanner

।। ध्यान का छोटा सा सूत्र ।।

ध्यान का छोटा सा सूत्र है :
अपने भीतर इतनी शांति,
कि विचार की कोई तरंग भी न उठे।
कोई लहर न हो ऐसा सन्नाटा;
ऐसा शून्य,
जहां बस तुम हो और कुछ भी नहीं है।
जहां यह भाव भी नहीं कि मैं हूं।
उसी क्षण यह सारा विश्व
तुम्हारे ऊपर ईश्वर बन कर
बरस पड़ता है।

☆ फिर अमरित की बूंद पडी, ओशो ☆

CamScanner

लगे तो कृपया कमरे का दरवाज़ा बंद करेंगे...*
संत को ये सुनकर थोड़ी हैरत हुई, फिर भी दरवाज़ा बंद कर दिया...
पिता...दरअसल इस खाली कुर्सी का राज़ मैंने किसी को नहीं
बताया...अपनी बेटी को भी नहीं...पूरी ज़िंदगी, मैं ये जान नहीं सका कि प्रार्थना कैसे की जाती है...मंदिर जाता था, पुजारी के श्लोक सुनता...वो सिर के ऊपर से गुज़र जाते....कुछ पल्ले नहीं पड़ता था...मैंने फिर प्रार्थना की कोशिश करना छोड़ दिया...लेकिन चार साल पहले मेरा एक दोस्त *मिला...उसने मुझे बताया कि प्रार्थना कुछ नहीं भगवान से सीधे संवाद का माध्यम होती है....उसी ने सलाह दी कि एक खाली कुर्सी अपने सामने रखो...फिर विश्वास करो कि वहां* *भगवान खुद ही विराजमान हैं...अब भगवान से ठीक वैसे ही बात करना शुरू करो, जैसे कि अभी तुम मुझसे कर रहे हो...मैंने ऐसा करके*
*देखा...मुझे बहुत अच्छा लगा...फिर तो मैं रोज़ दो-दो घंटे ऐसा करके देखने लगा...लेकिन ये ध्यान रखता कि मेरी बेटी कभी मुझे ऐसा करते न देख *ले...अगर वो देख लेती तो उसका ही नर्वस ब्रेकडाउन हो जाता या वो फिर मुझे साइकाइट्रिस्ट के पास ले जाती...*
ये सब सुनकर संत ने बुजुर्ग के लिए प्रार्थना की...सिर पर हाथ रखा और *भगवान से बात करने के क्रम को जारी रखने के लिए कहा...संत को *उसी दिन दो दिन के लिए शहर से बाहर जाना था...इसलिए विदा लेकर चले गए..*
दो दिन बाद बेटी का संत को फोन *आया कि उसके पिता की उसी दिन कुछ घंटे बाद मृत्यु हो गई थी, जिस दिन वो आप से मिले थे...*
संत ने पूछा कि उन्हें प्राण छोड़ते वक्त कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई...
बेटी ने जवाब दिया...नहीं, मैं जब घर से काम पर जा रही थी तो उन्होंने मुझे बुलाया...मेरा माथा प्यार से चूमा...ये सब करते हुए उनके चेहरे पर ऐसी शांति थी, जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी...जब मैं वापस आई तो वो हमेशा के लिए आंखें मूंद चुके थे...लेकिन मैंने एक अजीब सी चीज़ भी देखी...वो ऐसी मुद्रा में थे जैसे कि खाली कुर्सी पर किसी की गोद में अपना सिर झुकाया हो...संत जी, वो क्या था...
ये सुनकर संत की आंखों से आंसू बह निकले...बड़ी मुश्किल से बोल पाए...काश, मैं भी जब दुनिया से जाऊं तो ऐसे ही जाऊं...

CamScanner

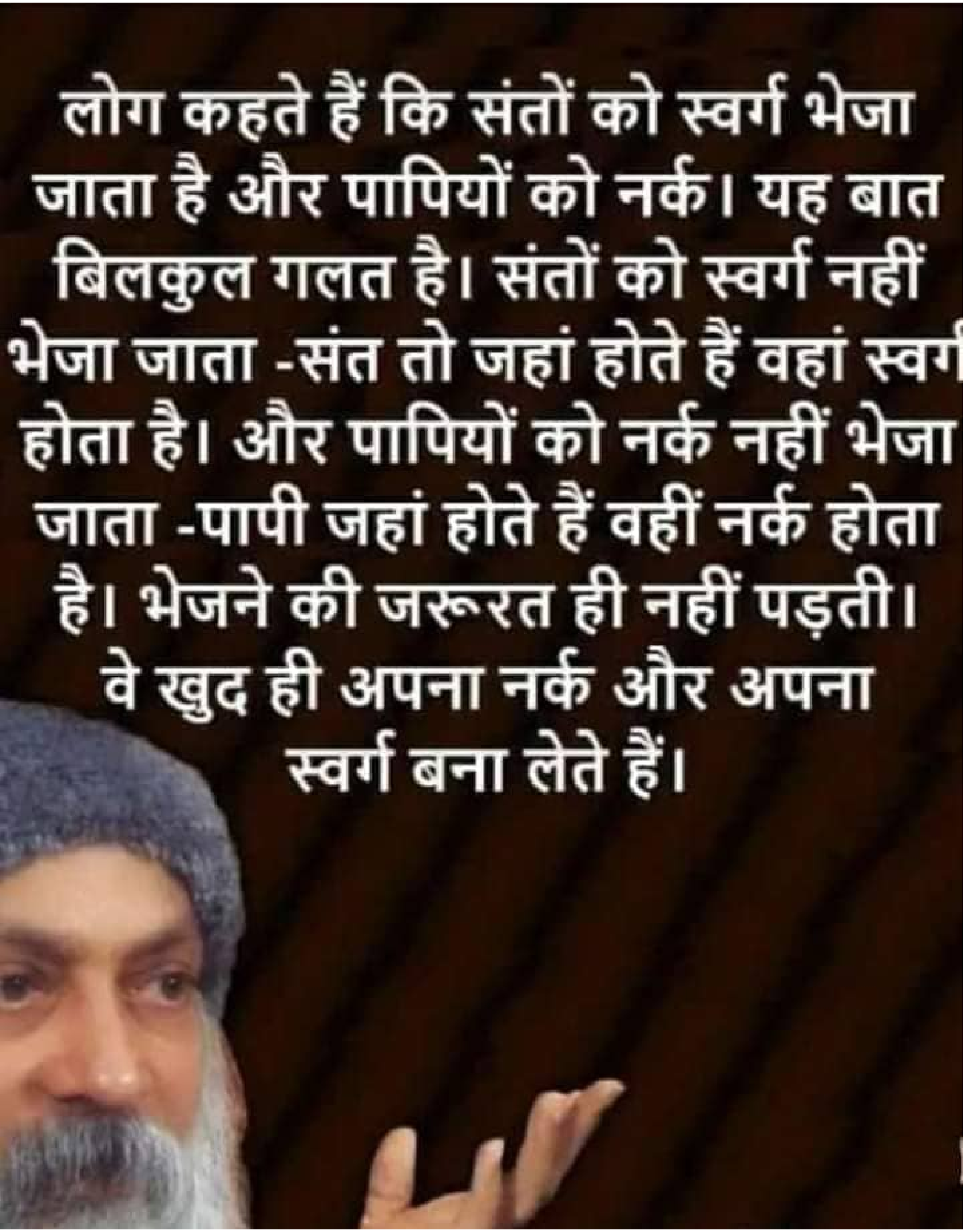
लोग कहते हैं कि संतों को स्वर्ग भेजा जाता है और पापियों को नर्क। यह बात बिलकुल गलत है। संतों को स्वर्ग नहीं भेजा जाता -संत तो जहां होते हैं वहां स्वर्ग होता है। और पापियों को नर्क नहीं भेजा जाता -पापी जहां होते हैं वहीं नर्क होता है। भेजने की जरूरत ही नहीं पड़ती। वे खुद ही अपना नर्क और अपना स्वर्ग बना लेते हैं।

CamScanner

9:47 am 0 KB/s VoLTE 4G 89%

बयालीस वर्ष तक हो जाना चाहिए।

और सातवां शरीर उनचास वर्ष तक हो जाना चाहिए। वह सातवां शरीर निर्वाण काया है; वह कोई शरीर नहीं है, वह बॉडीलेसनेस की हालत है। वह परम है। वहां शून्य ही शेष रह जाएगा। वहां ब्रह्म भी शेष नहीं है। वहां कुछ भी शेष नहीं है। वहां सब समाप्त हो गया है।

निर्वाण शब्द का मतलब होता है, दीये का बुझ जाना। इसलिए बुद्ध कहते हैं, निर्वाण हो जाता है। पांचवें शरीर तक मोक्ष की प्रतीति होगी, क्योंकि परम मुक्ति हो जाएगी; ये चार शरीरों के बंधन गिर जाएंगे और आत्मा परम मुक्त होगी।

तो मोक्ष जो है, वह पांचवें शरीर की अवस्था का अनुभव है।

अगर चौथे शरीर पर कोई रुक जाए, तो स्वर्ग का या नरक का अनुभव होगा; वे चौथे शरीर की संभावनाएं हैं।

अगर पहले, दूसरे और तीसरे शरीर पर कोई रुक जाए, तो यही जीवन सब कुछ है — जन्म और मृत्यु के बीच; इसके बाद कोई जीवन नहीं है।

अगर चौथे शरीर पर चला जाए, तो इस जीवन के बाद नरक और स्वर्ग का जीवन है; दुख और सुख की अनंत संभावनाएं हैं वहां।

अगर पांचवें शरीर पर पहुंच जाए, तो मोक्ष का द्वार है।

अगर छठवें पर पहुंच जाए, तो मोक्ष के भी पार ब्रह्म की संभावना है; वहां न मुक्त है, न अमुक्त है; वहां जो भी है उसके साथ वह एक हो गया। अहं ब्रह्मास्मि की घोषणा इस छठवें शरीर की संभावना है।

लेकिन अभी एक कदम और, जो लास्ट जंप है--जहां न अहं है, न ब्रह्म है; जहां मैं और तू दोनों नहीं हैं; जहां कुछ है ही नहीं, जहां परम शून्य है--टोटल, एब्सोल्यूट वॉयड--वह निर्वाण है।

ओशो; जिन खोजा तिन पाइयां--प्रवचन--13

CamScanner

9:44 am 0 KB/s
VoLTE 4G 89%

आदमी के पास सात प्रकार के शरीर हैं। एक शरीर तो जो हमें दिखाई पड़ता है--फिजिकल बॉडी, भौतिक शरीर। दूसरा शरीर जो उसके पीछे है और जिसे ईथरिक बॉडी कहें--आकाश शरीर। और तीसरा शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे एस्ट्रल बॉडी कहें--सूक्ष्म शरीर। और चौथा शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे मेंटल बॉडी कहें--मनस शरीर। और पांचवां शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे स्प्रिचुअल बॉडी कहें--आत्मिक शरीर। छठवां शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे हम कास्मिक बॉडी कहें--ब्रह्म शरीर। और सातवां शरीर जो उसके भी पीछे है, जिसे हम निर्वाण शरीर, बॉडीलेस बॉडी कहें--अंतिम।

इन सात शरीरों के संबंध में थोड़ा समझेंगे तो फिर कुंडलिनी की बात पूरी तरह समझ में आ सकेगी।

पहले सात वर्ष में भौतिक शरीर ही निर्मित होता है। जीवन के पहले सात वर्ष में भौतिक शरीर ही निर्मित होता है, बाकी सारे शरीर बीजरूप होते हैं; उनके विकास की संभावना होती है, लेकिन वे विकसित उपलब्ध नहीं होते। पहले सात वर्ष, इसलिए इमिटेशन, अनुकरण के ही वर्ष हैं। पहले सात वर्षों में कोई बुद्धि, कोई भावना, कोई कामना विकसित नहीं होती, विकसित होता है सिर्फ भौतिक शरीर।

कुछ लोग सात वर्ष से ज्यादा कभी आगे नहीं बढ़ पाते; कुछ लोग सिर्फ भौतिक शरीर ही रह जाते हैं। ऐसे व्यक्तियों में और पशु में कोई अंतर नहीं होगा। पशु के पास भी सिर्फ भौतिक शरीर ही होता है, दूसरे शरीर अविकसित होते हैं।

दूसरे सात वर्ष में भाव शरीर का विकास होता है; या आकाश_शरीर का। इसलिए दूसरे सात वर्ष व्यक्ति के भाव जगत के विकास के वर्ष हैं। चौदह वर्ष की उम्र में इसीलिए सेक्स मैच्योरिटी उपलब्ध होती है; वह भाव का बहुत प्रगाढ़ रूप है। कुछ लोग चौदह वर्ष के होकर ही रह जाते हैं; शरीर की उम्र बढ़ती जाती है, लेकिन उनके पास दो ही शरीर होते हैं।

तीसरे सात वर्षों में सूक्ष्म शरीर विकसित होता है--इक्कीस वर्ष की उम्र तक। दूसरे शरीर में भाव का विकास होता है; तीसरे शरीर में तर्क, विचार और बुद्धि का विकास होता है।

CamScanner

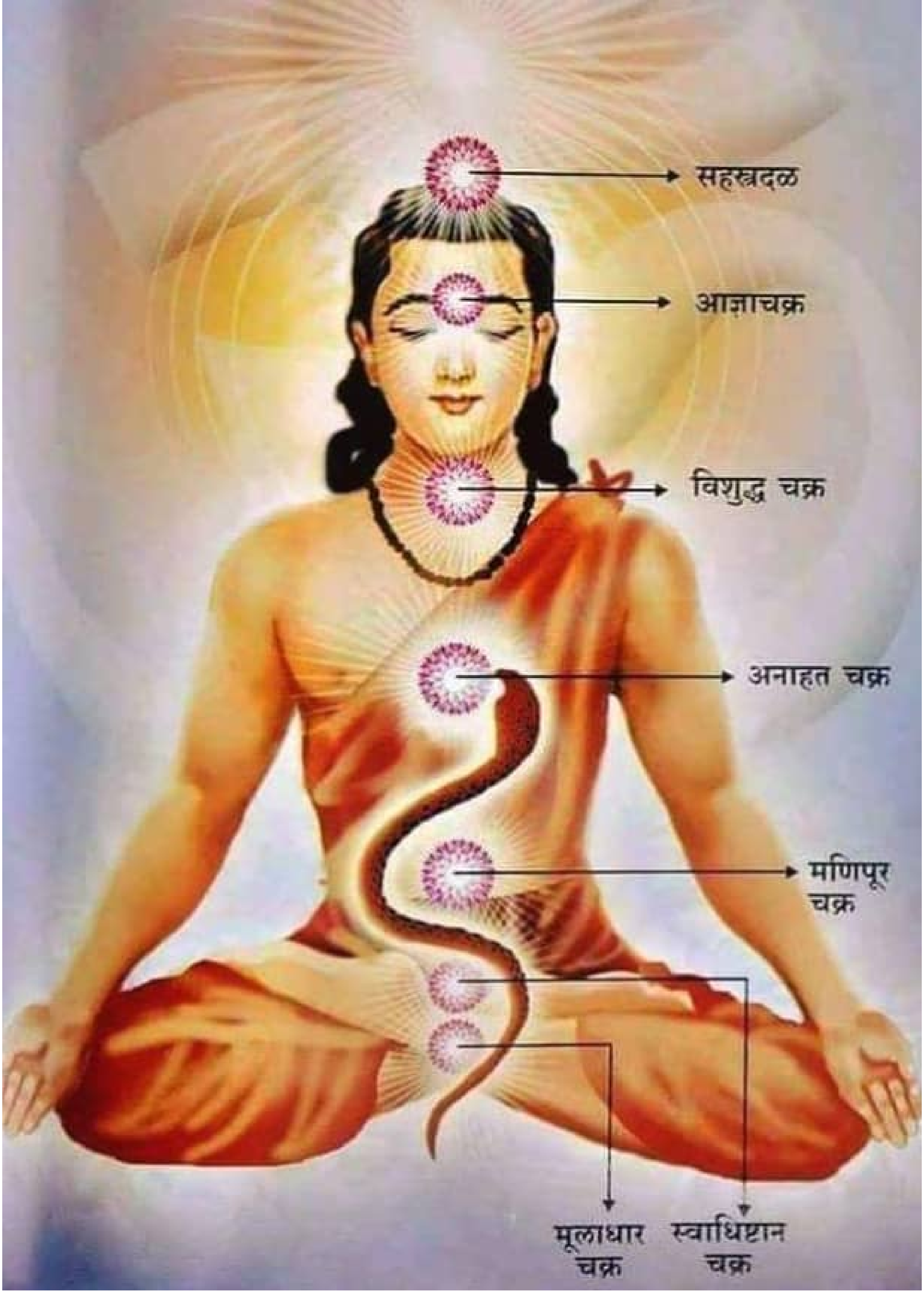
सहस्त्रदळ
आज्ञाचक्र
विशुद्ध चक्र
अनाहत चक्र
मणिपूर चक्र
मूलाधार चक्र
स्वाधिष्टान चक्र

CamScanner

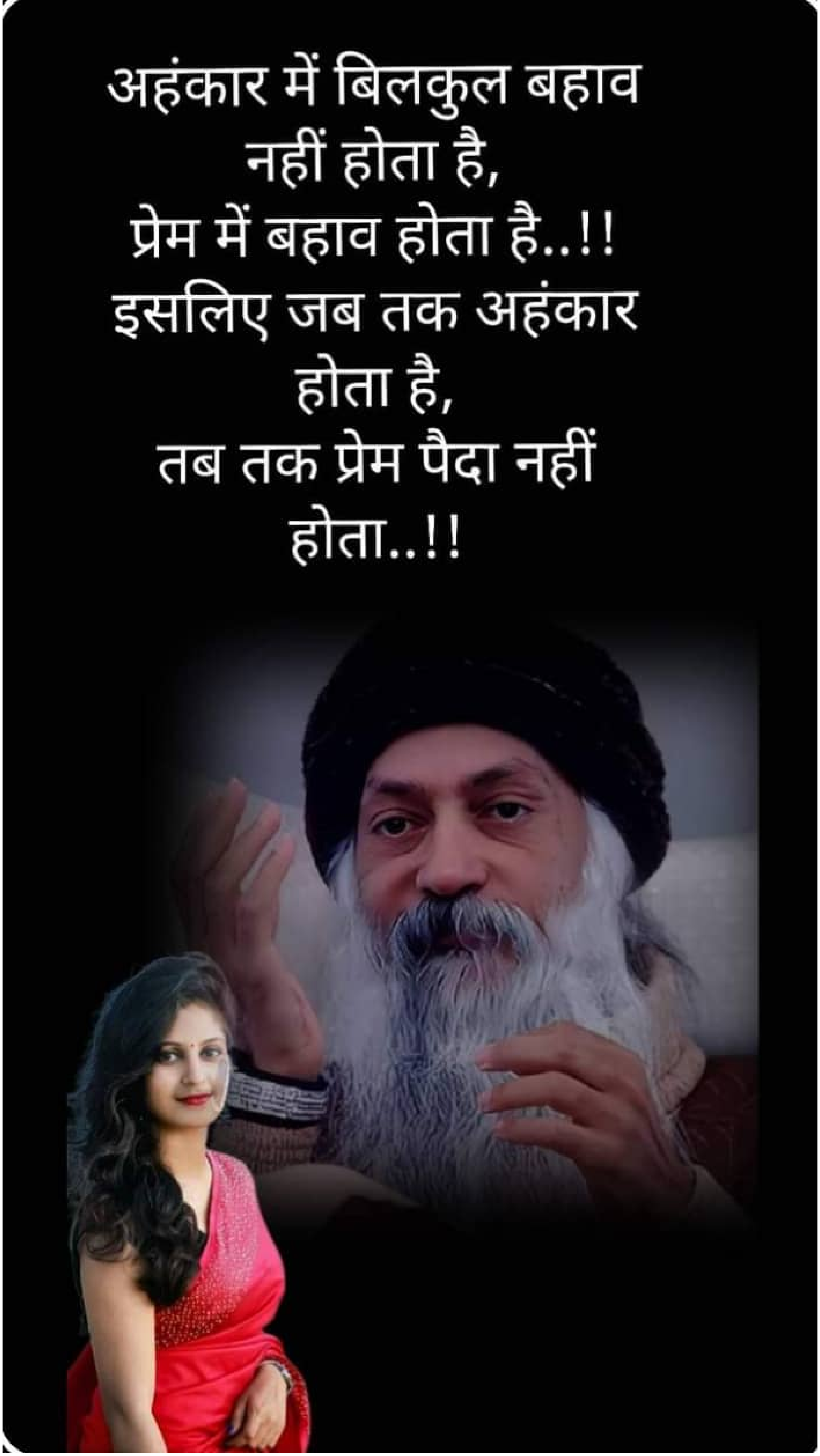
अहंकार में बिलकुल बहाव
नहीं होता है,
प्रेम में बहाव होता है..!!
इसलिए जब तक अहंकार
होता है,
तब तक प्रेम पैदा नहीं
होता..!!

CamScanner

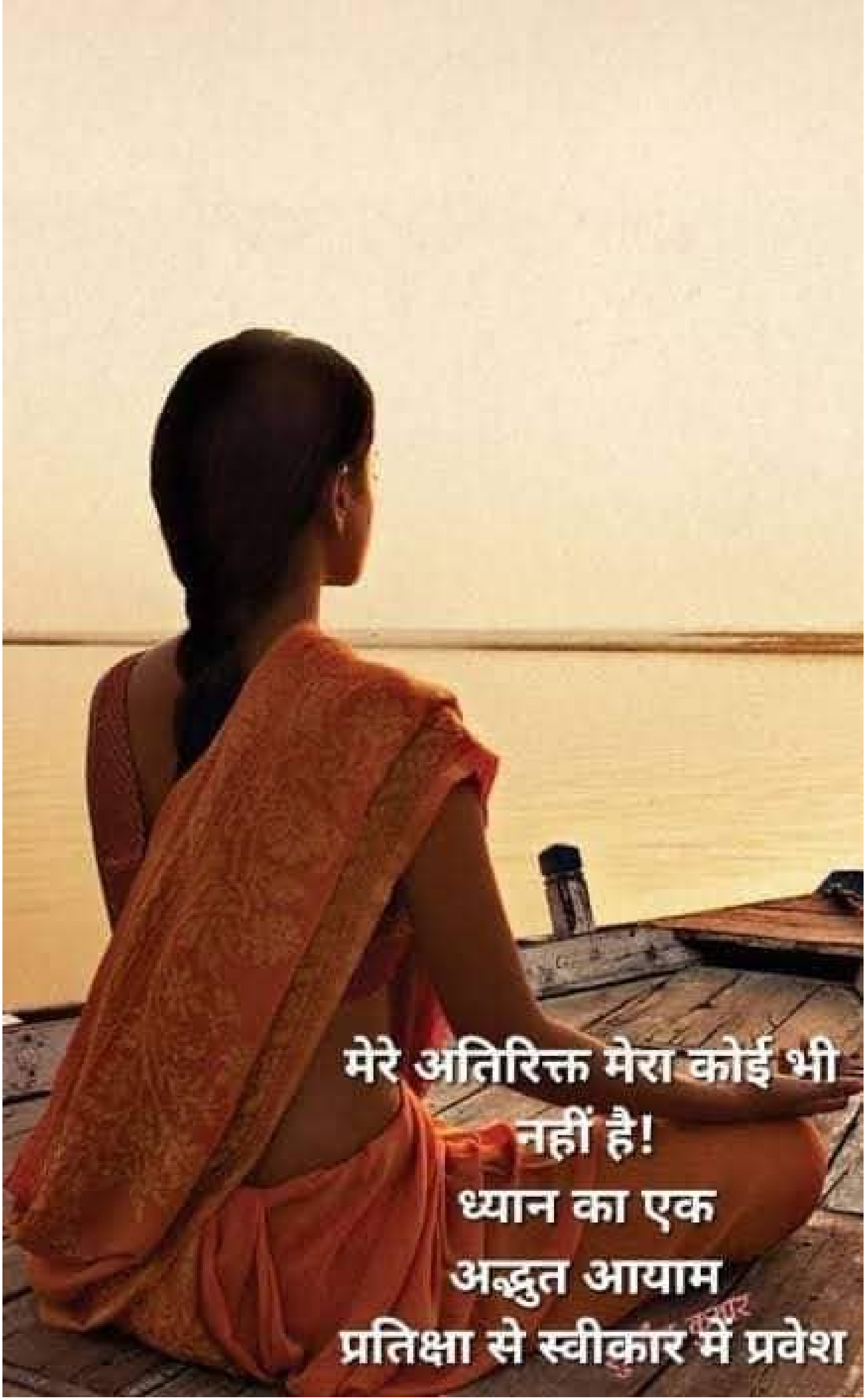

CamScanner

06:16 4G 2.00 KB/S Vo LTE 46

मैं तुम्हें एक नई ही बात कह रहा हूं।
मैं तो कह रहा हूं: सब नीति,
सब आचरण, सब बाह्य उपचार हैं।
तुम चैतन्य को जगाओ। तुम चेतना बनो।
तुम ज्यादा से ज्यादा चैतन्य हो जाओ।
तुम्हारी चैतन्यता की क्षमता में ही तुम्हारे
जीवन की क्रांति छिपी है। तुम जितने
होश से भर जाओगे उतना ही तुम्हारा
जीवन सहज, सीधा, नैसर्गिक, सरल,
सत्य और प्रामाणिक हो जाएगा।
काहे होत अधीरओशो

CamScanner

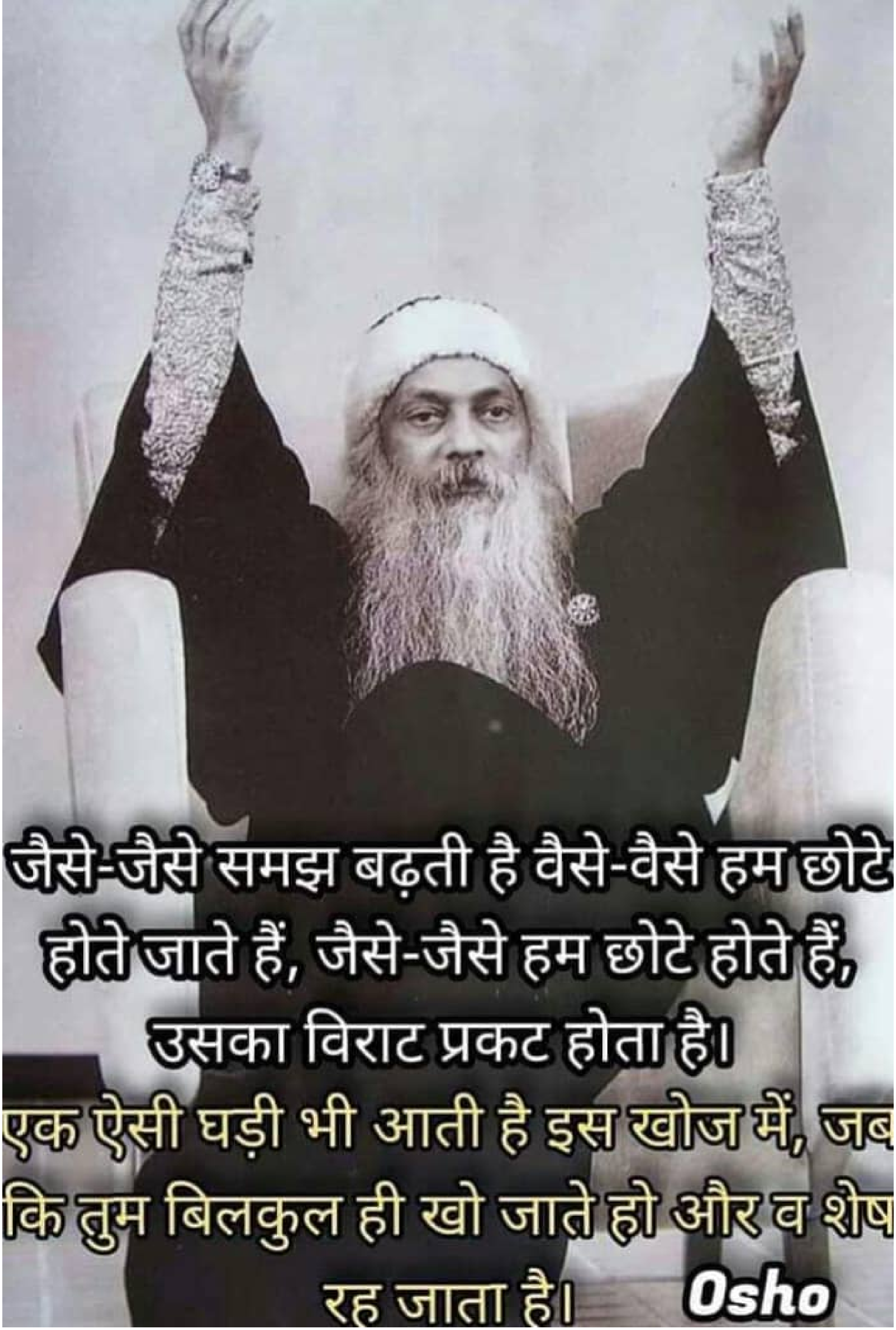
जैसे-जैसे समझ बढ़ती है वैसे-वैसे हम छोटे
होते जाते हैं, जैसे-जैसे हम छोटे होते हैं,
उसका विराट प्रकट होता है।
एक ऐसी घड़ी भी आती है इस खोज में, जब
कि तुम बिलकुल ही खो जाते हो और व शेष
रह जाता है।
Osho

CamScanner

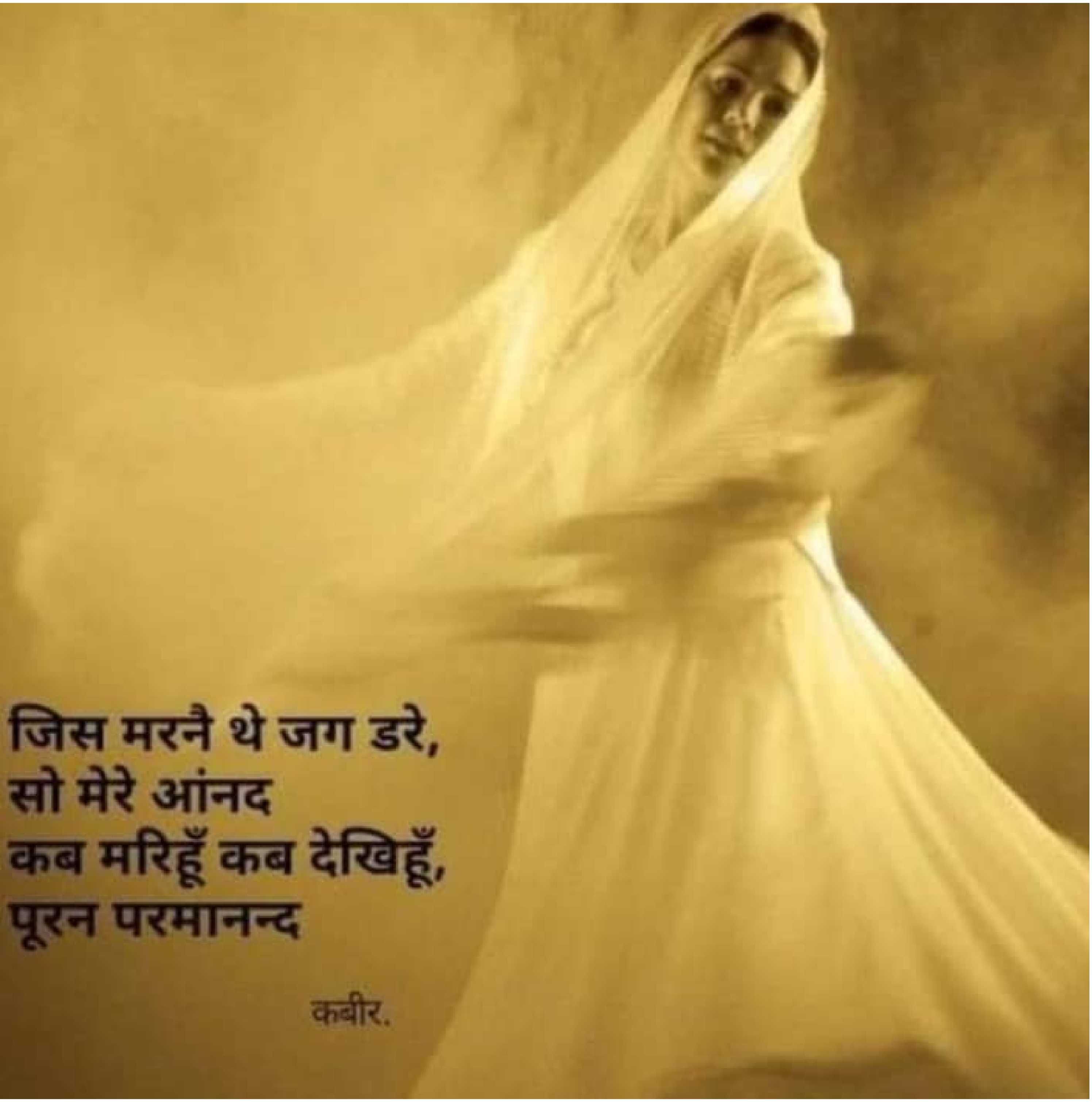

CamScanner

आप पिछले जन्मों की वजह से ऐसे हैं, तभी तो आप उसे ही पकड़ते हैं जिसे आप सीखते भी नहीं, बिना सीखा तभी पकड़ में आता है, जब उसकी कहीं पुरानी पकड़ मौजूद हो, आपकी सभी आदतें कहीं पुरानी जानकारी से संबंध रखती हैं, आपको पता भी नहीं चलता और आप उन्हीं छोटी आदतों में बिना प्रयास के रम जाते हैं !..हम अपने को आधुनिक कहते हैं, नया कहते हैं, लेकिन पकड़ते हैं पुराने को ही नये के रूप में, पुराने पर ही नया आवरण चढा लेते हैं! ! आपका नया भी पुराने में होकर ही आता है, ये आधुनिक होना नहीं है!..असली आधुनिक आदमी तब बनता है जब समस्त पुराने से बाहर निकले, और उसको पकड़ने की हिम्मत जुटाये, जो अदृश्य है और शुद्ध बुद्धि से समझ पड़ता है। - अचिंत्य

CS CamScanner

मन के पास ज़बाब नहीं है,
मन केवल सवालों से भरा पड़ा है..!!
ध्यान सभी सवालों का ज़बाब हैं..!!

CamScanner

दुनिया काफी सुंदर हौ सकती है,
अगर लोग एक-दूसरे के कामों
में बाधा न दें, मंतव्य न दें, निर्णय न दें।
ओशो
एस धम्मो सनंतनो-(भाग-8) प्रवचन-75

CamScanner

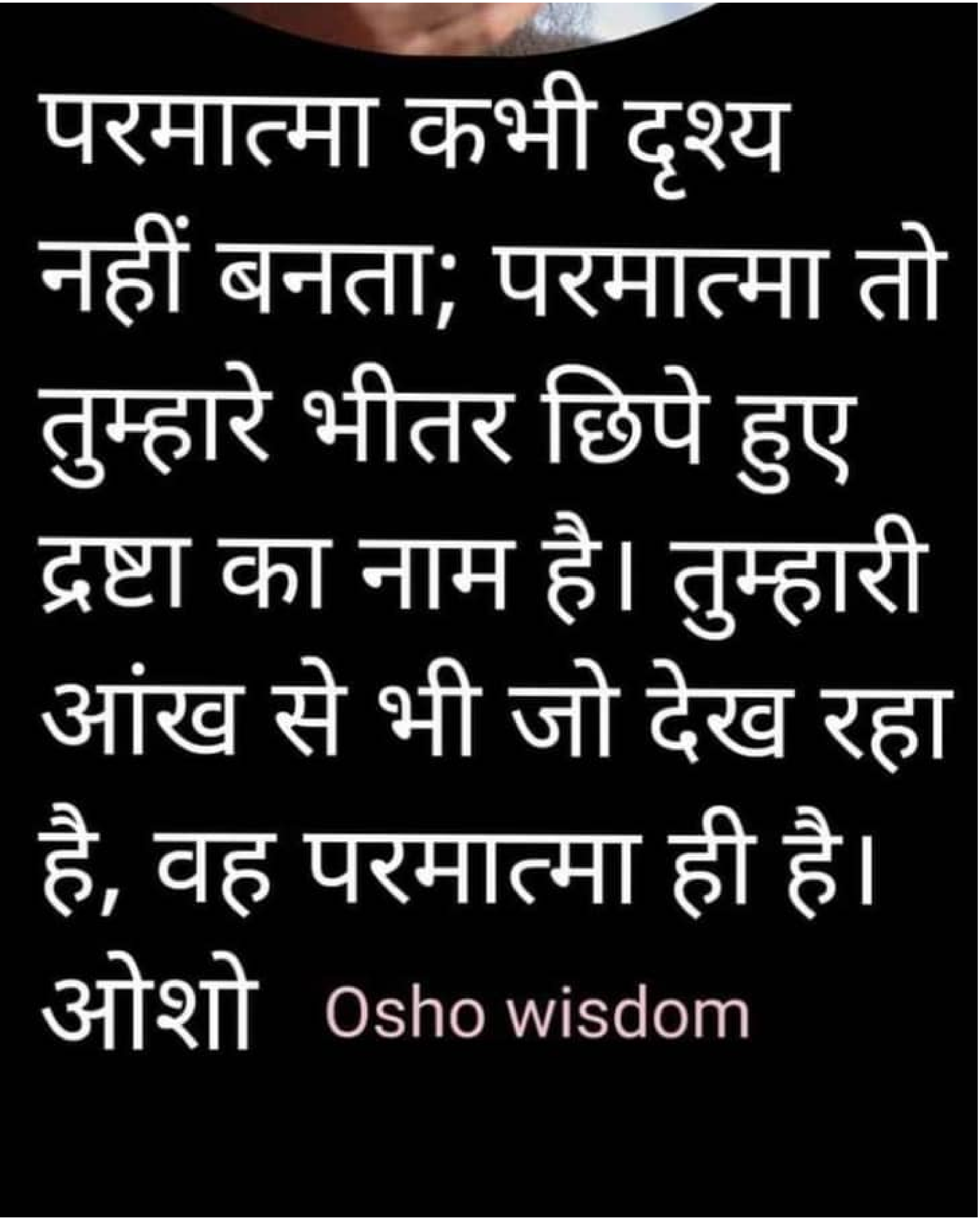
परमात्मा कभी दृश्य
नहीं बनता; परमात्मा तो
तुम्हारे भीतर छिपे हुए
द्रष्टा का नाम है। तुम्हारी
आंख से भी जो देख रहा
है, वह परमात्मा ही है।
ओशो
Osho wisdom

CamScanner

ओ शो वाणी

Subhash Chandra · 19m ·

रवींद्रनाथ ने बड़ी मीठी कथा लिखी है अपने परिवार की। बड़ा परिवार था उनका, सौ लोग परिवार में थे। बहुत दूध खरीदा जाता था। तो दूध में पानी मिला कर आ जाता था। तो रवींद्रनाथ ने कहा कि एक इंस्पेक्टर रख दिया जाए, जो जांच-पड़ताल करे। पिता हंसे और उन्होंने कहा : ठीक है, इंस्पेक्टर रख दो। एक इंस्पेक्टर रख दिया गया, जिसका काम ही यह था कि दूध की जांच-पड़ताल करे कि पानी न मिलाया जा सके। उस दिन से दूध में पानी और थोड़ा ज्यादा आने लगा। रवीन्द्रनाथ तो बहुत हैरान हुए। मगर गणित तो ऐसे चलता है। रवींद्रनाथ ने कहा : तो एक और इंस्पेक्टर रखो इंस्पेक्टर के ऊपर, कि जो उसकी नजर रखे कि यह कोई बेईमानी न कर सके। उस दिन तो गजब हो गया, पानी तो आया ही आया, एक मछली भी दूध में आ गयी! क्योंकि इंस्पेक्टर का हिस्सा जुड़ता गया।

बाप ने कहा : तू पागल है! विदा कर इन इंस्पेक्टरों को। यह और एक मुफ्त का खर्च सिर पर बंधा। दो इंस्पेकटरों को तनखाह दो और इन दोनों के हिस्से बंध गये हैं। जैसा चल रहा था ठीक था। इतना पानी नहीं था, कम-से -कम मछलियां तो नहीं आती थीं।

ऐसी इस देश की दशा है। यहां तुम भ्रष्टाचार किससे रुकवाओगे? यह तंत्र कौन बदलेगा? जो बदलेगा उसको ही इस तंत्र का हिस्सा होना पड़ेगा। इस तंत्र में जीना है तो इस तंत्र के बाहर खड़ा नहीं हो सकता वह। जिन राजनेताओं से तुम आशा करते हो कि वे इस तंत्र को बदलेंगे? उसको चुनाव लड़ने के लिए पैसे चाहिए। पैसे कोई ऐसे नहीं देता।

हंसा तो मोती चुगैं, ओशो

5

2 comments

CamScanner

मैं जरूर मृत्यु सिखाता हूं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं जीवन का विरोधी हूं। इसका मतलब ही यह है कि जीवन को जानने का, जीवन को पहचानने का द्वार ही मृत्यु है। इसका मतलब यह है कि मैं जीवन और मृत्यु को उलटा नहीं मानता। चाहे मैं उसको मृत्यु की कला कहूं, चाहे जीवन की कला कहूं दोनों बातों का एक ही मतलब होता है..✍️❤️💻

oshoduniya.com

❤️सद्गुरु ओशो❤️

CamScanner

एक उम्र के बाद पूजा पाठ शुरू करने वाले पाखंडियो से सदा सावधान ही रहना अच्छा है, ऐसे ही लोग उस ठीक समय का इंतेज़ार करते है जब किसी से अपना उल्लू सीधा किया जा सके तुम तो परमात्मा पर निसार रहना, वो

CamScanner

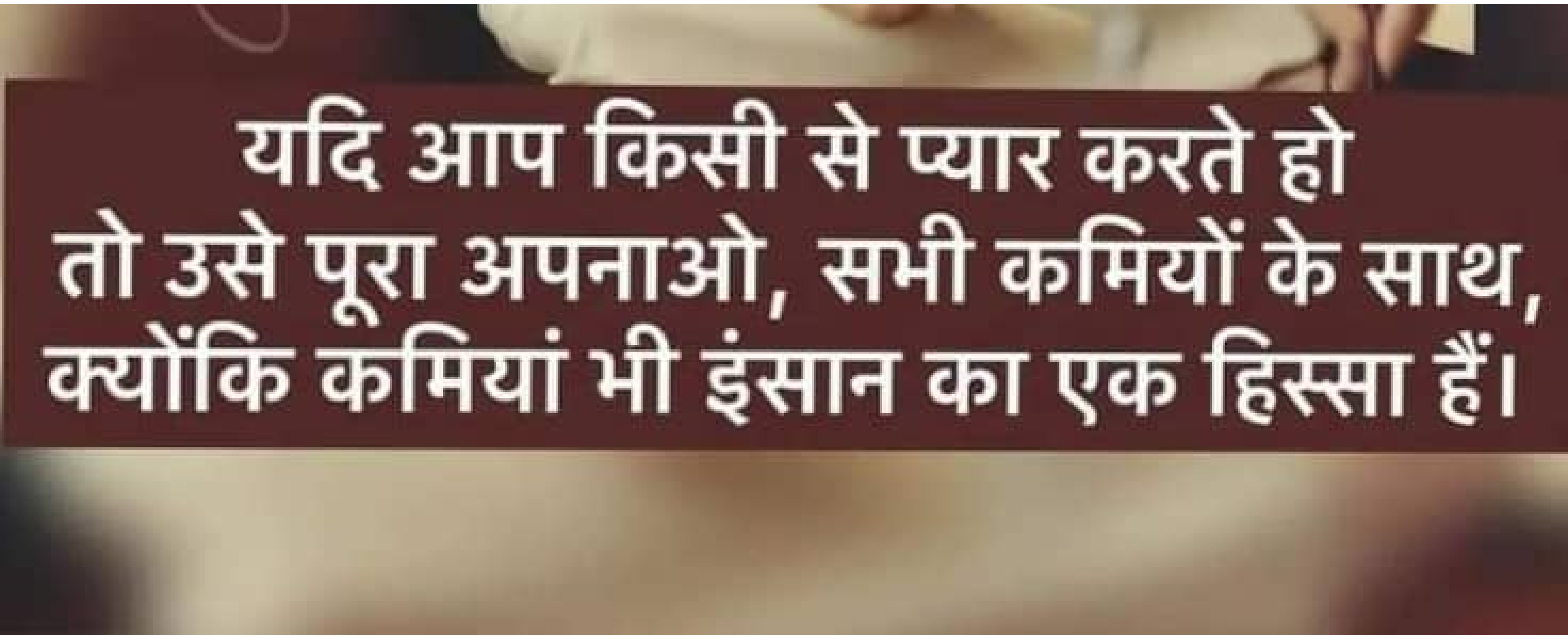

CamScanner

एक बार एक व्यक्ति! गधे
पर काबु पाने में थक
चुका था! लोग उस पर
"हँसते थे,
एक दिन लोगों ने देखा कि
गधा! व्यक्ति के पीछे पीछे
चल रहा है, तो लोगों
ने व्यक्ति को "शाबाशी दी!
और पूछा कि कैसे
काबु में किया गधे को! तो
व्यक्ति ने कहा;- मैंने एक
नेता का जीवन परिचय
पढ़ा! और मैंने
काबु पाने का प्रयास छोड़
दिया, अब गधा जहां जहां
जाता है, मैं उसके आगे
आगे चलने लगता हूँ!
और सबको लगता है कि,
"गधा मेरे नियंत्रण में है!
इतिहास में आज तक
कोई व्यक्ति किसी नेता के
पीछे नहीं चला!नेता
देखता है भीड़ किस दिशा
में जा रही है, और वह
भीड़ के सबसे आगे चलने
लगता है.!! ओशो

CamScanner

तीन सूत्र साक्षी साधना के

1-संसार के कार्य में लगे हुए श्वास के आवागमन के प्रति जागे हुए रहो।शीघ्र ही साक्षी का जन्म हो जाता है ।

2-भोजन करते समय स्वाद के प्रति होश रखो।शीघ्र ही साक्षी का आविर्भाव होता है ।

3-निद्रा के पूर्व जबकी नींद आ नहीं गयी है और जागरण जा रहा है- संभलो और देखो।शीघ्र ही साक्षी पा लिया जाता है ।

CamScanner

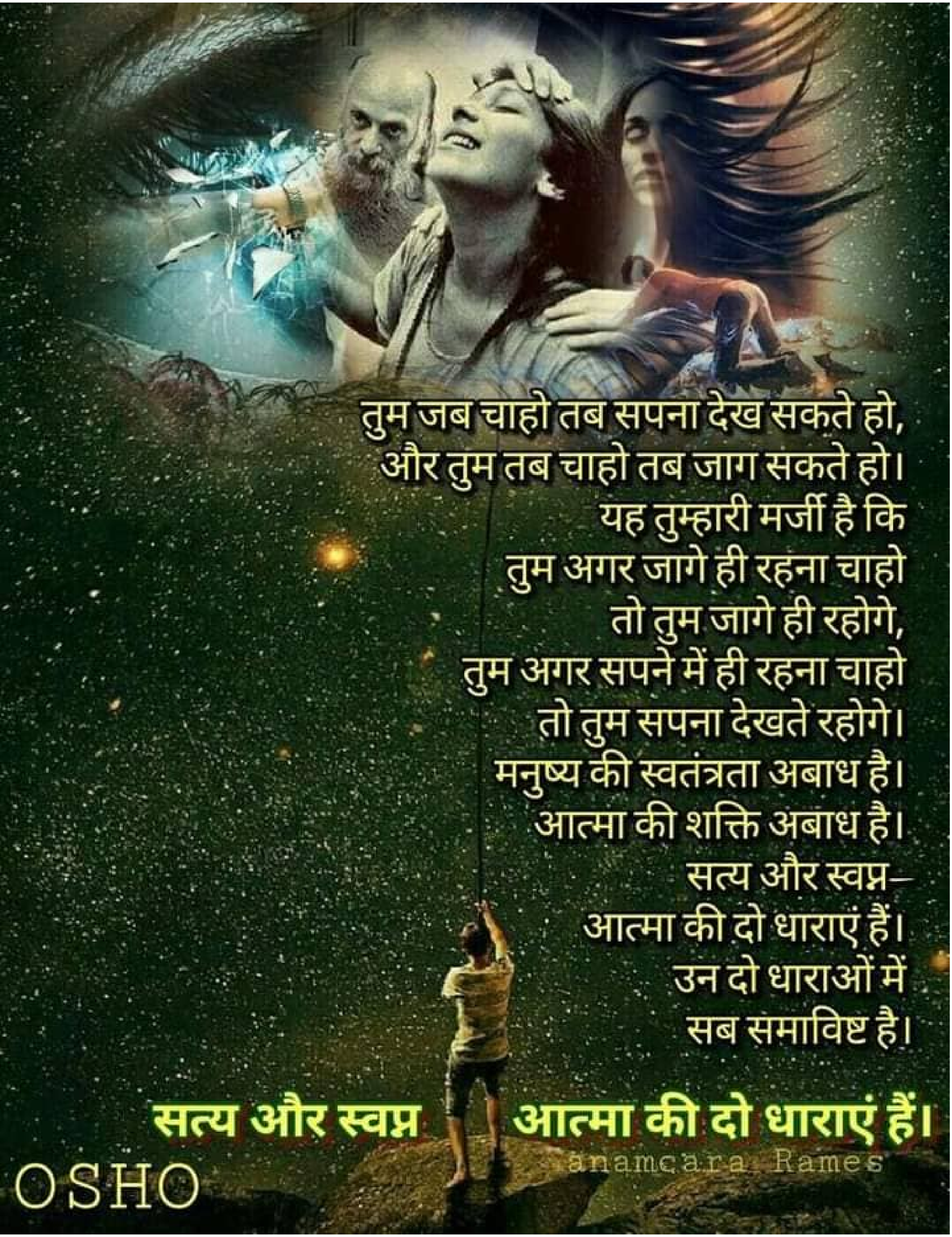
तुम जब चाहो तब सपना देख सकते हो,
और तुम तब चाहो तब जाग सकते हो।
यह तुम्हारी मर्जी है कि
तुम अगर जागे ही रहना चाहो
तो तुम जागे ही रहोगे,
तुम अगर सपने में ही रहना चाहो
तो तुम सपना देखते रहोगे।
मनुष्य की स्वतंत्रता अबाध है।
आत्मा की शक्ति अबाध है।
सत्य और स्वप्न–
आत्मा की दो धाराएं हैं।
उन दो धाराओं में
सब समाविष्ट है।
सत्य और स्वप्न आत्मा की दो धाराएं हैं।
anamcara Rames
OSHO

CamScanner

मैं अपने अनुभव से
कहता हूं की
जिस दिन आदमी
बेसहारा हो जाता है,
उसी दिन परमात्मा के
सारे सहारे उसे उपलब्ध
हो जाते है। -ओशो

CamScanner

8:52 am 0 KB/s VoLTE 4G 96%

यह अकेले का इतना आग्रह क्यों है?
अकेले के आग्रह में बड़ी गहरी बातें हैं।
पहली बात तो यह है कि जब हम दूसरे का साथ मांगते हैं,
तभी हम कमजोर हो जाते हैं।
असल में साथ मांगना ही कमजोरी है।
वह हमारा कमजोर चित्त ही है, जो कहता है साथ चाहिए।
और कमजोर चित्त क्या कर पाएगा?
जो पहले से ही साथ मांगने लगा,
वह कर क्या पाएगा?
तो पहली तो जरूरत यह है कि हम साथ की कमजोरी छोड़ दें।

और पूरी तरह जो अकेला हो जाता है--जिसके चित्त से संग की, साथ की मांग, समाज की, सहयोग की इच्छा मिट जाती है;
यह बड़ी अदभुत बात है कि जो इस भांति अकेला हो जाता है,
जिसे किसी के संग की कोई इच्छा नहीं है-
सारा जगत उसे संग देने को उत्सुक हो जाता है!
इस कहानी में जो दूसरा मतलब है, वह यह कि खुद देवता भी उत्सुक हैं उस व्यक्ति को सहारा देने को, जो अकेला खड़ा हो गया! जो साथ मांगता है, उसे तो साथ मिलता नहीं।
नाम मात्र को लोग साथी हो जाते हैं, साथ मिलता नहीं।
असल में मांग से कोई साथ पा ही नहीं सकता है।
लेकिन जो मांगता ही नहीं साथ,
जो मिले हुए साथ को भी इनकार कर देता है,
उसके लिए सारे जगत की शुभ शक्तियां
आतुर हो जाती हैं साथ देने को।

कहानी तो काल्पनिक है, मिथ है, पुराण है,
गाथा है, प्रबोध कथा है।
वह कहती यह है कि जब कोई व्यक्ति
नितांत अकेला खड़ा हो जाता है तो
जगत की सारी शुभ शक्तियां
उसको साथ देने को आतुर हो जाती है.............

🌴 ओशो

CamScanner

8:50 am 0 KB/s VoLTE 4G 97%

****

जब कोई व्यक्ति नितांत अकेला हो जाता है,

तो प्रकृति की सारी शुभ शक्तियां
उसका साथ देने को आतुर हो जाती है!!

जिसे नितांत अकेले होने का साहस है,
वही इस खोज पर जा भी सकता है।
मन तो हमारा यही करता है कि कोई साथ हो,
कोई गुरु साथ हो,
कोई मित्र साथ हो,
कोई जानकार साथ हो,
कोई मार्गदर्शक साथ हो, कोई सहयोगी साथ हो;
अकेले होने के लिए हमारा मन नहीं करता।
लेकिन जब तक कोई अकेला नहीं हो सकता है,
तब तक आत्मिक खोज की दिशा में
इंच भर भी आगे नहीं बढ़ा जा सकता।
अकेले होने की सामर्थ्य,
दि करेज टु बी अलोन,
सबसे कीमती बात है।
हम तो दूसरे को साथ लेना चाहेंगे।
महावीर को कोई निमंत्रण देता है आकर कि मुझे साथ ले लो,
मैं सहयोगी बन जाऊंगा,
तो भी वे सधन्यवाद वह निमंत्रण वापस लौटा देते हैं!
कथा यह है कि देव इंद्र खुद कहता है आकर कि मैं साथ दूं,
सहयोगी बनूं! तो वे कहते हैं, क्षमा करें,
यह खोज ऐसी नहीं है कि कोई इसमें साथी हो सके,
यह खोज तो नितांत अकेले ही करने की है।
क्यों?
यह अकेले का इतना आग्रह क्यों है?
अकेले के आग्रह में बड़ी गहरी बातें हैं।
पहली बात तो यह है कि जब हम दूसरे का साथ मांगते हैं,
तभी हम कमजोर हो जाते हैं।
असल में साथ मांगना ही कमजोरी है।

CamScanner

Forwarded

नवदुर्गा- एक स्त्री पूरे जीवनचक्र का आधार है इस संसार में कुछ लोग स्त्री को सिर्फ और सिर्फ एक घर का सामान समझते हैं वह भूल गए हैं नवदुर्गा के नौ स्वरूप !

1. जन्म ग्रहण करती हुई कन्या "**शैलपुत्री**" स्वरूप है !
2. कौमार्य अवस्था तक "**ब्रह्मचारिणी**" का रूप है !
3. विवाह से पूर्व तक चंद्रमा के समान निर्मल होने से वह "**चंद्रघंटा**" समान है !
4. नए जीव को जन्म देने के लिए गर्भ धारण करने पर वह "**कूष्मांडा**" स्वरूप है !
5. संतान को जन्म देने के बाद वही स्त्री "**स्कन्दमाता**" हो जाती है !
6. संयम व साधना को धारण करने वाली स्त्री "**कात्यायनी**" रूप है !
7. अपने संकल्प से पति की अकाल मृत्यु को भी जीत लेने से वह "**कालरात्रि**" जैसी है !
8. संसार (कुटुंब ही उसके लिए संसार है) का उपकार करने से "**महागौरी**" हो जाती है !

9 धरती को छोड़कर स्वर्ग प्रयाण करने से पहले संसार मे अपनी संतान को सिद्धि (समस्त सुख-संपदा) का आशीर्वाद देने वाली "**सिद्धिदात्री**" हो जाती है

इस पावन बेला पर नवरात्रि की हार्दिक बधाइयां

मां सबकी मुरादें पूरी करें
जय माता दी......

11:02 am

CamScanner

osho suvichar

1h ·

मृत्यु के क्षण में तुम पाओगे कि ज़िन्दगी भर जो दौड़ तुमने की है,भागे, पहुंच गए -वह नाव जानेवाली नहीं है, वह किनारे पर ही आ रही है। लेकिन तब बहुत देर हो जाएगी। तब कुछ करते न बनेगा। अभी समय है, अभी कुछ किया जा सकता है। और मौत के पहले जो जाग गया उसकी कोई मौत नहीं है। और मौत तक जो सोया रहा उसका कोई जीवन नहीं है। उसका जीवन एक लंबा सपना है जो मृत्यु तोड़ देगी। ज़िन्दगी बेहोश सी चलती है और तुम भी नशे में चलते हो। तुम कहाँ जा रहे हो यह भी साफ नहीं है, क्यों जा रहे हो यह भी साफ नहीं है।

दो भीखमंगे राह के किनारे बैठे बातें कर रहे थे। उनमें से एक पूछ रहा था ज़िन्दगी का प्रयोजन क्या है? किसलिए है ज़िन्दगी? दूसरे ने कहा, जीने के सिवाय और कर भी क्या सकते हो? तुम भी उस दूसरे से राजी हो कि जीने के सिवाय और कर भी क्या सकते हो। और जीना भी तुम्हारे हाथ में नहीं है अनंत-अनंत स्थितियों पर निर्भर है। वह सब अचेतन है। क्यों तुम्हारे भीतर कामवासना उठी, क्यों तुमने परिवार बनाया, क्यों लोभ जगा, क्यों क्रोध जगा, क्यों तुमने धन इकट्ठा किया, क्यों तुमने शत्रु निर्मित किये, क्यों तुमने अपराध किया, क्यों तुमने बेईमानी की, कुछ भी साफ नहीं है। तुम जैसे एक कठपुतली हो और धागे किसी और के हाथ में है, जैसे तुम्हे कोई और नचाता है और तुम नाचते हो। तुम्हें वहम भर है कि तुम नाच रहे हो। अपनी ज़िंदगी को गौर से देखोगे तो पाओगे की तुम कठपुतली से ज्यादा कुछ नहीं है। और ऐसी कठपुतली की ज़िंदगी में क्या सत्य की कोई घटना घट सकती है, जिसके तुम मालिक भी न हो।

प्रवचन-शिवसूत्र

ओशो

5

CamScanner

CamScanner

सुगम है मंदिर जाना, मन में जाना कठिन है।
इसलिए सुगम को लोग चुन लेते है।
पर सुगम का सत्य से कोई संबंध नहीं है।
सुविधा से सत्य का कोई संबंध नहीं है।
इसलिए अधिक लोग पूजा करते है।
बहुत थोड़े लोग ध्यान करते है, पर जो ध्यान करते है
वे ही पहुंचते है।

- आचार्य रजनीश

CamScanner

हर चीज का वक़्त तय है , हर जगह तय है

आप कहीं पर पहुंचते नहीं ,पहुंचाए जाते हो

खेल तुम नहीं रहे

खेल तो वो रहा है ।

CamScanner

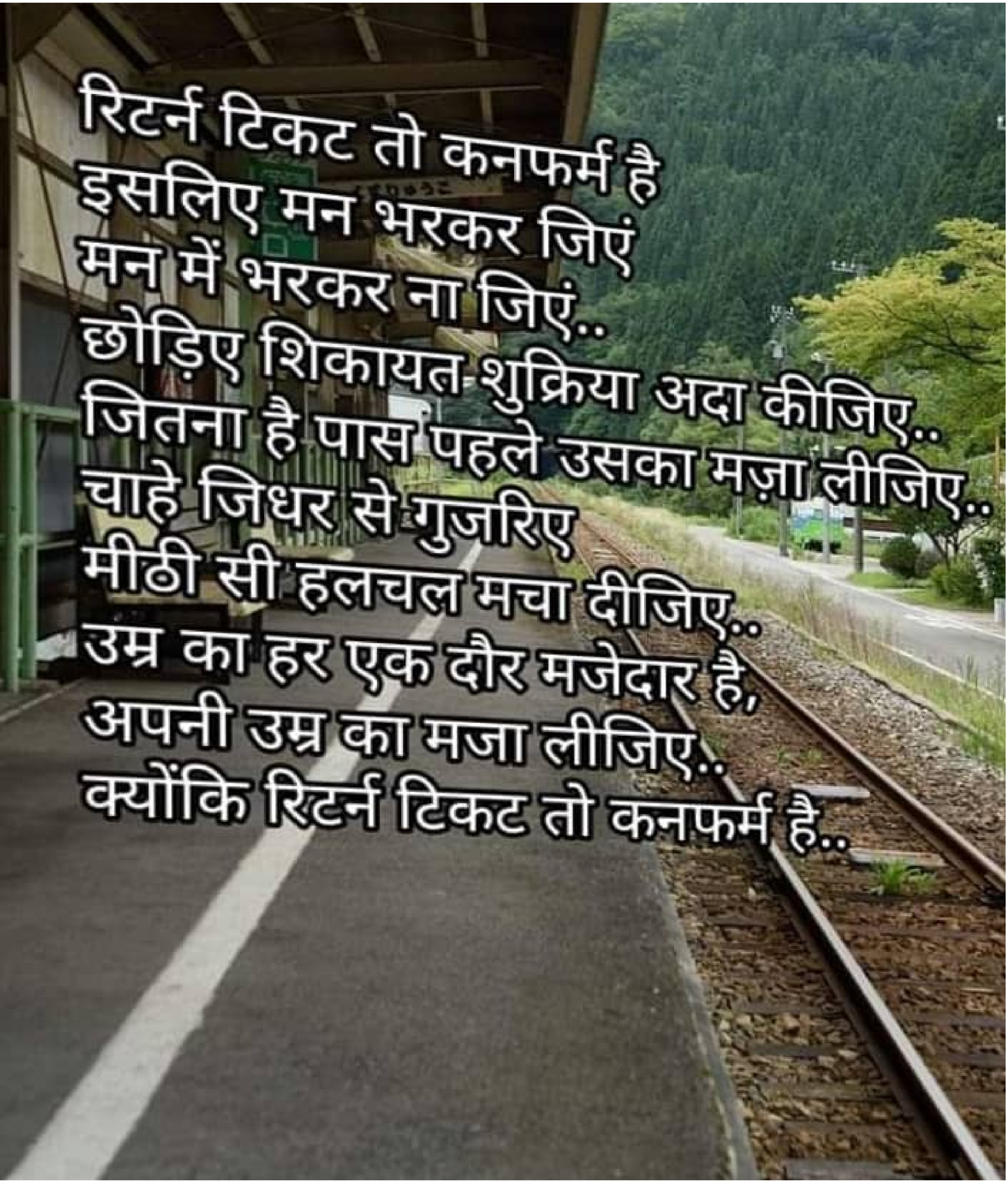
रिटर्न टिकट तो कनफर्म है
इसलिए मन भरकर जिएं
मन में भरकर ना जिएं..
छोड़िए शिकायत शुक्रिया अदा कीजिए..
जितना है पास पहले उसका मज़ा लीजिए..
चाहे जिधर से गुजरिए
मीठी सी हलचल मचा दीजिए..
उम्र का हर एक दौर मजेदार है,
अपनी उम्र का मजा लीजिए..
क्योंकि रिटर्न टिकट तो कनफर्म है..

CamScanner

CamScanner

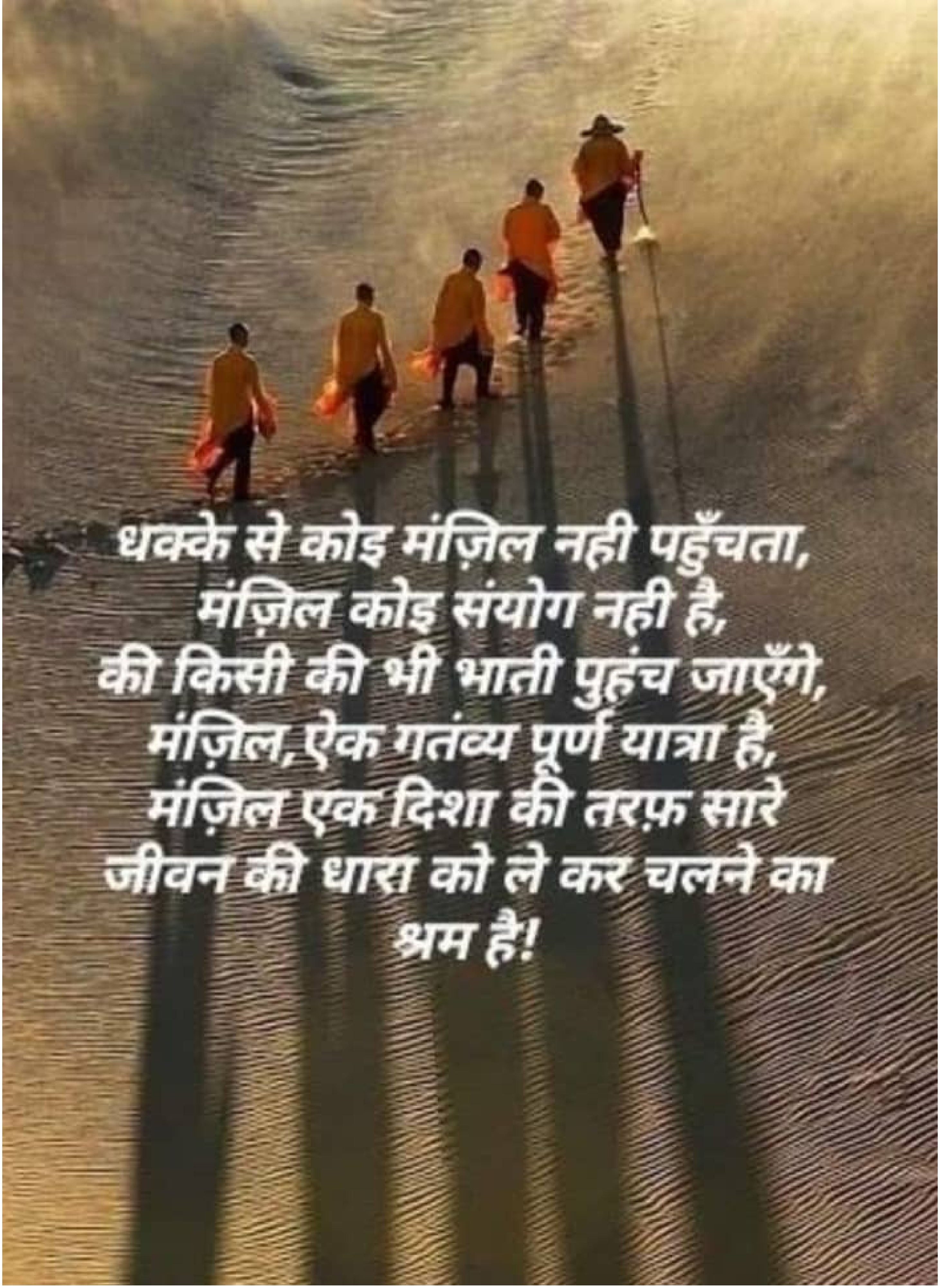
धक्के से कोइ मंज़िल नही पहुँचता,
मंज़िल कोइ संयोग नही है,
की किसी की भी भाती पुहंच जाएँगे,
मंज़िल, ऐक गतंव्य पूर्ण यात्रा है,
मंज़िल एक दिशा की तरफ़ सारे
जीवन की धारा को ले कर चलने का
श्रम है!

CamScanner

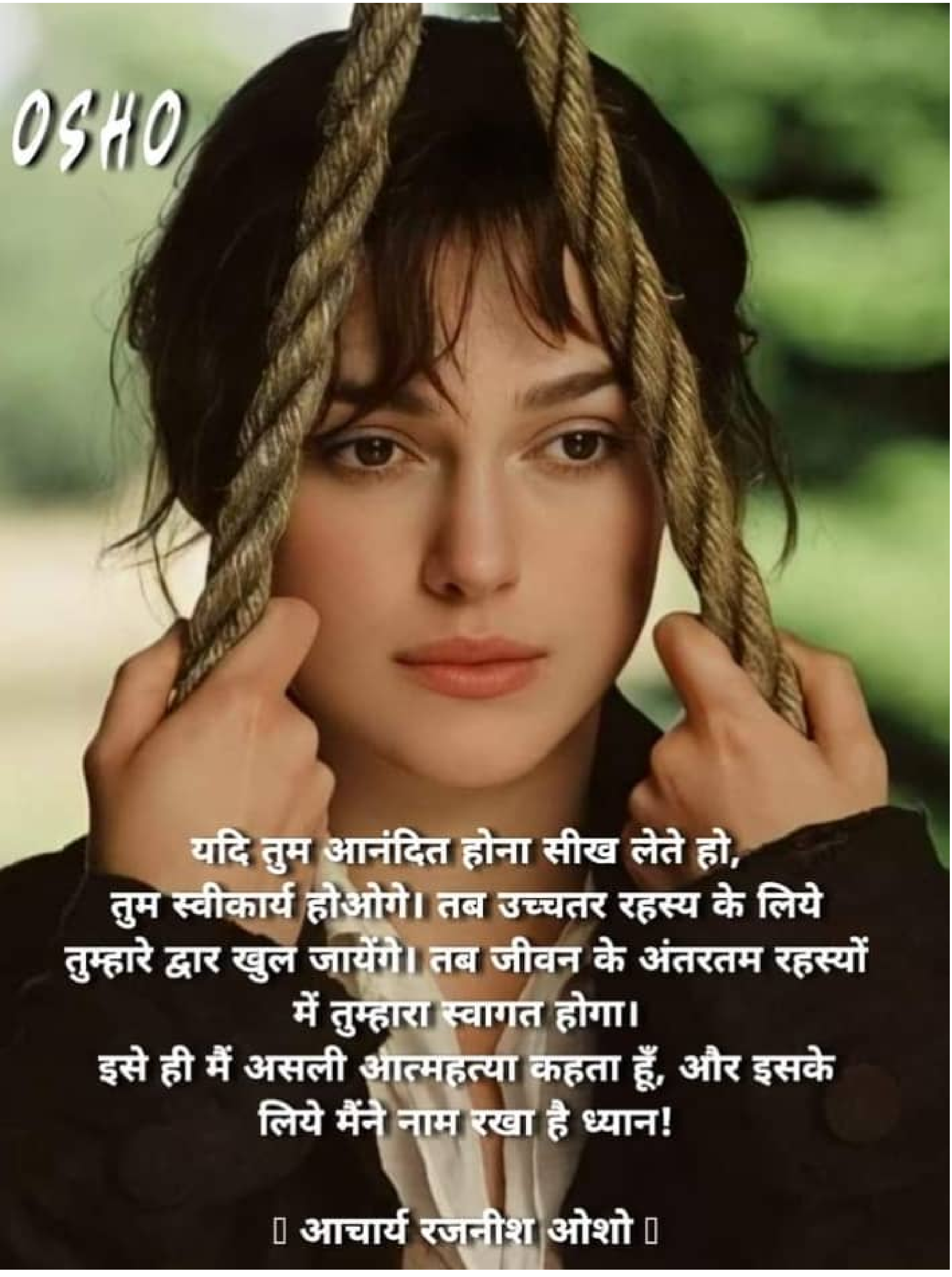
OSHO
यदि तुम आनंदित होना सीख लेते हो,
तुम स्वीकार्य होओगे। तब उच्चतर रहस्य के लिये
तुम्हारे द्वार खुल जायेंगे। तब जीवन के अंतरतम रहस्यों
में तुम्हारा स्वागत होगा।
इसे ही मैं असली आत्महत्या कहता हूँ, और इसके
लिये मैंने नाम रखा है ध्यान!
आचार्य रजनीश ओशो

CamScanner

7:50 pm 0 KB/s VoLTE 4G 36%

Mandira Sinh Thakuri · 2d ·

बुद्ध छह वर्ष तक जो तपश्चर्या किए,

उस तपश्चर्या में शिक्षा के द्वारा डाले गए संस्कारों को काटने की ही योजना थी।

महावीर बारह वर्ष तक मौन रहे।

उस मौन में जो शब्द सीखे थे, सिखाए गए थे उन्हें भुलाने का प्रयास था। बारह वर्षो के सतत मौन के बाद इस योग्य हुए कि शब्द से छुटकारा हो सका।

और जहां शब्द से छुटकारा है वहीं निःशब्द से मिलन है। और जहां चित्त शास्त्र के भार से मुक्त है वहीं निर्भार होकर उड़ने में समर्थ है। जब तक छाती पर शास्त्रों का बोझ है, तुम उड़ न सकोगे; तुम्हारे पंख फैल न सकेंगे आकाश में। परमात्मा की तरफ जाना हो तो निर्भार होना जरूरी है।

जैसे कोई पहाड़ चढ़ता है तो जैसे जैसे चढ़ाई बढ़ने लगती है वैसे वैसे भार भारी मालूम होने लगता है। सारा भार छोड़ देना पड़ता है। अंततः तो आदमी जब पहुंचता है शिखर पर तो बिल्कुल निर्भार हो जाता है। और जितना ऊंचा शिखर हो उतना ही निर्भार होने की शर्त पूरी करनी पड़ती है।

महावीर पर बड़ा बोझ रहा होगा। किसी ने भी इस तरह से बात देखी नहीं है। बारह वर्ष मौन होने में लग जाएं,

इसका अर्थ क्या होता है?

इसका अर्थ होता है कि भीतर चित्त बड़ा मुखर रहा होगा। शब्दों की धूम मची होगी। शास्त्र पंक्तिबद्ध खड़े होंगे। सिद्धांतों का जंगल होगा। तब तो बारह वर्ष लगे इस जंगल को काटने में। बारह वर्ष जलाया तब यह जंगल जला;

CamScanner

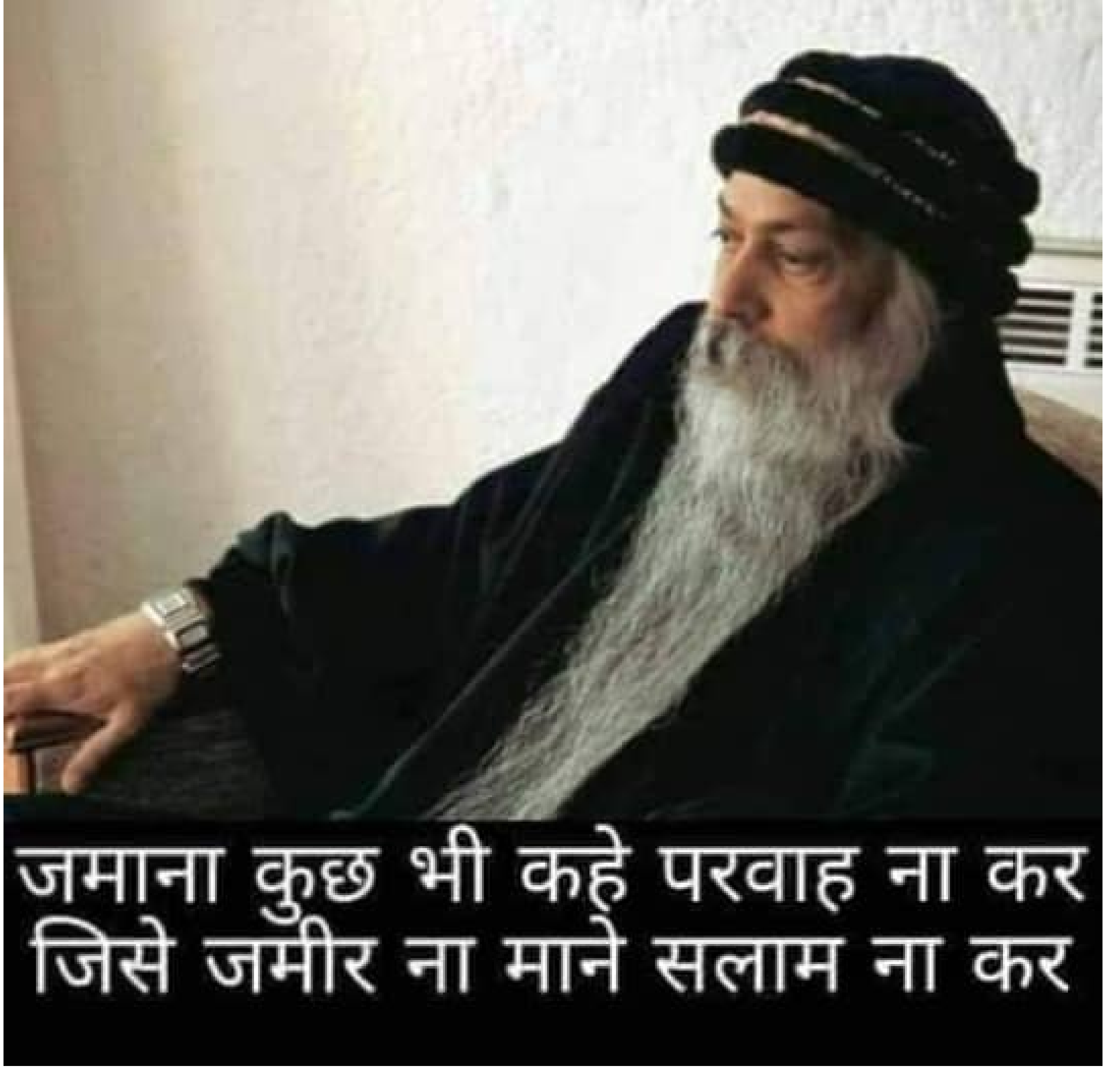

CamScanner

7:38 pm 0 KB/s 38%

ब्रह्माण्ड के रहस्य

Virendra Kumar · 3h ·

तुम अपना मार्ग चुन लो। दूसरे को भूलकर गलत मत कहना। यह हक तुम्हारा नहीं है । अपना मार्ग चुन लो और चलते चलो।

कोई लड़खड़ाकर चल रहा हो, तो यह मत कहना कि मैं ध्यान का पथिक हूँ; सम्हल कर चलो। शर्त मत लगाना। क्योंकि लड़खड़ाने वाले भी पहुंच गए हैं। और कभी-कभी तो सम्हलने वालों से ज्यादा जल्दी पहुंच गए हैं। क्योंकि लड़खड़ाने वालों को भगवान सम्हालता है। सम्हलने वालों को भगवान नहीं सम्हालता । वे खुद ही सम्हले है !

जीसस ने कहा है : जैसे कोई गडरिया सांझ को लौटता है; आकर गिनती करता है । हजार भेड़ों में और तो सब हैं, नो सो निन्यानबे हैं, एक भेड़ कहीं रास्ते में खो गई। तो उन नौ सो निन्यानबे भेड़ों को पहाड़ पर, खतरे में, एकांत में छोड़कर उस एक भेड़ को खोजने चला जाता है। अंधेरी रात, लालटेन लेकर खोजता है; जंगल जंगल आवाज लगाता है...

फिर जब भेड़ को पा लेता है, तो जीसस ने कहा- मालूम है क्या करता है ? उसको कंधे पर रखकर लोटता है ! इन नौ सौ निन्यानबे भेड़ों को कभी पता ही नहीं चलेगा कि गडरिए के कंधे पर बैठने का मजा क्या है, वह कभी भटकी ही नहीं,और ना ही कभी कंधे पर बैठने का मौका मिलेगा।

वह जो होश से चलता है, वह भी पहुंचता है। मगर उसे परमात्मा के कंधे पर बैठने का मौका नहीं मिलता । वह मजा तो भक्त का है, वह जो लड़खड़ा कर चलता है; वह जो डगमगाकर चलता है, उसको तो भगवान को सहारा देना ही पड़ता है; देना ही पड़ेगा ।

🪷आचार्य रजनीश ओशो🪷

🙏💞🙏

CamScanner

जब कोई मित्र तुमसे तभी मिले जब तुमसे काम हो तो समझ जाना वो मित्र नहीं..

जब पैर छू कर भी आशीर्वाद न मिले,तो समझ जाना सामने वाला सिर्फ बूढा है बुजुर्ग नहीं..

जब भाई संकट में दूर दूर तक नज़र न आये, तो समझ जाना तुम्हारा कोई भाई नहीं..

जब तुम्हारे प्यार से पेहले तुम्हारे धन के बारे में चर्चा हो,तो समझ जाना तुम्हारा अपना कोई नहीं..

CamScanner

जीवन एक काम है या उत्सव?

पहली बात, अगर जीवन एक काम है, तो बोझ हो जाएगा। अगर जीवन एक काम है, तो कर्तव्य हो जाएगा। अगर जीवन एक काम है, तो हम उसे ढोएंगे और किसी तरह निपटा देंगे। कृष्ण जीवन को काम की तरह नहीं, उत्सव की तरह, एक "फेस्टिविटी' की तरह लेते हैं। महोत्सव है एक। जीवन एक आनंद का उत्सव है, काम नहीं है। ऐसा नहीं है कि उत्सव की तरह लेते हैं तो काम नहीं करते हैं। काम तो करते हैं। लेकिन काम उत्सव के रंग में रंग जाता है। काम नृत्य-संगीत में डूब जाता है। निश्चित ही, बहुत काम न हो पाएगा इस भांति, थोड़ा ही हो पाएगा। "क्वांटिटी' ज्यादा नहीं होगी, लेकिन "क्वालिटी' का कोई हिसाब नहीं है! परिणाम तो कम होगा, मात्रा कम होगी, लेकिन गुण बहुत गहरा हो जाएगा।

कभी आपने सोचा कि काम वाले लोगों ने, जो हर चीज को काम में बदल देते हैं, जिंदगी को कैसा तनाव से भर दिया है। जिंदगी की सारी "एंग्जाइटी', सारी चिंता, यह अति कामवादी लोगों की उपज है। वे कहते हैं, करो, एकदम करते रहो, करो या मरो। उनका नारा यह है--"डू ऑर डाय'। जिंदा हो तो करो कुछ, अन्यथा मरो। कोई एक काम करो। और उनके पास कोई और दृष्टि नहीं है, लेकिन किसलिए करो? आदमी करता किसलिए है? आदमी करता इसलिए है कि थोड़ी देर जी सके। और जीने का क्या मतलब होगा फिर? फिर जीने का मतलब उत्सव होगा। हम काम भी इसलिए कर सकते हैं कि किसी क्षण में हम नाच सकें। लेकिन काम इतने जोर से पकड़ लेता है कि फिर नाचने का तो मौका ही नहीं आता, गीत गाने का मौका ही नहीं आता; बांसुरी बजाने के लिए फुर्सत कहां रह जाती है

CamScanner

10:51 pm 0 KB/s VoLTE 4G 10%
facebook
2

कुत्ता पहुंचा। सत्य पहुंचा; और सत्य का जिसने गहरा सत्संग किया था, वह पहुंचा। वह कुत्ता था उनका। वह सदा उनके साथ रहा था। उसकी निष्ठा अपार थी। भाइयों की भी निष्ठा इतनी अपार न थी। भाई भी रास्ते में गल गए, कुत्ता न गला। उसकी श्रद्धा अनन्य थी। उसने कभी संदेह किया ही न था। उसने युधिष्ठिर के इशारे को ही अपना जीवन समझा था। युधिष्ठिर भी चकित हुए कि भाइयों का भी साथ छूट गया, वे भी गिर गए मार्ग पर, स्वर्ग के द्वार तक न आ सके--आ सका एक कुत्ता!

द्वार खुला, युधिष्ठिर का स्वागत हुआ, लेकिन द्वारपाल ने कहा, कृपया आप ही भीतर आ सकते हैं, कुत्ता न आ सकेगा। कुत्ता कभी इसके पहले स्वर्ग में प्रवेश भी नहीं पाया। आदमी ही मुश्किल से पाते हैं।

तो युधिष्ठिर ने कहा, फिर मैं भीतर न आ सकूंगा; जिस कुत्ते ने मेरा इतने दूर तक साथ दिया, जहां मेरे भाई भी मेरे साथी न हो सके, संगी न हो सके; जिसकी श्रद्धा ऐसी अनन्य है; जो मेरे साथ इतने दूर आया, उसका साथ मैं न छोड़ सकूंगा; अन्यथा मैं कुत्ते से भी गया-बीता हुआ। जिसने मेरा साथ दिया, उसका साथ मैं दूंगा, द्वार तुम बंद कर लो।

तब सारा स्वर्ग हंसने लगा; भीड़ इकट्ठी हो गई देवताओं की और उन्होंने कहा, आप भीतर आएं। और तब गौर से देखा युधिष्ठिर ने, तो कुत्ता न था, स्वयं विष्णु थे! वह परीक्षा थी। वह परीक्षा थी, अगर युधिष्ठिर उस समय कुत्ते को भूल जाते और भीतर प्रवेश कर देते तो स्वर्ग चूक जाता। वह परीक्षा थी--प्रेम की, श्रद्धा की, अनन्य भाव की।

एक ही पाठ युधिष्ठिर ने सीखा--सत्य। उतना काफी हुआ; उतना स्वर्ग तक ले जा सका। अर्जुन को सीखने में बड़ी देर लगी। पूरी गीता कृष्ण ने कही, तो भी संदेह उठते चले गए। युधिष्ठिर ने सिर्फ एक पाठ सीखा जीवन में, वह छोटा सा पाठ था सत्य का। गुरु तक को शक हुआ कि यह थोड़ा मंद बुद्धि मालूम होता है, पहले ही पाठ पर अटका है। लेकिन फिर समझ में आया कि पहले पाठ के आगे और पाठ कहां हैं!

जिसने एक पाठ भी सीख लिया, उसने सब सीख लिया।

CS CamScanner

10:48 pm 0 KB/s VoLTE 4G 10%

"'^एक ही पाठ युधिष्ठिर ने सीखा--सत्य। उतना काफी हुआ; उतना स्वर्ग तक ले जा सका^"'

महाभारत में कथा है कि द्रोण ने सोचा था कि इन सारे पांडवों और कौरवों में युधिष्ठिर सबसे ज्यादा बुद्धिमान मालूम होता है। लेकिन थोड़े दिनों के अनुभव से लगा कि वह तो बिलकुल बुद्धू है। दूसरे बच्चे तो आगे जाने लगे, नया-नया पाठ रोज सीखने लगे और युधिष्ठिर पहले पाठ पर ही रुका रहा। आखिर द्रोण की सीमा-क्षमता भी समाप्त हो गई। द्रोण ने पूछा, तुम आगे बढ़ोगे कि पहले ही पाठ पर रुके रहोगे? लेकिन युधिष्ठिर ने कहा, जब तक पहला पाठ समझ में न आ जाए, तब तक दूसरे पाठ पर जाने से सार भी क्या है?

पहला पाठ था सत्य के संबंध में। दूसरे बच्चों ने याद कर लिया, पढ़ लिया, आगे बढ़ गए। लेकिन युधिष्ठिर ने कहा कि मैं जब तक सत्य बोलने ही न लगूं, तब तक दूसरे पाठ पर जाऊं कैसे? और आप जल्दी मत करें। तब द्रोण को समझ में आया। खुद युधिष्ठिर की इस मनोदशा को देख कर द्रोण को पहली दफा समझ में आया कि सत्य के आगे और पाठ हो भी क्या सकता है! तब उन्होंने कहा, तू जल्दी मत कर। तू पहला पाठ ही पूरा कर ले तो सब पाठ पूरे हो गए। फिर दूसरा पाठ और है कहां? अगर सत्य बोलना ही आ गया, सत्य होना आ गया, तो फिर और पाठ की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन पाठ अगर सिर्फ पढ़ने हों, तब एक बात है; पाठ अगर जीने हों, तो बिलकुल दूसरी बात है।

अंत में महाभारत में कथा है कि जब सारे भाई स्वर्गारोहण के लिए गए, तो एक-एक गिरने लगा, पिघलने लगा, गलने लगा; स्वर्ग के मार्ग पर धीरे-धीरे एक-एक गिरने लगा, द्वार तक सिर्फ युधिष्ठिर पहुंचे और उनका कुत्ता पहुंचा। सत्य पहुंचा; और सत्य का जिसने गहरा सत्संग किया था, वह पहुंचा। वह कुत्ता था उनका। वह सदा उनके साथ रहा था। उसकी निष्ठा अपार थी। भाइयों की भी निष्ठा इतनी अपार न थी। भाई भी रास्ते में गल गए, कुत्ता न गला। उसकी श्रद्धा अनन्य थी। उसने कभी संदेह किया ही न था। उसने युधिष्ठिर के इशारे को ही अपना जीवन समझा था। युधिष्ठिर भी चकित हुए कि भाइयों का भी साथ छूट गया, वे भी गिर गए मार्ग पर, स्वर्ग के द्वार तक न आ सके--आ सका एक कुत्ता।

CamScanner

ओशो
जो व्यक्ति साधारण से साधारण और सरल से
सरल होने को राजी हो जाता है, सत्य खुद
उसके द्वार आ जाता है ! और जो व्यक्ति
असाधरण होने की, विशिष्ट होने की, बड़ा
होने की , महत्वकांक्षी होने की दौड़ में पड़
जाता है. उसके जीवन में असत्य घना से घना
हो जाता है ! लेकिन जो सरल हो जाता है,
सीधा साधारण, समान्य उसके जीवन में सत्य
की किरण का जन्म होता है और सारा
अंधकार समाप्त हो जाता है...!!

CamScanner

स्त्री की.! निरंतर एक ही
"खोज चलती रहती है,
वह सुन्दर पुरुष की खोज
नहीं करती! वह एक
गहरे प्रेम करने वाले और
उसे समझने वाले,
पुरूष की खोज करती है,
जिस पर वह अपने प्रेम
की वर्षा कर सके.!!

CamScanner

कृष्ण कहते हैं की जानो जीस परमात्मा ने तुम्हे पैदा किया,या जिस परमात्मा की तुम एक लहर हो,जिसने तुम्हे जीवन की ऊर्जा दी, वहीं तुमसे कर्म करवाता रहा हैं। वही तुमसे कर्म करवाता रहेगा। तुम जल्दी मत करो। तुम अपने सिर पर व्यर्थ का बोझ मत लो। तुम उसी पर छोड़ दो।तुम इसकी फिक्र छोड़ दो,की कल क्या होगा?जो होगा कल,वह कल देखेंगे। जो आज हो रहा हैं उससे तुम राजी रहो,तुम अपने को पूरा छोड़ दो। जैसे कोई पानी में अपने को छोड़ दे,और बह जाये। तैरे नही बह जाये,जस्ट फ्लोटिंग। तैरने का भी श्रम मत करो। बस बह जाओ। जीवन तुम्हे जो दे उसमे चुपचाप बह जाओ। कोई आकांक्षा कल की मत बांधो,कोई फल निश्तित मत करो। कोई कर्म की नियति मत बांधो,वह प्रभु पर छोड़ दो। वह उस पर छोड़ दो,जो समग्र को जी रहा हैं। और ऐसा करते ही व्यक्ती सन्यासी हो जाता हैं।

- ● ओशो ● -

(गीता दर्शन भाग 2)

CamScanner

ओ
शो

अध्यात्म उपनिषद-(प्रवचन-16)

सिद्ध का अर्थ है, जिसका अपने होने में ही सुख है। कुछ भी मिले, न मिले, उसका कोई सवाल ही नहीं है। छिन जाए, आ जाएं। उसका सुख किसी बात पर निर्भर नहीं है, स्वयं के होने पर ही निर्भर है। बस मैं हूं, इतना काफी है। और कोई बात शर्त नहीं है। बेशर्त जिसका सुख है, वह सिद्ध है। अभी और यहीं उसका सुख है।

CamScanner

10:38 pm 122 KB/s 11%

3d ·

प्यारे ओशो ❤️🙏

Rate this translation

Vikram Osho Premi
16 Oct 2021 ·

BELOVED OSHO❤️🙏
प्रेम नमन ओशो❤️🙏
ओशो अमृतवाणी!... See more

14 · 1 comment • 1.5K views

Like · Comment · Share

🎉🌹 **रिश्तो की अहमियत** 🌹🎉
Deelip Mangnani · 6h ·

CamScanner

CamScanner

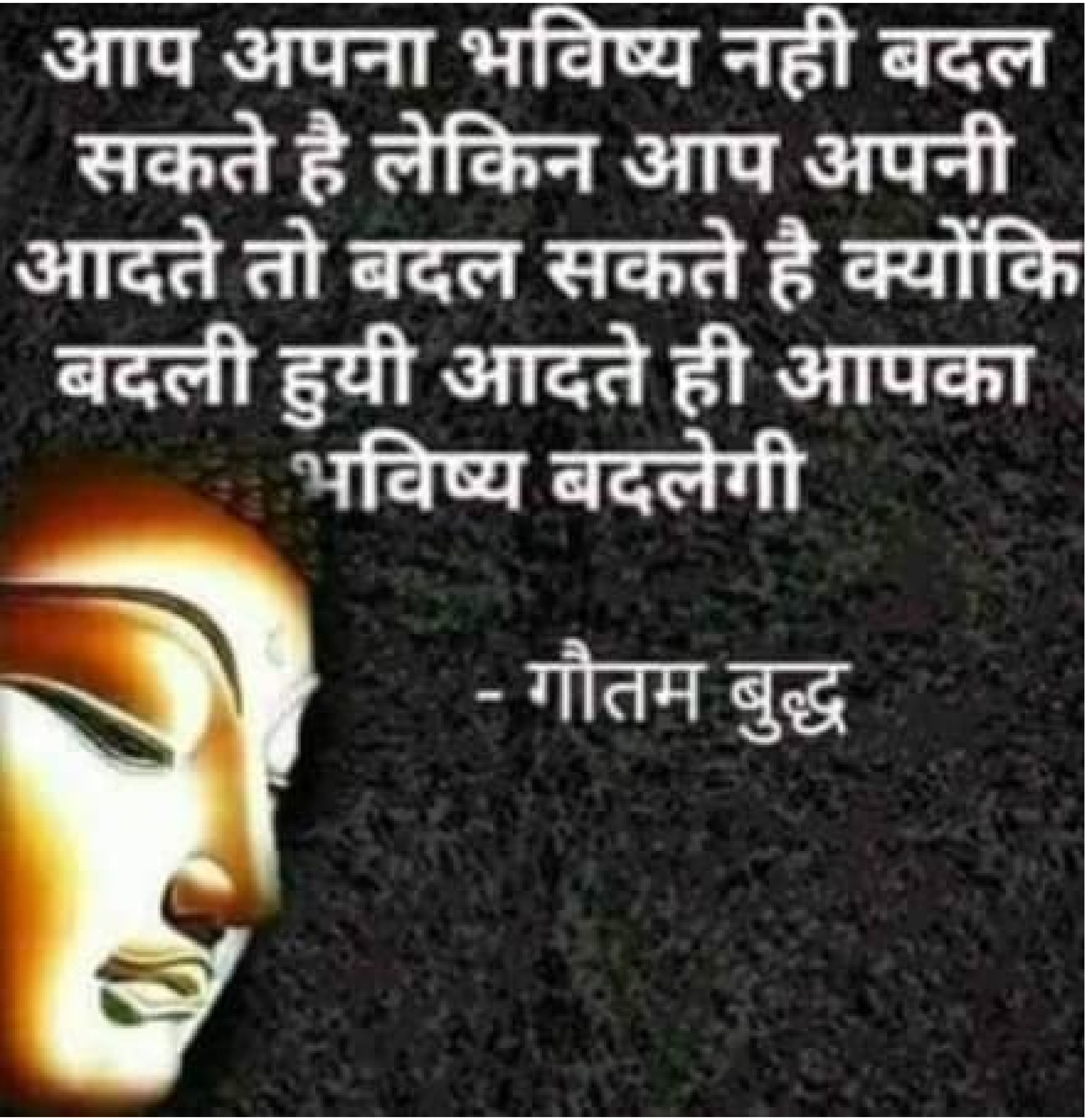
आप अपना भविष्य नही बदल सकते है लेकिन आप अपनी आदत्ते तो बदल सकते है क्योंकि बदली हुयी आदत्ते ही आपका भविष्य बदलेगी
- गौतम बुद्ध

CamScanner

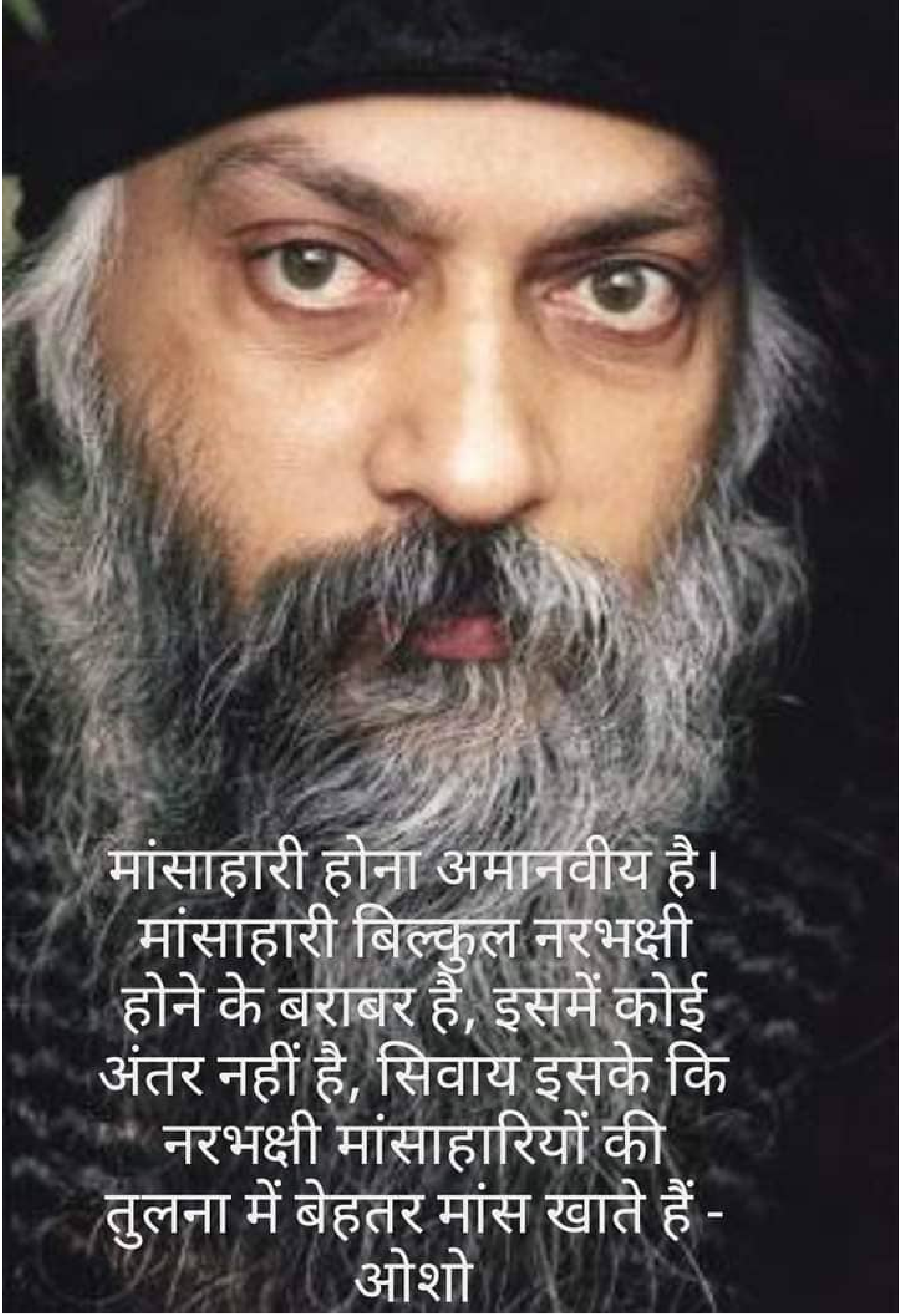
मांसाहारी होना अमानवीय है।
मांसाहारी बिल्कुल नरभक्षी
होने के बराबर है, इसमें कोई
अंतर नहीं है, सिवाय इसके कि
नरभक्षी मांसाहारियों की
तुलना में बेहतर मांस खाते हैं -
ओशो

CamScanner

8:56 pm 0 KB/s VoLTE 4G 28%

Subhash Chandra · 14h ·

एक छोटी सी कहानी, फिर मैं दूसरा प्रश्न लूं।
मैंने सुना है कि जब सृष्टि बनी और ईश्वर ने सारी चीजें बनाईं, बड़ी अदभुत कहानी है। और जब उसने आदमी बनाया, तो वह अपने देवताओं से पूछने लगा कि यह आदमी मुझे बड़ा शिकायती मालूम पड़ता है। यह बन तो गया, लेकिन यह छोटी-छोटी शिकायत लेकर मेरे द्वार पर खड़ा हो जाएगा। मैंने वृक्ष बनाए, वृक्ष कभी शिकायत लेकर नहीं आए, न वृक्षों ने कभी प्रार्थना की और न शिकायत की। मैंने पशु बनाए, पशु कभी मेरे द्वार पर नहीं आए। पक्षी बनाए, कभी पक्षी मेरे द्वार पर नहीं आए। चांदत्तारे बनाए। लेकिन यह आदमी मुसीबत का घर है। यह सुबह-शाम चौबीस घंटे द्वार पर दस्तक देगा, कहेगा कि यह करो, यह करो; यह होना चाहिए, वह नहीं होना चाहिए। इस आदमी से बचने का मुझे कोई उपाय चाहिए। मैं कहां छिप जाऊं?
तो किसी देवता ने कहा, हिमालय पर छिप जाइए।
तो उसने कहा, तुम्हें पता नहीं है, बहुत जल्द वह वक्त आएगा कि हिलेरी और तेनसिंग हिमालय पर चढ़ जाएंगे।
तो किसी ने कहा, पैसिफिक महासागर में छिप जाइए।
तो उसने कहा, वह भी कुछ काम नहीं चलेगा। जल्दी ही अमेरिकी वैज्ञानिक वहां भी उतर जाएंगे।
किसी ने कहा, चांदत्तारे पर बैठ जाइए।
उसने कहा, उससे भी कुछ होने वाला नहीं है। जरा ही समय बीतेगा और चांदत्तारों पर आदमी पहुंच जाएगा।
तब एक बूढ़े देवता ने उसके कान में कहा, एक ही रास्ता है, आप आदमी के भीतर छिप जाइए। वहां आदमी कभी नहीं जाएगा।
और ईश्वर ने बात मान ली और आदमी के भीतर छिप गया। और आदमी हिमालय पर भी पहुंच गया, चांदत्तारों पर भी पहुंच जाएगा, पैसिफिक में भी पहुंच गया। एक जगह भर छूट गई है जहां आदमी नहीं पहुंचता, वह खुद के भीतर।
तृष्णा गई एक बूंद से
ओशो

48 8 comments • 11 shares
Like Comment Share
CamScanner

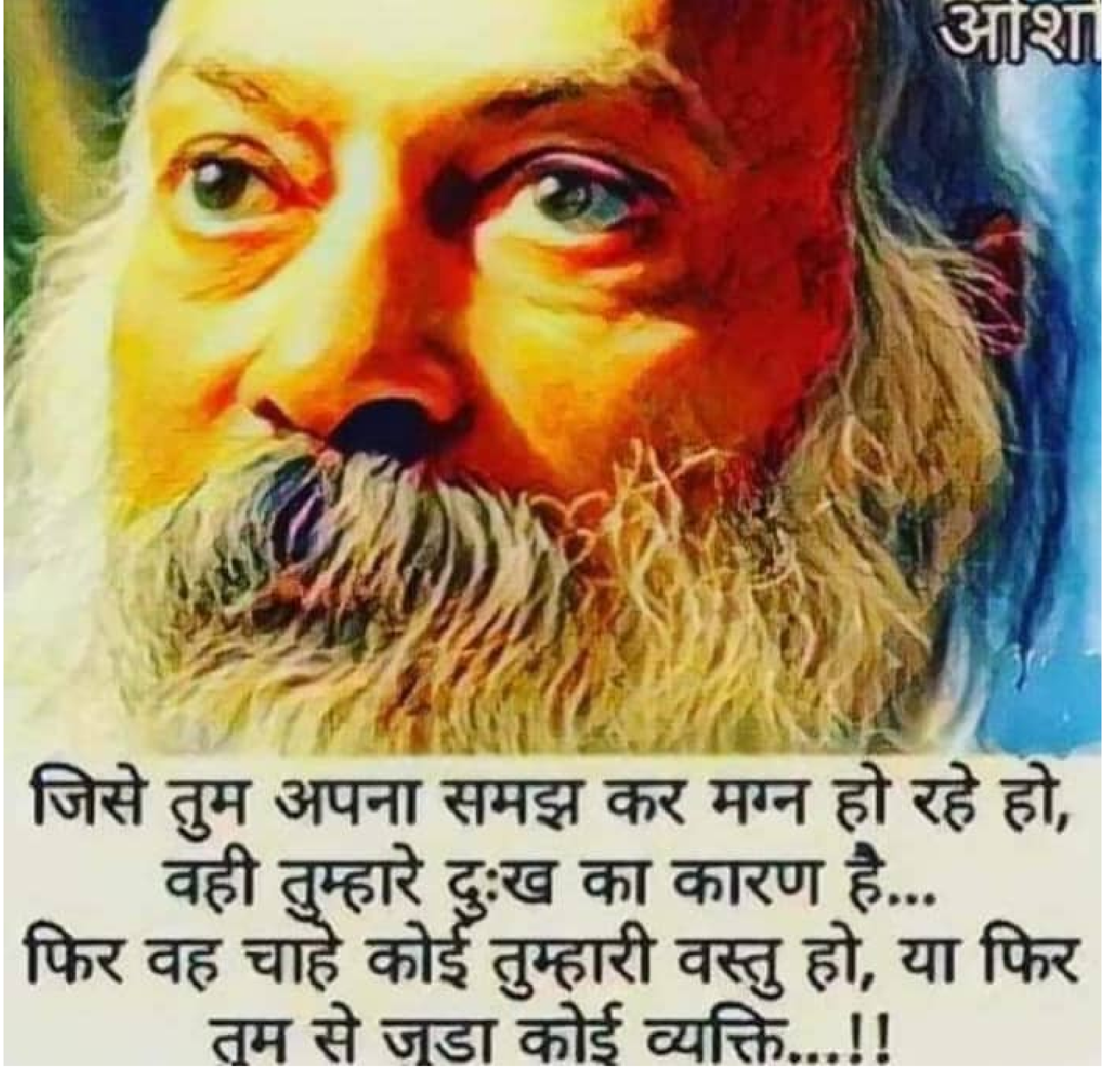
जिसे तुम अपना समझ कर मग्न हो रहे हो,
वही तुम्हारे दुःख का कारण है...
फिर वह चाहे कोई तुम्हारी वस्तु हो, या फिर
तुम से जुडा कोई व्यक्ति...!!

CamScanner

औरत से प्रेम में अगर आप ये उम्मीद करते हैं की वो आपसे पूरी तरह खुश है तो आप नादानी में हैं....
ये औरत के मूल में ही नहीं है...
अगर आप बहोत ज्यादा केयर करते है तो उससे भी ऊब जाएगी...
अगर आप बहोत उग्र हैं तो वो उससे भी बिदक जाएगी...
अगर आप बहोत ज्यादा विनम्र हैं तो वो उससे भी चिढ जाएगी...
अगर आप उससे बहोत ज्यादा बात करते हैं तो वो आपको टेक इट फौर ग्रांटड लेने लगेगी ...
अगर आप उससे बहोत कम बात करते हैं तो वो मान लेगी कि आपका चक्कर कहीं और चल रहा है...

यानी आप कुछ भी कर लीजिए वो संतुष्ट नहीं हो सकती...

ये उसका स्वभाव है...
वो एक ऐसा डेडली कॉम्बीनेशन खोजती है जो बना ही न हो, बन ही न सकता हो...

ठीक वैसे ही जैसे कपड़ा खरीदने जाती है तो कहती कि इसी कलर में कोई दूसरा डिजाइन दिखाओ, इसी डिजाइन में कोई दूसरा कलर दिखाओ...

कपड़े का गट्ठर लगा देती है...
बहुत परिश्रम के बाद एक पसंद भी आ गया तो भी संतुष्ट नहीं हो सकती...
आखिरी तक सोचती है कि इसमे ये डिजाइन ऐसे होता तो परफैक्ट होता...

इन सबके बावजूद एक बहोत बड़ी खूबी भी है औरत के अंदर
एक बार उसे कुछ पसंद आ गया तो उसे आखिरी दम तक सजो के रखती है
वो चाहे रिश्ते हो या चूड़ी...

रंग उतर जाएगा, चमक खत्म हो जाएगी पर खुद से जुदा नहीं करेगी....बस यही खूबी औरत को विशिष्ट बनाती है....

CamScanner

मौन साधना का एक महत्वपूर्ण सूत्र ~~
किसी को भी बदलने में अपनी
उर्जा बरबाद मत करो ।
अपनी सारी उर्जा का उपयोग स्वयं
को रूपांतरित करने के लिय करो ।
तुम्हारा रूपान्तरण बहुत सारे
लोगो की मदद करेगा,
तुम्हारे तर्क किसी की
मदद नही कर सकते।
इसलिए जितना हो सके ।
मौन रहो..
मस्त रहो...
स्वस्थ रहो।।

CamScanner

4

Like Comment Share

आध्यात्मिक दर्शन

Babulal N Prajapati · 1d ·

हमारे दिमाग के सोचने की जितनी
क्षमता है उसी हिसाब से हम
सब को तोलते है ।
हमारी दृष्टि के पूर्ण होते ही
हम भी पूर्ण हो जाते है ।
पूर्ण दृष्टि मे आत्मा , देह , संसार
की भिन्नता समाप्त हो जाती है ।
परमात्मा सदा सामने है । दृष्टि
दोष के कारण परमात्मा को ही
संसार के रूप मे देखा जा रहा है
।। परमशांति।।

4 2 comments

Like Comment Share

IU International

Sponsored ·

Study whenever and wherever with 100% flexibility

CamScanner

हीरा परखने वाले से, पीड़ा परखने वाला व्यक्ति ज्यादा महत्वपूर्ण होता है, अगर आपका प्रेम आपकी पीड़ा ही नहीं परख सकता तो उस व्यक्ति ने कभी आपसे प्रेम किया ही नहीं था!

|• श्री कृष्ण लीला •|

CamScanner

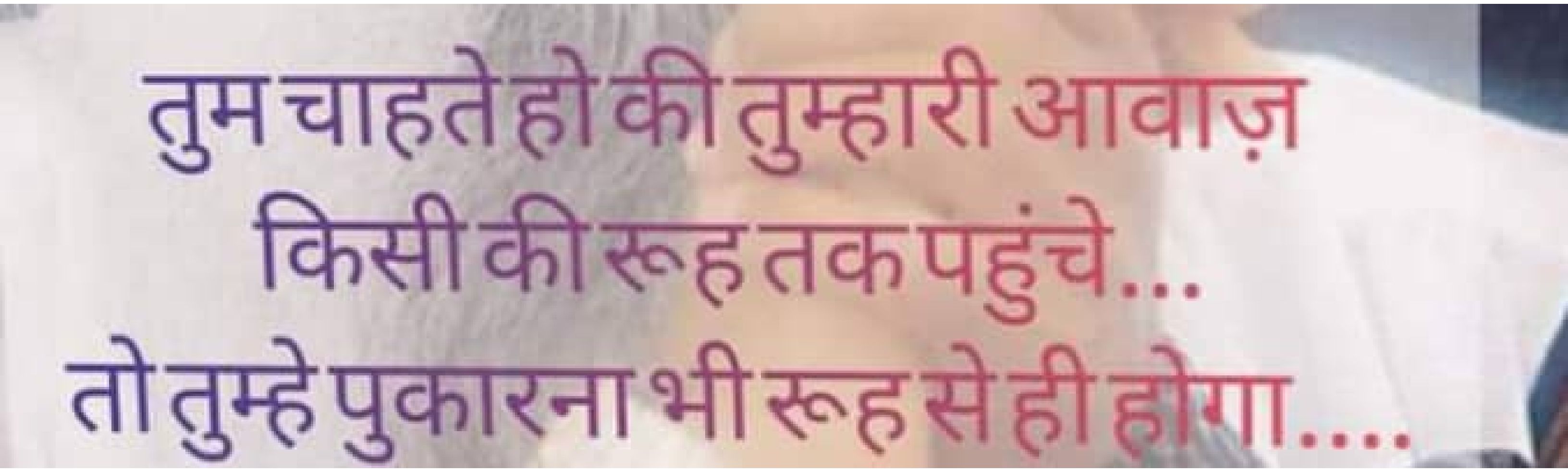

CS CamScanner

You and 307 others >

58m Like Reply

Ashok Kumar

58m Like Reply

Kaveri Sharma
🌹🥰🌹 स्व दर्शन से ही यथार्थ दर्शन संभव है...सत्य भीतर की सम्पदा है भीतर से ही उपजेगा 🥰 कोई प्रेरणा हो सकता है किंतु बिना अनुभूति कुछ संभव नहीं 🌹🥰🌹

2d Like Reply 1 ❤

दिनेश कौशिक Kaveri Sharma ji...

View 1 more reply...

Madansut Madansut

Tenor

2d Like Reply 1 ❤

Krishan Sharma

Write a comment...

CamScanner

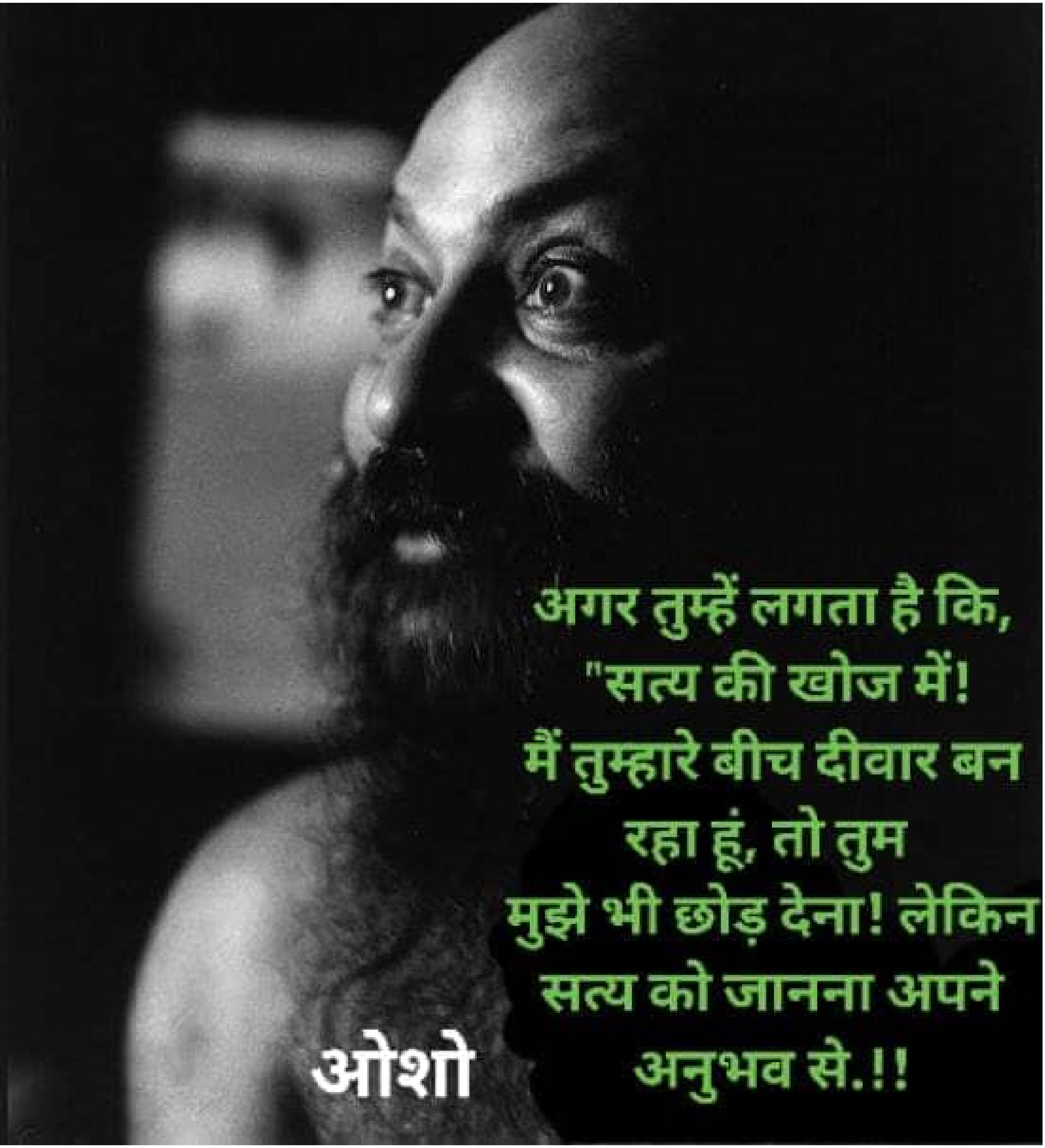
अगर तुम्हें लगता है कि,
"सत्य की खोज में!
मैं तुम्हारे बीच दीवार बन
रहा हूं, तो तुम
मुझे भी छोड़ देना! लेकिन
सत्य को जानना अपने
अनुभव से.!!
ओशो

CamScanner

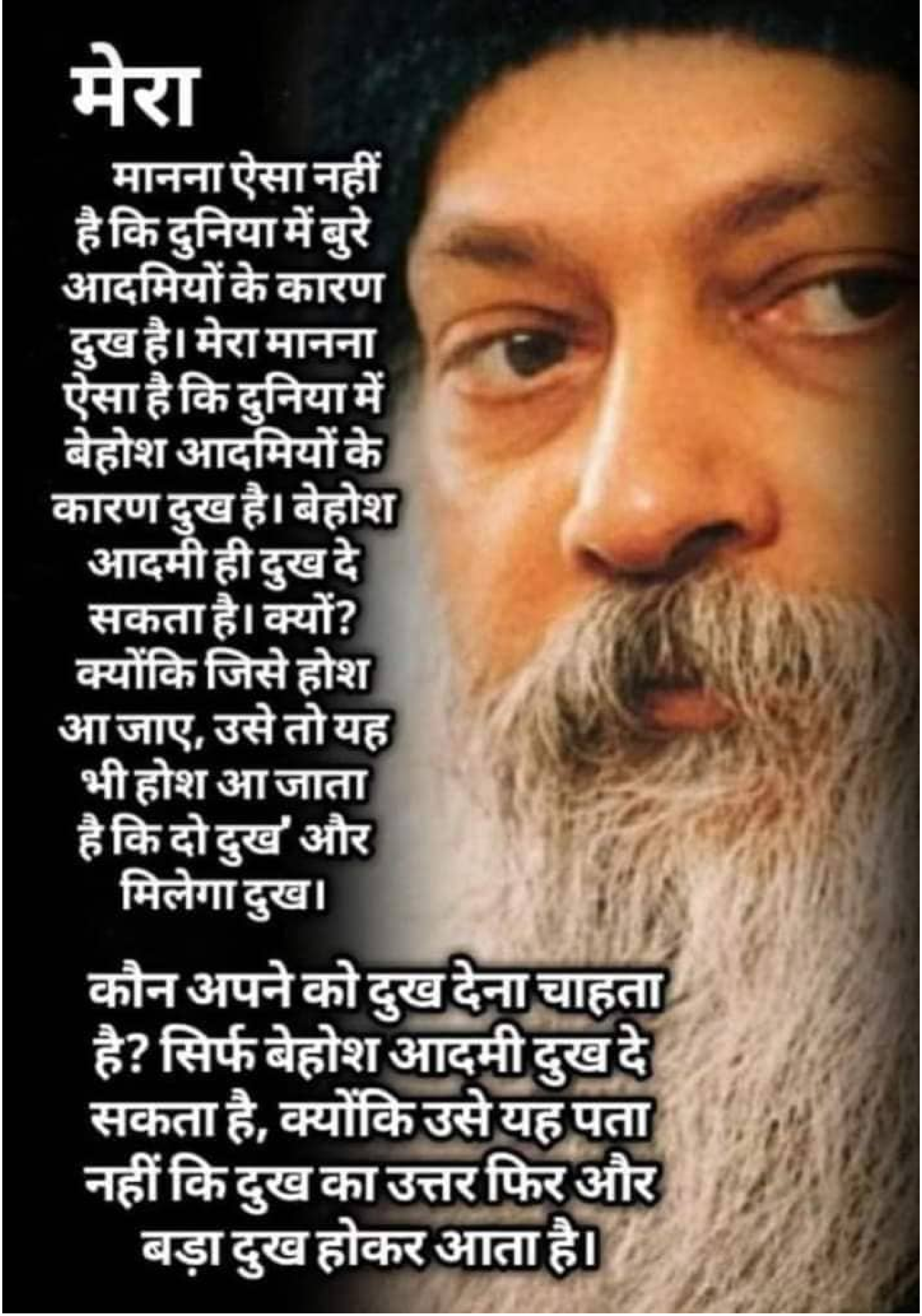
मेरा
मानना ऐसा नहीं
है कि दुनिया में बुरे
आदमियों के कारण
दुख है। मेरा मानना
ऐसा है कि दुनिया में
बेहोश आदमियों के
कारण दुख है। बेहोश
आदमी ही दुख दे
सकता है। क्यों?
क्योंकि जिसे होश
आ जाए, उसे तो यह
भी होश आ जाता
है कि दो दुख' और
मिलेगा दुख।
कौन अपने को दुख देना चाहता
है? सिर्फ बेहोश आदमी दुख दे
सकता है, क्योंकि उसे यह पता
नहीं कि दुख का उत्तर फिर और
बड़ा दुख होकर आता है।

CamScanner

10:59 am 0 KB/s ⏰ VoLTE 4G 81%

Inspiration from Great Buddhist Masters

Inspiration from Great Buddhist Masters
1d ·

लोग बोरियत से बचने के लिए ही खुद को व्यस्त रखते हैं।

हर कोई शिकायत करता है कि वे इतने व्यस्त हैं कि उनके पास समय ही नहीं है। लेकिन वे इतने व्यस्त क्यों हैं? उनका भ्रम ही उन्हें व्यस्त रखता है।

एक व्यक्ति जो ज़ज़ेन का अभ्यास करता है उसके पास समय है। जब आप ज़ज़ेन का अभ्यास करते हैं, तो आपके पास दुनिया में किसी और से अधिक समय होता है।

- कोडो सावकी, तुम्हारे लिए

Rate this translation

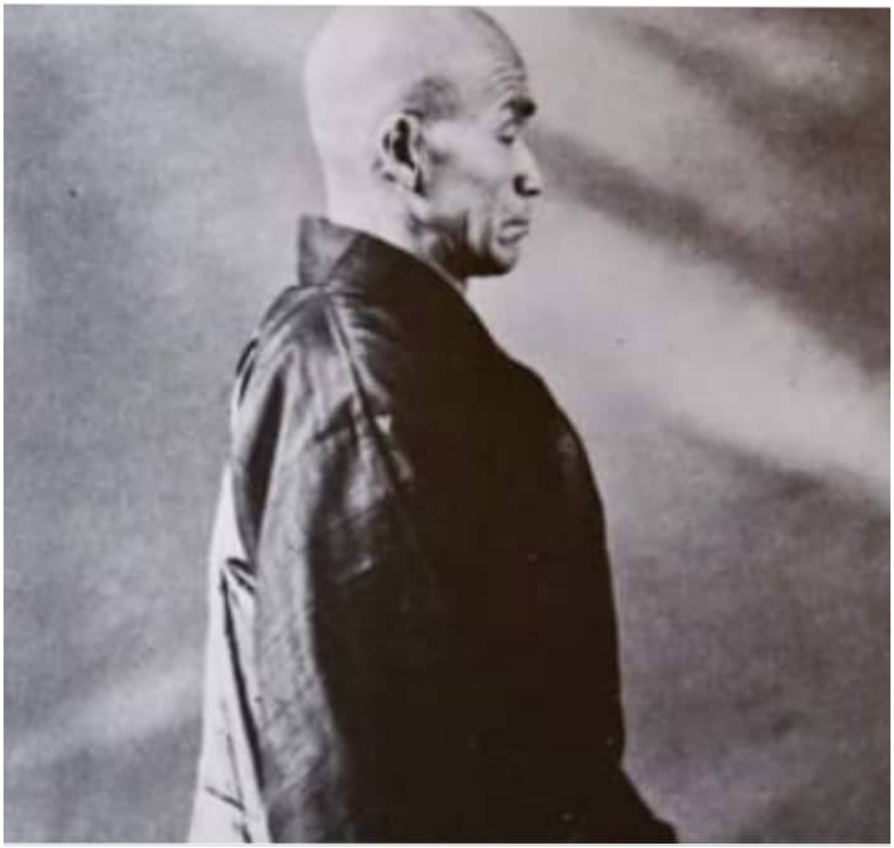

Write a comment...

CamScanner

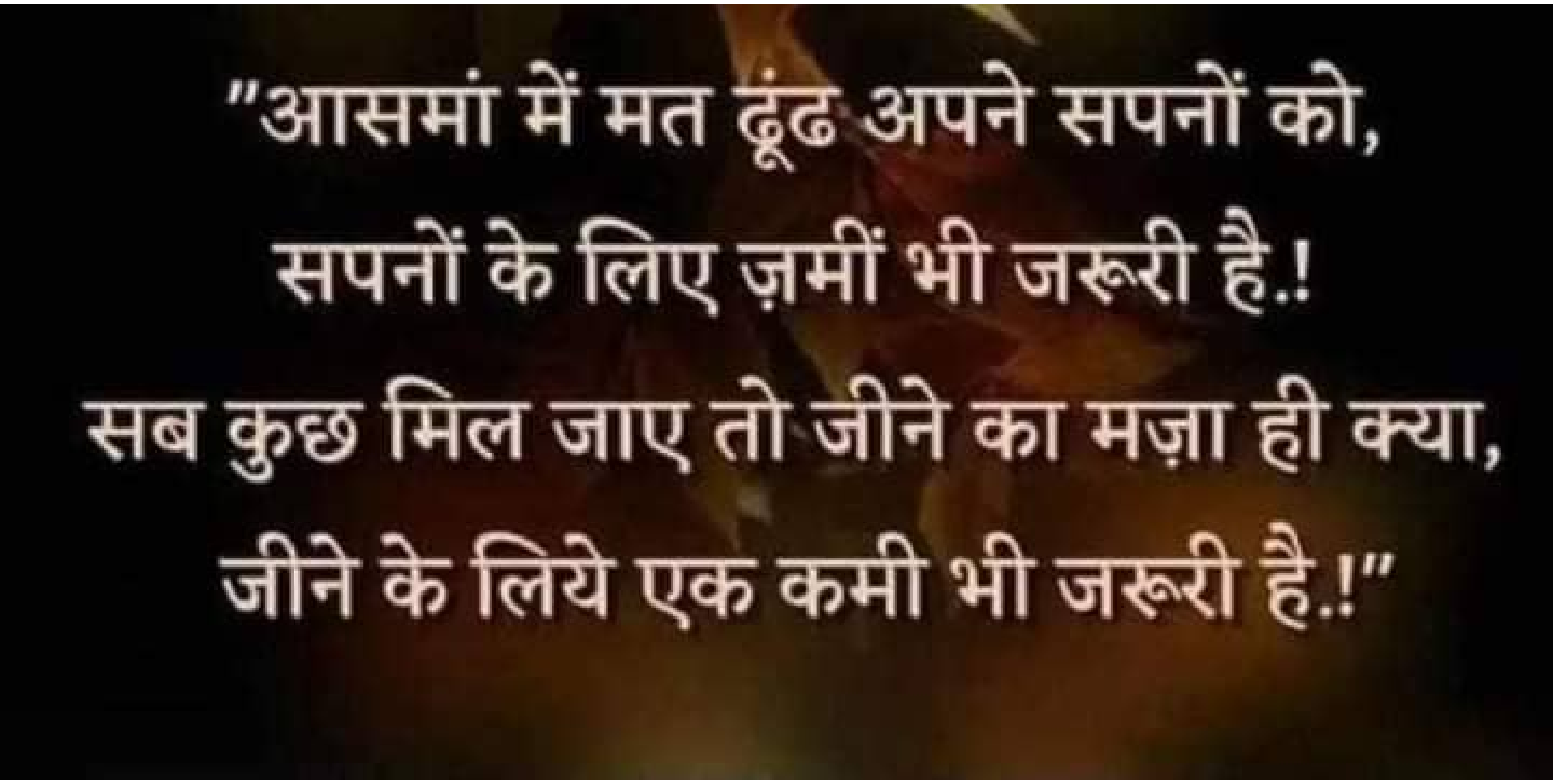
"आसमां में मत ढूंढ अपने सपनों को,
सपनों के लिए ज़मीं भी जरूरी है.!
सब कुछ मिल जाए तो जीने का मज़ा ही क्या,
जीने के लिये एक कमी भी जरूरी है.!"

CamScanner

CamScanner

10:04 am 0 KB/s 89%

Search

Posts About Videos More

Like Comment Share

उड़ियो पंख पसार

21 Apr 2020 ·

बुद्धों का कोई पद-चिह्न नहीं छूट जाता, क्योंकि उनकी यात्रा आकाश की यात्रा है। इसलिए कोई चाहे कि उनके पद-चिह्नों पर चल सके तो नहीं चल सकता। पद-चिह्न बनते ही नहीं आकाश में। तो ऐसे ही चलना होता है अज्ञात में। मंजिल साफ नहीं होती, बहुत धुंधली होती है। सिर्फ एक प्रबल अभीप्सा होती है, प्राणों में एक प्यास होती है। जल है भी या नहीं, यह भी पक्का नहीं। मगर इतना भर भरोसा होता है कि अगर प्यास है तो जल भी होगा ही। क्योंकि इस जीवन का यह नियम है: यहां भूख है तो भूख के पहले भोजन है।

https://oshoganga.blogspot.com/2018/08/01_24.html

oshoganga.blogspot.com

उड़ियो पंख पसार-(प्रवचन-01)

Like Comment Share

उड़ियो पंख पसार

21 Apr 2020 ·

CamScanner

चतुर आदमी वह है जो
उलझन में पड़ जाए तो
रास्ता खोज ले,
बुद्धिमान आदमी वह जो
उलझन में पड़े ही नहीं।।
-ओशो, प्रवचन 1

गुरु परताप साध की
संगति

CS CamScanner

10:02 am 0 KB/s VoLTE 4G 89%
Search
Posts About Videos More

उड़ियो पंख पसार

9 May 2020

एक आदमी किताबें पढ़ ले तैरने के संबंध में, हजारों किताबें पढ़ ले, तैरने के विषय का पंडित हो जाये। तैरने के संबंध में जो भी लिखा है, वह सब जान ले; तैरने के संबंध में जो कभी भी कहा गया है, सब जान ले। तैरने के संबंध में खुद भी किताब लिख सके, व्याख्यान दे सके, तैरने के संबंध में पी. एच. डी. कर ले। लेकिन उस आदमी को भूल से भी पानी में धक्का मत दे देना। क्योंकि वह आदमी और सब कर सकता है, तैर नहीं सकता। तैरने के संबंध में जानना, तैरना जानना नहीं है। तैरना जानना बिलकुल अलग बात है।

और ध्यान रहे, यह भी हो सकता है कि जो तैरना जानता हो, वह तैरने के संबंध में कुछ भी न बता सके। वह कुछ कहे कि बस तैरा जा सकता है। हम कूद जाते हैं और तैरते हैं, तुम भी कूद जाओ और तैरो। लेकिन उससे कहो कि एक व्याख्यान दो तैरने के संबंध में। वह कहेगा, व्याख्यान कैसे दें? पानी हो तो हम कूदकर बता दें। वह तैर जायेगा। लेकिन व्याख्यान क्या हो सकता है तैरने के संबंध में?

जानना हमेशा भीतर से आता है। और जिसे हम ज्ञान कहते हैं, वह हमेशा बाहर से आता है। नोइंग भीतर से आती है और नालेज बाहर से आती है। प्रकाश के संबंध में ज्ञान तो प्रकाश के विषय में लिखी हुई किताबों में मिल जायेगा। लेकिन प्रकाश का जानना किसी किताब में नहीं मिल सकता, वह भीतर से आता है। जानने और ज्ञान में अंतर है। यह समझ लेना कि नोइंग और नालेज में अंतर है। यह समझ लेना, जानना भीतर से आता है और ज्ञान बाहर से आता है। ज्ञान आदमी को पंडित बना देता है, ज्ञानी नहीं।

ज्ञानी आदमी बन सकता है जानने से, खुद के ही जानने से।

नेति-नेति👣ओशो

2
Like Comment Share
CamScanner

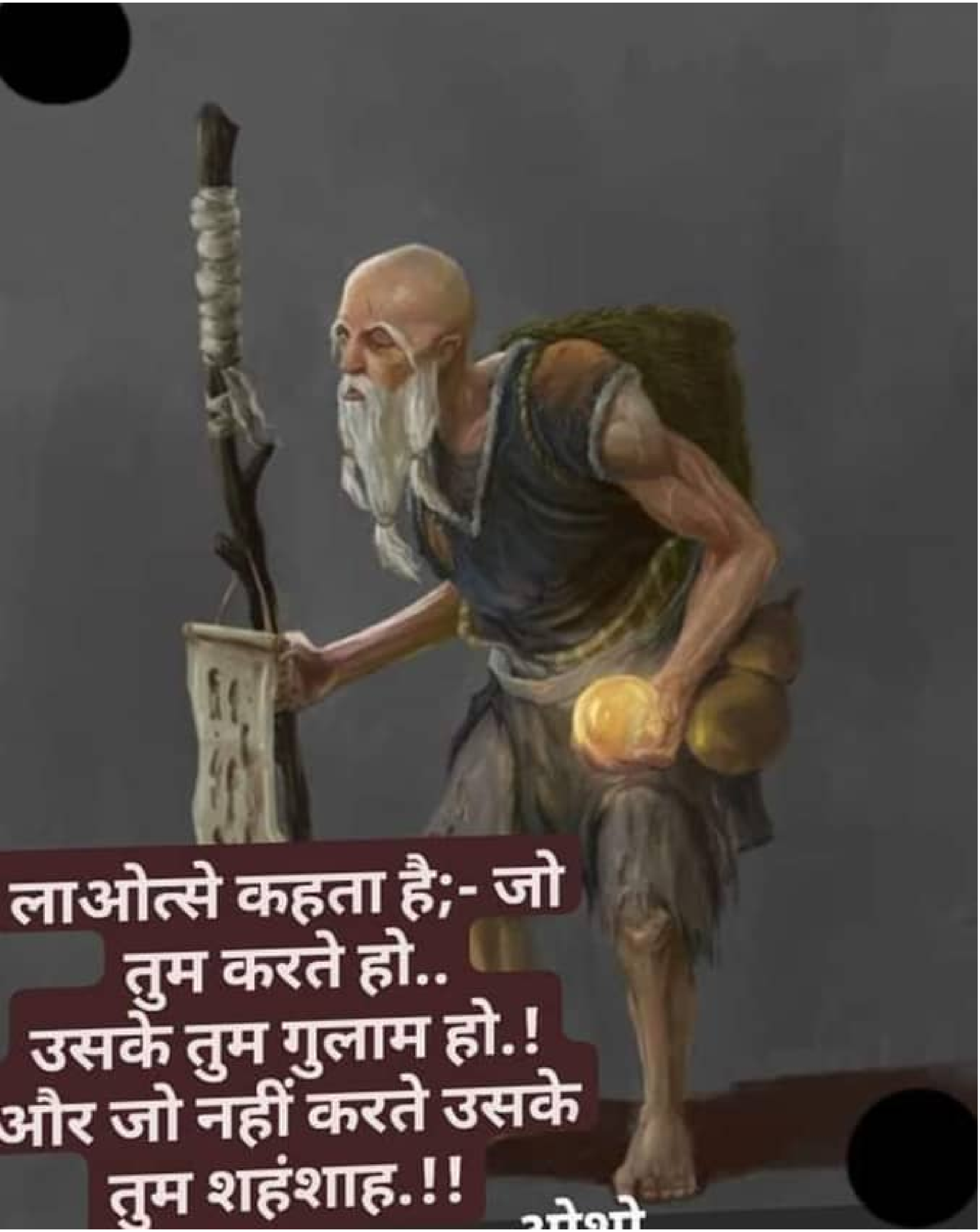

CamScanner

मरने के बाद मनुष्य की आत्मा भटकती है,फिर जानवरो की क्यो नही भटकती,जबकि जानवरो का तो क्रिया-कर्म, मृत्युभोज भी नही होता

CamScanner

पूछा है तुमने: "क्या आत्मोपलब्धि के लिए सांसारिक जीवन जीना आवश्यक है?'
नितांत आवश्यक है, राकेश! उसके बिना कोई संसार से न कभी मुक्त हुआ है, न हो सकता है।
~ओशो, प्रेम पंथ एसो कठिन

CS CamScanner

9:18 am 23 KB/s 92%

#oshozen #osho

Like Comment Share

Haanum
Sponsored ·

Embrace Every Mood with Our Expressi... See more

CamScanner

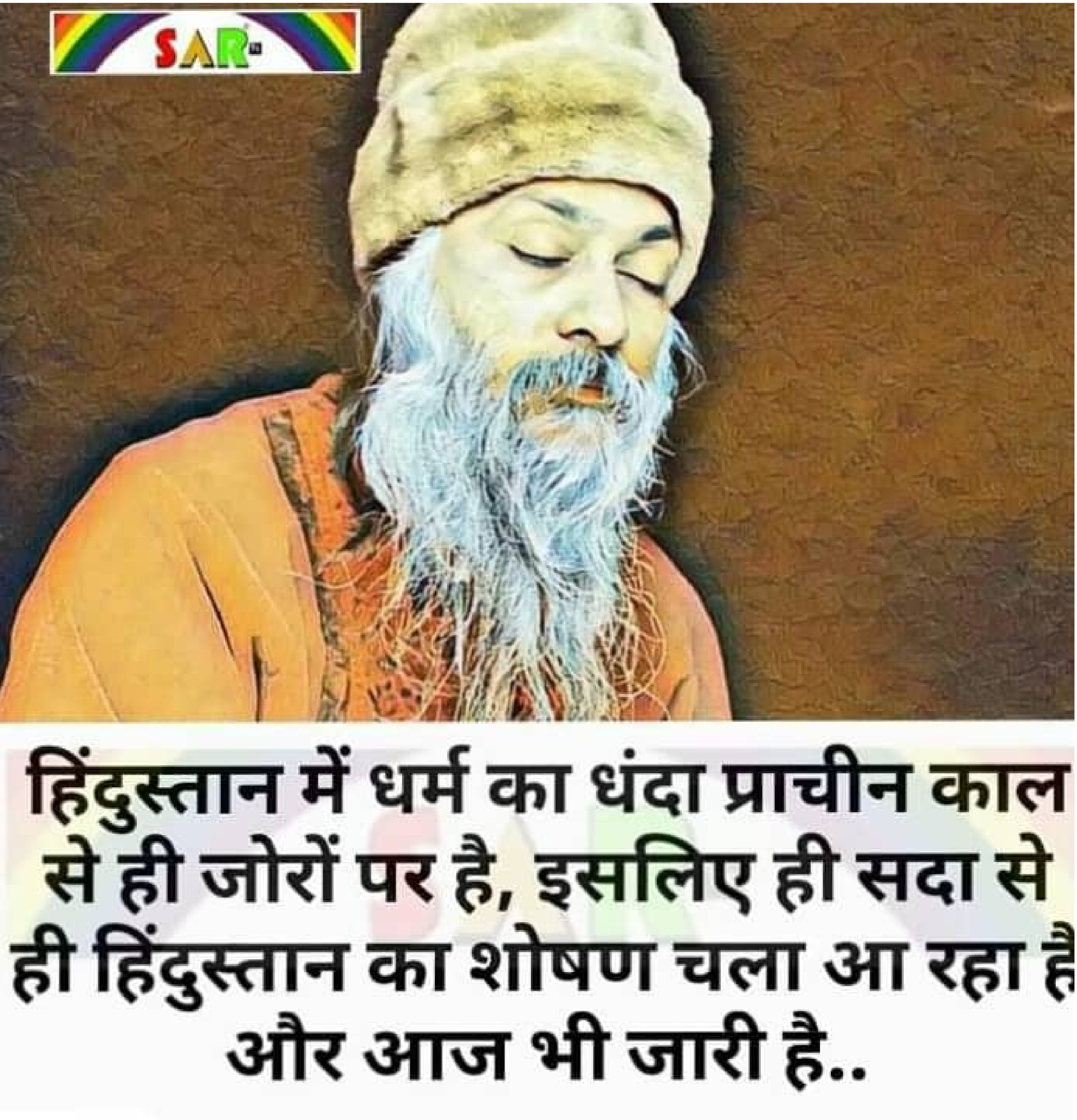

CS CamScanner

अहंकार

किसी गांव के बाहर एक तालाब था। तालाब के किनारे एक धोबी ने एक बड़ा-सा पत्थर जमा दिया था, जिस पर वह हर रोज़ कपड़े धोता था। एक दिन वहां से गुज़रते हुए एक महात्मा ने उस पत्थर पर बैठकर ध्यान-समाधि लगा ली। अगले दिन जब धोबी आया तो महात्मा को समाधि में बैठा देखकर चुपचाप प्रतीक्षा करने लगा। काफी देर बाद उसे अपने काम की फिक्र हुई, तो उसने महात्मा जी को ध्यान की अवस्था में ही उठाकर दूसरी जगह बिठा दिया। स्वर्ग के देवताओं से धोबी की यह धृष्टता नहीं देखी गई। वे इसकी शिकायत इन्द्रदेव से करने गये। उनके वापिस आने के पहले ही महात्मा का ध्यान टूटा और अपने आप को दूसरी जगह पाकर धोबी पर अहंकारवश नाराज़ होने लगे। नाराज़गी झगड़े में बदल गई तथा झगड़ा बढ़ गया। हाथापाई होने लगी। इसमें दोनों का गमछा व लंगोटी गिर गई और वे नग्नावस्था में ही लड़ते रहे। इतने में देवता भी आ गये तथा उनका मल्लयुद्ध देखने लगे। जब महात्मा की देवताओं पर नज़र पड़ी, तो उन्होंने देवताओं से कहा कि आपके आने का क्या लाभ? आपने मेरी सहायता नहीं की। इस पर देवताओं ने कहा: "हम आये तो आपकी सहायता के लिए ही थे, पर यहां आकर हमें पता नहीं चल रहा था कि कौन महात्मा है और कौन धोबी।"

CamScanner

जिंदगी के सब पहलू तुम्हारे हाथ में है, तुम मालिक हो। यह मैं अपने अनुभव से कहता हूं। यह मैं किसी शास्त्र की बात नही दोहरा रहा हूं, यह मेरे स्वयं का अनुभव है। और इसलिए मैं जरा भी स्वीकार नही कर सकता, कोई लाख कहे कि कोई और जिम्मेवार है। मैं भी दुखी था, जैसे तुम दुखी हो, जैसे कोई भी दुखी है, लेकिन जिस दिन यह समझ में आ गयी कि मैं ही जिम्मेवार हूं, उसी दिन से क्रांति हो गयी। उसी दिन से महल में उजाला हो गया उसी दिन से दिया जल गया।

CamScanner

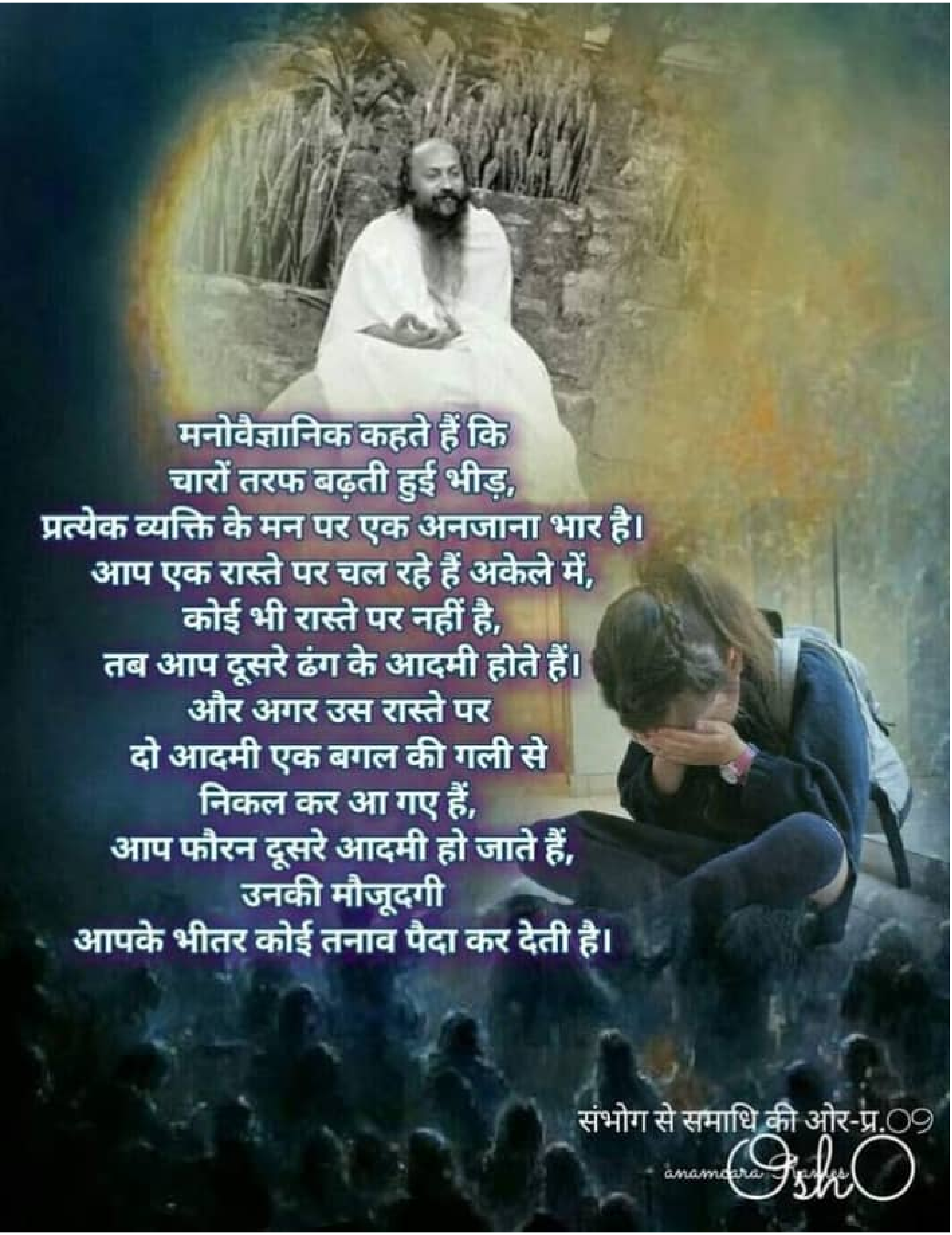
मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि
चारों तरफ बढ़ती हुई भीड़,
प्रत्येक व्यक्ति के मन पर एक अनजाना भार है।
आप एक रास्ते पर चल रहे हैं अकेले में,
कोई भी रास्ते पर नहीं है,
तब आप दूसरे ढंग के आदमी होते हैं।
और अगर उस रास्ते पर
दो आदमी एक बगल की गली से
निकल कर आ गए हैं,
आप फौरन दूसरे आदमी हो जाते हैं,
उनकी मौजूदगी
आपके भीतर कोई तनाव पैदा कर देती है।
संभोग से समाधि की ओर-प्र.09
OshO

CamScanner

एक हंसती हुई, मुस्कुराती हुई नारी जिस घर में है, जिसके कदमों में प्रेम के गीत हैं, जिसके चलने में झंकार है, जिसके दिल मे खुशी है, जिसे जीने का एक आनंद मिल रहा है, जिसकी खास-खास प्रेम से भरी है, ऐसी नारी जिस घर के केंद्र पर है, उस सारे घर में एक नई सुवास, एक नया संगीत पैदा हो जाएगा। और एक घर का सवाल नहीं है; यह प्रत्येक घर का सवाल है। अगर प्रत्येक घर में यह संभव हो सके, तो एक समाज पैदा होगा-- जो शांत हो, आनंदित हो, प्रफुल्लित हो......

@ourjourney.369/ig

CamScanner

CS CamScanner

11:21 am 0 KB/s VoLTE 4G 78%

Like Reply

Write a comment...

Oѕнo janaкι dнyan кendra
9 Oct ·

मैंने तो तुम्हें जिस दिन संन्यास दिया, अपना ही लिया। संन्यास और क्या है? मेरी तरफ से स्वीकार--कि तुम जैसे हो, प्रीतिकर हो; कि तुम जैसे हो, सुंदर हो; कि तुम जैसे हो, अंगीकार हो। मैं तो अपना लेता हूं तुम्हें पहले ही क्षण, तुम्हें ही देर लग जाती है, वर्षों लग जाते हैं मुझे अपनाने में।

मुझे अपनाने में तो अड़चन क्या? मेरा तो सीधा उसूल है कि परमात्मा जब तुम्हें अपना रहा है, तो मैं कोई और ज्यादा योग्यता तुमसे नहीं मांग सकता। जब परमात्मा ने तुम्हें जीवन दिया है, और उसने तुम्हें पात्र माना है, तो मैं कोई और परीक्षाएं तुम्हारे लिए तय नहीं कर सकता, जो तुम पार करो तब मैं तुम्हें अपनाऊंगा। परमात्मा तुम्हें जिलाए है, यह काफी है। यह तुम्हारी योग्यता हो गई, पात्रता हो गई।

फिर मैं कौन हूं जो तुम्हें इनकार करूं? मैं तो स्वीकार ही करूंगा। क्योंकि उसी स्वीकार में से एक संभावना का द्वार खुलता है कि किसी दिन तुम मुझे स्वीकार कर सको। अड़चन तो वहां है। जब मैं तुम्हें स्वीकार करता हूं, तो मुझे तो कुछ भी खोना नहीं पड़ता। लेकिन तुम जब मुझे स्वीकार करोगे, तुम्हें कुछ खोना पड़ेगा। अहंकार खोना पड़ेगा। वहीं अड़चन आ जाती है। वहीं गांठ है।

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -5 "

CamScanner

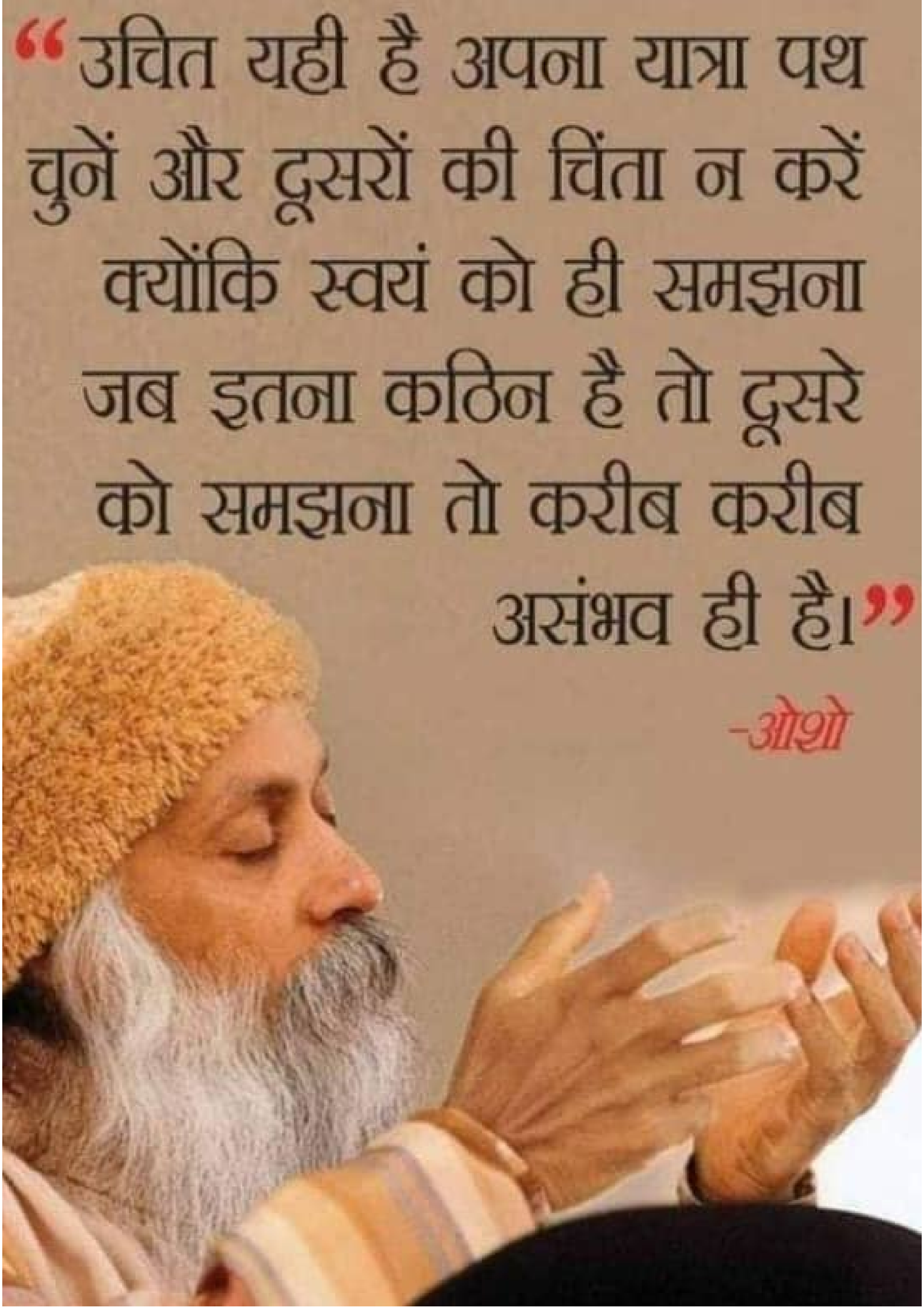

CS CamScanner

CamScanner

All related (40) Recommended

Sumit Tiwari · Follow

aware! · Updated 5y

It does not matter. If I say yes he was womanizer, is it going to help ? Or if I say no he was not a womanizer, what change it will bring ? Is this the decision making point to go ahead with his teachings or not?

See what all good he said, whether it will help to liberate you. As Osho said don't blindly follow them, evaluate his teaching - if it helps continue with them. So no need to believe anything

He is no more, you are here and I am here. We need to see how can we liberate ourself.

A wise man can learn from a fool. But fool cannot even learn from a wise man.

Hence focus on the essence of Osho's teachings. Rather than this spicy news which might only exaggerate internal womanising feelings. And can't do anything else.

11K views · View 58 upvotes

Upvote · 58

CamScanner

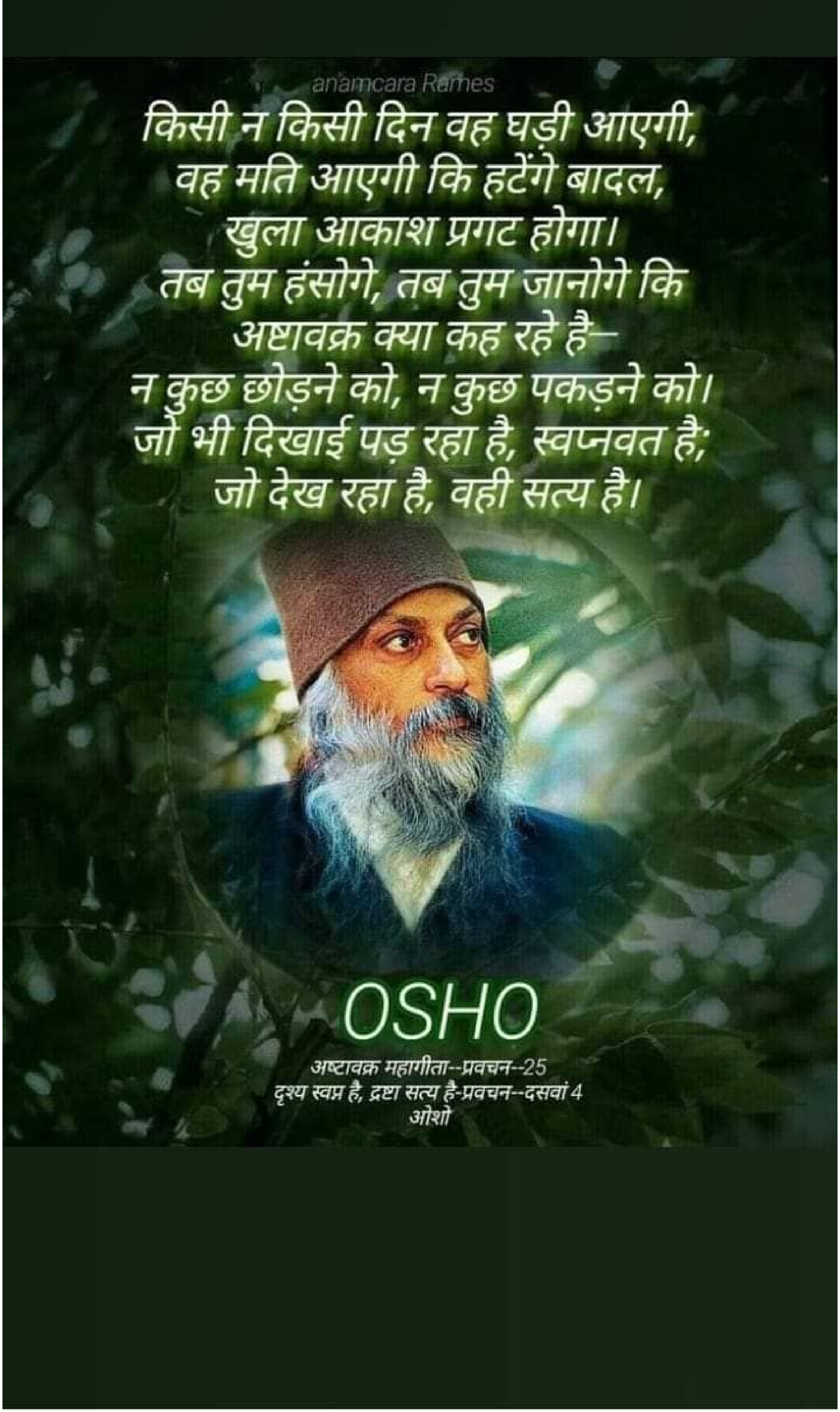
anamcara Rames
किसी न किसी दिन वह घड़ी आएगी,
वह मति आएगी कि हटेंगे बादल,
खुला आकाश प्रगट होगा।
तब तुम हंसोगे, तब तुम जानोगे कि
अष्टावक्र क्या कह रहे है—
न कुछ छोड़ने को, न कुछ पकड़ने को।
जो भी दिखाई पड़ रहा है, स्वप्नवत है;
जो देख रहा है, वही सत्य है।
OSHO
अष्टावक्र महागीता--प्रवचन--25
दृश्य स्वप्न है, द्रष्टा सत्य है-प्रवचन--दसवां 4
ओशो

CamScanner

अकेले बैठ कर
खुद से एक सवाल करें की
आपके मरने के बाद कितने लोगों
को फर्क पड़ेगा...
जिन लोगों को फर्क पड़ेगा
उनका ख्याल करे बाकियों
को छोड़ दे...

CamScanner

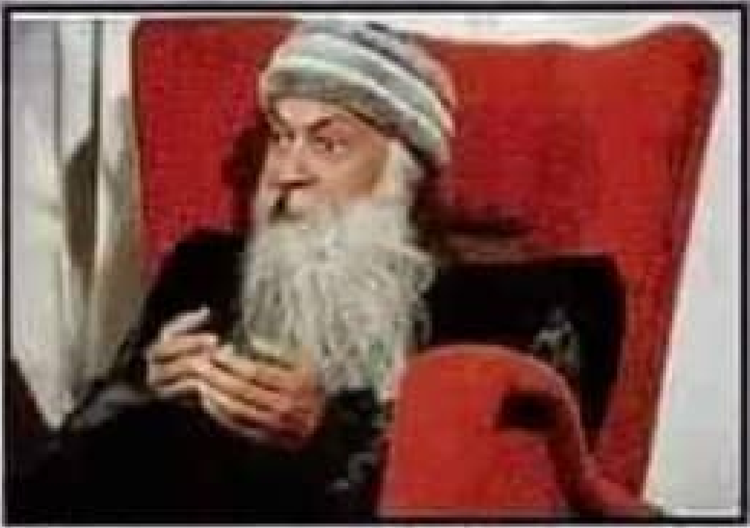

स्मरण रहे, परमात्मा, मंदिरों और मस्जिदों में छिपा हुआ नहीं बैठा है। परमात्मा प्रगट है, निर्वस्त्र है, चारों तरफ मौजूद है। झांको तो तुम्हारे भीतर मौजूद है और ऐसे दौड़ते रहो काबा और काशी और कैलाश..तुम्हारी मर्जी! लोग सस्ता पाना चाहते हैं कि चले तीर्थयात्रा को चले हज—यात्रा को। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो सब हाजियों को मिल जाए—हाजी मस्तान को भी मिल जाए। परमात्मा इतना सस्ता नहीं मिलता, नहीं तो हर तीर्थयात्री को मिल जाए। और कुछ लोग तो तीर्थों में अड्डा जमाकर ही बैठे हैं, उन्हें तो पक्का मिल जाए। लेकिन बाहर नहीं है जब भी मिलेगा भीतर मिलेगा।

Osho

CamScanner

सुहाग सेज पर सजी मैं ऐसे साजन का मन मचल गया, जैसे हाथ लगाया आँचल पर पल भर में आँचल फिसल गया, मेरे दो
Dhirendrasingh Rathore
kutumbapp.page.link

सुहाग सेज पर सजी मैं ऐसे
साजन का मन मचल गया,
जैसे हाथ लगाया आँचल पर
पल भर में आँचल फिसल गया,
मेरे दोनो तने हुए पर्वत पर जब उनकी
नज़र पड़ी तो जोश में सब कुछ भूल गए,
टूट रहे थे मानो ब्लाउज के सारे हुक मेरे
आतुर थे आजादी पाने को कश्मकश भरी अंगड़ाई से
उन्हें पता नही था शायद बाहर के तुफानो का,
खड़ा कोई है इंतजार में उनपर टूट जाने को
धीरे धीरे खुले हुक आजाद हुए पर्वत मेरे,
लेकिन उसपर आयी आफत उन हाथो के मर्दन का
कड़क हाथ थे कोमल पर्वत और जोश दोनो में था,
एक जोश में पागल था और एक जोश से घायल था
एक दर्द से पीड़ित थी और एक खुशी से पागल था,
औरत के हिस्से दर्द लिखा तभी तो साथ मे मर्द लिखा।
दर्द सहन कर खुशी मिले तो मर्द मर्द ही लगता है,
लेकिन दर्द दर्द ही बना रहे तो मर्द बेदर्द से दिखता
है।।

ऐसे और पोस्ट देखने के लिए और Divine Mitra ~ दिव्य मित्र से जुड़ने के लिए क्लिक करें 👇👇

https://kutumbapp.page.link/VqThUFxzoSVHHaW3A?ref=KZJLG

11:07 pm

❤️ 👍 🙏 30

CamScanner

5:26 pm 0 KB/s VoLTE 4G 61%

बड़ी प्यारी कहानी है लाओत्सु के संबंध में कि वह अपनी मां के पेट में बयासी वर्ष रहा। ऐसा हो तो नहीं सकता; इतिहास तो नहीं है यह, पुराण है; लेकिन बहुमूल्य है। और पुराण सदा इतिहास से ज्यादा मूल्यवान होता है--इसे याद रखना। इसे कभी भूलना ही मत। इतिहास तथ्य होता है, पुराण सत्य होता है। इतिहास तो क्षुद्र घटनाओं को इकट्ठा करता है। समय की रेत पर जो चिह्न छूट जाते हैं, उनको इतिहास इकट्ठा करता है। और शाश्वत में जो स्वर गूंजते हैं, पुराण उनको इकट्ठा करता है।

लाओत्सु जैसा बेटा पैदा हो, इतना परिपक्व, तो बयासी साल भी कम हैं मां के पेट में रहना--यह अर्थ है कथा का। नौ महीने में तो साधारण बच्चे पकते हैं, नौ महीने में तो कोई भी पकता है, लाओत्सु जैसा बच्चा पैदा हो तो बयासी वर्ष भी कम हैं। जरूर लाओत्सु बयासी वर्ष मां के गर्भ में रहा होगा, तब इतना परिपक्व पैदा हुआ।

कहते हैं कि लोग रोते पैदा होते हैं। जरथुस्त्र के संबंध में कहानी है कि जरथुस्त्र अकेला बच्चा है जो हंसता पैदा हुआ। रोते हुए पैदा होना बिलकुल स्वाभाविक है। रोते हुए मरना भी बिलकुल स्वाभाविक है। हंसते हुए पैदा होना और हंसते हुए मरना बड़ी अनूठी घटना है। अब जरथुस्त्र जैसे बच्चे को, जो हंसता हुआ पैदा हुआ, इतना बोध लेकर पैदा हुआ कि जिंदगी उसे हंसने योग्य मालूम पड़ी, अगर मां के पेट में लंबे दिन तक रहना पड़े तो आश्चर्य नहीं है।

लाओत्सु के संबंध की कहानी यह भी कहती है कि लाओत्सु जब पैदा हुआ, उसके सारे बाल सफेद थे। बयासी साल मां के पेट में रहा, तो सारे बाल सफेद हो ही गए होंगे।

सफेद बाल प्रज्ञा के प्रतीक हैं, प्रौढ़ता के प्रतीक हैं। इतनी प्रज्ञा, इतनी गहन अनुभूति, इतना बोध, कि जैसे हिमालय के शिखर बर्फ से ढंके हों, ऐसे शुभ्र बालों से ढंका हुआ लाओत्सु पैदा हुआ।

हर चीज का समय है। हर चीज के विकास की अपनी गति है। हर चीज का अपना छंद है।

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -7 "

CamScanner

🌷OSHO TODAY🌷
💓 OSHO TOMORROW💓
Swami Anand Sahaz · 1d ·

Tirth Kumar Pandey
2d ·

कार्लाइल बूढ़ा हो गया था. उसका शरीर अस्सी वसंत देख चुका था. और जो देह कभी अति सुंदर और स्वस्थ थी, वह अब जर्जर और ढीली हो गई थी. जीवन संध्या के लक्षण प्रकट होने लगे थे. ऐसे बुढ़ापे की एक सुबह की घटना है. कारलाइल स्नानगृह में था. स्नान के बाद वह जैसे ही शरीर को पोंछने लगा, उसने अचानक देखा कि वह देह तो कब की जा चुकी है, जिसे कि वह अपनी मान बैठा था! शरीर तो बिलकुल ही बदल गया है. वह काया अब कहां है जिसे उसने प्रेम किया था? जिस पर उसने गौरव किया था, उसकी जगह यह खंडहर ही तो शेष रह गया है. पर साथ ही एक अत्यंत अभिनव-बोध भी उसके भीतर अकुंडलित होने लगा : "शरीर तो वही नहीं है, लेकिन वह तो वही है. वह तो नहीं बदला है." और तब उसने स्वयं से ही पूछा था, "आह! तब फिर मैं कौन हूं?"

ओशो -पथ के प्रदीप से

CamScanner

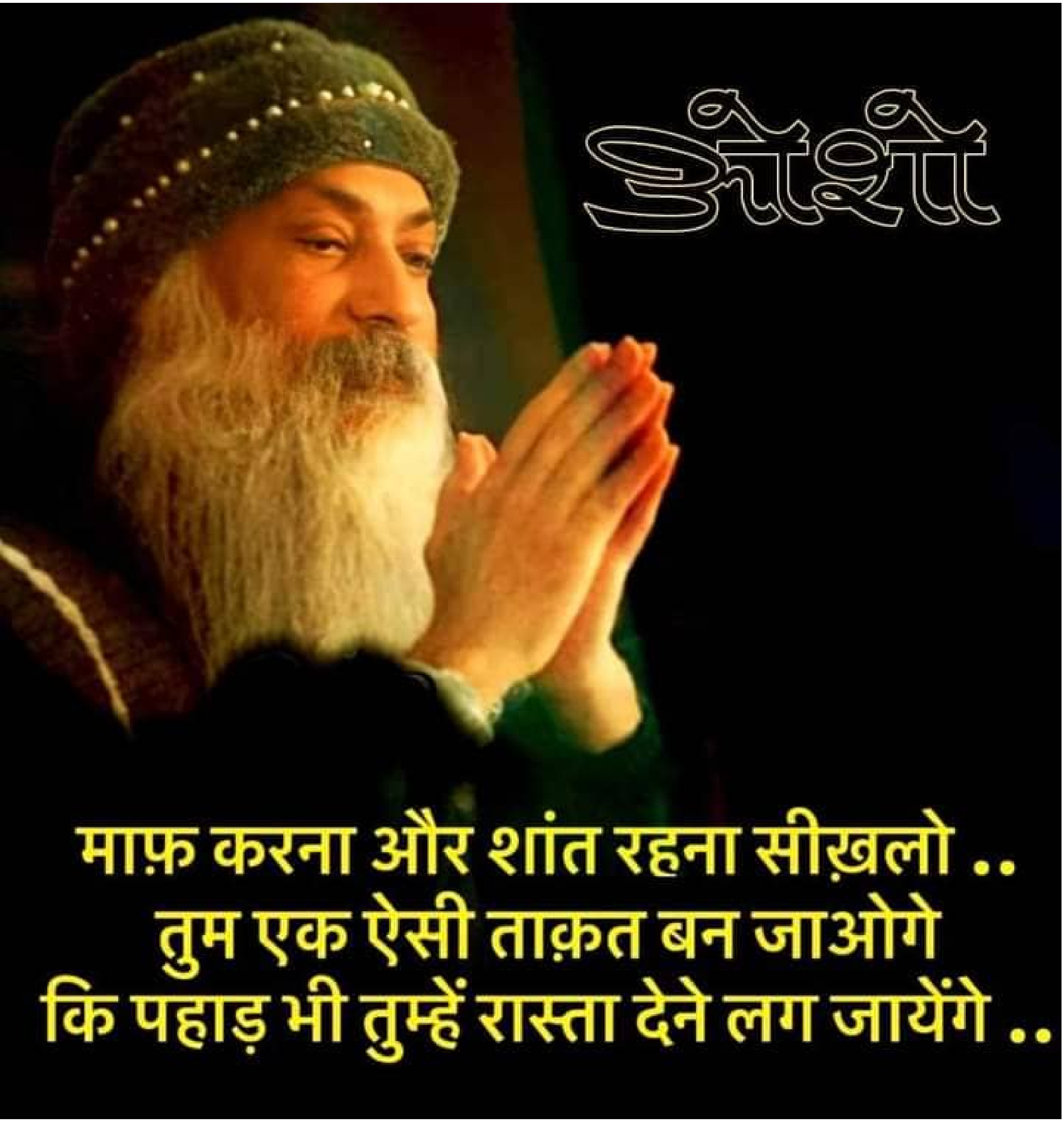

CamScanner

9:06 am 0 KB/s VoLTE 4G 58%

Create story

(Osho)

Anil Osho

सत्यप्रेमकोसत्यज्ञानको सत्यआनंदिजी वनको...

ओशो - जीवन-मृत्यु

Ratiwal Ramesh Prajapat BhagwatiStudio ·

1d ·

99%पुरुषों की नजर स्त्री की देह पर ही होती है

प्रेम और मित्रता की आड़ तो स्त्री पर कब्जा करने की चालाकियां होती है

कितना ही झूठ बोलो

चाहे कितने ही बड़े बड़े शब्दो की आड़ लो

चाहे कितनी ही प्रेम की बकवास करो

स्त्री बहुत बड़ी ऊंचाई का नाम है

स्त्री चाहे वेश्या का ही धंधा क्यो न करती हो

अगर वो किसी के प्रेम में पड़ जाती है

तो उसका शरीर कही भी रहे

उसकी आत्मा प्रेमी में ही रहती है

स्त्री का गुण मानो की कमजोरी

स्त्री की इसी बात का मर्दो ने किसी न किसी तरीके से हमेशा फायदा उठाया है

स्त्री का सम्मान पुरूष तब तक ही करता है

जब तक कि वो उसे हासिल नही हो जाती है।

CS CamScanner

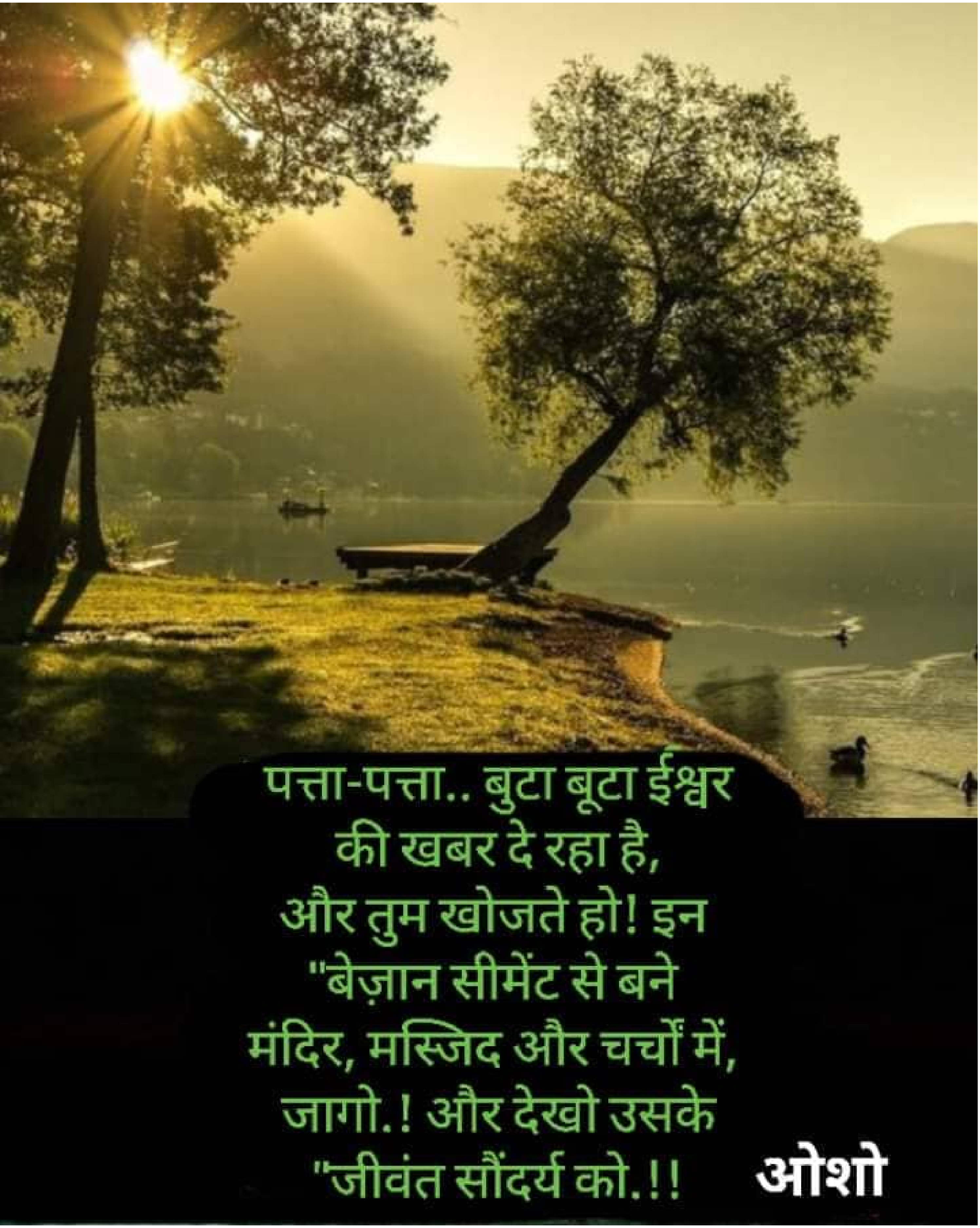

CS CamScanner

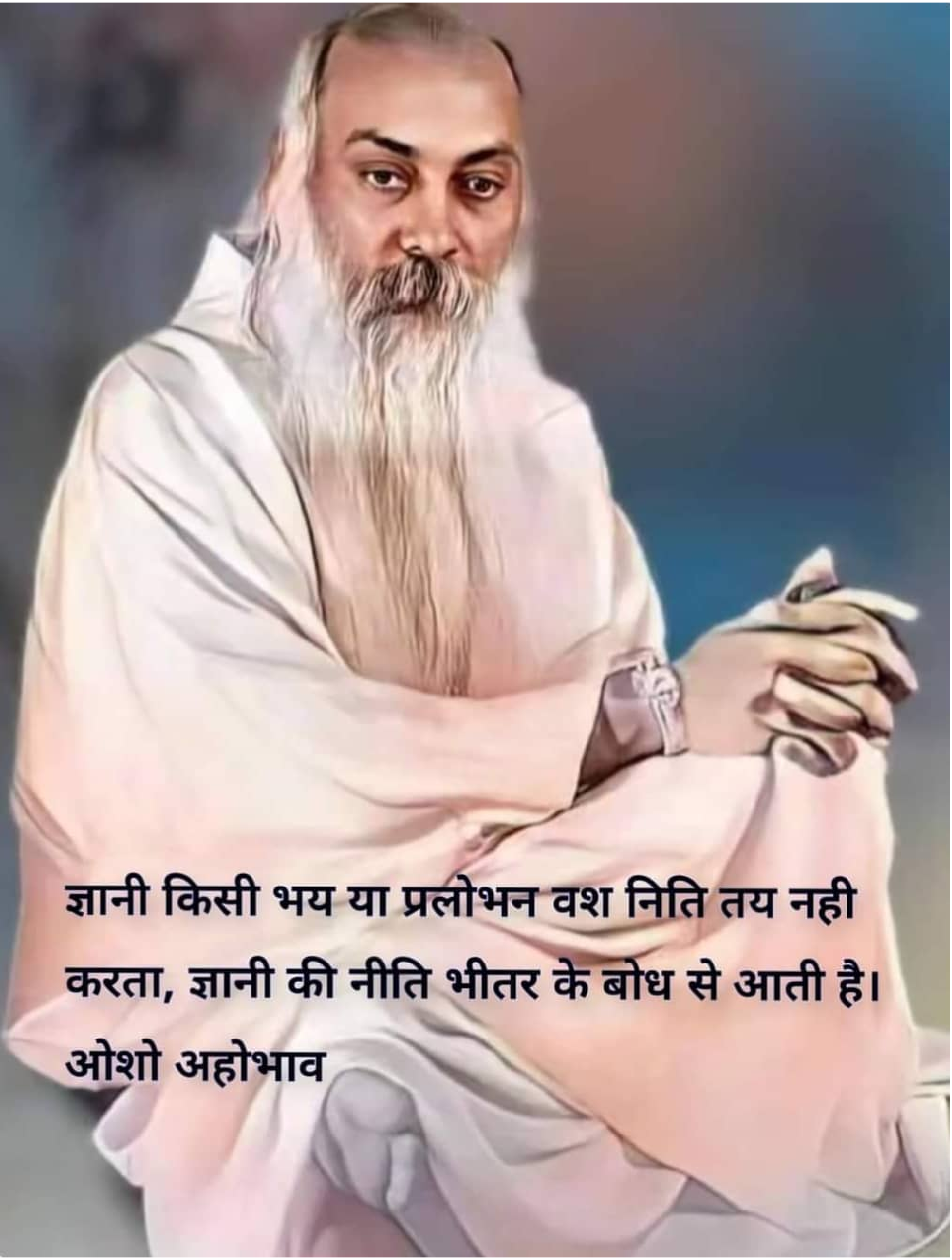

CamScanner

Wallpaper.com
माँ कालरात्रि
www.HinduGodWallpaper.com
एकवेणी जपाकर्णपूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरिणी॥
वामपादोल्लसल्लोहलताकण्टक भूषणा।
वर्धन्मूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भयंकरी॥
रंग– नीला
प्रसाद -गुड़ का नैवेद्य चढ़ायें

CamScanner

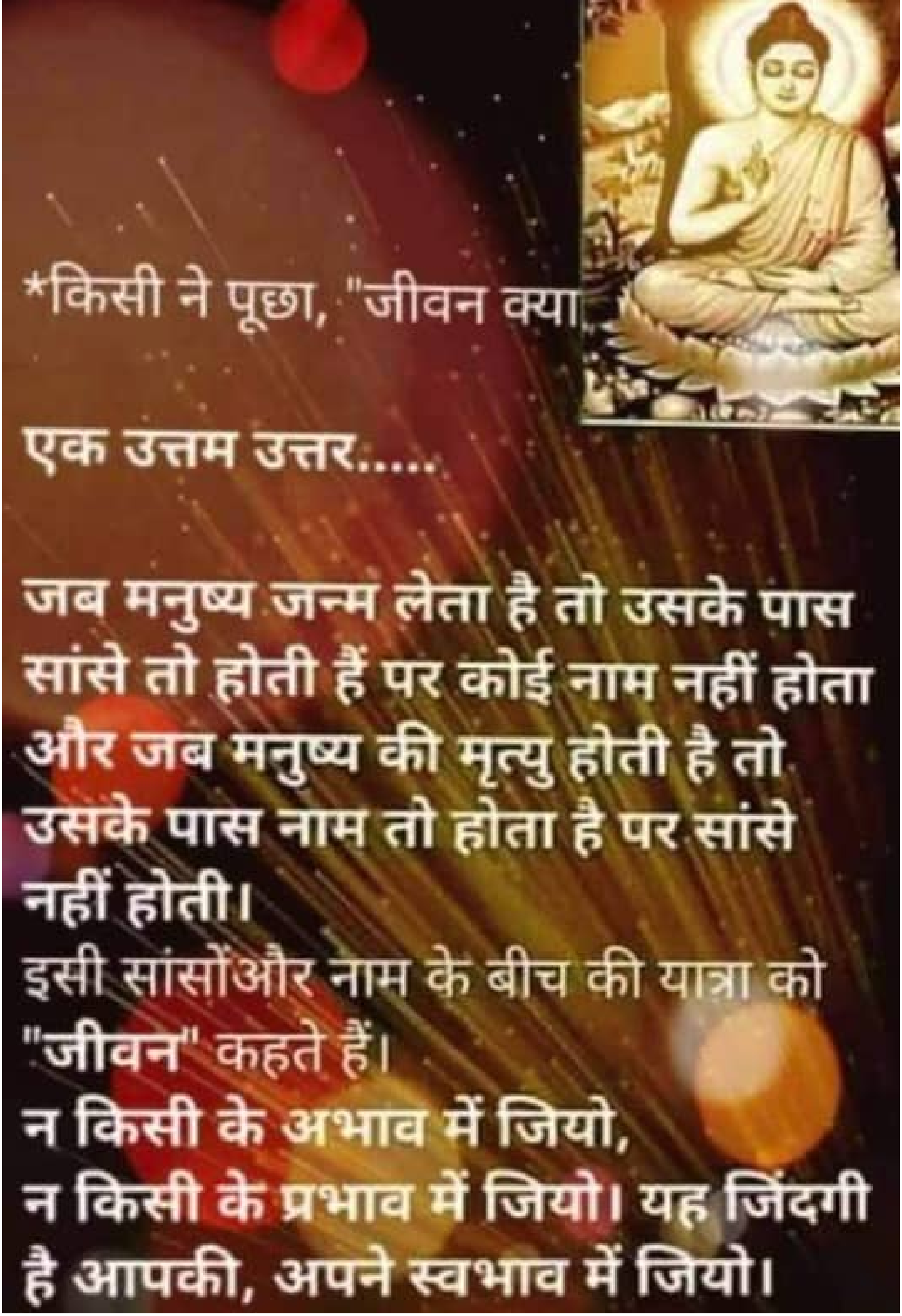
*किसी ने पूछा, "जीवन क्या
एक उत्तम उत्तर.....
जब मनुष्य जन्म लेता है तो उसके पास
सांसे तो होती हैं पर कोई नाम नहीं होता
और जब मनुष्य की मृत्यु होती है तो
उसके पास नाम तो होता है पर सांसे
नहीं होती।
इसी सांसोंऔर नाम के बीच की यात्रा को
"जीवन" कहते हैं।
न किसी के अभाव में जियो,
न किसी के प्रभाव में जियो। यह जिंदगी
है आपकी, अपने स्वभाव में जियो।

CamScanner

दुख!

साम्यवाद कहता है, समाज बदल जाये, तो लोग सुखी हो जायेंगे. परिस्थिति बदल जाये, तो लोग सुखी हो जायेंगे, व्यवस्था बदल जाये, तो लोग सुखी हो जायेंगे. व्यक्ति के बदलने की कोई बात साम्यवाद नहीं उठाता. कुछ और बदल जाये, मुझे छोड़कर सब बदल जाये, तो मैं सुखी हो जाऊंगा. लेकिन धर्म का सारा अनुसंधान यह है कि दूसरा मेरे दुख का कारण है, यही समझ दुख है. दूसरा मुझे दुख दे सकता है, इसलिए मैं दुख पाता हूं, इस ख्याल से, इस विचार से. और तब मैं अनंत काल तक दुख पा सकता हूं, दूसरा बदल जाये तो भी. क्योंकि मेरी जो दृष्टि है दुख पाने की, वह कायम रहेगी.समाज बदल जाये... समाज बहुत बार बदल गया. आर्थिक व्यवस्था बहुत बार बदल गई. कितनी क्रांतियां हो चुकी हैं. और फिर भी कोई क्रांति नहीं हुई. आदमी वैसा का वैसा दुखी है. सब कुछ बदल गया. अगर आज से दस हजार साल पीछे लौटें, तो क्या बचा है? सब बदल गया है. एक ही चीज बची है, दुख वैसा का वैसा बचा है, शायद और भी ज्यादा बढ़ गया है.

ओशो

S.R.B.

CamScanner

9:50 pm 0 KB/s VoLTE 4G 37%

Reels · 6d ·

Humare Whatsapp Group Se Judne K Liye Niche wale Link Par Click Karen... See more

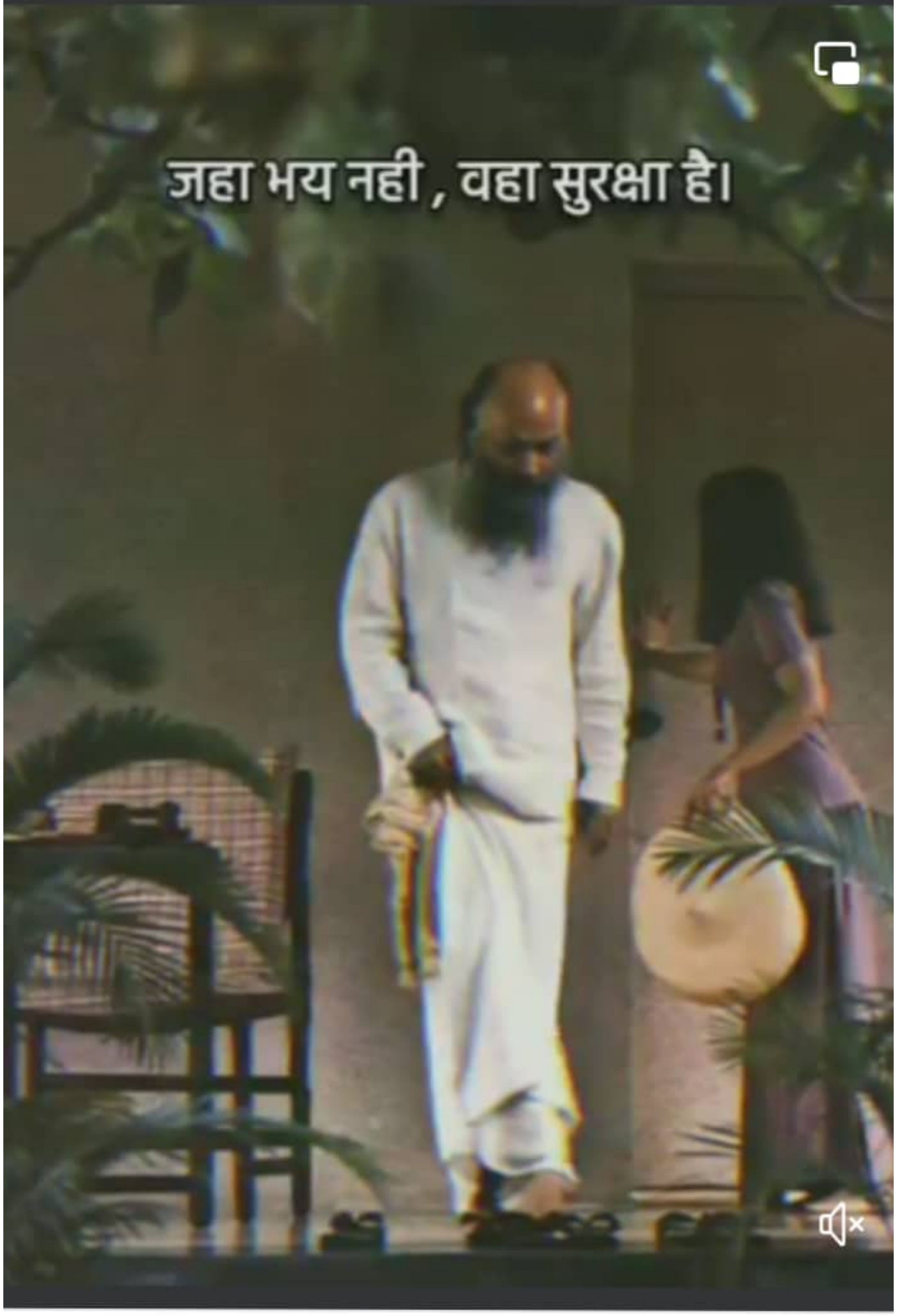

12 2 shares • 86 views

Like Comment Share

CamScanner

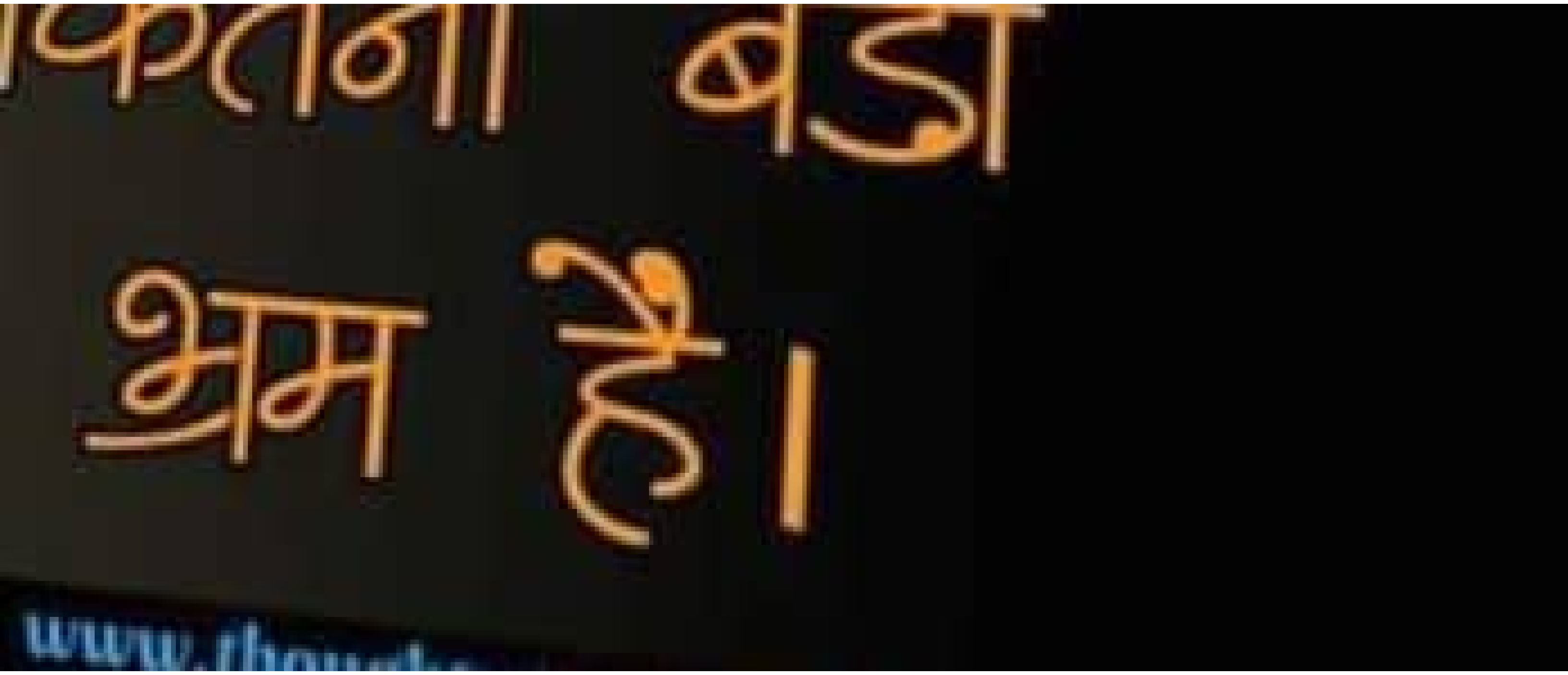

CamScanner

ओशो

अहोभाव

अष्टावक्र: महागीता (भाग –6)

प्रवचन नं –6

तुम ज्ञानी उसको कहते हो जिसके पास बहुत जानकारी है। मैं ज्ञानी उसे कहता हूं जिसने सब जानकारी फेंकी, सब शास्त्र हटाये। जिसने धीरे–धीरे जानकारी से अपनी दृष्टी हटाई और जानने के सूत्र पर लगाई। जो जागने लगा वही ज्ञानी है।

CS CamScanner

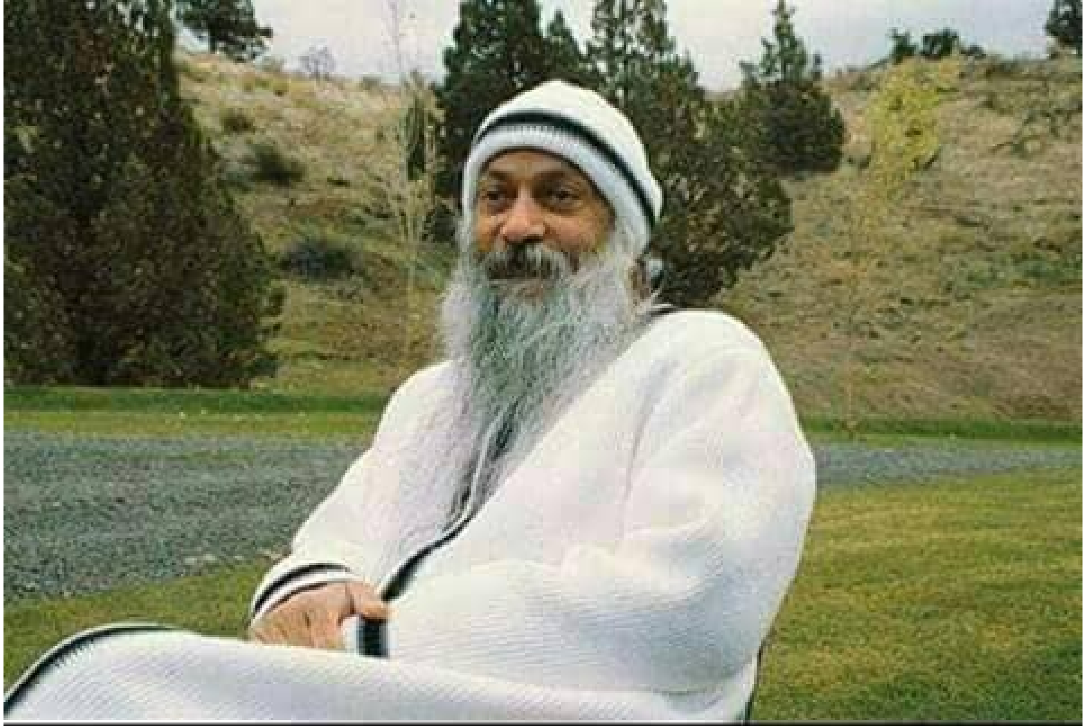

शिष्य का शाब्दिक अर्थ होता है :
जो सीखने में तत्पर है,
जो सीखने को तत्पर है।
पंडित नहीं सीख सकता;
वह तो पहले से ही सीखा हुआ बैठा है।
सीखने की तत्परता का अर्थ है,
जिसने अपने सामने यह
बात स्वीकार कर ली कि
मुझे कुछ भी पता नहीं है, मैं अज्ञानी हूं!
वही शिष्य हो सकता है।
जिसने यह मान लिया कि मैं अज्ञानी हूं,
उसका अहंकार मर जाता है तत्क्षण!
और अहंकार की मृत्यु पर ही
शिष्यत्व का फूल खिलता है।

CS CamScanner

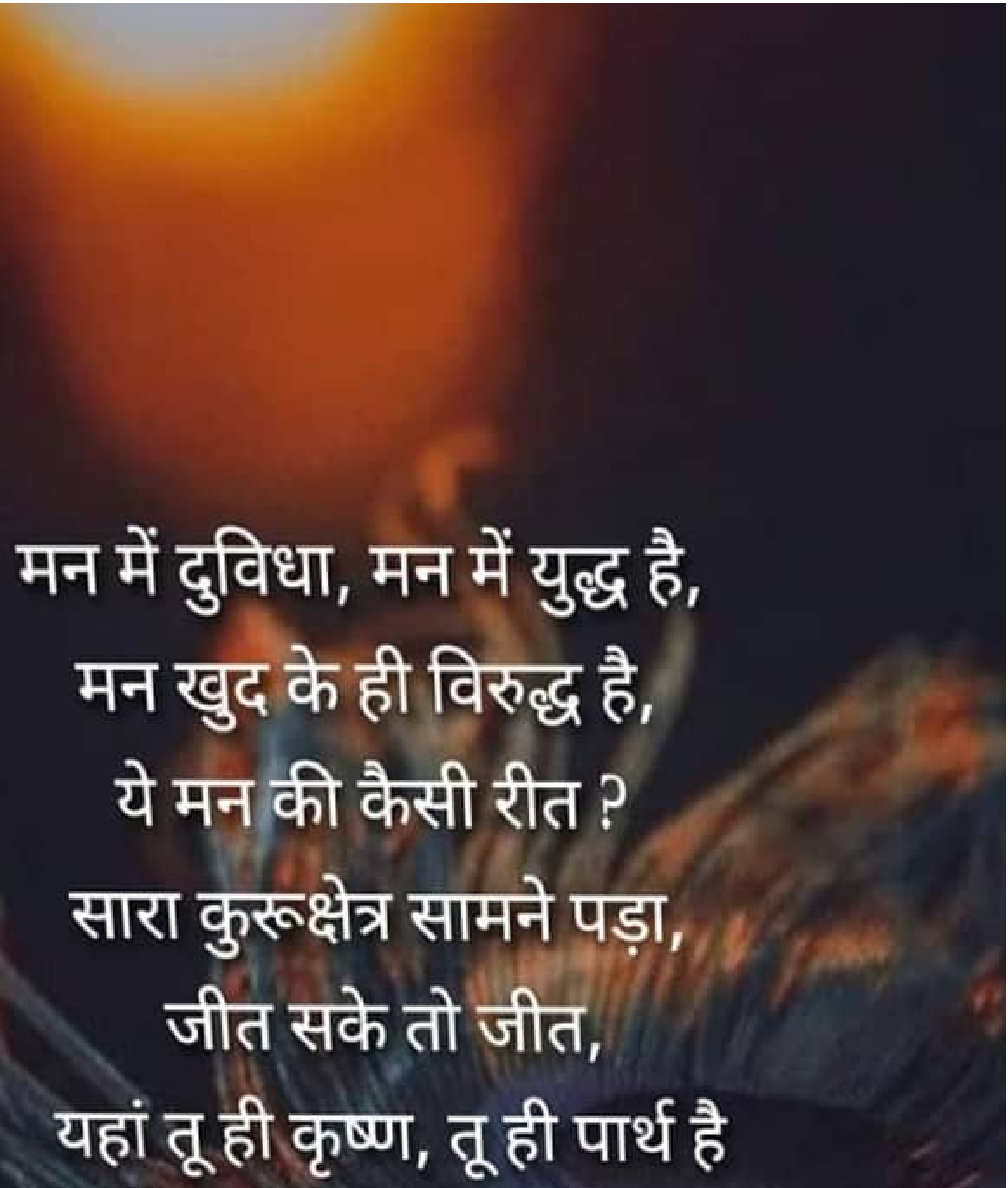
मन में दुविधा, मन में युद्ध है,
मन खुद के ही विरुद्ध है,
ये मन की कैसी रीत ?
सारा कुरूक्षेत्र सामने पड़ा,
जीत सके तो जीत,
यहां तू ही कृष्ण, तू ही पार्थ है
तुझे खुद ही समझना, क्या यथार्थ है।

CamScanner

9:35 pm
जो लोग ढंग से जीना नही जानते
वही लोग मोक्ष-मुक्ति वगैरह के चक्कर में पड़ते है।
क्योंकि जो जीना जानते है वह तो मुक्त ही है।
111
45 comments
Like
Comment
Share

CamScanner

ओशो

अहोभाव

प्रभु की पगडांडियां

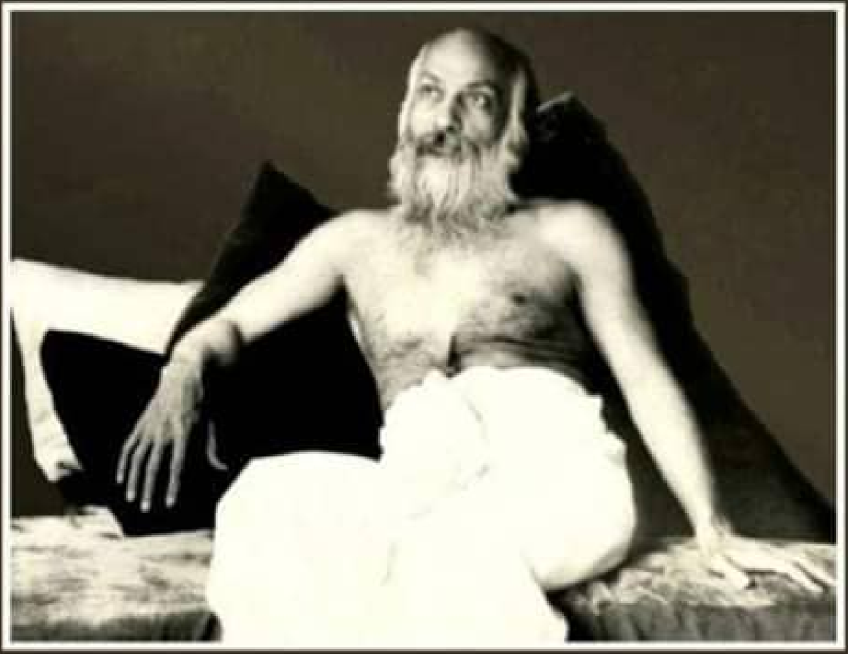

तुमने पूछा है कि लोग जब किसी वस्तु की तरह मेरा उपयोग करते है तो बड़ी चोट पहुंचती है। लेकिन तुम खुद अपने को वस्तु की तरह उपयोग कर रहे हो यह तुमने सोचा, तुमने अपने को आत्मा की तरह उपयोग किया है? कभी जीवन के किसी क्षण में तुमने खुद अपने को वस्तु की तरह उपयोग किया है, एक शरीर मात्र। और जब तुम खुद ही अपने यह दुर्व्यवहार कर रहे हो,तो दूसरों से क्या शिकायत? वे तुमसे वही कर रहे हैं जो तुम अपने से कर रहे हो ।और शरीर तो वस्तु है ही। तुम अपने भीतर छिपे हुए उस चैतन्य को पहचानने की कोशिश करो जो वस्तु नही है। फिर तुम्हारा कोई भी कैसा भी उपयोग करे, तुम भलीभाँति समझोगे कि तुम दूर खड़े देख रहे हो ।वह तुम्हारा उपयोग नही है......

CS CamScanner

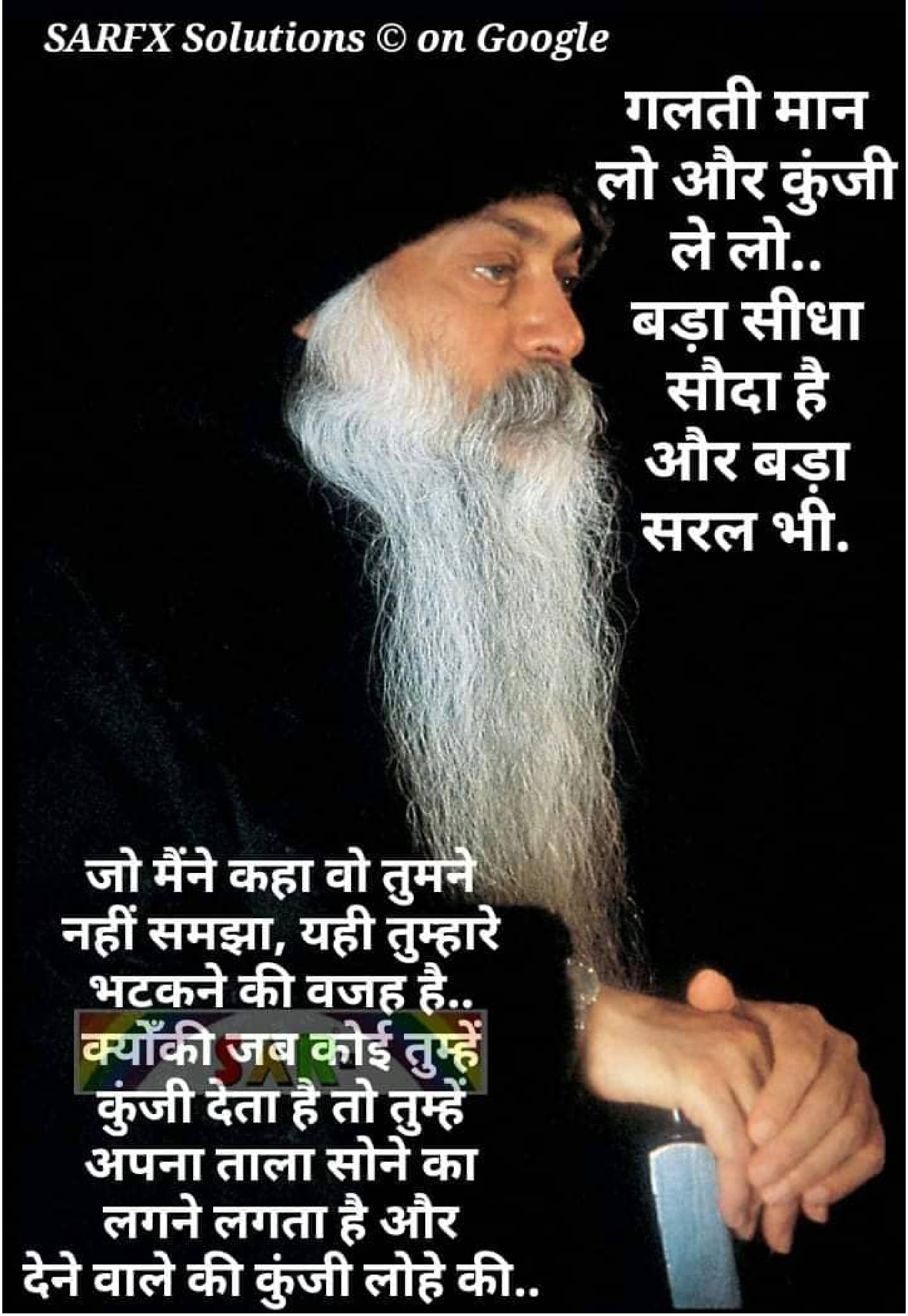
SARFX Solutions © on Google
गलती मान
लो और कुंजी
ले लो..
बड़ा सीधा
सौदा है
और बड़ा
सरल भी.
जो मैंने कहा वो तुमने
नहीं समझा, यही तुम्हारे
भटकने की वजह है..
क्योंकी जब कोई तुम्हें
कुंजी देता है तो तुम्हें
अपना ताला सोने का
लगने लगता है और
देने वाले की कुंजी लोहे की..

CamScanner

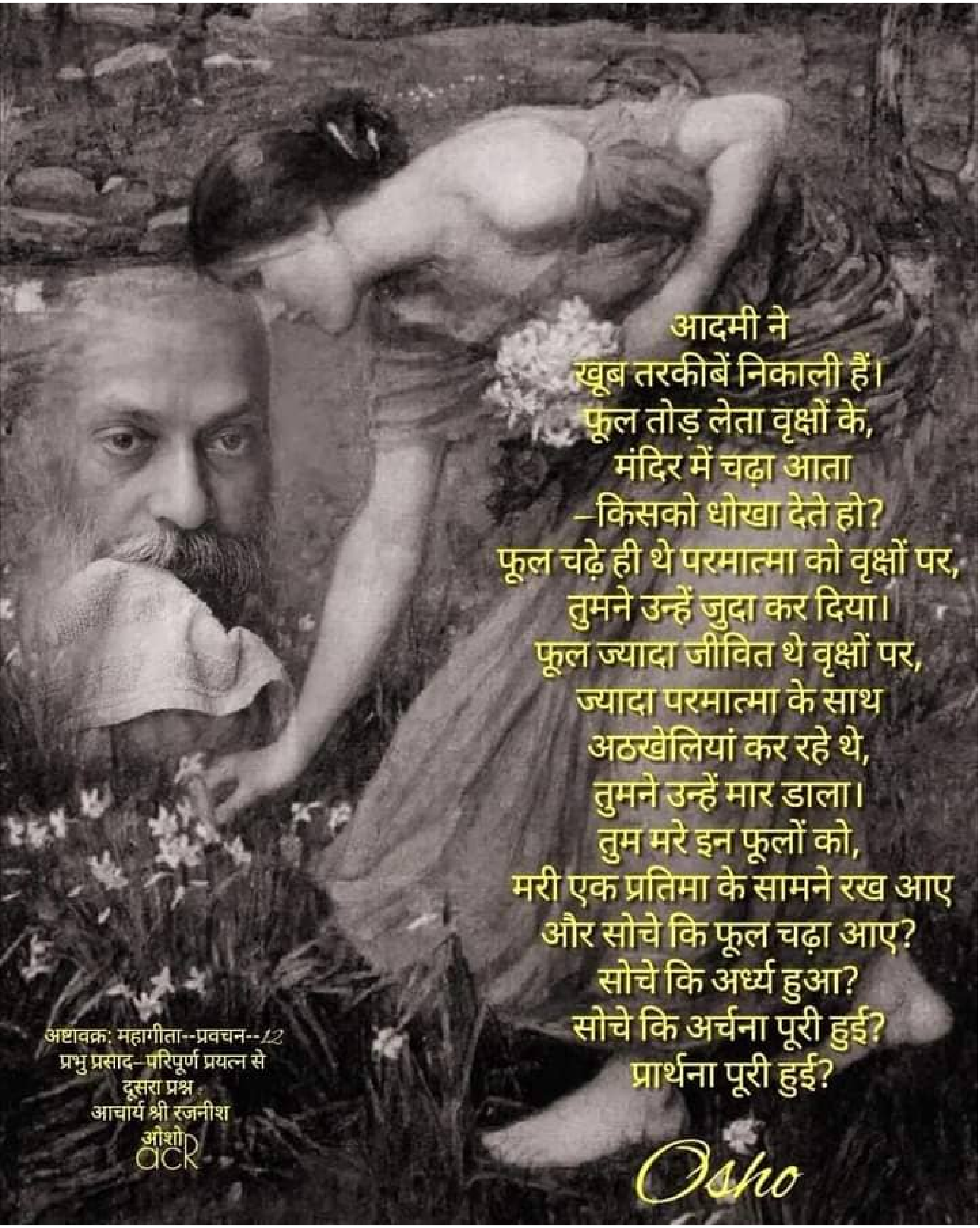
आदमी ने
खूब तरकीबें निकाली हैं।
फूल तोड़ लेता वृक्षों के,
मंदिर में चढ़ा आता
–किसको धोखा देते हो?
फूल चढ़े ही थे परमात्मा को वृक्षों पर,
तुमने उन्हें जुदा कर दिया।
फूल ज्यादा जीवित थे वृक्षों पर,
ज्यादा परमात्मा के साथ
अठखेलियां कर रहे थे,
तुमने उन्हें मार डाला।
तुम मरे इन फूलों को,
मरी एक प्रतिमा के सामने रख आए
और सोचे कि फूल चढ़ा आए?
सोचे कि अर्घ्य हुआ?
सोचे कि अर्चना पूरी हुई?
प्रार्थना पूरी हुई?
अष्टावक्र: महागीता--प्रवचन--12
प्रभु प्रसाद-- परिपूर्ण प्रयत्न से
दूसरा प्रश्न
आचार्य श्री रजनीश
ओशो
Osho

CamScanner

मंदिर ध्यान करने केलिए बने थे
किहम एकांत में जाके भगवान
का भजन करें लेकिन पाखंडियों
ने उन्हें पैसा कमाने का अड्डा
बना के रख दिया..

You and 176 others

11 comments

Like Comment Share

CamScanner

CamScanner

9:13 pm 203 KB/s 41%

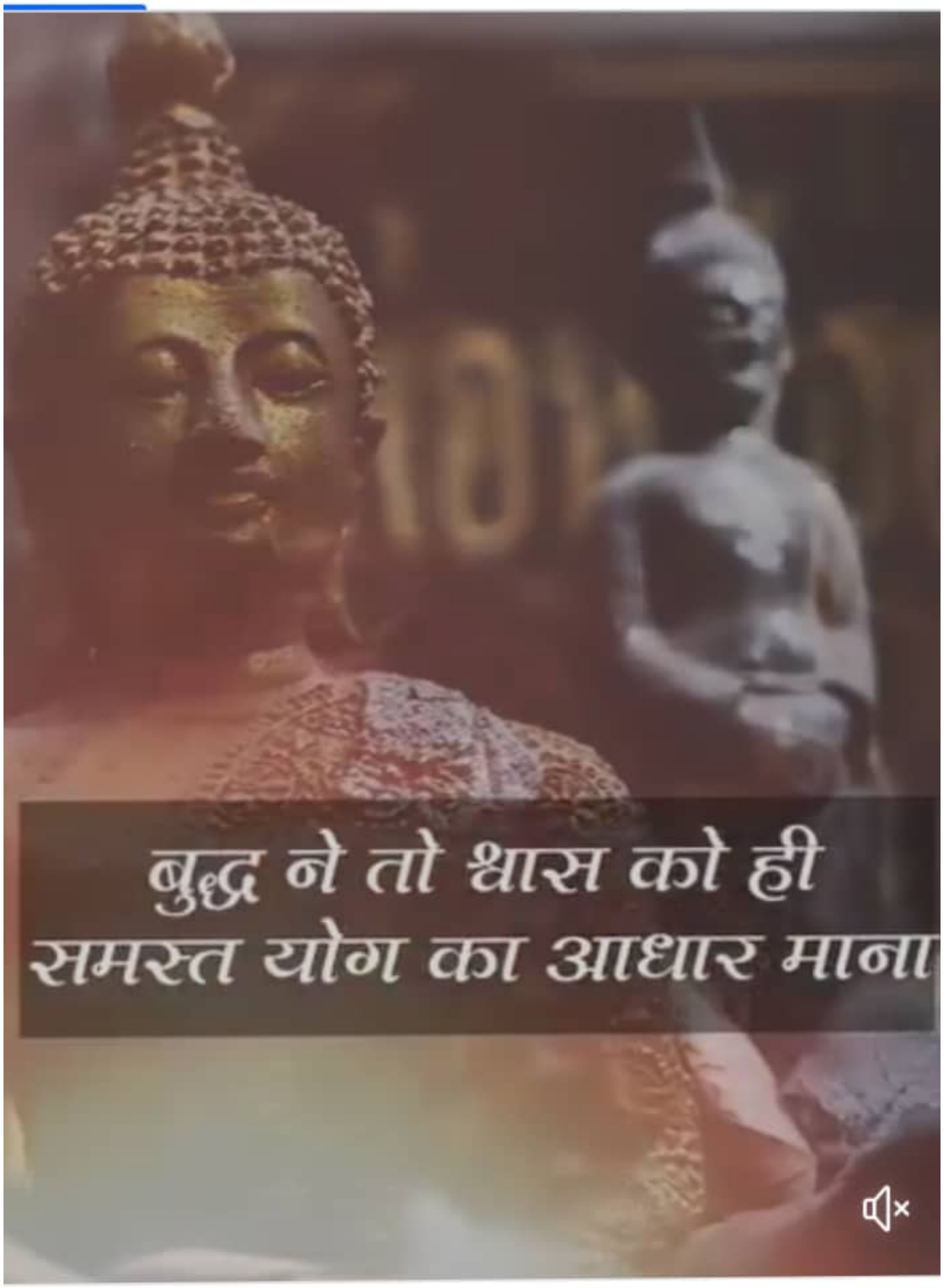

9 1 comment • 1 share • 74 views

Like Comment Share

Sri Mandir
Sponsored ·

माँ कामाख्या को प्रबल शक्तिशाली नारी ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है को और माँ को इच्छाओं को पूरा करने वाली देवी के रूप में जाना जाता है। 22 अक्टूबर 2023, रविवार, नवरात्रि की महा अष्टम... See more

CamScanner

Start trading at simplified pricing

25K 1.4K comments • 127 shares

Like Comment Share

Naye bharat ke khoj

9 Oct ·

क्या करोगे परमात्मा से?
न तो पेट भरेगा, न प्यास बुझेगी।
करोगे क्या परमात्मा का? कौन—से लोभ की तृप्ति होगी?
कौन—सी वासना भरेगी? कौन—सी तृष्णा पूरी होगी?
परमात्मा का कोई उपयोग नहीं।
परमात्मा के कारण तुम महत्वपूर्ण न हो जाओगे।
परमात्मा के कारण तुम शक्तिशाली न हो जाओगे।
परमात्मा के कारण इस संसार में तुम्हारी प्रतिष्ठा न बढ़ जायेगी।
परमात्मा का कोई भी तो उपयोग नहीं है।
इसलिए तो जो लोग उपयोग के दीवाने हैं,
वे परमात्मा की तरफ नहीं जाते। परमात्मा का आनंद है, उपयोग बिलकुल नहीं।

🙏🙏🌹🌹🙏🙏

CamScanner

9:12 pm 178 KB/s 41%

See translation

3 1 share • 8 views

Like Comment Share

Osho janaki dhyan kendra
14 Oct ·

न करना ज्यादा कठिन है। मन तो करने में रस लेता है। मन तो कृत्य को

CamScanner

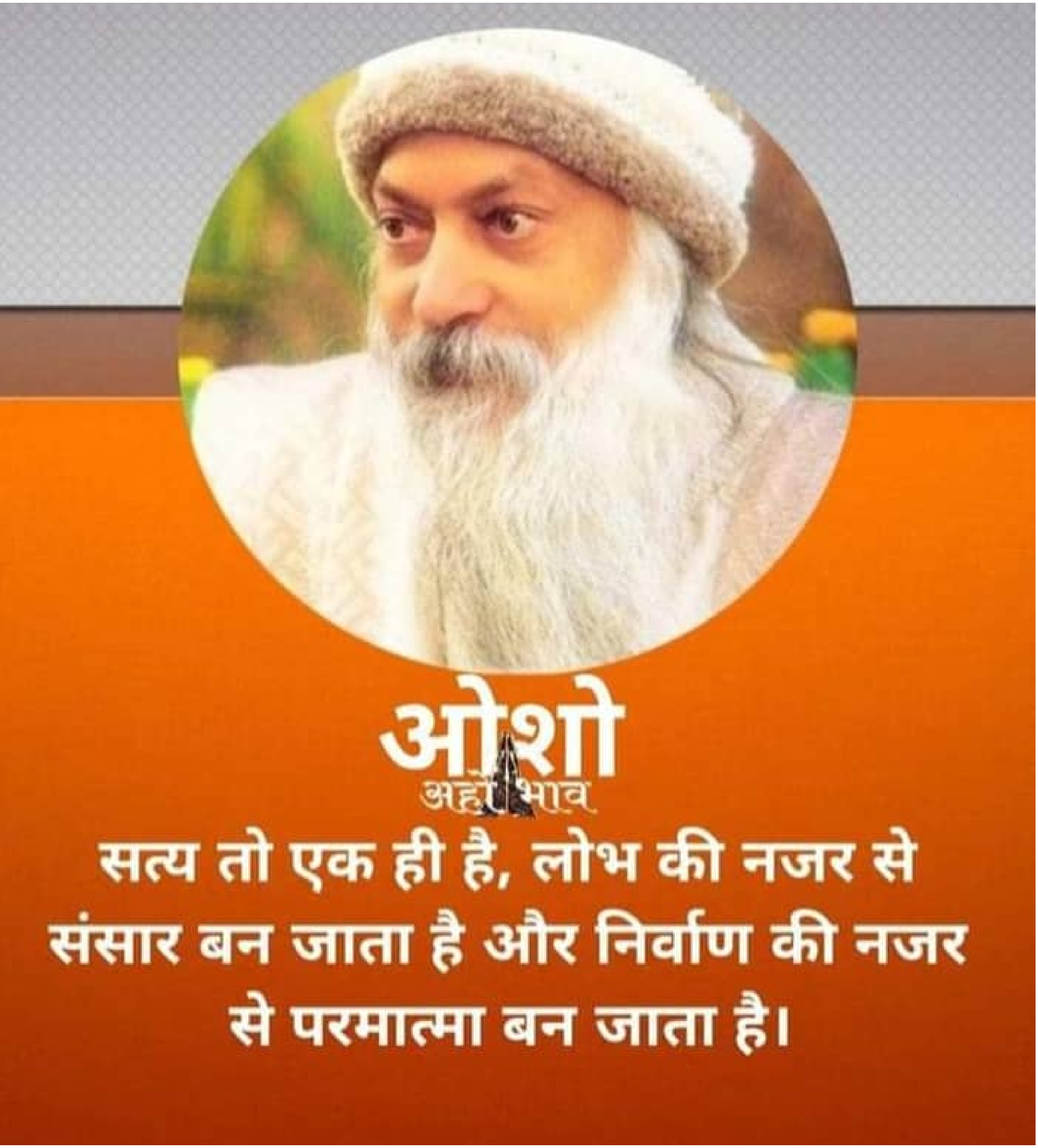
ओशो
अहोभाव
सत्य तो एक ही है, लोभ की नजर से
संसार बन जाता है और निर्वाण की नजर
से परमात्मा बन जाता है।

CamScanner

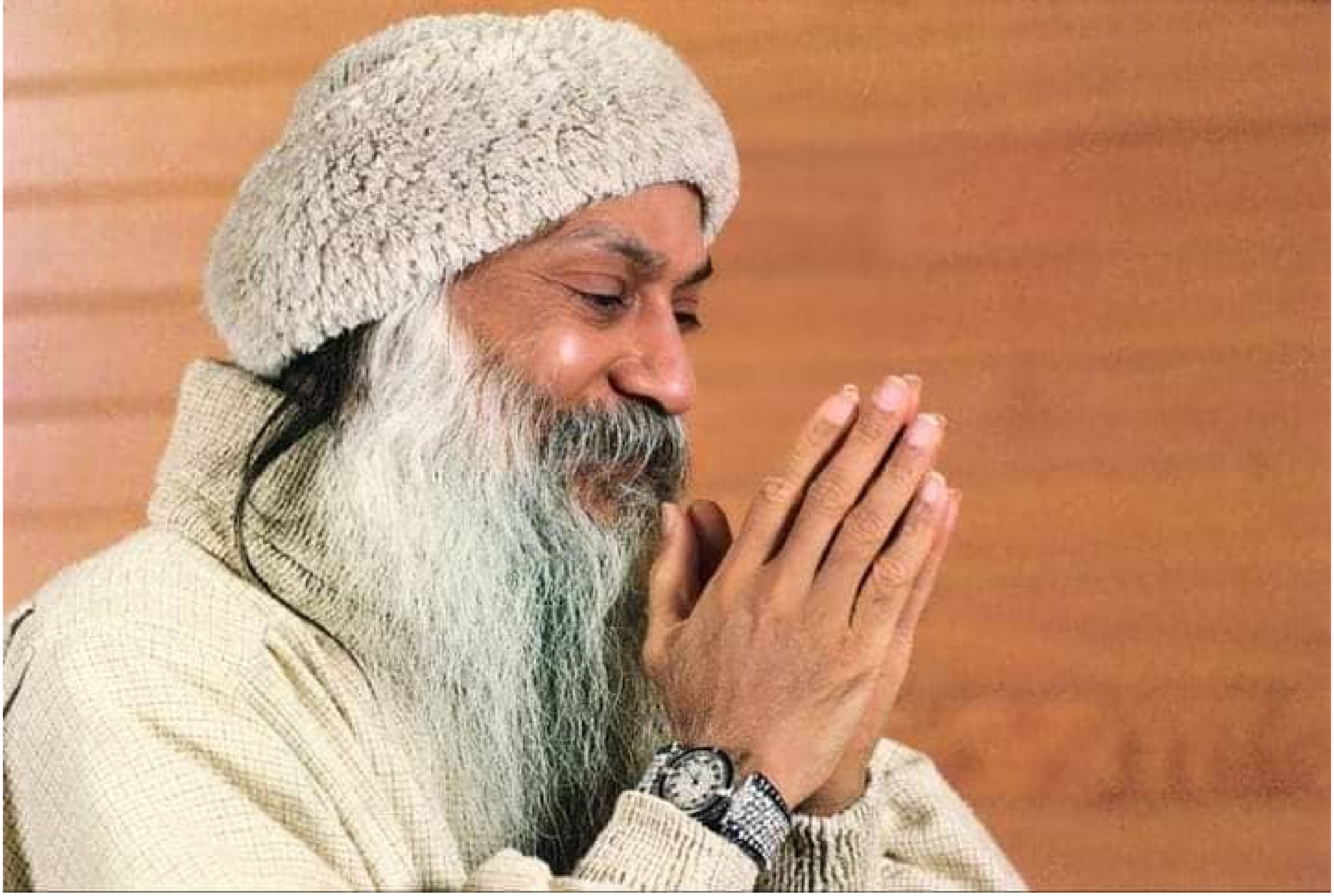

CamScanner

Osho janakı dhyan kendra
2d ·

तुम्हें रंगा है ज्योति के इस रंग में, तुम्हें रंग रहा हूं समाधि के इस ढंग में, ताकि जो मैंने जाना है, तुम जान सको; ताकि जो मेरा अनुभव हुआ है, वह तुम्हारा अनुभव भी हो सके; ताकि विराट जो मेरी आंखों ने देखा है, वह तुम भी देख सको।

पहले तुम्हें निमंत्रण दे रहा हूं कि जरा मेरी आंख से देखो, जरा मेरी खिड़की से झांको आकाश को। एक बार मेरी आंख से झांक लोगे, मेरी खिड़की से देख लोगे, तो फिर मेरी खिड़की की जरूरत न रह जाएगी। तुम अपने ही हृदय की खिड़की खोल लोगे। तुम अपनी ही आंख खोल लोगे।

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -6 "

CamScanner

9:09 pm 0 KB/s VoLTE 4G 41%

2h ·

गुरजिएफ ने अपने शिष्यों को कहा है—कुछ सूत्र दिये हैं, उनमें एक सूत्र यह भी है कि *जो गैरजरूरी हो, वह मत करना।* ऑस्पेंस्की गुरजिएफ से पूछने लगा कि जो गैरजरूरी है, वह हम करेंगे ही क्यों! यह सूत्र आप क्यों देते हैं? इसको इतना मूल्य क्यों देते हैं...?

गुरजिएफ ने कहा कि मैं लोगों को देखता हूं, सौ में निन्यानबे गैरजरूरी बातें लोग कर रहे हैं। *उन्हीं में जीवन व्यतीत हो रहा है उनका।* जरूरी बातें तो बहुत थोड़ी हैं, गैरजरूरी बातें बहुत हैं।

तुम जरा खयाल करना। चौबीस घंटे तुम जितनी बातें बोलते हो, उसमें विचार करना कितनी जरूरी थीं? कितनी न बोलते तो चल जाता?

सच तो यह है कि अगर तुम बहुत गौर से देखोगे तो बड़ी थोड़ी—सी बातें रह जाएंगी जो जरूरी

थीं। तुम्हारी वाणी टेलीग्रैफिक हो जाएगी। चुन—चुनकर। और तुम्हारी वाणी का मूल्य भी बढ़ जाएगा। तुम्हारी वाणी में वजन भी आ जाएगा! तुम्हारी वाणी में एक चमक आ जाएगी। धार आ जाएगी। क्योंकि जो थोड़े —से शब्द तुम बोलोगे, उनमें विचार होगा, विवेक होगा, ध्यान होगा, प्रेम होगा अनिवार्यता होगी। और एक चमत्कार तुम पाओगे कि जो गैरजरूरी बातें तुम बोल रहे थे, उनके कारण हजार झंझटें पैदा हो रही थीं। *वह हजार झंझटों से तुम बच जाओगे।* जो गैरजरूरी बातें तुम बोल देते थे, उनके कारण हजार काम भी तुम्हें करने पड़ते थे। बोलकर ही थोड़े छुटकारा है। *बोले कि फंसे।* वह हजार काम से भी तुम बच गये।

तुम्हारे जीवन में एक शांति प्रविष्ट होने लगेगी, एक प्रसाद उतरने लगेगा। *तुम सौम्य हो जाओगे।* वहीं शोभा है जहां सौम्यता है, जहां प्रसाद है; *जहां संतुलन का संगीत है,* जहां सौंदर्य है। अब तुम मुझसे पूछो तो मैं इसी को सौंदर्य कहता हूं, संतुलन को।

ओशो

CS CamScanner

7:10 pm 0 KB/s   57%

Google

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार

All   Videos   Images   News   Maps   Shopping

हिंदी में खोजें   काम क्रोध लोभ मोह अहंकार

इसे सुनें

पांच तरह के विकार होते हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार। आत्मा के सात गुण हैं - पवित्रता, शांति, शक्ति, प्यार, खुशी, ज्ञान और गंभीरता। एक तरफ पांच विकार हैं तो दूसरी तरफ सात गुण हैं। जितना हम इन पांच विकारों को इस्तेमाल कर रहे हैं, उतना ही इस सृष्टि में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के वाइब्रेशन बढ़ते जा रहे हैं।

https://www.bhaskar.com › news

जीवन को पांच विकारों से दूर कर, सात गुणों की ओर लेकर जाएं - Bhaskar

About featured snippets   Feedback

People also ask

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार क्या है?

काम क्रोध और लोभ क्या है?

लोभ और मोह में क्या अंतर है?

CamScanner

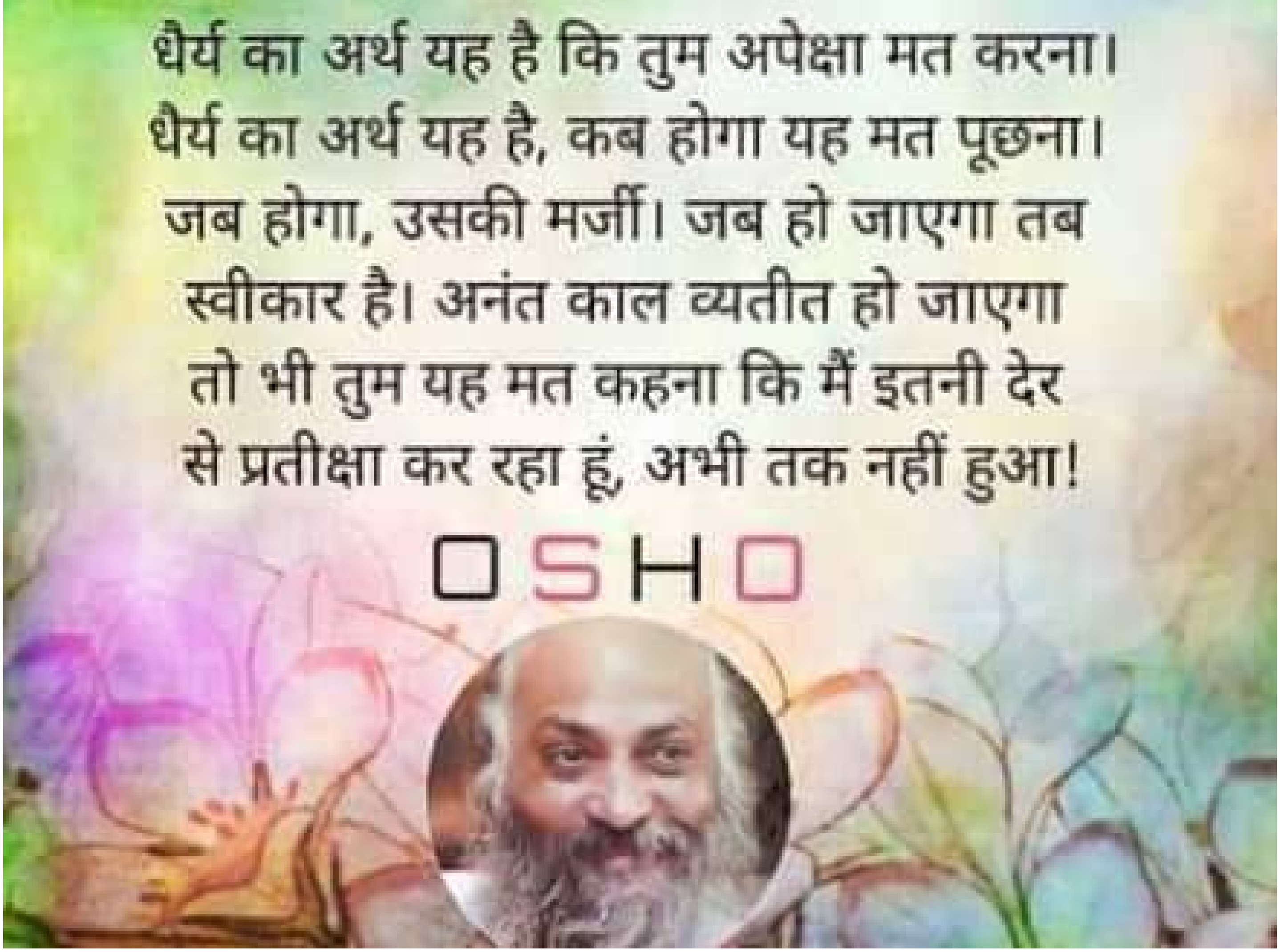
धैर्य का अर्थ यह है कि तुम अपेक्षा मत करना।
धैर्य का अर्थ यह है, कब होगा यह मत पूछना।
जब होगा, उसकी मर्जी। जब हो जाएगा तब
स्वीकार है। अनंत काल व्यतीत हो जाएगा
तो भी तुम यह मत कहना कि मैं इतनी देर
से प्रतीक्षा कर रहा हूं, अभी तक नहीं हुआ!
OSHO

CamScanner

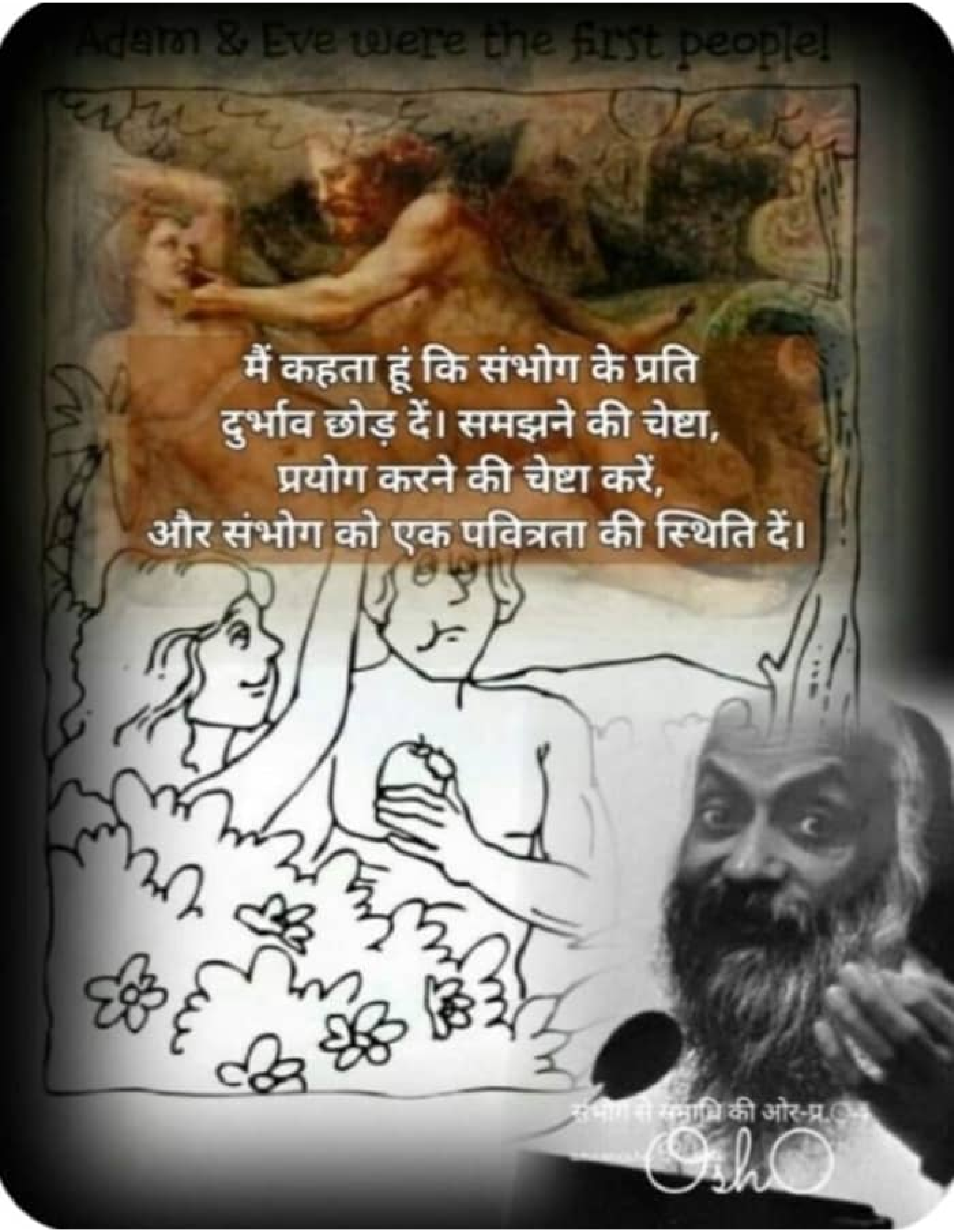
Adam & Eve were the first people!
मैं कहता हूं कि संभोग के प्रति
दुर्भाव छोड़ दें। समझने की चेष्टा,
प्रयोग करने की चेष्टा करें,
और संभोग को एक पवित्रता की स्थिति दें।
Osho

CamScanner

care
जिस पुरुष के राज़ में स्त्री दुखी है उस
पुरुष के घर में कभी ख़ुशी नहीं आ सकती।
जो स्त्री को नहीं समझ सकता वो वेद और
उपनिषद भी नहीं समझ सकता । ईश्वर का
सब से सुन्दर शास्त्र नारी है जिस ने उसे पढ़
लिया,समझ लिया,उसे फिर किसी शास्त्र की
जरूरत नहीं है। क्यों की नारी भावना और
प्रेम भाव दोनों से भरी है...!!!!

CamScanner

Osho janakı dhyan kendra
2h ·

मैं संन्यास देता हूं तो उसका अर्थ ही यही है कि तब मैं तुम्हारा पीछा करूंगा। छाया की तरह तुम्हारा साक्षी रहूंगा।
………………………………………………

मेरे प्रत्येक संन्यासी को न केवल खुद डूबना है, बल्कि एक दिन अपनी मस्ती के कारण और अनेकों को निमंत्रण भी दे आना है। उसकी मस्ती निमंत्रण दे आएगी।

यह दुनिया एक नये मनुष्य की प्रतीक्षा कर रही है। तुम सौभाग्यशाली हो, क्योंकि तुम्हारे हाथ में एक ऐसा अवसर है जो कभी-कभी मनुष्य-जाति के हाथ में होता है। हर पच्चीस सौ साल में सिर्फ एक बार ऐसा अवसर मनुष्य-जाति के हाथ में होता है, जब मनुष्यता एक नया कदम लेती है, एक नया सोपान चढ़ती है। वे पच्चीस सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। जो सौभाग्य बुद्ध के समय के लोगों का था, जो बुद्ध के संघ में बैठ कर लोगों ने आनंद अनुभव किया था, वैसे आनंद-अनुभव की तुम्हारी भी अनायास क्षमता है। अनअर्जित तुम्हारा सौभाग्य है।

बुद्ध के पास बैठे थे जो, उन्हें भी पता नहीं था कि वे किस महाक्रांति में सम्मिलित हो रहे हैं। तुम्हें भी ठीक-ठीक पता नहीं है। जागोगे तो धीरे-धीरे पता चलेगा कि तुम सिर्फ किसी पिटी-पिटाई परंपरा के हिस्से नहीं हो। न तुम हिंदू हो, न मुसलमान, न ईसाई। तुम्हारा अतीत से कोई संबंध नहीं है।

तुम तो एक भविष्य के उदघोषक हो। एक नये मनुष्य के। एक नई धार्मिकता के। डूबोगे तो औरों को भी डुबा सकोगे।

ओशो..."प्रेम पंथ ऐसो कठिन -7 "

CamScanner

CamScanner

11:56 am 0 KB/s 4G 95%

नारद कहते हैं राजन मैं तुझे तेरे पुत्र के दर्शन करवाता हूँ ।

सारी विधि विधान तोड के तो देवर्षि उसके मरे हुए पुत्र को ले कर आए हैं । शुभ्र श्वेत कपड़ों में लिपटा हुआ है। राजा के सामने आ कर खडा हो गया। देवर्षि कहते हैं क्या देख रहे हो। तुम्हारे पिता हैं प्रणाम करो। पुत्र / आत्मा पहचानने से इन्कार कर रहा है। कौन पिता किसका पिता? देवर्षि क्या कह रहे हो आप ? न जाने मेरे कितने जन्म हो चुके हैं । कितने पिता ! मैं नहीं पहचानता यह कौन है! किस किस के पहचानूँ ? मेरे आज तक कितने माई बाप हो चुके हुए हैं । किसको किसकी पहचान रहती है? मैं इस समय विशुद्ध आत्मा हूँ । मेरा माई बाप कोई नहीं । मेरा माई बाप परमात्मा है। तो शरीर के सम्बंध टूट गए । कितनी लाख योनियाँ आदमी भुगत चुका है, उतने ही माँ बाप । कभी चिड़िया में मा बाप , कभी कौआ में मा बाप , कभी हिरण में कभी पेड़ पौधों में इत्यादि इत्यादि ।

सुन लिया राजन । यह अपने आप बोल रहा है। जिसके लिए मैं रो रहा हूँ , जिसके लिए मैं बिलख रहा हूँ वह मुझे पहचानने से इंकार कर रहा है। जो पहला आघात था, उससे बाहर निकला। जिस शोक सागर में पहले डूबा हुआ था तो परमात्मा ने उसे दूसरे शोक सागर में डाल कर पहले से बाहर निकाला । समझा कि पुत्र मोह केवल मन का भ्रम है। सत्य सनातन तो केवल परमात्मा है।

संत महात्मा कहते हैं जो माता पिता अपने पुत्र को पुत्री को इस जन्म में सुसंस्कारी नहीं बनाते, उन्हें मानव जन्म का महत्व नहीं समझाते, उनको संसारी बना कर उनके शत्रु समान व्यवहार करते हैं, तो अगले जन्म में उनके बच्चे शत्रु व वैरी पुत्र पैदा होते हैं उनके घर । अत: संतान का सुख भी अपने ही कर्मों के अनुसार मिलता है, ज़बरदस्ती मन्नत इत्यादि से नही और मिल भी जाये तो कब तक रहे इसका कोई भरोसा नहीं।

3

Like Comment Share

Suggested pages

CamScanner

11:55 am 0 KB/s VoLTE 4G 95%

लिया है पुत्र को लेकिन आज उन्हें ही उलाहना दे रहा है।

देवर्षि नारद राजा को समझाते हैं कि पुत्र चार प्रकार के होते हैं । पिछले जन्म का वैरी, अपना वैर चुकाने के लिए पैदा होता है, उसे शत्रु पुत्र कहा जाता है। पिछले जन्म का ऋण दाता। अपना ऋण वसूल करने आया है। हिसाब किताब पूरा होता है , जीवनभर का दुख दे कर चला जाता है। यह दूसरी तरह का पुत्र। तीसरे तरह के पुत्र उदासीन पुत्र । विवाह से पहले माँ बाप के । विवाह होते ही माँ बाप से अलग हो जाते हैं । अब मेरी और आपकी निभ नहीं सकती। पशुवत पुत्र बन जाते हैं। चौथे प्रकार के पुत्र सेवक पुत्र होते हैं। माता पिता में परमात्मा को देखने वाले, सेवक पुत्र। सेवा करने वाले। उनके लिए , माता पिता की सेवा, परमात्मा की सेवा। माता पिता की सेवा हर एक की क़िस्मत में नहीं है। कोई कोई भाग्यवान है जिसको यह सेवा मिलती है। उसकी साधना की यात्रा बहुत तेज गति से आगे चलती है। घर बैठे भगवान की उपासना करता है।

राजन तेरा पुत्र शत्रु पुत्र था । शत्रुता निभाने आया था, चला गया। यह महर्षि अंगीरा इसी को टाल रहे थे। पर तू न माना । समझाने के बावजूद भी राजा रोए जा रहा है। माने शोक से बाहर नहीं निकल पा रहा। देवर्षि नारद कहते हैं राजन मैं तुझे तेरे पुत्र के दर्शन करवाता हूँ ।

सारी विधि विधान तोड के तो देवर्षि उसके मरे हुए पुत्र को ले कर आए हैं । शुभ्र श्वेत कपड़ों में लिपटा हुआ है। राजा के सामने आ कर खडा हो गया। देवर्षि कहते हैं क्या देख रहे हो। तुम्हारे पिता हैं प्रणाम करो। पुत्र / आत्मा पहचानने से इन्कार कर रहा है। कौन पिता किसका पिता? देवर्षि क्या कह रहे हो आप ? न जाने मेरे कितने जन्म हो चुके हैं । कितने पिता ! मैं नहीं पहचानता यह कौन है! किस किस के पहचानूँ ? मेरे आज तक कितने माई बाप हो चुके हुए हैं । किसको किसकी पहचान रहती है? मैं इस समय विशुद्ध आत्मा हूँ । मेरा माई बाप कोई नहीं । मेरा माई बाप परमात्मा है। तो शरीर के सम्बंध टूट गए । कितनी लाख योनियाँ आदमी भुगत चुका है, उतने ही माँ बाप । कभी चिड़िया में मा बाप , कभी कौआ में मा बाप , कभी हिरण में कभी पेड़ पौधों में इत्यादि इत्यादि ।

CamScanner

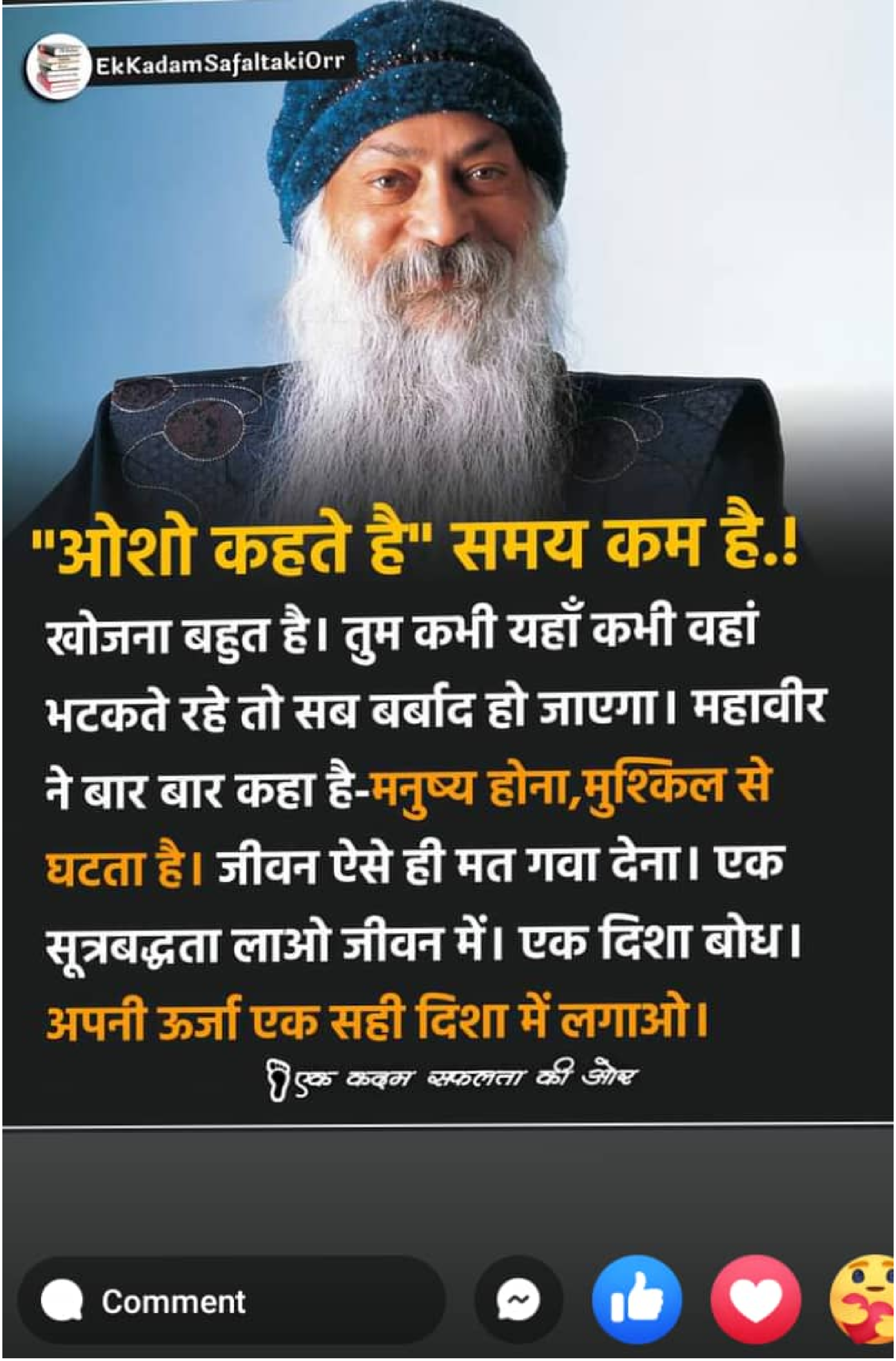

EkKadamSafaltakiOrr
"ओशो कहते है" समय कम है.!
खोजना बहुत है। तुम कभी यहाँ कभी वहां भटकते रहे तो सब बर्बाद हो जाएगा। महावीर ने बार बार कहा है-मनुष्य होना,मुश्किल से घटता है। जीवन ऐसे ही मत गवा देना। एक सूत्रबद्धता लाओ जीवन में। एक दिशा बोध। अपनी ऊर्जा एक सही दिशा में लगाओ।
एक कदम सफलता की ओर
Comment

CamScanner

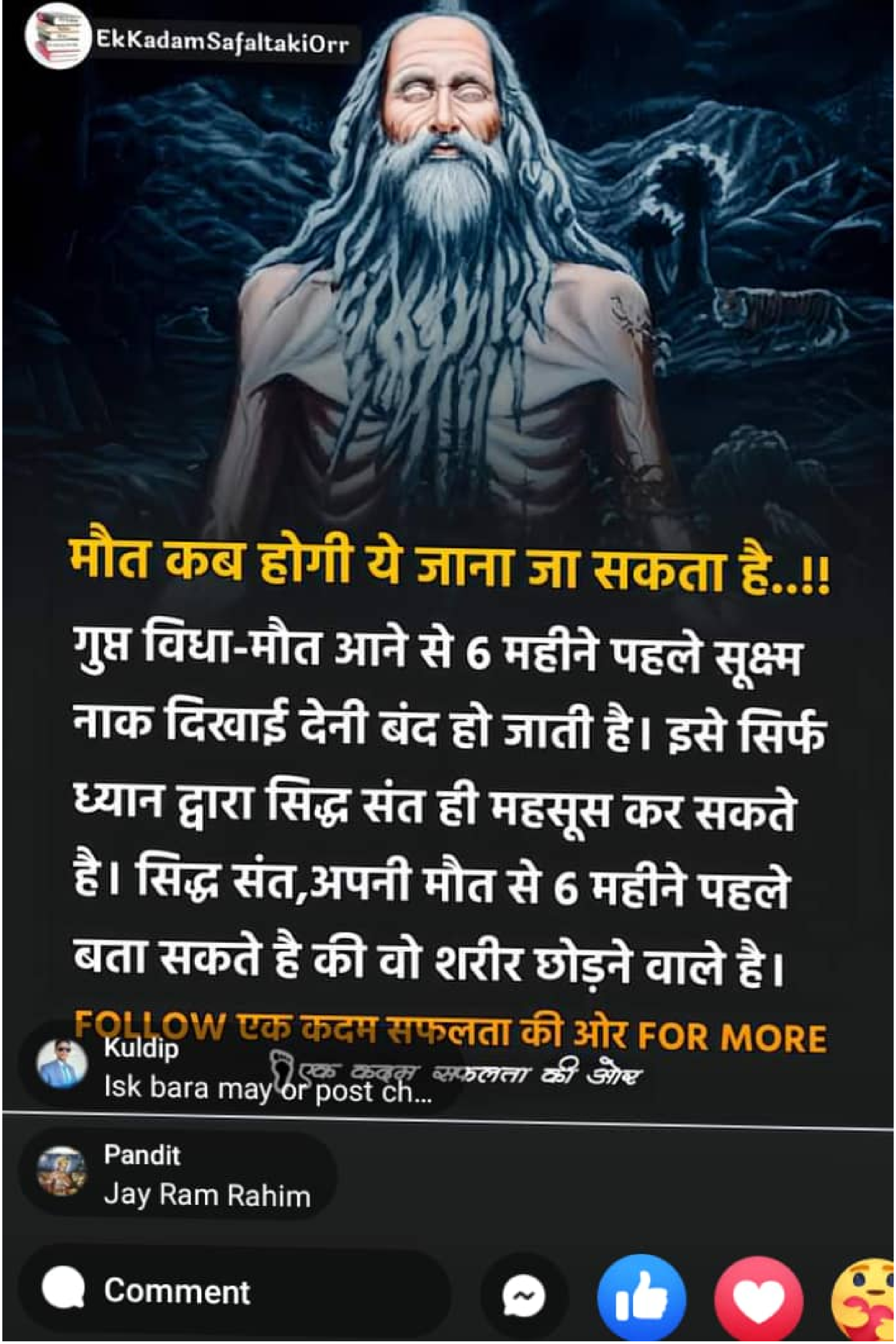
EkKadamSafaltakiOrr
मौत कब होगी ये जाना जा सकता है..!!
गुप्त विधा-मौत आने से 6 महीने पहले सूक्ष्म
नाक दिखाई देनी बंद हो जाती है। इसे सिर्फ
ध्यान द्वारा सिद्ध संत ही महसूस कर सकते
है। सिद्ध संत,अपनी मौत से 6 महीने पहले
बता सकते है की वो शरीर छोड़ने वाले है।
FOLLOW एक कदम सफलता की ओर FOR MORE
Kuldip
Isk bara may or post ch...
एक कदम सफलता की ओर
Pandit
Jay Ram Rahim
Comment

CamScanner

Anil Osho

जड़ !
जैसे किसी वृक्ष की जड़ें
जमीन में होती है !
अगर जड़ें कमजोर हो तो
वृक्ष भी जल्द ही कमजोर
हो जाता है , भिखर जाता है,
और गिर जाता है !
वैसे ही मनुष्य की जड़ें भी भीतर
मन में होती है !
अगर मन कमजोर हो तो , उसका असर
शरीर पे पड़ता है , शरीर भिखर जाता है ,
अस्वस्थ हो जाता है और गिरने लगता है !
अगर आपको शरीर को स्वस्थ रखना है ,
तो आपको पहले अपने मन को स्वस्थ
रखना होगा !
(Osho)

CamScanner

समस्याओं के होने
की कोई जरूरत नहीं
है। हम एक हाथ से
समस्याएं पैदा करते
हैं और दूसरे हाथ से
समस्याओं को हल करने
की कोशिश करते हैं
और दोनों हमारे हाथ हैं।
ओशो

CamScanner

मैं सर के बल गिरा था गुनाहों के बोझ से,
दुनिया समझ रही थी कि सजदे मे पड़ा है......
सजदे मे जब गया तो लोगों ने ये कहा,
जालिम ने इतनी पी है क़ि मदहोश पड़ा है.....

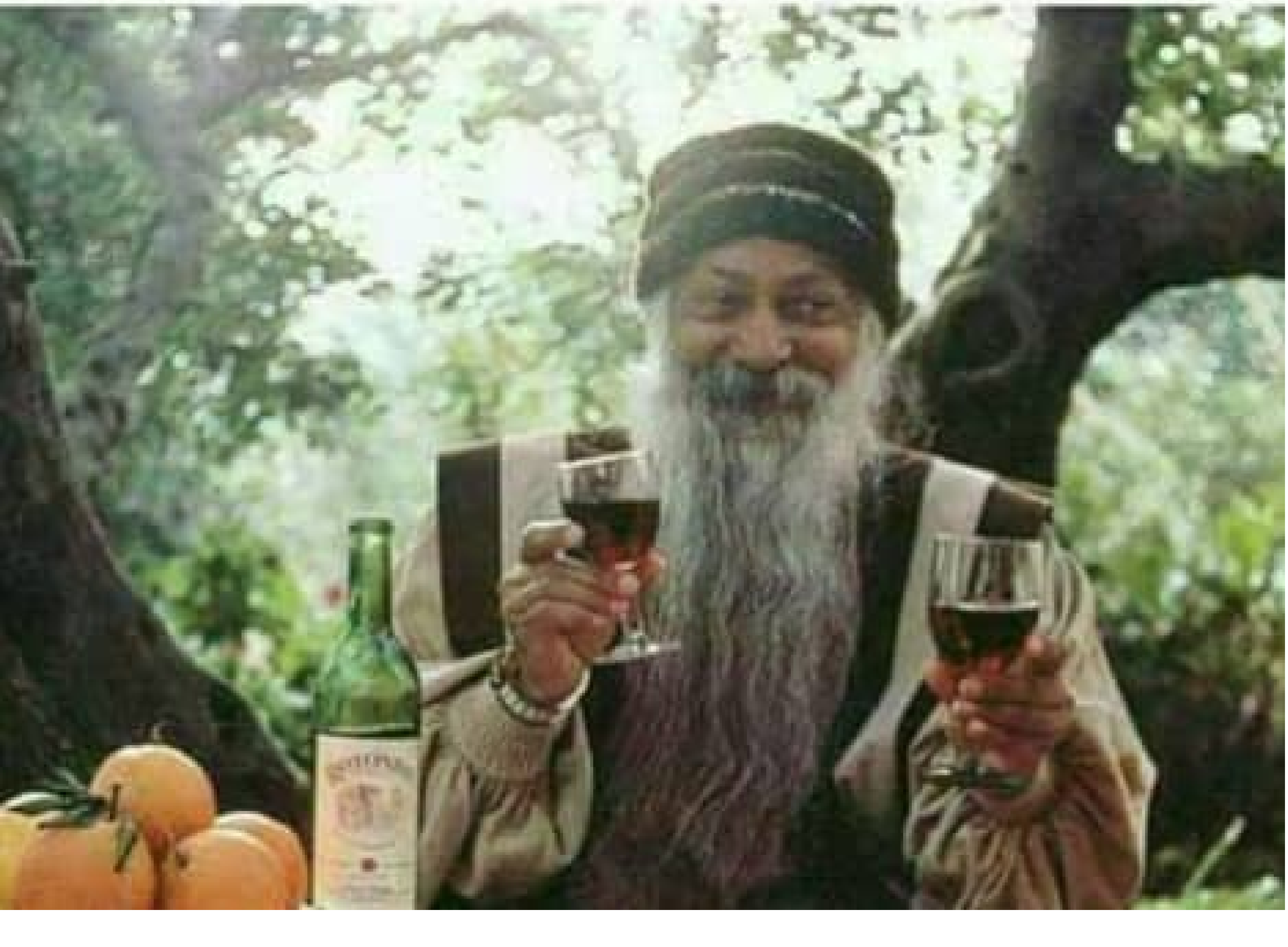

CamScanner

4:44 pm 0 KB/s VoLTE 4G 75%
facebook
6

जाकर दरवाजा ठोंका और कहा, भई,तीन दिन हो गए, अगर बन गया हो तो बाहर आओ। उसने कहा, पांच मिनट और। चीज तैयार हुई जा रही है। फिर आखिरी चोटें हुईं। सारी भीड़ इकट्ठी हो गई है। कोई किसी से नहीं कह रहा है कि ऊगल-गूगल क्या है? सब जानना चाहते हैं, क्या है? किसी को पता नहीं है।

फिर दरवाजा खुला, वह आदमी बाहर निकला। सब उसकी तरफ देखने लगे। कैप्टेन ने पूछा,कहां है ऊगल-गूगल? उसने अपने पीठ के पीछे से एक चीज निकाली, जैसे कोई टीन के डिब्बे को सब तरफ से पीटा गया हो, इस तरह की शक्ल थी उसकी। उसने कहा, यह ऊगल-गूगल है। अब सब बड़े हैरान हुए! उन्होंने कहा, इसका उपयोग क्या है? यह किस काम में आता है?उसने कहा, आइए मेरे साथ। वह जाकर जहाज के किनारे ले गया और उसने अपने ऊगल-गूगल को पानी में फेंका। जब वह डब्बा पानी में डूबने लगा, तो उससे आवाज निकली--ऊगल-गूगल! यह ऊगल-गूगल था!

लेकिन एक भी आदमी उस जहाज पर यह नहीं कह सका, यह क्या बेवकूफी है? किस चीज का नाम है? क्योंकि हमारे भीतर यह अहंकार बड़ा प्रबल है कि हम जानते हैं।

एक आदमी ईश्वर के बाबत बातें करता रहता है,आत्मा के बाबत, पुनर्जन्म के बाबत। मृत्यु के बाद--मोक्ष, नरक और स्वर्ग। और लोग बैठे सुनते रहते हैं, जैसे कि वह आदमी किन्हीं चीजों की बात कर रहा हो, जिनको जानता है। सुनने वाले भी ऐसे सुनते हैं कि हम भी जानते हैं। बोलने वाला भी शब्द जानता है, सुनने वाले भी शब्द जानते हैं। उनके शब्द मेल खाते हैं,परिचित मालूम होते हैं। वे दोनों राजी मालूम होते हैं कि बिलकुल ठीक है, बिलकुल ठीक है। बिलकुल ठीक है, यह बात बिलकुल सही कही जा रही है।

दुनिया में एक गहरा डिसेप्शन, एक प्रवंचना,एक धोखा चल रहा है शब्दों के नाम पर--ज्ञान का। परंपरा से कोई ज्ञान उपलब्ध नहीं होता,केवल शब्द उपलब्ध होते हैं। और शब्दों को हम ज्ञान समझ कर बैठ जाते हैं।

CS CamScanner

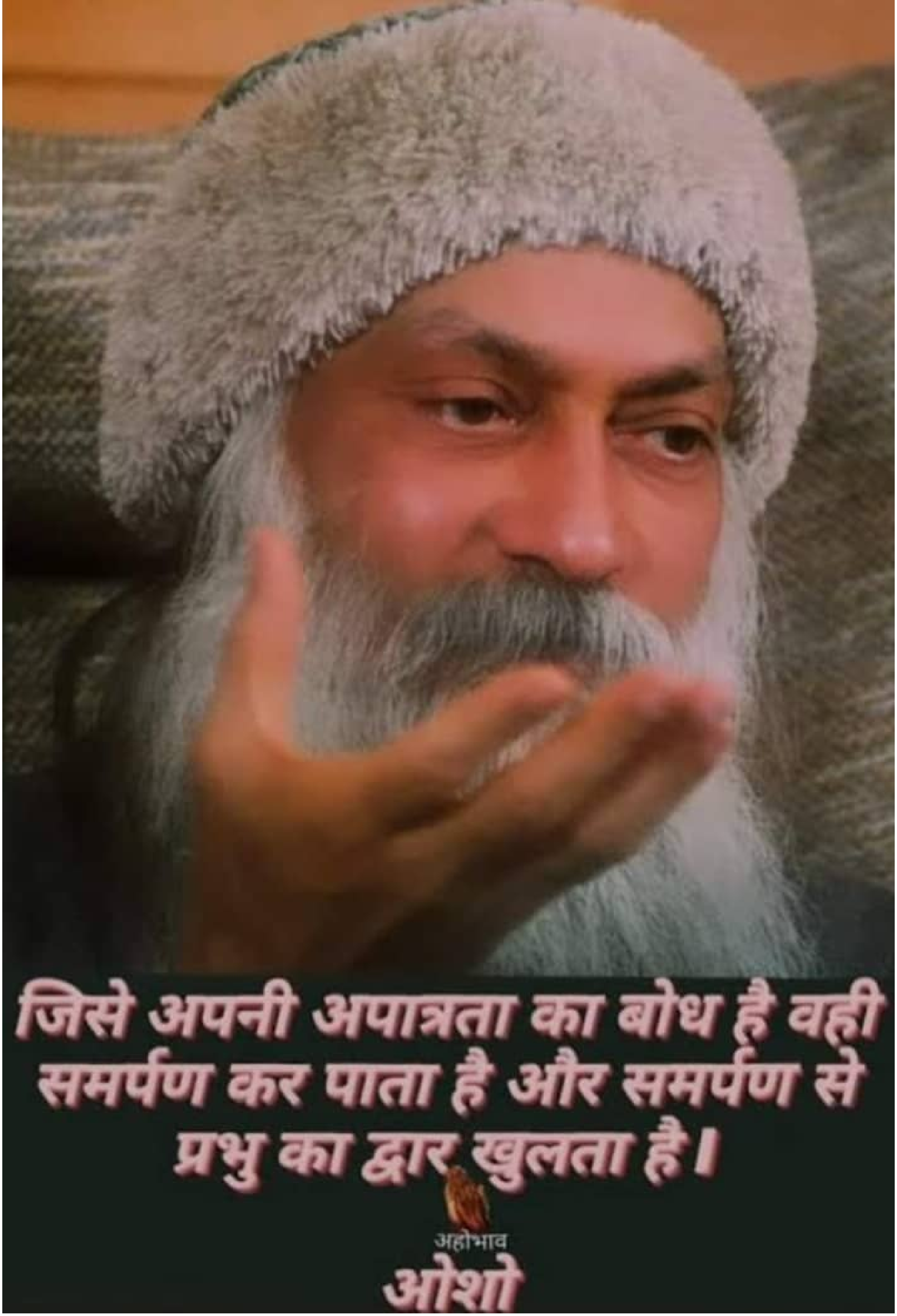
जिसे अपनी अपात्रता का बोध है वही
समर्पण कर पाता है और समर्पण से
प्रभु का द्वार खुलता है।
अहोभाव
ओशो

CamScanner

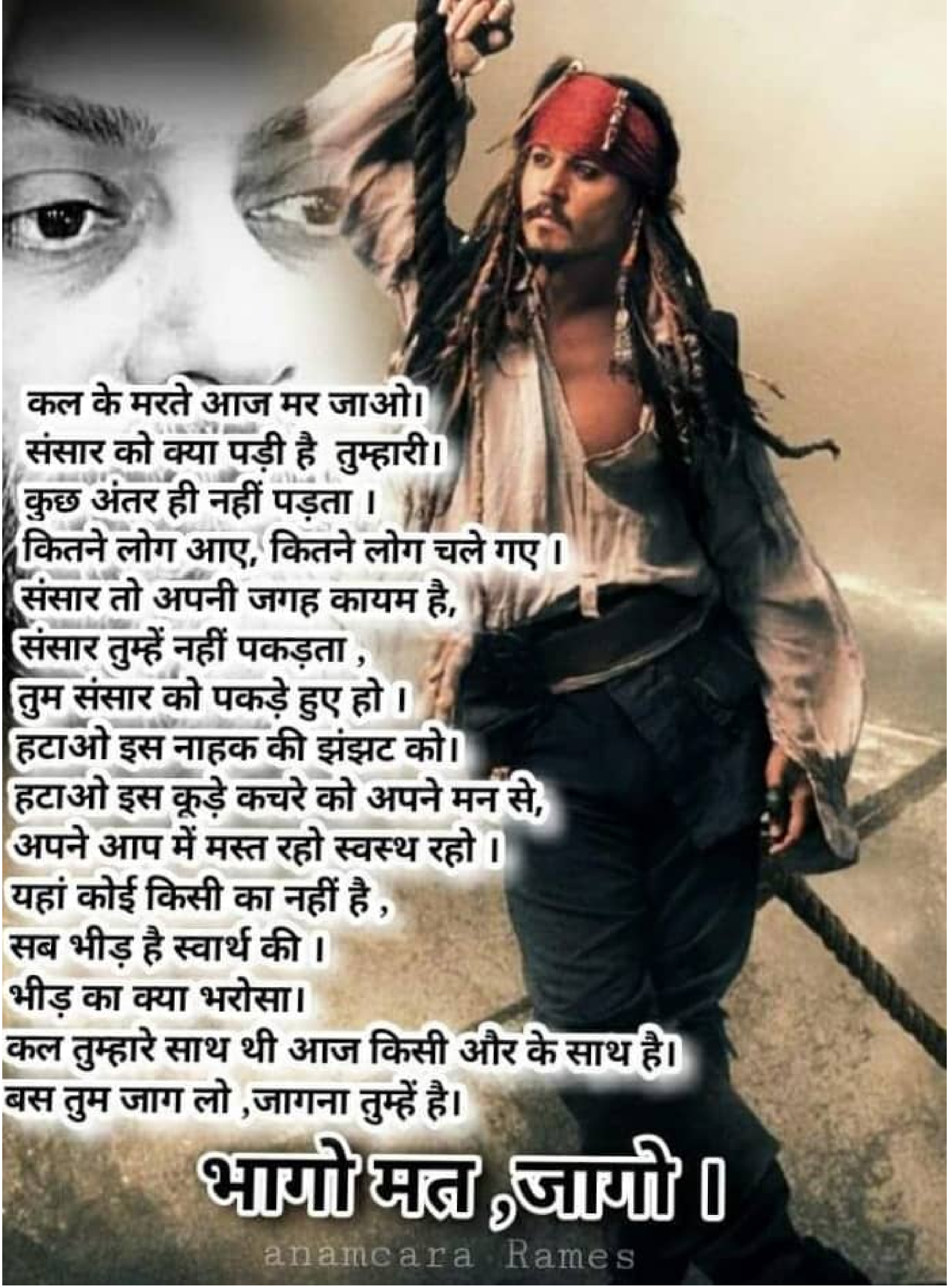
कल के मरते आज मर जाओ।
संसार को क्या पड़ी है तुम्हारी।
कुछ अंतर ही नहीं पड़ता ।
कितने लोग आए, कितने लोग चले गए ।
संसार तो अपनी जगह कायम है,
संसार तुम्हें नहीं पकड़ता ,
तुम संसार को पकड़े हुए हो ।
हटाओ इस नाहक की झंझट को।
हटाओ इस कूड़े कचरे को अपने मन से,
अपने आप में मस्त रहो स्वस्थ रहो ।
यहां कोई किसी का नहीं है ,
सब भीड़ है स्वार्थ की ।
भीड़ का क्या भरोसा।
कल तुम्हारे साथ थी आज किसी और के साथ है।
बस तुम जाग लो ,जागना तुम्हें है।
भागो मत ,जागो ।
anamcara Rames

CamScanner

10:35 pm 23 KB/s 24%

344 10 comments • 32 shares

Like Comment Share

ओशो का हिन्दी साहित्य
अहोभाव · 17h

अहोभाव

संन्यास का इतना ही अर्थ है कि तुम्हें
संसार के क्षणभंगुर होने का बोध हो गया।
ओशो

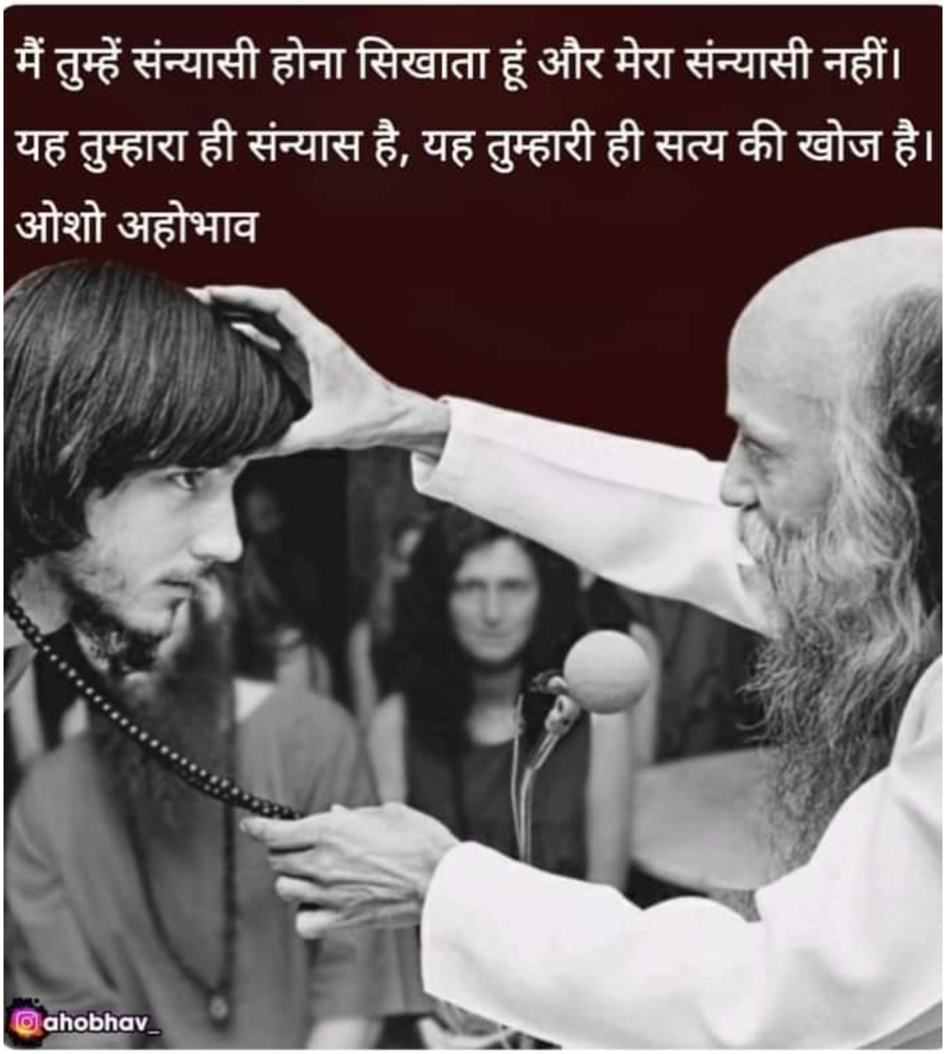

29 1 comment • 1 share

CamScanner

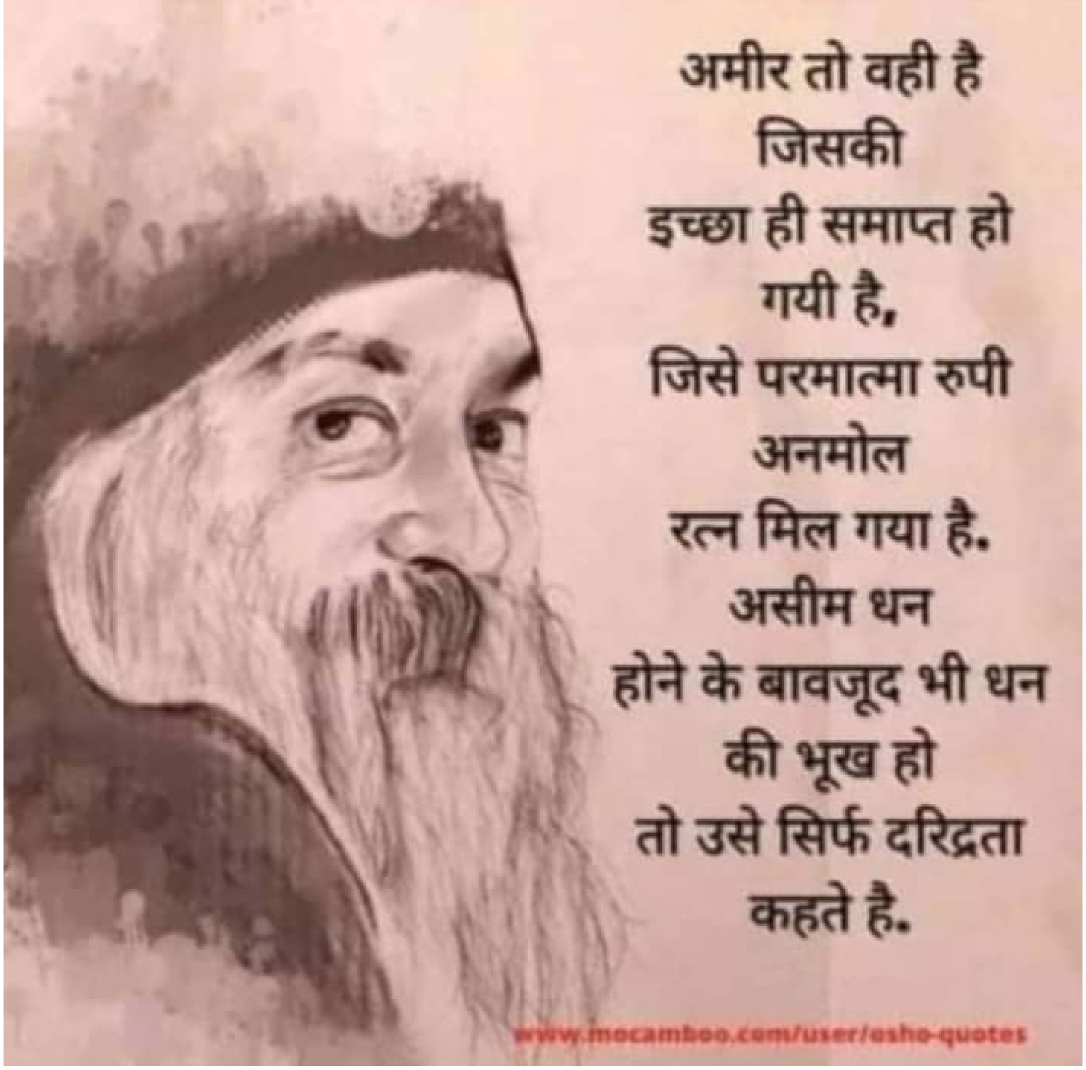
अमीर तो वही है
जिसकी
इच्छा ही समाप्त हो
गयी है,
जिसे परमात्मा रुपी
अनमोल
रत्न मिल गया है.
असीम धन
होने के बावजूद भी धन
की भूख हो
तो उसे सिर्फ दरिद्रता
कहते है.
www.mocamboo.com/user/osho-quotes

CamScanner

10:34 pm
24 KB/s
24%
Osho
मन जबतक है
तबतक प्यासा ही रहेगा।
मन का होना ही प्यास है।
अतृप्ति मन का स्वभाव है।
मन कभी तृप्त हुआ, ऐसा सुना नहीं।
मन कभी तृप्त होगा, ऐसा संभव नहीं।
मन तृप्त नहीं हो सकता है।
इसीलिए तो संसार में कोई तृप्ति नहीं है,
क्योंकि संसार मन का फैलाव है।
मन का विस्तार है।
~ ओशो SGB

CamScanner

जय अचिंत्य

प्रश्न-108-

आप पूछते हैं, उपासना कौन कर सकता है ?

-उत्तर-

पहले तो आपको उपासना शब्द का मतलब समझ लेना चाहिये--'वह क्रिया जो परमात्मा के निकट लाने में सहयोग करे।' उपासना कहलाती है। उप + आसन, 'उप' यानि 'निकट' और 'आसन' का मतलब 'बैठना' यानि निकट बैठना। उपासना के लिये स्वभाव होना जरूरी है, अपना ही भाव निजी होता है, यही भाव परमात्मा की निकटता पाता है।..निज भाव को ही स्त्रि भाव बोलते हैं, स्त्रि, पुरुष की निकटता पाने को उद्धत रहती है, उसकी पूर्णता पुरुष पर है, इसलिये उपापना के अधिकारी सिर्फ स्त्रि स्वभाव वाले ही होते हैं, पुरुष स्वभाव वाले नहीं ! पुरुष उपासना के मंदिर में कभी प्रवेश नहीं पा सकता ! यदि उसे प्रवेश पाना है, तो फिर स्त्रि बनना आवश्यक है।..आप शायद नहीं जानते ! स्त्रि भी निज स्वभाव के अभाव में, पुरुष हो सकती हैं ! स्त्रियों में भी स्त्रि खोजना मुश्किल हो जाता है !..स्त्रि स्वभाव में प्रेम-सरलता-समर्पण-धैर्य और सहनशीलता जैसे गुण होते हैं। उपासना के लिये, स्वभाव महत्व रखता है, लिंग भेद नहीं !-अचिंत्य

CamScanner

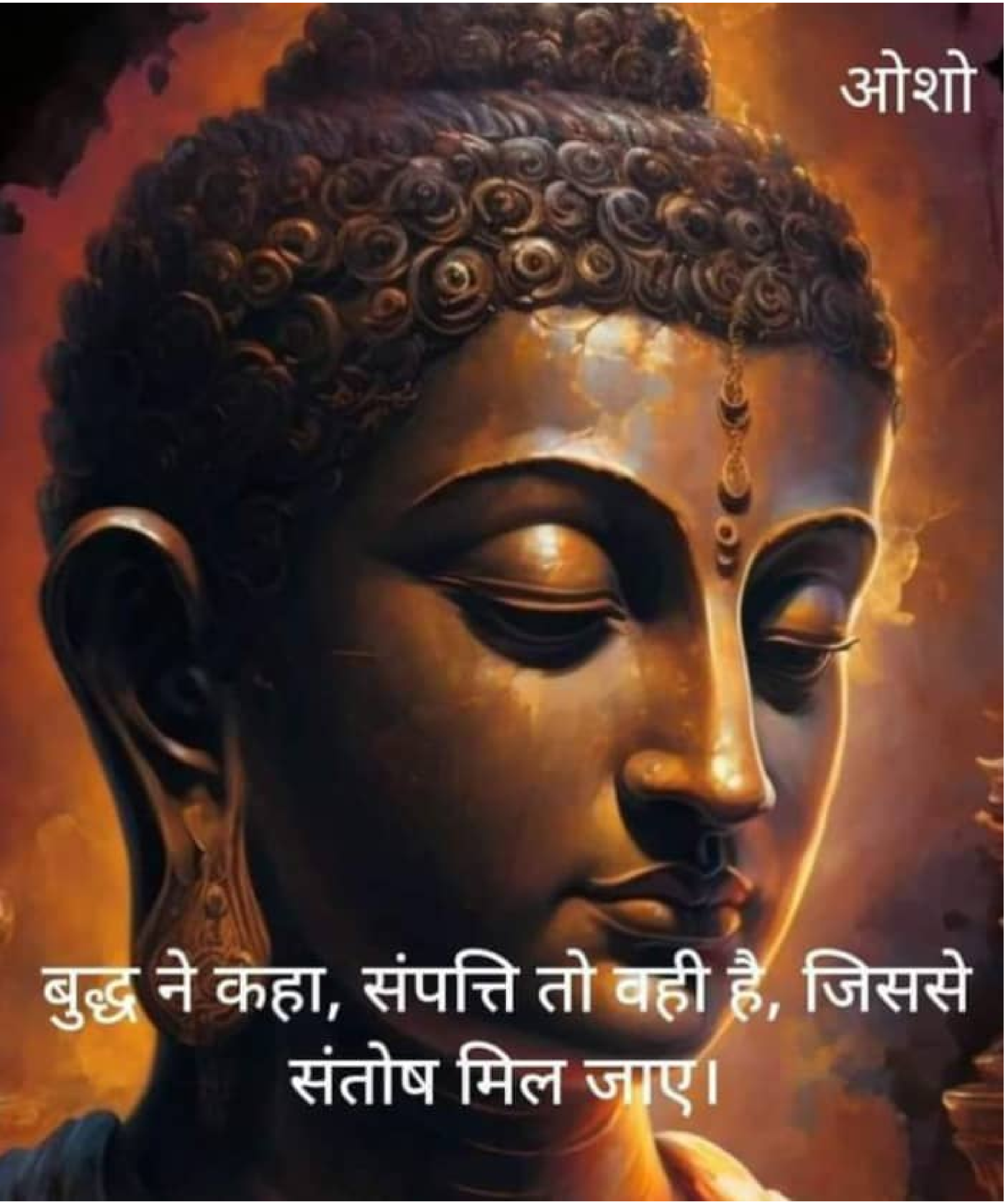

CamScanner

osho update

संन्यास का अर्थ है :
खुली हुई मुट्ठीवाला जीवन,
जहां हम कुछ भी बांधना नहीं चाहते,
जहां जीवन एक प्रवाह है और सतत नये की
स्वीकृति और कल जो दिखाएगा उसके लिए
भी परमात्मा को धन्यवाद का भाव।
बीते हुए कल को भूल जाना है,
और जिसने जीवन के प्रवाह में बहने की
सामर्थ्य साध ली, जो प्रवाह के साथ बहने
लगा - सरलता से,
सहजता से, असुरक्षा में,
अनजान में, अज्ञान में -
वही संन्यासी है। ओशो

CamScanner

10:31 pm 28 KB/s VoLTE 4G 25%

Osho Sahaj Anand

3d ·

33 2 comments • 2 shares

Like Comment Share

CamScanner

समझो!

चुप रहने का नाम मौन नहीं है। चुप तो आदमी हजारों कारणों से रह जाता है। जब तक मन है मौन नहीं। मन की मृत्यु का नाम मौन है। भीतर विचार न चलें, तरंगे न उठें, तो मौन है।

ओशो अहोभाव

CamScanner

10:29 pm 8 KB/s 25%

आप तक लौटाता है।

आप जो देते हैं अपने कर्म में, वह हजार गुना होकर आप पर बरसने लगता है। यह सारा जगत एक प्रतिध्वनि है। आप एक गीत गाते हैं, तो सब तरफ से गीत गूंजकर आप पर गिरता है। आप एक गाली देते हैं, तो गाली लौट आती है हजार गुनी होकर। जो काटे बोता है, काटे काटता है। जो फूल बोता है, वह फूल काट लेता है। सात्विक कर्म सुख लाएगा, एक। ज्ञान लाएगा, दो। यह बड़ी अनूठी बात है।

सात्विक कर्म ज्ञान क्यों लाएगा? ज्ञान मिलना चाहिए शास्त्र से, गुरु से। लेकिन कृष्ण कहते हैं, सात्विक कर्म ज्ञान लाएगा। यह किस ज्ञान की बात कर रहे हैं?

जब आप कोई सात्विक कर्म करते हैं, तब आप एकदम शांत हो जाते हैं। कभी भी अच्छा काम करके देखें, और उस रात आप गहरी नींद सोएंगे। कोई बुरा काम करके देखें, उस रात आप सो भी नहीं पाएंगे। कोई बुरा काम करें, वह भीतर खटकता ही रहेगा, काटे की तरह चुभता ही रहेगा। कोई भला काम करें, और एक हलकापन फैल जाता है; एक सुबह हो जाती है भीतर। छोटा-सा!

एक बीमार आदमी जा रहा हो और उसको आप हाथ का सहारा देकर रास्ता पार करवा दें। रास्ता पार कराते-कराते ही आपके भीतर कुछ होने लगेगा। सब हलका हो जाएगा, शांत हो जाएगा।

रास्ते पर एक नोट पड़ा हो। उठाने का खयाल आ जाए उससे ही बेचैनी शुरू हो जाएगी। फिर उठाकर उसे जेब में रख लें। फिर वह पहाड़ की तरह भारी मालूम पड़ेगा। फिर आप और कुछ भी करते रहें, लेकिन भीतर एक बेचैनी है।

#ओशो
गीता दर्शन--(भाग--7)--अध्याय--14

CamScanner

10:29 pm 13 KB/s 25%

कहा जाता है कि मर जाने के बाद भी दो-तीन महीने तक रूस में खबर नहीं दी गई कि स्टैलिन मर गया है। वह डबल काम करता रहा। वह जो दूसरा नकली आदमी बनाकर रख छोड़ा था, वही जाएगा; सभाओं में सलामी लेने, व्याख्यान देने, वह जाएगा। यह बड़ी अजीब ढंग की उपलब्धि हुई कि जहां स्वागत भी अपना न हो सके, जहां स्वागत के लिए दूसरे को भेजना पड़े!

और स्टैलिन एक प्रेत की तरह हो गया, जो पीछे छिपा हुआ है। और किसी पर उसका भरोसा नहीं है। किसी पर भरोसा नहीं हो सकता। क्योंकि वह खुद धोखा देकर, खुद लेनिन को धोखा देकर कब्जे में आया है। इसलिए जितने लोगों ने उसको सहायता दी, सबको उसने मरवा डाला। क्योंकि जो आदमी भी उसको सहायता देगा, ताकतवर सिद्ध होगा, वह उसको खतम कर देगा।

इसलिए पिछले चालीस साल में, जिनमें स्टैलिन ताकत में था, उसमें उसने हर आदमी को, जिसने उसको साथ दिया और जो सीढ़ी बना और जिसने उसको ऊपर भेजा, उसने जल्दी उसकी गर्दन अलग की। क्योंकि यह आदमी अगर अपने लिए सीढ़ी बन सकता है, तो कल किसी दूसरे को भी चढ़ाने में सीढ़ी बनेगा।

स्टैलिन जैसे लोगों का कोई मित्र नहीं हो सकता। क्योंकि मित्र इतने पास आ जाएगा कि खतरनाक है। स्टैलिन से दूर ही लोग रह सकते हैं, पास नहीं हो सकते। और परम दुख में मर रहा है।

स्टैलिन की लड़की ने बाद में संस्मरण लिखे हैं। उसने संस्मरण में लिखा है कि मेरे पिता जितने दुखी थे, ऐसा दुखी आदमी मैंने कहीं देखा नहीं। दुखी होगा ही।

सात्विक कर्म भीतर के सुख से निकलते हैं। और हर कर्म आपके सुख को हजार गुना कर देगा। क्योंकि हर कर्म आपके सुख की प्रतिध्वनि को आप तक लौटाता है।

आप जो देते हैं अपने कर्म में, वह हजार गुना होकर आप पर बरसने

CamScanner

10:28 pm 9 KB/s VoLTE 4G 26%

सिकंदर दुखी मरता है, विराट कर्म के बाद। नेपोलियन दुखी मरता है, विराट कर्म के बाद। हिटलर आत्मघात करता है; लेनिन मरते वक्त अति दुखी है। और मरते वक्त लेनिन अपनी वसीयत में लिखता है कि स्टैलिन के हाथ में सत्ता न रहे। और दुखी इसीलिए है। जब तक वह बीमार था, तब तक स्टैलिन ने सत्ता हथिया ली। वह और भी बड़ा राजसिक व्यक्ति है। लेनिन ने क्रांति की, लेकिन सत्ता स्टैलिन के हाथ चली गई।

क्रांतिकारी अक्सर सत्ता नहीं भोग पाते, क्योंकि उनकी शक्ति और उनकी ऊर्जा सत्ता हथियाने में नष्ट हो जाती है। जब तक वे सत्ता पाते हैं, तब तक भीतर से कमजोर हो जाते हैं। जब सत्ता उनके हाथ में आती है, तब कोई शक्तिशाली व्यक्ति, जिसकी शक्ति अभी बची है, वह कब्जा कर लेता है।

हर क्रांति में यह होता है कि जो लोग क्रांति करते हैं, वे फेंक दिए जाते हैं। और जो क्रांति नहीं करते, वे मालिक हो जाते हैं। अक्सर होगा ऐसा। बाप कमाएगा और बेटा उसको खर्च करेगा। क्योंकि बाप कमाने में खर्च हो जाते हैं।

लेनिन दुख से मरा और वसीयत करके गया। लेकिन वसीयत को कौन सुनने वाला है! ताकत स्टैलिन के हाथ में थी। वसीयत दबा दी गई।

लेकिन स्टैलिन दुखी मरता है, दुखी जीता है। दुख वहां तक पहुंच जाता है कि बाद-बाद के दिनों में कहा जाता है कि उसने अपना एक डबल रख छोड़ा था, ठीक स्टैलिन की शक्ल का आदमी। हिटलर ने भी अपना एक डबल रख छोड़ा था। स्टैलिन खुद बाहर नहीं जाता था, क्योंकि लोगों को इतना कष्ट दिया है कि वह सुरक्षित नहीं था।

अब यह बड़े मजे की बात है, बड़ी विडंबना है, कि स्टैलिन ने सारी जिंदगी यही तो कोशिश की कि यशस्वी हो जाऊं, बड़ा शक्तिशाली हो जाऊं। और जब शक्ति हाथ में आई, तब कमरे में छिपकर उसको रहना पड़ता था। उसकी जगह सलामी वगैरह लेने उसका डबल जाता था। क्योंकि अगर गोली मार दी जाए, तो दूसरा आदमी मरेगा, स्टैलिन सुरक्षित रहेगा।

CamScanner

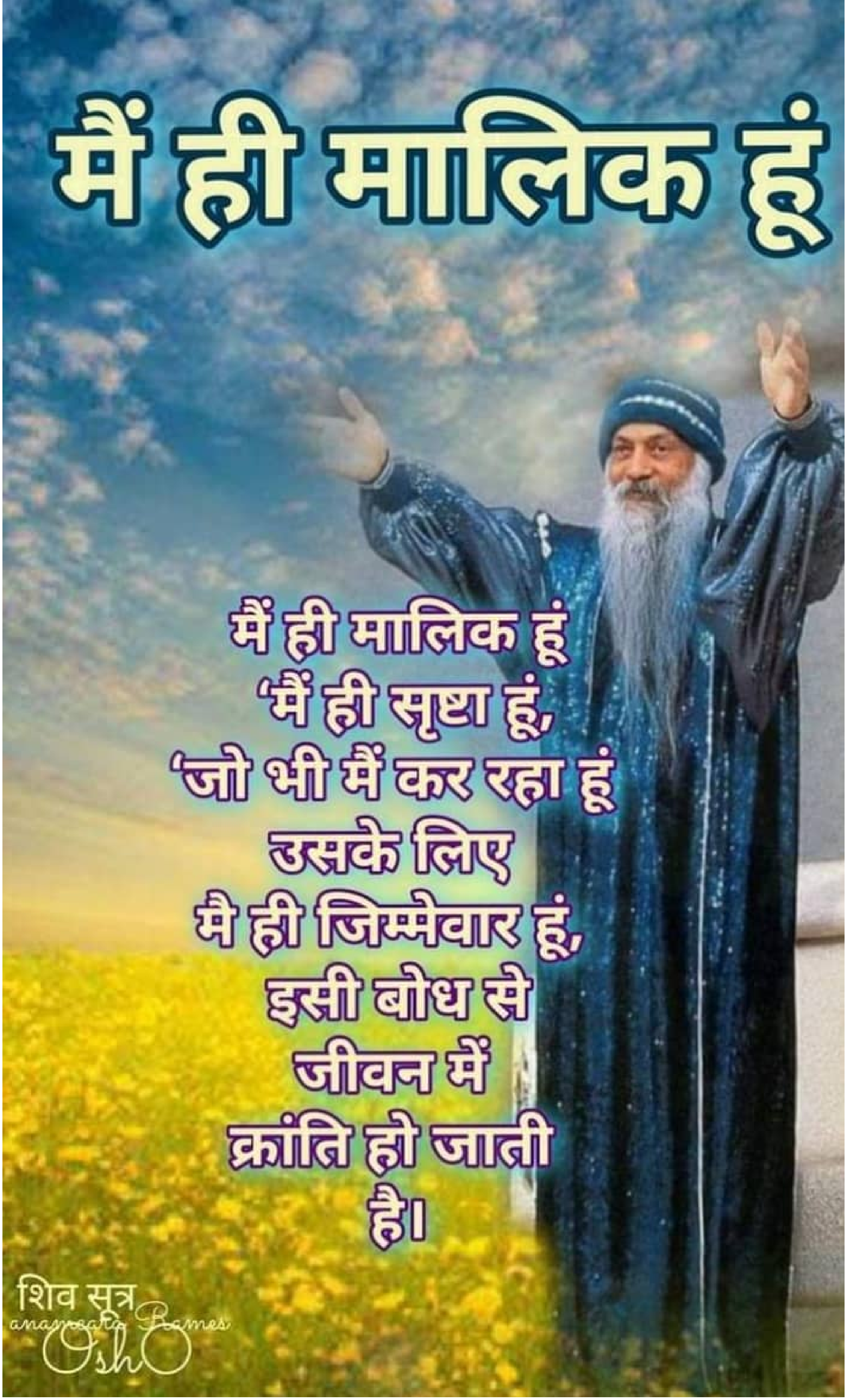
मैं ही मालिक हूं
मैं ही मालिक हूं
'मैं ही सृष्टा हूं,
'जो भी मैं कर रहा हूं
उसके लिए
मै ही जिम्मेवार हूं,
इसी बोध से
जीवन में
क्रांति हो जाती
है।
शिव सूत्र
Osho

CamScanner

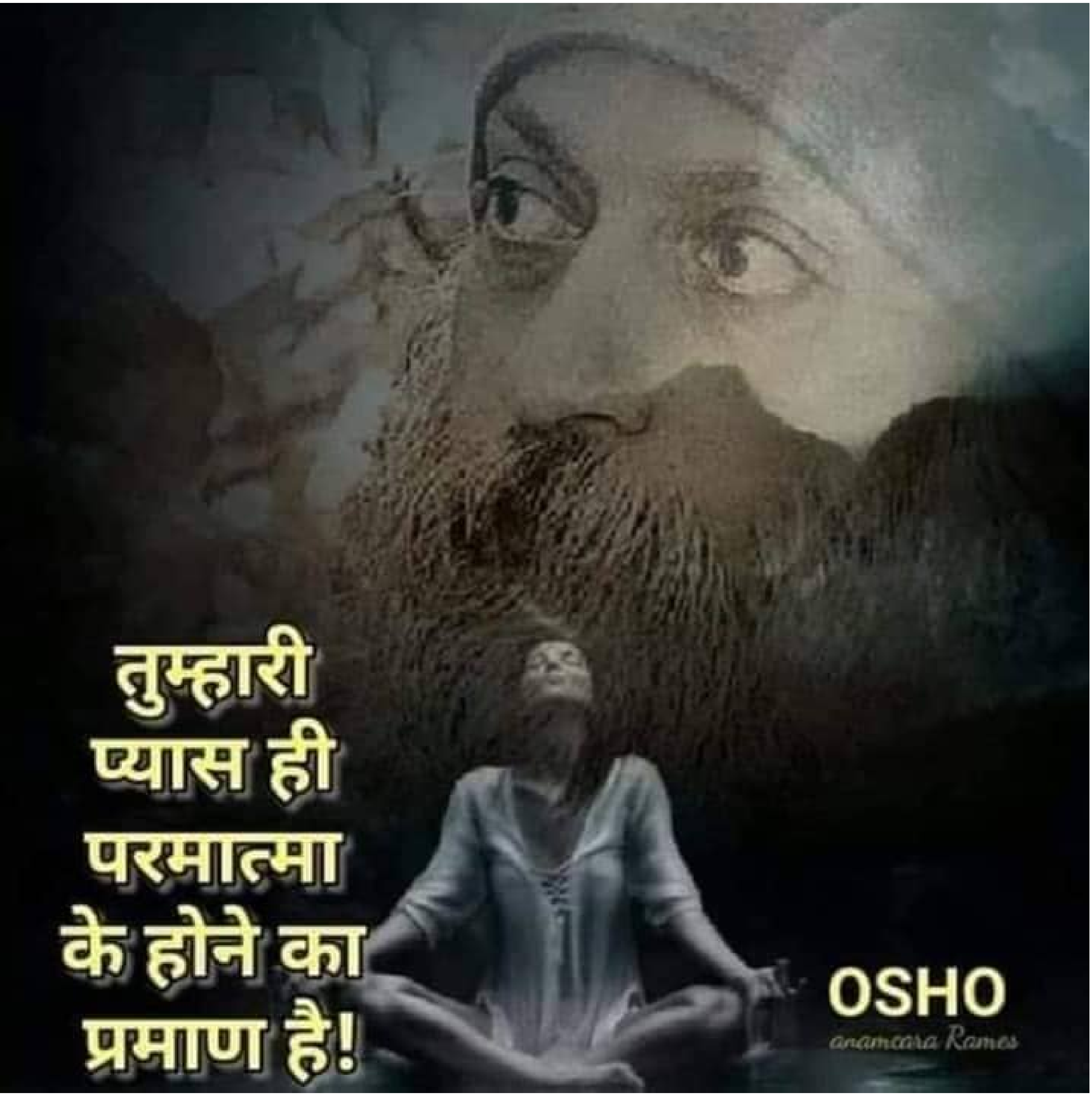

CamScanner

CamScanner

CamScanner

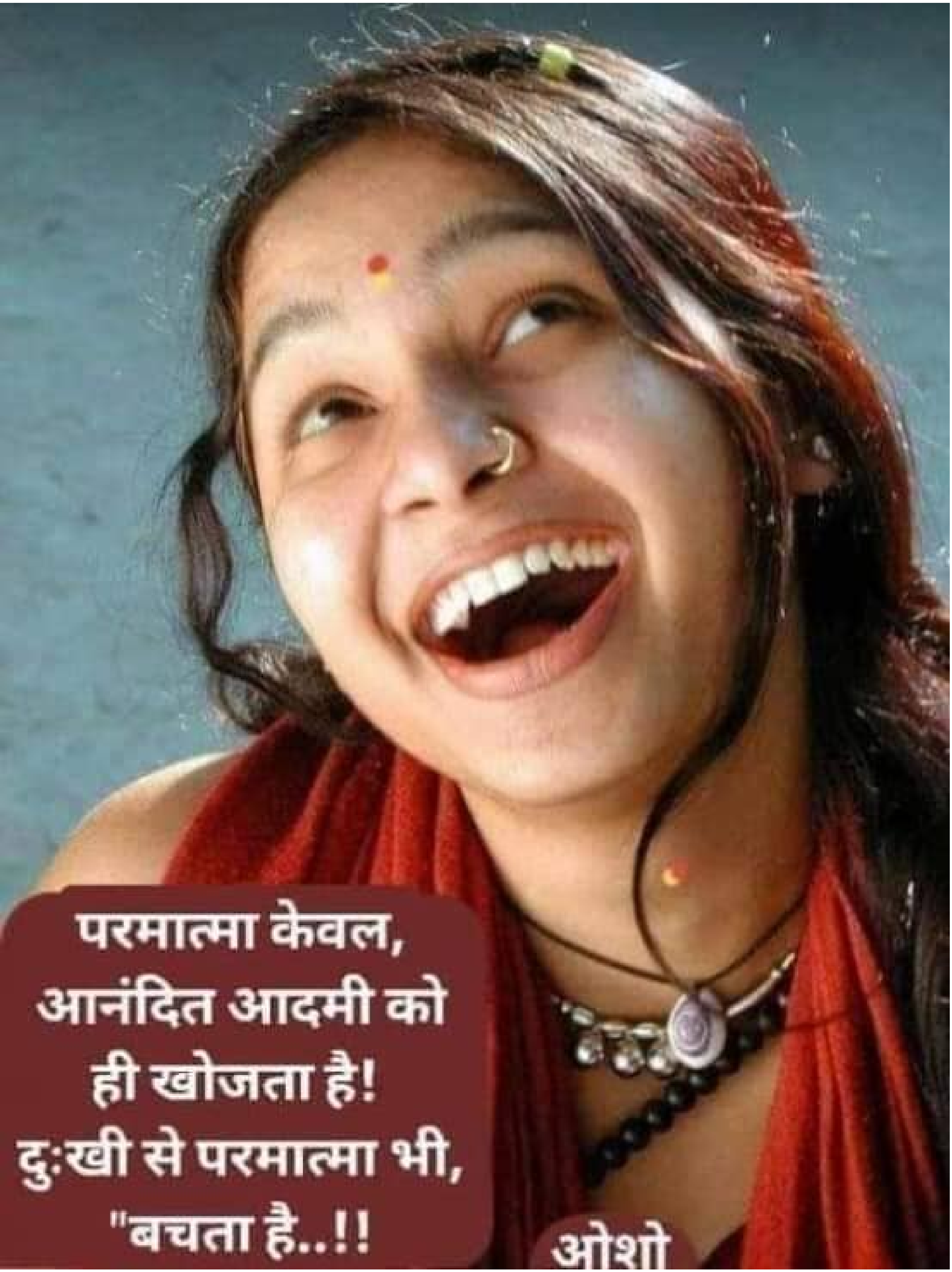

CamScanner

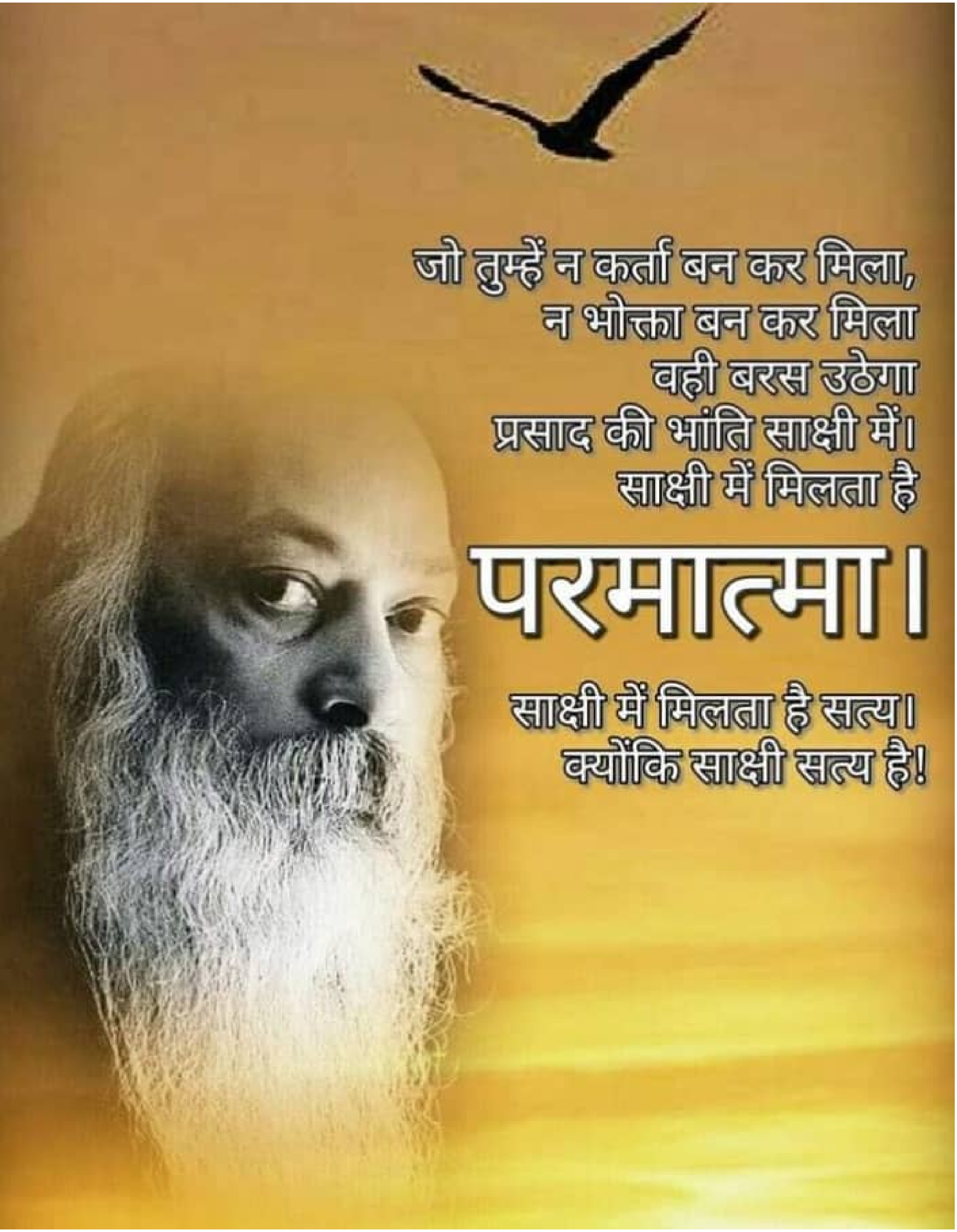
जो तुम्हें न कर्ता बन कर मिला,
न भोक्ता बन कर मिला
वही बरस उठेगा
प्रसाद की भांति साक्षी में।
साक्षी में मिलता है
परमात्मा।
साक्षी में मिलता है सत्य।
क्योंकि साक्षी सत्य है!

CamScanner

ओशो
आखिर तुम पूरी जिंदगी
में करते क्या हो ?
वस्तुऐं इकट्ठी करते हो,
बड़ा मकान बना लेते हो,
तिजोड़ी भर लेते हो।
और खुद को खोते चले जाते हो

CamScanner

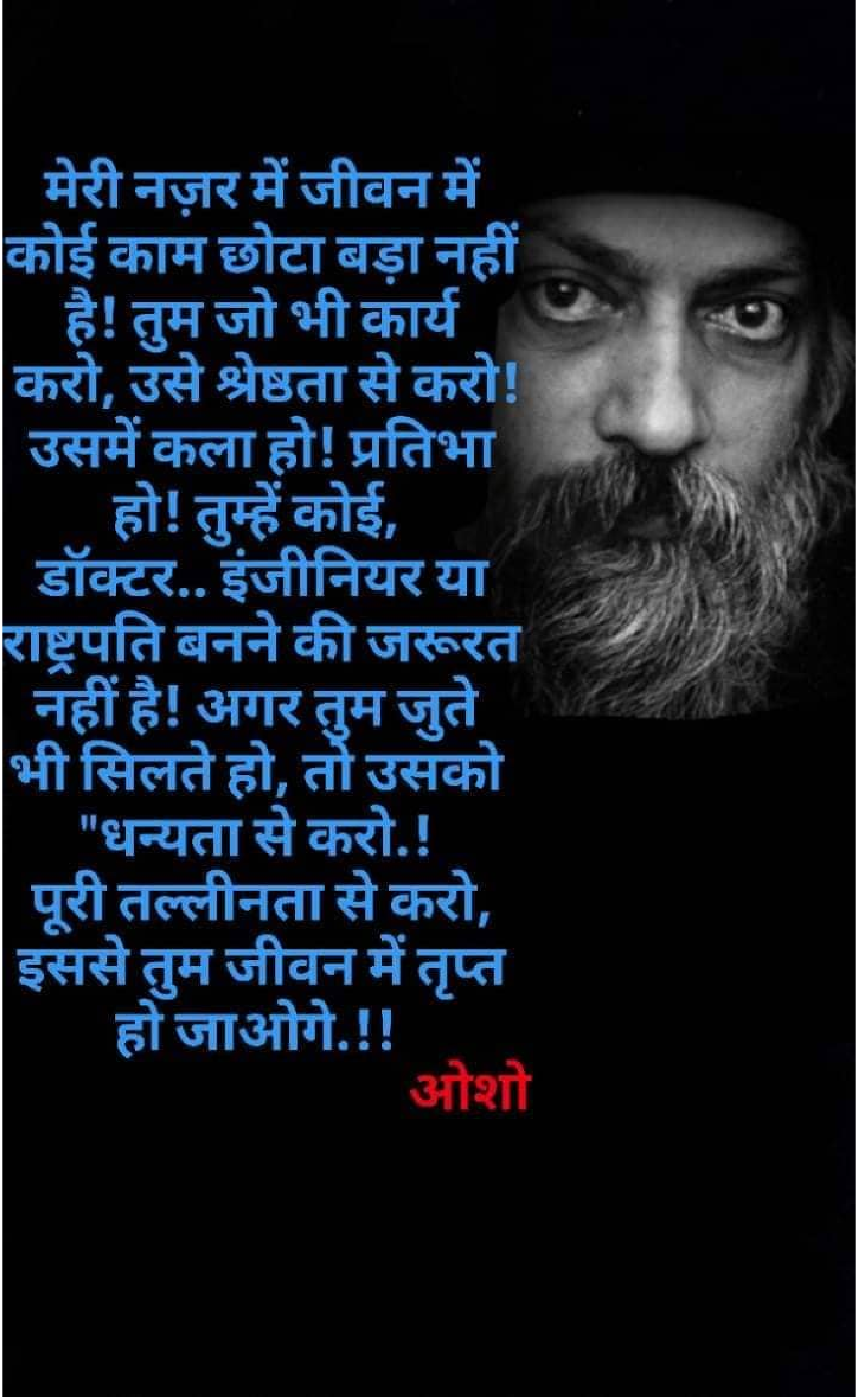
मेरी नज़र में जीवन में
कोई काम छोटा बड़ा नहीं
है! तुम जो भी कार्य
करो, उसे श्रेष्ठता से करो!
उसमें कला हो! प्रतिभा
हो! तुम्हें कोई,
डॉक्टर.. इंजीनियर या
राष्ट्रपति बनने की जरूरत
नहीं है! अगर तुम जुते
भी सिलते हो, तो उसको
"धन्यता से करो.!
पूरी तल्लीनता से करो,
इससे तुम जीवन में तृप्त
हो जाओगे.!!
ओशो

CamScanner

Prem ! Prbhu Osho...

Munabai Makvana · 1d ·

परमात्मा न तो प्रवचन से उपलब्ध होता है, न शास्त्र से, न बुद्धि से, न ही बहुत सुनने से, ये कोई उपाय नहीं है परमात्मा को पाने के, परमात्मा जब तुम्हें स्वीकार कर ले तब उपलब्ध होता है, तुम्हारा आत्मिक रूपांतरण, तुम्हारी पात्रता, तुम्हारा इस भांति हो जाना कि कोई उपाय ही न रहे कि तुम्हें अस्वीकार किया जा सके, तुम्हे उसे स्वीकार करना ही पड़े, वह तुम्हें स्वीकार कर ही ले, तुम्हारी ऐसी शुद्धता और निर्दोषता और सरलता, तुम्हारे आचरण में ऐसी सुगंध, तुम्हारे व्यक्तितव में ऐसी सात्विकता, तुम्हारे होने का ढंग ऐसा ध्यानपूर्ण हो जाए कि उसे तुम्हें स्वीकार करना ही पड़े, तुम उसे मजबूर कर दो, ऐसी स्थिति के अतिरिक्त परमात्मा कभी किसी को उपलब्ध नहीं होता है,शास्त्र पढ़ना आसान है, जीवन को बदलना बहुत कठिन है, और ध्यान की सारी प्रक्रियाएँ व्यक्तित्व को खोलने की प्रक्रियाएं हैं, प्रवचन, शास्त्र, सब बौद्धिक हैं, ध्यान हार्दिक है।

ओशो; कठोपनिषद

CamScanner

अगर आप तुलना करना
छोड़ दें तो जिंदगी निश्चित
ही बहुत सुन्दर है.

ओशो

CS CamScanner

10:23 pm 425 KB/s VoLTE 4G 27%

facebook

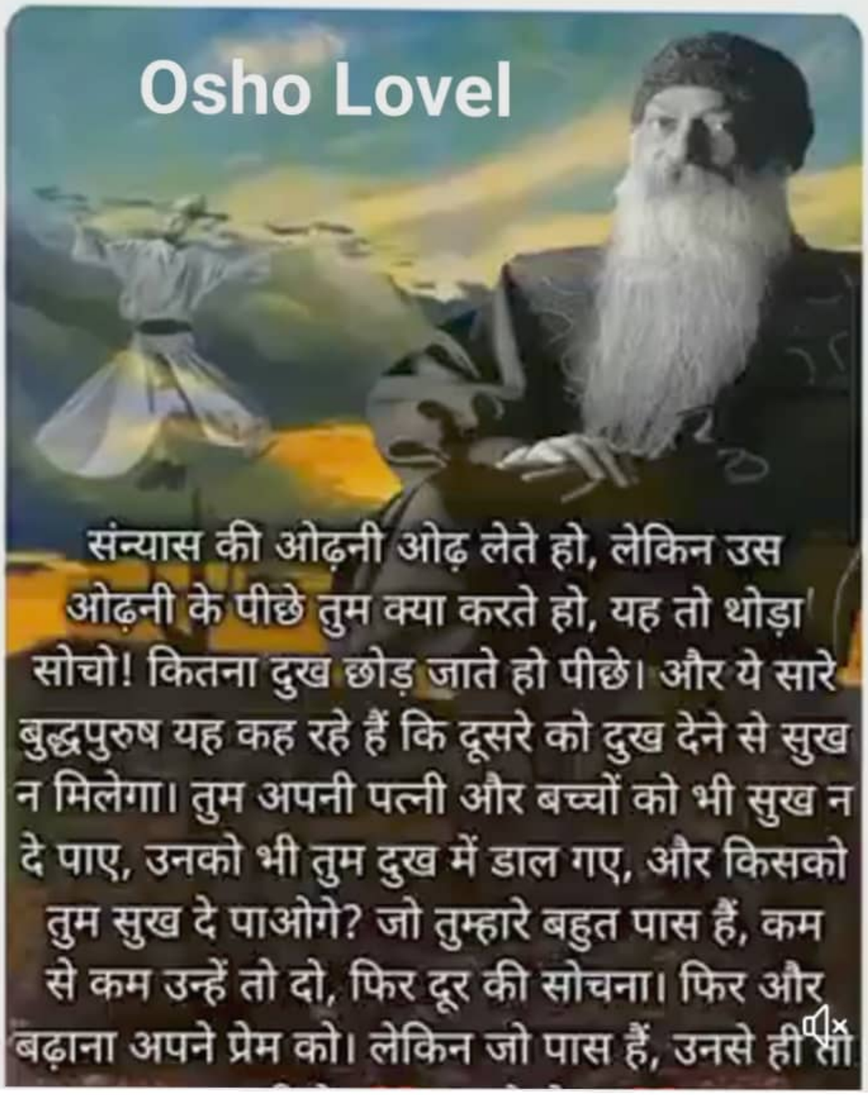

12 2 comments • 2 shares • 91 views

Like Comment Share

ओ शो वाणी

Ravinder Singh · 1h ·

CamScanner

CamScanner

परमात्मा दूर नहीं है,
निकट से भी निकट है,
श्वास से भी पास है,
हृदय की धड़कन से भी पास है।
और एक क्षण को भी परमात्मा
तुमसे दूर नहीं हुआ है,
क्योंकि परमात्मा अर्थात जीवन।
परमात्मा अर्थात
तुम्हारे हृदय की धड़कन,
तुम्हारी श्वास! परमात्मा अर्थात
तुम्हारा चैतन्य, तुम्हारा साक्षीभाव!!
ओशो

fb/oshoishqsufiana

depositphotos

CS CamScanner

त्याग का अर्थ
छोड़ना नहीं है। त्याग का
अर्थ जाग कर देखना है कि
मेरा कुछ है ही नहीं,
छोड़ूं कैसे ?

f osho universal - dhaval parmar

..ओशो..

अष्टावक्र : महागीता

CS CamScanner

10:18 pm 966 KB/s 29%

3 1 comment

Like Comment Share

OSHO LOVERS

अटल प्रताप सिंह · 7h ·

8 4 comments

Like Comment Send

Rajneesh Fragrance

Sponsored ·

Learn how to Meditate

CamScanner

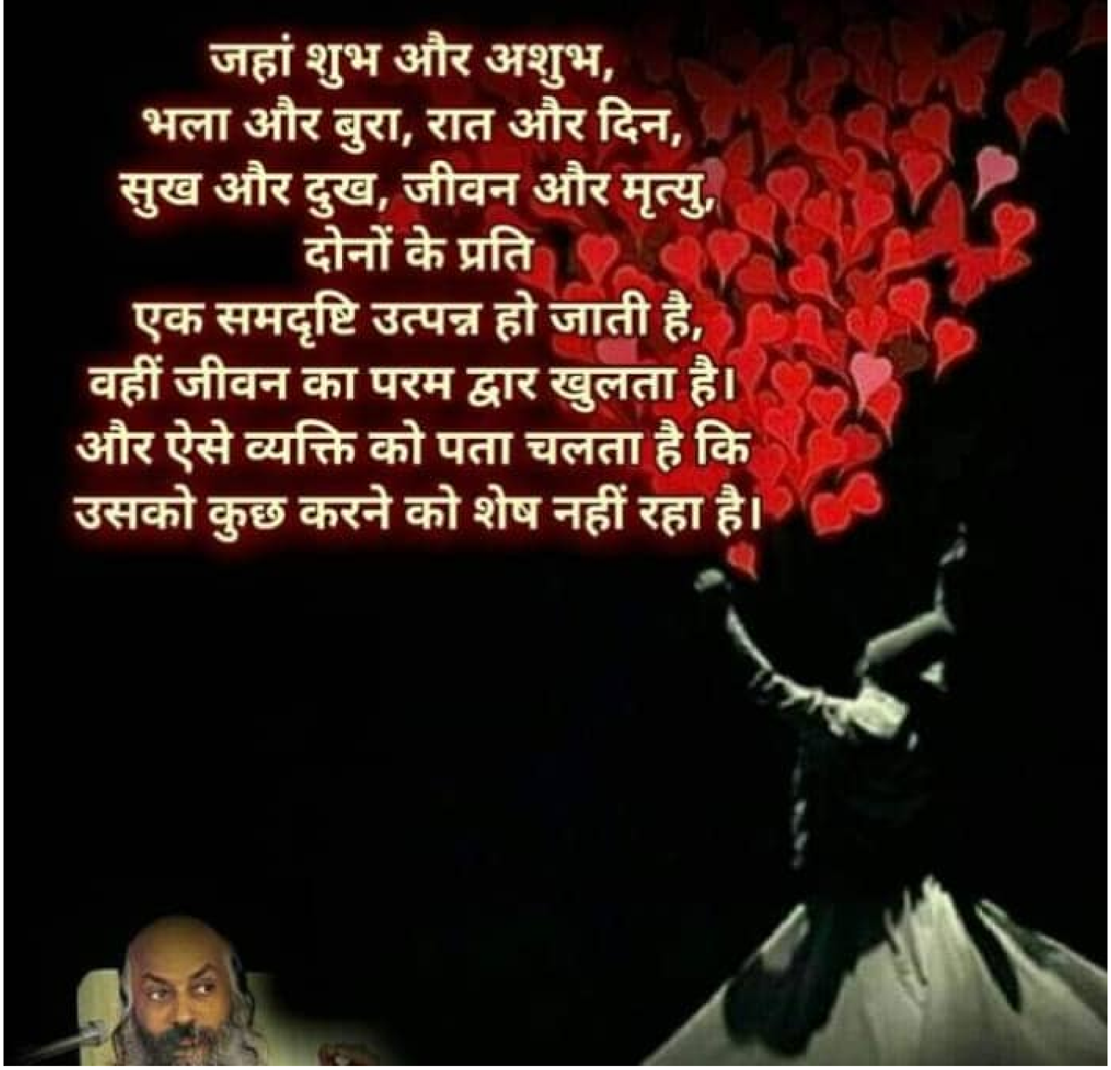
जहां शुभ और अशुभ,
भला और बुरा, रात और दिन,
सुख और दुख, जीवन और मृत्यु,
दोनों के प्रति
एक समदृष्टि उत्पन्न हो जाती है,
वहीं जीवन का परम द्वार खुलता है।
और ऐसे व्यक्ति को पता चलता है कि
उसको कुछ करने को शेष नहीं रहा है।

CamScanner

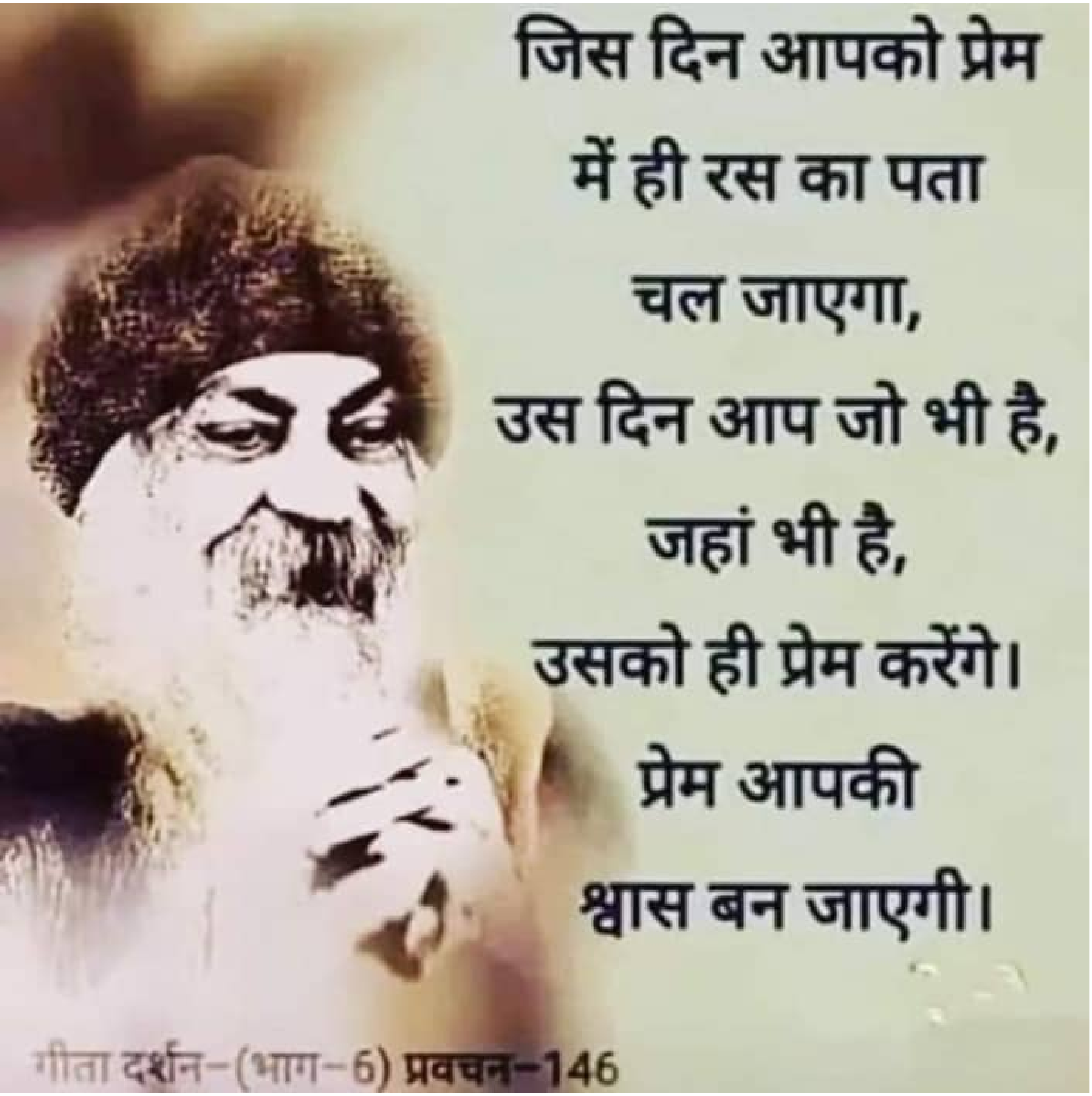
जिस दिन आपको प्रेम
में ही रस का पता
चल जाएगा,
उस दिन आप जो भी है,
जहां भी है,
उसको ही प्रेम करेंगे।
प्रेम आपकी
श्वास बन जाएगी।
गीता दर्शन-(भाग-6) प्रवचन-146

CamScanner

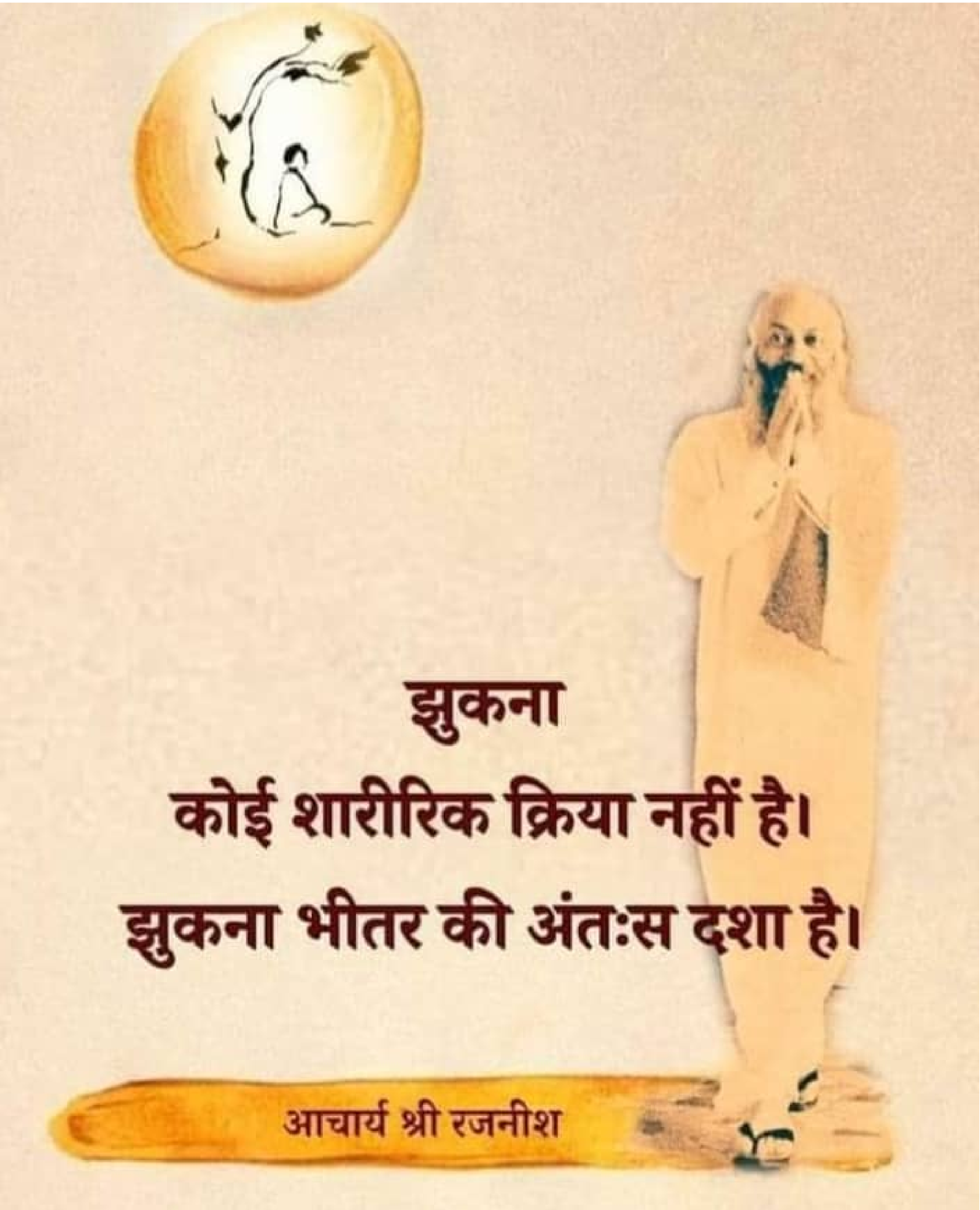

CamScanner

CamScanner

CS CamScanner

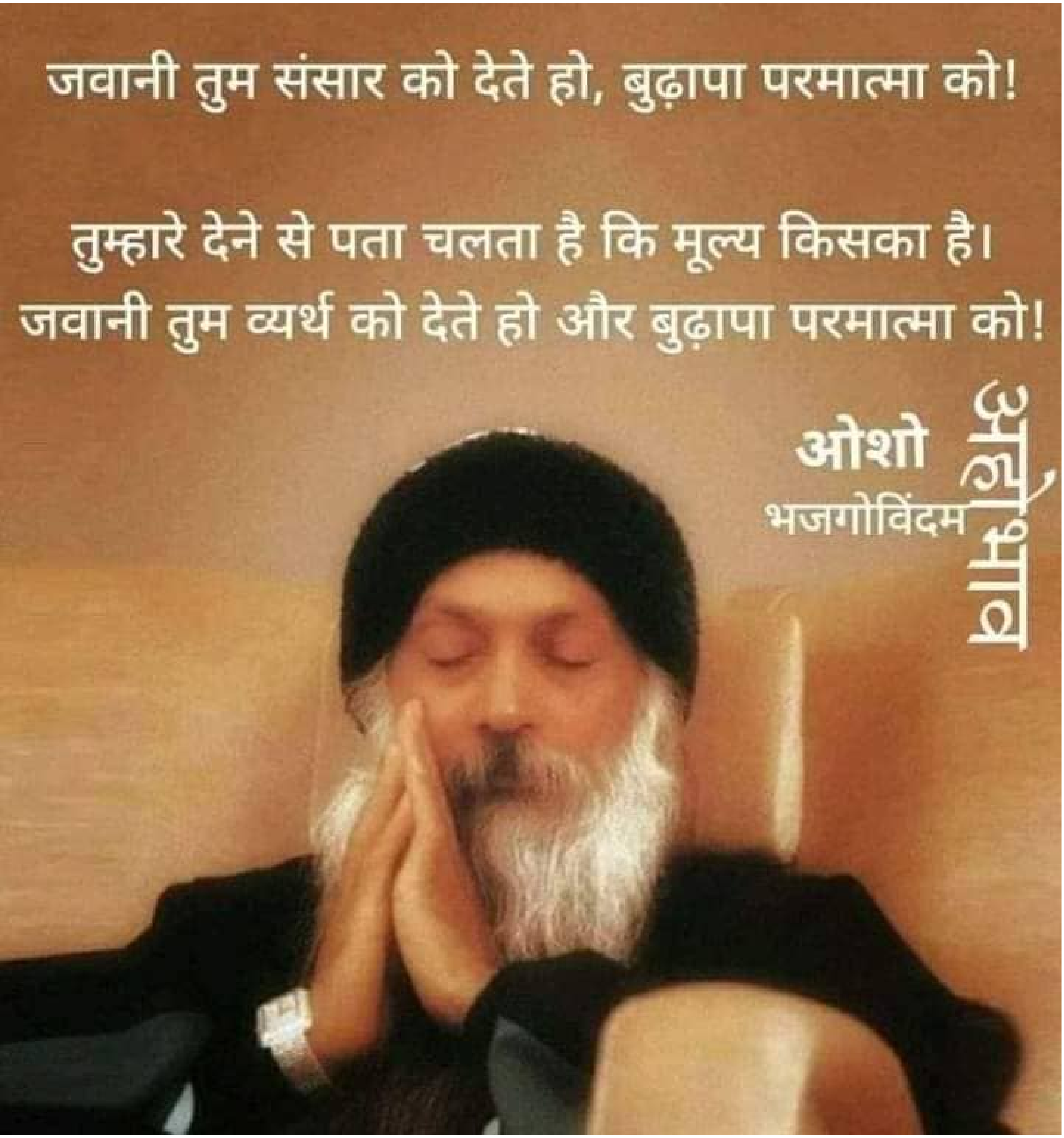
जवानी तुम संसार को देते हो, बुढ़ापा परमात्मा को!
तुम्हारे देने से पता चलता है कि मूल्य किसका है।
जवानी तुम व्यर्थ को देते हो और बुढ़ापा परमात्मा को!
ओशो
भजगोविंदम
अहोभाव

CamScanner

CS CamScanner

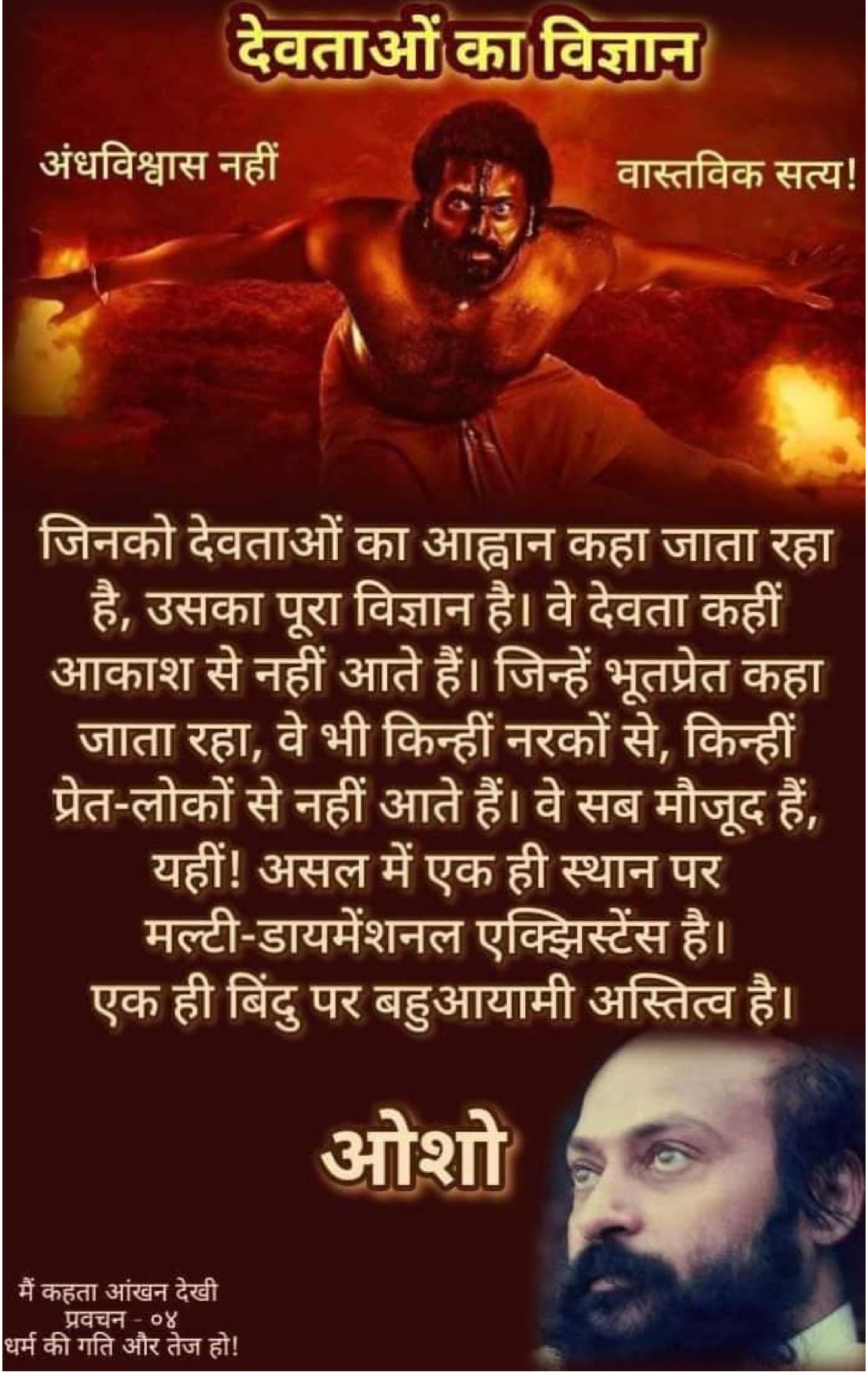
देवताओं का विज्ञान
अंधविश्वास नहीं
वास्तविक सत्य!
जिनको देवताओं का आह्वान कहा जाता रहा है, उसका पूरा विज्ञान है। वे देवता कहीं आकाश से नहीं आते हैं। जिन्हें भूतप्रेत कहा जाता रहा, वे भी किन्हीं नरकों से, किन्हीं प्रेत-लोकों से नहीं आते हैं। वे सब मौजूद हैं, यहीं! असल में एक ही स्थान पर मल्टी-डायमेंशनल एक्झिस्टेंस है। एक ही बिंदु पर बहुआयामी अस्तित्व है।
ओशो
मैं कहता आंखन देखी
प्रवचन - ०४
धर्म की गति और तेज हो!

CamScanner

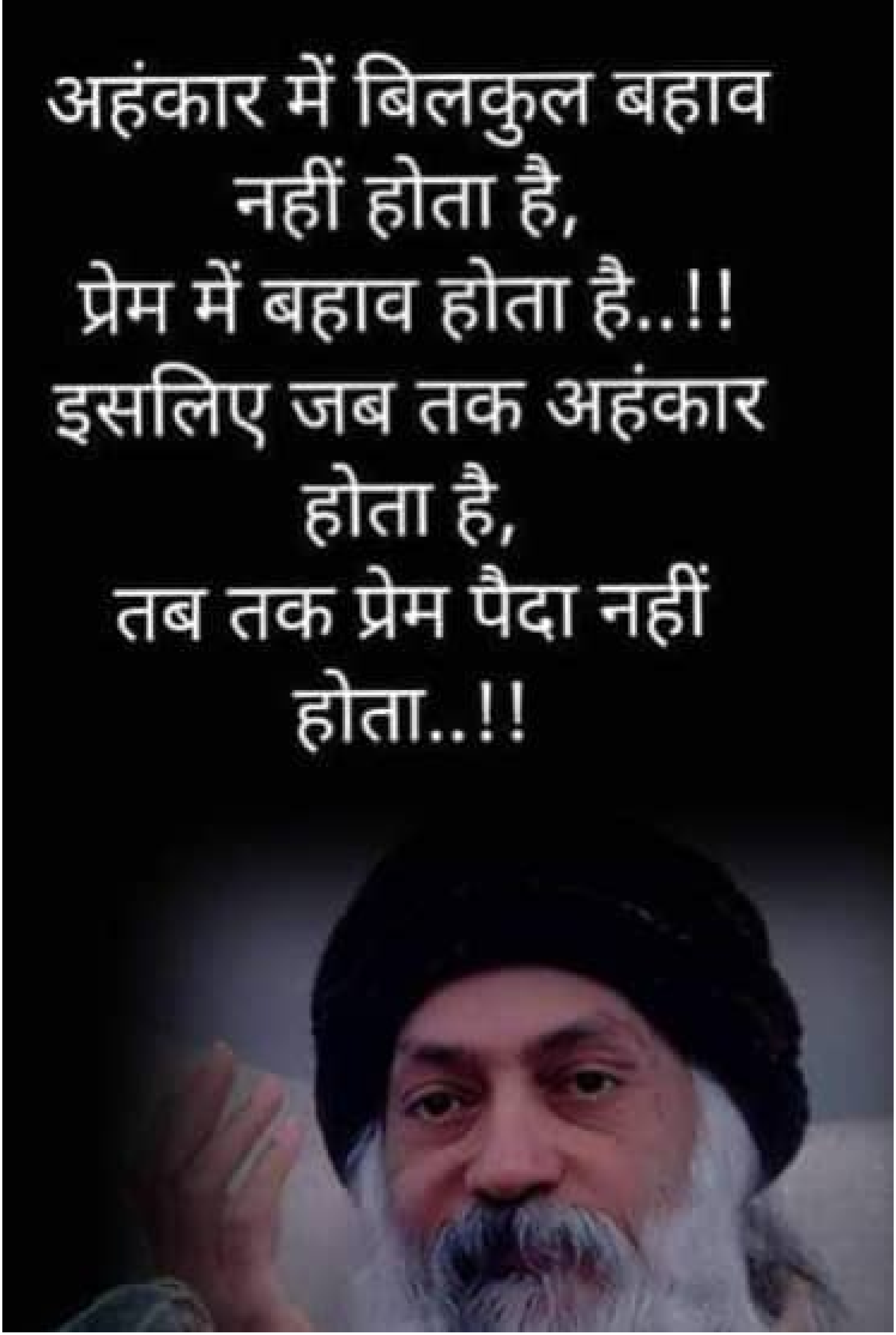
अहंकार में बिलकुल बहाव
नहीं होता है,
प्रेम में बहाव होता है..!!
इसलिए जब तक अहंकार
होता है,
तब तक प्रेम पैदा नहीं
होता..!!

CamScanner

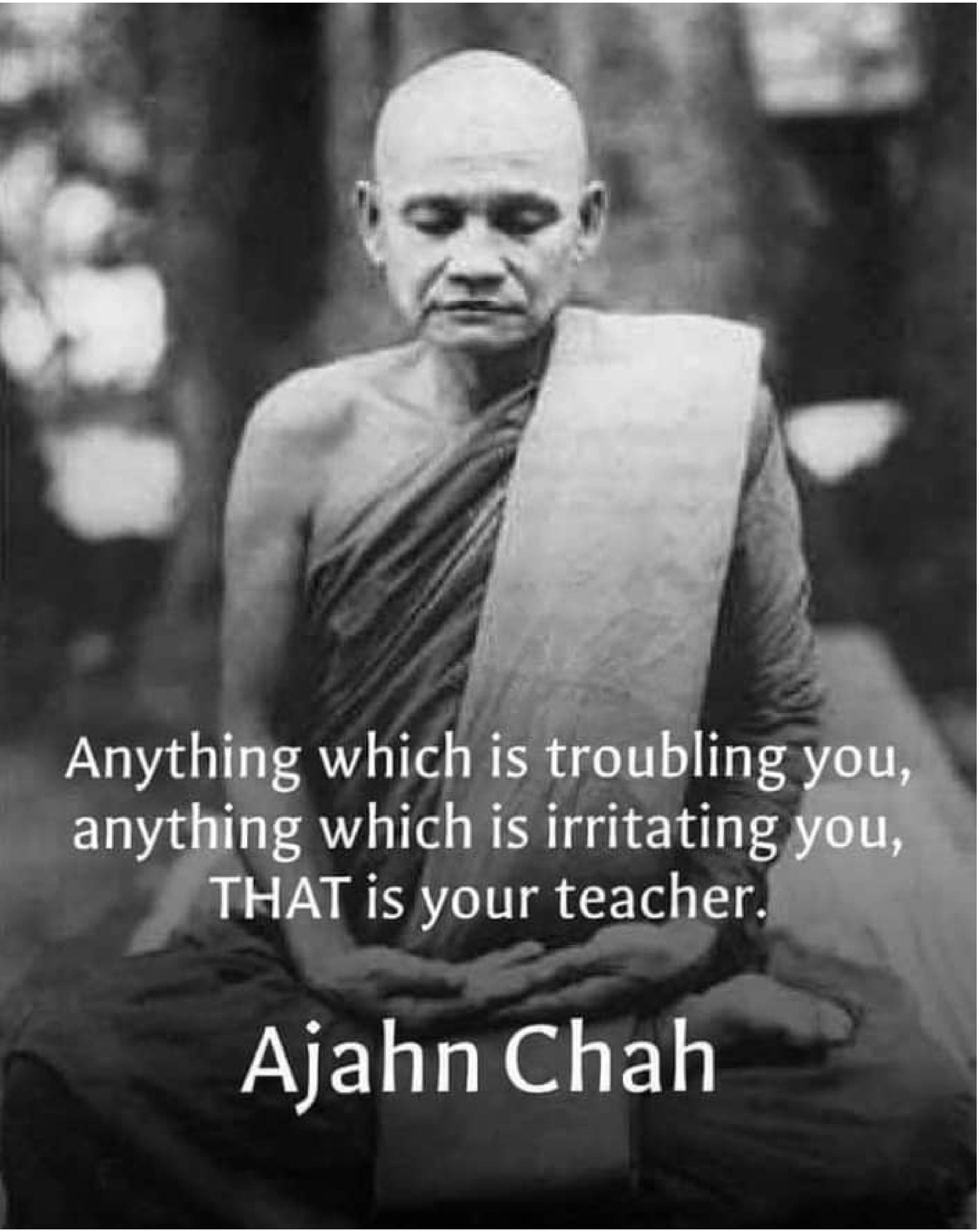
Anything which is troubling you,
anything which is irritating you,
THAT is your teacher.
Ajahn Chah

CamScanner

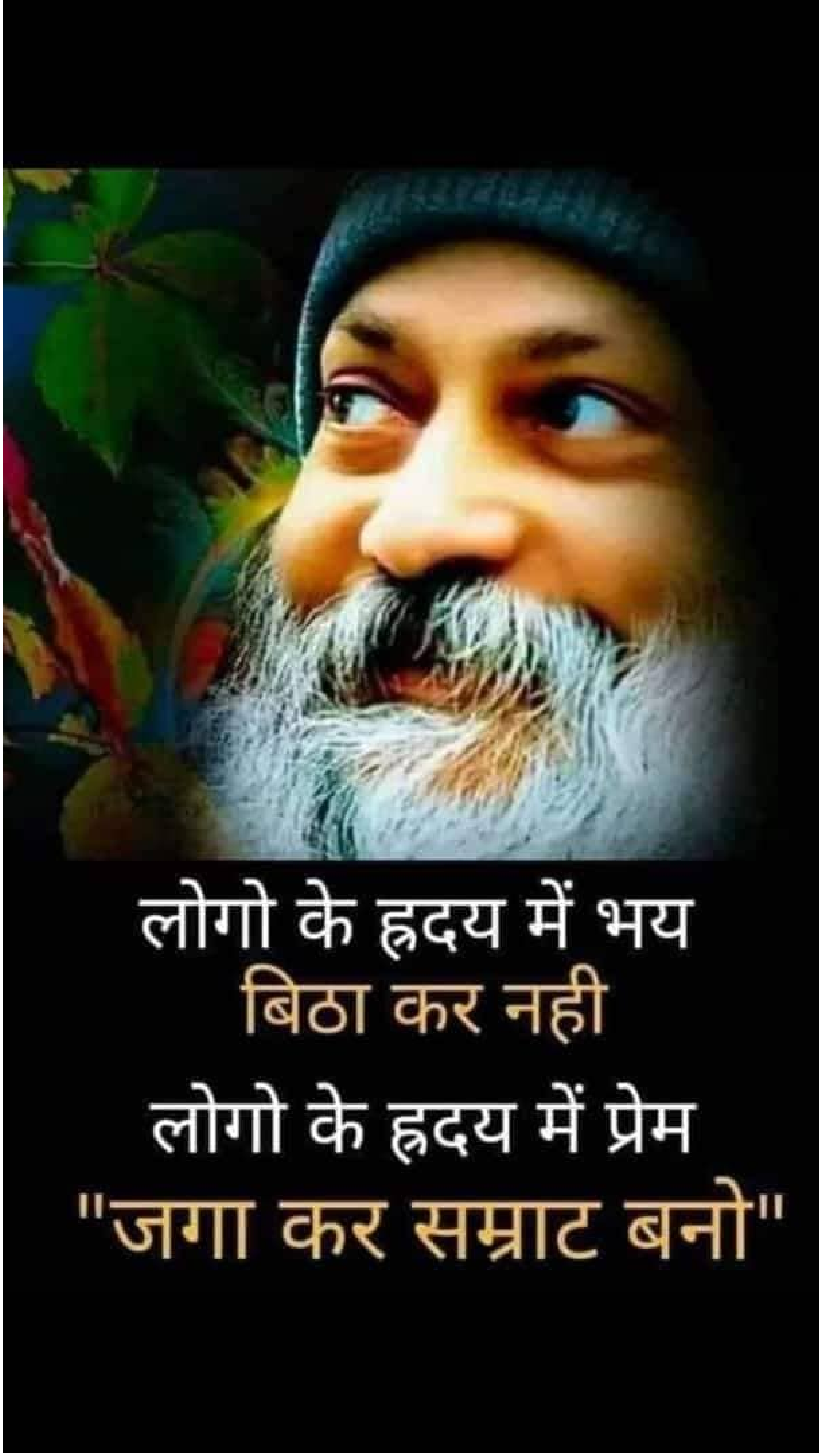

CamScanner

10:02 pm 2 KB/s 33%

Like Comment Share

Sadhana Rastogi
I have already put it and birds are coming!

Like Reply 20

Write a comment...

आध्यात्मिक मार्ग Aadhyaatmik Marg
Parshotam Rai · 13h

भगवान का नाम लो तो ऐसा चिंतन करो कि वाणी में भी भगवान, आवाज़ में भी भगवान, हृदय में भी भगवान, चारों तरफ भगवान-ही-भगवान हैं ! जैसे कोई बर्फ का घड़ा बनाकर उसको पानी से भर ले और फिर गहरे समुद्र में डाल दे तो घड़े के बाहर भी जल है, भीतर भी जल है और घड़ा खुद भी जल ही है। ऐसे ही बाहर-भीतर सब जगह परमात्मा-ही-परमात्मा हैं। आनन्द ही आनन्द है ! दु:ख का नामोनिशान ही नहीं है ! संसारबुद्धि होने से ही दु:ख होता है। जहाँ संसारबुद्धि हुई कि दु:ख हुआ और संसारबुद्धि मिटी कि दु:ख मिट गया। इसलिये हरदम भगवान का चिंतन होता रहे, भगवान के नाम का जप होता रहे, सत्संग होता रहे ! फिर मौज-ही-मौज है !

श्री राधे 🙏

28 — 9 comments • 2 shares

Like Comment Share

OSHO Hindi Speech
Vijay Mahindra · 1d

osho prem naman...💓🙏🙏🙏💓

CamScanner

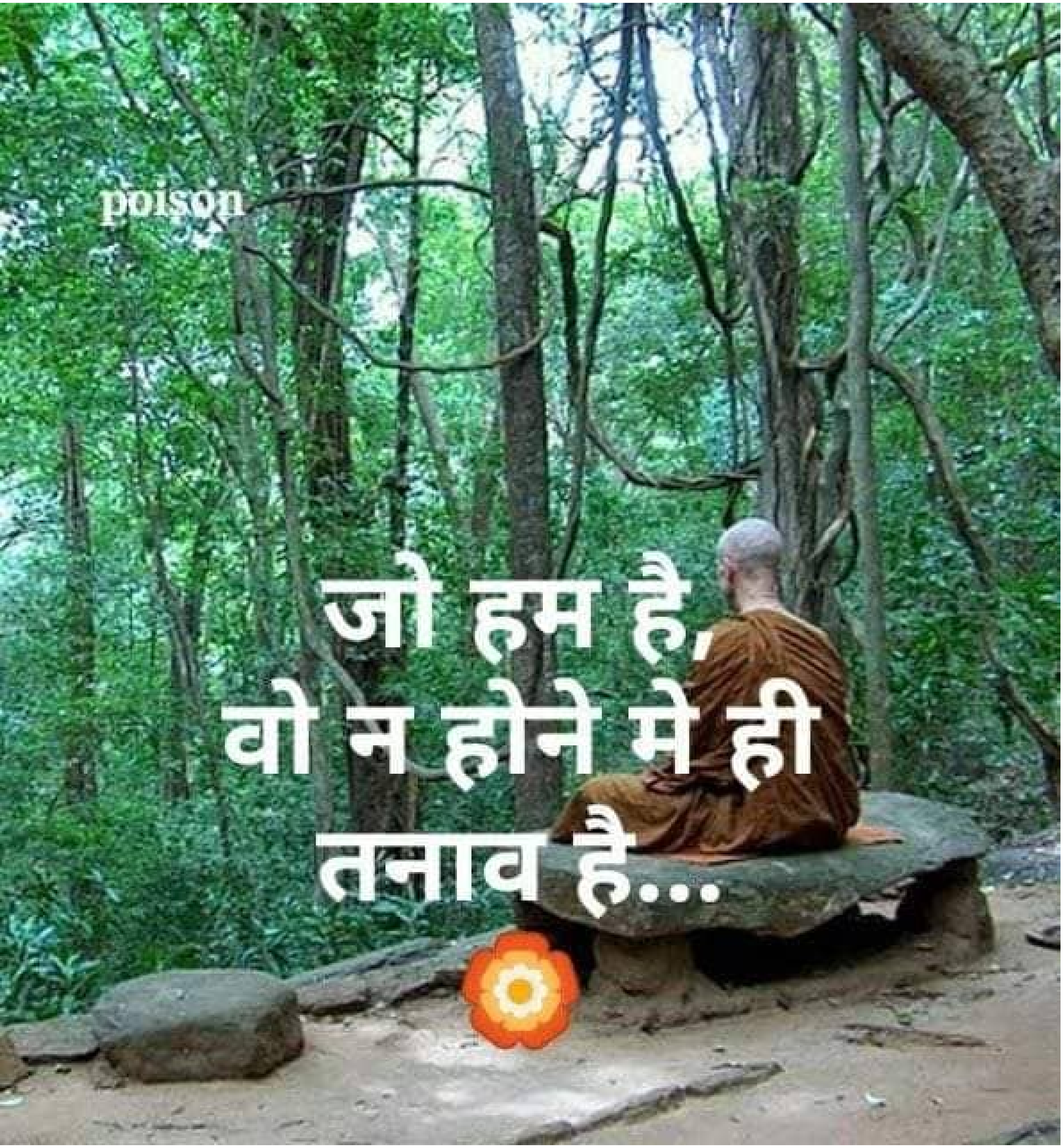

CS CamScanner

मनुष्य का बोलना ही उसे इस परिस्थिति में ले आया है जो आज है। यह जो लगातार भीतर बकवास करता हुआ मन है यह तुहें किसी प्रसन्नता, किसी आनंद को अनुभव नहीं करने देता, क्योंकि केवल एक मौन चित्त ही भीतर देख सकता है, केवल एक मौन चित्त ही उस आनंद को स्पर्श कर सकता है जो भीतर उमड़ रहा है। आनंद का वह स्त्रोत इतना सूक्ष्म है कि मन के शोर - गुल के बीच तुम उसे नहीं सुन सकते। जितना तुम मौन होते हो, उतना ही पाते हो कि आनंद का स्त्रोत तुम्हारे भीतर है। फिर तुम बाहर कहीं प्रसन्नता को खोजने नहीं जाते। तुम अकारण प्रसन्न होते हो।

ओशो

प्रेम को प्रार्थना बनाओ

CS CamScanner

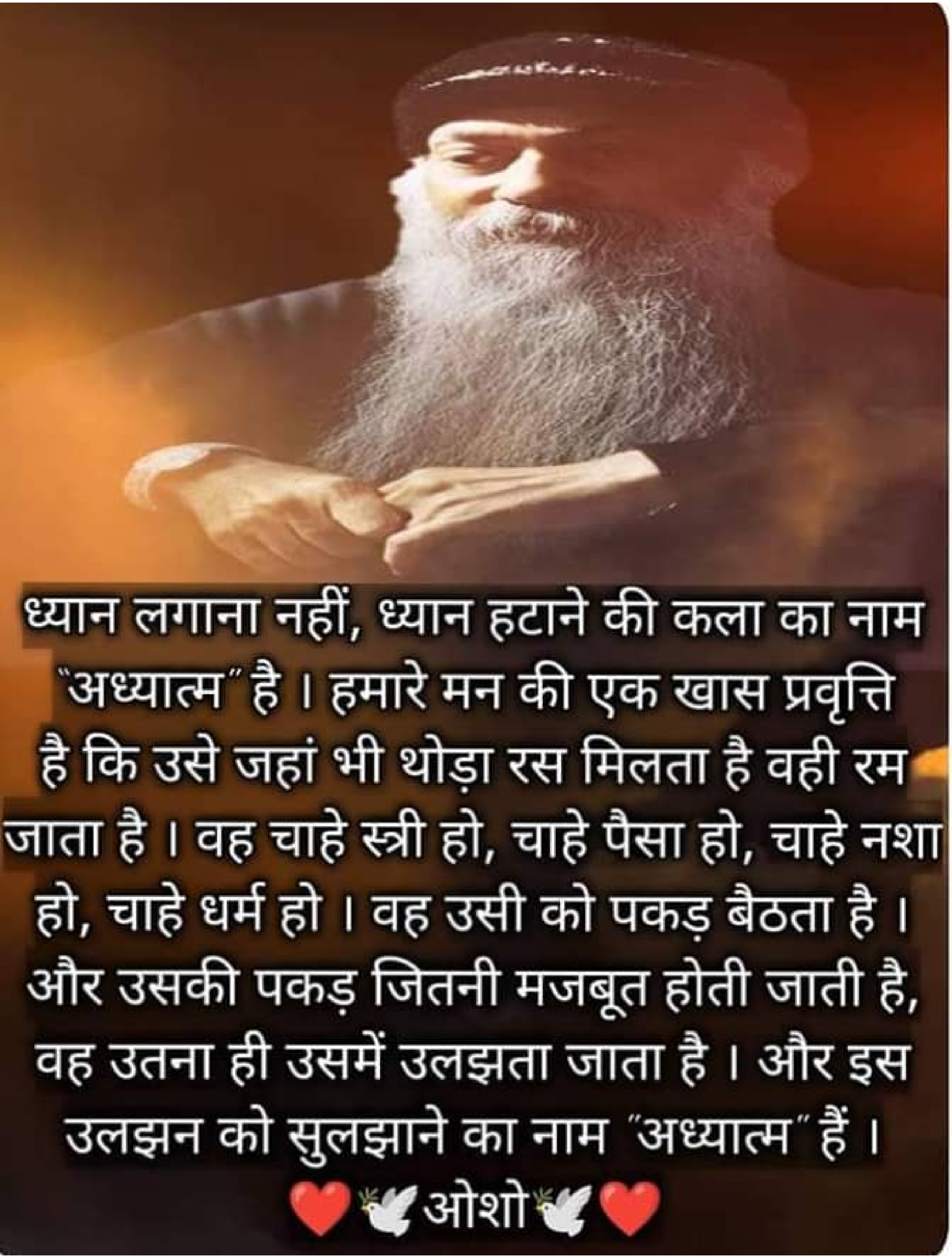
ध्यान लगाना नहीं, ध्यान हटाने की कला का नाम
"अध्यात्म" है । हमारे मन की एक खास प्रवृत्ति
है कि उसे जहां भी थोड़ा रस मिलता है वही रम
जाता है । वह चाहे स्त्री हो, चाहे पैसा हो, चाहे नशा
हो, चाहे धर्म हो । वह उसी को पकड़ बैठता है ।
और उसकी पकड़ जितनी मजबूत होती जाती है,
वह उतना ही उसमें उलझता जाता है । और इस
उलझन को सुलझाने का नाम "अध्यात्म" हैं ।
ओशो

CamScanner

10:00 pm 469 KB/s 33%

facebook

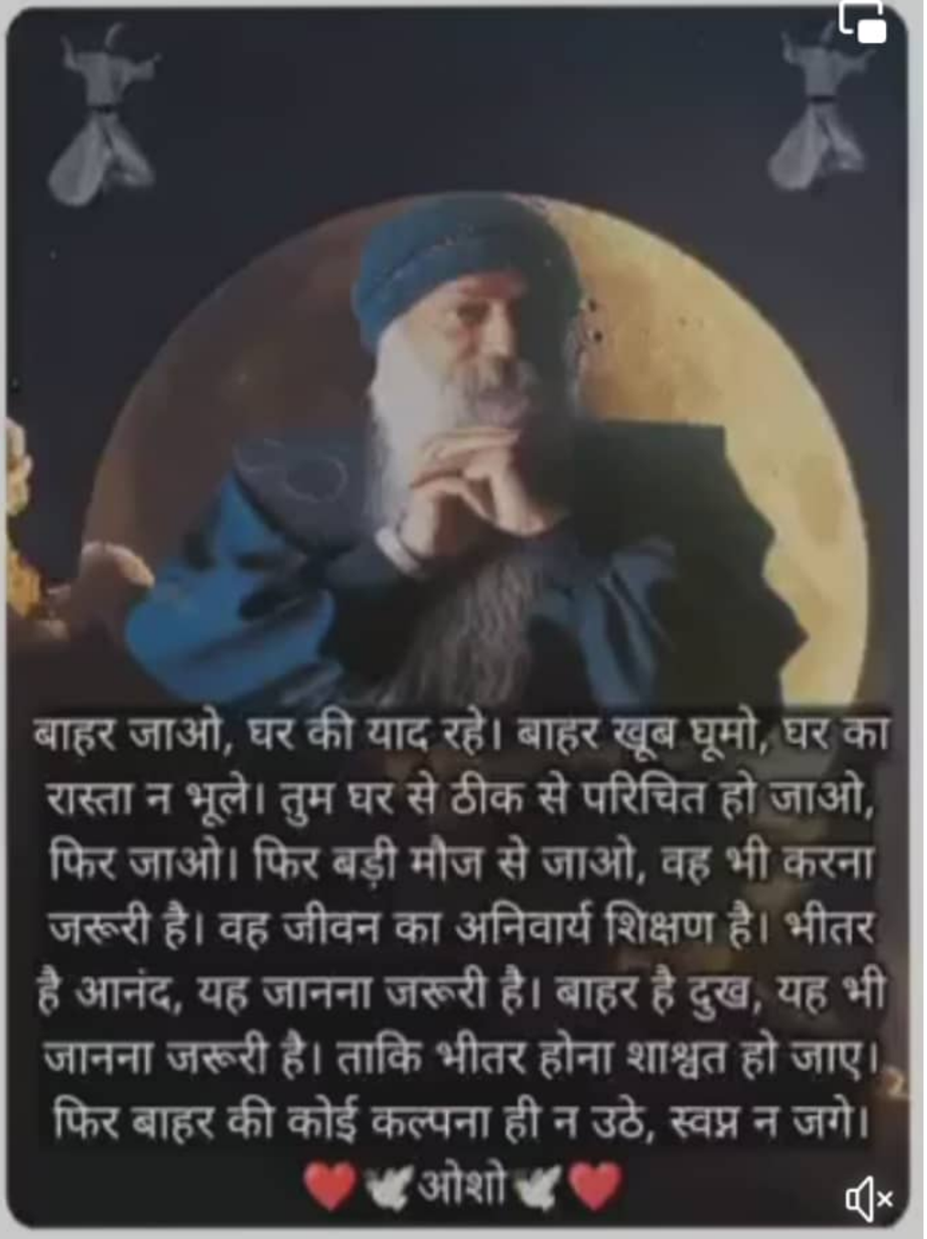

Osho Rishi Valley. Shimla and 36 others 1 share

Like Comment Share

आध्यात्मिक और प्रेरणादायक कहानियां

Arun Mishra · 3h ·

CamScanner

जिस दिन से अपने आप को जानने की प्रक्रिया शुरू हो जाती है उस दिन से धर्म समाज जात पात परंपराएं कर्मकांड विदा होने शुरू हो जाते है इन्होंने तो इंसान को इंसान ना रखा उनमें भेद भाव पैदा कर दिए एक दूसरे को शक के कटघरे मे खडा कर दिया भाई भाई के प्याले जुदा कर डाले ऊंच नीच छोटा बडा और निंदा ने सबकी निगाहें खराब कर डाली एक हम ही सही बाकी सब गलत यहां तक धारणाएं पनप गई साधु तो कोई न बन पाया मगर शैतान जरूर बन गए गलत हो तो नजर उठाकर आस पास खुली आंखों से देखो लोगों के जहन मे झांककर देखो उनके विचार सुनो यही कचरा भरा पड़ा मिलेगा

CS CamScanner

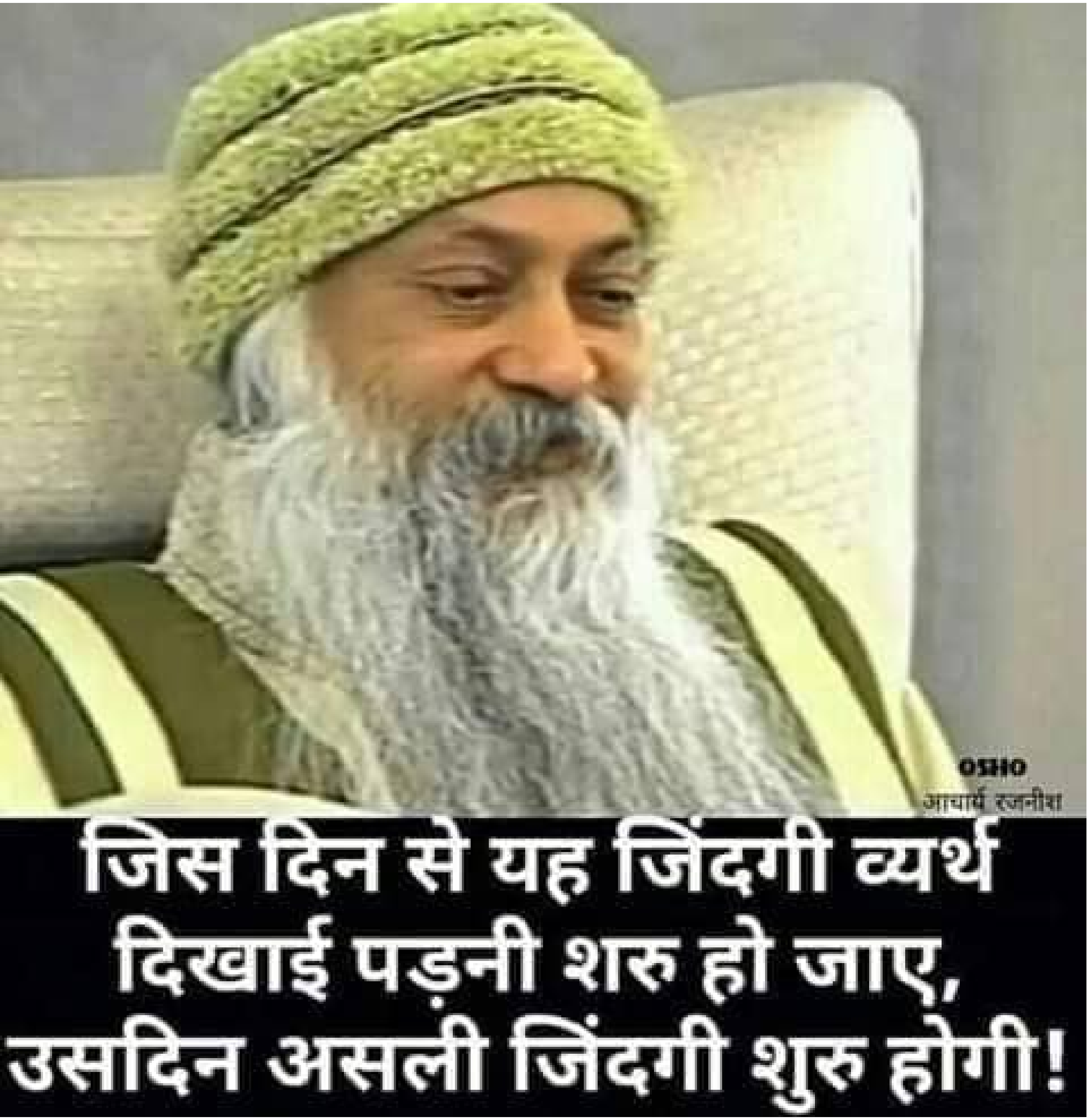
OSHO
आचार्य रजनीश
जिस दिन से यह जिंदगी व्यर्थ
दिखाई पड़नी शरु हो जाए,
उसदिन असली जिंदगी शुरु होगी!

CamScanner

मैं तुमसे कहना चाहता हूं, स्मरण रखना:
पाखंड इस जगत में सब से बड़ी दुर्गति है।
उससे और ज्यादा नीचे गिरने का
कोई उपाय नहीं है।
अगर हंस हो सको तो अच्छा—
बाहर-भीतर एक शुभ्र रंग।
अगर हंस न हो सको तो कम से कम
कौआ बेहतर बाहर-भीतर एक रंग,
कम से कम एक बात में तो हंस जैसा है;
यद्यपि रंग काला है,
मगर बाहर भीतर की एकता तो है।
मगर **बगुला** भगत मत होना।
वह सबसे बदतर अवस्था है।

ओशो दर्शन समूह

☆ अमी झरत बिगसत कंवल, ओशो ☆

CamScanner

9:58 pm 0 KB/s VoLTE 4G 34%

Like Comment Share

ओशो - जीवन-मृत्यु

Abhishekh Kumar · 7h ·

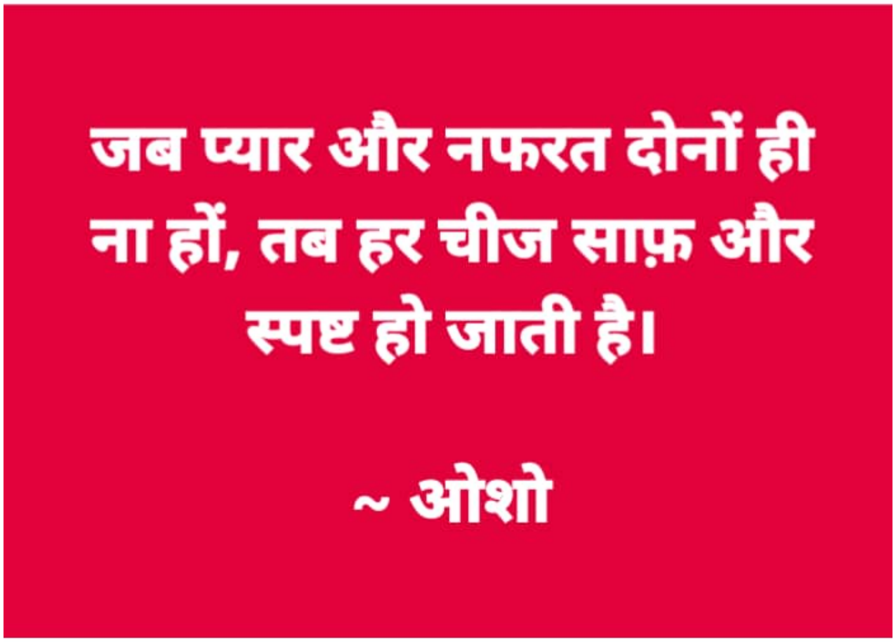

41 3 comments • 3 shares

Like Comment Share

Zest Mélange

Sponsored ·

Bring out your playful side with trendy playsuits crafted using breathable fabrics that feel like nature's hug

CamScanner

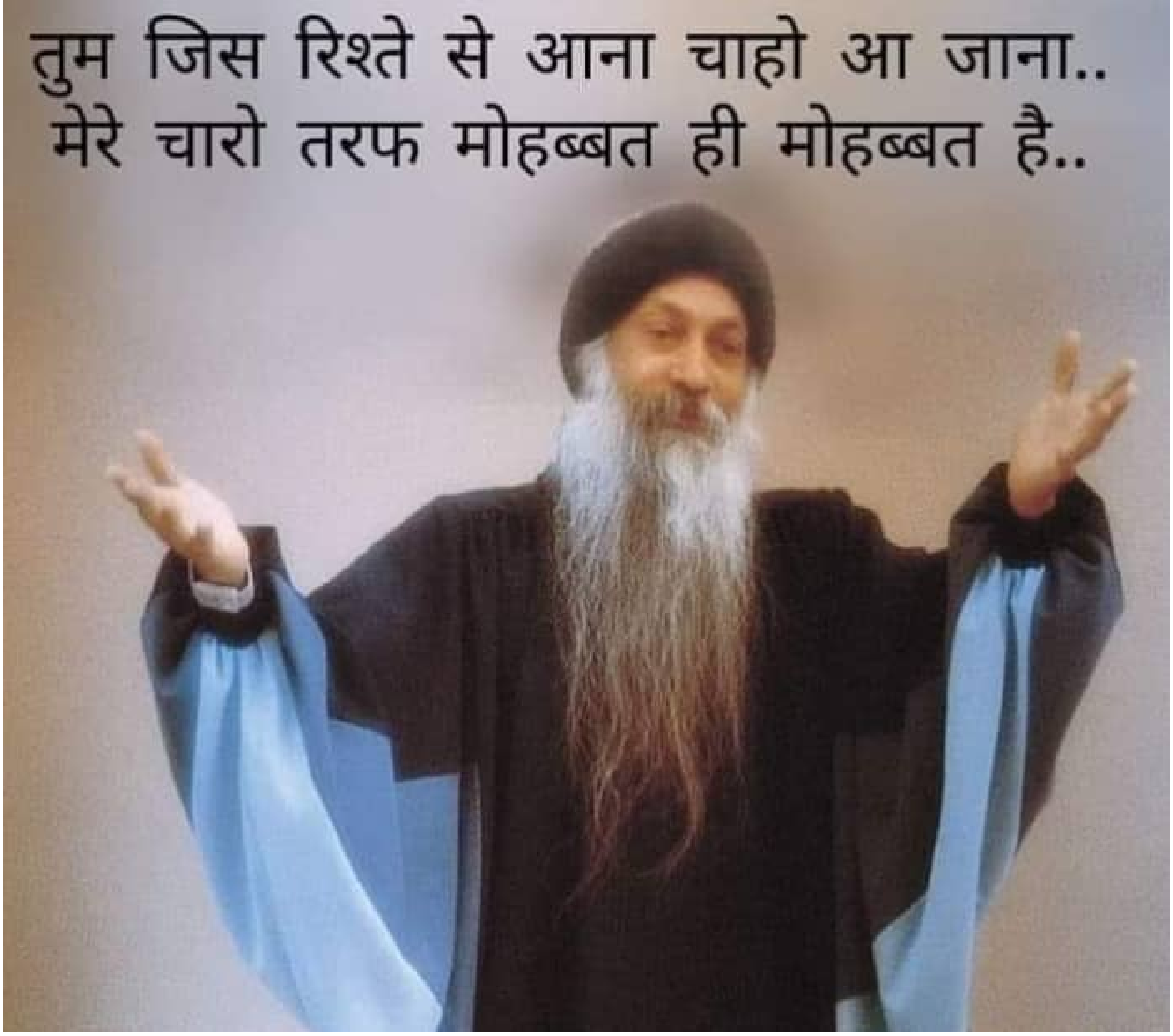

CamScanner

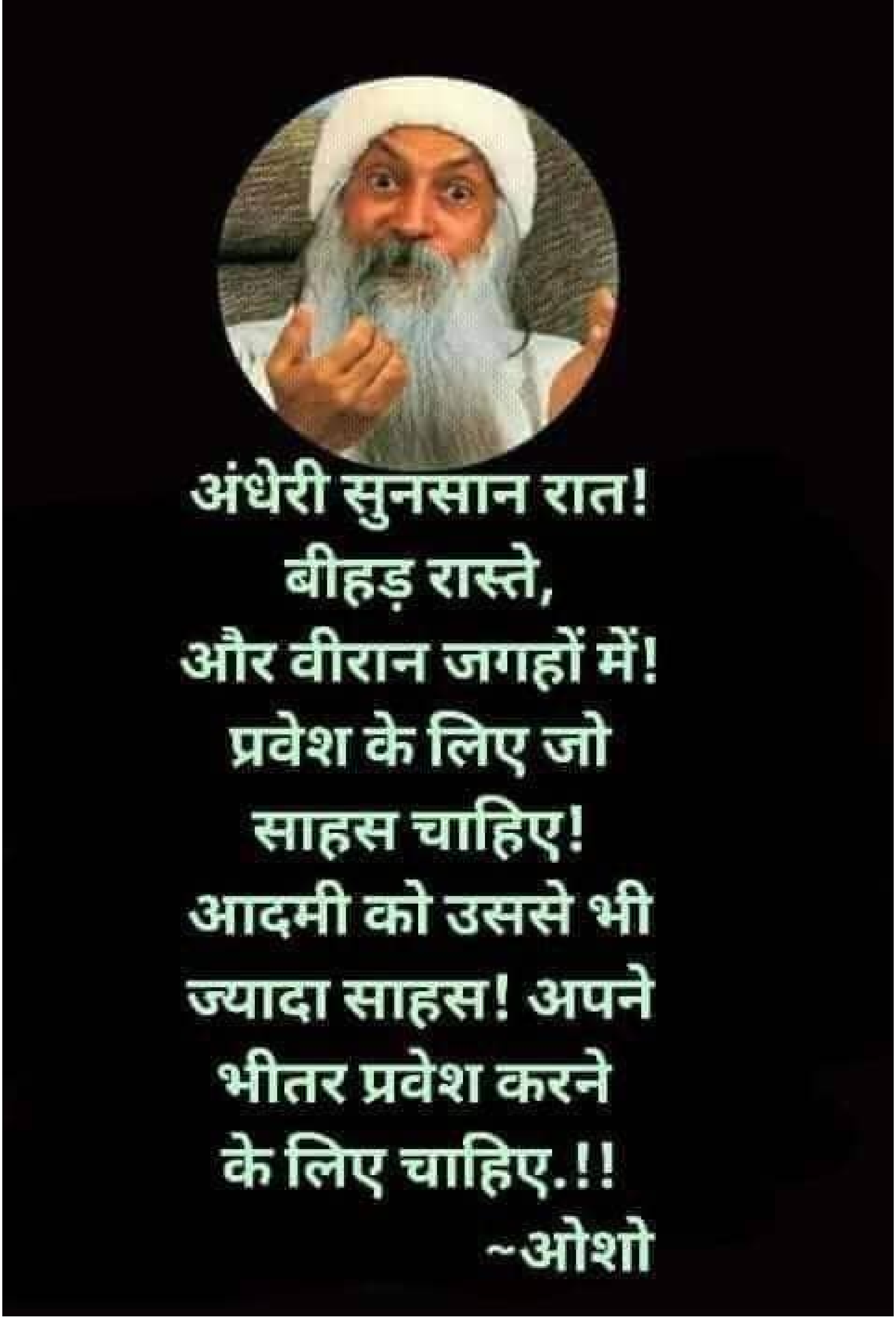

CS CamScanner

8:36 pm 0 KB/s 4G 43%

Like Comment Share

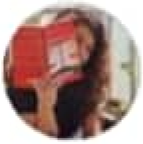

Osho Osho

42m ·

पीछे लौटकर देखो। जरा अपने उस जीवन की कहानी के पन्ने पलटो ! जरा अतीत में खोजबीन करो , खोदो। तुम पाओगे जो होना है वही होकर रहा है। तुम नाहक ही बीच में परेशान हो लिये। तुम्हारे बिना भी होकर रहता। तुम इतने परेशान ना होते तो भी होकर रहता। हार हुई...?

तुम परेशान ना होते , तो भी हो जाती। होनी थी तो हो जाती। तुम परेशानी बचा सकते थे हार नहीं बदल सकते थे । आदमी के हाथ में बस इतना ही, परेशानी बचा ले । दुख बचा ले , पीड़ा बचा ले , संताप बचा ले। जो होना है होकर रहेगा, जो होना है होता ही रहा है । लेकिन हमारा मन, इससे बगावत करना चाहता। क्योंकि जब हम कुछ करते हैं तभी हमें मजा आता। नशा आता, तभी लगता है मैं हूं। एक गीत मैं कल पढ़ रहा था..." प्रार्थना करनी मुझे है, और इसे स्वीकारना , संभव बनाना, सरल उतना ही तुम्हें है..! परमात्मा से प्रार्थना कर रहा है भक्त । " प्रार्थना करनी मुझे है और इसे स्वीकारना, संभव बनाना , सरल उतना ही तुम्हें है...! यही कि तुम जिस और आओ, चलूँ मैं भी...!!!

ओशो

CamScanner

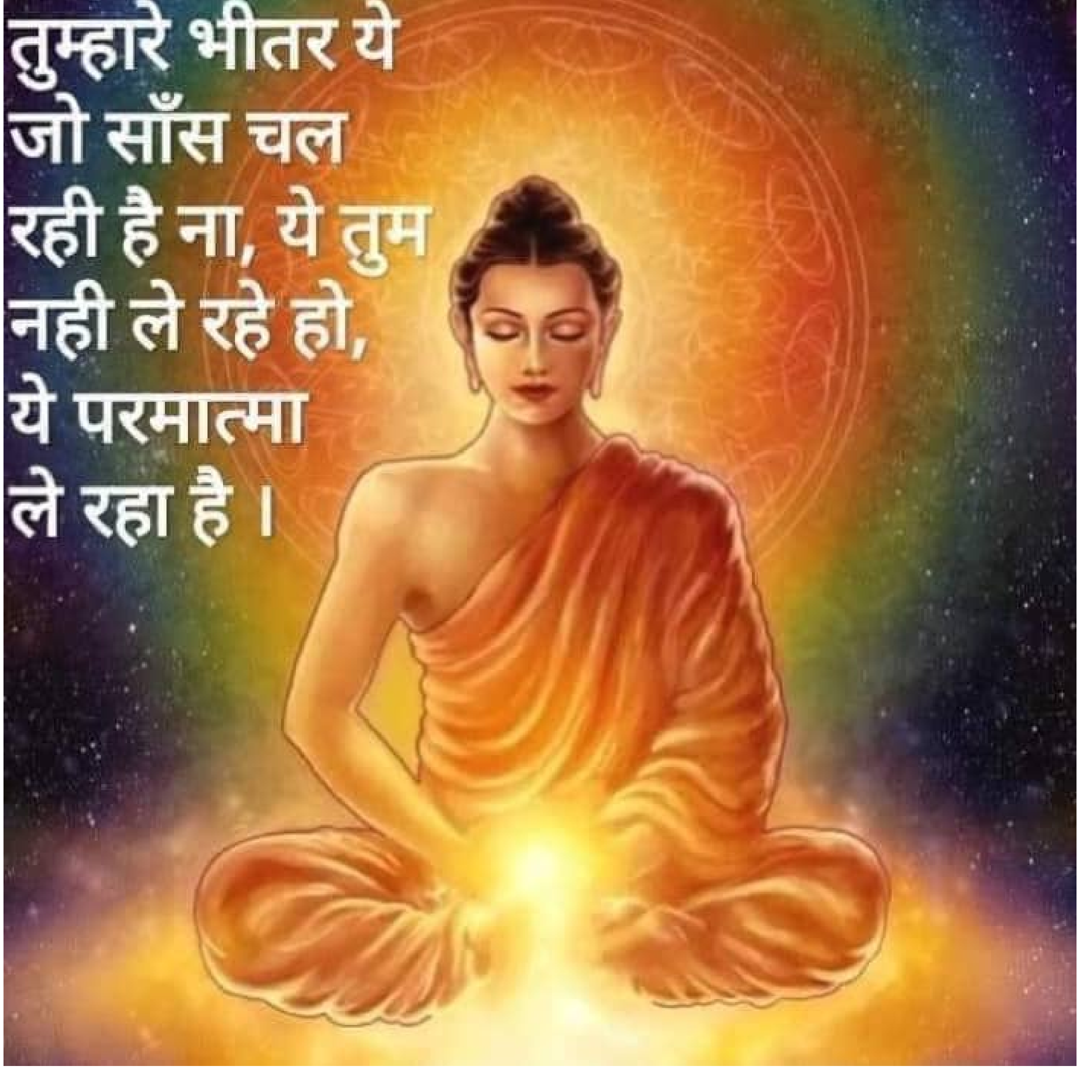

CamScanner

तिलोपा ने कहा : " **बांस की पोली पोंगरी की भांति अपने शरीर के साथ सहज हो रहो।** " बांस की पोंगरी, भीतर से बिल्कुल खाली। जब तुम विश्राम करो, तो इतना ही अनुभव करो कि तुम बांस की पोंगरी की तरह हो गए हो - भीतर से बिल्कुल पोले और खाली। और वास्तव में ऐसा ही है : तुम्हारा शरीर बांस की पोंगरी जैसा ही है, और भीतर से खाली है। तुम्हारी त्वचा, तुम्हारी हड्डियां, तुम्हारा रक्त, सब - कुछ बांस का ही हिस्सा है, और भीतर आकाश है, खालीपन है। जब तुम बिल्कुल मौन होकर, निष्क्रिय बैठे हो, जिह्वा तालु को छू रही है और शांत है, विचारों से कंपित नहीं हो रही, मन शिथिल होकर देख रहा है, किसी विशेष चीज की प्रतीक्षा नहीं कर रहा, तो बांस की पोली पोंगरी की तरह अनुभव करो - और अचानक अंनत ऊर्जा तुममें उंडेलने लगती है, तुम अज्ञात से, रहस्यमय से, दिव्य से भर जाते हो। बांस की पोली पोंगरी एक बांसुरी बन जाती है और परमात्मा उसे बजाने लगता है। **एक बार तुम खाली हो जाओ तो परमात्मा को तुममें प्रवेश करने में कोई बाधा नहीं बचती।** ओशो

CamScanner

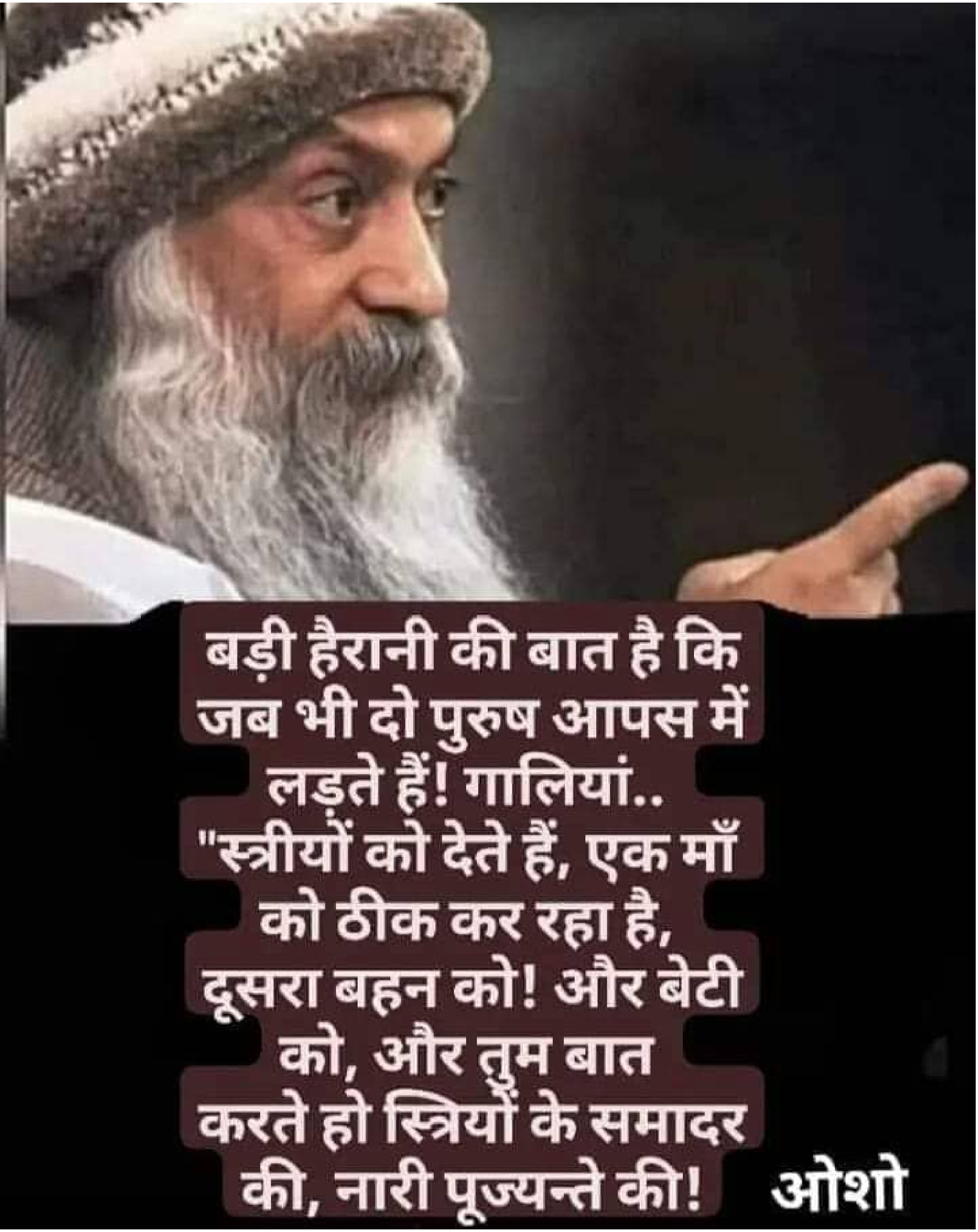
बड़ी हैरानी की बात है कि
जब भी दो पुरुष आपस में
लड़ते हैं! गालियां..
"स्त्रीयों को देते हैं, एक माँ
को ठीक कर रहा है,
दूसरा बहन को! और बेटी
को, और तुम बात
करते हो स्त्रियों के समादर
की, नारी पूज्यन्ते की!
ओशो

CamScanner

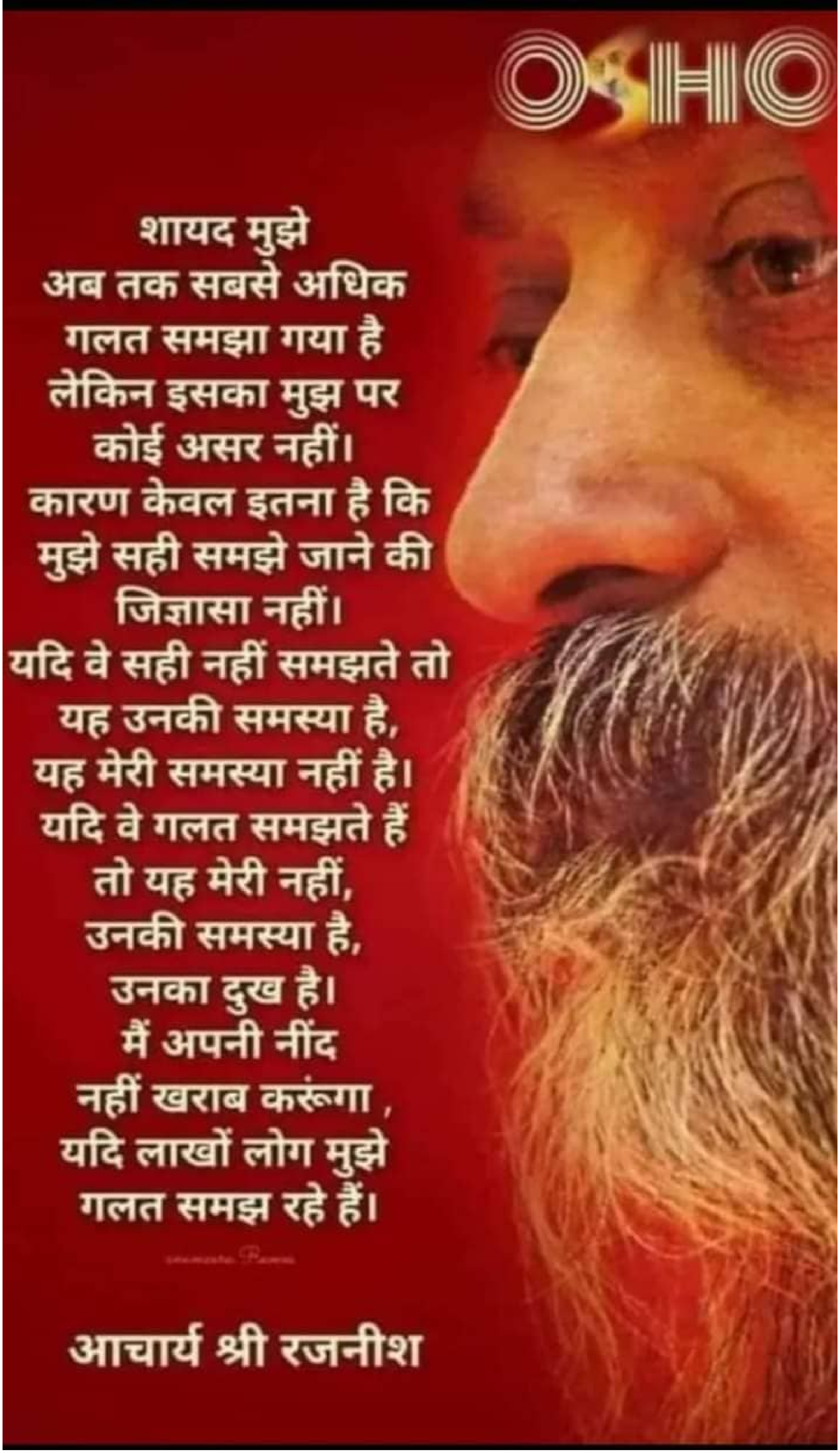

CS CamScanner

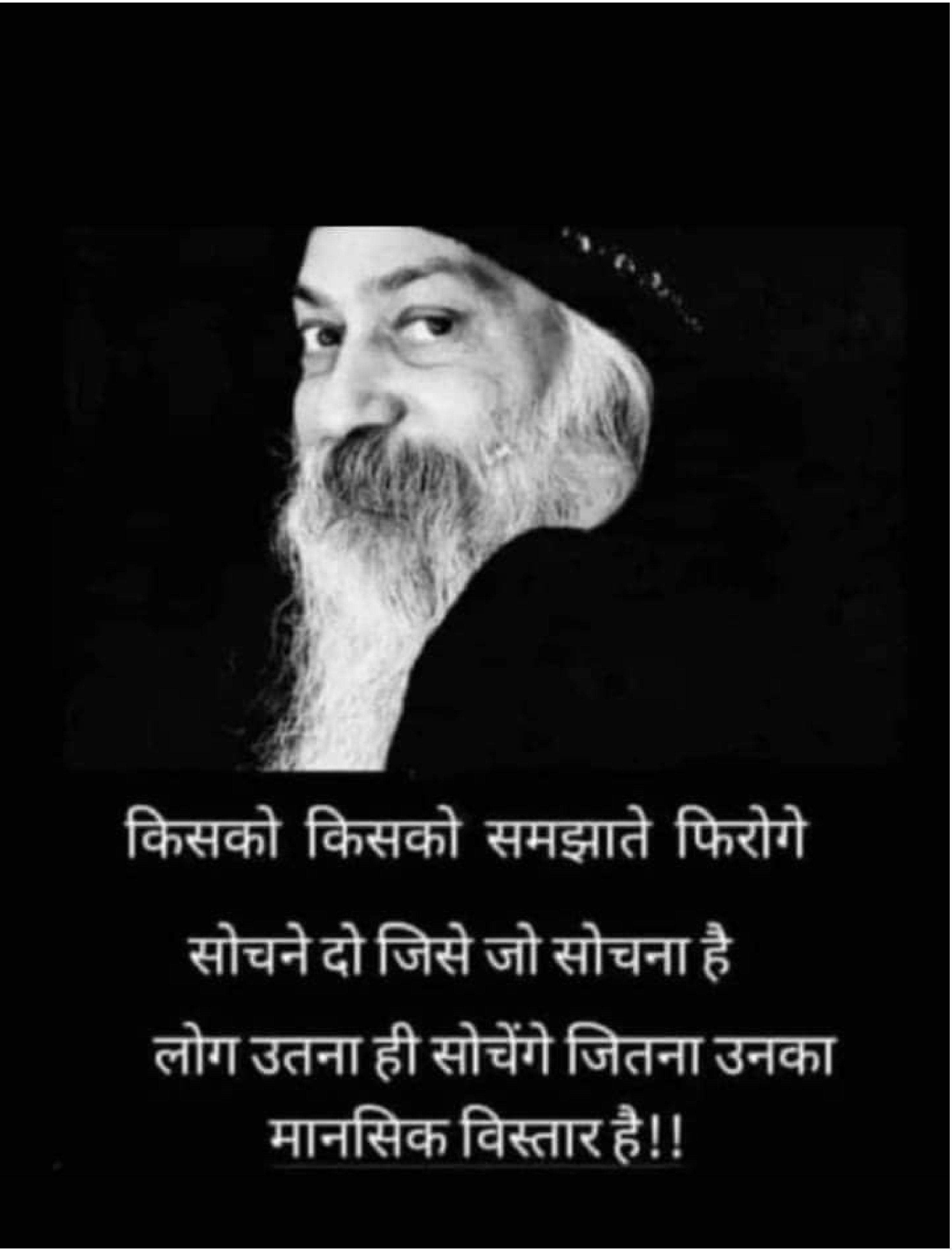

CamScanner

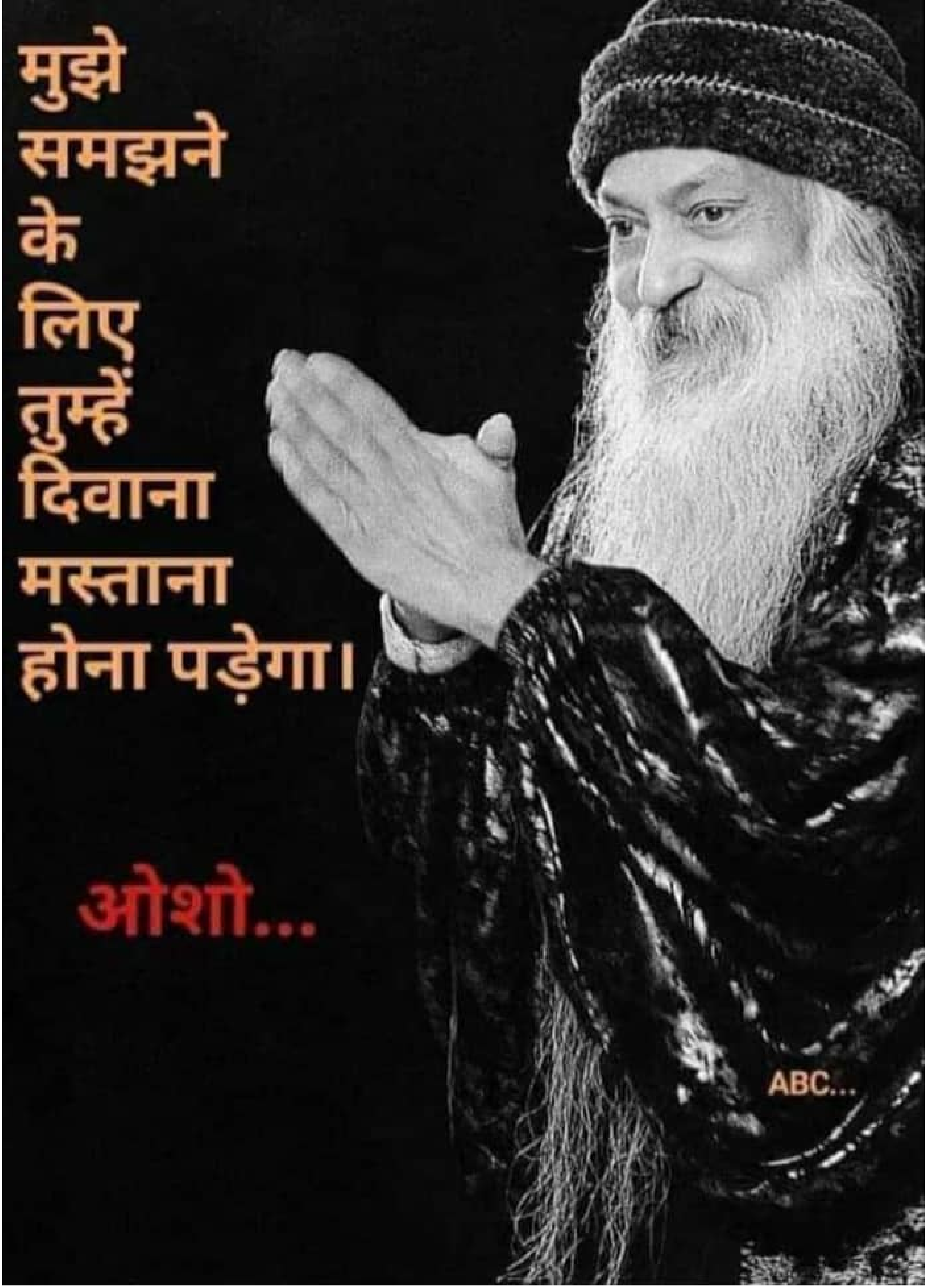

CamScanner

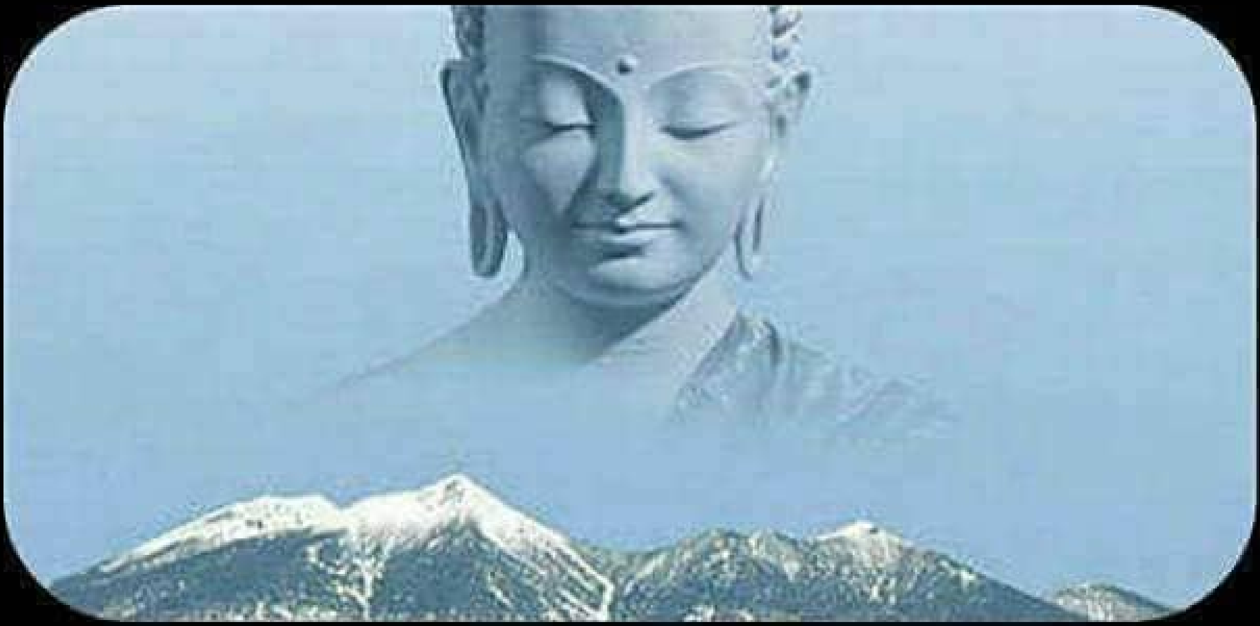

बुद्ध कहते थे,
जिसने अपने भीतर झांककर देखा,
उसके लिए सभी कुछ ब्रह्म हो जाता है।
और जो अपने बाहर ही देखता रहा,
धीरे– धीरे उसके भीतर भी पदार्थ ही रह
जाता मालूम पड़ता है। जिसकी दृष्टि बाहर है,
उसे भीतर भी आत्मा दिखाई नहीं पड़ेगी।
जिसकी दृष्टि भीतर है, उसे बाहर भी आत्मा
ही दिखाई पड़ती है।
वे ब्रह्म में ही विचरण करते हैं और ऐसे वे
परम– आनंदी हैं।
अब जिसका ब्रह्म में विचरण हो और
जिसकी निद्रा भी भगवत–चैतन्य में हो,
वहां दुख कैसा! वहां दुख का प्रवेश कैसा..!!!

निर्वाण उपनिषद ~ओशो (प्रवचन~7)

CamScanner

7:12 pm 0 KB/s 55%
facebook

दूसरों के संबंध में जो कहते हैं, वह हमारे ?! संबंध में ही कहा गया होता है। जब मैं किसी को मरते देखकर सोचता हूं कि मर गया, खो गया, मिट गया, तब मुझे जानना चाहिए कि मुझे अपने भीतर भी उसका पता नहीं है, जो नहीं मिटता है, नहीं मरता है, नहीं खोता है।

अर्जुन जब चिंता जाहिर कर रहा है कि ये मर जाएंगे, तो वह अपनी मृत्यु की ही चिंता जाहिर कर रहा है। वह यह जानता नहीं कि उसके भीतर भी कुछ है, जो नहीं मरता है। और जब कृष्ण कह रहे हैं कि ये नहीं मरेंगे, तब कृष्ण अपने संबंध में ही कह रहे हैं, क्योंकि वे उसे जानते हैं, जो नहीं मरता है।

हमारा बाहर का ज्ञान, हमारे भीतर के ज्ञान का ही विस्तार है। हमारा जगत का ज्ञान, हमारे स्वयं के ज्ञान का ही विस्तार है, एक्सटेंशन है। जो हम अपने संबंध में जानते हैं, उसे ही फैलाकर हम समस्त के संबंध में जान लेते हैं। और जो हम अपने संबंध में नहीं जानते, उसे हम किसी और के संबंध में कभी नहीं जान सकते। आत्म—ज्ञान ही ज्ञान है; बाकी सब ज्ञान गहरे अज्ञान पर खड़ा होता है। और अज्ञान पर खड़े जान का कोई भी भरोसा नहीं।

अब वह अर्जुन बड़े ज्ञान की बातें करता हुआ मालूम पड़ता है; वह बड़े धर्म की बातें करता हुआ मालूम पड़ता है; लेकिन उसे इतना भी पता नहीं है कि अरूप भी है कोई, निराकार भी है कोई ' अस्तित्व के आधार में कुछ है, जो अमृत है—इसका उसे कोई भी पता नहीं है। और जिसे अमृत का पता नहीं है, उसके लिए जीवन में अभी ज्ञान की कोई भी किरण नहीं फूटी। जिसे मृत्यु का पता है, वह घने अंधकार और अज्ञान में खड़ा है।

कसौटी यही है, अगर ज्ञात है आपको सिर्फ मृत्यु, तो अज्ञान आधार है; और अगर शात है आपको अमृत, नहीं जो मरता, तो ज्ञान आधार है। अगर मृत्यु का भय है मन में—चाहे दूसरे की, चाहे अपनी, इससे कोई भेद नहीं पड़ता—अगर मृत्यु का भय है मन में, तो गवाही है वह भय इस बात की कि आपको अमृत का कोई भी पता नहीं है।

CamScanner

7:11 pm 0 KB/s VoLTE 4G 55%

यह भी समझ लेना जरूरी है कि अर्जुन की चिंता एक और दूसरी ' सूचना भी देती है। अर्जुन कहता है, ये सब मर जाएंगे। इसका मतलब है कि अर्जुन अपने को भी रूप ही समझता है। . था ऐसा नहीं कहेगा। हम दूसरों के संबंध में जो कहते हैं, वह हमारे ?! संबंध में ही कहा गया होता है। जब मैं किसी को मरते देखकर सोचता हूं कि मर गया, खो गया, मिट गया, तब मुझे जानना चाहिए कि मुझे अपने भीतर भी उसका पता नहीं है, जो नहीं मिटता है, नहीं मरता है, नहीं खोता है।

अर्जुन जब चिंता जाहिर कर रहा है कि ये मर जाएंगे, तो वह अपनी मृत्यु की ही चिंता जाहिर कर रहा है। वह यह जानता नहीं कि उसके भीतर भी कुछ है, जो नहीं मरता है। और जब कृष्ण कह रहे हैं कि ये नहीं मरेंगे, तब कृष्ण अपने संबंध में ही कह रहे हैं, क्योंकि वे उसे जानते हैं, जो नहीं मरता है।

हमारा बाहर का ज्ञान, हमारे भीतर के ज्ञान का ही विस्तार है। हमारा जगत का ज्ञान, हमारे स्वयं के ज्ञान का ही विस्तार है, एक्सटेंशन है। जो हम अपने संबंध में जानते हैं, उसे ही फैलाकर हम समस्त के संबंध में जान लेते हैं। और जो हम अपने संबंध में नहीं जानते, उसे हम किसी और के संबंध में कभी नहीं जान सकते। आत्म—ज्ञान ही ज्ञान है; बाकी सब ज्ञान गहरे अज्ञान पर खड़ा होता है। और अज्ञान पर खड़े जान का कोई भी भरोसा नहीं।

अब वह अर्जुन बड़े ज्ञान की बातें करता हुआ मालूम पड़ता है; वह बड़े धर्म की बातें करता हुआ मालूम पड़ता है; लेकिन उसे इतना भी पता नहीं है कि अरूप भी है कोई, निराकार भी है कोई ' अस्तित्व के आधार में कुछ है, जो अमृत है—इसका उसे कोई भी पता नहीं है। और जिसे अमृत का पता नहीं है, उसके लिए जीवन में अभी ज्ञान की कोई भी किरण नहीं फूटी। जिसे मृत्यु का पता है, वह घने अंधकार और अज्ञान में खड़ा है।

कसौटी यही है, अगर ज्ञात है आपको सिर्फ मृत्यु, तो अज्ञान आधार है; और अगर शात है आपको अमृत, नहीं जो मरता, तो ज्ञान आधार है। अगर मृत्यु का भय है मन में—चाहे दूसरे की, चाहे अपनी, इससे कोई

CamScanner

7:10 pm 0 KB/s VoLTE 4G 56%

कृष्ण अर्जुन को कह रहे हैं कि तू जो कह रहा है कि ये मर जाएंगे, तो मैं तुझे कहता हूं? ये पहले भी थे, ये बाद में भी होंगे। तू इनके मरने की चिंता छोड़ दे। क्यों?

मुझे सुकरात की घटना याद आती है। सुकरात जब मर रहा था, तो उसके एक मित्र ने, क्रेटो ने पूछा कि आप मर जाएंगे, लेकिन आप चिंतित और परेशान नहीं दिखाई पड़ते! तो सुकरात ने कहा कि मैं इसलिए चिंतित और परेशान नहीं हूं? क्योंकि मैं सोचता हूं कि यदि मरकर मर ही जाऊंगा, तब तो चिंता का कोई कारण ही नहीं है। क्योंकि जब बचूंगा ही नहीं, तो चिंता कौन करेगा! दुःखी कौन होगा! पीड़ित कौन होगा! कौन जानेगा कि मैं मर गया! अगर मैं मर ही जाऊंगा, तो जानने को भी कोई नहीं बचेगा कि मैं मर गया। जानने को भी कोई नहीं बचेगा कि मैं कभी था। जानने को कोई नहीं बचेगा कि सुकरात जैसा कुछ था। इसलिए चिंता का कोई कारण नहीं है। और अगर नहीं मरा, अगर नहीं मरा मरकर भी, तब तो चिंता का कोई कारण ही नहीं है। और दो ही संभावनाएं हैं—सुकरात ने कहा—या तो मैं मर ही जाऊंगा और या फिर नहीं ही मरूंगा। और तीसरी कोई भी संभावना नहीं है। इसलिए मैं निश्चित हूं।

कृष्ण अर्जुन को कह रहे हैं कि जो मरने वाला है, वह तेरे बचाने से नहीं बचेगा। और जो नहीं मरने वाला है, वह तेरे मारने से नहीं मर सकता है। इसलिए तू व्यर्थ की चिंता में पड़ रहा है। इस व्यर्थ की चिंता को छोड़।

यह शायद रूप और अरूप के बीच जो जगत का फैलाव है, अगर हम रूप की तरफ से पकड़े, तब भी चिंता व्यर्थ है; क्योंकि जो मिट ही रहा है, मिट ही रहा है, मिट ही रहा है, मिट ही जाएगा, पानी पर खींची गई लकीर है। खिंच भी नहीं पाती और मिटनी शुरू हो जाती है। हाथ उठ भी नहीं पाता और मिट गई होती है। अगर हम अरूप से सोचें, तो जो नहीं मिटेगा, नहीं मिटेगा, नहीं मिटेगा, वह कभी मिटा नहीं है। लेकिन अरूप से— हमारा कोई परिचय नहीं है, अर्जुन का भी कोई परिचय नहीं है।

यह भी समझ लेना जरूरी है कि अर्जुन की चिंता एक और दूसरी '

CamScanner

7:09 pm 0 KB/s VoLTE 4G 56%

हेराक्लतु ने कहा है, यू कैन नाट स्टेप ट्वाइस इन दि सेम रिवर—एक ही नदी में दोबारा नहीं उतर सकते। यह भी जरा ठीक नहीं है, बिलकुल ठीक नहीं है। एक ही नदी में एक बार भी उतरना बहुत मुश्किल है, दोबारा उतरना तो असंभव है। एक नदी में एक बार भी उतरना मुश्किल है! क्योंकि जब पैर आपका नदी की सतह को छूता है, तब नीचे नदी भागी जा रही है। जब पैर और थोड़ा नीचे जाता है, तब ऊपर नदी भागी जा रही है। जब पैर और नीचे जाता है, तब नदी भागी जा रही है। आपका पैर नदी में एक फीट उतरता है, उस बीच नदी का सारा पानी भागा जा रहा है। जब आप ऊपर छुए थे, तब नीचे का पानी भाग गया है। जब आप नीचे पहुंचें, तब तक ऊपर का पानी नहीं है।

आकृति तो नदी की तरह भाग रही है। लेकिन आकृति हमें थिर दिखाई पड़ती है। समानता की वजह से तादात्म्य मालूम होता है। वही है जो कल देखा था, वही है जो सुबह देखा था, वही है। प्रतिपल आकृति बदली जा रही है।

यह आकृतियों का जो जगत, यह रूप का जो जगत है, अर्जुन। इस रूप के जगत के प्रति चिंतित है बहुत। हम भी चिंतित हैं बहुत। जो मर ही रहा है प्रतिपल, उसके लिए वह कह रहा है कि ये मर जाएंगे तो क्या होगा? जो मर ही रहा है, जिसे बचाने का कोई उपाय नहीं है, उसके लिए वह चिंतित है; वह असंभव के लिए चिंतित है। और जो असंभव के लिए चिंतित है, वह चिंता से कभी मुक्त नहीं हो सकता। असंभव की चिंता ही विक्षिप्तता बन जाती है।

आकृति को सदा बचाना तो दूर, क्षणभर भी बचाना मुश्किल है। एक आकृति का जगत है—रूप का, ध्वनि का, किरण का, तरंगों का—वह कंपित है पूरे समय। सब बदला जा रहा है। अभी हम यहां इतने लोग बैठे हैं, हम सब बदले जा रहे हैं, सब कंपित हैं, सब तरंगायित हैं, सब वेवरिंग हैं, सब बदल रहा है। इस बदलाहट के जगत को, जो भी सोचता हो बचाने की आकांक्षा, वह असंभव आकांक्षा कर रहा है। असंभव आकांक्षाओं के किनारे टकराकर ही मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है।

कृष्ण अर्जुन को कह रहे हैं कि तू जो कह रहा है कि ये मर जाएंगे, तो मैं तुझे कहता हूं? ये पहले भी थे, ये बाद में भी होंगे। तू इनके मरने की

CamScanner

7:06 pm 0 KB/s VoLTE 4G 56%

बुद्ध कहा करते थे—कोई उनसे मिलने आता, तो वे उससे कहा करते थे—कि तुम जब मिलने आए थे और जब तुम विदा होओगे, तो वही नहीं होओगे जो मिलने आया था।

घंटेभर में बहुत कुछ बदल जाता है। एक आदमी सत्तर साल में कोई दस बार पूरा का पूरा बदल जाता है। हर सात साल में शरीर के सब अणु—परमाणु बदल जाते हैं। प्रतिक्षण शरीर में कुछ मर रहा है और बाहर फेंका जा रहा है। प्रतिक्षण शरीर में नया जीवित हो रहा है, नया आ रहा है, भोजन से आप नया डाल रहे हैं। और प्रतिपल शरीर से बहुत कुछ बाहर फेंका जा रहा है। सात साल में पूरी शरीर बदल जाता है। लेकिन हम कहे चले जाते हैं कि मै वही हूं। आकृति की समानता, आकृति की एकता बन जाती है।

फिल्म देखते हैं कभी आप। अगर परदे पर फिल्म को धीमे—धीमे चलाया जाए, तो आप बहुत हैरान हो जाएंगे। इतना हाथ, पैर से इतना ऊपर सिर तक उठे, इतने हाथ के उठने के लिए हजारों चित्र लेने पड़ते हैं। फिर वे चित्र एकदम से तेजी से चलाए जाते हैं। एक चित्र इतना ऊपर दूसरा और ऊपर, तीसरा और ऊपर, चौथा और ऊपर। इतनी तेजी से घूमने से हाथ उठता हुआ मालूम पड़ता है। । लेकिन अगर उन्हें धीमे चलाया जाए तो आप पाएंगे कि हाथ के हजार चित्र लेने पड़े हैं।

ठीक ऐसे ही, जब हम एक व्यक्ति को देख रहे हैं, तो हम एक ही व्यक्ति को नहीं देख रहे हैं। जितनी देर हमने देखा, उस बीच हजार चित्र हमारी आंखों ने ग्रहण किए हैं। भीतर चित्र संश्लिष्ट हुए और एक आकृति हमारे मन में बनी। जब तक वह बनी है, तब तक बाहर सब बदल गया है।

विराट आकाश में तारे दिखाई पड़ते हैं। जो तारे हमें दिखाई पड़ते हैं, वे वहीं नहीं होते हैं, जहां दिखाई पड़ते हैं। वहा कभी थे। क्योंकि जो निकटतम तारा है, उससे भी हम तक आने में कोई चार साल रोशनी को लग जाते है। और रोशनी धीमी नहीं चलती। रोशनी चलती है एक सेकेंड में एक लाख छियासी हजार मील। एक लाख छियासी हजार मील प्रति सेकेंड से प्रकाश की किरण यात्रा करती है हम तक। चार साल लगते हैं, निकटतम तारे से हम तक पहुंचने में। जब हमारे पास किरण पहुंचती है, तो हमें तारा वहा दिखाई पडता है. जहां चार साल पहले था। इस बीच

CamScanner

5:33 pm 4 KB/s VoLTE 4G 71%
facebook
Like Comment Share

Osho Osho
20h ·

गरीब की सबसे बड़ी जो दुविधा है, वह है प्राइवेसी का अभाव--भोजन नहीं, कपड़े नहीं। गरीब का सबसे बड़ा दुख है कि उसकी प्राइवेट जिंदगी नहीं हो सकती। वह अगर अपनी पत्नी से भी बात कर रहा हो तो भी पड़ोसी सुनता है। वह अपनी पत्नी से भी प्रेम नहीं कर सकता बिना इसके कि उसके बेटे-बेटी जान लें। गरीब की सबसे बड़ी तकलीफ है कि वह अकेले में नहीं हो सकता। उसकी प्राइवेसी जैसी कोई चीज नहीं है।

समृद्धि का एकमात्र सुख है कि आप अकेले में हो सकते हैं और दुनिया और अपने बीच स्पेस पैदा कर सकते हैं, जगह पैदा कर सकते हैं, बड़ी जगह पैदा कर सकते हैं। और जितनी आपके और दूसरों के बीच जगह बढ़ जाती है, उतना ही चित्त शांत होता है। दूसरे की मौजूदगी तनाव लाती है। यह आपने कभी खयाल न किया होगा कि दूसरा कुछ भी न करे, सिर्फ मौजूद हो जाए, तो तनाव शुरू हो जाता है।

आप रास्ते पर चले जा रहे हैं अकेले, आप दूसरे आदमी होते हैं। रास्ता सन्नाटा है, कोई भी नहीं है, आप बिलकुल दूसरे आदमी होते हैं। हो सकता है, अपने से बात कर रहे हों। मौज में आ गए हों, गीत गुनगुना रहे हों। वह गीत जो अपने बेटे को आपने कभी नहीं गुनगुनाने दिया। लेकिन दो आदमी निकल आए सड़क पर, बस आप बदल गए। सिर्फ दो आदमियों की मौजूदगी आपको तत्काल टेंस कर देती है।

अगर बहुत ठीक से समझें तो दि अदर इज़ दि टेंशन--वह जो दूसरा है, वही तनाव है। वह जो दूसरा है। और वह दूसरे की मौजूदगी बढ़ती जा रही है। चारों तरफ कोई न कोई मौजूद है। सब तरफ कोई न कोई मौजूद है। कहीं भी चले जाएं, कोई न कोई मौजूद है। अकेले होने का कोई उपाय नहीं। इससे एक गहरा तनाव आदमी के मन पर बैठ रहा है। वह तनाव बढ़ती हुई संख्या का सबसे खतरनाक परिणाम है।

ओशो - एक एक कदम

CamScanner

CamScanner

अगर इजराइल की जमीन
हमास की है तो ईरान भी
पारसियों का है और
अफगानिस्तान,पाकिस्तान
बांग्लादेश भारत का है
कहने की हिम्मत दिखाइये..!

CamScanner

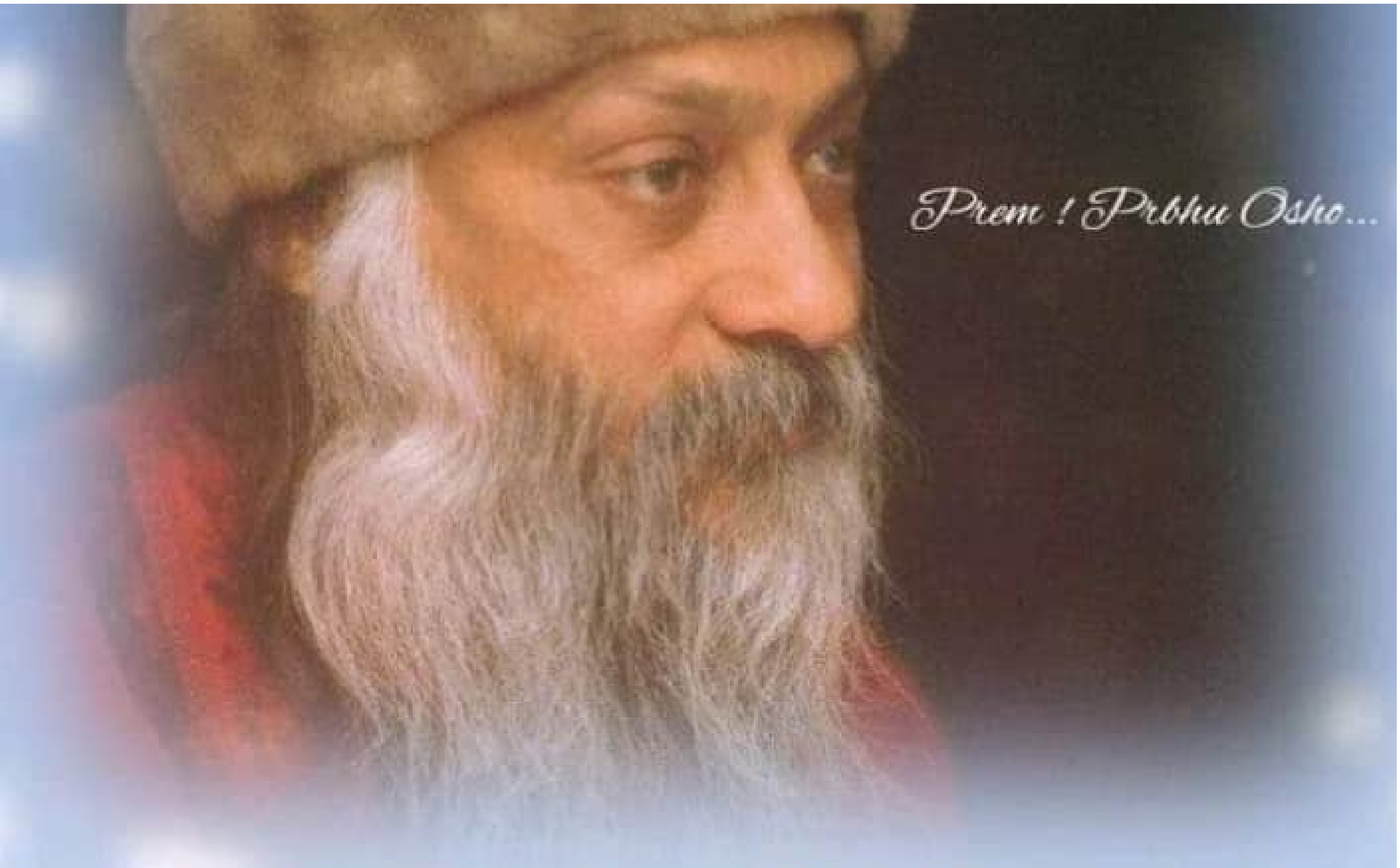

एकांत , मौन , शून्य होने की कला में निष्णात होओ, नहीं तो यह जाल जन्मों से चल रहे हैं। यह कोई पहला जन्म है तुम्हारा ? जन्म-जन्म हो गए , यही धंदा----गोरखधंधा करते-करते !

जो व्यक्ति अपने एकांत में आनंदित है, वह दूसरे के साथ जुड़ कर आनंद को हजार गुना कर लेता है। दोनों का आनंद गुणनफल हो जाता है। कई गुना हो जाता है ।

ओशो...

CS CamScanner

5:27 pm 0 KB/s 4G 72%

मर जाएगी प्रार्थना।

प्रार्थना बड़ी कोमल है, तन्वंगी है। यह राम राम का पत्थर तुमने पटका कि मर जाएगी। तुम कोशिश मत करना। ही, भीतर से उठने लगे राम राम, अनायास हो जाए, तो हो जाने देना। फिर ठीक है। अपने से जो हो, ठीक है, किया जाए, वही गलत है। प्रार्थना के जगत में यह नियम है अपने से जो हो जाए।

कभी कभी अनर्गल शब्द उठ सकते हैं। बच्चे, जैसे छोटे छोटे बच्चे कुछ भी शब्द पकड़ लेते हैं, दोहराए चले जाते हैं—कभी वैसा हो सकता है। प्रार्थना में तो निर्दोष बच्चे जैसा हो जाना है। या जैसे कभी तुमने शास्त्रीय संगीतज्ञों को आलाप भरते देखा है, वैसा आलाप पैदा हो सकता है जिसमें कोई शब्द भी नहीं है, सिर्फ स्वर है। या सब सन्नाटा हो सकता है। प्रार्थना बड़ी है, सबको समा लेती है, किसी एक घटना में सीमित नहीं है। कभी सन्नाटा हो जाएगा इतना कि हाथ पैर भी न हिलेंगे। और कभी ऐसा हो जाएगा ऐसी ऊर्जा उतरेगी कि नाचे बिना नहीं चलेगा। फिर जैसा हो! कभी बुद्ध की तरह बैठना हो जाए, तो बैठ जाना, कभी मीरा की तरह नाचना हो जाए, तो नाच लेना। चेष्टा करके नाचना भी मत, चेष्टा करके बैठना भी मत। जब तक कृत्य है तब तक प्रार्थना नहीं, क्योंकि कृत्य में कर्ता है। और कर्ता में अहंकार है। तुम सिर्फ खुल जाना। जैसे सुबह की हवा आती है और फूल को नचा जाती है। और सुबह का सूरज उगता है और फूल की पंखुडिया खिल जाती हैं—बस ऐसे! तुम उपलब्ध रहना। तुम परमात्मा कुछ करना चाहे तो होने देना, कुछ न करना चाहे तो चुपचाप जैसे हो वैसे ही रह जाना। जल्दी ही तुम्हें प्रार्थना का स्वाद लगने लगेगा।

प्रार्थना स्वाद है। शब्द नहीं, विचार नहीं, प्रत्यय नहीं, सिद्धांत नहीं, प्रार्थना स्वाद है। तुम्हारे भीतर एक मिठास भर जाएगी। जैसे भीतर कोई मधुकलश फूट गया, रोएं रोएं में मस्ती आ गयी। आंखें गुलाबी हो जाएंगी, जैसे नशे में हो जाती हैं। पैर कहीं के कहीं पड़ेंगे, जैसे शराबी के पड़ते हैं। इन क्षणों की प्रतीक्षा करो। ये क्षण आते हैं। ये छोटे छोटे क्षण हैं। और अगर तुम पकड़ लो क्षण को, तो क्षण बड़ा हो जाएगा।
ओशो

CamScanner

5:21 pm 0 KB/s VoLTE 4G 73%

तुम शायद सोचते होओगे मैं तुम्हें कहूंगा कि ‘रघुपति राघव राजाराम’ यह प्रार्थना है। कि ‘ अल्लाह ईश्वर तेरे नाम’, यह प्रार्थना है। यह सब राजनीतिया हैं। इन सबके पीछे खेल हैं। और गंदे खेल हैं। मस्जिद से उठती अजान और मंदिर से उठते घंटियों का स्वर, ये सब खेल हैं, क्रियाकाड़ हैं। वह पुजारी जो मंदिर में घंटा बजा रहा है, उसके भीतर कुछ भी नहीं बज रहा है। और जिसने मस्जिद में जाकर अजान की है, उसके भीतर परमात्मा की कोई स्मृति नहीं, कोई स्मरण नहीं है। एक कृत्य दोहरा रहा है। सदियों से दोहराया गया है। संस्कार है उसे दोहराने का, दोहरा लेता है। मूर्ति देखता है, झुक जाता है, क्योंकि बचपन से झुकता रहा है। एक तरह की संस्कारबद्ध गुलामी पैदा हो गयी। यह प्रार्थना नहीं। चुप्पी के क्षण, मौन के क्षण, सौंदर्य भाव—बोध के क्षण, प्रीति की अनुभूति, मैत्री का भाव, तन्मयता, विमुखता इन शब्दों से मैं कहना चाहता हूं कि प्रार्थना क्या है। इन सारे शब्दों में भी पूरी नहीं हो जाती, बस इन शब्दों में थोड़ेसे इशारे मिलते हैं। तुम जानकर चकित होओगे, हिब्रू भाषा में प्रार्थना के लिए कोई शब्द नहीं।

रोओ, हंसों, गाओ, नाचो, पुकारो, पर प्रार्थना के लिए कोई शब्द नहीं। क्योंकि प्रार्थना शब्दातीत है। हिब्रू भाषा ने सदव्यवहार किया, प्रार्थना को कोई शब्द नहीं दिया। प्रार्थना क्या क्या हो सकती है, उसकी तरफ इशारे किये। रोओ, गाओ, नाचो, हंसों, आनंदमग्न हो पुकारो, झुकों, गिरो, असहाय हो जाओ, अवाक हो जाओ, विमुग्ध बनो, तन्मय हो जाओ, पर प्रार्थना के लिए कोई शब्द नहीं। इन सब में प्रार्थना चुक नहीं जाती, इन सबसे सिर्फ इशारे होते हैं। प्रार्थना इन सबसे बड़ी है। प्रार्थना इतनी विराट है जितना विराट आकाश है। प्रार्थना उतनी ही बड़ी है जितना बड़ा परमात्मा है। प्रार्थना परमात्मा से छोटी नहीं है, क्योंकि प्रार्थना के क्षण में तुम परमात्मा के साथ एक हो जाते हो। प्रार्थना का क्षण सेतु है। जोड़ता है। तुम खो गये। भक्त नहीं बचता। जब भक्ति परिपूर्ण होती है, भक्त नहीं बचता। और जब तक भक्त बचता है तब तक भक्ति परिपूर्ण नहीं है।

शांडिल्य ने इसी को भक्ति के दो रूप कहा। एक को गौणी भक्ति कहा और एक को पराभक्ति कहा। जब तक भक्त बचता है, तब तक गौणी भक्ति। नाममात्र को भक्ति। वस्तुत: नहीं, कहने मात्र को भक्ति। भक्ति

CamScanner

11:01 pm 18 KB/s 17%

facebook

12 5 comments

Like Comment Share

Divine Mitra ~ दिव्य मित्र (O'sho)

रीतू चौहान · 3h ·

🎭🎭*जो_आपके शब्दों का "मूल्य" नहीं समझता..*
उसके सामने मौन रहना ही बेहतर है....।🎭🎭

CamScanner

11:00 pm 15 KB/s
18%
#sufi_lover_0
प्रेम पियाला जो पिये,
शीश दक्षिणा देय।
लोभी सीस न दे सके,
नाम प्रेम का लेय।

CamScanner

10:54 pm
19%
मानव
देह ही वह
एक मात्र रथ
हैं जिस पर सवार
होकर आत्मा परमात्मा
तक पहूंच सकती हैं|
ओशो

CamScanner

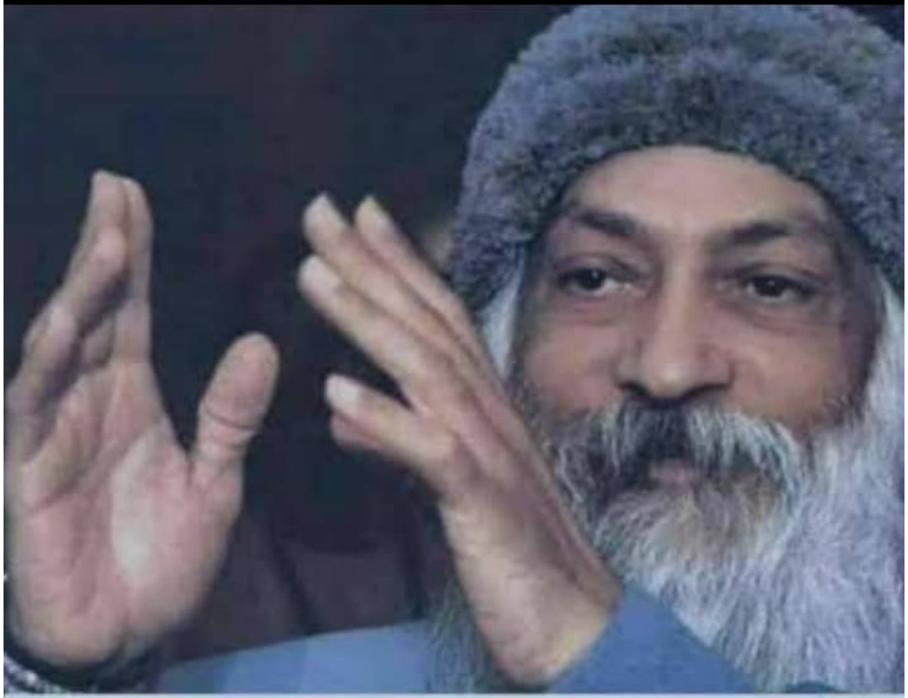

जिस व्यक्ति को जीवन परिवर्तन करना हो :
उसके लिए पहला सूत्र है ;
दूसरों का ' निर्णय ' और ' विचार ' छोड़ देना चाहिए।
इस जगत में कोई भी विचारणीय नहीं है ,
सिवाय आपके।
आप अकेले विचारणीय हैं ,अपने लिए ।
और अगर कोई अपने पर विचार करना शुरू करेगा
तो उसे दिखाई पड़ेगा
कि जिन बुराइयों से उसने दूसरों की निंदा की है ,
वह बहुत बड़ी मात्रा में उसमें मौजूद हैं।
और जिन भलाइयों की उसने दूसरों में आकांक्षा की
उनका उसके भीतर कोई पता नहीं है। ओशो (Dr. Sohan Lal Narang)

CamScanner

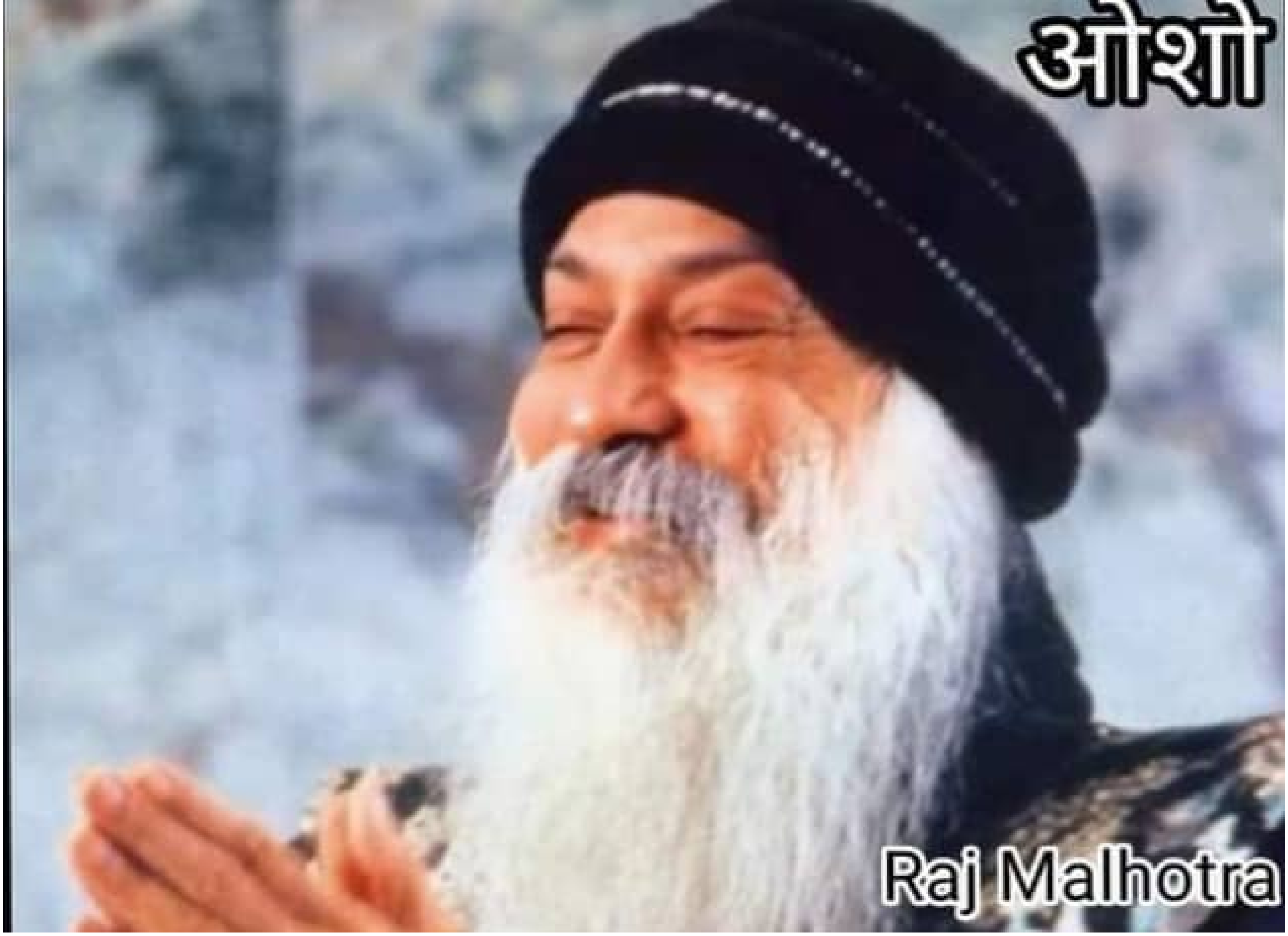

CamScanner

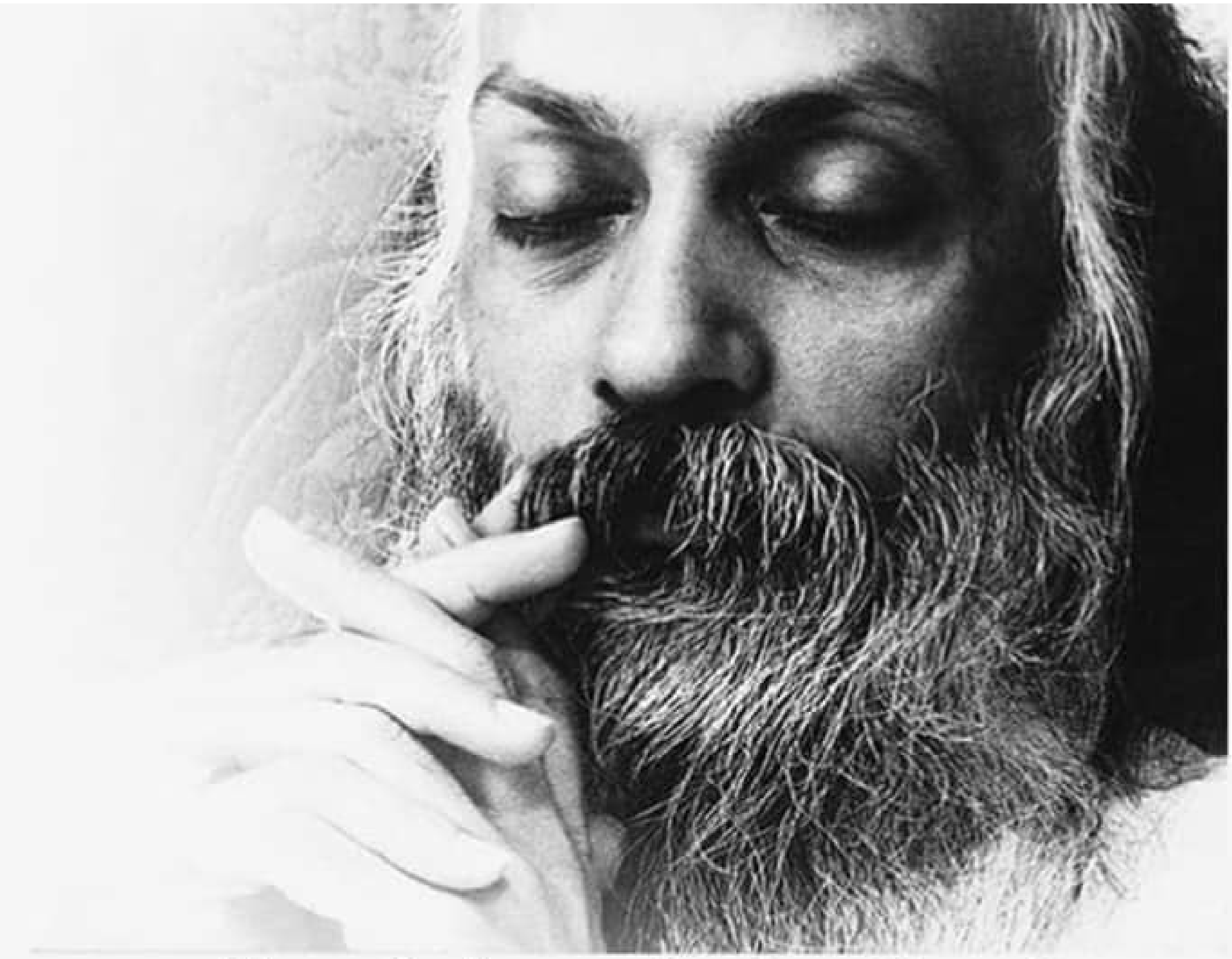

उसकी मस्ती ने ,मुझको जीना सिखा दिया,
एक बूंद में ही,पूरा समंदर दिखा दिया.
मैं टटोल रहा था, जिसे देर -ओ-हरम में,
बन्द आँख से उसने सारा मंजर दिखा दिया.....

CS CamScanner

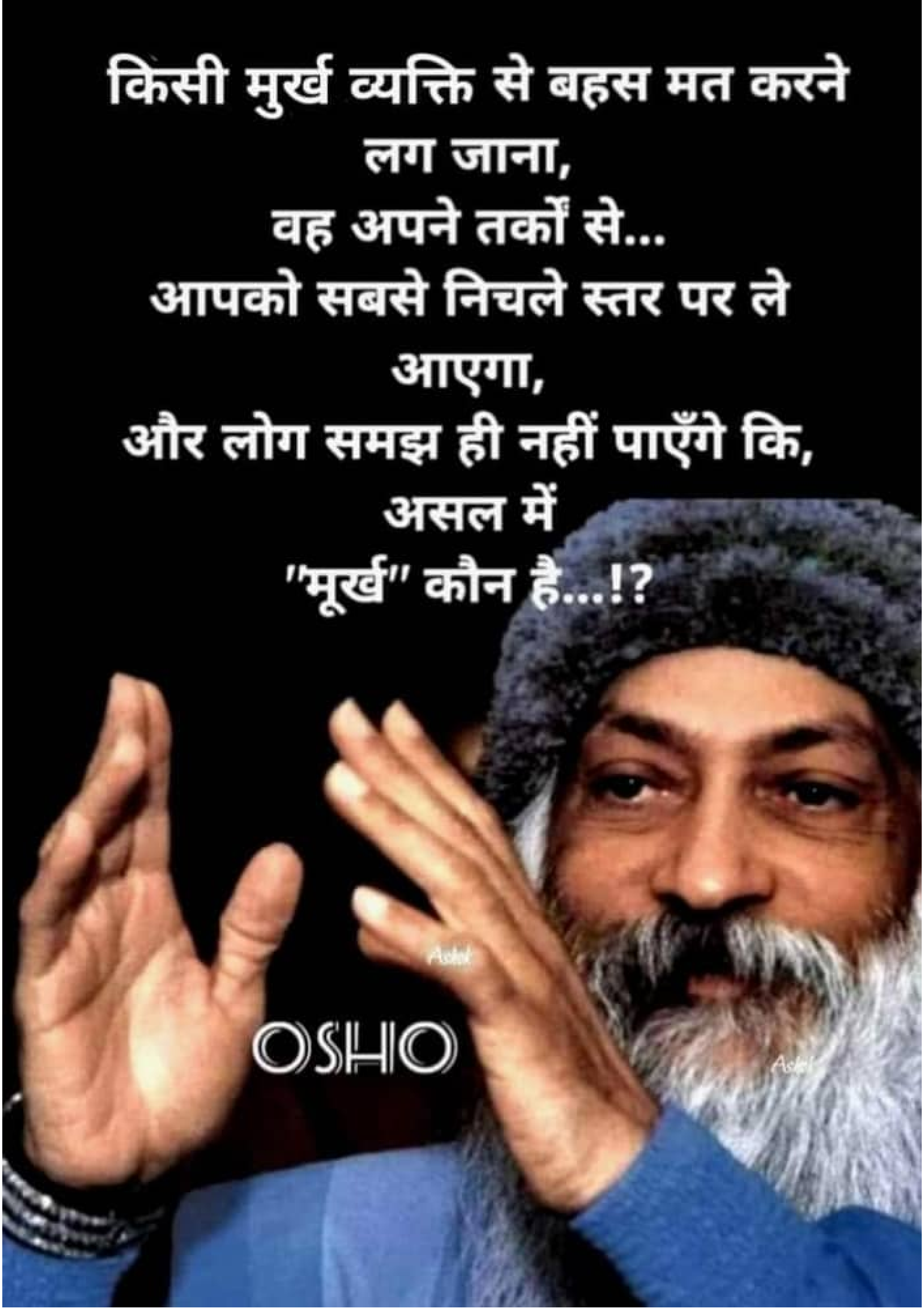
किसी मुर्ख व्यक्ति से बहस मत करने
लग जाना,
वह अपने तर्कों से...
आपको सबसे निचले स्तर पर ले
आएगा,
और लोग समझ ही नहीं पाएँगे कि,
असल में
"मूर्ख" कौन है...!?
OSHO

CamScanner

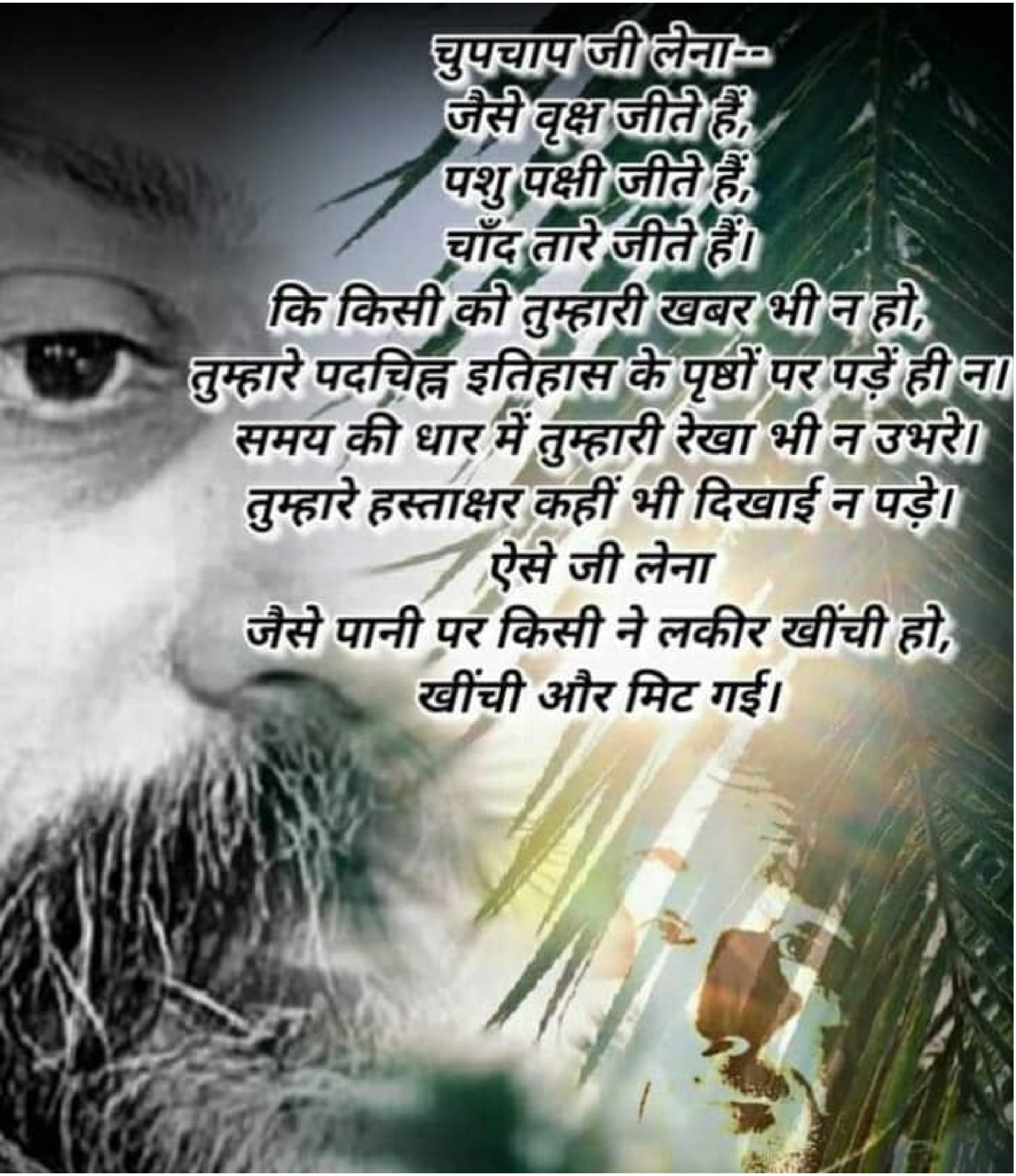
चुपचाप जी लेना--
जैसे वृक्ष जीते हैं,
पशु पक्षी जीते हैं,
चाँद तारे जीते हैं।
कि किसी को तुम्हारी खबर भी न हो,
तुम्हारे पदचिह्न इतिहास के पृष्ठों पर पड़ें ही न।
समय की धार में तुम्हारी रेखा भी न उभरे।
तुम्हारे हस्ताक्षर कहीं भी दिखाई न पड़े।
ऐसे जी लेना
जैसे पानी पर किसी ने लकीर खींची हो,
खींची और मिट गई।

CamScanner

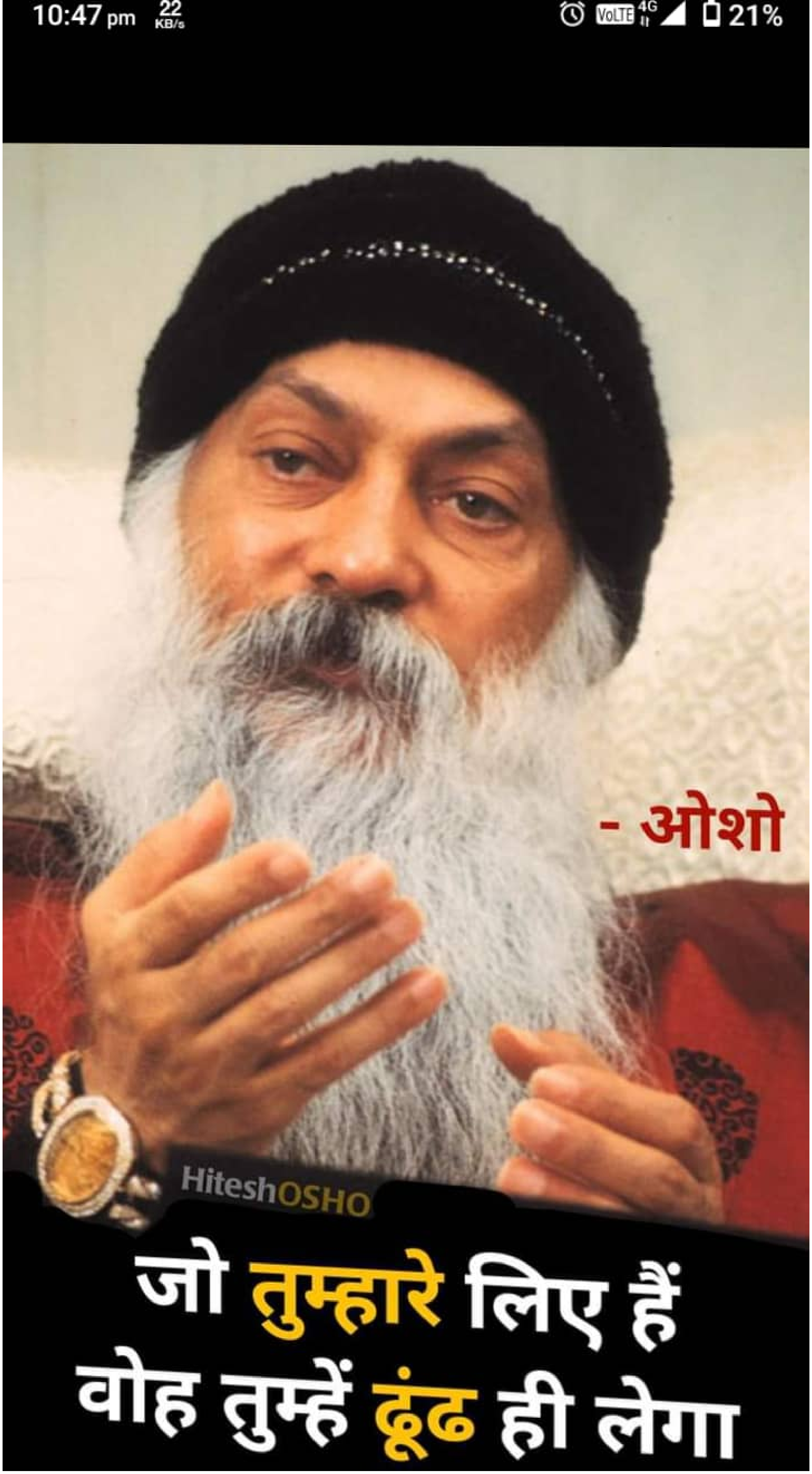

CamScanner

10:46 pm 24 KB/s 21%
facebook
17 3 comments • 2 shares
Like Comment Share

सदगुरु कबीर साहेब वाणी वचन
10h ·

मोको कहाँ ढूंढे रे बन्दे,मै तो तेरे पास में।

ना तीरथ में ना मूरत में,ना एकांत निवास में।
ना मंदिर में ना मस्जिद में,ना काबे कैलास में।।

ना में जप में ना में तप में,ना में बरत उपास में।
ना में क्रिया करम में रहता,नहिं जोग संन्यास में।।

नही प्राण में नही पिंड में,ना ब्रह्माण्ड आकाश में।
नही भृकटी भंवर गुफा में,सब स्वांसो की स्वांस में।।

खोजि होए तुरत मिल जाऊं,इक पल कीही तलाश में।
कहत कबीर सुनो भई साधो,मै तो हूँ विश्वास में।।
साहेब बंदगी🙏🙏🙏,साहेब!

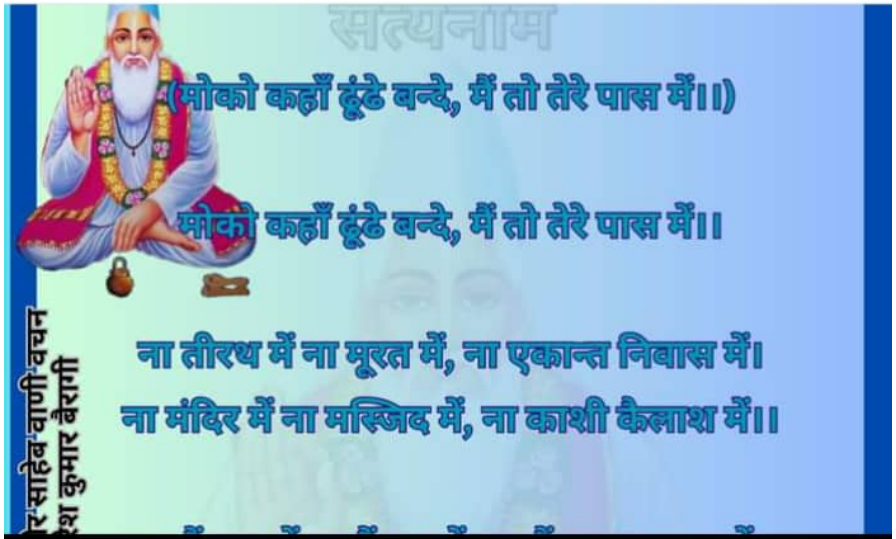

CamScanner

CamScanner

10:41 pm 12 KB/s 22%

अपने को बदलना इस जगत में सबसे बड़ी क्रांति है। क्योंकि बदलाहट छोटी-मोटी नहीं है यह, अपने सारे अतीत को पोंछना है, अपने सारे अतीत से अपने को असंलग्न कर लेना है, तोड़ लेना है, श्रृंखला तोड़ देनी है, फिर से अ ब स से शुरू करना है। थोड़े से ही हिम्मतवर लोग, थोड़े से साहसी लोग यह कर पाते हैं।

उस साहस को ही मैंने संन्यास कहा है। मेरे संन्यास का अर्थ संसार को छोड़ना नहीं है। मेरे संन्यास का अर्थ है: अपने अतीत से अपनी जीवन-चेतना को मुक्त कर लेना। समाज को नहीं छोड़ना है, अतीत को छोड़ना है। परिवार को नहीं छोड़ना है, संस्कार को छोड़ना है। धन, घर, दुकान नहीं छोड़ना है, मगर भीतर जो कूड़ा-करकट समाज छोड़ गया है, मां-बाप दे गए हैं, पीढ़ी-दर-पीढ़ी से तुम्हें मिलता रहा है, तुम्हारी बपौती समझ कर तुम उसे छाती से लगाए बैठे हो, उसमें आग लगा देनी है।

संन्यास का अर्थ है: उस आत्मक्रांति से गुजरना है जिसमें तुम फिर से जन्मो, तुम्हारा नया जन्म हो, तुम फिर से अ ब स से शुरू करो जीवन-यात्रा; ताजे--जैसे सुबह की ओस ताजी होती है; नये--जैसे सुबह की किरण नई होती है; अभी-अभी पैदा हुए--जैसे वृक्ष पर नई-नई कोंपल ऊगती है।

संन्यास का अर्थ है: नितनूतन होने की कला। प्रतिदिन अतीत के प्रति मर जाना है। जो बीता सो बीता। उसे विस्मृत कर देना है। और जो है, उसमें जीना है। जो है, उसमें जीने की कला आ जाए, तो प्रेम सुगम है, सरल है। तुम्हारे भीतर से प्रेम की धाराएं बह उठेंगी। और धन्यभागी है वह, जिसके जीवन में प्रेम की धारा बह उठती है। क्योंकि वही धारा एक दिन परमात्मा के सागर से मिलाती है। प्रेम के अतिरिक्त परमात्मा तक ले जाने वाला और कोई मार्ग नहीं है।

पर हिम्मत करनी होगी! एक नये ढंग के सत्संग में प्रवेश करना होगा। जिनको तुमने अब तक साधु-संत समझा था, उनसे नाता तोड़ना होगा। और तुम्हें कुछ नये परिप्रेक्ष्य, नई आंखें, नई दृष्टियां पैदा करके नये सत्संग खोजने होंगे, नये साधु खोजने होंगे। आमूल रूपांतरण इससे कम में नहीं होगा कुछ।

CamScanner

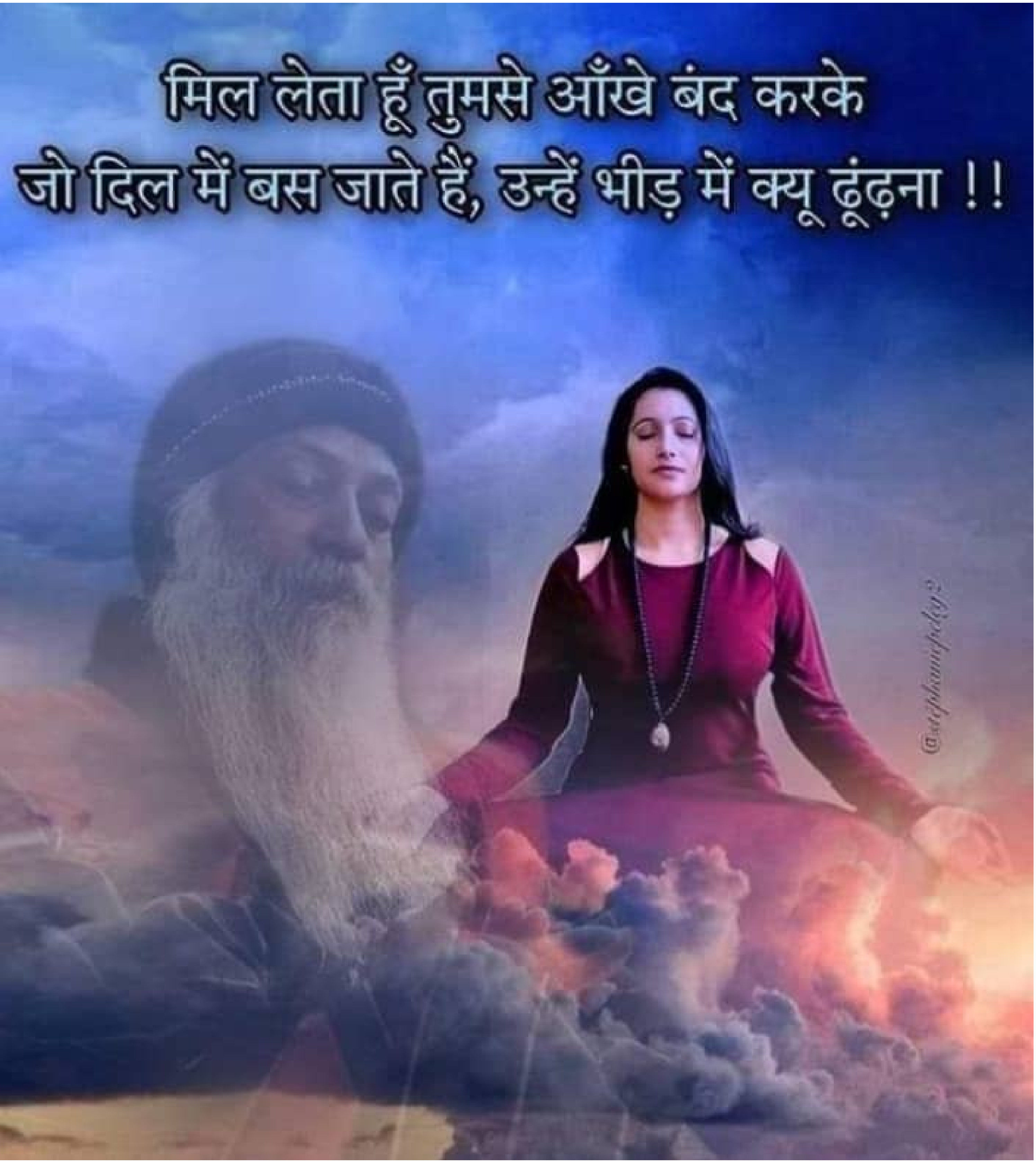

CamScanner

परमात्मा को जिसे पाना है,
उसे परमात्मा जैसा हो जाना पड़ेगा।
पाना हो जिसे प्रभु को,
उसे प्रभु जैसा हो जाना पड़ेगा।
पाने की एक ही शर्त है,
जो पाना हो,
उस जैसा ही हो जाना पड़ता है।
यह शर्त गहरी है।
और यह नियम शाश्वत है।
और जीवन के समस्त तलों पर
लागू है।
आचार्य श्री रजनीश
गीता दर्शन अ.5.प्र.54/26
तीन सूत्र–आत्म-ज्ञान के लिए

CamScanner

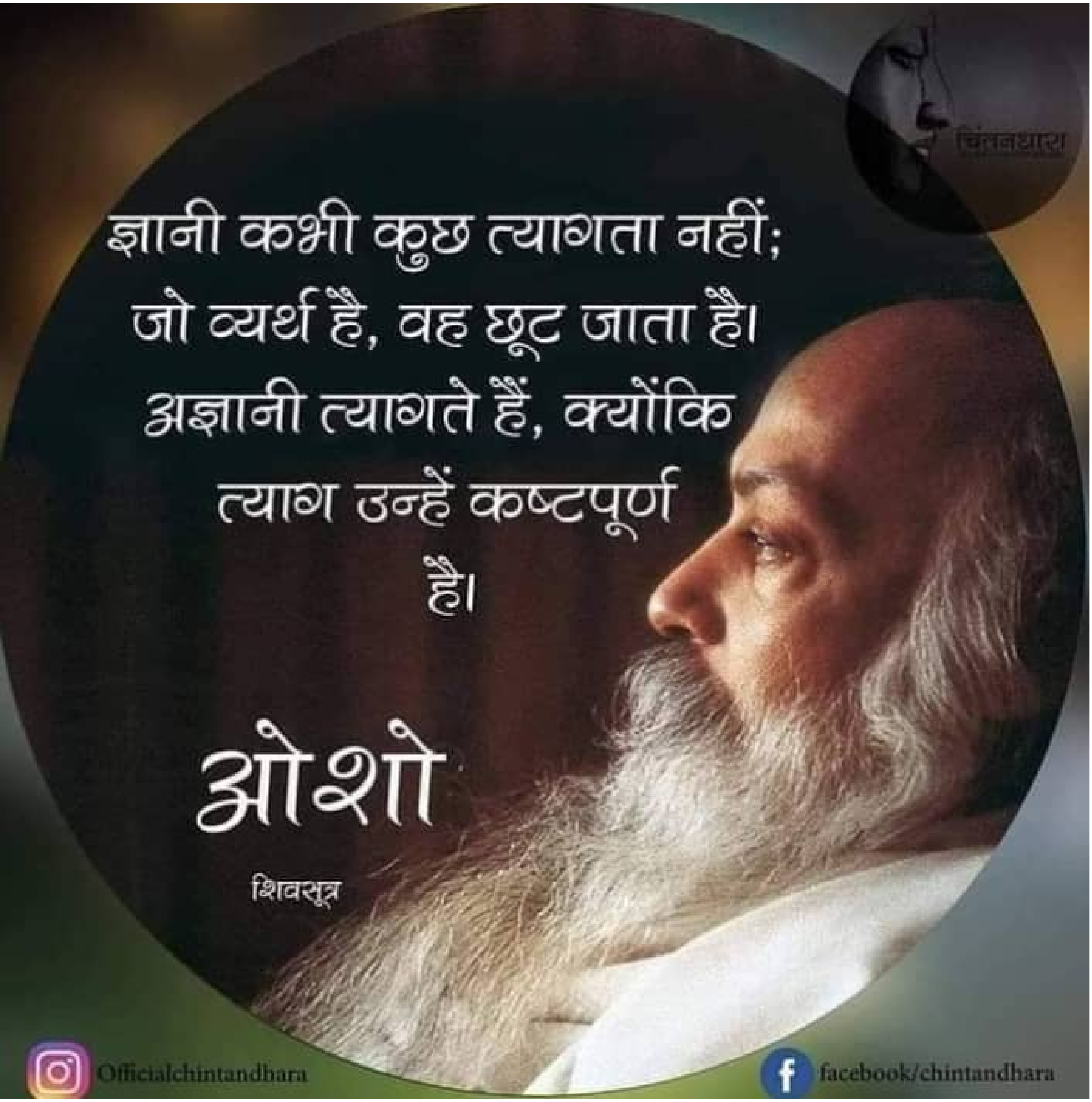
चिंतनधारा
ज्ञानी कभी कुछ त्यागता नहीं;
जो व्यर्थ है, वह छूट जाता है।
अज्ञानी त्यागते हैं, क्योंकि
त्याग उन्हें कष्टपूर्ण
है।
ओशो
शिवसूत्र
Officialchintandhara
facebook/chintandhara

CamScanner

घमंड हमेशा हार दिलाता है

एक मूर्तिकार था, जिसकी शोहरत देश-विदेश में थी। वह ऐसी सजीव मूर्तियां बनाता था, जो बिल्कुल असली लगती थीं। उसे इस बात का घमंड था। जब मूर्तिकार को लगा कि उसकी मौत नजदीक है तो उसने यमदूतों को भ्रमित करने के लिए हू-ब-हू अपने जैसी दिखने वाली 11 मूर्तियां बनाई और उनके बीच जाकर बैठ गया। जब यमदूत उसे लेने आया, तो पहचान नहीं पाया कि इनमें से असली इंसान कौन है? उसने सोचा कि अगर मूर्तिकार के प्राण न लिए तो सृष्टि का नियम टूटेगा और मूर्तियों को तोड़ा तो कला का अपमान होगा। फिर उसे एक तरकीब सूझी। उसने कहा, 'काश ये मूर्तियां बनाने वाला मिलता तो मैं बताता कि मूर्तियां तो सुंदर हैं, लेकिन इनमें कुछ गलतियां हैं।' यह सुनते ही मूर्तिकार का घमंड जाग गया। वह उठकर बोला, 'मेरी कला में कोई गलती हो ही नहीं सकती, मैंने जीवनभर मूर्तियां बनाई हैं।' यमदूत ने झट से उसका हाथ पकड़ लिया और बोला, 'बस यही गलती कर गए तुम अपने घमंड में कि बेजान मूर्तियां बोला नहीं करतीं।'

••••

सीख : किसी काम में कितनी ही महारत हासिल हो, लेकिन उसका घमंड उसके महत्व को खत्म कर देता है।

CamScanner

CamScanner

बुद्ध कहते थे,
जिसने अपने भीतर झांककर देखा,
उसके लिए सभी कुछ ब्रह्म हो जाता है।
और जो अपने बाहर ही देखता रहा,
धीरे– धीरे उसके भीतर भी पदार्थ ही रह
जाता मालूम पड़ता है। जिसकी दृष्टि बाहर है,
उसे भीतर भी आत्मा दिखाई नहीं पड़ेगी।
जिसकी दृष्टि भीतर है, उसे बाहर भी आत्मा
ही दिखाई पड़ती है।
वे ब्रह्म में ही विचरण करते हैं और ऐसे वे
परम– आनंदी हैं।
अब जिसका ब्रह्म में विचरण हो और
जिसकी निद्रा भी भगवत–चैतन्य में हो,
वहां दुख कैसा! वहां दुख का प्रवेश कैसा..!!!

निर्वाण उपनिषद ~ओशो (प्रवचन~7)

CamScanner

जीवन में समझदार होओ।
बहुत दौड़ चुके
जन्मों - जन्मों तक, कहां
पहुंचे हो? और कब तक
दौड़ते रहोगे? अब ठहरो!
ठहरें पांव तो मिले गांव।
ठहर जाओ तो गांव मिल
जाये। तो जिसकी तलाश है
वह मिल जाये। उस ठहरने
का नाम ही ध्यान है। चलते
रहने का नाम संसार है।
ठहर जाने का नाम
परमात्मा है।

ओशो अहोभाव
मरौ है जोगी मरौ

CS CamScanner

इस संसार में जो भी अकेला है
वह ईश्वर का प्रिय खिलौना है
ईश्वर उसे किसी के साथ बांटना
नहीं चाहता !! कान्हासंध्या राधे
राधे

127 67 comments

Like Comment Share

CamScanner

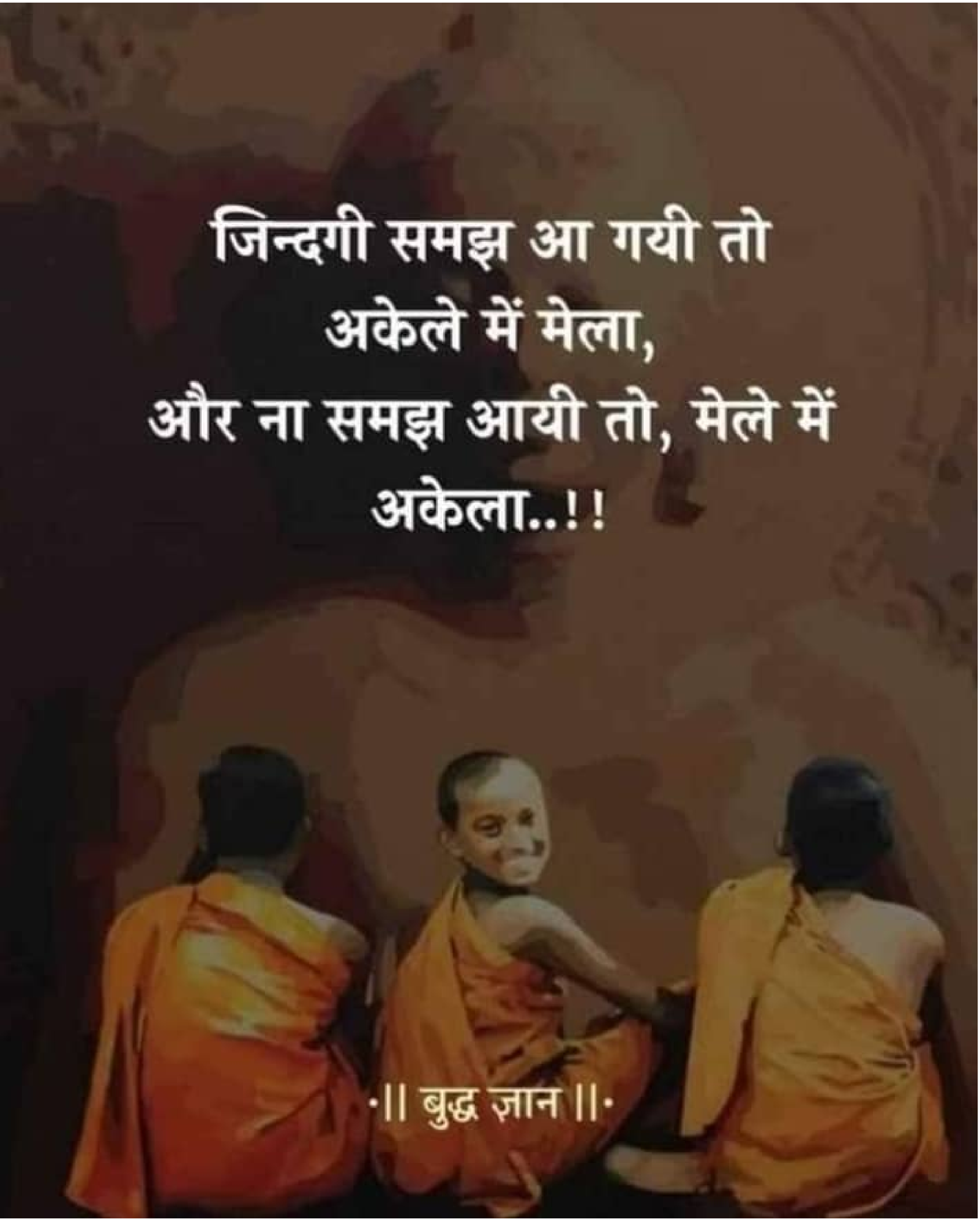

CamScanner

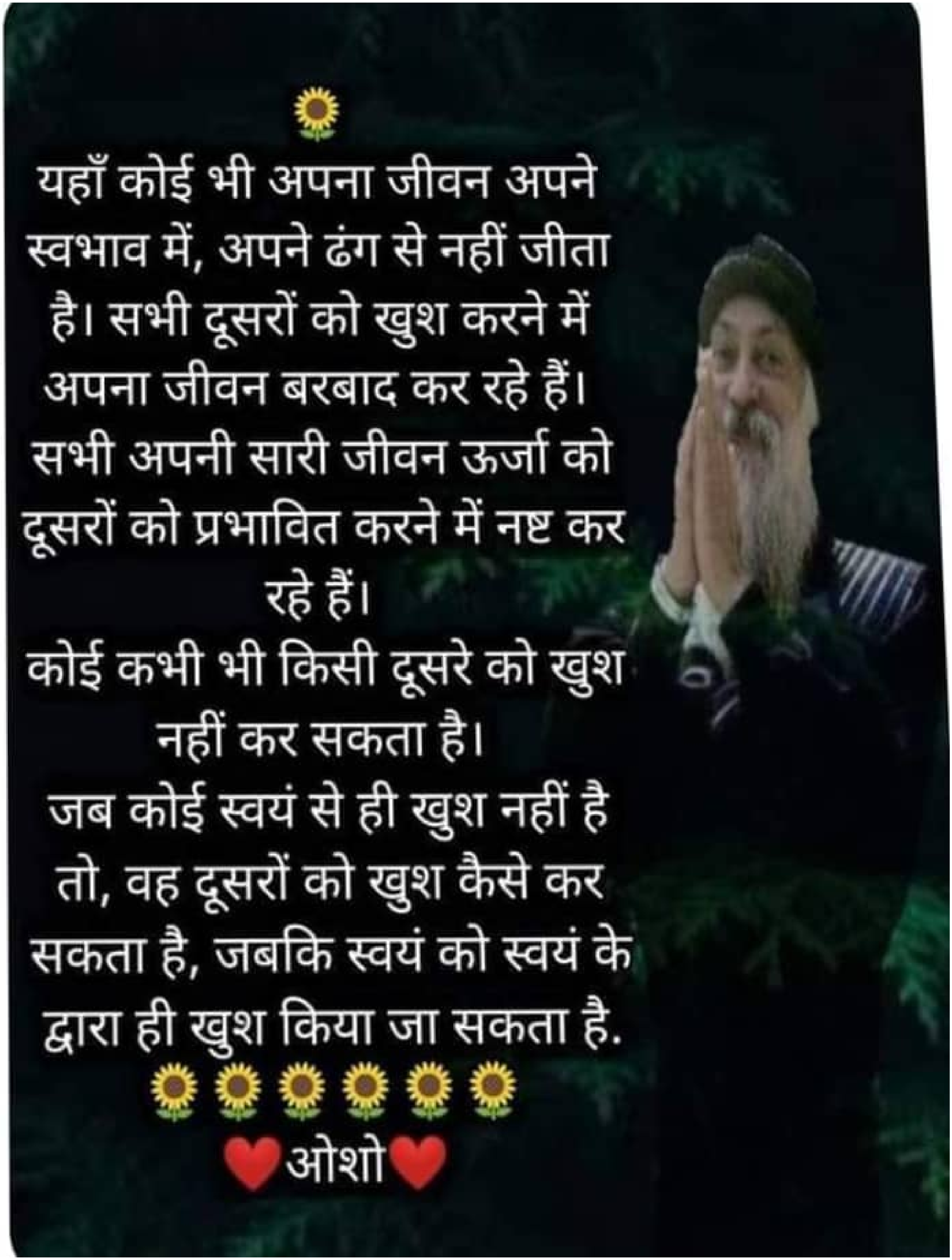
🌻
यहाँ कोई भी अपना जीवन अपने
स्वभाव में, अपने ढंग से नहीं जीता
है। सभी दूसरों को खुश करने में
अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं।
सभी अपनी सारी जीवन ऊर्जा को
दूसरों को प्रभावित करने में नष्ट कर
रहे हैं।
कोई कभी भी किसी दूसरे को खुश
नहीं कर सकता है।
जब कोई स्वयं से ही खुश नहीं है
तो, वह दूसरों को खुश कैसे कर
सकता है, जबकि स्वयं को स्वयं के
द्वारा ही खुश किया जा सकता है.
🌻🌻🌻🌻🌻🌻
❤️ओशो❤️

CamScanner

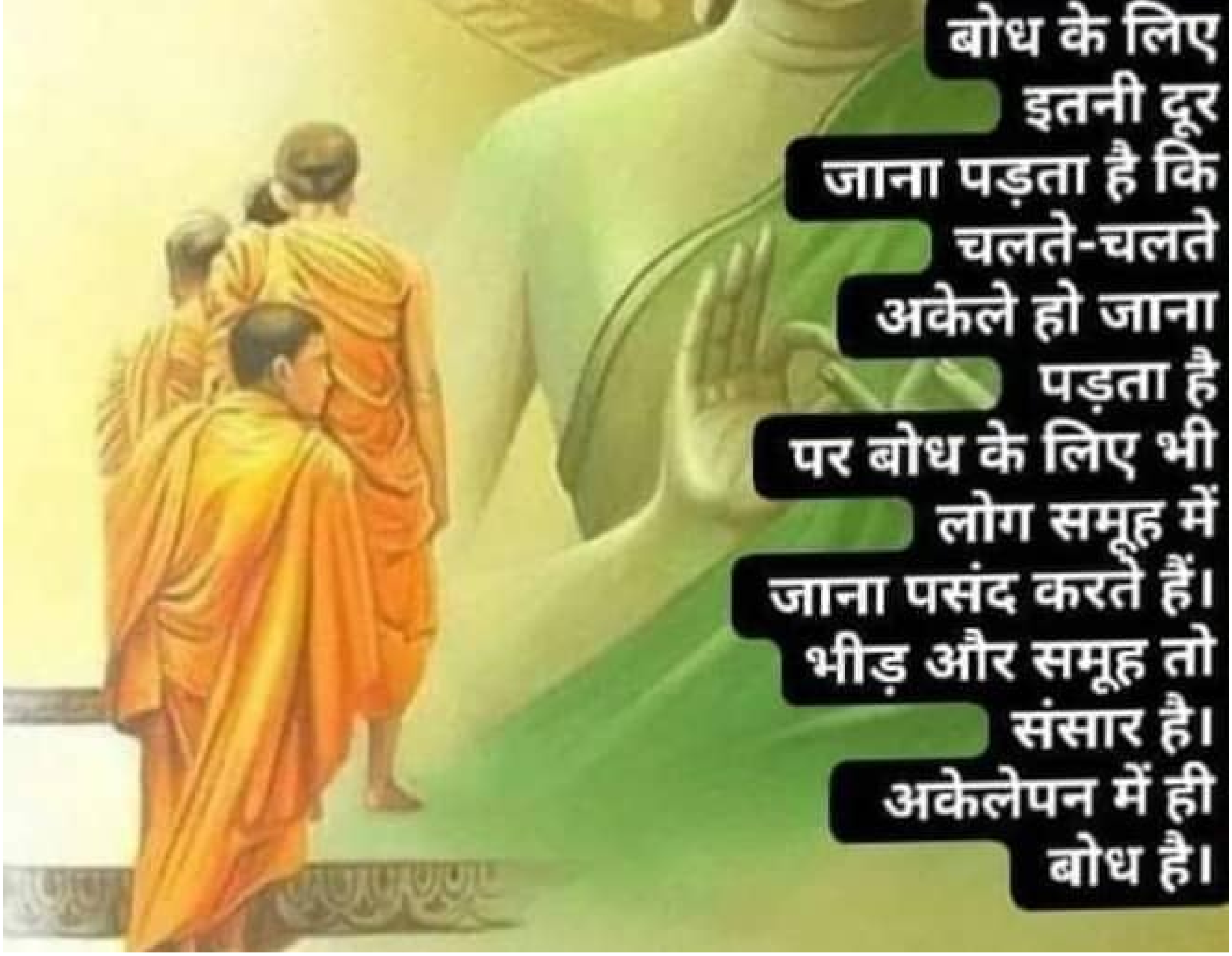
बोध के लिए
इतनी दूर
जाना पड़ता है कि
चलते-चलते
अकेले हो जाना
पड़ता है
पर बोध के लिए भी
लोग समूह में
जाना पसंद करते हैं।
भीड़ और समूह तो
संसार है।
अकेलेपन में ही
बोध है।

CamScanner

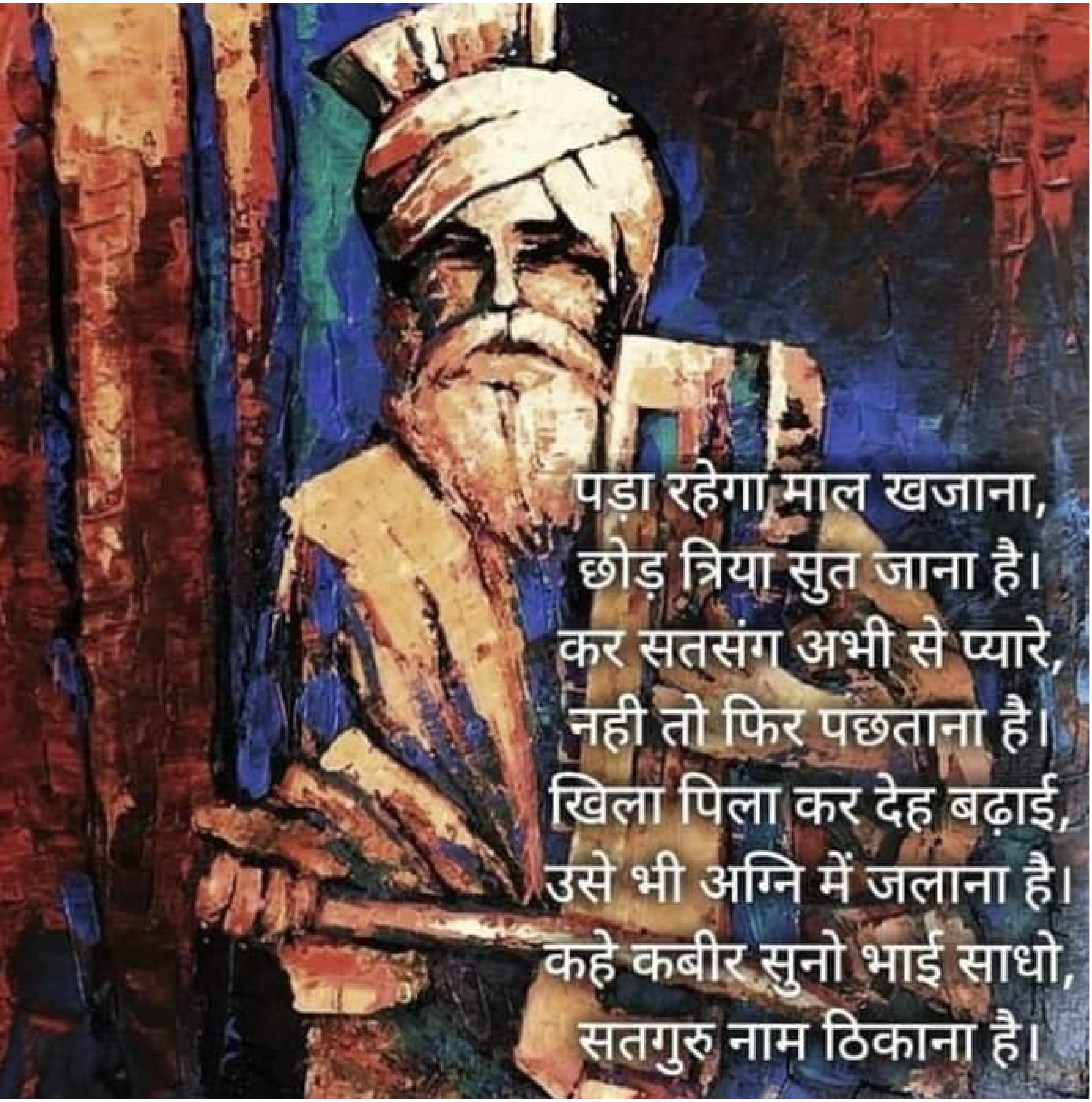
पड़ा रहेगा माल खजाना,
छोड़ त्रिया सुत जाना है।
कर सतसंग अभी से प्यारे,
नही तो फिर पछताना है।
खिला पिला कर देह बढ़ाई,
उसे भी अग्नि में जलाना है।
कहे कबीर सुनो भाई साधो,
सतगुरु नाम ठिकाना है।

CamScanner

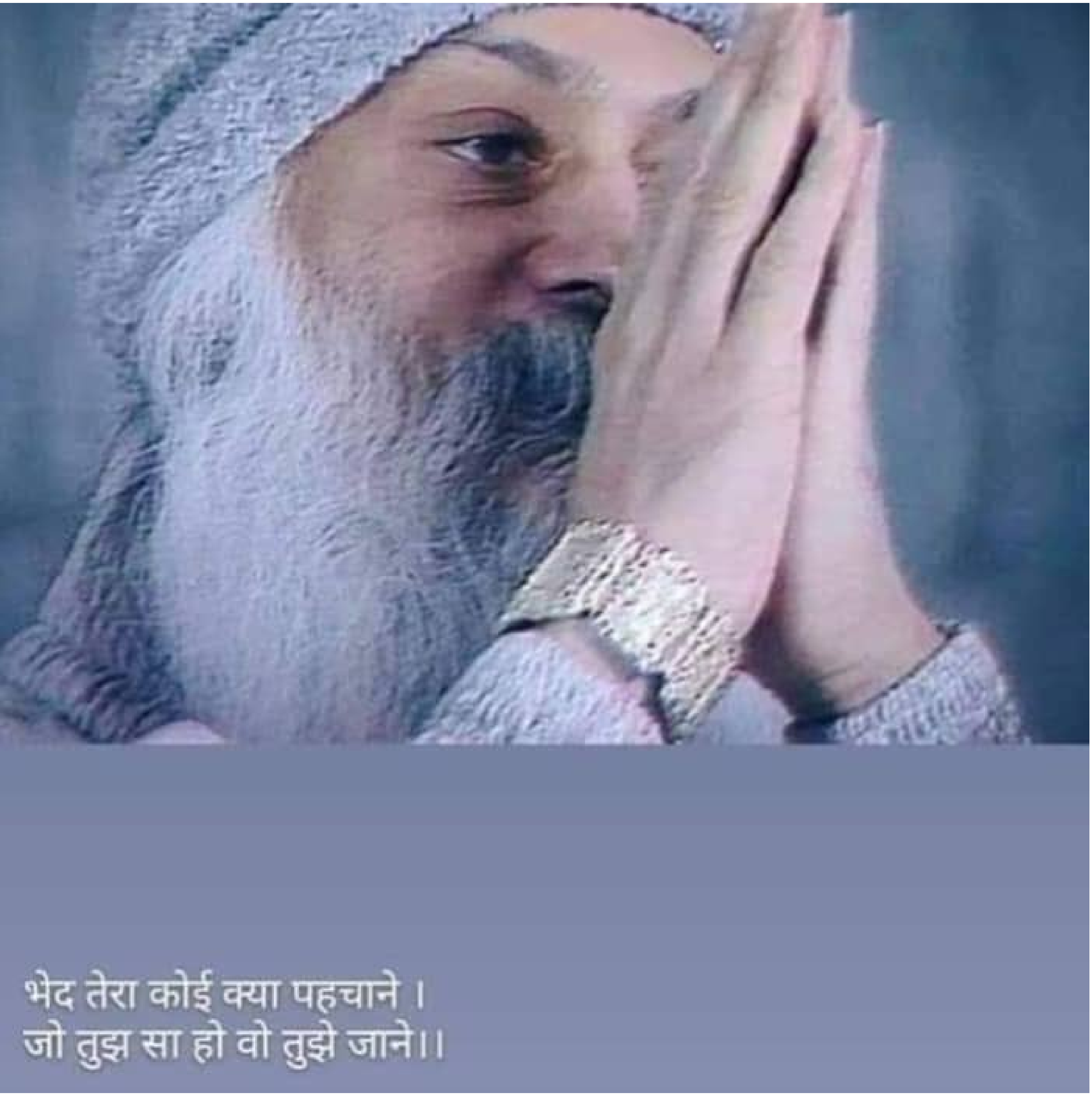

CamScanner

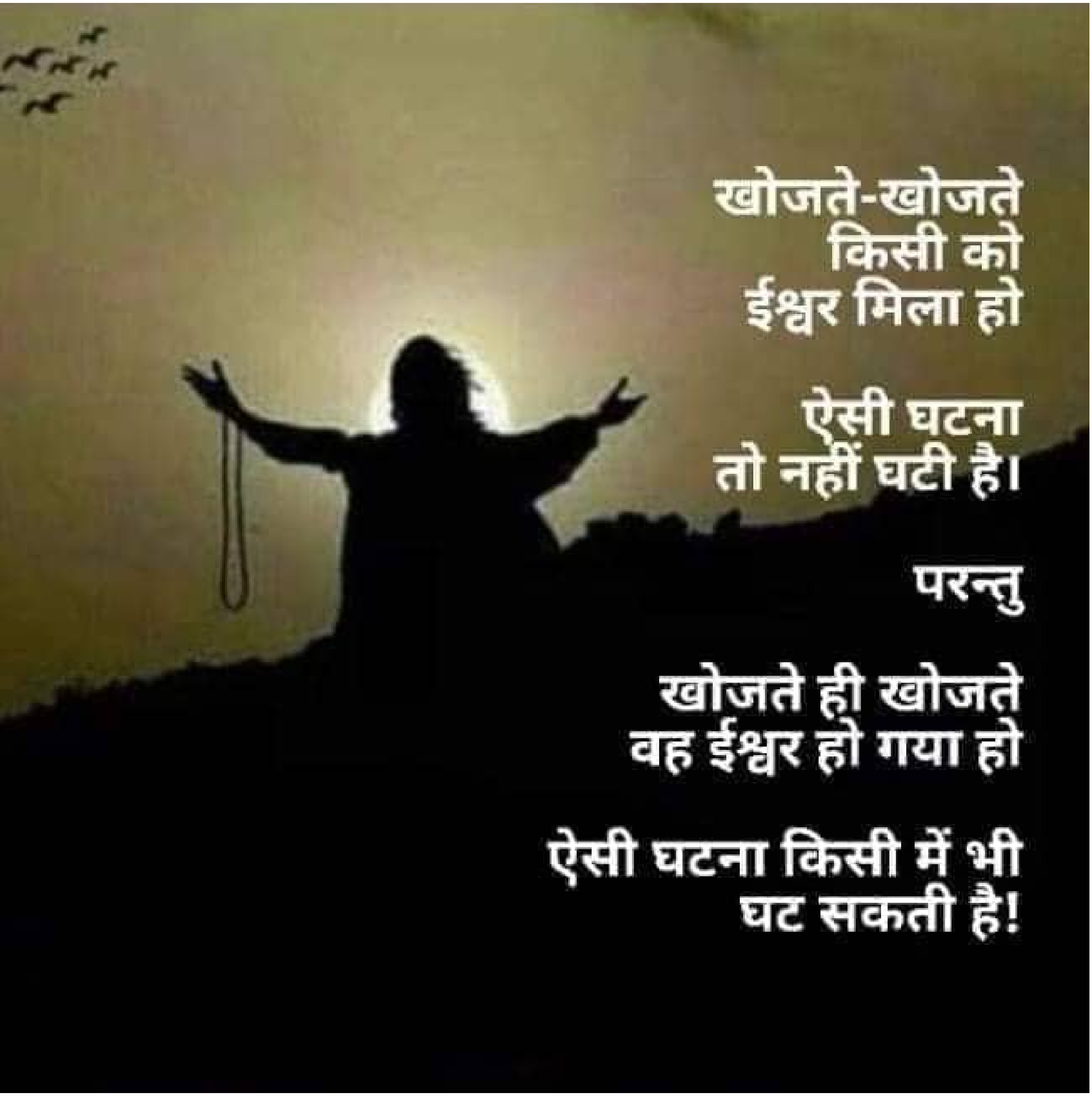
खोजते-खोजते
किसी को
ईश्वर मिला हो
ऐसी घटना
तो नहीं घटी है।
परन्तु
खोजते ही खोजते
वह ईश्वर हो गया हो
ऐसी घटना किसी में भी
घट सकती है!

CamScanner

ध्यान अग्नि है।
वह किसी भी विचार को जला देती है।
आप करें और देखें।
किसी भी विचार को सोचें मत, सिर्फ देखें।
खड़े हो जाएं और देखते रहें, देखते रहें, देखते रहें-
थोड़ी देर में आप पायेंगे, वह तिरोहित हो गया;
वहां खाली जगह रह गयी।
वह खाली जगह समाधान है।
और जब कोई व्यक्ति ऐसी कला से
चलते, चलते, चलते उस जगह पहुंच जाता है,
जहां प्रश्न उठते ही नहीं,
खाली जगह रह जाती है, वह समाधिस्थ है।

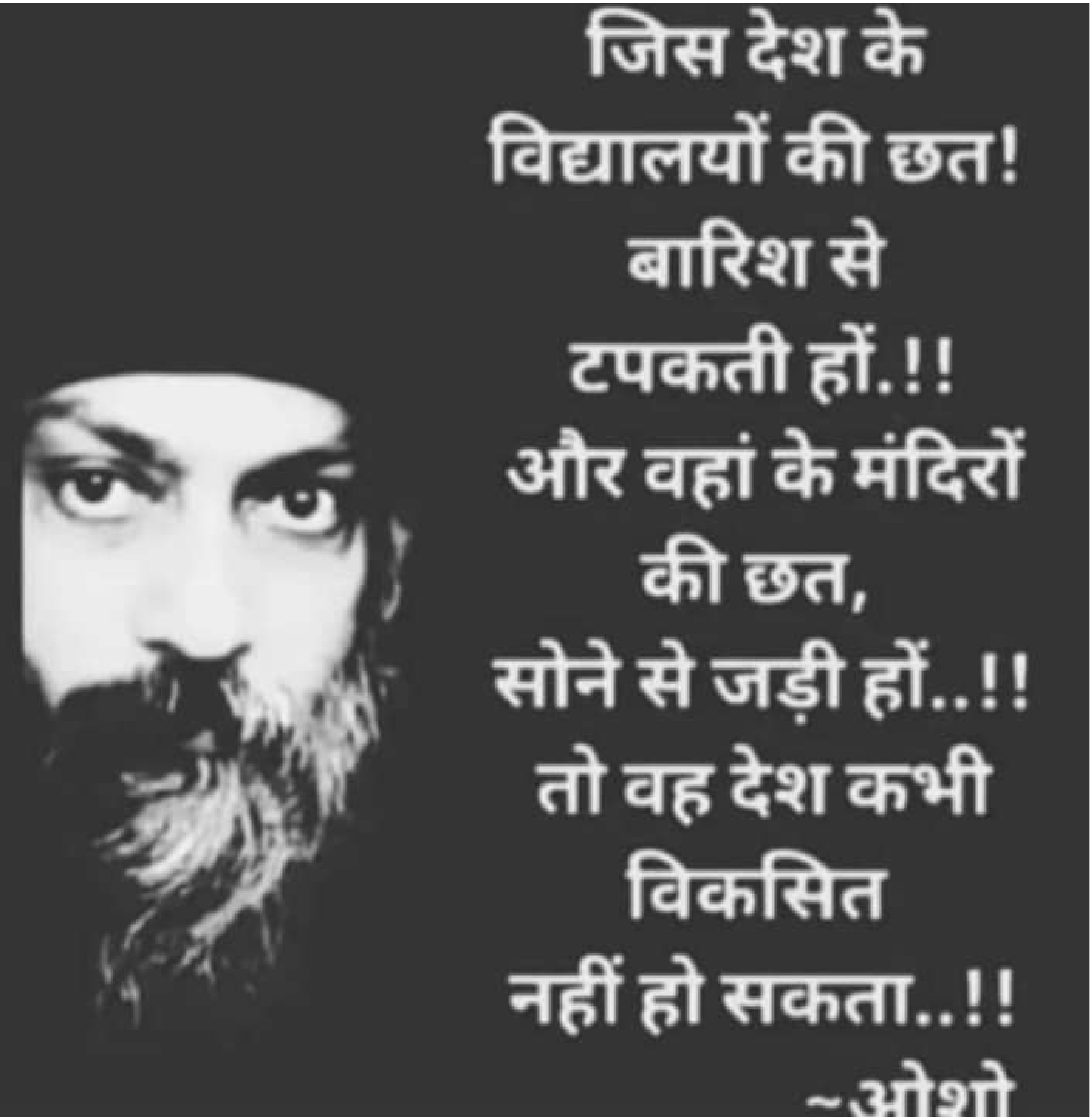
जिस देश के
विद्यालयों की छत!
बारिश से
टपकती हों.!!
और वहां के मंदिरों
की छत,
सोने से जड़ी हों..!!
तो वह देश कभी
विकसित
नहीं हो सकता..!!
~ओशो

CamScanner

10:47 am 0 KB/s VoLTE 4G 89%

Like Comment Share

osho suvichar

1d ·

तुम पति हो या पत्नी हो, दुकानदार हो या ग्राहक, इसमें बहुत मत खो जाना। तुम्हारा पति होना या पत्नी होना, दुकानदार होना या ग्राहक होना एक अभिनय का हिस्सा है। दुकान जाना जरूरी है, खेल प्यारा है कुछ तोड़ने की जरूरत नहीं है। मगर खेल की तरह प्यारा है, जीवन की तरह घातक है। ठीक है जो खेल मिला है उसे पूरा कर देना, भगोड़े मत बनना, भागने की जरूरत नहीं है। भगोड़े हमेशा कमजोर हैं और जिन्हें तुम साधु सन्यासी कहते हो वे अक्सर भगोड़े हैं। वे कमजोर हैं जो ज़िन्दगी में टिक ना पाए और ज़िन्दगी में द्रष्टा को संभाल ना पाए, इसलिए भाग गए हैं। भागने से कोई सन्यासी नहीं होता है। भागना सिर्फ इतना बताता है कि संसार ताकतवर था और वे कमजोर। दुकान पर न जाग सका, काम धंधा करते जाग न सका इसलिए भाग गया है। लेकिन अगर तुम दुकान पर न जाग सकोगे तो पहाड़ पर कैसे जाग सकोगे? जागने की क्रिया तो एक ही है। तुम कहाँ हो इससे कोई संबंध नहीं है। तुम क्या कर रहे हो इससे भी कोई संबंध नहीं है। जागने की क्रिया तो एक है- चाहे तुम दुकान पर जागो, चाहे तुम मंदिर में बैठ कर जागो, चाहे मखमल ककी गद्दियों पर बैठकर जागो, चाहे वृक्षों के नीचे बैठ कर जागो- जागने की क्रिया तो एक है। जागने की क्रिया एक है कि जो भी कृत्य हो रहा है- मैं उस कृत्य से पृथक हूँ,वह कृत्य दुकान का है, काम का है, प्रार्थना का है, पूजा का है, कोई फर्क नहीं पड़ता है। कृत्य मुझसे अलग है और वह संसार का हिस्सा है और मैं देखने वाला हूँ। कृत्य में इतने भी लीन मत हो जाना कि कृत्य ही बचे और साक्षी खो जाए। अभी ऐसा ही हुआ है।

प्रवचन-शिवसूत्र

ओशो

1 comment

15

Like Comment Share

CamScanner

ज़िन्दगी में खुश रहना चाहते हो,
तो सबसे पहले उन्हें भूल जाओ जो
आपको भूल गए हैं..
Ocean of love
tivation hr Motivation hr Motivation hr Motivation hr Motivation hr Motivation h

CamScanner

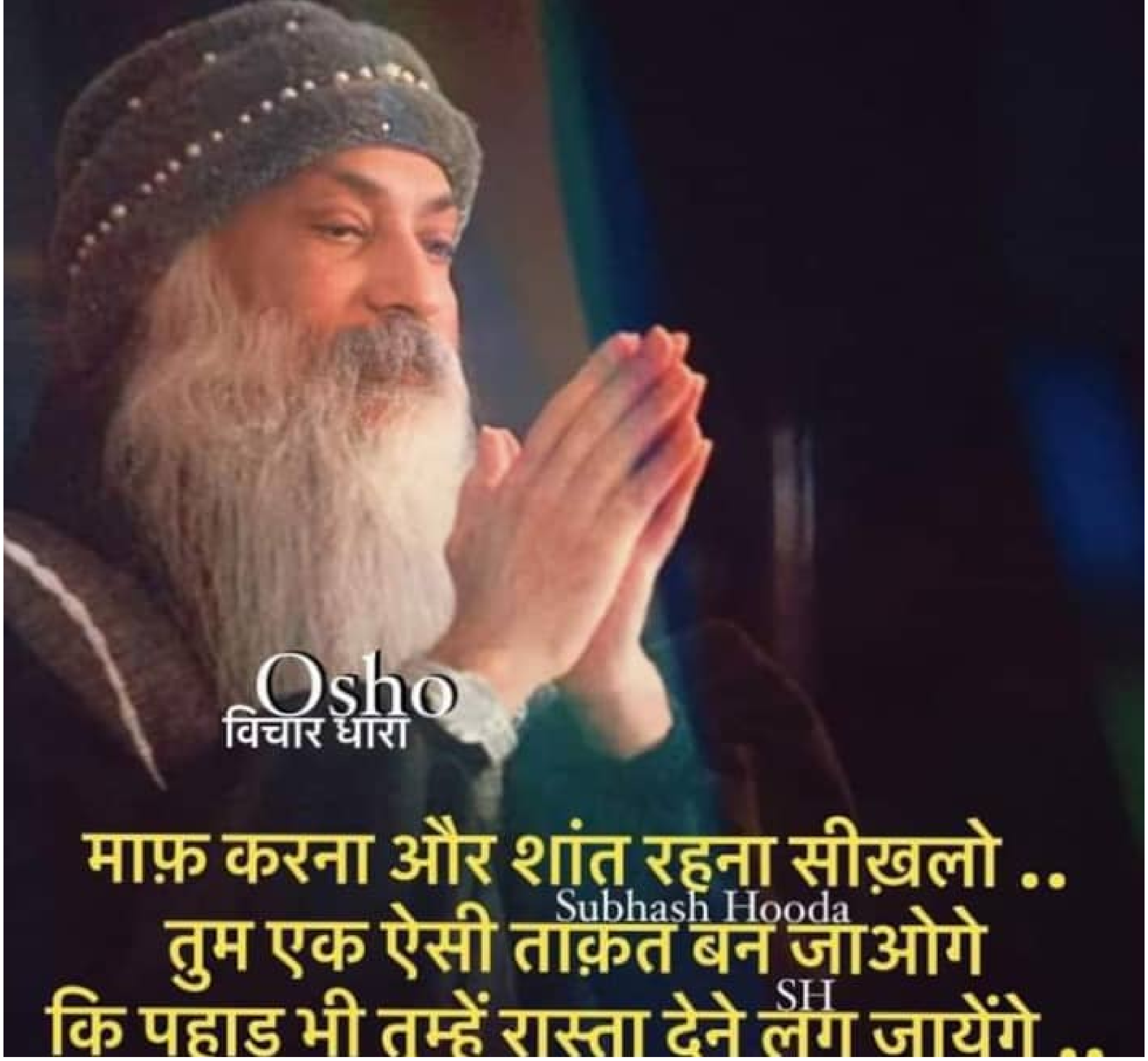
Osho
विचार धारा
माफ़ करना और शांत रहना सीख़लो ..
Subhash Hooda
तुम एक ऐसी ताक़त बन जाओगे
SH
कि पहाड भी तुम्हें रास्ता देने लग जायेंगे ..

CamScanner

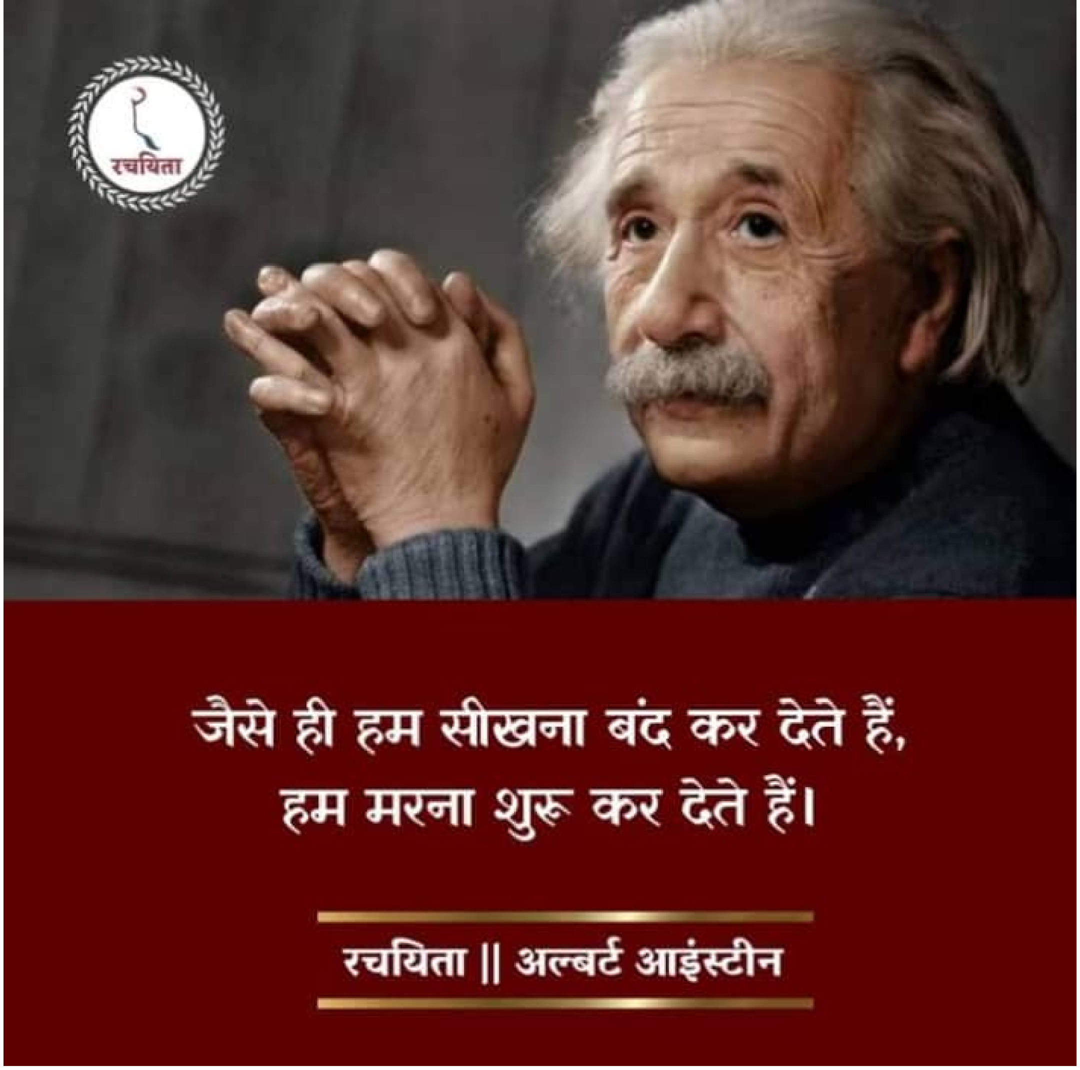

CamScanner

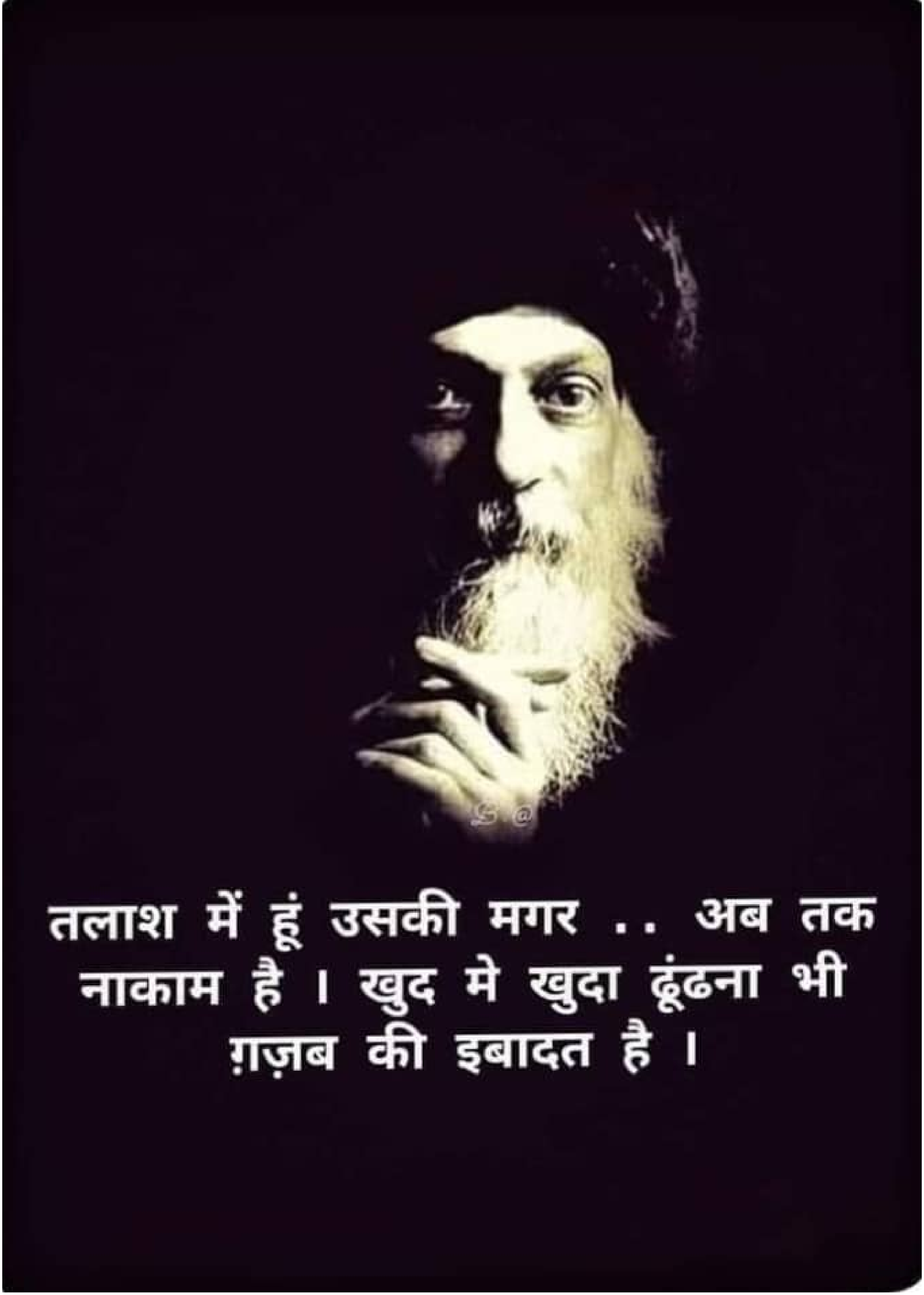

CamScanner

भोजन का त्याग करने से ईश्वर कभी खुश नहीं होते अगर त्याग करना ही है, तो गंदे विचार अहंकार और गंदे कर्मों का करिए..!

CamScanner

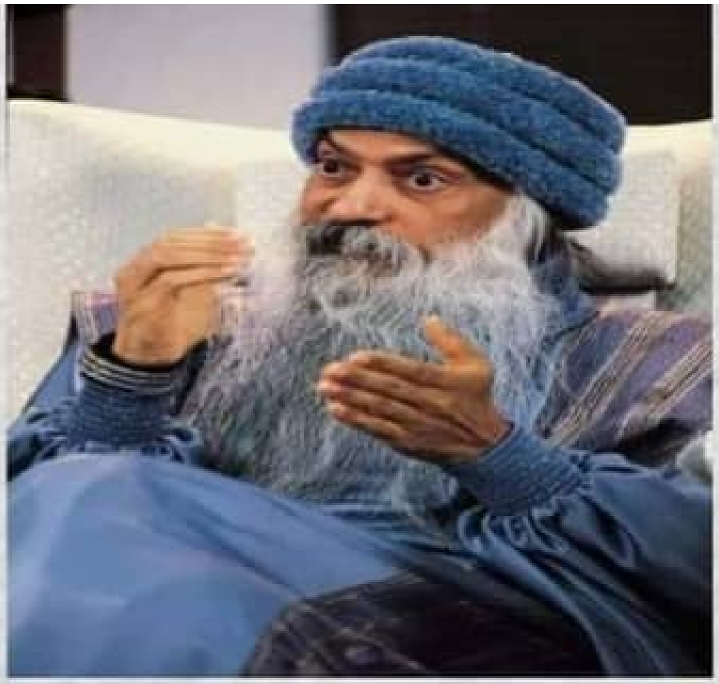

धर्म तुम्हारे लिए एक तरह का हिसाब किताब हो गया इतना पुण्य करेंगे तो इतना लाभ मिलेगा। यहा इतना देंगे तो वहां उतना मिलेगा। तुमने हर चीज मे गणित फैला दिया। तुम भाव की दशाओं में वंचित होने शुरू हो गये। इसलिए बड़ी आश्चर्य की बात है, मगर यह हो रहा है, नहीं होना चाहिए मगर हो रहा है, तुम सजग होओ तो शायद होना बंद हो जाए।:ओशो

CamScanner

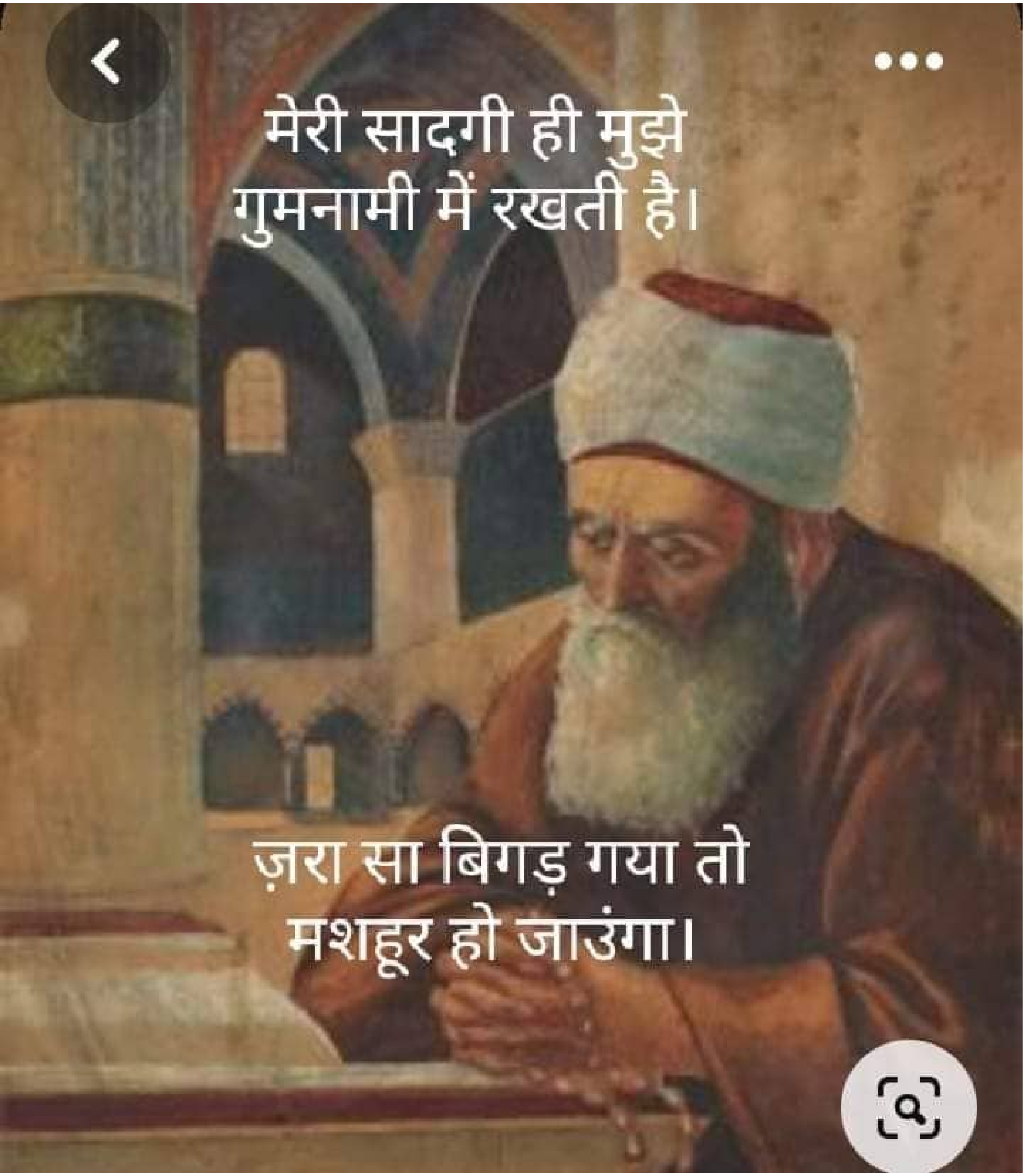

CamScanner

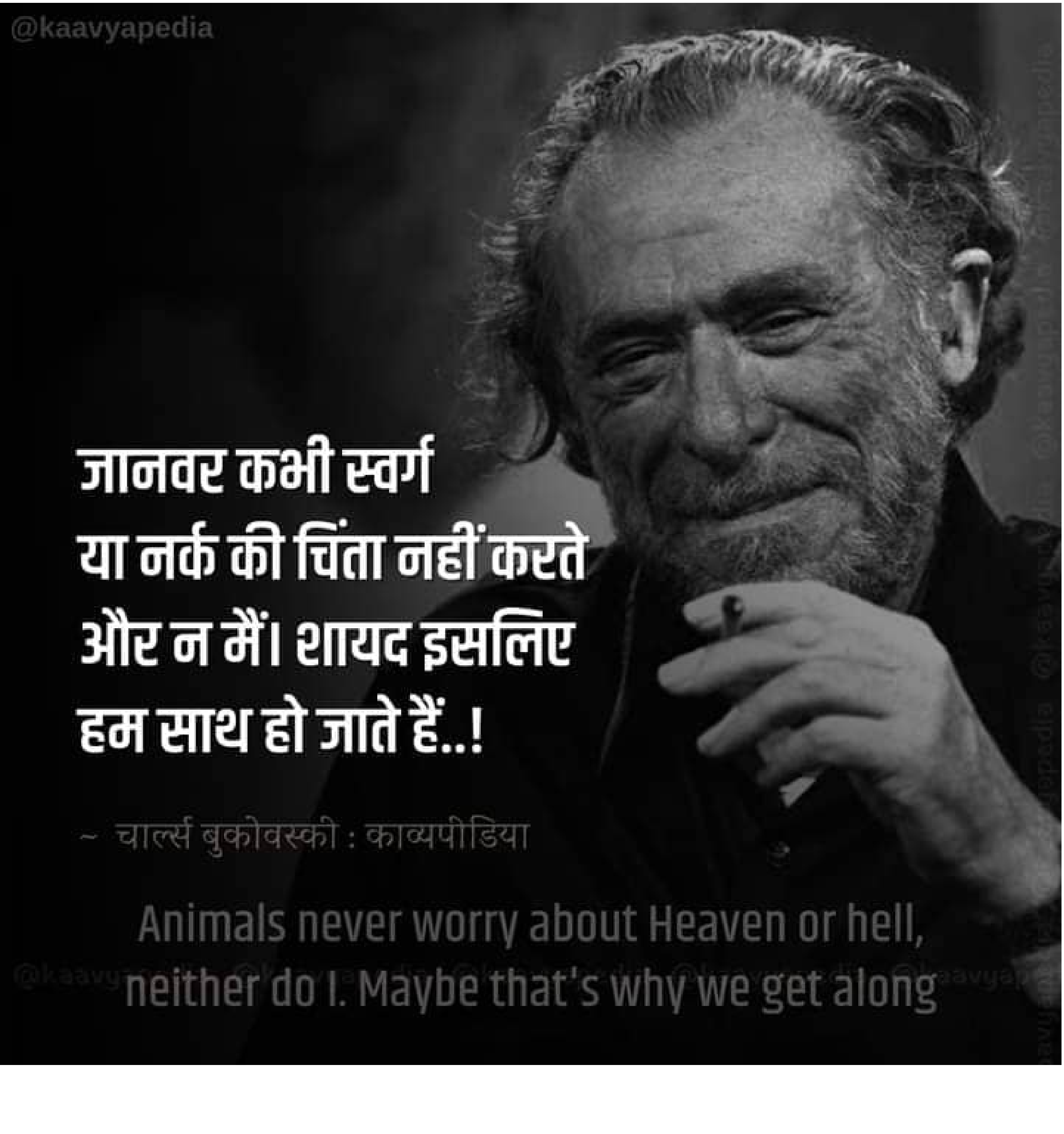
@kaavyapedia
जानवर कभी स्वर्ग
या नर्क की चिंता नहीं करते
और न मैं। शायद इसलिए
हम साथ हो जाते हैं..!
~ चार्ल्स बुकोवस्की : काव्यपीडिया
Animals never worry about Heaven or hell,
neither do I. Maybe that's why we get along

CamScanner

ओशो
सहजयोग
Osho.Universal
dhaval.parmar
संन्यास का तो
अर्थ ही यह है कि
अब मैंने छोड़ दिए
रास्ते पिटे पिटाए;
लकीर का फकीर अब
मैं नहीं हूं। अब चलूंगा
अपनी मौज से, अपनी
मर्जी से! अब खोजूंगा
परमात्मा को अपने
ढंग से, अपनी शैली
से। सम्हालो ... तुम
अपनी परंपराएं, मेरी
अब कोई परंपरा नहीं।
मैं अपनी पगडंडी खुद
चलूंगा और बनाऊंगा।

CamScanner

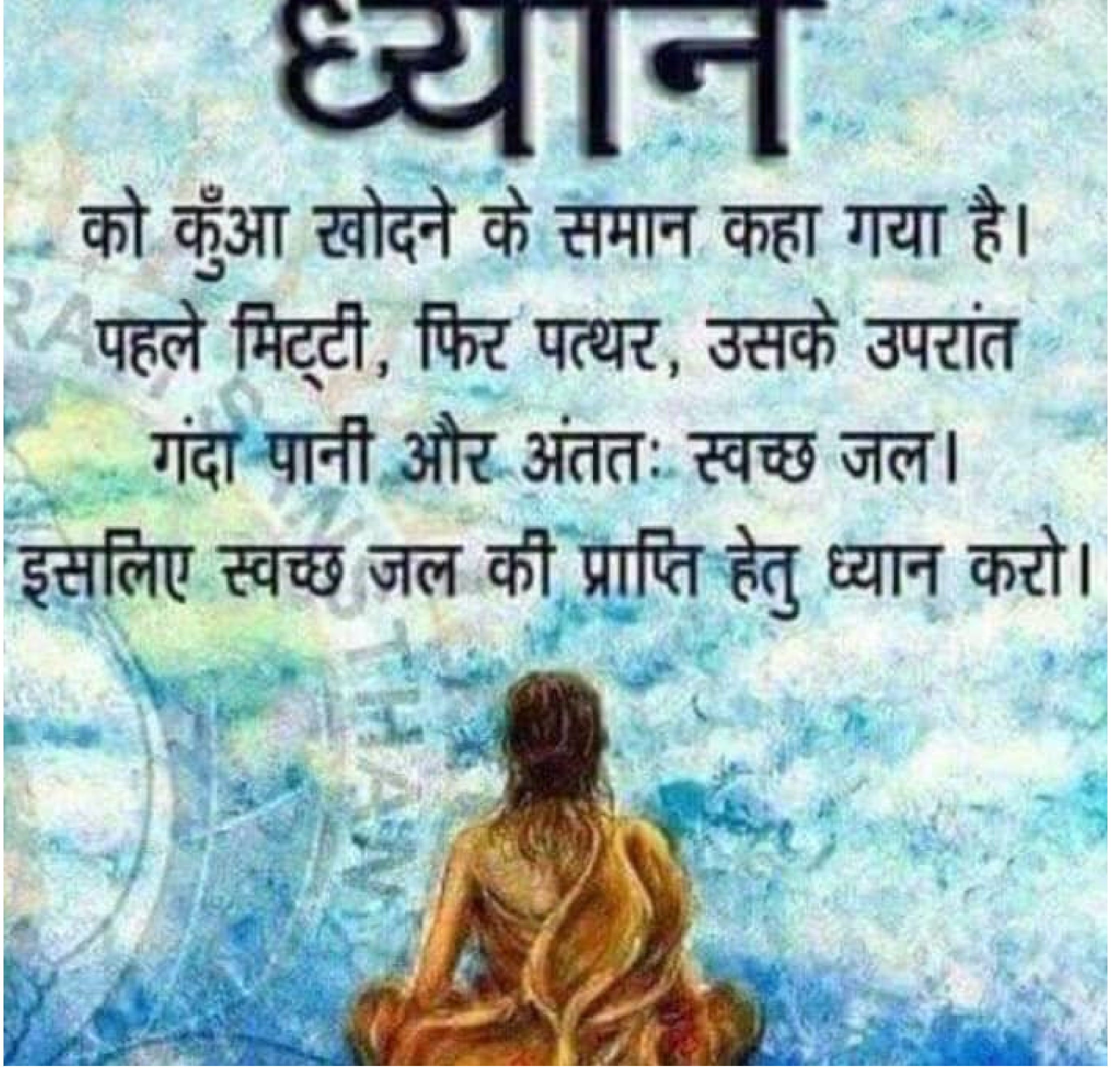
ध्यान
को कुँआ खोदने के समान कहा गया है।
पहले मिट्टी, फिर पत्थर, उसके उपरांत
गंदा पानी और अंततः स्वच्छ जल।
इसलिए स्वच्छ जल की प्राप्ति हेतु ध्यान करो।

CamScanner

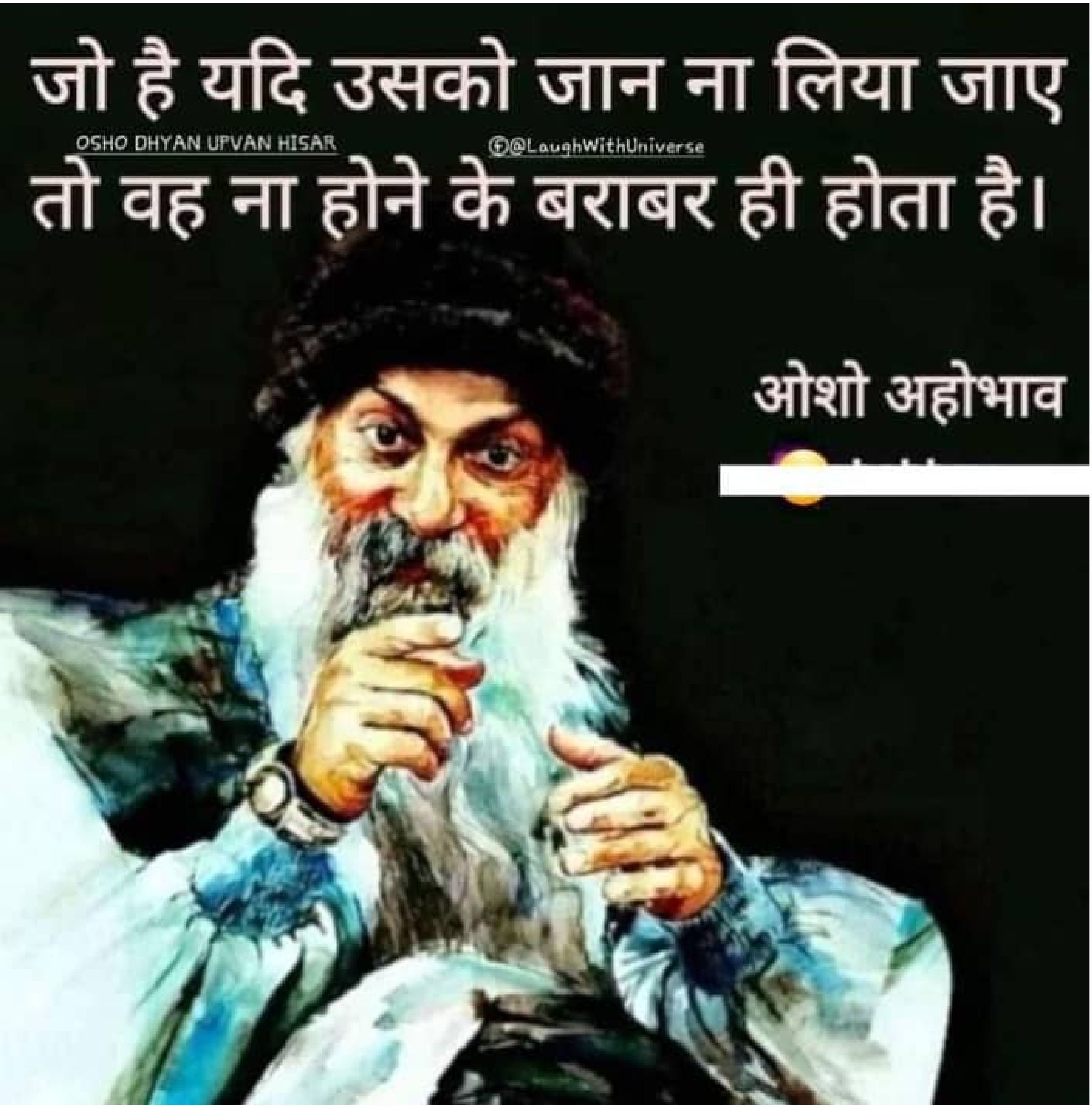
जो है यदि उसको जान ना लिया जाए
OSHO DHYAN UPVAN HISAR
@LaughWithUniverse
तो वह ना होने के बराबर ही होता है।
ओशो अहोभाव

CamScanner

10:25 am 0 KB/s 94%

Like Comment Share

ओ शो वाणी

Subhash Chandra · 1h ·

मनोवैज्ञानिक इसको ऐसा कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी पत्नी में अपनी मां को खोज रहा है, जो कि बहुत मुश्किल मामला है। मिल नहीं सकता! इसलिए कभी तृप्ति नहीं हो सकती।

वह जो अनूठा प्रेम था–शब्दहीन, निःशब्द, मौन; जाना था जिसे, किसी ने कहा नहीं था कभी; किसी ने दावा नहीं किया था; लेकिन फिर भी बहा था और पहचाना था–उसी प्रेम की तलाश चल रही है जिंदगीभर। वह प्रेम फिर दुबारा नहीं मिलेगा, इसलिए बेचैनी है, इसलिए कठिनाई है, इसलिए अड़चन है।

मां की खोज चल रही है। वह नहीं मिलती। वह नहीं पकड़ में आती फिर कभी। वह कहां मिलेगी? वह कैसे मिल सकती है? उसका उपाय भी न के बराबर है। फिलहाल तो नहीं है। पर उसने तो कभी कहा नहीं था। पत्र नहीं लिखे थे; कोई प्रेम-पत्र नहीं लिखे थे, बड़े दावे नहीं किए थे। लेकिन फिर दावे करने वाले लोग आते हैं। दावे बहुत होते हैं, और भीतर कुछ भी नहीं होता।

🏹🏹
आचार्य श्री रजनीश गीतादर्शन अ.7.प्र.83/26
प्रकृति और परमात्मा

6 2 comments

Like Comment Share

Zest Mélange
Sponsored ·

CamScanner

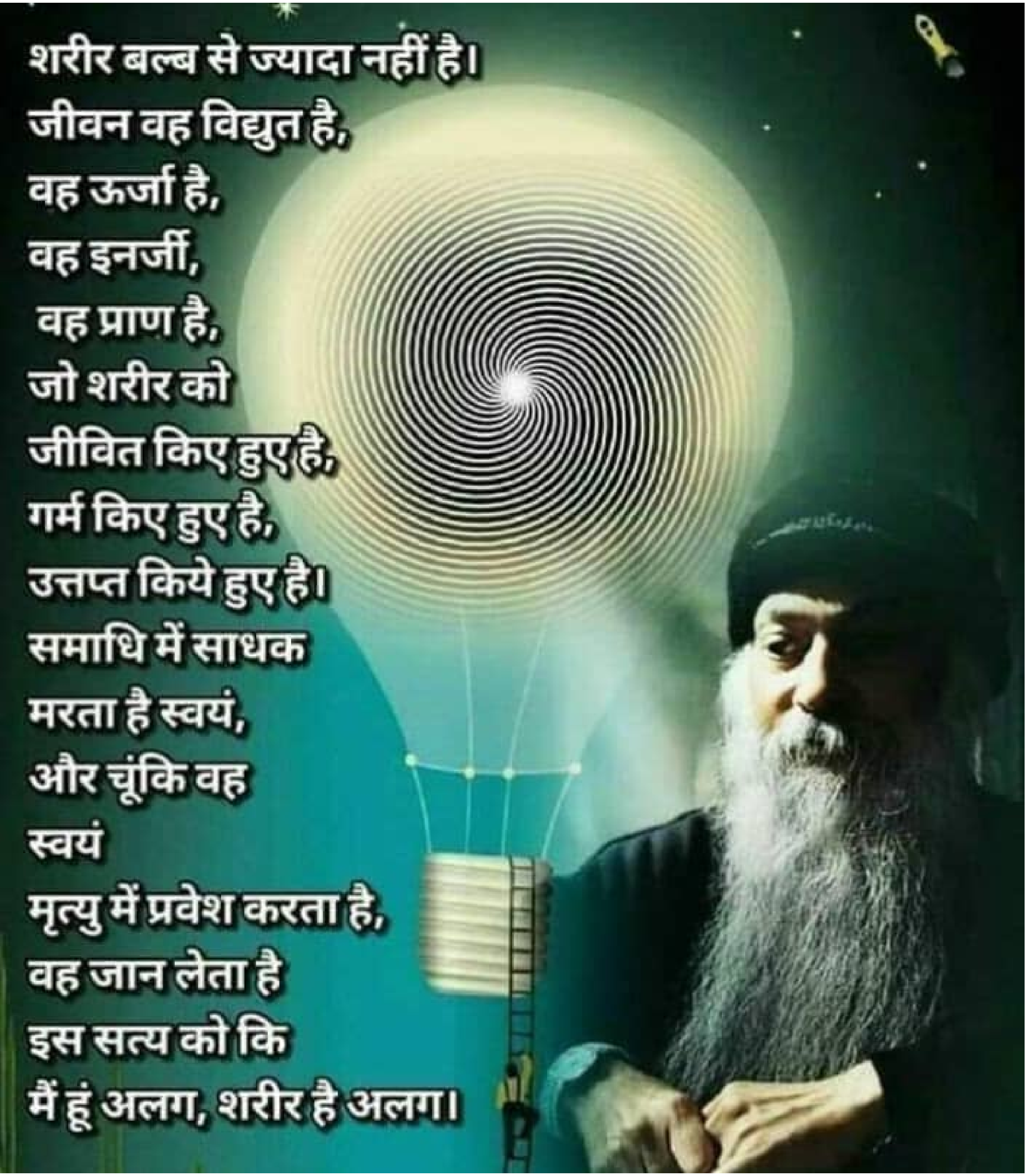
शरीर बल्ब से ज्यादा नहीं है।
जीवन वह विद्युत है,
वह ऊर्जा है,
वह इनर्जी,
वह प्राण है,
जो शरीर को
जीवित किए हुए है,
गर्म किए हुए है,
उत्तप्त किये हुए है।
समाधि में साधक
मरता है स्वयं,
और चूंकि वह
स्वयं
मृत्यु में प्रवेश करता है,
वह जान लेता है
इस सत्य को कि
मैं हूं अलग, शरीर है अलग।

CamScanner

समर्पण भगवान है। लेकिन कोई ऐसे ही औपचारिकता से, सामाजिक व्यवहार से, और लोग झुकते हैं इसलिए झुकना चाहिए, औरों को झुकते देखकर झुकता हो, संस्कारवश झुकता हो, तो पाखंड है। पाखंड का निर्णय झुकने से नहीं होगा, पाखंड का निर्णय भीतर हृदय के अंतरतम में होगा।

उन मित्र ने पूछा है कि कल मैंने कुछ संन्यासियों को गाते सुना: जय रजनीश हरे; यह तो महा भयंकर पाखंड हो रहा है!!

तुम कैसे निर्णय करोगे! अगर यह उनके हृदय की पुकार है तो पाखंड नहीं। और अगर वे केवल एक औपचारिकता अदा कर रहे हैं तो जरूर पाखंड है। मगर तुम कैसे तय करोगे? तुम कौन हो निर्णायक? तुम अपने ही हृदय का निर्णय ले लो तो बहुत। तुम दूसरे के हृदयों का निर्णय न लो! तुम्हें अभी अपने हृदय का पता नहीं, औरों का तो क्या पता होगा? और यहां जो बात चल रही है, जो सत्संग चल रहा है, वह अनिर्वचनीय का है। नहीं कहा जा सके जो, उसको कहने की चेष्टा चल रही है। तुम जैसा व्यक्ति, जो अभी बुद्धि के क्षुद्र जाल में उलझा हो, उसका यहां काम नहीं है। तुम यहां आए भी, व्यर्थ आए! जिन मित्र ने पूछा है, वे संन्यासी भी हैं। तुम्हारा संन्यास भी व्यर्थ। तुम्हारा संन्यास पाखंड!

अब तुम समझो पाखंड का अर्थ।

तुम्हारा संन्यास पाखंड। क्योंकि अगर तुम्हारे भीतर पूजा का भाव नहीं, अगर तुम्हारे भीतर आराधना नहीं जगी, तो तुमने बस कपड़े रंग लिए, माल पहन ली, यह पाखंड। भीतर रंग जाए और बाहर रंगे, जुगलबंदी हो, फिर पाखंड नहीं। तुमने तो सोचा होगा कि मैं करूंगा खंडन उन सबका जो इस तरह का पाखंड कर रहे हैं। तुमने कभी सोचा भी न होगा कि मैं तुमसे यह कहूंगा कि तुम पाखंडी हो। मुझसे प्रश्न पूछते समय थोड़े सोच–समझ कर पूछा करो। तुम निपट पाखंडी हो! तुम्हारा संन्यास झूठ, मिथ्या! तुम झुके ही नहीं हो। तुम्हारा कोई समर्पण नहीं है। तुम मैं जो कह रहा हूं समझ ही न पाओगे, क्योंकि शब्द पकड़ोगे तुम। शब्द की तुमने पकड़े हैं। पूछा है कि आप पाखंड का इतना विरोध करते हैं और यहां आपके संन्यासी पाखंड कर रहे हैं; इसको आप रोकते क्यों नहीं? मैं पाखंड का विरोध करता हूं। तुमसे कहूंगा कि संन्यास छोड़ दो। मैं पाखंड का विरोधी हूं। तुम्हारे हृदय में अभी लहर नहीं आई, तरंग नहीं आई, अभी तुमने मेरे मौन को नहीं सुना, अभी मेरे शून्य से तुम नहीं जुड़े; अभी तुम्हारे भीतर अनाहत का नाद नहीं हुआ।

सपना यह संसार

ओशो

Write a comment ... Send

CamScanner

ऐसे आदमी को मंदिर में टिकने देना खतरनाक था। क्योंकि पुजारी आखिर सोएगा। यह और मूर्तियां जला दे! बहुमूल्य चंदन की मूर्तियां हैं। इक्कू को धक्के मार कर उसने बाहर निकाल दिया। इक्कू ने बहुत कहा कि बर्फ पड़ रही है, और भगवान को बाहर निकाल रहे हो! लकड़ी की मूर्तियां बचा रहे हो और मुझे जीवित बुद्ध को बाहर निकाल रहे हो! लेकिन उसने बिलकुल नहीं सुना, उसने कहा तुम पागल हो। तुम और बुद्ध! धक्के देकर दरवाजा बंद कर लिया।

सुबह जब उसने दरवाजा खोला मंदिर का तो देखा कि इक्कू बाहर बैठा है और जो मील का पत्थर है उस पर फूल चढ़ा कर आराधना में झुका है और उसकी आंखों से आनंद के आंसू बह रहे हैं। पुजारी ने जाकर हिलाया और कहा कि तुम मुझे और परेशान न करो; तुम मुझे और उलझाओ मत, ऊहापोह में मत डालो! रात मंदिर में भगवान की मूर्ति जलाई, अब सुबह राह के किनारे लगे मील के पत्थर पर फूल चढ़ा कर आराधना कर रहे हो! इक्कू ने कहा, जहां आराधना है, वहां आराध्य है। पत्थर को भी प्रेम से देखो तो परमात्मा है और परमात्मा को भी सिर्फ बुद्धि से देखते रहो, तो परमात्मा नहीं। रात जो मैंने मूर्ति जलाई, अपनी सर्दी मिटाने को न जलाई थी, तुम्हारा पाखंड जलाने को जलाई थी। तुम्हें याद दिलाना चाहता था कि तुम यह पूजा व्यर्थ ही कर रहे हो, क्योंकि तुमने खुद ही कहा कि अरे पागल, लकड़ी में अस्थियां कहां? अगर तुमने यह आराधना सच में की होती तो ऐसा वचन तुमने न निकल सकता था। भीतर तो तुम जानते हो कि लकड़ी ही है, ऊपर मानते हो कि भगवान है।

पाखंड का अर्थ होता है: भीतर कुछ, बाहर कुछ। जिन मित्र ने पूछा है, उन्हें पाखंड शब्द का भी अर्थ नहीं मालूम। पाखंड का अर्थ होता है: भीतर एक, बाहर दूसरी बात, ठीक उलटी बात। लेकिन अगर बाहर भीतर एकरस हो, जुगलबंदी बंधी हो, फिर कैसा पाखंड!

तो अगर कोई प्रीति से पत्थर के सामने झुके प्रीति कसौटी है तो पत्थर भगवान है। क्योंकि जहां झुक जाओ तुम, वहां भगवान है। तुम्हारा समर्पण भगवान है। लेकिन कोई ऐसे ही औपचारिकता से, सामाजिक व्यवहार से, और लोग झुकते हैं इसलिए झुकना चाहिए, औरों को झुकते देखकर झुकता हो, संस्कारवश झुकता हो, तो पाखंड है। पाखंड का निर्णय झुकने से नहीं होगा, पाखंड का निर्णय भीतर हृदय के अंतरतम में होगा।

उन मित्र ने पूछा है कि कल मैंने कुछ संन्यासियों को गाते सुना: जय रजनीश हरे; यह तो महा भयंकर पाखंड हो रहा है!!

तुम कैसे निर्णय करोगे! अगर यह उनके हृदय की पुकार है तो पाखंड

Write a comment ... Send

मस्तिष्क का प्रश्न है। अगर कोई मंदिर की प्रतिमा में भी इतने ही भाव से झुक रहा है जितने भाव से यहां, तो वहां भी पाखंड नहीं है। पाखंड प्रतिमा के सामने झुकने में नहीं है, पाखंड तो तब है जब कि सिर्फ मस्तिष्क झुक रहा है और हृदय में कोई अनुभव नहीं हो रहा है। पत्थर की भी पूजा प्रेमपूर्ण हो तो पत्थर परमात्मा है। और परमात्मा की भी पूजा पत्थर की तरह हो तो सब पाखंड है।

लेकिन जिसने पूछा है, सोचा है कि बहुत बुद्धिमानी का प्रश्न पूछ रहा है। जिसने पूछा है, उसको खयाल है कि उसने ऐसा सवाल पूछा है जिसका जवाब नहीं हो सकता। मैं निश्चित पाखंड का विरोधी हूं। पाखंड का अर्थ तुम समझते हो? पाखंड का अर्थ होता है, जहां हृदय न हो, जहां हृदय का तालमेल न हो, जहां हृदय की जुगलबंदी न बंधी हो, वहां झुकना। क्योंकि मां ने कहा, पिता ने कहा, परिवार ने कहा, तो झुक गए मंदिर में, मस्जिद में। तुमने जाना? अगर तुम अपने जानने से झुके होओ, अगर तुम्हारा प्रेम ही तुम्हें झुकाया है, तो कौन कहता है यह पाखंड है? जरा भी पाखंड नहीं।

झेन फकीर इक्कू एक मंदिर में ठहरा। रात है सर्द। इतनी सर्द, इतनी ठंड पड़ रही है कि बाहर बर्फ गिर रही है। गरीब फकीर के पास एक ही कंबल है, वह उसकी सर्दी को नहीं मिटा पा रहा है। वह उठा कि मंदिर में कुछ लकड़ी तलाश लाए। और लकड़ी तो न मिली लेकिन बुद्ध की प्रतिमाएं थीं, वे लकड़ी की थीं। कई प्रतिमाएं थीं, तो वह एक प्रतिमा उठा लाया, आग जला ली। मंदिर में जली आग, लकड़ी की चट चटाक, अचानक रोशनी का होना, पुजारी जग गया। भागा हुआ अया। आगबबूला हो गया। आंखों पर भरोसा न आया कि एक फकीर, जिसको लोग सिद्धपुरुष समझते हैं, वह भगवान की प्रतिमा जला रहा है! इससे बड़ी और नास्तिकता और बड़ा कुफ्र क्या होगा? उसने कहा, यह तुम क्या कर रहे हो? होश में हो कि पागल हो? भगवान की प्रतिमा जला रहे हो! इक्कू हंसा, उसने पास में ही पड़े अपने संडे को उठाया, प्रतिमा तो जल गई थी, बस अब राख ही रह गई थी, उस राख में डंडे को डालकर टटोला। पुजारी पूछने लगा अब क्या खोज रहे हो? सब राख हो चुका। इक्कू ने कहा, भगवान की अस्थियां खोज रहा हूं। पुजारी ने सिर से हाथ मार लिया। उसने कहा, तुम निश्चित पागल हो। अरे, लकड़ी की मूर्ति में कहां की अस्थियां! इक्कू ने कहा, यही तो मैं कहूं। रात अभी बहुत बाकी, बर्फ जोर से पड़ रही है और मंदिर में तुम्हारे मूर्तियां बहुत हैं, एक दो और उठा लो! और मैं ही क्यों तापूं, तुम भी ठिठुर रहे हो, तुम भी तापो। जब अस्थियां नहीं हैं, तो कैसा भगवान!

ऐसे आदमी को मंदिर में टिकने देना खतरनाक था। क्योंकि पुजारी आखिर सोएगा। यह और मूर्तियां जला दे! बहुमूल्य चंदन की मूर्तियां हैं। इक्कू को धक्के मार कर उसने बाहर निकाल दिया। इक्कू ने बहुत कहा कि बर्फ पड़ रही है, और भगवान को बाहर निकाल रहे हो! लकड़ी की

Write a comment ... Send

CamScanner

•ओशो•

जब मेरी मृत्यु होगी तो आप मेरे रिश्तेदारों से मिलने आएंगे और मुझे पता भी नही चलेगा, तो अभी आ जाओ ना मुझ से मिलने।

जब मेरी मृत्यु होगी तो आप मेरे सारे गुनाह माफ कर देंगे जिसका मुझे पता भी नही चलेगा, तो आज ही माफ़ कर दो ना।

जब मेरी मृत्यु होगी तो आप मेरी कद्र करेंगे और मेरे बारे में अच्छी बातें कहेंगे, जिसे मैं नहीं सुन सकूँगा, तो अभी कह दो ना।

जब मेरी मृत्यु होगी तो आपको लगेगा कि इस इंसान के साथ और वक़्त बिताया होता तो अच्छा होता, तो आज ही आ जाओ और बैठो मेरे साथ।

इसीलिए कहता हूं कि इंतजार मत करो इंतजार करने में कभी कभी बहुत देर हो जाती है....!

CamScanner

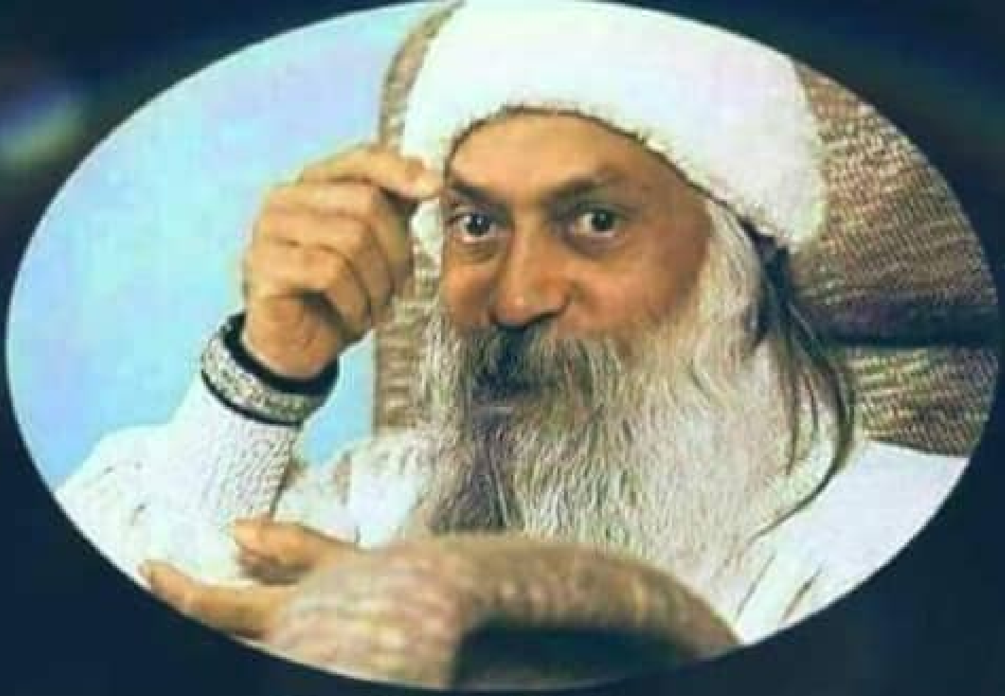

क्षण-भर की जिंदगी है। अब गए तब गए। क्या फिक्र करते हो घर की, परिवार की? क्या फिक्र करते हो मित्रों की, प्रियजनों की? एक ही बात की फिक्र करो कि तुम अपना गीत गाकर जाओगे, कि तुम अपना नृत्य नाचकर जाओगे, कि तुम अपनी सुगंध बिखराकर जाओगे, कि मरते समय तुम्हें यह अपराध-भाव न लगेगा कि मैं अपनी जिंदगी अपने ढंग से न जी सका। बस, यही सिद्धि है।

ओशो

Osho wisdom

CamScanner

है।

लिंची ने लिखा है, मेरा रोआं-रोआं कंप गया। संसार छोड़ना था, बुद्धत्व को छोड़ना! और उसके गुरु ने जो वचन कहा, वह चीन और जापान में बड़ी महत्वपूर्ण उक्ति हो गया है। और झेन साधक उस पर ध्यान करते हैं।

लिंची के गुरु ने कहा: इफ यू मीट द बुद्धा ऑन द वे, इमिजियेटली किल हिम।

अगर बुद्ध तुम्हें कहीं मार्ग पर मिल जायें तो तत्क्षण उनको कत्ल कर देना। एक क्षण रुकना मत।

क्योंकि कहीं ऐसा न हो, कि बुद्धत्व का मोह तुम्हें पकड़ ले। फिर संसार खड़ा हो जाता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, कि तुम सपना धन के संबंध में देखते हो या धर्म के संबंध में। इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम सपना इस जगत में एक सुंदर मकान बनाने का देखते हो, या उस जगत में, स्वर्ग में एक सुंदर मकान पाने का; कोई फर्क नहीं पड़ता। सपना, सपना है।

और सब सपने छूट जाने चाहिए। जब सब सपने गिर जाते हैं, जैसे सांप सरक जाता है अपनी पुरानी केंचुली के बाहर और पीछे लौटकर भी नहीं देखता, ऐसे जिस दिन तुम अपने कल्पना के बाहर निकल आते हो उसी दिन सत्य का साक्षात है। उसी दिन मुक्ति है।

वह मुक्ति तुम्हारी आकांक्षाओं की मुक्ति नहीं है। वह मुक्ति तुम्हारे सपनों में सोची गई मुक्ति भी नहीं है। वह निर्माण तुमने जैसा सोचा था, वैसा बिलकुल नहीं है; वह बिलकुल अन्यथा है। लेकिन उसके संबंध में आज तुम कुछ सोच भी नहीं सकते। उसे तो तुम जानोगे, तभी जानोगे। उसका तो तुम अनुभव करोगे, तभी करोगे। वह रस ही ऐसा है। उसका तुम स्वाद लोगे, तभी लोगे।

कबीर कहते हैं,

"गुरुदेव बिन जीव की कल्पना ना मिटै।'

CS CamScanner

5:03 pm 0 KB/s 56%

गुरु

गुरु का अर्थ है, जो तुम्हें धीरे-धीरे, कदम-कदम, हाथ पकड़ कर ले चले सत्य की तरफ। जो धीरे-धीरे तुम्हारी कल्पना से तुम्हें छुड़ाए।

एक बहुत बड़ा झेन साधक हुआ, लिंची। वह अपने गुरु के पास था। और जब आया था तो गुरु ने उससे निर्वाण की और मोक्ष की और बुद्धत्व की बड़ी मीठी बातें की थीं। और एक सपना पैदा कर दिया था। और लिंची कठोर साधना में लग गया–बुद्धत्व पाना है।

कुछ वर्षों की निरंतर साधना, गुरु के सहवास, सत्संग का परिणाम यह हुआ ध्यान लगने लगा। बुद्धत्व करीब मालूम होने लगा। एक दिन ऐसी घड़ी आ गई, कि लिंची को लगा, कि बस अब एक छलांग और-और मैं बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाऊंगा।

वह गया अपने गुरु के पास, चरण छूकर उसने गुरु से कहा, "बस एक छलांग और! जरा-सा धक्का चाहिए, मैं बुद्धत्व को उपलब्ध हो जाऊंगा।

गुरु ने कहा, "कैसा बुद्धत्व! कैसा मोक्ष! कैसा निर्वाण! सब बकवास है।

लिंची तो घबड़ा गया। उसने कहा, "क्या आप कहते हैं? मैं तो इसी आशा में सारी साधना में लगा हूं।

उसके गुरु ने कहां, "बच्चों को हम मिठाई देते हैं, ताकि वे स्कूल चले जायें। कोई मिठाई देने के लिए मिठाई नहीं देते, स्कूल भेजने के लिए मिठाई देते हैं। फिर जैसे-जैसे बच्चे को स्कूल में रस आने लगेगा, मिठाई कम होने लगती है। फिर एक दिन मिठाई बंद कर देनी होती है। बुद्धत्व? जब तक पाने की कोई भी आकांक्षा है, तब तक कल्पना काम कर रही है। आज उसे भी छोड़। अब कुछ पाना नहीं है। अब जो है, उसे जानना है।'

लिंची ने लिखा है, मेरा रोआं-रोआं कंप गया। संसार छोड़ना था, बुद्धत्व को छोड़ना! और उसके गुरु ने जो वचन कहा, वह चीन और जापान में बड़ी महत्वपूर्ण उक्ति हो गया है। और झेन साधक उस पर ध्यान करते

CamScanner

5:01 pm 0 KB/s VoLTE 4G 56%

सिकंदर दुखी मरता है, विराट कर्म के बाद। नेपोलियन दुखी मरता है, विराट कर्म के बाद। हिटलर आत्मघात करता है; लेनिन मरते वक्त अति दुखी है। और मरते वक्त लेनिन अपनी वसीयत में लिखता है कि स्टैलिन के हाथ में सत्ता न रहे। और दुखी इसीलिए है। जब तक वह बीमार था, तब तक स्टैलिन ने सत्ता हथिया ली। वह और भी बड़ा राजसिक व्यक्ति है। लेनिन ने क्रांति की, लेकिन सत्ता स्टैलिन के हाथ चली गई।

क्रांतिकारी अक्सर सत्ता नहीं भोग पाते, क्योंकि उनकी शक्ति और उनकी ऊर्जा सत्ता हथियाने में नष्ट हो जाती है। जब तक वे सत्ता पाते हैं, तब तक भीतर से कमजोर हो जाते हैं। जब सत्ता उनके हाथ में आती है, तब कोई शक्तिशाली व्यक्ति, जिसकी शक्ति अभी बची है, वह कब्जा कर लेता है।

हर क्रांति में यह होता है कि जो लोग क्रांति करते हैं, वे फेंक दिए जाते हैं। और जो क्रांति नहीं करते, वे मालिक हो जाते हैं। अक्सर होगा ऐसा। बाप कमाएगा और बेटा उसको खर्च करेगा। क्योंकि बाप कमाने में खर्च हो जाते हैं।

लेनिन दुख से मरा और वसीयत करके गया। लेकिन वसीयत को कौन सुनने वाला है! ताकत स्टैलिन के हाथ में थी। वसीयत दबा दी गई।

लेकिन स्टैलिन दुखी मरता है, दुखी जीता है। दुख वहां तक पहुंच जाता है कि बाद-बाद के दिनों में कहा जाता है कि उसने अपना एक डबल रख छोड़ा था, ठीक स्टैलिन की शक्ल का आदमी। हिटलर ने भी अपना एक डबल रख छोड़ा था। स्टैलिन खुद बाहर नहीं जाता था, क्योंकि लोगों को इतना कष्ट दिया है कि वह सुरक्षित नहीं था।

अब यह बड़े मजे की बात है, बड़ी विडंबना है, कि स्टैलिन ने सारी जिंदगी यही तो कोशिश की कि यशस्वी हो जाऊं, बड़ा शक्तिशाली हो जाऊं। और जब शक्ति हाथ में आई, तब कमरे में छिपकर उसको रहना पड़ता था। उसकी जगह सलामी वगैरह लेने उसका डबल जाता था। क्योंकि अगर गोली मार दी जाए, तो दूसरा आदमी मरेगा, स्टैलिन सुरक्षित रहेगा।

CamScanner

CamScanner

इस मिट्टी के देह से परे जो आत्मा है
उससे ज्यादा रहस्यमय और
आनंदमय और कुछ भी नहीं
जिसे तुम परमात्मा कहते हो,
वो भीतर बैठा है...

CamScanner

4:58 pm 0 KB/s VoLTE 4G 57%

एक कहानी मैंने सुनी है। एक शहर में एक नई दुकान खुली। जहां कोई भी युवक जाकर अपने लिए एक योग्य पत्नी ढूंढ़ सकता था। एक युवक उस दुकान पर पहुंचा। दुकान के अंदर उसे दो दरवाजे मिले। एक पर लिखा था, युवा पत्नी; और दूसरे पर लिखा था, अधिक उम्र वाली पत्नी! युवक ने पहले द्वार पर धक्का लगाया और अंदर पहुंचा। फिर उसे दो दरवाजे मिले। पत्नी वगैरह कुछ भी न मिली। फिर दो दरवाजे! पहले पर लिखा था, सुंदर; दूसरे पर लिखा था, साधारण। युवक ने पुनः पहले द्वार में प्रवेश किया। न कोई सुंदर था न कोई साधारण, वहां कोई था ही नहीं। सामरे फिर दो दरवाजे मिले, जिन पर लिखा था: अच्छा खाना बनानेवाली और खाना न बनानेवाली। युवक ने फिर पहला दरवाजा चुना। स्वाभाविक, तुम भी यही करते। उसके समक्ष फिर दो दरवाजे आए, जिन पर लिखा था: अच्छा गाने वाली और गाना न गाने वाली। युवक ने पुनः पहले द्वार का सहारा लिया और अब की उसके सामने दो दरवाजों पर लिखा था: दहेज लानेवाली और न दहेज लानेवाली। युवक ने फिर पहला दरवाजा चुना। ठीक हिसाब से चला। गणित से चला। समझदारी से चला। परंतु इस बार उसके सामने एक दर्पण लगा था, और उस पर लिखा था, "आप बहुत अधिक गुणों के इच्छुक हैं। समय आ गया है कि आप एक बार अपना चेहरा भी देख लें।'

ऐसी ही जिंदगी है: चाह, चाह, चाह! दरवाजों की टटोल। भूल ही गए, अपना चेहरा देखना ही भूल गए! जिसने अपना चेहरा देखा, उसकी चाह गिरी। जो चाह में चला, वह धीरे-धीरे अपने चेहरे को ही भूल गया। जिसने चाह का सहारा पकड़ लिया, एक चाह दूसरे में ले गई, हर दरवाजे दो दरवाजों पर ले गए, कोई मिलता नहीं। जिंदगी बस खाली है। यहां कभी कोई किसी को नहीं मिला। हां, हर दरवाजे पर आशा लगी है कि और दरवाजे हैं। हर दरवाजे पर तख्ती मिली कि जरा और चेष्टा करो। आशा बंधाई। आशा बंधी। फिर सपना देखा। लेकिन खाली ही रहे। अब समय आ गया, आप भी दर्पण के सामने खड़े होकर देखो। अपने को पहचानो!

जिसने अपने को पहचाना वह संसार से फिर कुछ भी नहीं मांगता। क्योंकि यहां कुछ मांगने जैसा है ही नहीं। जिसने अपने को पहचाना, उसे वह सब मिल जाता है जो मांगा था, नहीं मांगा था। और जो मांगता

CamScanner

4:56 pm 0 KB/s VoLTE 4G 58%

ले गया और कहा, एक सवाल है। अगर हजारों स्वर्ण अशर्फियों से भरी हुई थैली दस कदम चलने के बाद तुम्हें राह पर पड़ी मिल जाए तो क्या तुम उसे मालिक को खोज कर लौटा दोगे? उसने कहा, तुमने क्या मुझे मूर्ख समझा? इतना बड़ा मूर्ख समझा? लाखों रुपयों की स्वर्ण अशर्फियां मुझे मिलेंगी और मैं लौटा दूंगा! तुमने मुझे समझा क्या है? एकदम भाग जाऊंगा यह बस्ती भी छोड़ कर कि कहीं वह मालिक पता न लगा ले। फकीर ने अपने शिष्यों से कहा, यह आदमी शैतान है।*

अब तो शिष्य भी थोड़ी झंझट में पड़े। क्योंकि पहले आदमी को कहा, मूर्ख! अगर पहला आदमी मूर्ख है तो यह आदमी ज्ञानी है। गणित तो साफ है। और अगर यह आदमी शैतान है तो पहला आदमी संत है। गणित तो साफ है। पहले को कहना मूर्ख और दूसरे को कहना शैतान, संगति नहीं मिलती। लेकिन शिष्य चुप रहे; क्योंकि फकीर तब तक बाहर चला गया था।

वह तीसरे आदमी को पकड़ लाया। और उससे भी यही सवाल किया कि लाखों रुपए के मूल्य की अशर्फियां मिल जाएं दस कदम की दूरी पर, तुम उसके मालिक को वापस लौटा दोगे? उस आदमी ने कहा, कहना मुश्किल है। मन का भरोसा क्या? क्षण का भी पक्का नहीं है। अगर परमात्मा की कृपा रही तो लौटा दूंगा लेकिन मन बड़ा शैतान है, और बड़ा उत्तेजनाएं देगा मन कि मत लौटाओ! मेरा सौभाग्य और परमात्मा की कृपा रही तो लौटा दूंगा; मेरा दुर्भाग्य और उसकी कृपा न रही तो लेकर भाग जाऊंगा। पर अभी कुछ भी कह नहीं सकता; क्षण आए, तभी पता चले। उस फकीर ने अपने शिष्यों से कहा कि यह आदमी सच्चा संत है।

क्या मतलब है❓

संत का पहला लक्षण यह है कि वह क्षण के साथ जीएगा। कल के लिए निर्णय नहीं लिया जा सकता। कल की कौन कहे? कल क्या होगा, कौन जानता है? कल हम होंगे भी या नहीं, यह भी कौन जानता है? और कल की परिस्थिति में क्या मौजू पड़ेगा, इसका निर्णय आज कौन लेगा और कैसे लिया जा सकता है? कल अज्ञात है; अज्ञात के लिए तुम कैसे निर्णय लोगे ?

CamScanner

CamScanner

अतिरिक्त यहा कुछ भी नहीं घटता । बाकी तो सब व्यर्थ की बातचीत है ।

जिसे तुम घटना कहते हो -----कि राष्ट्रपति हो गये , कि खूब धन कमा लिया , कि खूब प्रसिद्धि हो गयी , इन सब का कोई भी मूल्य नही है । तुम मरे कि सब भूल जाएगा , सब पद खो जाएगा , चार दिन के बाद तुम्हे कोई याद करने वाला भी न बचेगा ।

कुछ वर्षों बाद , तुम हुए भी थे या नही हुए थे , इसमें भी भेद करना मुश्किल हो जाएगा ।

जरा ख्याल करो ! तुमसे पहले अरबो-अरबो लोग इस पृथ्वी पर हो चुके है । तुम्हारे जैसे ही सपने देखने वाले लोग , तुम्हारे जैसे ही धन इकट्ठा करने वाले लोग , तुम्हारे जैसे ही पद-लोलुप,
धन -लोलुप ! वो सब अब कहा है ? उनके नाम भी तो पता नही । वे कहा खो गये ? हो सकता है , जिस धूल में चलकर आये हो उस धूल में पड़े हो ।
तुम जिस जगह पर बैठे हो , वही उनकी लाश गड़ी हो , वही उनकी हड्डिया गल गयी हो । कभी वो भी अकड़कर चलते थे जैसे तुम अकड़ कर चलते हो ।
कभी किसी का जरा सा धक्का लग गया था तो नाराज हो गए थे , तलवारे खिंच गयी थी । आज धूल में पड़े है और कोई भी उन्हें पैरो से रौंदे चला जा रहा है । न नाराज हो सकते है , न तलवारे खिंच सकते है ।
विश्वासी झूठी श्रद्धा में जीता है ;:इसलिए कही पहुच नही पाता । श्रद्धालु यात्रा पर चल पड़ता है ।
श्रद्धा की यात्रा ही एक दिन ज्ञान की मंजिल पर पहुचा देती है ।
ज्ञानी पहुच गया , श्रद्धालु चल पड़ा । विश्वासी सिर्फ सोच रहा है कि चलेगे , कि चल रहे है , कि पहुच रहे है ।विश्वासी निद्रा में पड़ा है ।
या तो जौहर बनो या जौहरी बनो ! तो ही तुम समझ पाओगे कि मीरा क्या कह रही है ।

ओशो
झुक आयी बदरिया सावन की
संकलन-रामजी🙏🌹🌹

CamScanner

4:50 pm 0 KB/s VoLTE 4G 59%

मीरा कहती है .....

सूली ऊपर सेज हमारी ,
सोवण किस विधि होइ ।'

इधर सूली पर हम बैठे है तुम कहते हो सो जाओ । सुली पर सेज लगी हो तो कोई कैसे सोये ! कल सुबह तुम्हारी मौत आने वाली हो , कल सुबह तुम्हे फ़ासी लगने वाली हो , तुम आज रात सोओगे ? कोई उपाय नही है सोने का।

...... यह संसार तो सूली है इसमें सोना कैसे हो सकता है !

इस बात को समझ लो ---- यह संसार सूली है , क्योकि इस संसार में सिवाय मौत के और कुछ भी नही घटता ।
जन्म के बाद बस एक ही बात निश्चित है : मौत । जन्म के बाद मृत्यु के अतिरिक्त यहा कुछ भी नही घटता । बाकी तो सब व्यर्थ की बातचीत है ।

जिसे तुम घटना कहते हो -----कि राष्ट्रपति हो गये , कि खूब धन कमा लिया , कि खूब प्रसिद्धि हो गयी , इन सब का कोई भी मूल्य नही है । तुम मरे कि सब भूल जाएगा , सब पद खो जाएगा , चार दिन के बाद तुम्हे कोई याद करने वाला भी न बचेगा ।

कुछ वर्षों बाद , तुम हुए भी थे या नही हुए थे , इसमें भी भेद करना मुश्किल हो जाएगा ।

जरा ख्याल करो ! तुमसे पहले अरबो-अरबो लोग इस पृथ्वी पर हो चुके है । तुम्हारे जैसे ही सपने देखने वाले लोग , तुम्हारे जैसे ही धन इकट्ठा करने वाले लोग , तुम्हारे जैसे ही पद-लोलुप,
धन -लोलुप ! वो सब अब कहा है ? उनके नाम भी तो पता नही । वे कहा खो गये ? हो सकता है , जिस धूल में चलकर आये हो उस धूल में पड़े हो ।
तुम जिस जगह पर बैठे हो , वही उनकी लाश गड़ी हो , वही उनकी हड्डिया गल गयी हो । कभी वो भी अकड़कर चलते थे जैसे तूम अकड़

CamScanner

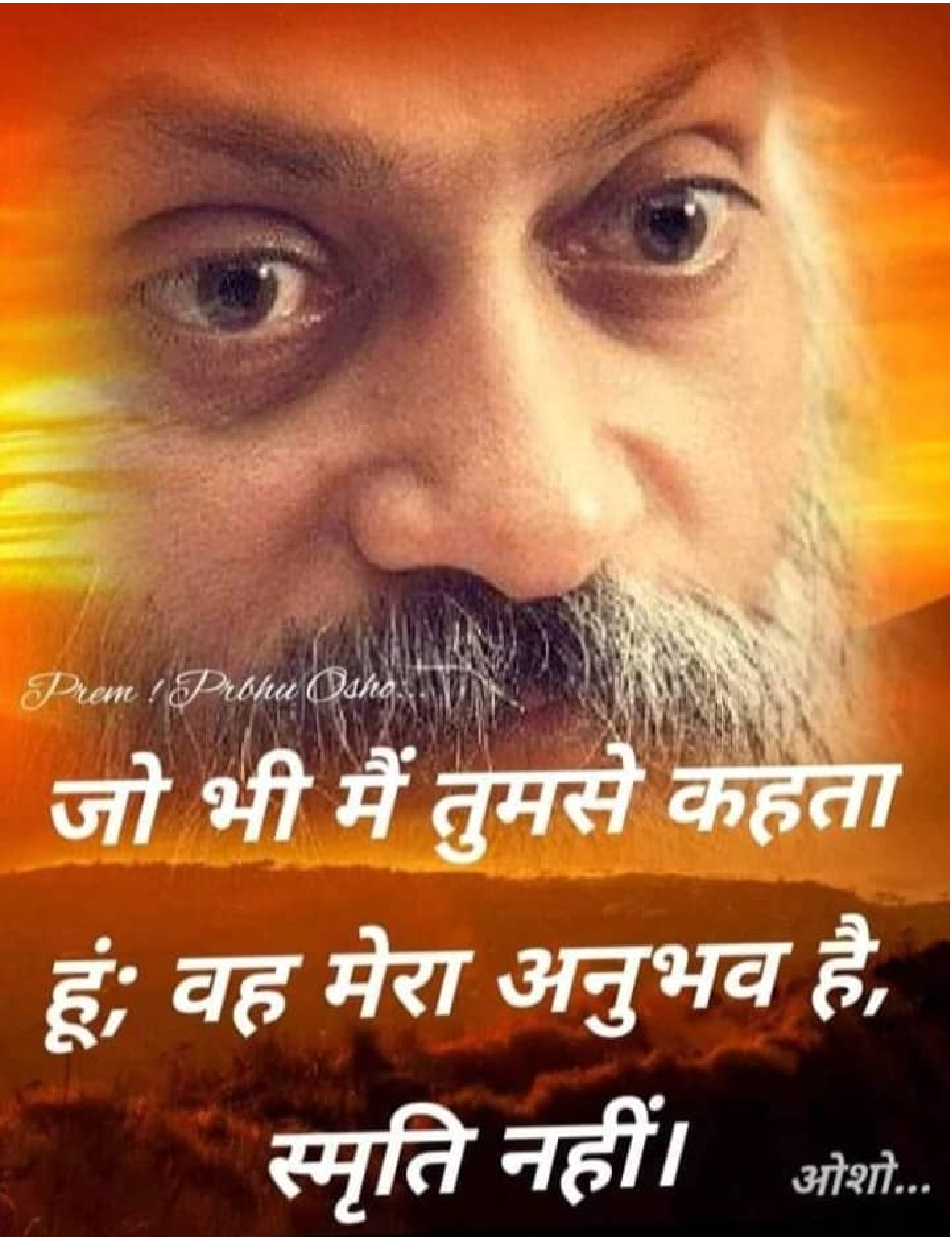

CamScanner

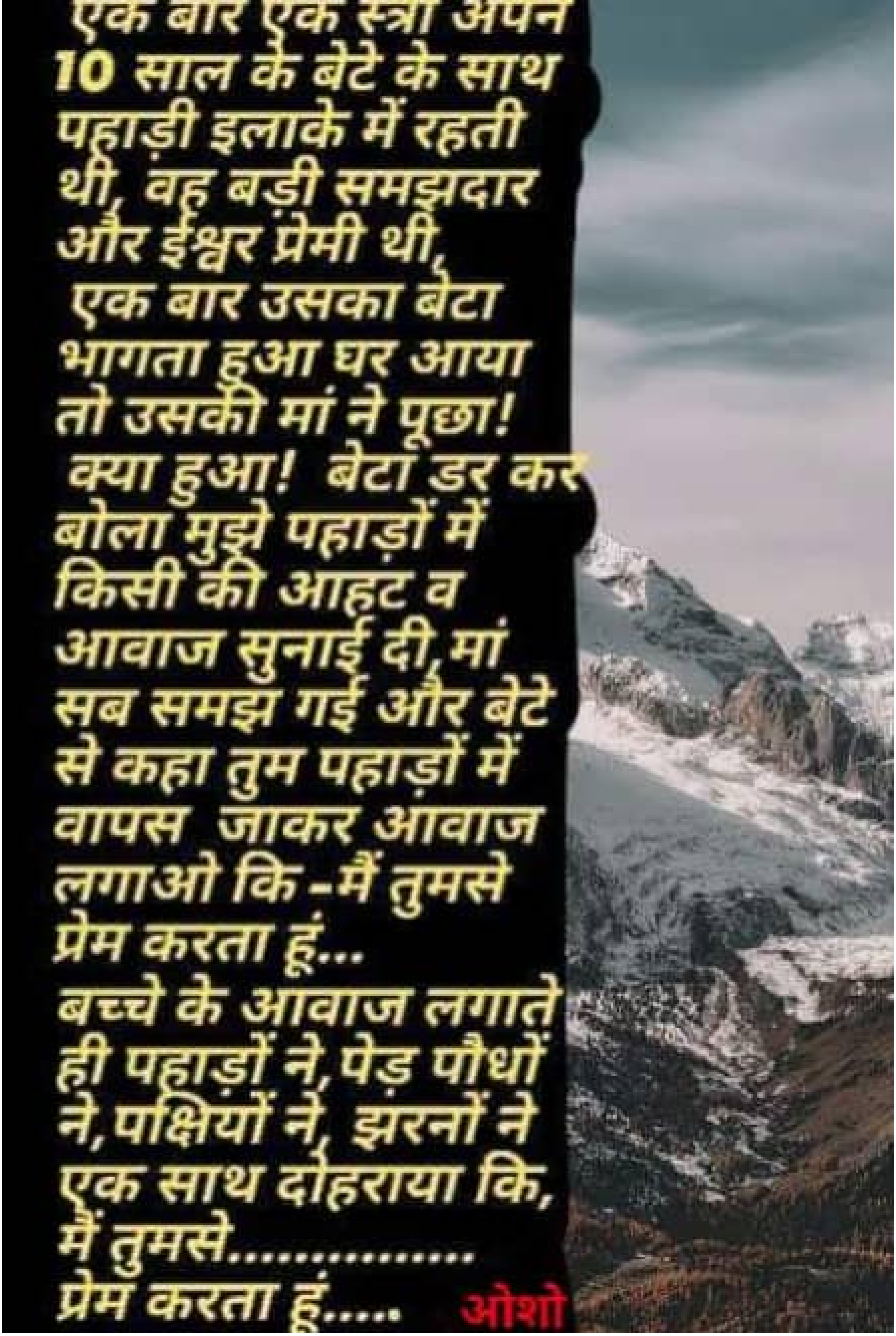
एक बार एक स्त्री अपने
10 साल के बेटे के साथ
पहाड़ी इलाके में रहती
थी, वह बड़ी समझदार
और ईश्वर प्रेमी थी,
एक बार उसका बेटा
भागता हुआ घर आया
तो उसकी मां ने पूछा!
क्या हुआ! बेटा डर कर
बोला मुझे पहाड़ों में
किसी की आहट व
आवाज सुनाई दी, मां
सब समझ गई और बेटे
से कहा तुम पहाड़ों में
वापस जाकर आवाज
लगाओ कि -मैं तुमसे
प्रेम करता हूं...
बच्चे के आवाज लगाते
ही पहाड़ों ने, पेड़ पौधों
ने, पक्षियों ने, झरनों ने
एक साथ दोहराया कि,
मैं तुमसे................
प्रेम करता हूं.....
ओशो

CamScanner

CamScanner

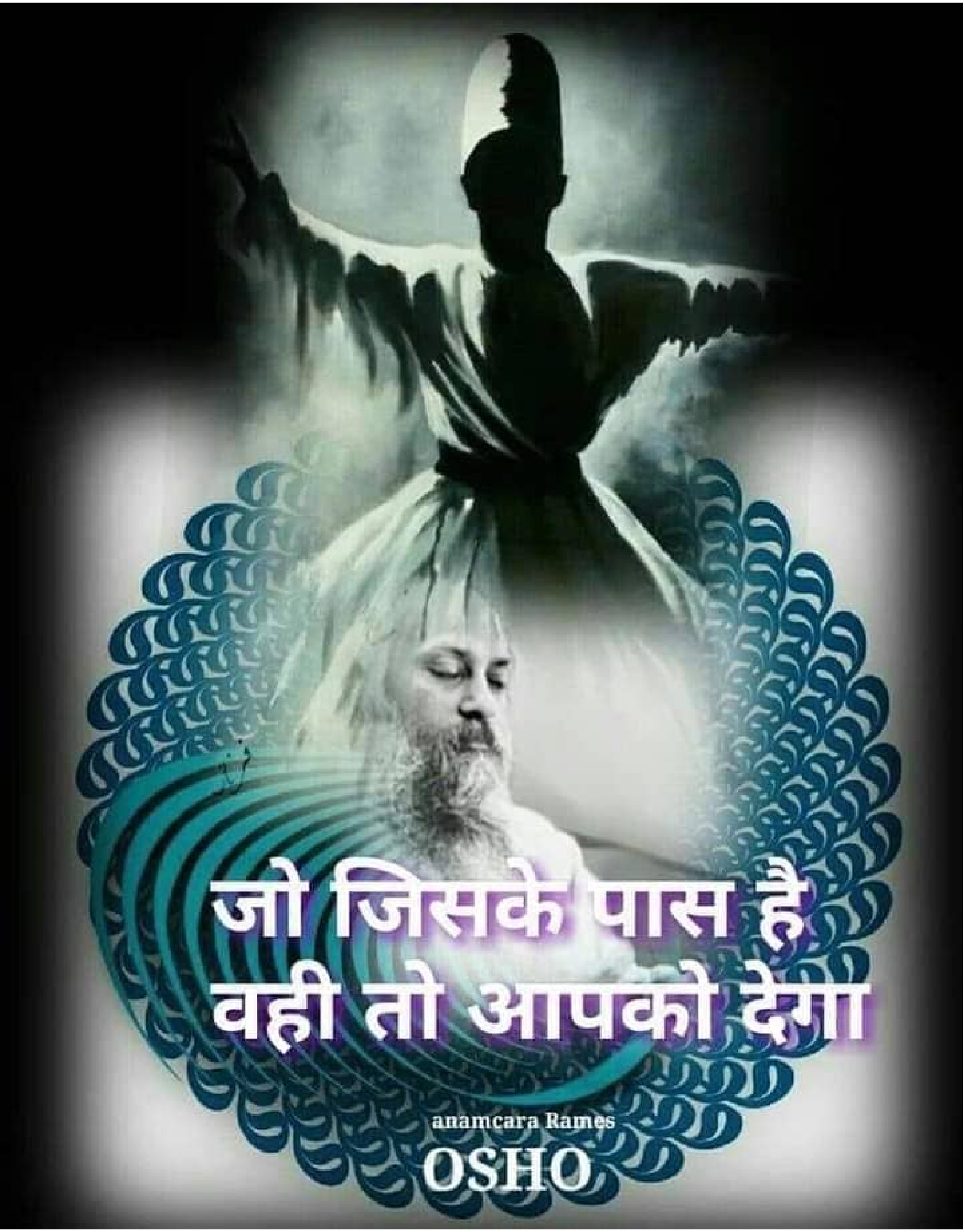

CamScanner

4:39 pm 0 KB/s VoLTE 4G 62%

डूबोगे। साहिल तुम्हें मिलेगा नहीं।

एक बात ठीक से समझ लो। हम अपनी दुनिया खुद बनाते हैं। और अगर कोई तुम्हारे साथ छल करता है, या कपट करता है, क्या छीन लेगा? तुम्हारे पास है क्या? तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। और जो गरीब छल-कपट कर रहा है वह दीन, दरिद्र है। उसके पास भी कुछ नहीं है। सोचता है शायद छल-कपट से कुछ मिल जाएगा।

मेरी सलाह, पहली सलाह: जो तुम्हें धोखा दे, समझना कि बड़ा गरीब है। तुमसे तो ज्यादा गरीब है। जो तुम्हारे साथ छल कर, कपट करे, समझना कि बड़ा दीन है। तुमसे तो बड़ा भिखारी है। उस पर दया करना। उस पर करुणा करना। इसलिए नहीं कि तुम्हारी दया और करुणा से वह बदल ही जाएगा। वह बदले या न बदले लेकिन तुम बदल जाओगे। और असलियत बात यही है कि तुम बदल जाओ। और तुम एक ऐसी स्थिति में आ जाओ कि दुनिया तुम्हारे साथ कुछ भी करे लेकिन तुम्हें डांवाडोल न कर सके।

तुमने पूछा है कि लोग जब किसी वस्तु की तरह मेरा उपयोग करते हैं तो बड़ी चोट पहुंचती है। लेकिन तुम खुद अपने को वस्तु की तरह उपयोग कर रहे हो यह तुमने सोचा? तुमने अपने को आत्मा की तरह उपयोग किया है? कभी जीवन के किसी क्षण में? तुमने खुद अपने को वस्तु की तरह उपयोग किया है, एक शरीर मात्र। और जब तुम खुद ही अपने यह दुर्व्यवहार कर रहे हो, तो दूसरों से क्या शिकायत? वे तुमसे वही कर रहे हैं जो तुम अपने से कर रहे हो। और शरीर तो वस्तु है ही। तुम अपने भीतर छिपे हुए उस चैतन्य को पहचानने की कोशिश करो जो वस्तु नहीं है। फिर तुम्हारा कोई भी कैसा भी उपयोग करे, तुम भलीभांति समझोगे कि तुम दूर खड़े देख रहे हो। वह तुम्हारा उपयोग नहीं है।

🪷आचार्य श्री रजनीश ओशो🪷

🙏💕🙏

कोपलें फिर फूट आई

प्रवचन# 05

CamScanner

लोग नेकी भी उस उम्र में
करते हैं जब वो गुनाह
करने के लायक नही रहते।

– ओशो

@kala.darpan

CamScanner

4:36 pm 0 KB/s VoLTE 4G 62%

osho suvichar

4h ·

जब दिन में तुरीय सरल हो जाएगा, तब तुम सपने में भी उसका उपयोग कर सकोगे। तब रात सोते वक्त एक ही खयाल कर लेना कि मैं देखनेवाला हूँ, मैं द्रष्टा हूँ। नींद आने लगे तब तुम्हारे भीतर एक ही स्वर गूंजता रहे कि मैं साक्षी हूँ। इस भाव को पुनरुक्त करते हुए तुम सो जाना। तुम्हे पता भी न चले कब नींद आ गयी और यह भाव धारा टूट गयी। अगर तुम इस भाव धारा को संभालते रहे तो नींद आ जायेगी लेकिन यह भाव बना रहेगा कि मैं साक्षी हूँ। क्योंकि भाव धारा तुम्हारे भीतर चल रही है और नींद तो शरीर को आ रही है। अगर भाव धारा भीतर जारी रही तो एक दिन तुम सपने में भी पाओगे की तुम सिर्फ देखनेवाले हो। और जैसे ही तुम अनुभव करोगे, अनूठी प्रतीति होगी, स्वप्न तत्क्षण टूट जाएगा। जैसे ही तुम्हे ये खयाल स्वप्न में आ जाएगा कि मैं देखनेवाला हूँ उसी समय स्वप्न बन्द हो जायेगा। स्वप्न चलता ही तुम्हारी बेहोशी से है। और ऐसा जब रूप में होने लगे तो तीसरी घटना संभव होती है कि तब तुम रूप को देखते रहना और भीतर स्मरण करते रहना कि मैं साक्षी हूँ, स्वप्न खो जाएगा। जिस दिन तुम्हे नींद में भी ये धारा प्रविष्ट हो जाये कि मैं साक्षी हूँ उस दिन तुम समझना कि तुम्हारे हाथ परम कुंजी लग गयी है। अब तुम्हे कोई भी बेहोश न कर पायेगा। जो नींद में एक क्षण को भी जाग गया उसकी बेहोशी बिल्कुल टूट जाएगी। जिस दिन तुम नींद में जागोगे उस दिन तुम योगी हो गए। योगी कोई आसन करने से नहीं होता है। वह सब व्यायाम है, शरीर के लिए स्वास्थ्यप्रद है, अच्छा है। लेकिन शरीर के व्यायाम को ही अगर कोई रोग समझ ले तो बड़ी भ्रांति में पड़ गया है। योगी का अर्थ है- जो निद्रा में भी जाग्रत हो जाये। उससे पहले कोई योगी नहीं है।
क्रमश:............................

7 2 comments

Like Comment Share

Er Ramji Dhurve

CamScanner

8

Top comments

Rairkz Osho
अगर कोई प्रीति से पत्थर के सामने झुके प्रीति कसौटी है तो पत्थर भगवान है। क्योंकि जहां झुक जाओ तुम, वहां भगवान है। तुम्हारा समर्पण भगवान है। लेकिन कोई ऐसे ही औपचारिकता से, सामाजिक व्यवहार से, और लोग झुकते हैं इसलिए झुकना चाहिए, औरों को झुकते देखकर झुकता हो, संस्कारवश झुकता हो, तो पाखंड है। Osho

Just now Like Reply

Girdhari Ram
लोगों को मुर्ख बनाने में

2h Like Reply 2

Rajiv Kapoor
For cracking war head philosophy of humans
See translation

11m Like Reply

Janakraj Meena
Rt

58m Like Reply

Mahendra Nath Bajpai
ओशो फिर से पढ़ो

2h Like Reply 1

View 1 reply...

Kailash Bhurre
हीरा भी पत्थर है। और कण कण रज रज में समाया है , वह जो आप हम में मुखर है ,वर्षो बाद परिवर्तित होते होते मिट्टी बन जाता है पत्थर वहीं मिट्टी जीवन दाई बन जाती है

Write a public comment...

CamScanner

मैं बुद्ध को इसलिए अपनाता हूँ की,
बुध्द ना स्वर्ग की लालच दिखाते
है, ना नर्क का डर, वो ना खुद को
भगवान कहते ना मुक्तिदाता, वो सिर्फ
अपने को मार्गदाता बताते है....

– डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर

CamScanner

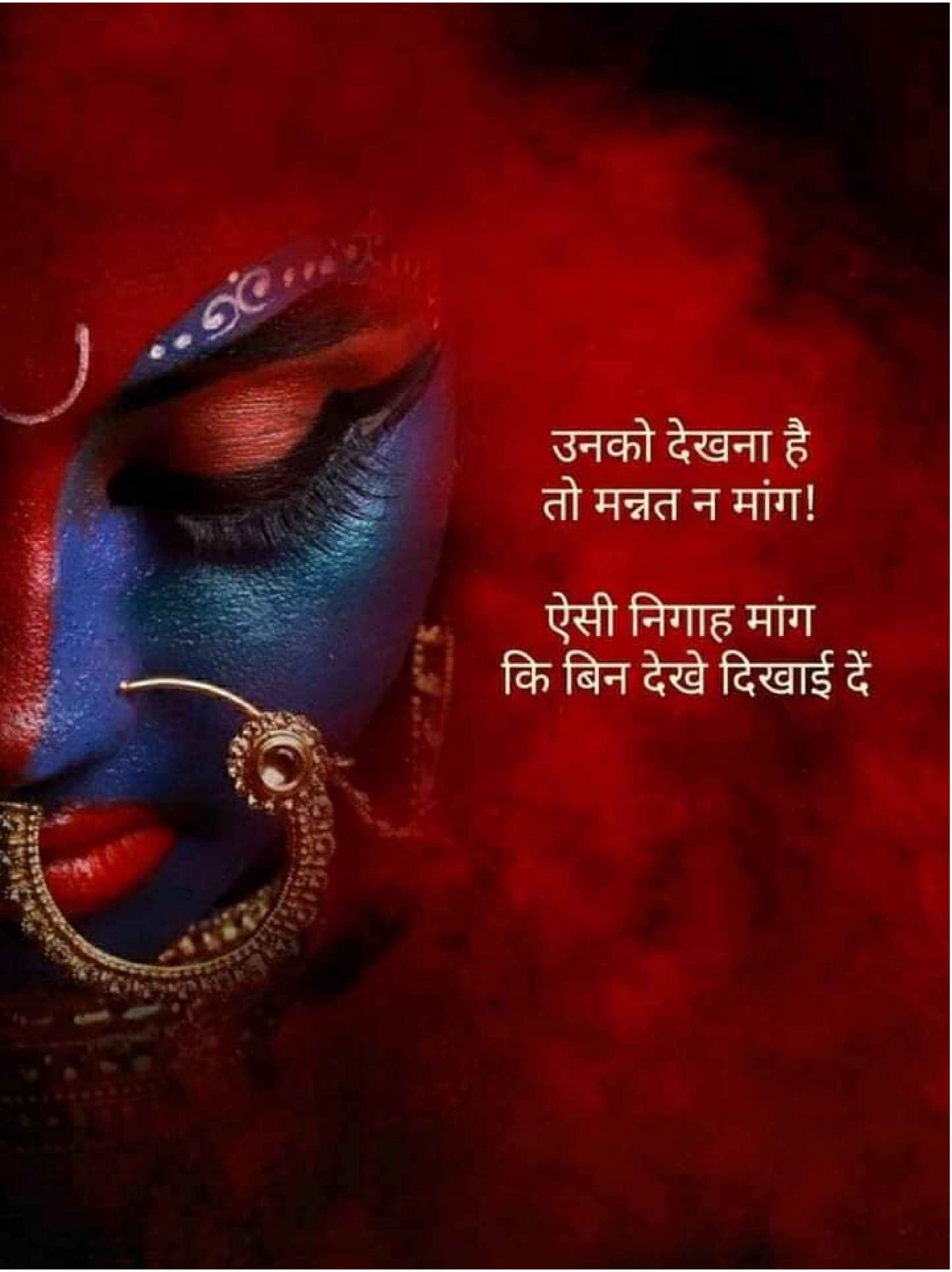

CamScanner

7. Study of air cleaning and cooling system of general purpose farm tractor engine.
8. Study of lubrication and fuel system of general purpose farm tractor engine.

CamScanner

दुःख उधार का है, आनंद स्वयं का है। आनंदित कोई होना तो अकेले भी हो सकता है; दुखी होना चाहे तो दूसरे की जरुरत है। कोई धोखा दे गया; किसी ने गाली दे दी; कोई तुम्हारे मन की अनुकूल न चला सब दुःख दूसरे से जुड़े है। और आनंद का दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है। आनंद स्वस्फूर्त है। दुःख बाहर से आता है, आनंद भीतर से आता है.

ओशो

CamScanner

6:19 pm 0 KB/s 50%
abplive.com
abp LIVE
CHANNEL LIVE

- 10 दिन तक ऐसा भोजन किया जाता है जो मन और शरीर को नियंत्रण में रख सके.

- पर्युषण पर्व की अवधि में दान करने से मोक्ष के मार्ग सुलभ होता है.

- पर्युषण पर्व का उदेश्य आत्म की शुद्धि करना है. ऐसे में महावीर स्वामी के बताई गई शिक्षा पर अनुसरण किया जाता है. जिसमें अहिंसा यानी किसी को दूख, कष्ट ना पहुंचाएं, सत्य के मार्ग पर चलें, चोरी ना करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना होता है. ये जैन धर्म के 5 मूल सिद्धांत हैं.

PREV NEXT

- ये पर्व जीओ और जीने दो की राह पर चलने की प्रेरणा देता है. पर्युषण पर्व का आखिरी दिन क्षमावाणी कहलाता है. इस दिन जैन धर्म के अनुयायी जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए सभी से माफी मांगते हैं.

Paryushan Parv 2023 Wishes: तप, त्याग और क्षमापना का महापर्व है पर्युषण पर्व, इन शुभकामना संदेश को भेज दें अपनों को बधाई

Disclaimer: यहां मुहैया सूचना सिर्फ मान्यताओं

Paryushan Parv 2023: 19 सितंबर 2023 से दिगंबर जैन धर्म के लोगों का पर्यूषण पर्व शुरु हो चुका है. आत्मा शुद्धि का ये पर्व दस दिन तक चलता है. इस दौरान ईर्ष्या, कलह, विवाद, अहंकार से दूर तप और त्याग किया जाता है. इस साल पर्युषण पर्व की समाप्ति 29 सितंबर 2023 को क्षमावाणी पर होगी.

PREV NEXT

जैन धर्म में पर्युषण पर्व मनाने के लिए भिन्न-भिन्न मन्यताएं हैं. दिगंबर परंपरा में ये '10 लक्षण' पर्व के रुप में मनाया जाता है. आइए जानते हैं पर्युषण पर्व का महत्व, नियम

YOUR COMPATIBILITY
Know who is the right zodiac compatible with you in no time!

CamScanner